

स्व० कवि श्री टेकचन्द विरचित



तीन लोक पूजा

संपादक :—

भँवरलाल न्यायतीर्थ, गुलाबचन्द शास्त्री

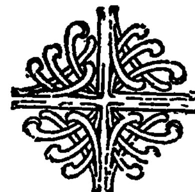
प्रकाशक :—

वीर पुस्तक भण्डार

मनिहारों का रास्ता, जयपुर

प्रथम बार ८००]   पौष, सं० २०१३, वीर नि० सं. २४८३   [मूल्य नौ रुपया

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—
वीर पुस्तक भण्डार,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर ।



मुद्रक :—
भँवरलाल न्यायतीर्थ,
श्री वीर प्रेस, मनिहारों का रास्ता,
जयपुर ।

प्रकाशकीय

जैन पूजा साहित्य में तीन लोक विधान पूजा का स्थान सर्वोपरि है। इसमें तीन लोक के अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा है और प्राणी के लिए अभीष्ट सुख-मोक्ष सुख को साध्य मानते हुए अन्य सभी गतियों के छेदकपन को महत्त्व दिया गया है। इस पूजा के अध्ययन से जैन सिद्धान्त में वर्णित तीन लोकके स्वरूप का भली प्रकार ज्ञान होजाता है। यदि कोई मननपूर्वक इस पूजा को पढे या सुने तो उसे इस सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हो जाती है। पूजा का जो महत्त्व है, वह है ही।

अब तक तीन लोक विधान की दो पूजायें देखने में आईं—एक कवि टेकचन्दजी कृत, जो आपके सन्मुख प्रस्तुत है और दूसरी इससे दुगुनी बड़ी है जिस पर नेमीचन्द्र कृत लिखा हुआ है। समाजमें अधिक प्रचलन इस श्रीटेकचन्दजी कृत पूजा का ही है। उस बड़ी पूजा की तो सारे भारत में शायद पांच सात प्रतियां ही हों।

कवि टेकचंदजी ने कई पूजायें लिखी हैं। इस तीनलोक पूजाकी जयपुरमें कई प्रतियां हैं, पर वे परस्परमें पूर्णतः नहीं मिलतीं, काफी पाठ-भेद उनमें पाया जाता है। इसके अतिरिक्त अशुद्धियां भी बहुत हैं एवं छंदोभङ्ग तो काफी मात्रा में है। यही कारण हुआ कि प्रेस कापी कराने में काफी समय लगा। लिपिकारों ने कई जगह तो अक्षम्य गलतियां करदी हैं। उन्हें त्रिलोकसारादि ग्रन्थों के आधार पर ठीक किया गया है एवं छन्दोभंग दोष को भी यथा सम्भव दूर किया गया है, फिर भी गलतियाँ रहना संभव है। पाठकों को जहां भी त्रुटि मालूम पडे हमें सूचित करने का कष्ट करें ताकि आगामी संस्करण में ठीक किया जा सके।

इस कार्य में श्री गुलाबचन्दजी शास्त्री, साहित्यरत्न ने काफी सहयोग दिया है उसके लिए धन्यवाद।

श्री वीर प्रेस, जयपुर
१-१-५७

भँवरलाल न्यायतीर्थ
मालिक— वीर पुस्तक भण्डार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर।



॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥



कवि श्री टेकचन्द विरचित

तीन लोक पूजा

मंगलाचरण

दोहा— लोकाकाश प्रदेश में, भवन तीन जिह थानि। तहां अकृत्रिम जिन-भवन, ते पूजौं थुति आनि ॥ १ ॥

चौपाई— सुरपति तो सब थानिक यजैं, सहित शची नाना पुनि सजैं। दीप अढाई जे जिनगेह, सुर खग पूजैं बहु-पुन लेह ॥२॥

अडिल्लछंद— शक्तिहीन हम दूर जाय सकते नहीं, भक्ति भरे चित लाय यजैं इसही मही।
अष्ट द्रव्य शुभ लाय सु सन्मुख आयकैं, भवने लागैं भक्ति महा गुण गायकैं ॥ ३ ॥

पद्धरी छंद— लख अधोलोक खर पंकभाग, तहां देव असुर के भवन जाग। इक एक भवन जिन गेह एक, ते नमौं अंग नय छांडि टेक॥४॥

सोरठा— असुर देव के ठाम, सात कोडि बहतर लखा। एते ही जिनधाम, सो मैं मन वच तन यजौं ॥ ५ ॥

गीताछंद— देवैं ही जहं पूजि करि, महा पुन्य फल उपजावही। बहु करैं भक्ति विनययुत ह्वै,कंठ जिन गुण गावही ॥
तहां मिनख का नहिं गमन जानौ, पुन्य विन दरशन नहीं। इम जानि उरमें भाय भावन पूजिहौं इसही मही॥६॥

*चाल पंचमंगल—असिय[1] मेरु गजदंता[2] वीस बखानिये, असि[3] वखार कुलाचल[4] तीस प्रमानिये।
खग[5] गिरि इकसो सत्तरि दश वृछ[6] ठामजी, इच्वा[7] मनु कुंडल रुचक चव चव धामजी ॥
लख[8] धाम वावन दीप नंदीश्वर विषै चव दिशि सही, सब मिलि जु चवशत[9] फिरि अठावन सकल यह गिनती भई।
जिनथान इतने लोक मधि मैं नमौं मनवचकायजी, द्वय हीन चवशत लोक नर में शेष पशु थल पायजी ॥७॥

बेसरीछंद— सुरग लोक में लख चोरासी,सहस सत्याणव ऊपरि भासी।तेइस अधिक कहे जिनगेहा,सो मैं सब पूजौं करि नेहा॥८

चाल मुनियानंद— तीन ही लोक के सकल मिलिवाइये, आठ कोडि छप्पन लाख जु भाइये।
सहस सत्याणवै च्यारिशत है सही, अधिक इक्यासिया सर्व पुनि की मही ॥ ९ ॥
और जिन वीस जे सासते राज हैं, क्षेत्र विदेह में तीर्थ यह वाज्य है।
ते सकल देव अरहंत पद है सही, ते जजौं अर्घ धरि जानि बहु पुन मही ॥ १० ॥
सिद्ध गुन आठ मय आठ कर्म नासिया, चेतनारूप सब लोक तिन भासिया।
शुद्ध चिन मूरती ज्ञान केवल धरा, ते जजौं अर्घ ले पुन्यदायक खरा ॥ ११ ॥

चाल वीरजिनंद— गुनछतीस के धारतैं जी, आचारज सुखदाय, ते हौं पूजौं अर्घ सौं जी।
मन वच तन सुभ लाय, जी भाई आचारज पद धार ॥ १२ ॥

१–पञ्च मेरु के अस्सी चैत्यालय। २–गजदन्तों के वीस। ३–वखारगिरि के अस्सी। ४–कुलाचल पर्वतों के तीस। ५–विजयार्द्ध के एकसौ सत्तर।
६–जम्मू और शाल्मलि के दस। ७–इद्वाकार पर्वत के ४, मानुषोत्तर पर्वत के ४, कुण्डलगिरि के ४, रुचकगिरि के ४। ८–नन्दीश्वर के ५२।
९–इस प्रकार कुल मध्यलोक सम्बन्धी ४५८ चैत्यालय हैं।

तीन लोक

चाल सुनि भाईरे—बीस पांच गुन धारिजे, (सुनि भाई रे) सो ही उपाध्याय जानि (चेत मन भाई रे)।
तिनके पद वसु द्रव्य तैं, (सुनि भाई रे) पूजौं भक्ति सु आनि, (चेत मन भाई रे) ॥ १३ ॥

चालछंद— गुन बीस आठ जहं पाई, तन विरकत वरती लाई। यह साधनि को सुखदाई, भवि पूजौं मन वच काई ॥१४॥

चाल जोगीरासा—येही पांचौं पद परमेष्ठी सब विधि मंगलदाई, येही पंच परम गुरु कहिये इन थुति शिव-सुख दाई।
फेरि नमौं जिनमुखकी वानी सकल तत्त्व परकासी, ये सब होय सहाय हमारै तातैं इन थुति भासी ॥१५॥

॥ पूजा करने एवं कराने वाले भक्त के लक्षण ॥

चाल मुनियानंद—मन वच काय शुद्ध भाव समतामई, शीलजुत नार नर होय पूजा ठई।
अंत पूजा लगैं भाव ऐसो धरै, कर्म कारज तनौं लोभ सब परिहरै ॥ १६ ॥
चित्त उदार बहु दाम खरचै सही, मान छल लोभ जिस चाहि ताकी जही।
भाव शुद्ध राख तजि क्रोध सुख सौं रहै, भक्ति युत दीन ह्वै सेव जिन की करै ॥ १७ ॥

चाल सुनि भाई रे—उर निशंक परभावनी, सुनि भाई रे, होय दीर्घ पुनिवान, चेत मन भाई रे।
सहाय भ्राता होय घने, सुनि भाई रे, करुनासागर थान, चेत मन भाई रे ॥ १८ ॥
वाच्छल परणति होय सही, सुनि भाई रे, धरमधार सौं हेत, चेत मन भाई रे।
पूजा पूरन होत ही, सुनि भाई रे, मन वंछित फल देत, चेत मन भाई रे ॥ १९ ॥

॥ सामग्री—लक्षण ॥

चाल जिन जय— जल प्राशुक तुर्त को गाल्यो, शुभगंगा जलसो होय जी।
चंदन सुगंध वसाइये, अक्षत उज्ज्वल जोयजी, कीजे सब विधि देखिकै ॥ २० ॥
पुष्प सुगंध सु वृक्ष के, नैवेद सबैं रस पूराजी।

दीप रतन तम केहरा,धूप दहै अघ कूराजी, कीजे सब विधि देखिकैं ॥ २१ ॥

चाल ते गुरु— सुंदर फल प्राशुक रै, श्री फल दे आदि , जतन पूर्व निर–हिंसकी,
विधितैं अघवादि, पूजन ठानैं हरप सौं, पर भव हित काज ॥ पूजन० ॥ २२ ॥

॥ क्षेत्र शुद्धि ॥

चाल करुणाल्यो—नीतवान भूपति तहांजी, परजा सब सुखदाय । निर-हिंसक धरती भली
भूमि मलीन न पाय, भविक जन तहां शुभ उच्छव होय ॥ २३ ॥
हरित अंकुरे तहां नहीं जी, जल गाहन मग नाहिं । लूटि–खोसि जिय तहां नहिं ,
मंगल निति प्रति थांहि । भविक जन तहां शुभ उच्छव होय ॥ २४ ॥

चाल परमादी— पर दल भय जहां नाहिं, अनीत करै नहीं कोई । परस्पर सब हेत, तहां न उपद्रव जोई ॥ २५ ॥
चोरन को भय नाहिं, अन्नजल बहुतो पावै । इत्यादिक शुभ क्षेत्र, तहां जिन उच्छव थावै ॥ २६ ॥

॥ काल शुद्धि ॥

चौपई–विरखा-पवन-समै नहीं होय,स्व–पर चक्रादिक नहि जोय । इनि आदिक शुभ समयासार, सो शुभकाल प्रभावन कार ॥२७॥
दुरभिख नांहि सुखी पुर होय, संघ मांहि आकुल नहिं जोय । कुलजन सुखी सुखी तन जान, तब प्रभावना काल बखान ॥२८॥

चाल मुनियानन्द—दीन दुःखीन कौ दान करुना लिये । जस निमित दान पर-भावना चित किये ॥
घोर बाजनि तनी चवदिसा ठानिये । धामनी सकलजन शब्द जय आनिये ॥ २९ ॥
जानि इत्यादि विधि और ज्ञानी सही । करो महा जोग तिम होय पुनि की मही ।
और सुनि पाठ इस मांहि जो भेद है । जथासंभव करो भाव उरतैं वहै ॥ ३० ॥

चौपई—जंबूद्वीप जिनालय जोय, तिनकी पूजा यामैं सोय । जो भवि भाव होइ इसतनौं, तो इतनौं ही पाठ सु मनौं ॥ ३१ ॥

जो भवि द्वीप अढाई तने, जिनथलपूजन मनसा ठने । तो इतनौं ही पाठ सुभनौ, पुन्य लेय अगले अघ हनौं ॥ ३२ ॥
तेरह द्वीप तनो जिनगेह, जाको भवि पूजै कर नेह । सो भी पाठ बन्यौं इस माहि, बांचो करि विधान शुभ थांहि ।।३३॥
जो भवि कोइ सकल ही पाठ, तीन लोक जिन मंदिर ठाठ । पूजो चाहै पुन्यके काज, तो बांचो पुन्य ल्यौ शिवराज ।३४।
यह चव पाठ कहे इस मांहिं, च्यारि विधान तनी विधि ठांहि । जो विधान विधि करि भवि करै, ताविधि मंडल रचना भरै ॥३५॥
पंच वरन वानी बनवाय, रंग बनावै अति सुखदाय । यथाजोग्य मंडल विधि बनैं, सो पूजा अघकुल कौ हनैं ॥३६॥
तीन लोक जिन पूजा करै, सो त्रयलोक जनममृत हरै । होय अमूरति चेतन देव, सुरनर असुर करै तिस सेव ॥ ३७ ॥
यह पूजा विधि जो भवि धरै, सो भवि इम आलोचन करै । यह पूजा सुर हरितैं होय, कै चक्री आदिक नृप सोय ॥३८॥
कै बहु लच्छिधार जे होय, नृपति तथा जग-जेठ जु कोय । तिनतैं यह विधि पूरन थाय, मैं पुन-अल्प लहूँ अधिकाय ॥३९॥
मोतैं यह विधि किमि बनि आय, मैं तो पुन वसि भावन भाव । इत्यादिक आलोचन करै,सो जिय पूजा फल कौ धरै ॥४०॥

॥ तीनलोक के समुच्चय चैत्यालय की पूजा ॥

गीता छन्द—

तीनसै तेताल राजू घनाकार जु लोक है । बिन मूंड छीदे पाव कटि कर पूर्वमुख अवलोक है ।
त्रय वातके आधार ध्रुव निति च्यारि गति सुख दुख भरी । इन गती छेदक देव-पद हम जजनकूं मनसा करी ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक-उत्पत्तिछेदकाय नम' अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ, स्थापनं ।
अत्र मम,सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

गीता छंद—

नीर निरमल चीर दधिको कनकझारी में भरौं, अति विनयकरि मन वैन काई आप कर ले अनुसरो ।
सबलोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तिस लाभतैं जगमरणको दुख खेद बिन सहजैं तजौं ॥

ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

घसि सुगन्धित मलय चन्दन रतन पातर धारियो, तजि क्रोध मानरु लोभ माया भक्ति वसि ले टारियो ।

सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तिस लाभतैं आताप जगकी खेद बिन सुखतैं तजौं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल खंड बिन शुभ जान मुक्ता फलधरे, इक चित्त शुद्ध संवारि आछे सुभग पातरमें करे।
सो लोक जामन मरण छेदक देवके पदकूं जजौं, सोलोक के दुख छांडि सबही अखयपदकौं मैं भजौं ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

देवद्रुमके फूल उज्ज्वल गंध करि सब पूरि हैं, सो लेयकैं कर आपने में खडो देव हजूरि हैं।
सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तब काम-भट के मान मारन सांगकों मैं भी सजौं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नैवेद्य षटरस पूरि सुन्दर तुरत कर में लाईयो, धरि भले पातर मांहि उर में हरष बहुत बढाइयो।
सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तब रोग दुर्धर महा तीवर भूखकौं सहजैं तजौं ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

रतन दीपक कनक पातर धार कर जुग में लिये, अति हुलसिकैं चित मन वचन शुभ जोग जिन थुति मैं किये।
सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, फल और उरमें नाहिं वांछा तम अज्ञान सबै तजौं ॥ ६ ॥
ॐ ह्री लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

धूप गन्ध दशांग डारी भले भावनतैं-करी, धरि पात्र सुन्दर लेय निजकर खेवने की विधि धरी।
सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तब कर्म ईंधन लेय इकठा जारने को मन सजौं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो धूप निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

बिदाम श्रीफल लौंग खारक सुभग अन फल लाइयो, धरि आप कर मैं भक्ति चितकरि पूजतैं उमगाइयो।
सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तिस लाभतैं फल मोक्ष चाहूँ और वांछा ना भजौं ॥ ८ ॥
ॐ ह्री लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो फलम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल मलय अक्षत पुष्प चरु ले दीप धूप फला सही, वसु द्रव्य का शुभ अर्घ ले कर चालिये पुनि की मही।

सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, फल और उरमें चाह नाहीं काय-धरनी विधि तजों ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

लोक में उत्पत्ति मरणो फिरण अरहट ज्यों कही, थिर नाहिं जेते करम वसिहैं जगतविधि चंचल सही ।

यह छांडि जगकी रीति सब ही लोक उतपति को हरी, तिस देवके पद सेवने को अरघ हम जिन ढिग धरी ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

जयमाला

दोहा—लोक सकल सागर बन्यो, वात तीन तिस पाल, दुख जल जग-जिय जलचरा, निकलि गमनि नहिं चाल ॥ १ ॥

चाल मुनियानंद—लोक सब पूर षट् द्रव्यको मानिये, और कहु लोकको भूल नहिं जानिये ।

जीव पुद्गल धर्माधर्मकालो सही, और आकाश की जानिये सब मही ॥ २ ॥

नाम षट् द्रव्यके बोल सारे दिये, सर्व ही आप गुण परजय दृढ किये ।

नाहिं काहून तैं मिलनकी विधि करैं, आपने आपने रूप सब अनुसरैं ॥ ३ ॥

जीव जो राग वसि पार कूं निज कहै, आत्मा सोहि इस लोक में दुख लहै ।

होय नर देव परणति अपनी किये, नरक तिरजंच होय पाप परणति लिये ॥ ४ ॥

पृथ्वी अप तेज अरु वायु तनकूं धरे, हरति मे जनमभृति बार के उर धरै ।

थूल सूक्षम विषैं उपजि मरि मरि गयो, काय प्रत्येक साधारण तन भयो ॥ ५ ॥

कथा तिन दुखतनी कौन भाषै सबै, और त्रसकाय की बात सुनिये अबै ।

होय बे-इन्द्रिया बहुत दुख पाइया, त्रय चउ अक्ष में दुःख अति गाइया ॥ ६ ॥

पंच अक्ष आदि तन सकल पाये सही, दुःख ही दुःख में काय बहुती दही ।

या विधि जीवचर च्यारि गति में फिरयो, लोकथानक सकल मॉहि जनम्यो मरयो ॥ ७ ॥

भये इन दुखनितैं भीत धनि ते नरा, ठानि तप हानि कर्म थान शिव अवतरा।
जगत में फिरन की राह त्यागी सकल, होय घन ज्ञान सुख पिंड पहुई निकल ॥ ८ ॥
लोक करि पूज्य पद पाय थिरता गही, हाथ जुग जोरि हम सीस पद तिन ठही।
ज्ञानपद पाय तिन आप पद सुध कियो, और जीवनि सबैं कूं अभय पद दियो ॥ ९ ॥
ते सदा सरण मोकौं करो आपनौं, ता भजें नांहि जग पापतैं तापनौं।
छोड जगरीत कर प्रीत शिव की करी, कर्म हर देव की पूज हम इम करी ॥ १० ॥

सोरठा— तीन लोक गति छेद, अजर अमर पद जिन लयो। तिनके पद हम भेट, अष्ट विधी पूजा करी ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं लोकोत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ इति समुच्चय पूजा संपूर्ण ❀

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चाल जोगीरासा—महा बलधर पवन जु तीनौं लोक तनों आधारो, वेग तिनौं के वज्र समा हैं ध्रुव सदा अधिकारो।
ऐसी गति तजि शुद्ध भये हैं धनि तिनको जगनाथो, तिनकौं पूजौं भक्ति बढाई है भवदधिको पाथो ॥

ॐ ह्रीं त्रयवातवलयगति-छेदक-जिन अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधापनम्।

ऊपर तो तन वात पवन है वरण अनेक बताई, मोटी योजन बीस सहस है, उतकिष्टी यह गाई।
या गतिछेद भए सुध मूरति तिन गुण मुनि सुर गावैं, तिन पद अर्घजजौं मनवचतन तिन सेयाँ शिवपावैं ॥

ॐ ह्रीं तन-वातवलयगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मध्य विषैं घनवात पवन है दूजो अति बलवानो, मोटी योजन बीस सहसही मूंगवर्ण सो जानो।

या गति छेद भये सुध मूरति, तिन गुण मुनिसुर गावै, तिनपद अर्घ जजौं मनवचतन तिन सेयाँ शिव पावै।

ॐ ह्रीं घनवातवलयगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ॥

घनोदधि है पवन तीसरो गाय मूत्र रंग होई, योजन मोटो सहस बीसही उतकिष्टी यह जोई।
या गति छेद भये सुध मूरति तिन गुण मुनि सुर गावै, तिन पदअर्घ जजौं मनवचतन तिन सेयॉ शिवपावै॥३॥

ॐ ह्रीं घनोदधि-वातवलयगति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

॥ सप्त-नरक-पृथ्वी-गति-छेदक प्रत्येक अर्घ ॥

चाल जोगीरासा—— अधो भागमें पृथ्वी सात है दुख सुख रूप स्थानौ, देव बसै हैं ते सुख पावै, नरक जीव दुख मानौ।
ऐसी गतिको छेद भए सुध तिन पद धोक हमारी, आप तिरै औरन कूं तारक धन्य देव सुखकारी॥

ॐ ह्रीं सप्त-नरक-पृथ्वीगति-छेदक-जिन अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ ठः ठः, स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधापनम्।

तीन भाग पहली पृथ्वी के खर पंक अब्बहुल जानौं, एकलाख अस्सी हजार को पृथ्वी को दल मानौं।
तिन गति छेद भए सुध मूरति तिन पद धोक हमारी, अष्ट द्रव्यतैं तिनकौं पूजौं मनवचकाय सुधारी॥

ॐ ह्रीं प्रथमपृथ्वी-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

जोजन षोडश सहसतनौं दल धुनि खर भाग बतायो, तिनके नाम कहो भिन भिन करि रूप सबै भिन गायो।
तिन गति छेद भए सुध मूरति तिन पद धोक हमारी, अष्ट द्रव्यतैं तिनकौं पूजौं मनवचकाय सुधारी॥

ॐ ह्रीं खरभाग पृथ्वी-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

चौपाई—येक सहस दल मोटी जानि, चित्रा पृथ्वी पहली मान। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं चित्रा-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

दूजी वज्रा पृथिवी सही, एक सहस दल योजन कही। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं वज्रा-पृथिवी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

पृथी वैडूर्य तीसरी सार, जोजन सहस तनौ दल धार। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं वैडूर्य-पृथिवी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

पृथ्वी लोहिता चवथी कही, जोजन सहस तनो दल सही। यामैं उत्पति छेदक सोय, ते पद पूजौं अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं लोहिता-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कामसार कल्पा सो जान, जोजन सहस तनौं दल मान। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं कामसारकल्पा-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

गोमेदा पृथ्वी को नाम, जोजन सहस तनौं दल ठाम। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं गोमेदा-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

परवाला पृथ्वी को जान, जोजन सहस मुटाई मान। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रवाला-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जोतिरसा भूमि इक कही, जोजन सहस तनौ दल सही। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं ज्योतिरसा-भूमि-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

नाम अंजना नवमी धरा, जोजन सहस तनौं दल खरा। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं अंजना-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

अंजन मूलिका पृथ्वी जान, जोजन सहस तनौं दल मान। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं अंजन-मूलिका पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

अंका पृथ्वी ग्यारमी जोर, जोजन सहस मुटाई ठोर। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं अंका-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

नाम स्फटिका पृथ्वी सही, जोजन सहस येक दल कही। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं स्फटिका-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

नाम चंदना पृथ्वी कही, येक सहस दल जानौं सही। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं चंदना-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

सर्वर्थका पृथ्वी नाम, जोजन सहस तनौं दल ठाम। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं सर्वर्थका-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

वकुला नाम पृथ्वी जान, जोजन सहस तनो दल मान। तिनमैं उत्पति छेदक सोय, तिनपद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं वकुला-नाम-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

शैला पृथ्वी सोलमी सही, जोजन सहस मुटाई कही। यामैं उत्पति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय।

ॐ ह्रीं शैला-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

पंक भाग दूजो मन लाय, चउ–असि जोजन सहस बताय, यामैं उत्पति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पंकभाग–पृथ्वी–उत्पत्ति–छेदक–जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

गीता छन्द—

तृतिय अब्बुलभाग दुखमय तहां पहला नरक है, बाहुल्य अस्सी सहस जोजन भाग इस भू का कहै।
तहां पटल तेरह पापको फल, अशुभ परणति तैं परै, या गती भाव निवार सुध ह्वै पूज तिन पद अघ हरै।

ॐ ह्रीं अब्बहुलभाग-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

अडिल्ल छन्द—

पहला नरक का पटल प्रथमही जानिये, सीमन्त नामा इन्द्रक बिल तहँ मानिये।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पापगति तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम पृथ्वीका प्रथम पटलविषैं सीमन्त-इन्द्रक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥

प्रथम नरक का पटल प्रथम जानौं सही, श्रेणि–बद्ध तहां बिल है महादुख की मही।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पापगति तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक का प्रथम पटल विषैं श्रेणीबद्ध-उत्पत्ति–छेदक–जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

घम्मा नरक पटल पहले में जानिये, परकीर्णक असथान महादुख थानिये।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पाप गति तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक के प्रथम पटल विषैं प्रकीर्णक-इन्द्रक-बिल–उत्पत्ति–छेदक–जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

रतन प्रभा नरक तनों पटल दूजौ सही, निरय नामसु इन्द्रक बिल अघ की मही।

ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पापगति तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक का दूजा पटल सम्बन्धि-निरयनाम-इन्द्रक-बिल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

प्रथम नरक का दूजा पटल बखानिये, श्रेणी बद्ध जहँ बिल है बहु दुख मानिये।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पापगति तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक का दूजा पटल सम्बन्धी श्रेणीबद्ध-बिल-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

प्रथम नरक का दूजा पटल बखानिये, परकीर्णक तहां बिल है महा दुख मानिये।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पापठिग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक का दूजा पटल सम्बन्धी प्रकीर्णक-बिल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २६ ॥

रतन प्रभा नर्कपटल तीजो अघ भरा, रौरव नामा इन्द्रक बिल है तहां परा।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पाप ठिग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक का तीसरा पटल विषैं रौरव नामा इन्द्रक-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अघम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २७ ॥

प्रथम नरक के पटल तीसरे में सही, श्रेणि-बद्ध दुखथान बिलय अघकी मही।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पाप ठिग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक के तीजे पटल विषैं श्रेणी-बद्ध-बिल-उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २८ ॥

नरक प्रथम का पटल तीसरा ता विषैं, परकीर्णक अति संकट थल बिलय अखै।
ताकी उत्पति छेदक सुध मूरति भये, तापदपूजत अरघ पाप ठिग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक का तीसरा पटल विषैं प्रकीर्ण बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २९ ॥

प्रथम नरक का पटल चतुरथ जानिये, भ्रांतनाम तहां इन्द्रक बिलय बखानिये।
ताकी उत्पति छेदक शुद्ध मूरति भए, तापद पूजत अरघ पाप ठिग तजि गए ॥ ३० ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक का चतुर्थ पटल संबन्धो भ्रात नामा बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३०॥

प्रथम नरक का पटल चतुरथ है सही, श्रेणि-बद्ध तहाँ-बिलय-बडे-दुःख की मही।

अडिल्ल छंद— ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भए, ता पद पूजत अरघ पाप ठिग तजि गए ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकसंबन्धि–चतुर्थपटल–श्रेणिबद्ध–बिल–उत्पत्ति–छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३१ ॥

प्रथम नरक का पटल चतूरथ है सही, ताके ही परकीर्ण विलय अति दुख मई।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, तापद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम-नरक-चतुर्थपटल संबंधि-प्रकीर्ण-बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति-स्वाहा ॥ ३२ ॥

प्रथम नरक पंचम पटल दुखदाय है, उद्भ्रांतक तहां इन्द्रक विलय सुभाय है।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकपंचमपटलसम्बन्धि-उद्भ्रांतकनाम-इन्द्रकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३३ ॥

आदि नरक का पटल पंचमा नित सही, श्रेणीबद्ध तहां विलय महा अनरथ मई।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भयें, ता पद पूजन अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरक-पंचमपटलसंबंधि-श्रेणीबद्ध-इन्द्रक-बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३४ ॥

पहले नरक तना पंचम पाथड़ सही, ताके परकीर्णक बिल है सब दुख मई।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरक-पंचमपटल-संबंधि–प्रकीर्णक-इन्द्रक बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ ३५ ॥

प्रथम शुभ्रमें पटल षष्ठ दुख भूमि है, शुभ्रान्तक तहां विलय इन्द्र अघ मूल है।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरक-षष्ठ–पटलसबंधि-संभ्रांतक-इन्द्रक-बिल-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३६ ॥

पहले नरक तना षष्ठम पाथड़ सही, श्रेणिबद्ध तहां बिलय महा अड़बड़ मही।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक-षष्ठम-पटल-संबधि-श्रेणी–बद्ध-इन्द्रक-बिल-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३७ ॥

अडिल्ल छंद— धम्मा नरक तणां ग्यारम पाथड़ सही, ताकी श्रेणी रूप बिलय दुख थल ठही ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरक-एकादशमपटलसंबंधि-श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५२ ॥

आदि नरक का पटल ग्यारवां जानिये, परकीरण तहां विलय महा अघ खानिये ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरक-एकादशमपटलसंबधि-श्रेणीवद्धविल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५३ ॥

रतन प्रभा के मांहि पटल बारम कह्यो, इन्द्रक अव क्रान्तक तहाँ दुखमय ठह्यो ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकद्वादशमपटल सम्बन्धि-अवक्रान्तकनामइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

प्रथम नरक के पटल बारमें के विषैं, श्रेणी बद्ध तहाँ विलय महा दुख थल अखै ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकद्वादशमपटलसबंधि-श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५५ ॥

घम्मा नरक संबंधी बारम पटल में, परकीरण अघ थान विलय दुख थल पमैं ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकद्वादशमपटलसंबधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५६ ॥

प्रथम नरक का पटल तेरवां दुख धरा; विक्रान्त नामक इन्द्रक विलय जु है खरा ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकत्रयोदशमपटलसबधि-विक्रान्तनामइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५७ ॥

प्रथम नरक का पटल अन्त का है सहीं, श्रेणी बद्ध तहां विलय महा तपती मही ।
ताकी उत्पति छेदन शुध्र मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकत्रयोदशमपटलसंबधि-श्रेणीबद्धबिल-उत्पति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निवपामीति स्वाहा ॥ ५८ ॥

आदि नरक का पटल तेरवां जानिये, परकीरण तहां विलय थान अघ खानिये ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरक-अंतिमपटलसंबंधी-प्रकीर्णकविल-उत्पति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५९ ॥

प्रथम नरक की एक समुद की आयु है, हाथ सवा इकतीस तनी तहां काय है ।
ताकी उत्पति छेदक शुध मूरति भये, ता पद पूजत अरघ पाप ठग तजि गये ॥

ॐ ह्रीं प्रथमनरकउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घ निर्वपामीत्ति स्वाहा ॥ ६० ॥ (इति प्रथम नरक पूजा)

॥ द्वितीय नरक पृथ्वी सम्बन्धी पूजा ॥

छंद हरिगीतिका—यह दूसरो है नरक दुखमय, स्थूल सहस बतीसही, जहँ पटल ग्यारह काय बासठ, अर्द्ध जिन देवन कही ।
भू शर्करा है प्रभा जाको, नाम दुख थल बनि रह्यो, इस गती छेदक देवके पद, सेवतें भव लघु भयो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकउत्पत्ति-छेदक-जिन अत्रावतरावतर संवौषट, आह्वाननं। ॐ ह्रीं द्वितीयनरकउत्पत्ति-छेदक-जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ' ठ', स्थापनं। ॐ ह्रीं द्वितीयनरकउत्पत्ति-छेदक-जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छंद जोगीरासा— वंशा नामा नरक दूसरा, बहुत विलय का धारी, पापी जीव करे परणति दुठ, लेय यहां अवतारी ।
या गति छेद भये भव पारक, तिन ढिंग अर्घ धराई, अर्घ यजौं हितकार भली विधि, अंत लगे सुख दाई ॥

ॐ ह्रीं वंशानामा-पृथ्वी-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६७ ॥

नरक दूसरो है दुख थानक, पाथड़ ग्यारह पावे, ताके पहले पटल विषै है, इन्द्रक ततक धरावे ।
क्रोध मान माया छल धारक, जीव तहां तिथि ठाने । सो गति छेद गये शिव मारग, अर्घ तिन्हें पद जाने ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरक-प्रथमपटल सबंधि ततकनामइन्द्रक-विल-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६८ ॥

छंद बेसरी—द्वितिय नरकका परथम पटला, श्रेणीबद्ध विलय तहं अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकप्रथमपटलसबंधि-श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६९ ॥

नरक दूसरो पहला पटला, विलय प्रकीरण है तहं अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरकप्रथमपटलसंबधी–प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७० ॥
द्वितिय नरक का दूजा पटला, स्तनक इन्द्र विलय तहां अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरक द्वितीयपटलसंबधी–स्तनक नामइन्द्रक-विल–उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७१ ॥
द्वितिय नरक का दूजा पटला, श्रेणी बद्ध विलय तहां अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरक-द्वितीयपटलसंबधी-श्रेणीबद्ध–विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७२ ॥
द्वितिय नरक का दूजा पटला, विलय तहां परकीरण अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरक-द्वितीयपटलसंबधी-प्रकीर्णक विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७३ ॥
द्वितिय नरक का तीजा पटला, वनक नाम इन्द्रक तहां अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरक तृतीयपटलसंबंधि-वनकनामइन्द्रक-विल उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७४ ॥
नरक दूसरा तीजा पटला, तिनके श्रेणी विलये अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरक-तृतीयपटलसंबधि–श्रेणीबद्ध-विल–उत्पत्ति–छेदक–जिनेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्वाहा॥ ७५ ॥
नरक दूसरा तीजा पटला, परकीरण तहां विलय सु अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरकतृतीयपटलसंबंधी–प्रकीर्णक-विल–उत्पत्तिछेदक–जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७६ ॥
शुभ्र दूसरा चौथा पटला, मनक इंद्र विलय तहां अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरक-चतुर्थपटलसंबंधी–मनक-इन्द्रक-विल–उत्पत्ति–छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीत स्वाहा ॥ ७७ ॥
नरक दूसरा चौथा पटला, श्रेणी बद्ध विलय तहां अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरक–चतुर्थपटलसंबन्धि–श्रेणीबद्ध विल- उत्पत्ति–छेदक–जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७८ ॥
नरक दूसरा चौथा पटला, प्रकीर्णक विलय तहां है अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयनरकचतुर्थपटलसंबन्धि–प्रकीर्णक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७९ ॥

नरक दूसरा पंचम पटला, खड़ा नाम तहां इन्द्रक अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकपंचमपटलसम्बन्धि-खडानाम इंद्रक बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८० ॥

द्वितीय नरक का पंचम पटला, श्रेणी बद्ध बिलय तहां अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकपंचमपटलसम्बन्धि-श्रेणीबद्ध-बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८१ ॥

नरक दूसरा पंचम पटला, प्रकीर्णक तहां इन्द्रक अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकपंचमपटलसंबन्धि-प्रकीर्णकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८२ ॥

द्वितीय नरक का षष्ठम पटला, खडिका नाम इन्द्रक तहां अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकषष्ठमपटलसंबन्धि-खडिकानामइन्द्रक-बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८३ ॥

नरक दूसरा षष्ठम पटला, श्रेणी बद्ध बिलय तहाँ अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकषष्ठमपटलसंबंधी-श्रेणीबद्धबिलउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ८४ ॥

द्वितीय नरक का षष्ठम पटला, बिलय प्रकीर्णक तामें अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकषष्ठमपटलसंबधी-प्रकीर्णक बिलउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ८५ ॥

नरक दूसरा सप्तम पटला, जिव्हा नाम इन्द्रक तहाँ अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकसप्तमपटलसंबधी- प्रकीर्णकबिल-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ८६ ॥

द्वितीय नरक का सप्तम पटला, श्रेणी बद्ध बिलय तहाँ अटला । या गति छेद शुद्ध पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकसप्तमपटलसंबधि-श्रेणीबद्धबिल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ८७ ॥

द्वितीय नरक का सप्तम पटला, बिलय तहाँ प्रकीर्णक अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकसप्तमपटलसंबंधि-प्रकीर्णकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ८८ ॥

नरक दूसरा अष्टम पटला, नाम जिह्विक इन्द्रक तहाँ अटला । या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकअष्टमपटलसम्बन्धि-जिह्विकनामइन्द्रकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८९ ॥

द्वितिय नरक का अष्टम पटला, श्रेणी बद्ध विलय तहाँ अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकअष्टमपटलसम्बन्धि-श्रेणीबद्ध-विलउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९० ॥

नरक दूसरा अष्टम पटला, विलय प्रकीर्णक तामैं अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढ़ायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकअष्टमपटलसंबन्धि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९१ ॥

द्वितिय नरक का नवमा पटला, लौलिक नाम इन्द्रक तहां अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो।

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकनवमपटलसंबन्धि-लौलिकनामइन्द्रक विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९२ ॥

नरक दूसरा नवमा पटला, श्रेणी बद्ध विलय तहां अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकनवमपटलसंबंधि-श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९३ ॥

शुभ्र दूसरा नवमा पटला, विलय प्रकीर्णक है तहां अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकनवमपटलसंबन्धि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९४ ॥

द्वितीय नरक का दशमा पटला, इन्द्रक लोलवत्स है अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकदशमपटलसंबन्धि-लोलवत्सनामइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९५ ॥

द्वितीय नरक का दशमा पटला, श्रेणी बद्ध विलय तहां अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकदशमपटलसंबधि-श्रेणीबद्ध विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९६ ॥

नरक दूसरा दशमा पटला, विलय प्रकीर्णक है तहां अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकदशमपटलसंबंधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९७ ॥

नरक दूसरा ग्यारम पटला, स्तनलोला इन्द्रक है अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकएकादशमपटलसंबन्धि-स्तनलोलानामइन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९८ ॥

नरक दूसरा ग्यारम पटला, श्रेणीबद्ध विलय तहां अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकएकादशमपटलसंबंधि-श्रेणीबद्ध-विलउत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९९ ॥

नरक दूसरा ग्यारम पटला, विलय प्रकीर्णक है तहां अटला। या गति छेद शुद्ध पद पायो, तिन पद हमने अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकएकादशमपटलसंबंधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०० ॥

छंद जोगीरासा—नरक दूसरा ग्यारम पटला, सब ही संकट दाई। विलय लाख पच्चीस कहे तहां, अग्नि मई अधिकाई ॥
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनपद शीश नमाऊं। अष्ट द्रव्य करि अर्घ ठानिके, हुलसे अंग चढाऊं ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयनरकसंबंधि-पच्चीसलाखविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०१ ॥

❀ इति द्वितीय नरक पृथ्वी सम्बन्धी पूजा ❀

॥ तृतीय नरक पृथ्वी सम्बन्धी पूजा ॥

छंद अडिल्ल—तृतीय नरक की काय सवा सै कर कही, आयु सात सागर नव पटल विषै मही।
पापी जीव महा दुखकर तहां दिन भरैं, या गति छेदक देव जजों सिध सुर करैं ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरकसम्बन्धि-नवपटल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०२ ॥

नरक तीसरे प्रथम पाथडे जानिये, तप्त नाम तहां इन्द्रक विलय बखानिये।
या गति छेदक देव सोय नित ही जजों, अर्घ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-प्रथमपटल-सम्बन्धि-तप्तनाम-इन्द्रक-विलउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाह ॥ १०३ ॥

तृतिय नरक के पहले पटलक में सही, श्रेणी बद्ध सु विलय महा संकट मही।
या गति छेदक देव सोय नित ही जजों, अर्घ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-प्रथमपटलसम्बन्धि-श्रेणीवद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०४ ॥

प्रभा वालुका पटल प्रथम ही जानिये, परकीरण तहां विलय खानि दुख मानिये।
या गति छेदक देव सोय नित ही जजों, अर्घ थकी चितलाय नाम निश दिन भजों ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-प्रथमपटलसम्बन्धिप्रकीर्णक-विल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०५ ॥

अडिल्ल छंद—नरक तीसरा तनों पटल दूजो सही, इन्द्रक विलय सुनाम तपित दुख की मही।
या गति छेदक देव सोय नित ही जजों, अर्घ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-द्वितीयपटलसम्बन्धि-तपितनामइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०६ ॥

लोक

मेघा नरक का पटल दूसरा की सुनो, श्रेणीवद्ध जे विलय महा दुखमय गिनो।
या गति छेदक देव सोय नित ही जजों, अर्घ थकी चितलाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-द्वितीयपटलसम्बन्धि-श्रेणीवद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०७ ॥

तृतिय नरक का पटल दूसरा दुख धरा, परकीरण तिस मांहि विलय तहां दुठचरा।
या गति छेदक देव सोय नित ही जजों, अर्घ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-द्वितीयपटलसम्बन्धिप्रकीर्णक-विल-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०८ ॥

नरक तीसरा माहि पटल तीजा गिनो, तपन नाम तहां इन्द्रक विल सुखको हनो।
या गति छदक देव सोय नित ही जजो, अर्घ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-तृतीयपटलसम्बन्धि-तपननामइन्द्रकविल-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०९ ॥

नरक तीसरा नाम पटल तीजा सही, श्रेणिवद्ध है विलय तहां दुख धाम ही।
या गति छेदक देव सोय नितही जजों, अर्घ थकी चितलाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-तृतीयपटलसम्बन्धि श्रेणिबद्धविल—उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११० ॥

तीजे नरक का पटल तीसरा सार है, परकीरण तहां विलय पाप उनहार है।
या गति छेदक देव सोय नित ही जजों, अर्घ थकी चितलाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-तृतीयपटलसम्बन्धि-प्रकीर्णकविल—उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १११ ॥

तृतीय नरक का चौथा पटल बताइया, तापन नामा विलय इन्द्र तहां गाइया।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजो ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-चतुर्थपटलसम्बन्धि तापननामाइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११२ ॥

अडिल्ल छंद—नरक तीसरा मांहि पटल चवथा सही, श्रेणी बद्ध बिलय तिस में अघ की मही ।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-चतुर्थपटलसंबंधी श्रेणीबद्धबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११३ ॥

तीजा सुव्रत नरक चतुर पाथड़ कहा, परकीरण तहां बिलय घोर दुख कर तहां ।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-चतुर्थपटलसंबंधी-प्रकीर्णकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११४ ॥

तीजे नरक को पटल पंचमो है सही, इन्द्र निदाघ सु नाम तहां दुख धाम ही ।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-पंचमपटलसंबंधि-निदाघनामइन्द्रकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११५ ॥

तीजे नरक का पटल पंचमा मानिये, श्रेणि बद्ध तहां बिलय दुःख थल जानिये ।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-पंचमपटलसंबंधी-श्रेणीबद्धबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११६ ॥

नरक तीसरा तना पटल पंचम बुरा, परकीरण तहां बिलय महा अघ का करा ।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-पंचमपटलसंबंधि-प्रकीर्णकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११७ ॥

तीजे नरक का पटल षष्ठमा धारिये, उज्ज्वलित है इन्द्रक बिल अघकारिये ।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-षष्ठमपटलसंबंधि-उज्ज्वलितनामइन्द्रकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११८ ॥

नरक तीसरे तनो पटल षष्ठम सही, श्रेणी बध है बिलय तहां संकट मई ।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ।
ॐ ह्रीं तृतीयनरक-षष्ठमपटलसंबंधि-श्रेणीबद्धबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११९ ॥

अडिल्ल छंद—तीजे नरक का पटल षष्ठमा है सरू, परकीरण तहां विलय पाप मय है खरू।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-षष्ठमपटलसंबंधी-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२०॥

तीजे नरक का पटल सातमां अगनिसा, इन्द्र नाम तहा विलय जलै दावाग्निसा।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-सप्तमपटलसंबंधि-प्रज्वलितनामइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२१॥

नरक तीसरा तना पटल सप्तम सही, श्रेणी-बध तहां विलय महां अघ की मही।
या गति छेदक सोय देव नित ही जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक सप्तमपटलसम्बन्धि श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२२॥

नरक तीसरा तना पटल सप्तम सही, परकीरण तहाँ विलय अनोखी दुख मही।
या गति छेदक सोय ताको जजों, अरघ थकी चितलाय नाम निश दिन भजों॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-सप्तमपटलसबंधि-प्रकीर्ण-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२३॥

तीजे नरक का पटल आठवां जानिये, नाम इन्द्र संज्वलित विलय का मानिये।
या गति छेदक सोय देव ताको जजों,अरघ थकी चितलाय नाम निश दिन भजों॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-अष्ठमपटलसंबंधि-संज्वलितनाम-इन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ १२४॥

नरक तीसरा पटल आठवॉ है कहा, श्रेणीवद्धतहॉ जीव पाप बसि अति दहा।
या गति छेदक सोय देव ताको जजों, अरघ थकी चितलाय नाम निश दिन भजों॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-अष्टमपटलसवन्धि-श्रेणीवद्ध-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२५॥

नरक तीसरा पटल आठमां जोइये, परकीरण तहां विलय बडे दुख होइये।
या गति छेदक सोय देव ताको जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों॥

ॐ ह्रीं तृतोयनरक-अष्टमपटल-सबंधि-प्रकीर्णक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२६॥

छंद अडिल्ल—तृतिय नरक का पटल नवम दुखमय बना, इन्द्रक संप्रज्वलित नाम बिल है ठना।
या गति छेदक सोय देव ताको जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-नवमपटलसंबंधि-संप्रज्वलितनाम-इन्द्रकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२७ ॥

तृतिय नरक का नवम पाथड़ा जोइये, श्रेणिबद्ध तहां बिलय महा दुख होइये।
या गति छेदक सोय देव ताको जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक नवमपटलसंबंधि-श्रेणीबद्ध-बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२८ ॥

नरक तीसरा तना पटल नवमा सही, परकीरण तहां बिलय महा अटपट मही।
या गति छेदक सोय देव ताको जजों, अरघ थकी चित लाय नाम निश दिन भजों ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-नवमपटलसंबंधि-प्रकीर्णक-बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२९ ॥

मेघा तीजी नरक धरा जाड़ी सही, जोजन अट्ठाईस सहस अध कर मही।
पन्द्रह लाख बिला तिस थानक पाइये, या गति छेदक देव तनो यश गाइये ॥

ॐ ह्रीं तृतीयनरक-संबंधि-पन्द्रहलक्षबिल-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३० ॥

❀ इति तृतीय नरक कथन संपूर्णम् ❀

॥ चतुर्थ नरक पृथ्वी संबंधी पूजा ॥

चाल—मुनियानन्द. छंद—लक्ष्मीवती,

छंद लक्ष्मीवती—नरक चवथा तना पटल पहला सही, नाम आरा तहां बिलय इंद्रक कही।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-प्रथमपटलसंबंधि-आरानामइन्द्रकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३१ ॥

नरक चवथा तना पटल पहला कहा, बिलय श्रेणी तहां जीव बहु दुख लहा।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-प्रथमपटल-संबंधी-श्रेणी बद्ध-बिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३२ ॥

छंद लक्ष्मीवती— नरक चवथा तनो पटल पहलो कह्यो, विलय परकीर्ण तहाँ दुःख दधि थनि रह्यो ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहैं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ-नरक-प्रथमपटलसंबंधि-प्रकीर्ण-विल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३३ ॥

नरक अंजन तनो पटल दूजो कह्यो, नाम मारा जु इन्द्रक विलो दुख भयो ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहैं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक द्वितीयपटल-संबन्धि-मारा-नामइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३४ ॥

नरक चवथा तनो पटल दूजो कह्यो, ताम में श्रेणि बद्ध विल दुखको रह्यो ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहैं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकद्वितीयपटलसंबंधि-श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३५ ॥

नरक चवथा तनो पटल दूजो सही, विलय परकीर्ण की अगनि सी भू कही ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहैं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ नरक-द्वितीयपटलसंबंधि-प्रकीर्णक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३६ ॥

नरक चवथा तनों पटल तीजो सही, नाम तारा तहाँ विलय इन्द्रक कही ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहैं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-तृतीयपटलसंबंधि-तारानाम-इन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १३७ ॥

पंक परभा तने तीसरे पटल की, विलय श्रेणी तने जानिये अटल की ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहैं ॥

ॐ ह्रीं पंकप्रभानामनरक तृतीयपटल-संबंधि-श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३८ ॥

नरक चवथा तने पटल तीजे सरू, विलय परकीर्ण तहां तपत है अति घरू ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गति छेद पद पूज्य सब जग कहैं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकतृतीयपटलसंबंधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३९ ॥

छंद लक्ष्मीवती—नरक चवथा तनो पटल चवथो लयो, इन्द्र चर्चा तहां नाम खोटो लयो ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-चतुर्थपटलसबंधी-चर्चानामइन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४० ॥

पंक प्रभ नरक का पटल चवथा लिया, बिल तहां श्रेणि-बद्ध दीर्घ दुखतैं किया ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-चतुर्थपटलसंबधि-श्रेणिबद्ध-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४१ ॥

नरक चवथा विषैं विलय अघ रूपजी, जानि परकीर्ण महा दुःख मय रूपजी ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-चतुर्थपटलसंबधी-प्रकीर्णक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४२ ॥

नरक चवथा तना पटल पंचम सही, नाम इन्द्रक विलै पूर तमकी रही ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-पंचमपटलसबधि-तमकीनामइन्द्रक-विल उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४३ ॥

नरक चवथा तनो पटल पंचम अयो, श्रेणी बद्ध विल तहाँ घोर दुख को ठयो ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहैं, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-पंचम-पटलसबंधि-श्रेणी-बद्ध-विल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४४ ॥

नरक चथवा तने पटल पंचम विखै, विलय परकीर्ण अति दुःख सेती अखै ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकपंचमपटलसबधि-प्रकीर्णविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४५ ॥

पंक परभा तनों पटल षष्ठम लहयो, बिल घाटा जु इंद्रक प्रभूने कहयो ।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकपष्ठमपटलसंबधि-घाटा-नाम इन्द्रकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४६ ॥

छंद लक्ष्मीवती—नरक चवथा तने पटल षष्ठम सही, श्रेणीबद्ध बिल तहाँ घोर पाप की मही।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकपष्ठमपटलसंबंधि-श्रेणीबद्धबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १४७॥

नरक चवथा तने पटल षष्ठम भने, बिलय परकीर्ण तहां दुःख पूरण सने।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकषष्ठमपटलसंबंधि-प्रकीर्णक-बिल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ १४८॥

पंक परभा तनो पटल सप्तम कह्यो, बिल घटा नाम इन्द्रक तहां बनि रह्यो।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै॥

ॐ ह्रीं पंकप्रभा-सप्तमपटलसंबंधि-प्रकीर्णकबिल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १४९॥

नरक चवथा पटल सातमा जानिये, बिलय श्रेणी तहा पाप दुःख खानिये।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकसप्तमपटलसम्बन्धि-श्रेणीबद्ध-बिलउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ १५०॥

अंजना नरक का सातमा पटल है, बिलय परकीर्ण तहां दुःख ते अटल है।
पाप जुत जीव जे वास याको लहै, या गती छेद पद पूज्य सब जग कहै॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरकसप्तमपटलसंबंधी-प्रकीर्णकबिल उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्योऽर्घं निर्वपामिति स्वाहा॥ १५१॥

नरक चवथा तहां आयु दश समुद्रकी, भूमि जाड़ी सहस योजन चौबीस की।
बिलय दश लाख महा पाप को धाम है, या गती छेद को है शिव काम है॥

ॐ ह्रीं चतुर्थनरक-सप्तमपटलसंबंधि-दशलक्षबिल-उत्पत्ति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १५२॥

❀ इति चतुर्थ-नरक-वर्णन संपूर्ण ❀

॥ अथ पंचम नरक पृथ्वी सम्बन्धी पूजा ॥

अडिल्ल छंद—पंचम नरक विषै पाथड़ पांचों कहे, काय सवासै धनुष तुंग बहु दुख महे ।
या गति छेदक देव जजों थुति लाय कैं, मुझको देहु छुड़ाय जगत दुख भायकैं ॥

ॐ ह्रीं पचमनरक-पचपटलसंबंधि उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५३ ॥

छंद–हरि गीतिका (मात्रा २८) यति १६,१२

हरिगीतिका—पंचम नरक का प्रथम पटला, दुख थकी पूरन भरा । तहां विलय इन्द्रक नाम तमका, रोसका यह दधि भरा ।
या गतिच्छेदक देव के पद, द्रव्य वसुतैं पूजिये । तिस फलै आप सरूप जानें अघ अरी सब धूजिये ॥

ॐ ह्रीं पंचमनरकप्रथमपटलसंबन्धि–तमकानामइन्द्रक–विल–उत्पत्ति–छेदक–जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५४ ॥

नरक पंचम महा अघकर, जीव व्यसनी अवतरै । तहां विलय श्रेणी बद्ध दुख थल, पटल पहले हैं खरै ॥
या गतिच्छेदक देव के पद, द्रव्य वसुतैं पूजिये । तिस फलै आप सरूप जानें, अघ अरी सब धूजिये ॥

ॐ ह्रीं पंचमनरकप्रथमपटलसंबंधि–श्रेणिबद्धविल–उत्पत्ति–छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५५ ॥

धूम परभा नरक पंचम, पटल पहलो इस तनों । तहां विलय बहु परकीर्ण दुख थल, क्रोध के फल तें घनों ।
या गतिच्छेदक देव के पद, द्रव्य वसु त पूजिये । तिस फलै आप सरूप जानें, अघ अरी सब धूजिये ॥

ॐ ह्रीं पचमनरकप्रथमपटलसंबंधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५६ ॥

पंचम नरक का पटल दूजा, जीव हिंसा तें लहै । नाम भ्रमका विलय इन्द्रक, जीव तहं जरतो रहै ।
या गतिच्छेदक देव के पद द्रव्य वसुतैं पूजिये । तिस फलै आप सरूप जानें, अघ अरी सब धूजिये ॥

ॐ ह्रीं पचमनरक-द्वितीयपटलसम्बन्ध–भ्रमकानामइन्द्रकविल उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५७ ॥

चाल-मुनियानंद (छंद-लक्ष्मीवती)

धूम परभा नरक पांचमा है सही, दूसरे पटल तिस विलय श्रेणी कही ।
या गतिच्छेदका देव जिन पूज्य है, जजों शुभ अर्घ इन पद अघ धूज्य हैं ॥

ॐ ह्रीं पंचमनरकद्वितीयपटलसंबन्ध-श्रेणीबद्ध-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५८ ॥

छंद अडिल्ल—नरक अरिष्टा पंचम अघकर सों लहै, ताके दूजे पटल प्रकीर्ण तहां रहै ।
या उत्पति छेद शुद्ध मूरति भये, तिन पद अर्घ चढाय महा शुभ फल लये ॥

ॐ पंचमनरकद्वितीयपटलसंबंधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ १५६ ॥

छंद हरिगीतिका—नरक पंचम पटल तीजा, नाम झषका आनिये । खानि दुख की है अपूरव, भोगवें ते जानिये ।
ऐसी अनादी बनी रचना, भरम काठ जराइयो । तिस पदैं अर्घ चढाय वसु द्रव, भक्ति तैं अघ ढाइयो ॥

ॐ ह्रीं पंचमनरकतृतीयपटलसंबन्धि-झषकानाम-इंद्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६० ॥

इमि नरक पंचम पटल तीजा, दुःख की कथनी कहा । तहाँ विलय श्रेणी बद्ध दुःखम, पापकर जीवन लहा ।
या गतिच्छेदक रूप साध्यो, आप शुध मूरति भये । वसु द्रव्य लाय चढाय जिनके, पाप दल कूं जल लये ॥

ॐ ह्रींपंचमनरकमपटलसंबन्धि-श्रेणीबद्धविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६१ ॥

यह नरक पंचम पटल तीजा, प्रकट अति दुख की मही । तहँ विलय परकीरण सुथानक, परसपर अति दुख सही ।
या गतिच्छेदक देवके पद, अरघ ते पूजन करों । ता फलै पाप निवारि अपने, भाव शुध को अनुसरों ॥

ॐ ह्रीं पंचमनरकतृतीयपटलसबधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६२ ॥

लखि नरक पंचम पटल चौथा, जीव सब दुख तें रहैं । है अधेन्द्रा नाम इन्द्रक पाप बसि यहाँ थिति लहै ।
या गतिच्छेदक देव के पद, अरघ तें पूजन करों । ता फलै पाप निवारि अपने, भाव शुध को अनुसरों ॥

ॐ ह्रीं पंचमनरकचतुर्थपटलसंबन्धि-अर्धेंद्रनामकइन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६३ ॥

छन्द अरिल्ल—नरक अरिष्टा तनो पटल चवथा सही, श्रेणि-बद्ध दुख थान विलय कर अघ मही।
या गति छेदक देव तनों पद ध्याइये, वसु द्रव अर्घ चढाय भक्ति गुण गाइये ॥
ॐ ह्रीं पंचमनरकचतुर्थपटलसंबन्धि-श्रेणिबद्ध-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६४ ॥

पंचम नरक स्थान पटल चथवा कहा, परकीरण तहाँ विलय दोष थानक ठहा।
या गति छेदक देव तने पद ध्याइये, वसु द्रव अर्घ चढाय भक्ति गुण गाइये ॥
ॐ ह्रीं पचमनरकचतुर्थपटलसंबन्धि-प्रकीर्ण-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६५॥

पंचम नरक जु पंचम पटल वखानिये, नाम तिमिश्रक इन्द्रक अतिभय दानिये।
या गति छेदक देव तने पद ध्याइये, वसु द्रव अर्घ चढाय भक्ति गुण गाइये ॥
ॐ ह्रीं पंचमनरक-पंचमपटलसंबंधि-तिमिश्रका-इन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६६ ॥

पंचम नरक सु पंचम पटल वखानिये, श्रेणि बद्ध तहाँ विलय दुष्ट थल मानिये।
या गति छेदक देव तने पद ध्याइये, वसु द्रव अर्घ चढाय भक्ति गुण गाइये ॥
ॐ ह्रीं पंचमनरक-पंचमपटलसंबन्धि-श्रेणिवद्ध-विलउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६७ ॥

नरक पंचमा तना पटल पंचम सही, परकीरण तहाँ विलय बड़ा संकट मही।
या गति छेदक देव तने पद ध्याइये, वसु द्रव अर्घ चढाय भक्ति गुण गाइये ॥
ॐ ह्रीं पचमनरकपंचमपटलसंबन्धि-प्रकीर्णक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६८ ॥

चौपई:—पृथ्वी पंचम नरक बखान, जोजन सहस बीस दल मान। ता मधि पटल पांच दुख पाय, यागति छेद जजों जिन राय ॥
ॐ ह्रीं विंशतिसहस्रयोजनस्थूल-पंचम-नरक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ १६९ ॥

॥ इति पंचम नरक पृथ्वी पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ षष्ठम पृथ्वी नरक सम्बन्धी पूजा ॥

चोपाई--षष्ठम नरक पटल त्रय जान, द्विशत पचास धनुष तन ठान । बीस दोय सागर की आय, या गति छेद जजों जिनराय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमनरकसंबंधि-दु.ख-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७० ॥

छंद जोगीरासा--नरक छठे को प्रथम पाठड़ो, अति दुख थानक गायो । ताहि मांहि हिम नामा इन्द्रक, पापी जीवन पायो ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरष हरष गुणगाऊं ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमनरक:प्रथमपटलसबंधि-हिम-नामाइन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७१ ॥

मघवी नारक प्रथम पटल है, पाखंडी जन पावै । श्रेणी बद्ध विलय अति दीरघ, जीव तहां दुख पावै ॥
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके हरष हरष गुणगाऊं ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमनरक-प्रथमपटलसबन्धि-श्रेणीवद्ध-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७२ ॥

षष्ठम नरक अधिक दुख दायक, प्रथम पटल तहां जानो । परकीरण तहां विलय अनूपम, संकट को थल मानो ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरष हरष गुणगाऊं ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमनरक-प्रथमपटलसम्बन्धिप्रकीर्णक-विल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७३ ॥

नरक छठा का पटल दूसरा, नीच संग तैं पावै । नाम वार्दलि इन्द्रक तामें, अति संकट जिय धावै ॥
या गति छेद भये शुद्ध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरख हरख गुणगाऊं ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमनरकद्वितीयपटलसबंधिवार्दलि-नामाइन्द्रक-विल-उत्पति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७४ ॥

नरक छठे का पटल दूसरा, अद्भुत संकट दाई । श्रेणी बद्ध विलय अति जानो, सो भू पापिन पाई ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरष हरष गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रींषष्ठमनरक-द्वितीयपटलसम्बन्धिश्रेणिबद्धविल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७५ ॥

छंद जोगीरासा—मघवी नरक तना दुख दायक, पटल दूसरा जानो । परकीरण तहां विलय अटपटा, जीव भयानक मानो ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करिके, हरप हरप गुण गाऊं ॥
ॐ ह्रीं षष्ठमनरक-द्वितीयपटलसंबधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७६ ॥

नरक छठे का पटल तीसरा, अनरथ मूल बतायो । लल्लकि नामक इन्द्रक बिल जहं शीत वेदना पायो ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरप हरप गुण गाऊं ॥
ॐ ह्रीं षष्ठमनरकतृतीयपटलसंबधिलल्लकिनामइन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७७ ॥

षष्ठम नारक पटल तीसरा, उपमा विन दुख दाई । श्रेणी बद्ध विलय तहां जानों, अशुभ भाव जिय पाई ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके हरप हरप गुण गाऊं ॥
ॐ ह्रीं षष्ठमनरक-तृतीयपटलसंबधि-श्रेणीबद्ध विल-उत्पति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७८ ॥

मघवी नामक अति दुख थानो, पटल तीसरो जोई । परकीरण तहां विलय अपावन, दुख दायक थल होई ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढ़ाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरप हरप गुण गाऊं ॥
ॐ ह्रीं षष्ठमनरक-तृतीयपटलसंबधिप्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७९ ॥

छंदहरिगीतिका—यह नरक षष्ठम पटल तीन जु, को कथा दुख की कहै । वस पाप आतम लहै बहु दुख, नरक वेदन सो सहै ।
तिस भूमि मोटी सहस पोडश, जोजना भरपूर जी । इस गती छेदक देव के पद, पूज कर अघ चूरजी ॥
ॐ ह्रीं षष्ठमनरकपटलत्रयसंबधि-पोडशसहस्रयोजनस्थूल-पृथ्वी-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८० ॥

❀ इति षष्ठम पृथ्वी वर्णन सम्पूर्णम ❀

॥ अथ सप्तम नरक पृथ्वी सम्बन्धी पूजा ॥

छंद हरिगीतिका—यह नरक सप्तम महा दुखदा, नाम सुन कंपै हिया । बिन जान मूरख पाप ठानै, तावसी इस थल जिया ।
यहां पटल एक जु नाम इन्द्रक, अवस्थान बखानिये । इस जगत छेदक देव के, पद पूजतें धन मानिये ॥
ॐ ह्रीं सप्तमनरक-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८१ ॥

॥ अथ षष्ठम पृथ्वी नरक सम्बन्धी पूजा ॥

चोपाई---पष्ठम नरक पटल त्रय जान, द्विशत पचास धनुप तन ठान । त्रीस दोय सागर की आय, या गति छेद जजों जिनराय ॥

ॐ ह्रीं पष्ठमनरकसंबंधि-दुःख-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७० ॥

छंद जोगीरासा---नरक छठे को प्रथम पाठड़ो, अति दुख थानक गायो । ताहि मांहि हिम नामा इन्द्रक, पापी जीवन पायो ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरप हरप गुणगाऊं ॥

ॐ ह्रीं पष्ठमनरकःप्रथमपटलसंबधि-हिम-नामाइन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७१ ॥

मघवी नारक प्रथम पटल है, पाखंडी जन पावै । श्रेणी बद्ध विलय अति दीरख, जीव तहां दुख पावै ॥
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके हरप हरप गुणगाऊं ॥

ॐ ह्रीं पष्ठमनरक-प्रथमपटलसम्बन्धि-श्रेणीवद्ध-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७२ ॥

पष्ठम नरक अधिक दुख दायक, प्रथम पटल तहां जानो । परकीरण तहां विलय अनूपम, संकट को थल मानो ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरप हरप गुणगाऊँ ॥

ॐ ह्रीं पष्ठमनरक-प्रथमपटलसम्बन्धिप्रकीर्णक-विल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७३ ॥

नरक छठा का पटल दूसरा, नीच संग तैं पावै । नाम वार्दलि इन्द्रक तामें, अति संकट जिय धावै ॥
या गति छेद भये शुद्ध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरख हरख गुणगाऊं ॥

ॐ ह्रीं पष्ठमनरकद्वितीयपटलसंबंधिवार्दलि-नामाइन्द्रक-विल-उत्पति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७४ ॥

नरक छठे का पटल दूसरा, अद्भुत संकट दाई । श्रेणी वद्ध विलय अति जानो, सो भू पापिन पाई ।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं । मन वच काय भली विधि करके, हरप हरप गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रींपष्ठमनरक-द्वितीयपटलसम्बन्धिश्रेणिवद्धविल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७५ ॥

छंद जोगीरासा—मघवी नरक तना दुख दायक, पटल दूसरा जानो। परकीरण तहां विलय अटपटा, जीव भयानक मानो।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं। मन वच काय भली विधि करिके, हरष हरष गुण गाऊं॥
ॐ ह्रीं पष्ठमनरक-द्वितीयपटलसंबधि-प्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७६ ॥

नरक छठे का पटल तीसरा, अनरथ मूल वतायो। लल्लकि नामक इन्द्रक विल जहं शीत वेदना पायो।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं। मन वच काय भली विधि करके, हरष हरष गुण गाऊं॥
ॐ ह्रीं पष्ठमनरकतृतीयपटलसंवधिलल्लकिनामइन्द्रक-विल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७७ ॥

पष्ठम नारक पटल तीसरा, उपमा विन दुख दाई। श्रेणी वद्ध विलय तहां जानों, अशुभ भाव जिय पाई।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढाऊं। मन वच काय भली विधि करके हरष हरष गुण गाऊं॥
ॐ ह्रीं पष्ठमनरक-तृतीयपटलसंबधि-श्रेणीवद्ध विल-उत्पति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७८ ॥

मघवी नामक अति दुख थानो, पटल तीसरो जोई। परकीरण तहां विलय अपावन, दुख दायक थल होई।
या गति छेद भये शुध मूरति, तिनको अर्घ चढ़ाऊं। मन वच काय भली विधि करके, हरष हरष गुण गाऊं॥
ॐ ह्रीं पष्ठमनरक-तृतीयपटलसंवधिप्रकीर्णकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७९ ॥

छंदहरिगीतिका—यह नरक पष्ठम पटल तीन जु, को कथा दुख की कहै। वस पाप आतम लहै वहु दुख, नरक वेदन सो सहै।
तिस भूमि मोटी सहस षोडश, जोजना भरपूर जी। इम गती छेदक देव के पद, पूज कर अघ चूरजी॥
ॐ ह्रीं पष्ठमनरकपटलत्रयसंवंधि-षोडशसहस्रयोजनस्थूल-पृथ्वी-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८० ॥

❀ इति पष्ठम पृथ्वी वर्णन सम्पूर्णम ❀

॥ अथ सप्तम नरक पृथ्वी सम्बन्धी पूजा ॥

छंद हरिगीतिका—यह नरक सप्तम महा दुखदा, नाम सुन कंपै हिया। विन जान मूरख पाप ठानै, तावसी इस थल जिया।
यहां पटल एक जु नाम इन्द्रक, अवस्थान वखानिये। इस जगत छेदक देव के, पद पूजतें धन मानिये॥
ॐ ह्रीं सप्तमनरक-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८१ ॥

यह नरक सातम पटल इन्द्रक, दुख मई विल्ला सही। तिस नाम दूजा अप्रतिष्ठित, बन रहा अध की मही।
या गतिच्छेदक देव की मैं, सेव मन वच तन करों। तिन अर्घ जल फल लेय दीरघ,कर्म अरि सहजें हरों ॥
ॐ ह्रीं सप्तमनरक–प्रथमपटलसंबंधि–अप्रतिष्ठितस्थाननामइन्द्रकविल-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८२ ॥

इमि नरक सप्तम एक पटला, दुख कथा को गावही। जहां जाय दीरघ पापधारी, धर्म-हर पुनि जावही।
या मांहि श्रेणी एक पटला, और नांही गाइये। तिन गतीछेदक देव के पद, पूजि के सुख पाइये ॥
ॐ ह्रीं सप्तमनरक-प्रथमपटलसंबंधि श्रेणिबद्धविल-उत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८३ ॥

तसु विलय ह्यां परकीर्ण नाहीं, काय धनुष जु पाचसै। तहां आयु सागर तीन तीसा,दुख रमा जिय आ बसै।
लख पटल मोटो वसु हजार, पृथी पर दुठ जिय रहै। या गतिच्छेदक देव के पद, पूजिके शिव पद लहै ॥
ॐ ह्रीं सप्तमनरक-पृथ्वीअष्टसहस्रयोजनस्थूलगति–छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८४ ॥

छंद अडिल्ल—नरक सातके पटल जानि गुणचासजी, यथा योग्य लखि पापिन को यह वासजी।
या गति छेदक सोय जजो भवि निश दिना, जो चाहो अरि आठ कर्म को तुम हना ॥
ॐ ह्रीं सप्तमनरक-सम्बन्धि-ऊनपञ्चाशतपटलउत्पत्ति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८५ ॥

छंद हरिगीतिका—इमि एक एकजु नरक हेटै, एक इक पोला रहै, सब मिले सातौं जाति अन्तर थावरा थिति धार है।
इन आदि एकेन्द्री सथानक, अधोभाग विषै कहे, तिस गती छेदक देवके पद,पूजतां भव दुख जहै ॥
ॐ ह्रीं अधोभागसंबंधिसूक्ष्मस्थावरविषै जन्ममरणछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८६ ॥

॥ अथ जयमाला ॥

छंद अडिल्ल—नरक धरा दुखथान जीव पापी रहै, पापी ही तहाँ जाय महा संकट सहै।
छेदन भेदन ताडन मारण विधि घनों, या गति छेदक देव जजों मन वच तनों ॥ १ ॥
अल्प कथन यो नरक तनो भाख्यो सही, आयु काय दुख नाम पटल संख्या कही।

ताको सुनि भवि जीव पापतें भय लहै, संजम पूजा दान शील तप उर चहै ॥ २ ॥

॥ छन्द बेसरी ॥

नरक सात दुख अद्भुत थानो, पहलो घम्मा नाम बखानो। आयु एक सागर तन होई, हाथ सवा इकतीस जु जोई ॥३॥
तेरह पटल अगनि से जानो, तीस लाख तहां बिलय बखानो। अब सुनि वंशा नरक जु सोई, आयु तीन सागर की जोई ॥४॥
साडे बासठि कर तन पावे, लाख पचीस बिलै धुनि गावै। ग्यारह पटल जीव दुख दाई, अब सुनि मेघा नारक भाई ॥५॥
काय सवासै हाथ ऊंचाई, आयु सात सागर की पाई। पन्द्रह लाख बिलय दुखभारी, नव ही पटल और सुनि सारी ॥६॥
चौथा नरक अंजनाजानो, द्वय सौ पचास हाथ तन मानो। आयु समद दश की सुनि भाई, बिलै लाख दश जिन धुनि गाई॥७॥
पटल सात अवनी सुनि भेवा, नरक पंचमा अति दुख देवा। काय पांच सै कर की जोवो, सतरह सागर आयु हि बोवो ॥८॥
पटल पंच दुखरूप सदीवा, बिलय तीन लख दुख मय जीवा। मघवी षष्ठम शीत–स्थाना, पटल तीन सरवज्ञ बताना ॥९॥
आयु बीस द्वय सागर केवा, काय हजार हाथ गिन लेवा। बिलय पंच उन लाख बताये, अब सुनि और कथा मन भाये ॥१०॥
नरक सातमा पटल जु एका, तीस तीन सागर थिति देवा। काय धनुष सै पांच बताये, बिलय पांच अर दुखअधि काये ॥११॥
ये ही सात नरक के थाना, सहै महा दुख गिनति न माना। को छेदे को खंडि खंडि डारै, परसपरै मिलि तन में मारै ॥१२॥
कोऊ तन की चाम उपारै, तन पै कोऊ लूण सु डारै। कोऊ पांव पकरि शिल नाखै, वचन किते दुठ मुख तैं भाखै ॥१३॥
इत्यादिक बिल्लों दुख पावै, गणपति कहतो मौन धरावै। नगर मांहि दुख दोसी दीनी, कै परनारी परिणति भीनी ॥ १४ ॥
परका माल हरया छल लाई, कै अति क्रोध मान वसि आई। कै बिन कारण जीव सताये, तातैं इस थल जीव सिधाये ॥१५॥
ऐसी गति है सब दुखकारी, रोग बसै ता मांहि अपारी। या सौं भय ले संजम भायो, नाना भांति तनो तप लायो ॥१६॥
तानैं पा गति हरि शिव पाई, ता पद हमने अर्घ चढाई। अब जे जामन मरण न पावै, भ्रमण करत नाहीं गति जावै ॥१७॥
अधो तनी सब उतपति भासी, सो जिय जानौ उरध निवासी। नीच करम हरि शुद्ध कहाये, तिन पद पल पल हम शिर नाये॥१८॥
अब कहै नरक निकसि कहँ जावे, सो सब सुनि जिनध्वनि इम गावै। मिनख पशु पंचेन्द्री होई, सैनी गर्भज कर्म भू जोई॥१९॥
तीन पदी नरकतें नहिं जानो, चक्री अर्द्ध–चक्रि बल मानो। चौथे नरक तें आवे कोई, तीर्थंकर पद लहै न कोई ॥२०॥

॥ छंद वेसरी ॥

पंचम आदि थकी जे आवें, चरम शरीरी नहि सो पावे। नरक छठी तें आवें कोई, सकल संयमी होय न सोई ॥२१॥
सप्तम तें निकसे जे जीवा, होय पशू मिथ्या रस पीवा। अब सुनि को थल को जिय पावै, नरक थकी निकस्यो जो आवैं ॥२२॥
बिन मन जीव प्रथम में होई, लगतमार वसु भव ले सोई। निकसि तहां तै सैनी होवै, फिर तजि काय असैनी जोवै ॥२३॥
ऐसे इक भव बीच सु पावै, होय असैनी नरक हि जावै। आठ बार ऐसी विधि होई, अब सुनि और कथा कहुँ सोई ॥२४॥
द्वितिय शुभ्र सरीसृप जावै, निकसि मिनख गर्भज पशु थावै। ऐसे लगतमार उपजाई, सात वेर पुनि सरीसृप थाई ॥२५॥
पंखी इक लग तीजे जावै, निकसि फेर पंखी ही थावै। ऐसें इक लग पट वर जानों, उत्कृष्टी पलटन इम मानों ॥२६॥
फणी चतुर्थ नरक में जावै, पांच बार वह सर्प ही थावै। सिंह पांचवें इक लग जानों, चार नरक केहरि भव मानों ॥२७॥
नारी षष्ठम इक लग जावै, फेरि नकसि नारी पद पावै। सो त्रय बार नरक फिर नारी, ये भी उत्कृष्टी विधि धारी ॥२८॥
मानुष मत्स्य सातवें जावैं, निकसि मिनख गर्भज पशु थावै। संमूर्छन नरक तै नहिं होई, तातें बीच भवान्तर जोई ॥२९॥
ऐसी गति की उतपति भाई, छेद जिन्होंने शिव गति पाई। तिनको हम वसु द्रवतें ध्यावें, उन सम फल कहा कहिये थावै ॥३०॥

छंद दोहा— दुख दायक नरक हि बन्यो, कहै कहाँ लों कौंय। तातैं या गति छेदके, जजौं चरन सुख होय ॥३१॥

ॐ ह्रीं सप्तमनरक-पृथ्वीछेदक-जिनेभ्यो अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति नरक कथन सपूर्णम् ॥

॥ अथ भवनवासी देवों के भवनों में स्थित अकृत्रिम जिनालय पूजा प्रारम्भ ॥

छंद हरिगीतिका—दश जाति भवन प्रकार देव सु, थान तिन के में सही । जिन थान मणि मय सुभग ऊंचे, पाप हरने की मही ॥
तहां देव पूजा करै थुति तैं, वांछि का शिव स्थान कों । जे थान जिन इस जगह स्थापन कर जजों अघ हानि के ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासी-देवस्थान-स्थित-अकृत्रिम-चैत्यालय अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वानम् ।
ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासी-देवस्थान-स्थित-अकृत्रिम-चैत्यालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासी-देवस्थान-स्थित-अकृत्रिम-चैत्यालय अत्र मम सन्निहतो, भव भव सन्निधिकरणम् ।

वर नीर निरमल क्षीर दधि को, सुभग पातर में धरों । ले सात कोडि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों ।
तिस लाभतें अघ मैल सब ही, धुपै मम आतम तनों । इमि जान मन वच काय शुध कर, मुख थकी जिन थुति भनों ॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

शुभ लाय चंदन भली गंध जु, निर्मला घसिये सही । धरि रतन पातर मांहि करले, भक्ति जुत परणति ठही ॥
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों । तिस लाभ तें भव ताप सारी, नाश कर समता धरों ॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबधि सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो चंदन निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अति महा उज्ज्वल गंध जुत विन खंड अक्षत लाय हों । धर शुभग पातर लेय जुग कर, चित्त अति हुलसाय हों ॥
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों । तिस लाभ तें भव ताप सारी, नाश कर समता धरों ॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति लक्ष-जिनालयेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

बहु फूल सुभग सुगंध आछे, भँवर गुंजत आनिये । तिन माल कर धरि आपने कर, धनि अनंदित मानिये ।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करो । तिस लाभ तें मंद काम को हरि, शील गुण उज्जल करों ॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबधि-सप्तकोटि-द्वि सप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

छंदहरिगीति का—शुभ तुरत पट रस मई चरु वर, नयन को सुख दायजी। धरि कनक पातर भक्ति जुत हम, आपने कर लायजी।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों। तिस लाभ सेती भूख वेदन नाश कर सुख पद धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबधि सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

नव दीप तमहर रतन का कर, कनक थाल विषै लिया। शुध काय मन वच ठानि अपनी, पूज्य जिन दिश चित किया।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों। तिस फलैं शिव मग मांहि तम-अज्ञान हरि शिव पद धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसबधि-सप्तकोटि-द्वि सप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

कर धूप दश परकार गंध जु, वह्नि में खेऊं सही। तिस धूम नभ में गमन कीनों, शिखा मानों जस लही।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों। तिस लाभ तें सब कर्म ईंधन ध्यान अगनी में धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसबधि सप्तकोटि-द्विसप्तति लक्ष-जिनालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

बहु फल बिदाम नरेल खारक, लोंग आदि मिलाइये। ले दोय कर में विनय धरि, चित शुभग को उमगाइये।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों। तिस फलैं कर्म निवार आठों, मोक्ष फल को अनुसरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसबधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो फलम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

शुचि जल सु चंदन अखत पुष्परु, दीप धूप फला चरू। वसु द्रव्य मेलि सु अरघ करि धरि भले भावन आचरूँ।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों। तिस फलै और न चाह मेरे जनम मरण जरा हरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसबधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

अब असुर नाग स्तनित दीपरु, उदधि विद्युत जानिये। फिर जानि सुवरन दिक्कुमारा, अगनि वात प्रमाणिये।
इन भवन में जिन सदा सास्वत, जजों हैं जो बिन किये। तिन सबनि को मैं अर्घ तें, धरि भक्ति पूजों शुभहिये॥

ॐ ह्रीं भवनवासी-देवसबधि सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

॥ अथ जयमाला ॥

॥ छन्द पद्धरी ॥

अब भवन पती के भवन मांहि, जिन थानक मणि मय ध्रुव कहांहि। ते भिन्न यहां भापूं सुजान, लख थान जिना पूजूं सुमान ।१।

॥ छन्द बेसरी ॥

दश विधि भवन देव सुनि भाई, तिन थानक में जिन थल थाई। तिनको पूजे शिव सुर होई, जग दधि बाधा लहै न कोई ॥२॥
असुर कुमार देव थल मांही, जिन थल लख चौसठ अधिकाई। तिनको पूजत शिव सुर होई, भव दधि बाधा लहै न कोई ॥३॥
नाग कुमार भवन में जानो, चौरासी लख जिन गृह मानो। तिनको पूजत शिव सुर होई, जग दधि बाधा लहै न कोई ॥४॥
सुपरण देव कुमार सुठाहीं, लाख बहत्तरि जिनथल पाही। तिनको पूजत शिव सुर होई, जग दधि बाधा लहै न कोई ॥५॥
दीप कुमार भवन में थाई, लाख छिहत्तरि जिन थल माई। तिनको पूजत शिव सुर होई, जग दधि बाधा लहै न कोई ॥६॥
उदधि कुमार थानके मांही, लाख छिहत्तरि जिन थल थाही। तिनको पूजत शिव सुर होई, भव दधि बाधा लहै न कोई ॥७॥
विदुतकुमार भुवन थल भाई, लाख छिहत्तरि जिन थल थाई। तिनको पूजत शिव सुर होई, भव दधि बाधा लहै न कोई ॥८॥
स्तनित कुमार देव थल मानो, लाख छिहत्तरि जिन थल जानो। तिनको पूजत शिव सुर होई, भव दधि बाधा लहै न कोई ॥९॥
दिक्कुमार देव के मांही, लाख छिहत्तरि जिन गृह थाई। तिनको पूजत शिव सुर होइ. भव दधि बाधा लहै न कोई ॥१०॥
अग्नि कुमार देव पुर थाये, लाख छिहत्तरि जिन गृह गाये। तिनको पूजत शिव सुर होइ, भव दधि बाधा लहै न कोई ॥११॥
बात कुमार भुवन के ठाई, छिनवै लाख भवन जिन पाई। तिनको पूजत शिव सुर होइ, भव दधि बाधा लहै न कोई ॥१२॥
ऐसे सब ही भुवन मझारो, सात कोडि बहतरि लख धारो। तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहै न कोई ॥१३॥
सबही जिन थल अकृत जानो, कंचन जडित रतन मय मानो। सो शोभा मुख कही न जावे, पूजेतें अति पुण्य उपावे ॥१४॥
अधोभाग यह जिन गृह जोई, इन पूजा को यह फल होई। अधो भागमें जनम न पावे, अनुक्रम तें सो शिवपुर जावे ॥१५॥
ऐसा जानि चरन जिन सेवो, मनवांछित सुख निरभय वेवो। भव भव में भक्ती जिन पावे, वह सब अपने कर्म खिपावे ॥१६॥

दोहा—भक्ति देव जिनराज की, भव भव होय सहाय। विनय सहित पूजन करौं, यह निश दिन मन भाय ॥१७॥

ॐ ह्रीं भवनवासी देवसम्बन्धि जिनचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

[आगे असुर कुमारादि भवनवासी देवों के भिन्न२ चैत्यवृक्ष है, उनके नीचे चारों दिशा सम्बन्धी पांच२ चैत्य हैं, एक२ चैत्य वृक्षके नीचे बीस चैत्य हैं उन चैत्यों के आगे एक२ मानस्तम्भ हैं। उनके ऊपर चारों दिशा सम्बन्धी सात २ प्रतिमा हैं। सो एक एक मानस्तम्भ सम्बन्धी अट्ठाईस प्रतिमा है,सब रचना रत्नमई है, उन सम्बन्धि प्रत्येक अर्घ अब लिखिए है।]

छंद हरिगीतिका—दशजाति देव सु भवनवासी, तिन थलो भिन भिन सही। है चैत्यवृक्ष सुहेट तिनके, प्रतिमा चउ दिश कही ॥
इक इक दिशा में पांच प्रतिमा, एक वृक्ष तल बीस है। इक एक आगे मानथंभा, एक प्रतिमा शीश है ॥

ॐ ह्रीं चैत्यवृक्ष मानस्तम्भ-सम्बन्धि-जिन अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वानन। ॐ ह्रीं चैत-वृक्ष-मानस्तम्भ-सम्बन्धि जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं चैत्यवृक्षमानस्तम्भसवधि जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव, सन्निधिकरणम्।

भवन असुर कुमार के बिच, चैत्य अस्वथ वृक्ष हैं। तिन हेठ प्रतिमा बीस चौं दिशि, एक दिशिमें पंच हैं।
सब रत्नमय जिन बिंब जानो, और शोभा अति कही। ते बिंब हैं वृक्ष चैत्य नीचे, पूजि हैं वसु द्रव्य ही ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसम्बन्धि-मानस्तम्भ-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

इन एक एक सुबिंब आगे, एक मानस्तम्भ है। तिस मानथंभ सुशीश ऊपरि, बिंब जिनके सुदृढ हैं।
इमि एक दिशिके स्तम्भ ऊपरि, बिंब सात विराजही। सब थंभके ठाईस जिनवर, पूज तिन पद साजही ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसवधि-मानस्तम्भ-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

असुर भवन सु चैत्य भूरुह, पूर्व दिशि तल जानिये। है पांच बिंब जिनेश मूरति, रतन मय सुख थानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि बसु, नासिहै भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्यपूर्वदिशासंबधि-पांच जिन बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

इस पूर्व दिशि के बिंब आगे, मानथंभ सु पंच हैं। तिन थंभ ऊपरि बिंब जिनके, बीस आठ वि-रंच है।

तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के।

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृत्तस्य पूर्वदिशासंबंधि-पंच-मानस्तम्भ-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

इमि असुर भुवन सु चैत्य तरुवर, तले दक्षिण पांच है। बहु शोभ रूप अपार मणिमय, अघ हरा जिन सांच है।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृत्ततले दक्षिणदिशासंबंधि-पांचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

इस दक्षिण दिश प्रतिबिंब आगे, मानस्तम्भ सु जानिये। जिन अंतरे भगवान के प्रति–बिंब जिनवर मानिये।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृत्तस्य दक्षिणदिशायां पंचमानस्तम्भसंबंधि–जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

शुभ असुर भवन सु चैत्य तरुवर, दिशा पश्चिम अघ हरा। तहं बिंब पांच जिनेन्द्र वर के, पूजतें मन हो हरा।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृत्तस्य पश्चिमदिशासंबंधि–पंचप्रतिबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

इन बिंब आगे मानथंभा, शीश तिन के शुभ मई। जिन प्रत्तिमा चउ दिशा जानो, शान्त मूरति छबि मई।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृत्तस्य पश्चिमदिशायां पंचमानस्तम्भसंबंधि–जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

वर असुर भुवन सु चैत्य तरुवर, दिशा उत्तर में सही। प्रति बिंब पांच जिनेश तनसे, पुण्य की महती मही।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृत्तस्य उत्तरदिशायां पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

इन बिंब आगे मानथंभा, ऊपरैं ताके सही। जिन बिंब जानों महा सुन्दर, रतन के पुन की मही।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृत्तस्य उत्तरदिश यां मानस्तम्भसंबंधिजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

तहं असुर भुवन सु चैत्यतरुतल, बिंब बीस सुजानिये । इक एक आगे मान थंभा, सहित प्रतिमा मानिये ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसंबधि–चतुर्दिक्विंशतिमानस्तम्भजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

भुवन नाग कुमार के तहं, सप्तपर्णा तरु सही । तिस हेट चउदिशि बीस प्रतिमा, रतन मय जिनकी कही ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेषु सप्तपर्णचैत्यवृक्षसंबंधि–चतुर्दिक्विंशतिप्रति बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

वर नाग भुवन सु चैत्य तरुवर, बिंब प्रभु के राजही । जिन बिंब आगे एक एक सु, थंभ बिंबजुत साजही ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसंबधि-विंशतिमानस्तम्भप्रतिबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

भुवन नाग कुमार के थल, चैत्य वृक्ष तल जानिये । दिशि पूर्व बिंब जिनेश के हैं, पांच अति सुख खानिये ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशासंबधि-पचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

इम नाग भवन सु चैत्य वृक्ष की, पूर्व दिशि जिन बिंब हैं । तिन बिंब आगे मानथंभा, शीश तिन प्रतिबिंब हैं ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलैं मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशाया पचमानस्तम्भसंबधि–जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

सुर भुवन नाग कुमार के थल, चैत्य वृक्ष सु गाइये । दक्षिण दिशा की ओर पांचों, बिंब जिनवर गाइये ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेषु दक्षिणदिशि चैत्यवृक्षसंबधि–पचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१७॥

इन बिंब आगे मानथंभा, रतनमय मन मोहना । उन पंच ही के उपरि कहिए, बिंब जिनके सोहना ।

नाग भवन ... (continued) नास है भय खाय के ॥

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नांस है भय खाय के ॥

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नांस है भय खाय के ॥ निवपामीत स्वाहा ॥१८॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य-दक्षिणदिशि मानस्तम्भसंबंधि-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं

नाग भवन सु चैत्य वृछके, दिशा पश्चिम की कही। तहां पांच बिंब जिनेशके हैं, पुण्यकी जानो मही ॥

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब नाशि हैं भय खायके ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशासम्बन्धि-पंचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

इन बिंब आगे दिशा पश्चिम, पांच मानस्तम्भ हैं। तिन ऊपरै शुभ बिंब जिनके, बीस आठ सु धुनि कहैं।

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशासंबधि-पंचमानस्तम्भ-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

नाग भवन सु चैत्य तरुतल, उत्तर दिशि को ध्याइये। जिन बिंब पांच सु पांच जिनसे, सबै लच्छिन पाइये।

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायां मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो-अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥

नाग भवन सु चैत्य तरु है, तासु तल उत्तर सही। तिन बिंब आगे मानथंभा, ऊपरै प्रतिमा कही।

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायां पंचबिंबाग्रे मानस्तम्भसंबंधि पंचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२॥

नाग भवन सु चैत्य वृछि है, तहां बिंब जिनेश के। तिन बिंब आगे मानथंभा, प्रतिमा वृषभेश के।

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे करम अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेपु चैत्यवृक्ष-मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

भवन सुपरण विषै वृछ है, चैत्य मानस्तम्भ ही। तिनके संबंधी बिंब जिनके, है सकल पुनि की मही।

तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृक्ष मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

भुवन सुपरण विषै तरु शुभ, चैत्य महा सुख दाय है। तिन पूर्व दिशि में पंच बिंब सु, है जिसे पुनि ठाय है।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के, तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं सुपर्णभवनेपु चैत्यवृक्षस्य-पूर्वदिशासम्बन्धि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ २५॥

भुवन सुपरण चैत्य तरुके, बिंब आगे ठामही। है मान थंभा पूर्व जापै, बिंब जिनके पुन मई॥
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आय चढायके। तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं सुवर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य-मानस्तम्भसम्बन्धि-जिनप्रतिबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ २६॥

भुवन सुपरण चैत्य तरु के, दक्षिण दिशि को जानिये। प्रति बिंब जिनके पांच सुन्दर, रुप पंकति मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशासबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ २७॥

इन बिंब आगे दिशि सु दक्षिण, मानथंभा जोइये। जिनबिंब राजैं शीश पै, तन रुप लक्षण होइये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खाय के।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य-दक्षिणदिशायाम्-पंचमानस्तम्भसबधि-जिनबिंबेभ्योअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा॥ २८॥

भुवन सुपरण चैत्य तरु तल, पश्चिम दिशि को ध्याइये। तहां बिब पांच सुजानि आगे, और कुछ नहिं गाइये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य-पश्चिमदिशायाम् पचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ २९॥

इन बिब आगे पश्चिम दिशि में, मान थंभ सु गाइये। तिन ऊपरै प्रति बिंब राजैं, भक्ति सो हम ध्याइये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खाय के॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य-मानस्तम्भसबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा॥ ३०॥

भुवन सुपरण चैत्य तरु के, उतर दिश को है सही। जिन पंच बिंब सु फला दायक, मान अविचल है कही।

छंद हरीगीतिका—तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य उत्तरदिशाया पचमानस्तम्भसबधि–जिनविंवेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३१ ॥

वर भवन सुपरण चैत्य तरु के, उतर दिशि को सोह हीं। शुभ पांच मानस थंभ पै जिन, प्रत्तिमा मन मोहहीं।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य उत्तरदिशायां पचमानस्तम्भसबधि–जिनविंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३२ ॥

भवन सुपरण चैत्य तरु है, स्तम्भ मानस ही सही। जिन प्रत्तिमा करि सहित तीरथ, पूजि हैं सुर की मही।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णभवनेपु चैत्यवृत्तस्य मानस्तम्भसबंधि–जिनबिंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३३॥

वर भवन द्वीप कुमार के हैं, चैत्य तरु तल विंब ही। तिन विंब आगे मानथंभा, शीश जिन प्रतिमा कही।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तमानस्तम्भसंबंधि–जिनबिंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३४ ॥

द्वीप भवन सु चैत्य तरु के, पूर्व दिशि को जानिये। जिन विंब पांच जिनेश तनसे, रूप लत्तण मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य पूर्वदिशिसबंधि–पंच जिनबिंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३५ ॥

भवन द्वीप सु चैत्य वृछि तल, पूर्व जिनवर राज हीं। तिनके सु आगे मानथंभा, विंब जुत जिन साज हीं।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य पूर्वदिशायां मानस्तम्भसंबंधिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३६ ॥

भवन द्वीप सु चैत्य तरु तलि, तथा तसु दत्तिण दिशा। विंब पंच सु हेट राजत, महा सुन्दर जिन जिसा।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य दत्तिणदिशासबंधि–पचजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३७ ॥

छंद हरीगीतिका-भवन द्वीप सु चेत वृच्छि के, दक्षिण दिश को जानिये। शुभ मान थंभसुशीश ऊपरि, बिंब जिन को मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायां मानस्तम्भसंबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३८॥

द्वीप भवन सु चैत्य वृछि की, दिशि सु पश्चिम जोइये। जिन बिंब पांच सु सुभग मूरत, भविन के मल धोइये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायां पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३९॥

इन चैत्य वृक्षन बिंब आगे, मानथंभ सुहावने। तिन ऊपरैं हैं बिंब जिनके, जगत जन मन भावने।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशाया मानस्तम्भसंबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४०॥

वर द्वीप भवन सु चैत्य तरु है, उतर दिशि ताके सही।. जिन प्रतिमा है पांच जिनसी, महा सुन्दर सुख मही।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायाम् जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४१॥

इन बिंब आगे मान थंभा, रतन मय अति शोभना। तिन ऊपरै जिन बिंब तिष्ठै, देव खग मन मोहना।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खाय के॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायाम् मानस्तम्भसंबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४२॥

शुभ भुवन द्वीप कुमार भीतर, चैत्य तरु तल बिंब है। तिन बिंब आगे मान थंभा, प्रतिमा जुत हेट है।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य अध जिनबिंबतथामानस्तम्भसंबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४३॥

वर उदधि कुमर सु भवन भीतर, चैत्य तरु तलि बिंब है। चव दिशा के गिन एकवीसी, लखे होय अचम्भ है।

छद हरिगीतिका—तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के, तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य समन्तात् विंशतिजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४४ ॥

उदधि भवनेसु चैत्य तरु तलि, पूर्व दिश कूं जानिये । तहं बिंब सुन्दर जिन सरीसे, जगत हितदा मानिये ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशाया जिनप्रतिबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४५ ॥

इन बिंब आगे मान थंभा, पूर्व दिशि कूं जानिये । तिस ऊपरैं जिन बिंब राजैं, रतन मय अति साजिये ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशायाम् मानस्तम्भसंबधि जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४६ ॥

इम उदधि भवन सु चैत्य तरु है, दक्षिण दिश ताके सही । जिन बिंब तिष्ठत देव पूजत, महा सुकृत की मही ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायाम् पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ ४७ ॥

तिन बिंब आगे दछिन दिश में, मान थंभ विराजिये । शुभ ऊपरैं जिन बिंब राजैं, रतन मय अति साजिये ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायाम् मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ४८ ॥

उदधि कुमर सु चैत्य तरुतल, पश्चिम दिशि ताके सही । जिन बिंब तिष्ठत देव पूजत, महा सुकृत की मही ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायाम् पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४९ ॥

जहं उदधि कुमर सु भवन मांहि, चैत्य वृक्ष सु जानिये । पश्चिम दिशि तहं मान थम्भा, बिंब तिन पर मानिये ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायाम मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५० ॥

छंद हरीगीतिका—वर उदधि भवन विषै कहे हैं, चैत्य वृछि अति सोहना। तिन उतर दिश जिन विंब राजैं, पांच अति मन मोहना।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु-चैत्यवृक्षस्य-उत्तरदिशायां-पचजिनप्रति-विंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५१॥

इन विंब आगे उतर दिशि को, मानथंभ सुजानिये। तिन ऊपरैं जिन देवजी के, विंब हितदा मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमरभवनेषु-उत्तरदिशायां मानस्तम्भसंबंधि-जिन-विंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५२॥

तिन उदधि कुमर सु भवन मांही, चैत्य तरु अति सुख मही। तहां मानथंभ सु विंब आगे, अकृत प्रतिमा शुभ कही।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु-चैत्यवृक्षस्य-चतुर्दिकमानस्तम्भसबंधि-जिन-विंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५३॥

विद्युत भवन के चैत्यतरु है, अधिक शोभा को धरे। तिस पूर्व दिश के हेट ताकी, विंब जिन अघ को हरैं।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के, तिस फलै मेरें कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य-पूर्वदिशासम्बन्धि-जिनविंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५४॥

वर भुवन विदुत कुमार मांही, चैत्य वृक्ष सुहावना। तिस पूर्व दिशि में विंब आगे, मानथंभ लखावना।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आय चढायके। तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षपूर्वदिशि-मानस्तम्भस बंधि-जिन विंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५५॥

शुभ विदुत भुवन सु चैत्य तरु तलि, दक्षिण दिशि को जाइये। जिन विंब जिनसे पांच शोभित, तहां अघ मल धोइये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य-दक्षिणदिशासंबधि-जिनविंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५६॥

तिस प्रतिमा के दक्षिण दिशि में, मान थंभ-सुहावना। तिन ऊपरैं प्रतिमा सु जानो, सुरां तिन गुण गावना।

छंद हरिगीतिका—तिन प्रतिमा के पांय पूजों,द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खाय के।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायाम् मानस्तम्भसबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५७ ॥

इन·विदुत भवन सु पश्चिम दिशि में, चैत्य तरु अति सुख मई। तिस हेट राजै सहित पंकति, पंच बिंब जिनेश ही।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायां पचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५८ ॥

वर भवन विद्युत कुमर केरे, चैत्य तरु पश्चिम लखो। नग मई मानस्तम्भ सुन्दर, अधिक मन मोहन अखो।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशि मानस्तम्भसंबधि–जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५९ ॥

तसु भवन विद्युत कुमर के बिच,चैत्य तरु अति हितकरा। तिस उतर दिशि को पांच प्रतिमा, हेट तरु के अघ हरा।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशासबंधिप्रतिबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६० ॥

तिस बिंब आगे उतर दिशि है, उच्च मानस्तम्भ है। जिस भाग ऊपर हरप युत हों, पूजते जिन बिंब है।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायां मानस्तम्भसबधिजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६१ ॥

सब विद्युत भुवन सु चैत्य तरु तल, स्तम्भ मानस है सही। जिन बिंब तहं जिन सारसे हैं, रूप लक्षण गुण मही।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिकसर्वमानस्तम्भसबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६२ ॥

अब भवन स्तनित कुमार के बिच, चैत्य तरु चव दिश कहै। जिन बिंब बीस अनूप फलदा, राजि हैं सब अघ दहै।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्ष तथा मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६३ ॥

छंद हरिगीतिका—स्तनित भवन सु चैत्य तरु की, पूर्व दिशि को जानिये। बिंब सुन्दर पांच जिनके, पुण्य का थल मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशासबंधि-पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६४॥

भवन स्तनित कुमार के महिं, चैत्य तरु पूरब दिशा। जिन बिंब आगे मानथंभ सु, बिंब जिन अति ही लसा।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशाया मानस्तम्भसंबधि-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६५॥

भवन स्तनित कुमार चैत्य सु, वृक्ष दक्षिण जोइये। जिन बिंब पांच सु पुन्य केरे, सुर नरां मन मोहिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलैं मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य-दक्षिणदिशाया पंचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६६॥

इन बिंब आगे मान थम्भ सु, अधिक रचना कूं लिये। तिन स्तम्भ ऊपरि जिन विराजै, सकल अतिशय कूं लिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायां मानस्तम्भसंबंधि-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निवपामीत स्वाहा॥ ६७॥

भवन स्तनित कुमार के थल, चैत्य तरु तल जानिये। पश्चिम दिशा जिन बिंब केरे, पांच सुखदा मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशासम्बन्धि-पंचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६८॥

इन प्रतिमा के पश्चिम दिशि को, मान थंभ आगे कहे। तिन ऊपरै प्रतिमा सु तिष्ठै, देखि सुर निज अघ दहै।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब नाशि हैं भय खायके॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायां पञ्चमानस्तम्भसबंधि-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीत स्वाहा॥ ६९॥

स्तनित कुमार सु भवन भीतर, चैत्य तरु अति सार है। तिस उतर दिशि को पांच प्रतिमा, बनी सब अघहार हैं।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के॥
ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायां पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७०॥

छंद हरिगीतिका—भवन स्तनित कुमार के तरु, चैत्य की उत्तर दिसैं। तहं मान थंभ सु उपरि सोहै,प्रतिमा अघ हर लसैं।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नासि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशा या मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अघ निर्वपामीति स्वाहा ॥७१॥

भवन स्तनित कुमार के लखि, चैत्य वृक्ष सु चव दिसी। तिन बिंब मानस थंभ ऊपरि,बीस जिन प्रतिमा लसी।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे करम अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक् विंशति-मानस्तम्भसबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७२ ॥

भवन दिक्कुमार के बिच, चैत्य वृक्ष सुजानिये। चव दिशा के बीस बिंब सु, सुरां सेवित मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक् सम्बन्धि विंशति-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७३ ॥

दिक्कुमार सु चैत्य चव दिशि, भुवन जिनवर सुखकरा, बीस मानस्तम्भ आगे, बीस जिनवर नुत खरा॥
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य विंशतिमानस्तम्भसंबधिविंशतिजिनबिंबेभ्यो अर्घं निवपामीति स्वाहा ॥ ७४ ॥

दिक्कुमार सुभवन जानों, चैत्य पूरब दिशि सही। जिन बिंब पंकति पांच रूपी, सोहने अदभुत कही।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं दिक्मारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशायाम् पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७५ ॥

वर भवन दिक्कुमार केरे, चैत्य तरु पूरब दिशा, हैं बिंब आगे मानथंभ सु, पांच प्रतिमा जुतलसा।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेपु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशायाम् मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७६ ॥

भवन दिक्कुमार के में. चैत्य तरु दक्षिण दिशी। शुभ पांच प्रतिमा शांत मूरति, रतनकी जिन लसी।

छंद हरिगीतिका—तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सव, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायां पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७७ ॥

दिक्कुमार सु भवन मांहीं, चैत्य तरु दक्षिण दिशा। शुभ मानथंभ सुशीश ऊपर, बिंब जिनवर है लसा।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायां पंचमानस्तम्भसंबंधि-जिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७८ ॥

दिक्कुमार सु भवन में है, चैत्य तरु सुखदा सही। तिस पश्चिम दिशिकों पांच बिंबै, रत्नमय पुनि की मही ॥
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायाम् पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७९ ॥

दिक्कुमार सु चैत्य तरु तलि, पश्चिम दिशि जिन बिंब सही। जिन बिंब आगे मानथंभै, सुभग प्रतिमा जुत ठही ॥
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सव, नाशि हैं भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशायाम् पंच-मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ८० ॥

भुवन दिक्कुमार के में, चैत्य तरु शुभ की मही। जिस उतर दिश को पांच बिंबे, जिनजिसे लक्षण सही।
तिन प्रतिमा को पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सव, नाशि है भय खाय कै ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायां पचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८१ ॥

भवन दिक्कुमार मांही, चैत्य तरु उत्तर दिशा। तिन बिंब आगे मान थंभ सु, ऊपरै जिनवर लसा ॥
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के, तिस फलै मेरे कर्म अरि सव, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुनारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायां मानस्तम्भसंबधि-प्रतिबिंबेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८२ ॥

दिक्कुमार सु भवन मांही, चैत्य तरु अति सार है। तिन चव दिश के मानथंभै, बीस प्रतिमा लार है ॥
तिन प्रतिमा के पाय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सव, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक् विंशति जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८३ ॥

छंद हरिगीतिका—भवन अग्नि कुमार के हैं, चैत्य तरु क च र दिशा। बीस प्रतिमा छवी जिन सी, रूप गुण लक्षण जिसा।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खाय के॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक्-विंशति-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८४॥

अग्नि भवन सु चैत्य तरु के, बिंब आगे जानिये। शुभ मानथंभ उतुंग बीसों, प्रतिमा जुत जानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक्-विंशति-मानस्तम्भसंबधि-जिनप्रति-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८५॥

भवन अग्नि कुमार के में, चैत्य तरु सुख दाय है। दिश पूर्व जाके बिंब जिन के, पांच लख हित पाय है।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशायां पचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८६॥

अगनि भवन सु चैत्य तरु की, पूर्व दिश को जानि है। जिन बिंब आगे मानथंभ सु, प्रतिमा अघ हानि है।
तिन प्रतिमा क पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशाया मानस्तम्भसंबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८७॥

भुवन अगनि कुमार भीतर, चैत्य तरु दक्षिण दिशा। पंच बिंब सु महा सुन्दर, अघहरा जिनवर जिसा।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायां-पंचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८८॥

भवन अगनि कुमार मांही, चैत्य तरु दक्षिण दिशा। बिंब पांच आगे मानथंभे, प्रतिमा जुत अघ नशा।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य दक्षिणदिशायां मानस्तम्भ-संबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८९॥

भवन अगनि कुमारके बिच, चैत्य तरु अति सुख मही। तिस पछिम दिस कूं पांच जिन बिंब, जगत कू पुनिदा कही।

छंद हरिगीतिका—तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पश्चिमदिशासंबंधि-पंचजिन-बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६० ॥

अगनि भुवन सु चैत्य तरु की, उतर दिशि को जानिये। बिंब पांच जिनेश के हैं, पाप छेदक मानिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु उत्तरदिशायां पचजिन बिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६१ ॥

इन बिंब आगे उतर दिशि कूं, मान थंभ सु गाइये। जिन प्रतिमा तिन ऊपरैं हैं, सुरां पूजत पाइये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशाया मानस्तम्भसंबंधि–जिनबिंबेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६२ ॥

अगनि कुमर सु चैत्य तरु की, चव दिशा में सोहि हैं। तिस हेट मानसथंभ ऊपर, प्रतिमा मन मोहि हैं।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक–जिनबिंबेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६३ ॥

वात कुमुर सु भवन मांही, चैत्य तरु की चव दिशा। जिन बिंब बीस महामनोहर, सकल कूं सुखदा इसा।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक विंशति जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६४ ॥

वात कुमर सु भवन भीतर, चैत्य तरु चव दिश सही। जिन बिंब आगे मानथंभ सु, प्रतिमा ऊपर कही।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक्मानस्तम्भसंबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६५ ॥

भवन वात कुमार के तरु, चैत्य अति शोभा लिये। तिस पूर्व दिश कूं पांच जिनवर, राजि हैं अतिशय लिये।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के। तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य पूर्वदिशायां पंचजिनबिंबेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६६ ॥

वात भवन सु चैत्य तरु है, मानथंभ आगे कहे । तिन ऊपरै जिन देवजी के, विंब प्रति शोभित रहे ॥
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य पूर्वदिशायाम् मानस्तम्भसंबंधि-जिनविंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९७ ॥

भवन वात सु चैत्य तरु की, दक्षिण दिश कूं जानिये । जिन विंब पांच महामनोहर, स्वर्ग शिवदा मानिये ।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य दक्षिणदिशायाम् पचजिनविंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९८ ॥

भवन वात कुमार के में, चैत्य तरु सुख दाय है । तिस दक्षिण दिश में मानथंभ सु, प्रतिमा जुत पाय है ।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य दक्षिणदिशायाम् मानस्तम्भसंबधि जिनविंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९९ ॥

भवन वात कुमार के विच, चैत्य तरु अतिशय मई । ताके जु पश्चिम दिशा जानों, हेट प्रतिमा पंच ही ।
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य पश्चिमदिशासंबधि-पचजिनविंवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०० ॥

इन प्रत्तिमा के पश्चिम दिश को, मानथंभ आगे कही । तिन ऊपरे भी विंब जिनके, नमें तिनके अघ नहीं ।
तिन प्रतिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य पश्चिमदिशायाम् जिनविंवाग्रे मानस्तम्भसंबंपधि-चजिनविंवेभ्यो अर्घं नि० स्वाहा ॥१०१॥

वात जात सु भवन वासी, चैत्य तरु तिनके सही । प्रति विंब उत्तर दिशा जाके, पांच सुन्दर पुन मही ॥
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आय चढायके । तिस फलैं मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेपु चैत्यवृत्तस्य उत्तरदिशायाम् पचजिनविंवेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ १०२ ॥

कुमर वात सु भवनवासी, चैत्य तिनके घर तने, तिस वृत्त ऊपर दिशा सोहै, मानथंभ प्रतिमा बने ।

तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि सब नाशि है भय खायके ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य उत्तरदिशायां पंचमानस्तम्भसबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०३ ॥

वात भवन सु चैत्य तरु अरु, मानथंभ गाये सही । जिन प्रत्तिमा तरु हेट ऊपर, मानथंभ पाये वहीं ॥
तिन प्रत्तिमा के पांय पूजों, द्रव्य आठ चढाय के । तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खाय के ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक् मानस्तम्भसंबधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०४ ॥

चैत्य अश्वत्थ सप्तपरण सु, शालमलि जम्बू सही । वृक्ष वेत कदम्ब प्रियगु, शिरिप पालाशा कही ॥
इम दशम राजद्रुम सु सोहै, सब तलै प्रतिमा भनो । जिन बिंब आगे मानथंभसु, प्रत्तिमा तिन थुति ठनों ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनपतिषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक्-मानस्तम्भ-संबधिजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— दशविध भवनपती धरा, चैत्य वृक्ष सुखदाय, तिन तल बिंब जिनेश के, मानथंभ जुत थाय ॥ १ ॥

छंद लक्ष्मीवती— असुरघर चैत्य अस्वत्थ कूं जानिये, सप्तपर्ण चैत्य तरु नागथल मानिये ।
चाल मुनयानन्द— शाल्मली वृक्ष सपर्ण सुरके सही, द्वीप थल जंबु तरु चैत्य पुण्य की मही ॥ २ ॥
उदधि घर चैत्य का चैत्य वृक्ष होय जी, विदुत कै भवन में कदम्ब वृक्ष जोयजी ।
स्तैंन घर प्रियंगु शुभ चैत्य वृक्ष जानिये, दिक्कुमारा भवन सिरीस सो मानिये ॥ ३ ॥
वृक्ष पल्लास का नाग घर जोइये, और किरमाल तरु वात तल सोइये ।
एक वृक्ष चैत्य थल एक दिश जानिये, पांच जिन बिंबकी पांति शुभ मानिये ॥ ४ ॥
चव दिशा वृक्ष तलि चारि पंकति भई, सब मिले बीस बिंब एक वृक्षके सही ।
एक एक बिंब आगे सुभग मानिये, मानथंभ एकसे रत्नमय जानिये ॥ ५ ॥

बहुत महिमा लिये मानथंभ जानिये, ऊपरै भाग तिस बिंब जिन मानिये।
येक दिश सात बिंब पंकति सोहिये, महा गुण रूपयुत लखि जिन होइये ॥ ६ ॥
जानि इत्यादि वृक्ष चैत्य महिमा सही, मान थंभ आदि सब बात श्रुत में कही।
और रचना सु मन चाह तिन के हिये, सार त्रैलोक्यते जानिले सो जिये ॥ ७ ॥

दोहा— चैत्य वृक्ष महिमा सकल, मानथंभ जुत जोय। तिनतें जुत जिन बिंब हैं, लखैं मान नहि होय ॥८॥

ॐ ह्रीं भवनवासी-असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृक्ष-मानस्तम्भसम्बन्धि जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥ इति जयमाला ॥

॥ अथ दश प्रकार भवनवासी देवों के बीस इंद्रों के भवन संबंधि जिन चैत्यालयों की पूजा ॥

छंद हरिगीतिका—दश प्रकार सु भवनवासी, थान जिनके में सही। है इंद्र दो दो भवन तिनके, मांहि इक इक गिरि कही।
तिन पर्वतों पर थान जिनके, रतन मय शुभ जानिये। तिन मांहि बिंब जिनेश के हैं, ते जजों विधि ठानिये ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार भवनवासी विंशति इन्द्रभवन संबंधि जिन चैत्यालय अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वानन।
ॐ ह्रीं दशप्रकार भवनवासी विंशति इंद्रभवनसंबधि जिन चैत्यालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः, स्थापनम्।
ॐ ह्रीं दशप्रकार भवनवासी विंशति इन्द्रभवनसंबंधि जिन चैत्यालय अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्, सन्निधिकरणम्।

दश जाति के शुभ भवन मंदिर, जजों ध्रुव पद पांय हैं। तहं बिंब पूजें सदा सुरगण, पुण्य को उपजाय हैं।
तिहिं भक्ति कर वसु द्रव्य लेकर, घनी थुति मुखतें करैं। सब चैत्य पूजा ठानि मुखतें, आपने अघ को हरैं ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार भवनवासी-विंशति-इन्द्रभवनेषु जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

छंद जोगीरासा—असुर कुमार तने जुग इंद्र सु,तिनको भिन भिन राजों। भवन तिनों केतेभी भिन भिन,जानि जजों महाराजो।
सब ही असुरन के थल गिनती, चौसठि लाख बताये। तिनको मन वच तन करि पूजों, अर्घ जोय कर भाये ॥
ॐ ह्रीं असुरकुमार युगलइन्द्रसंबंधि चतुःषष्टि-लक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

चमर इन्द्र के चौतिस लक्षा, अद्भुत भवन बताये। तिन प्रति नमूं त्रये सुध धरके, जिन प्रतिमा मन भाये।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा। मन वच तनतैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं चमरइन्द्र-चतुस्त्रिंशत्लक्ष-भवन संबधि-चतुस्त्रिंशत् जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ४ ॥

असुर कुमार विषै वैरो जानो। लाख तीस है भवन अमल में, तिन बिच आज्ञा मानो।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा। मन वच तनतें बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं वैरोचनइन्द्रत्रिंशत्लक्ष-भवनसंबधि त्रिंशत् जिन चेत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

नाग कुमार विषै दो इन्द्र जु, राजैं भिन भिन केरो। चौरासी लख भवन तिन्होंके, सुख दायक सुर डेरो।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा। मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं नागकुमारभवने चतुरशीति लक्षभवन संबंधि चतुरशीतिःजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

नाग कुमार विषै भूतानंद, पहलो इन्द्र बतायो। लाख चवाली भवन राज में, तिन विच अमल सु गायो।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा। मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं भूतानदनागेन्द्रभवने चतुश्चत्वारिंशत् जिनालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

नाग कुमार विषै धरणानंद, दूजो इन्द्र सुजानो। भवन लाख पच्चीस तनो पति, सबमें अमल बखानो।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा। मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं धरणानंदनागेन्द्रभवने पंचविंशतिलक्ष भवनसंबधि पंचविंशतिलक्षजिनालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सुपरण कुमर विषै जुग इन्दर, दोनों ही सम गाये। लाख बहत्तरि भवन रतन मय, शोभा अधिक बताये।

जोगीरासा—तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं विंब जजो मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेन्द्रभवने द्विसप्तति' भवनसबंधि द्विसप्तति-जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

वेणु इन्द्र के राज विषै है, भवन लाख अडतीसा । सब मांही याकी सब आज्ञा, मानत सुरां अधीसा ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं विंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥

ॐ ह्रीं वेणवेन्द्रभवने अष्टचत्वारिंशत् भवन सबंधि अष्टचत्वारिंशत् जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

सुपर्ण कुमार विषै सुरपति है, वेणु धार लछि थानों । चौतिस लाख भवन पति सोहै, तिनमैं अमल सुजानों ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं विंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥

ॐ ह्रीं वेणुधारीइन्द्र भवने चतुस्त्रिंशत भवनसंबंधि चतुस्त्रिंशत् जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

द्वीप कुमार विषै जुग स्वामी, अद्भुत लक्षण केरे । लाख छिहंतरि भवन तिन्हों के, मनसानक जुत ढेरे ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं विंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेंद्रभवने पटसप्ततिः भवनसम्बन्धि पट्सप्तति जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

द्वीप कुमार विषै पहलो है, पूरण इन्द्र राजा । लख चालीस भवन है तामें, पूर्व पुण्य के काजा ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं विंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारस्यप्रथमपूर्णनामइन्द्रभवने चत्वारिंशत्लक्षभवनसबंधि-चत्वारिंशत्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

द्वीप कुमार वशिष्ट इन्द्र है, दूजो अति बल धारी । लख छतीस है भवन तास के, सब ही कों सुखकारी ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं विंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥

ॐ ह्रीं वशिष्ठइन्द्रभवने पट्त्रिंशत् भवनसंबंधि-पट्त्रिंशत्-लक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

उदधि कुमार सु देव विषै है, इन्द्र जुगल गुण धारी । लाख छिहत्तरि भवन विषै शुभ, देव बसै सुखकारी ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं विंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥

ॐ ह्रीं उद्धिकुमारभवने पट् सप्तति' भवनसबंधि-पटसप्तति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

छंद जोगीरासा–उदधि कुमार विषै पहलो है,इन्द्र वडो गुण धारी । जल प्रभ नाम चालीस लाख गिन, भवन शोभ हितकारी ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं उदधिकुमारप्रथमजलप्रभ–नामइन्द्रभवने चत्वारिंशतलक्षभवनसंबंधि–चत्वारिंशत् जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥
उदधि कुमार विषैं दूजों है, इन्द्र पुण्य बलकारी । है जलकांतसु नाम जास को, लख छतीस जिनधारी ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं उदधिकुमार–जलकान्तइन्द्रभवने षट्त्रिंशतलक्ष–भवनसंबधि षटत्रिंशत् जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥
विदुत कुमार तने जुग इन्द्रा, राज तिन्हों का भारी । लाख छिहत्तरि भवन विषै है, जिनसे जिन अधिकारी ।
तिनके इक इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं विद्युतकुमारसबंधि–षटसप्तति'लक्षभवने षटसप्तति.जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥
विदुत कुमार विषै इन्दर है, पहला घोष सु नामा । लख चालीस भवन है जामें, अमल सबहि सुख धामा ।
तिनके इक इक थ.नक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं विद्युतकुमार घोष नामइन्द्र भवने चत्वारिंशत् भवनसंबंधि–चत्वारिंशत् जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥
विद्युत सुर में इन्द्र दूसरा, महा घोष गुणवानो । लाख छतीस भवन को स्वामी, राज करै हित थानो ।
तिनके इक-इक थानक मांही, एक एक जिन गेहा । मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अरघ लाय हित नेहा ॥
ॐ ह्रीं विद्य तकुमार-द्वितीय महा–घोषइन्द्रभवने पटत्रिंशत् लक्षभवनसंबंधि–पट्त्रिंशत् जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

॥ छंद पद्धरि ॥

लखि स्तनित कुमार सु देव सोय,तिन भवन छिहत्तरि लाख जोय । तिन में इक इक जिन थान जान,मैं पूजों तिनकों अर्घ आन ॥
ॐ स्तनितकुमारपट्सप्ततिलक्षभवनसम्बन्धि–पट्सप्ततिःलक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥
हरषेण इन्द्र पहलो सु जोय, तिस भवन लाख चालीस होय । तिन में इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिन को अर्घ आन ॥
ॐ ह्रीं हरिषेणइन्द्रचत्वारिंशत्–भवनसम्बन्धिचत्वारिंशत्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

हरिकान्त इन्द्र दूजो सु जोय, तिस भवन लाख छत्तीस होय। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार-द्वितीय हरिकान्तइन्द्र-भवनसम्बन्धिषट्त्रिंशत् लक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

सुर दिक्कुमार के इन्द्र जोय, ता लाख छिहतरि भवन होय। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनसम्बन्धि षट्सप्ततिः लक्ष भवनेषु षट्सप्ततिः लक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

दिक्कुमार अमित गति इन्द्र पैल, तिस भवन लाख चालीस गैल। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु अमितगति प्रथमइन्द्र-चत्वारिंशतलक्षभवनसम्बन्धि-चत्वारिंशत् लक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

दिक्कुमार अमित वाहन सु इन्द्र, तिस भवन लाख छत्तीसचन्द्र। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु अमितवाहनइन्द्र-षट्त्रिंशतलक्षभवनसम्बन्धि-षटत्रिंशत् लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २६ ॥

सुर अगनि कुमार सु इन्द्र जोय, तिन भवन लाख छिंत्तर जु होय। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमार-भवनसम्बन्धि षट्सप्ततिःलक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २७ ॥

लख अगनि सिखी पहला सु इन्द्र, तिन भवन लाख चालीसविन्द्र। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु-अग्निशिखइन्द्र चत्वारिंशत् लक्षभवनसम्बन्धि चत्वारिंशतलक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२८॥

लख अगनि वाह दूजो सुरेश, तिन भवन लाख छत्तीस देश। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु-अग्निशिखइन्द्र चत्वारिंशत् लक्षभवनसम्बन्धि जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २९॥

है वात कुमार सु इन्द्र सोय, तिन भवन सु छिनवै लाख होय। तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन।

ॐ ह्रीं अग्निकुनारभवनेषु द्वितीयअग्निवाहन-इन्द्र-षट्त्रिंशत्-लक्षभवनसम्बन्धि जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३० ॥

वेलवेन्द्र पहलो बताय, तहां भवन लाख पच्चास गाय। तिनमें इक इक जिन भवन जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन।

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनसंबधिषट्नवतिलक्षभवनेषु-षट्नवतिलक्ष-जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३१ ॥

दूजो सु इन्द्र परभंज सोय, तिस लाख छियालिस भवन होय। तिनमें इक इक जिन भवन जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन।

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु प्रथमवेलवेन्द्रसंबधि-पञ्चाशतलक्षभवनानाम्-पञ्चाशतलक्ष जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं प्रभंजनइन्द्रभवने षट्चत्वारिंशत्-लक्षभवनसम्बन्धिषटचत्वारिंशत्-जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

॥ आगे भवनवासी देवों के गति छेदक प्रत्येक अर्घ ॥

सोरठा—भवन पति दश भेद, तिनके थानक के विषै। उतपति छेद करेव, तिन जिन पति पूजों सही।

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासी-देवगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३३ ॥

चौपई—असुर कुमार एक दधि आय, धनुष पचीस तनी शुभ काय। या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं असुरकुमार-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३४ ॥

चमर नाम है इन्द्र महान, असुर विषै पहलो पहिचान। या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं असुरकुमारइन्द्रसंबंधि-षटपंचाशत्सहस्रदेवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३५ ॥

असुर कुमार इन्द्र के जान, देवी छपन हजार सु मान। या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रसम्बन्धि-षट्पचाशत्सहस्र-देवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३६ ॥

चमर इन्द्र की देवी जान, पटरानी आदिक सब मान। या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं चमरेन्द्रदेवी-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३७ ॥

वैरोचन इन्दर है सही, असुर विषै दूजा पति कही। या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं वैरोचन-इन्द्रसंबधि-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३८ ॥

वैरोचन इन्दर की जोय, होय नियोगनि देवी सोय। या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं वैरोचनइन्द्र-देवीगति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३९ ॥

नाग कुमार देव पतिजी के, अपनी इन्द्री सुरमें टिके। या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नागकुमार-देवेन्द्र-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४० ॥

नाग कुमार घर देवी जिती, पटरानी आदिक हैं तिती । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवेन्द्रसम्बन्धि-देवाङ्गनाउत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४१ ॥

भूतानन्द इन्दर है सही, तीन पल्य तिन आयुस कही । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भूतानन्दनागेन्द्रगति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४२ ॥

भूतानन्द को प्यारी भाय, देवांगना अतिसय सुखदाय । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भूतानन्दइन्द्रसम्बन्धि-देवाङ्गनागतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४३ ॥

धरणानन्द इन्दर मन लाय, कष्ट किये तें यह विधि पाय । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धरणानन्द-नागेन्द्रगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४४ ॥

धरणानन्द सुरपति घर जोय, होय नियोगन देवी सोय । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धरणानन्द-इन्द्रसम्बन्धि-देवाङ्गना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४५ ॥

देव सुपर्ण कुमर पहिचान, भोगत नाना विधि सुख जान । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घथकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमार-इन्द्र-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४६ ॥

वेणु इन्द्र पहला को नाम, पायो घणो राज को ठाम् । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वेणुइन्द्र-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४७ ॥

वेणु इन्द्र की देवी कही, लाख चवालिस संख्या लई । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वेणुइन्द्रसम्बन्धि-देवाङ्गनागतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४८ ॥

इन्द्र वेणुधारी है जोय, सुपर्ण विषै दूजो पति होय । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वेणुधारीसुपर्ण-इन्द्र-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४९ ॥

वेणुधार की देवी कही, सुरपति को अति वल्लभ सही । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वेणुधारीइन्द्रसम्बन्धि देवाङ्गना-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५० ॥

द्वीपकुमार देव को ईश, है शुभ काय धनुप दश बीस । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५१ ॥

द्वीपकुमार देव की जान, अदभुत कला रूप की खान । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार संबधिदेवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५२ ॥

द्वीपकुमार विषै सुरपति, पूरणनाम लछ बहुलती । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार प्रथम पूर्ण नाम इन्द्रक गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५३ ॥

पूरणइन्द्र थकी शुभ जान, देवी सकल रूपगुण खान । या गति उतपति छेदक सोय अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारपूर्णेन्द्र-संबधि-देवांगना-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५४ ॥

नाम वशिष्ट इन्द्रका जान, द्वीपकुमार उतपति मान । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वशिष्ट नामइन्द्र-गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५५ ॥

इन्द्र वशिष्ट नियोगनि सही, देवी बहुत रूप गुणमही । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वशिष्ट इन्द्रसबधि-देवागना-गति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५६ ॥

उदधिकुमार देवपति गिनों, पुन्ययोग सुख थानकभन्यो । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार-देवगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ७ ॥

देवी उदधि कुमारन तनी, पुन्य योग तैं उपजे घनी । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार संबधि-देवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५८ ॥

इन्द्रनाम जल प्रभै सुजान, महारूप बुधि उज्ज्वल मान । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार संबंधि-जलप्रभ-नामइन्द्र-गति छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५९ ॥

इन्द्र देव जलप्रभ की सही, रूप रसीली है शुभ मही । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जल प्रभ नामइन्द्रसंबंधि देवांगना-गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ६० ॥

चौपई—उदधिकुमार विपै अधिपति, है जलकांत इन्द्र गुण जुति । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार जलकांतक-इन्द्र-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६१ ॥

उदधि पती जलकांत सुदेव, ताकै बहु देवी गुण जेव । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जलकातक इन्द्र सबंधि देवांगना- गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६२ ॥

विद्युतकुमार इन्द्र है सही, महिमां बड़ी पुन्यतें लही । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमार देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६३ ॥

विद्युत देव संबंधी सार, देवी बहु गुण की भंडार । या गति उतपति छेदक सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमार संबधिदेवागना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६४ ॥

सोरठा— इन्द्र नाम है घोप, प्रथम विदुत सुर के विपै । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमार सबधि घोप इन्द्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६५ ॥

घोप इन्द्र सुख पोप, ताकी देवी है घनी । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमार घोप इन्द्रसम्बन्धि देवागना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६६ ॥

महा घोप सुर घोप, इन्द्र भलो विद्युत विपै । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमार महाघोष इन्द्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६७ ॥

देवी अति सुख घोप, महाघोप इन्दर तनी । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं महाघोषइन्द्रसबधि देवागना गति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६८ ॥

स्तनित कुमार सुधर्म, पुनि तै स्थानक शुभ मिल्यो । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं स्तनित कुमार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६९ ॥

स्तनित कुमार निरदोप, नहु देवी जुत सुख करै । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार संबंधि देवांगना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति

सोरठा—

इन्द्र कुवधि विन पोप, जानि नाम हरिपेणजी । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार हरिपेण इन्द्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७१ ॥

देवी गुण नृत्य पोप, स्तनित इन्द्र हरिपेण की । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार इन्द्रहरिपेण संबंधि देवांगना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७२ ॥

है हरि कान्त निरदोप, इन्द्र स्तनित कुमार में । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं हरिकांत इन्द्रगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७३ ॥

देवी गुणकर पोप, स्तनित इन्द्र हरिकांत की । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार हरिकान्तइन्द्र संबंधि देवांगना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७४ ॥

दिक्कुमार सुर पोप, मारग चालैं नीति के । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७५ ॥

देवांगना हित पोप, दिक्कुमार सुरपति तनी । या गतिहरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमार संबंधि देवांगना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७६ ॥

अमित गति निज जोय, मन माने सुख भोगवै । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमार अधिपति अमित गति प्रथम इन्द्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७७ ॥

देवी अति गुण पोप, अमित गति इन्दर तनी । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमार अमित गति इन्द्र सम्बन्धि देवांगना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७८ ॥

अमित वाहन निज जोप, दिक्कुमार अधिपति तनी । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमार संबंधि अमित वाहन इन्द्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७९ ॥

देवी सुख कर पोप, अमित वाहन दिक इन्द्र की । या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के ।

ॐ ह्रीं दिक्कुमार अमितवाहनइन्द्र संबधि देवागना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८० ॥

सोरठा— अगति करम विन सोप, भोगत वांछित सुख सही। या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८१ ॥

देवी बहु हित पोप, अगनि कुमर सुर की सही। या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारसंवधि देवांगना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८२ ॥

अग्नि शिखी कुल पोप, अधिपति अगनि कुमार को। या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार प्रथम अग्निशिखी इन्द्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८३ ॥

देवी बहु गुण दोप, जानहु अगनि शिखी तनी। या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के।

ॐ ह्रीं अग्निशिखी इन्द्रसंवधि देवांगना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८४ ॥

अग्नि वाहन गुण कोष, देव बड़े पद सुख मई। या गति हरि निरदोप, होय जजों पद तास के।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारसम्वन्धि अग्निवाहन द्वितीय इन्द्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८५ ॥

देवी सुर मन पोप, अग्निवाहन इन्दर तनी। या गति हर निरदोप, होय जजों पद तासके।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार-अग्निवाहन इन्द्र सम्वन्धि देवाङ्गनागतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति ॥ ८६ ॥

वात कुमर सुर पोप, मानत बहु सुर आन को। या गति हर निरदोप, होय जजों पर तास के॥

ॐ ह्रीं वातकुमार देवगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८७ ॥

देवी चतुर सुघोष, वात कुमार सुरां त्रिपै। या गति हर निरदोप, होय जजों पद तास के॥

ॐ ह्रीं वातकुमारसम्वन्धि देवाङ्गना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८८ ॥

सुर वेलम्ब सुख पोप, ज्ञान ध्यान जिन नाम को। या गति हर निरदोप, होय जजों पद तास के॥

ॐ ह्रीं वेलम्बनाम इन्द्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८९ ॥

सुरवेलम्ब सुजान, देवी चतुर सुहावनी। या गति हर निरदोप, होय जजों पद तासके॥

ॐ ह्रीं वेलम्व इन्द्रसम्वन्धि देवाङ्गना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९० ॥

सोरठा— परभंजन सुरतोष, पायो पुण्य तें सुख घनो। या गति हर निरदोष, होय जजों पद तास के॥

ॐ ह्रीं प्रभञ्जनामद्वितीयइन्द्रगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६१॥

देवी हित वच पोष, परभंजन इन्दर तनी। या गति हर निरदोष, होय जजों पद तास के॥

ॐ ह्रीं प्रभञ्जननाम द्वितीय इन्द्रसम्बन्धि-देवाङ्गना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६२॥

छंद जोगीरासा—असुरपती के देवी वल्लभ, षोडस सहस बताई। जे निज तनकी करै विक्रिया, अपने तनसे थाई॥
सो तन आठ हजार बनावै, रूप सुभग गन छेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारषोडससहस्रदेवीवल्लभा गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६३॥

नाग कुमार पती की देवी, दश हजार बखानों। ये अति वल्लभ है सुरपति के, तिन सुविक्रिया मानो।
आठ हजार करै तन निज से, अद्भुत पुण्य सुमेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा॥

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवसम्बन्धि दशसहस्रवल्लभादेवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६४॥

देव सुपर्ण कुमारपती के, वल्लभदेवी जानों। चार हजार महा गुण धारक, तिनके विक्रिया मानो।
इक इक देवी निज तन से तन, आठ हजार करेवा। या गतिछेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारपतिसम्बन्धि चतुर्सहस्रवल्लभादेवाङ्गना गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६५॥

द्वीप कुमार सुरापति के घर, वल्लभ देवी जानो। दोय हजार वल्लभा देवी, गुण रस पूरण मानो।
अपने तनकी करै विक्रिया, षट् सहस सुनेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारपति सम्बन्धि सहस्रद्वयवल्लभादेवाङ्गना-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६६॥

उदधि कुमार घरां सुरपति के, वल्लभ देवी जानों। दोय हजार बड़ा गुण गायक, विद्या बल अधिकानो।
इक इक देवी निज तन से तन, षट् षट् सहस बनेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मै करि हों तिन सेवा॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार सम्बन्धिसहस्रद्वयवल्लभा देवाङ्गना-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६७॥

विद्युत सुर के देवी वल्लभ, दोय हजार सु गाई। करै विक्रिया अपने तनकी, भिन भिन रूप बताई।

छंद जोगीरासा—इक-इक देवी स्वांग आपसे, पट् पट् सहस बनेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारसम्बन्धि-सहस्रद्वयवल्लभा-देवाङ्गना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९८ ॥

स्तनित कुमार तनी सुर देवी, वल्लभ दोय हजारो। करै विक्रिया अपने तन की, महिमा निज सी धारो।
सो ही पट् पट् सहस रूप जुत, देवी तन है जेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारसम्बन्धि-सहस्रद्वयवल्लभा-देवाङ्गना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९९ ॥

दिक्कुमार की वल्लभ देवी, दोय हजार सुजानो। करै विक्रिया जो निज तनकी, पट् पट् सहस बखानो।
इन आदिक बहुते गुण धारी, अपने पति सुख देवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारसंबंधि-सहस्रद्वयवल्लभा-देवांगनागतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०० ॥

अगनिकुमार तने अतिवल्लभ, देवी दोय हजारो। पट् पट् सहस बनावें निजसे, रूप महा अधिकारो ॥
नृत्यादिक बहु सुरघरि गावै, सुर मन मोहन जेवा। यागति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारसंबंधि-सहस्रद्वयवल्लभा-देवी-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०१ ॥

वातकुमार तनी शुभदेवी, वल्लभ दोय सहैसा। करै विक्रिया अपने तनकी, रूप महा निज हैसा।
सो भिन-भिन पट् सहस बनावै, हित कारी सुख देवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारसंबंधि-सहस्रद्वयवल्लभा-देवी-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०२ ॥

दशविधि भवन पती की वल्लभ, देवी सब इम जानो। सहस चवाली भई इकट्ठी, हितदायक गुण मानो।
करै विक्रिया आप जसे तन, और घने गुण जेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासीदेवानाम् इन्द्रसंबधिद्विचत्वारिंशतसहस्र-बल्लभादेवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०३ ॥

आयु असुर इक सागर जानो, काय धनुस पचीसा। मुकुट चिह्न चूड़ामणि जानो, छप्पन सहस देवीसा।
पांच महा पट देवी तिनमें, सुख जुत वरतै देवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसंबंधि-देवागना गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०४ ॥

छंद जोगीरासा—नाग आयु है तीन पल्यकी, काय धनुप दश होई। सर्प चिह्न है मुकुट विपै तिन, पट पंच देवी जोई।
सहस पचास कही सब देवी, इत्यादिक सुख देवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारसंवंधिदेवांगना–गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०५ ॥

आयु सुपर्णकुमार देव की, पल्य अढाई जानो। काय धनुष दश, सहस चवाली देवी सुखदा मानो।
गरुड़ चिह्न है मुकुट तासके, पट देवी पंच लेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मै करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवसंवंधि-देवांगना-गति–छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०६ ॥

दीपकुमार दो पल्य आयु है, काय धनुप दश होई। मुकुट चिह्न गज को पहिचानो, पट देवी पंच जोई।
सहस बतीस लिखी सब देवी, गुण विलक्षण जेवा। या गति छेद भये शिव मूरति मैं करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारसंवंधि-देवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०७ ॥

कुमर उदधि की आयु डयोढ पल्य, काम धनुप दश भाई। चिह्न माछलो मुकुट विपै है, पट देवी पंच गाई।
सहस बतीस कही सब देवी सुन्दर अति सुखदेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करि हों तिम सेवा ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवसंवंधि-देवांगना–गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्धम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०८ ॥

विद्युतकुमार सु आयु डयोढ पल्य, काय धनुप दश जानो। साथ्यो चिह्न है मुकुट ऊपरैं, देवी पंच हित मानो।
सहस बतीस कही सब देवी, अद्भुत स्वांग करेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवसंवंधि-देवांगना–गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १०९ ॥

स्तनितकुमार की आयु डयोढ पल्य, काय धनुप दश होवैं। चिह्न वज्र को मुकट विपै है, पटदेवी पंच जोवै।
सहस बतीस सु होय नारि सब, तिन सँग बहु सुख लेवा। या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवसंबधि-देवागना–गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११० ॥

दिक्कुमार की आयु डयोढ पल्य, काय धनुप दश मानो। सिंह चिह्न है मुकुट विपै तिय, सहस बतीसों जानो।

छंद जोगीरासा—पांच नारि तिन में पटरानी तिन जुत अहसुर मेवा । या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवसंबधि-देवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १११ ॥

अगनि मुकुट में चिह्न कलश को, आयु डेढ पल्य सोई । काय धनुष दश सहस बतीसजु,देवी तिन के होई ।
तिन में पट देवी हो पंचजु, इन सँग सुर लख लेवा । या गति छेद भये शिव मूरति मैं करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवसंबंधि-देवांगना-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११२ ॥

वातकुमार आयु डयोढ पल, काय धनुष दश भाई । घोड़ेका है चिह्न मुकुट में, पट देवी पंच गाई ॥
सहस बतीस जु होय देवियां, जिन मूरति सुख लेवा । या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहों तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारसंबधि-देवांगना—गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११३ ॥

इन्द्र सामानिक लोकपाल हैं, त्रयस्त्रिंश सुख दाई । अँग रक्षिक आनीक पारिषद् परकीरण मनलाई ।
आभियोग्य किलविषक देव हैं, भेद सुरां के एवा । या गति छेद भये शिव मूरति, मैं करिहौं तिन सेवा ॥

ॐ ह्रीं भवनवासी-इन्द्रसामानिक त्रायस्त्रिंशदित्यादि-दश-भेद-देवगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११४ ॥

चौपई—जैसे मनुषनि में भूपती, त्यों देवनि में इन्द्र समती । या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासी-इन्द्रगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११५ ॥

ज्यों यहां राजन में युवराज, त्यों प्रति इन्द्र भवन में साज । या गति छेद भये सिध सोय,तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भवनवासी-प्रतीन्द्रगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११६ ॥

जैसे यहां राजा सुत जान, त्यों ये त्रायस्त्रिंशत मान । या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासीसम्बन्धि-त्रायस्त्रिंशत्-देवगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

ज्यों यहां होय कलत्र सुजान, त्यों यहां सामानिक सुरमान । या गति छेद भये सिध सोय, तिनपद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासीसम्बन्धि-सामानिकदेवगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११८ ॥

ज्यों यहां सेनापति कुल वाल, भवन विषैं त्यों ही लोक पाल । या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासीसम्बन्धि-लोकपाल-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११९ ॥

जैसे यहां तन रक्षक जान, त्यों सुर आतम रक्षक मान। या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासीसम्बन्धि-लोकपाल-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२० ॥

ज्यों यहां राज सभा के लोय, त्यों यहां पारीषद त्रय जोय। या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासी-देवसम्बन्धि-पारिषद्-देव-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२१ ॥

ज्यों यहां लोक आदि हो सैन, तैसें सुर आनीक जु ऐन। या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासी-देवसम्बन्धि-अनीकदेव गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२२ ॥

जैसे पुरजन वसती पाय, त्यों परकीरण देव बताय। या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासी-सम्बन्धि-प्रकीर्णक-देवगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२३ ॥

ज्यों यहां अन्य सेव करि खाय, त्यों अभियोग देव मन लाय। या गति छेद भये सिध सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासी-देवसम्बन्धि-आभियोग्य-देव-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२४ ॥

ज्यों यहां नाचि गाय करि खाय, त्यों ही किलविष देव बताय। या गति छेद भये सिध सोय, तिनपद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासीदेव-किलविष-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२५ ॥

छंद गीतिका—भवन वासी कहे दश विधि, इन्द्र जुग जुग जानिये। तिन इन्द्र सब का राज भिन भिन सम्पदा सुख मानिये ॥
जिन इन्द्र इक इक राज मांही, देव दशधा इम कह्या। यह गति छेद सिधाय शिवको, जे जजों मन वच ठह्या ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासीदेवसम्बन्धि-दशप्रकार-अन्यभेद-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२६ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—भवन थान जिन देव के, विंब नमों सुखदाय। हरी भवन गति देवकी, जजों तास पद आय ॥ १ ॥

चाल—छुनयानन्द—असुर देवन तने थान बहु गाइये, तिन विषैं मध्य में एक गिरि पाइये।
तासु गिरि ऊपरें थान एक जिन तनो, तासकर जोरि धरि शीश नमनी ठनो ॥ २ ॥

चाल–मुनयानन्द—भाग सुर भवन मध्य एक परवत कह्यो, तास के ऊपरै एक मन्दिर भयो।
भवन प्रति एक जिन थान या विधि सही, तास कर जोरि धरि शीश नमनी मही ॥ ३ ॥
भवन सुपरण तने गिनत बहुते सही, मध्य तिन एक एक गिरि है सुखमही।
ऊपरै एक जिन थान ताके बन्यो, तास कर जोर धरि शीश नमनी ठन्यो ॥ ४ ॥
दीप सुर कुमर के भवन हितकार हैं, गिनती श्रुति मांहि गायो वनो पार है।
तिन भवन एक गिरि बीच जिन थल कह्यो, तास कर जोर धरि शीश नमनी ठयो ॥ ५ ॥
उदधि के भवन की गिनती पहले कही, एक प्रति भवन में एक परवत सही।
गिरि शिरै एक जिन थान सुन्दर बन्यो, तास कर जोर धरि शीश नमनी ठन्यो ॥ ६ ॥
भवन विद्युत तने घने श्रुति में कहे, तिन विषै एक गिरि मध्य थानक ठहे।
एक गिरि शीश इक देव जिन गेह है, तास कर जोर धरि शीश मुख जय कहै ॥ ७ ॥
स्तनित के भवन में बहुत रचना बनी, एक गिरि एक पुर बीच जिन इम भनी।
गिरि विषै शीश पर थान जिन को सही, तास कर जोरि धरि शीश नमनी कही ॥ ८ ॥
दिक्कुमारां घने भवन गाये सही, भवन प्रति बीच इक गिरि अधिकी मही।
ऊपरै एक जिन थान तिसके बन्यो, तास कर जोरि धरि शीश नमनी ठन्यो ॥ ९ ॥
अग्नि के भवन महा सुभग थल गाइये, तिन तने मध्य इक पर्वता पाइये।
गिरि तने शीशपर जिन थानक कह्यो, तास कर जोर धरि शीश नमनी ठन्यो ॥ १० ॥
वात सुर भवन सब रतन मय जानिये, बीच जिन एक गिरि महा शुभ मानिये।
शीश ताके बन्यो थान इक जिन तनो, तास कर जोरि धरि शीश नमनी ठन्यो ॥ ११ ॥
सात कोडि बहत्तरि लाख जो जानिये, भवन सब देव दश जाति के आनिये।
तिन विषै एक गिरि शीश जिन थानि है, तास कर जोरि धरि शीश श्रुति ठानि है ॥ १२ ॥

दोहा—इन आदिक महिमा घनी, धारै जो पद होय। भव पद छेदक शिव वरी, नमों देव जिन सोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासी-देवसम्बन्धी गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं नीर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति जयमाला ॥

॥ प्रत्येक देव सम्बन्धी सात प्रकार सेना के गति छेदक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल —

देव भवन वासी की सैन्या जानिये, एक एक के सात सात विधि मानिये।
देव बने पशु रूप सेन इस जाति को, या गति छेदक सोय जजों तिन देव को ॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसबधि सप्तप्रकारअनीक-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

असुर कुमर के सैन्य सात परकार है, देव धरै अन्य रूप पशू का सार है।
याही पद को धार करे पति सेव को, या गति छेदक सोय जजों तिन देव को ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसंबंधि-सप्तजाति-अनीकगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

महिषे का तन धार, देव आवै सही। सुरपति की असवारी सम, ये सब कही।
या ही इन की सेव, शीश आज्ञा धरै। या गति छेदक पूजे तैं भव ना करै ॥

ॐ ह्रीं असुरइन्द्रसम्बन्धि-प्रथमामहिष-अनीक-गति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्थाहा ॥ ३ ॥

सेन दूसरी असुरन के, घोटक तनी। देव बनावें रूप आपने तन मनी।
या ही इनको सेव, शीश आज्ञा धरै। या गति छेदक पूजे तैं भव ना करै ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसम्बन्धि-द्वितोया-घोटकजाति-अनीक-गति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

तीजी रथकी सेन असुर सुर के सही। देव करै निज रूप होय रथ सो सही।
या ही इनकी सेव शीश आज्ञा धरै। या गति छेदक पूजे तें भव ना करै ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसम्बन्धि तृतीयारथ-जाति-अनीक—गतिछेदक—जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

चौथी सेना माहि बडे गज जानिये। देव करै निज रूप, होय गज मानिये।
या ही इनकी सेव, शीश आज्ञा धरै। या गति छेदक पूजेतें भव ना करै॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसम्बन्धि-चतुर्थी-गजजाति-अनीकगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

सेन पंचमी विषै पयादे जानिये। धरि किंकर के स्वांग टेरतें मानिये।
या ही इनकी सेव शीश आज्ञा धरै। या गति छेदक पूजे तें भव ना करै॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसम्बन्धि-पञ्चमी-पदाति-अनीक-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

छठी फोज के विषै, सभी गंधर्व हों। गावें मुख सुरपति के यश सुख सोय हों।
या ही इनकी सेव शीश आज्ञा धरै। या गति छेदक पूजे तें, भव ना करै॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसम्बन्धि षष्ठीगन्धर्वजाति-अनीकगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

सैन्य सातमी विषै, निरतकी सव कही। नृत्यादिक विधि करै, देव शोभा मही।
या ही इनकी सेव शीश आज्ञा धरै। या गति छेदक पूजेतें भव ना करै॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसंबंधि-सप्तमीनृत्यजाति-अनीकगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

येही सात प्रकार सेन के देव हैं, अपने अपने काज करें पति सेव हैं।
याही इन की सेव शीश आज्ञा धरैं, या गति छेदक पूजेतें भव ना करैं॥९॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारसवंधि-सप्तप्रकार अनीक-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

सेना सात प्रकार नाग सुर की गिनो, देव नियोगी सोय होय तिन आपनों।
या ही इनकी सेव शीश आज्ञा धरैं, या गति छेदक पूजेतें भव ना करै॥

ॐ ह्री नागकुमारसंबंधि-सप्तप्रकारअनीक-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ११॥

घोटक गज रथ प्यादे गंध्रव नृत्यकी, पट सेना तो येही सुपर्ण कुमार की।
एक गरुड़ की जानि शेप पट ये सही, इन गति हर के पॉय जजों हों धुनि कही॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारजातिसंबंधि-अनीकगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

दीप कुमार तनें पट् सैन्य समान है, हस्ती सेन विशेष सातमी जान है।
घोटक-रथ गज प्यादे गंध्रव नर्तिया, इन गति छेदक पाँय जजों हो भनि जिया ॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारजातिसंबंधि-सप्तप्रकार अनीक-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

घोटक रथ गज प्यादे गंध्रव नर्तिया, ये पट् तो सामान्य मच्छ सप्तम लिया।
देव बनावैं रूप आपनो चाव सों, इन गति छेदक पांय जजों शुभ भाव मों ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारसम्बन्धि-सप्तप्रकारअनीक-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

घोटक गज रथ प्यादे गंध्रव नर्तिया, सप्तम सेना ऊंट विद्युत सुरने लिया।
देव बनावैं रूप आपनों चावसों, इन गति छेदक पांय जजों शुभ भावसों ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारसम्बन्धि-सप्तप्रकारअनीक गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

घोटक गज रथ प्यादे गंध्रव नर्तिया, सप्तम स्तनित सेन खरकी मिल किया।
देव बनावैं रूप आपनों चावसों, इन गति छेदक पांय जजों शुभ भावसों ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारसम्बन्धि-सप्तप्रकारअनीक-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति ॥ १६ ॥

घोटक गज रथ प्यादे गंध्रव नर्तिया, दिक्कुमार के सिंह सातमां मिल लिया।
देव बनावैं रूप आपनों चावसों इन गति छेदक पांय जजों शुभ भाव मों ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारसम्बन्धिसिंहादि-सप्तप्रकार-अनीक-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

घोटक रथ गज प्यादे गंध्रव नर्तिया, अगनि देवके एक पालकी अति लिया।
देव बनावैं रूप आपनों चावसों, इन गति छेदक पांय जजों शुभ भावसों ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारसम्बन्धि-सप्तप्रकार-अनीक-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

घोटक रथ गज प्यादे गंध्रव नर्तिया, वात देव के घोडा जुत सातों किया।

देव बनावै रूप आपनों चावसों, इन गति छेदक पांय जजों शुभ भाव सों ॥

ॐ ह्रीं वातकुमारसम्बन्धि-घोटकादिसप्तप्रकार-अनीकगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

पट् सेना सामान्य दशों सुरके सही, दश में एक विशेष भिन्न सो वरणई ।
देव बनावै रूप आपनों चावसों, इन गति छेदक पांय जजों शुभ भावसों ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासीदेवसम्बन्धि-सप्तजाति-अनीकगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

॥ जयमाला ॥

छंद—गीतिका—महिप सर्प गज गरुड मांछल, खर ऊँट केहरि सही । फिर पालकी सु तुरंग दश ये, जान सैन्य विशेप ही ॥
घोडा रथा गज पैदला, गंधर्व नर्तकि सम कहें । इन गतिच्छेदक देव हैं सो, तार भवि शिव थल रहे ॥ १ ॥

छंद चौपाई—असुरकुमार देवके भाई, सात जाति की फोज बताई । देव रूप करि नाथ रिझावैं, या गति हरि सो शिव थल पावै ।२।
नागकुमार तने भी जानों, सात सैन्य आज्ञा सम मानो । देव रूप करि नाथ रिझावें, या गति हरि सो शिव थल पावै ॥३॥
देव सुपर्ण कुमार की जानो, सैन्य सात बहुसुखदा आनो । देव रूप करि नाथ रिझावें, या गति छेदि सिद्ध सो थावै ॥ ४ ॥
द्वीप कुमार देव घर सोई, फोज सात विधि सुन्दर होई । देव रूप करि नाथ रिझावै, इस गति छेद जजों सुख पावै ॥५॥
उदधि कुमार देव के तांई, सात जाति की सेन बताई । देव रूप करि नाथ रिझावै, इस गति छेद जजों सुख पावै ॥६॥
विद्युत कुमार देव घर जानों, सप्त प्रकार की सेना मानो । देव रूप करि नाथ रिझावै, इस गति छेद जजों सिध पावै ॥७॥
स्तनित कुमार देव के होई, सात जाति आनीक सु जोई । देव रूप करि नाथ रिझावै इस गति छेद जजों शिव थावै ।८।
दिक्कुमार देव के थाई, सेना सात प्रकार सु गाई । देव रूप करि नाथ रिझावै, इन गति छेद जजों सिध पावै ॥९॥
अग्नि कुमार देव सुखदाई, सात प्रकार सैन्य जिन गाई । देव रूप करि नाथ रिझावै, इन गति छेद जजों शिव थावै ।१०।
पवन कुमार देव सब सुधा, सात सैन्य ताके घर साधा । देव रूप करि नाथ रिझावै, या गति छेद पूज्य पद पावै ॥ ११ ॥

सोरठा— ऐसे दल सुरमांहि, सात सात सेना कही। या गति छेद कराहिं, तिन पद द्रव्य सुपूजिये ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारभवनवासी-देवसम्बन्धि-सप्तप्रकार-अनीकगति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति जयमाला ॥

॥ समुच्चय अधोलोक जयमाला ॥

छंद अडिल्ल—अधोलोक के थान गेह जिन विंब सही। ते पूजों सुध काय, लाय द्रव हित मही।
भवन देव नर्कादि सात राजू धरा, या गति छेदक देव जजों सब अघ हरा ॥

छंद लक्ष्मीवती—सात पिरथी अधोलोक में जिन कही, प्रथम पृथ्वी तने दल लिखों इम सही।

चाल मुनयानन्द—एक लख सहस जोजन असी जानिये, तास त्रय भेद खर पंक अब लानिये ॥ १ ॥
भाग खर मांहि कहे भेद षोडस सही, सहस जोजन भिन भिन्न लक्ष तिन मही।
आदि चित्रा थकी सहस जोजन गये, देव विंतर रहैं आपनी निधि लिये ॥ २ ॥
सहस दोय फेरि जोजन लगा जानिये, भवन वासी सुरां अल्पनिधि थानिये।
सहस व्यालीस फिर जोजना जोइये, बडी रिध देव धारी तहां पाइये ॥ ३ ॥
एक लक्ष फेरि जोजन तलै भू सही, मध्य रिध धार सुर भवन है तिन मही।
असुर बिन भवन सुर राक्षस व्यंतरा, रहैं खर भाग में महा सुख से भरा ॥ ४ ॥
राक्षसा व्यंतरा असुर भौन देवजी, थान पंक भाग में रहै सुख भेवजी।
रतन मय नगर में मिंद्र सुर के सही, पुण्य तैं लेत हैं जीव ऐसी मही ॥ ५ ॥
थान गिनती कहूँ भवन की जब न है, सात कोडि बहत्तरि लक्ष भवन है।
थान जिन तणूं इन मांहि इक इक सही, ते सवै पूज्य हूं भवन की धरि मही ॥ ६ ॥
भवन शामिल कहे व्यंतरों के थान जी, तिन विषै एक इक मिन्द्र जिन जानजी।

छद लक्ष्मीवती—ते सबै भक्ति करि द्रव्य वसु लायके, पूज्य हूँ पांय यहां भावना भायके ॥ ७ ॥
भूमि के भाग खर पंक जुग मांहिजी, भवनवासी रहैं व्यन्त तहां पाय जी ।
सहस अस्सी तनो भाग अवेहुल कह्यो, नर्क पहलो तहां महा दुख छय रह्यो ॥ ८ ॥
एक राजू धरा फेर खाली कही, दूसरे नर्क की फेर जानों मही ।
सहस वत्तीस नर्क भौम जाडी गिनो, फेर एक राजू भू हेट रीति ठनो ॥ ९ ॥
तीसरे नर्क की फेर आवैं महीं, वीस अर अष्ट जोजन तिको दल कही ।
फेर नीचै रजू एक आकाश है, नर्क चवथो तहां महा दुःख भास है ॥ १० ॥
वीस अर चारि जोजन धरा दल कह्यो एक राजू तलै फेरि नभ वनि रह्यो ।
फेरि नर्क पांचमों भौम दुख दाय है, वीस हजार भू मोटे पन पाय है ॥ ११ ॥
फेर तल एक राजू धरा नभ कह्यो, नर्क षष्ठम तनो फेर तहां बन रह्यो ।
सहस षोडस तनों मोटपन जानिये, इनि आगे नरक सप्तमों मानिये ॥ १२ ॥
एक राजू तलै फेरि भवन जाननो, नर्क सब जोड षण राजू विषै माननो ।
सात राजू अधो लोक इम जोइये, सात नर्क थान षट् राजू विषै सोइये ॥ १३ ॥
सो यह नर्क थल पाप तें पाइये, यह गति छेद पद पूज्य गुण गाइये ।
जोनि थानक तनी कथा इम जानिये, व्यास इक कोश तुंग पांच गउ मानिए ॥ १४ ॥
नर्क पहला विषै या विधि सों कहे, दूसरा नर्क की और विधि थल ठये ।
व्यास दोय कोस तुङ्ग कोस दश के सही, तीसरे नर्क की इम लिखों ये मही ॥ १५ ॥
कोस त्रय व्यास तुंग कोस पंदरा लिखो, नर्क चवथा तनी रीति ऐसे रखो ।
व्यास इक जोजना तुङ्ग पंच जोइये, नर्क पंचम तनी बात सुनि सोइये ॥ १६ ॥
व्यास दोय जोजना तुंग दश है सही, और सुनि नर्क षष्टम तनी जो कही ।
व्यास त्रय जोजना तुङ्ग पंदरह तनौ, नर्क सप्तम तनी रीति अब इम गिनो ॥ १७ ॥

छंद लक्ष्मीवती—व्यास इक सत तनो तुङ्ग सत पांच हैं, जोजना जानि सब लघू ये सांच है ।
योनि थानक नरक सात के इम कहे, थान दुख रूप यह काल के वन रहे ॥ १८ ॥
चार नर्क मांहि बहु शीत ही बरनयो, पांच में नर्क में शीत गरमी ठयो ।
दोय नर्क अन्त के शीत ही जानिये, पटल नर्क प्रथम में त्रयोदश मानिये ॥ १९ ॥
और के अन्त लौ दोय दोय हानिए, और सुनि कथन जो कह्यो जिन-वानिये ।
आदि दोय नर्क कापोत लेश्या कही, तीसरे नील कापोत दोऊ सही ॥ २० ॥
नरक चौथा विषै नील ही जानिये, नील अर कृष्ण नर्क पांच में जानिये ।
अन्त के दोय नर्क कृष्ण ही होय हैं, नर्क पहले अवधि कोश चव जोइये ॥ २१ ॥
और नर्क कोश अर्द्ध हीन क्रमतें कही, सातमें अवधि इक कोश की ही रही ।
जीव नर्क जाय दुःख पाय उछलै सही, तास की रीति जिनवाणी ऐसे कही ॥ २२ ॥
तुङ्ग तन दोय, जेते धनुप जानिये, लिखी जते जोजना उछलना ठानिये ।
नर्क में जीव उत्कृष्ट नहीं ऊपजें, होय अन्तर कभू पाप की धूप जे ॥ २३ ॥
अन्तर प्रथम नर्क में मुहूर्त चौवीस का, दूसरे नर्क दिन सात अन्तरादिका ।
तीसरे नरक पक्ष एक अन्तर कह्यो, चतुर्थ नरक मांहि एक मास अन्तर कह्यो ॥२४॥
पंचमें नर्क दोय मास को है सही, नर्क पष्टम लिख्यो मास चव को कही ।
सातवें नर्क पट मास अन्तर कह्यो, दुःख को कथन जिनवाणि तें सब लह्यो ॥ २५ ॥
ये सबै थान बहु पाप तें पाइये, इन गति छेद पद निशदिना ध्याइये ।
लोभ माया लहै क्रोध अर मान जी, इन वशी जीव पावैं नरक थान जी ॥ २६ ॥
देव धर्मको विनै नाहि जिनने कियो, यह महा विकट दुःख जीव ताने लियो ।
ये अधोथान नर्क दुःखमई है सही, असुर व्यन्तर सुरा काल दुखमय मही ॥ २७ ॥

छंद लक्ष्मीवती—थान सुख को नहीं जानिये कोयजी, या गति छेद पद पूज्य सुख होयजी।
अधो भू लोक की उतपति जे हरैं, जजों तिनके चरण और कोशिश करैं ॥ २८ ॥
जोर करि हाथ शिर तास पद को नमों, ता फलै आपने पाप दुखदा वमों।

दोहा— अधो थान दुखमय सकल, दुख तहँ लघु नहिं जान। या गति छेदक जगपती, तिन पद टेक न मान ॥

ॐ ह्रीं अधोलोकगतिछेदक-जिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति जयमाला ॥

॥ अधोलोक खरभाग, पंकभाग तथा मध्यलोक में व्यन्तरदेव सम्बन्धि अकृत्रिम चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीता—रत्न परभा भूमि में खर भाग पंक भाग है, मधिलोक में बहु दीप दधि है लिखित ही उर राग है।
तहां थान व्यन्तर देव के शुभ मांहि जिन थल गाइये, ते जजन कूं यहां भाव सेती थापि करि थुति लाइये ॥१॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन चैत्यालय अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थान-मध्य-जिन-चैत्यालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसम्बन्धि-व्यन्तर-देवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

चाल—जोगीरासा—क्षीर समद को निरमल पानी, कनक भारि में लाऊँ। हरपधारि कर ले कर अपने, निरमल भाव बनाऊँ।
अधोलोक मध्यलोक विपै है, व्यन्तर थान सु गाई। तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर, पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसम्बन्धि-व्यन्तरस्थानकमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

चन्दन बावन पावन कारी, निरमल नीर मिलाई। घसि के कनक पियाले धरले, पूजन को उमगाई ॥
अधोलोक मध्यलोक विपै है, व्यन्तर थान सु गाई। तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरस्थानकमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो चन्दन निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

अक्षत उज्वल-धवल अखंडित, नख शिख जुत ले आऊं। रतन रकेबी धार हरप कर, पूजन को चित लाऊं।

चाल जोगीरासा—अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई। तिन में जिन थल विंव जिनेश्वर पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरस्थानकमध्यजिन-चैत्यालयेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

देवद्रुमके फूल मनोहर, रंग विरंगे लाऊं। गंध घनी अलि के मन मोहन, मन करि कर-धर ध्याऊं।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई। तिन में जिन थल विंव जिनेश्वर, पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि व्यतरस्थानकमध्यजिन चैत्यालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

वांच्छित पट्रस पूर मनोहर, उज्जल विधि कर लाऊं। ऐसे चरु अपने कर धरिके मन-वच तन हरपाऊं।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई। तिन में जिन थल विंव जिनेश्वर, पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरस्थानकमध्यजिन-चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं नि० ॥ ६ ॥

दीपक मणिमय कनक थाल धरि, तम नाशक कूं लाऊं। अपने कर में भक्ति भाव तें, नाना गुण मुख गाऊं।
अधोलोक मध्य लोक विषै हैं, व्यंतर थान सु गाई। तिनमें जिन थल विंव जिनेश्वर, पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसंबंधि व्यंतरस्थानकमध्य-जिनचैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

धूप सुगंध बनाय मनोहर, दशधा परमल कारी। ऐसी धूप सु लेय मनोहर, अगनि विषै पर जारी।
अधोलोक मध्य लोक विषै हैं, व्यंतर थान सु गाई। तिनमें जिन थल विंव जिनेश्वर, पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसंबंधि-व्यंतरस्थानकमध्य-जिनचैत्यालयेभ्यो धूप निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी, खारक पिसता लाऊं। इन आदिक फल और मनोहर, अपने कर ले ध्याऊं ॥
अधोलोक मध्यलोक विषै हैं, व्यंतर थान सु गाई। तिनमें जिन थल विंव जिनेश्वर, पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसंबंधि-व्यतरस्थानकमध्य-जिनचैत्यालयेभ्यो फल निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जल चंदन अक्षत पहुप ले, चरु दीपक तम हारी। धूप फला वसु द्रव्य लेय के, अर्घ लेय सुख कारी।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यंतर थान सु गाई, तिनमें जिन थल विंव जिनेश्वर, पाय जजों हरपाई ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसंबधि-व्यंतर-स्थानकमध्य-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

छंद अडिल्ल— व्यंतर थानक मांहि भवन जिनके सही, तिनमें विंब अकार जिनेश्वर से कही।
तिनके पद शुभ अरघ लाय पूजन करों, ता फल पूरब पाप सकल दुखदा हरो ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोकसबंधि-व्यंतरस्थानकमध्य जिनचैत्यालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—व्यंतर थानक जिन भवन, विना किये ध्रुव थान। रतन विंब शोभित सुभग, जजों लेत शुभ ज्ञान ॥ १ ॥

छंद वेसरी—अधोलोक पहली भू जानो, रतन प्रभा तिस नाम बखानो। तामें खर पंक भाग सु माई, व्यंतर देव रहै अधिकाई ॥२॥
और देव व्यंतर के थाना, मध्य लोक में हैं जिन जाना। बहु विसतार कनक नग केरा, तुंग कोट तिन पुर चव केरा ॥३॥
तिन सब की गिनती सुन भाई, व्यन्तर नगर असंख्ये गाई। सबमें इक इक जिन को गेहा, रतन विंब पूजै सुर नेहा ॥ ४ ॥
अपने सुरभव का फल आनै, पूजै देव जिनेश्वर थानै। करिकैं बहु विधि पुण्य उपावै, हरप हरप जिनके गुण गावै ॥ ५ ॥
जिन पूजा तें अति सुख होई, करम जनित बाधा नहिं कोई। अनुक्रम करि सब पाप नशावे, छोडि काय शिवथानक जावे ।६।
तहां गेह जिन देवा पूजै, ता फल तिनके सब अघ धूजै। हम तो इस थानक में भाई, भावन भावत हैं सुखदाई ॥ ७ ॥
वहां गमन की शकती नाहीं, धन्य तिन्हें पूजें तिस ठाहीं। हीन पुण्य को मोसर दूरा, पूजे देव महा पुण्य पूरा ॥ ८ ॥

दोहा—व्यन्तर थल जिन भवन जे, जजों द्रव्य वसु लाय। तिन फल मिस अघ सब कटै, शिव थल पहुंचे जाय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-व्यंतरस्थानकमध्य जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम्।

॥ इति जयमाला ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—किंनर देवन के थल मांहि, हैं जिन भवन बिंब शुभ ठांहि। तिनके पद शुभ अर्घ चढाय, पूजन करों सु मन वच काय।

ॐ ह्रीं किंनर-व्यन्तरदेव-स्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

है किंपुरुष सुरां व्यन्तरां, जिन थानक जिनके गृह खरा। तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यन्तरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

देव महोरग व्यन्तर स्थान, है जिन गृह उत्तम फल दान । तिनमें रतन विंब सुख दाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं महोरग-व्यन्तर-देवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

गंधर्व देव व्यन्तरा सही, जिन थानक जिन थानक ठही । तिनमें रतन विंब सुख दाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं गंधर्व-व्यन्तर-देवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

यक्ष देव व्यन्तर सुखरूप, जिन थानक जिनके थल भूप । तिनमें रतन विंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन-वच-काय ॥

ॐ ह्रीं यक्ष-व्यन्तरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

राक्षस देव व्यन्तरा सोय, थानक तिन जिन के गृह जोय । तिनमें रतन विंब सुख दाय, मैं तिन पूजों मन-वच-काय ॥

ॐ ह्रीं राक्षसव्यन्तरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

भूतदेव व्यन्तर बहु जान, जिनगृह तिन थानक में मान । तिनमें रतन विंब सुख दाय, मैं तिन पूजों मन-वच-काय ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तर-देवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् नि० ॥ ७ ॥

देव पिशाच व्यन्तरा सोय, जिन थानक में जिन गृह होय । तिनमें रतन विंब सुख दाय, मैं तिन पूजों मन-वच-काय ॥

ॐ ह्रीं पिशाच-व्यन्तरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

छंद अडिल्ल—

आठ जाति के व्यन्तर देव सु जानिये, थान असंख्या इनके मणि मय मानिये ।
तिनमें थान जिनेश्वर के इक इक सही, तिष्ठत हैं जिन विंब जजों पद थुति ठई ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकार व्यन्तरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ किन्नर गतिछेदक अर्घ ॥

छंद पद्धरि—किनर कुल व्यन्तर मांहि जेय, किंपुरुप देव हैं जाति जेय । तिनकी गति छेदक देव सोय, मैं पूजों मन-वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किन्नरकुलसम्बन्धि किंपुरुपदेवगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

किंनर कुल व्यन्तर देव सोय, ता विषै जाति किंनर वहोय । तिनकी गति-छेदक देव सोय, मैं पूजों मन-वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किन्नरकुलसम्बन्धि-किन्नर-जाति गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

हिरदये गमक सुर देव सार, किंनर कुल में इन भेद धार। तिनकी गति छेदक देव सोय, मैं पूजों मन-वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किन्नरकुलमध्यहृदयगमकजाति-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

इन ही किंनर कुल मांहि जेय, सुररूप पालिके जाति तेय। तिनकी गति छेदक देव सोय, मैं पूजों मन वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किन्नरकुले रूपपालीजातिदेवगति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

किंनर किंनर सुर जाति जान, किंनर कुल भीतर होय मान। तिनकी गति छेदक देव सोय, मैं पूजों मन-वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किंनरकुले किंनरकिंनरजातिदेवगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

ये देव अनंदित व्यन्त जाति, किंनर कुलमें बहु सुक्ख पांति। तिनकी गति छेदक देव सोय, मैं पूजों मन-वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किन्नरकुले अनन्दितव्यन्तरजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

है देव मनोरम जाति सार, कुल किंनर में सप्तम सु धार। तिनकी गति छेदक देव सोय, मैं पूजों मन-वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किन्नरकुले मनोरमजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

किंनर उत्तम सुर जाति जान, सोभी कुल किंनर मांहि मान। तिनकी गति छेदक देव सोय, मैं पूजों मन-वच-काय होय ॥

ॐ ह्रीं किन्नरकुले किन्नरोतमजाति-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ किंपुरुष कुलमें दशभेद गति-छेदक अर्घ ॥

चोपई—है किंपुरुप तने कुल मांहि, पुरुप नाम है जाति सु ठांहि। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिन पद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले-पुरुपजातिदेवगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

कुल किंपुरुप व्यंतरा सोय, तिनमें पुरुपोत्तम कुल होय। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिन पद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुपकुले-पुरुपोत्तमजातिदेवगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

है सत पुरुप जाति सुर सोय, किंपुरुपनि के कुल में जोय। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुपकुले सत्पुरुपजाति-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

महा पुरुष देवन की जाति, कुल किंपुरुष विषै सुख दात। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले-महापुरुषजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

पंचम पुरुष प्रभा सुख सोय, कुल किंपुरुष विषै जो होय। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले-पुरुषप्रभाजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

या ही कुल किंपुरुष सु मांहि, है अति पुरुष जाति सुर ठांहि। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले अतिपुरुषजाति-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

है किंपुरुष तने कुल सोय, देव जाति मरु अति सुख होय। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले मरुजातिगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

है मरु जाति देव सुर साय, सो भी किंपुरुषनि में होय। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले मरुदेवजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

मरुत प्रभ व्यंतर है सही, किंपुरुषनि में सुख की मही। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय।

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले-मरुतप्रभजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

जसखान देवन की जाति, किंपुरुषनि में सुख की दाति। तिनकी गति छेदक जिनराय, तिनपद पूजों अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले-यशखानजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ।

छंद अडिल्ल—ये सब दश परकार देव जानों सही, किंपुरुषनि कुल मांहि महा सुख की मही।
अपनी अपनी आयु काय में सुख लहैं, तिन गति,छेदक देव जजैं सब अघ दहैं ॥

ॐ ह्रीं किंपुरुषकुले दशप्रकारदेवजातिगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

॥ अथ महोरग व्यंतरदेव जाति गति छेदक के अर्घ ॥

सोरठा— जाति भुंजग सु देव, होय महोरग कुल सही। या गति छेदक देव, तिनपद पूजों अर्घ सों।

ॐ ह्रीं महोरगकुले भुंजगजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

याहि महोरग मांहि, देव भुजंग शालि कहै। तिन गति छेदक ठांहि, पद पूजों वसु द्रव्य सों।

ॐ ह्रीं महोरगकुले भुजगशालिजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

या महोरग कुल मांहि, है महाकाय सु जाति सु। तिन गति छेदक सोय, पांय जजों मन वच थकी।

ॐ ह्रीं महोरगकुले महाकायजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

या महोरग कुल मांहि, है अति काय सु जाति सुर। तिन गति छेदक ठांहि, पांय जजों मन वच थकी।

ॐ ह्रीं महोरगकुले अतिकायगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २६ ॥

याहि कुल के मांहि, देव स्कंध माली सही। तिन गति छेदक ठांहि, पांय जजों वसु द्रव्यतें।

ॐ ह्रीं महोरगकुले स्कंधमालीजातिदेवगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २७ ॥

जाति मनोहर सोय, देव महोरग कुल विषै। तिन गति छेदक सोय, पांय जजों मन वच थकी।

ॐ ह्रीं महोरगकुले मनोहरजातिदेवगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २८ ॥

जाति असनजव देव, कहे महोरग कुल विषै। तिन गति छेदक देव, पांय जजों वसु द्रव्य तैं।

ॐ ह्रीं महोरगकुले असनजवजाति-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २९ ॥

महसूर्य सुर जाति, याही कुल में जानिये। तिन पद जजों हों प्राति, अर्घं लाय वसु द्रव्य तें।

ॐ ह्रीं महोरगकुले महसूर्यजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३० ॥

याहि महोरग मांहि, जाति गभीर सु देव है। तिन गति छेदक ठांहि, पांय जजों वसु द्रव्य तें।

ॐ ह्रीं महोरगकुले गभीरजातिदेव-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३१ ॥

है प्रियदर्शी देव, याही कुल में जोय है। तिन गति छेदक जेव, पांय जजों शुभ अर्घ तें।

ॐ ह्रीं महोरगकुले प्रियदर्शीजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३२ ॥

चौपई—ये दशजाति महोरग देव, तिनकी करें घने सुर सेव। तिन गति छेदक जिन वर सोय, मैं तिन पूजों, पद मद खोय ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकारमहोरगदेवगतिछेदकजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३३ ॥

॥ अथ गंधर्व देव गति छेदक अर्घ ॥

छंद बेसरी—हा हा देव जाति है भाई, गंधर्व देवन में सुखदाई। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिनपद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवकुले हाहाजातिदेवगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३४ ॥

गंधर्व देवन के कुल मांही, हूहू जाति देव अधिकाही। तिनकी उत्पति छेदक सोई, तिन पद अर्घ जजों मद खोई ॥

ॐ ह्रीं गंधर्वकुले हूहूजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३५ ॥

नारद जाति देव की होई, गंध्रव कुल में जानो सोई। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिन पद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गन्धर्वकुले नारदजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३६ ॥

तुंवर जाति देव है सोही, ये भी गंध्रव मांही होही। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिन पद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गन्धर्वकुले तुंवरजातिगति-छेदकजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३७ ॥

जाति कदंब देव है सारे, गंध्रव कुल में उपजति प्यारे। तिनकी उत्पति छेदक जानों, तिन पद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गधर्वकुले कदंबजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३८ ॥

वासव जाति व्यन्तरा भाई, सोभी या गंध्रव कुल थाई। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिन पद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गधर्वकुले वासवजातिदेवगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३९ ॥

जाति महा सुर व्यन्तर माही, सो भी गंधर्व के कुल ठांही। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिन पद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गधर्वकुले महासुरजातिदेव-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् नि० ॥ ४० ॥

याही गंधर्व कुल के वासी, जाति गीतरति लखि बहुदासी। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिनपद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गधर्वकुले गीतरतिजाति-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४१ ॥

गीत जसा सुर जाति सुजानो, गंध्रव माहि कहे सुख थानो। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिन पद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गंधर्वकुले गीतयशासुरजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४२ ॥

देव व्यन्तर जाति सु भाई, सो भी गंध्रव मांहि बताई। तिनकी उत्पति छेदक जानो, तिन पद अर्घ जजों तजि मानो ॥

ॐ ह्रीं गंधर्वकुले देवजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४३ ॥

छंद गीतिका—दशजाति के गंधर्व देवा, कहे अति सुख कारजी। कुल एकमें हैं इन्द्र दोय सु, बहुत लब्धिके धारजी ॥
तिन गति छेदक देवके पद, पूजहूँ मन लायके। अष्ट द्रव्य बनाय विधि सों, अष्ट अंग नमाय के ॥

ॐ ह्रीं गधर्वकुले देवगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४४ ॥

चौपई—यक्षन के कुल में शुभ रूप, मणिभद्र है जाति स्वरूप। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षकुले मणिभद्रजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

पूरणभद्र जाति सुर सही, यक्षन के कुल में उपजई। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षकुले पूर्णभद्रजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

देव यक्ष कुल में शुभ जान, शैल भद्र तिन जाति बखान। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षकुले शैलभद्रजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

मनोभद्र सुर जाति अनूप, यक्षन के कुल में शुभ रूप। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षकुले मनोभद्रजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

भद्रक जाति देव है सही, यक्षन के कुल में अधिकहीं। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षकुले भद्रकजातिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

जाति सुभद्र देव है सही, यक्ष देवके कुल में कही। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षकुले सुभद्रदेवजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

सर्व भद्र देवन की जाति, सोभी यक्ष कुल में सुख दात। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षकुले सर्वभद्रजातिदेवगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

मानुष जाति देव सुखकार, यत्तन के कुल हो अधिकार। इनकी उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं यत्तकुले मनुष्यजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

यत्तन के कुल मांही सही, है धनपाल जाति सुर कही। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं यत्तकुले धनपालजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५३ ॥

जाति स्वरुप यत्त है सही, सो भी यत्त कुल उपजैं कही। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं यत्तकुले स्वरुपजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५४ ॥

यत्तोत्तम शुभ जाति सु देव, यत्तन के कुल में स्वयमेव। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं यत्तकुले यत्तोत्तमजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५५ ॥

जाति मनोहर व्यंतर देव, यत्तन के कुल में हो तेव। इनमें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं यत्तकुले मनोहरजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५६ ॥

छंद अडिल्ल—यत्तन के कुल मांहि बहुत सुख वरणये, तिनके द्वादश भेद जाति भिन भिन ठये।
सुख दायक ते थान भोग सुख रमत हैं, तिनमें उत्पति छेद जजों शुभ भरत है ॥

ॐ ह्रीं द्वादशजातिभेदयत्तगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५७ ॥

॥ सात भेद रात्तस कुल गति छेदक अर्घ ॥

सोरठा—रात्तस कुल में जानि, भीम जाति व्यंतर सही। इन गति छेदक मानि, अर्घ जजों तिन पद सही।

ॐ ह्रीं रात्तसकुले भीमजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५८ ॥

या रात्तस कुल जानि, महाभीम शुभ जाति सुर। इन गति छेदक मानि, अर्घ जजों तिन पद सही।

ॐ ह्रीं रात्तसकुले महाभीमजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५९ ॥

रात्तस कुल के मांहि, विघन विनायक जाति है। या गति छेदक पांहि, अर्घ जजों तिन पद सही।

ॐ ह्रीं रात्तसकुले विघ्नविनायकजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

राक्षस कुल के मांहि, उदक जाति सुर है सही। या गति छेदक पांहि, पूजों अर्घ चढाय के।

ॐ ह्रीं राक्षसकुले उदकजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

या राक्षस कुल मांहि, राक्षस जाति ही देव है। या गति छेदक पांहि, अर्घ जजों मन वच थकी।

ॐ ह्रीं राक्षसकुले राक्षसजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६२ ॥

राक्षस ही कुल मांहि, और जाति राक्षस सही। या गति छेदक पांहि, अर्घ जजों वसु द्रव्यसों ॥

ॐ ह्रीं राक्षसकुले द्वितीयराक्षसजातिदेवगति-छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

या राक्षस कुल मांहि, जाति ब्रह्म राक्षस सही। या गति छेदक पांहि, अर्घ जजों मन वच थकी ॥

ॐ ह्रीं राक्षसकुले ब्रह्मराक्षसजातिदेवगति-छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

छंद अडिल्ल— राक्षस कुल के मांहि सात ही भेद है, ते नाना सुख लहैं तहां नहीं खेद है।
इनमें उत्पति छेद सोय शिव पहलही, तिनही के पद आय हमहि अर्घहि ठई ॥

ॐ ह्रीं राक्षसकुले सप्तजातिव्यन्तरदेवगति-छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

॥ अथ सप्त जाति भूतव्यन्तर गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—भूतन के कुल मांहि सुजान, जाति सुरूप देव अधिकान। इनकी गति छेदक जो देव, तिन पद जजों अरघ करि सेव ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तरकुले सुरूपगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

भूतनहीं के कुल में सही, सुर प्रतिरूप जाति है कही। इनकी गति छेदक जो देव, तिनपद जजों अरघ करि सेव ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तरकुले प्रतिरूपजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

इनही भूतन के कुल मांहि, भूतोत्तम शुभ जाति कहाहिं। इनकी गति छेदक जो देव, तिन पद जजों अरघ करि सेव ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तरकुले भूतोत्तमजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

है प्रतिभूत जाति सुर सोय, सो भी भूतन के कुल होय। इनकी गति छेदक जो देव, तिन पद जजों अरघ कर सेव ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तरकुले प्रतिभूतजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

महाभूत जातिक जो देव, भूतन के कुल में लखि लेव । इनकी गति छेदक जो देव, तिन पद जजों अरघ करि सेव ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तरकुले महाभूतजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

वादि भूत कुल उपजे सही, जाति प्रति छिन सुख की मही । इनकी गति छेदक जो देव, तिन पद जजों अरघ करि सेव ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तरकुले प्रतिछिन्नजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

आकाश भूत जाति सुर सोय, सो भी भूतन के कुल होय । इनकी गति छेदक सो देव, तिन पद जजों अरघ करि सेव ॥

ॐ ह्रीं भूतव्यन्तरकुले आकाशजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

छंद अडिल्ल—

सात जाति यह भूतन के कुल में कही, भोग तने सब भोग आपने पुनि सही ।
इनकी गति को छेद भये भव पारजी, तिनके पद में जजों अरघ धरि सारजी ॥

ॐ ह्रीं भूतकुले सप्तजातदेवगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७३ ॥

॥ अथ पिशाच कुल सम्बन्धि चतुर्दश जाति गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई—कूष्मांड जातिक सुर सोय, जानि पिशाचनि के कुल होय । इनकी गति हरि शिव पद लयो, तिन पद अर्घ लेय शिर नयो ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले कूष्मांडजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

याहि पिशाचनि के कुल मांहि, यक्ष जाति सुर उपजत टांहि । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले यक्षजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

रक्षा जाति देव है सोय, सो पिशाच कुल मांही होय । इनकी गतिहर शिव पद धार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले रक्षाजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

जाति समोह देव है सही, जानि पिशाचनि के कुल कही । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टारि ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले समोहजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

तारक जाति देव जे सही, होय पिशाचनि के कुल मही । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले तारकजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम ॥ ७८ ॥

होय पिशाचनि के कुल मांहि, जाति अशुचि सुर जानो ठांहि । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले अशुचिजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७९ ॥

जाति पिशाचनि के कुल मांहि, काल जाति के देव सुभाय । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले कालजाति-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८० ॥

याहि पिशाचनि के कुल सोय, महाकाल सुर जाति सुहोय । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले महाकालजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

याहि पिशाच देव कुल जानि, जाति देव की शुचि हों मान । या गति छेद भये भवपार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले शुचिजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

जाति सतालक देवा जानि, होय पिशाचनि के कुल मानि । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले सतालकजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

देह जाति के देव सु होय, सो भी पिशाचन के कुल सोय । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मम टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले देहजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

होय पिशाचन के कुल सार, महादेह जातिन कर धार । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले महादेहजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

तूष्णीक सुर जाति बताय, सो भी पिशाचन के कुल भाय । या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले तूष्णीकजातिगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

जाति पिशाचन के कुल मांहि, जाति प्रवचन देव अधिकांहि । गा गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले प्रवचनजातिदेवगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

छंद हरिगीतिका—दश च्यारि जाति पिशाच सुर है, लब्धि धारक अति सही । इक एक कुलमें दोय हरि हैं,आन सुर मानै कही ॥

इन आदि रचना और बहु है, जान इन कुल सारजी। या गति छेदक देवके पद, जजों सब मद टारजी ॥

ॐ ह्रीं पिशाचकुले चतुर्दशजातिदेवगति-छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

वसु जाति व्यन्तर देव किंनर, किं पुरुप सुर जानिये। अरु महोरग गंधर्व राक्षस, यक्ष भूत वखानिये ॥
फिर जानि और पिशाच अष्टम, भेद सब ऐसे कहे! इन गति छेदक देवके पद, जजें सब ही अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकारव्यन्तरदेवगति-छेदकजिनेभ्यो महार्घम् ॥ ८६ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— व्यन्तर थानक जिन भवन, नमों शीश मन लाय। अधो लोक मधि-लोक जो, तिष्ठत हैं सुखदाय ॥ १ ॥

चाल-मुनयानन्द-छंद-लक्ष्मीवर्ता

व्यंतरा अष्ट परकार भव्य जानिये, तिन विपै किंनरा भेद दश मानिये। किंपुरुप किन्नरा इन्द्र दो इन तने, इन गति छेद पद जजों मन वच ठने ॥ २ ॥ किंपुरुप कुल विपै भेद दश होयजी, सत्पुरुप महापुरुप दोय हरि जोयजी। कुल महोरगन के दश भेद होय हैं, इन्द्र महा काय अति काय जुग सोय हैं ॥ ३ ॥ गंधर्व कुल विपै भेद दश सुर सही, गीतरति गीतयश दोय इन्दर कही। यक्ष तने कुल विपें भेद द्वादश कहे, मान अर पूर्ण भद्रा जुगल हरि ठहे ॥ ४ ॥ सात विधि राक्षसा कुल कहे जानजी, भीम महाभीम दोय इन्द्र तिन मानजी। सात विधि भूतकुल मांहि सुर जो कहे, जानि स्वरूप प्रतिरूप दो हरि भये ॥ ५ ॥ कुल पिशाचन विपै भेद चवधे कहे, काल महा काल ये दोय इन्दर ठये। ये सबै आठ कुल मांहि षोडस हरि, एक इक इन्द्र के दोय पट है सुरी ॥ ६ ॥ एक इक देवी पट गैल अन्य जानिये, सहस देवी सु परिवार की मानिये। जाति सामानि अरु पारिषद तीन जी, तन रक्ष देव जानो सु परवीन जी ॥ ७ ॥ और आनिक विधि सात सबके कही, बहुत विसतार संख्या जु ताकी कही। एक इक सैन सब सात परकार है, सातकी सबै गुणचास विधि सार है ॥ ८ ॥ थान व्यंतर तने भवन केते कहे, और मध्य लोक में नगर अति बनि रहे। चैत्य वृक्ष व्यंतरां थान में है सही, बिंब जिन मान थंभ आदि रचना ठई ॥ ९ ॥ तिन द्वीप में इन्द्र के नगर हैं सही, नाम तिन द्वीप के सुरत ऐसे कही। अंजनक बज्रधातुक

कह्यो दूसरो, सुवर्ण मनः शिलक वज्र पंचम वरो ॥ १० ॥ रजत हिंगुलक हरिताल अष्टम सही, द्वीप इन मांहि इन्द्रन के पुर कही । एक इक इन्द्र के पांच पुर हैं भले, एक इक ग्राम के चव दिशा वन रले ॥ ११ ॥ इन्द्र पुर एक इक लच्च जोजन कहे, कोट अति तुंग शुभ द्वार जुत वन रहे । द्वार के ऊपरै महल सुर के सही, और रचना घनी सुरत में वन रही ॥ १२ ॥ भाग खर मांहि भूतन तने जानिये, सहस चवधा भवन सुख मई थानिये । भाग पंक मांहि राचस तने हैं सही, भवन पौडस सहस शोभने अति कही ॥१३॥ और व्यंतर तने थान जे हैं सवैं, द्वीप औ समुद्र में सहित सोभा हुवैं । तीन परकार सुरथान व्यंतर कहे, भवन पुर भवन आवास ये त्रय ठहे ॥ १४ ॥ द्वीप दधि मांहि सो भवन ये जानिये, और आवास वृच्च इहै गिरैं मानिये । भूमि में होय सो भवन संज्ञा कही, तीन विधि निलय थानक तनी विधि कही ॥ १५ ॥ व्यंतरों के भवन इतने ही पाईये,भवन पुर भवन के इतने हि गाइये । और कोई तने भवन पुर भवन हैं, और आवास मिलि तीन ही खन्न हैं ॥ १६ ॥ नगर उत्कृष्ट तो लच्च जोजन सही, जघन्य पुर एक ही जोजना धुनि कही । गोल आकार को आदि बहु जानिये, व्यंत्र देवन तने नगर इम मानिये ॥ १७ ॥ व्यंत्र देवन तने अहार इम जानिये, पांच दिन अधिक कछु गये मन आनिये । श्वास उश्वास कछु अधिक जानो सही, पंचम महूर्त में होय जिन धुनि कही ॥ १८ ॥ और रचना घनी देव व्यंतर तनी, वाणी जिन देव की मांहि सब ही भनी । अलप सी कछु मात्र यहां जानियें, इन गति छेद पद जजे अघ हानिये ॥ १९ ॥

दोहा—व्यंत्र देव थानक विषै, जजैं थान जिन सोय । इन गति छेदक देवको, मोकों शरणो होय ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवस्थानक-उत्पत्तिगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ।

॥ इति व्यन्तर देव स्थानक पूजा समाप्त ॥

॥ अथ मध्यलोक संबंधी जिनचैत्यालय पूजा ॥

॥ सर्व प्रथम जम्बूद्वीप पूजा प्रारम्भ ॥

छंद हरिगीतिका—द्वीप जंबू विषै जिन थल, कृत्रिम अकृत्रिम है सही । तिन मांहि जिनके बिंब विलसहि, तिष्ठ है पुनकी मही ।

ते सकल प्रतिमा भक्ति करि, मैं जजों मन वच काय तैं । वसु द्रव्य तें तिन पांय पूजों, अंग आठ नमाय के ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनविंब अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्ब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्ब अत्र मम सन्निधो भव भव सन्निधिकरणम् ।

लोक चाल वीरजिनचंद-निरमल नीर सुहावनोजी, कनकझारी धरि लाय । जंबूद्वीप तने सकलजी, जिन थल पूजों भाय ॥ भाईजिन०

जिन पूजे सुख थल मिलेजी, जनम जरा मिट जाय ॥ भाई जिन पूजो मन लाय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं ॥ १ ॥

चंदन घसि शुभ भावनोजी, निरमल नीर मिलाय । जंबूद्वीप तने सकल जी, जिन थल पूजों भाय ॥ भाई जिन०

जिन पूजे सुख थल मिलेजी, जगत पाप क्षय जाय ॥ भाई जिन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-संसारतापविनाशनाय चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत नख शिख सुध सही जी, उजल सुगन्ध सुलाय । जंबूद्वीप तने सकलजी जिन थल पूजों भाय ॥ भाई०

जिन पूजे सुख थल मिलेजी, अक्षयपद करतार ॥ भाई जिन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुगंध सुहावनेजी, अलि गुञ्जत शुभ लाय । जंबूदीपतने सकलजी, जिन थल पूजों भाय ॥ भाई जिन०

जिन पूजे सुख थल मिलेजी, काम नाश भव थाय ॥ भाई जिन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-कामबाणविनाशनाय पुष्पं ॥ ४ ॥

षट् रस जुत नैवेद्यलेजी, मन वच काय लगाय । जम्बू दीप तने सकलजी जिन थल पूजों भाय ॥ भाई जिन०

जिन पूजे सुख थल मिलेजी, क्षुधा रोग मिट जाय ॥ भाई जिन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ॥ ५ ॥

रतन मई दीपक कियोजी, कनक थाल धर लाय, जम्बू दीप तने सकलजी, जिन थल जों भाय ॥ भाई जिन०

जिन पूजै सुख थल मिलेजी, मोह तिमिर नशि जाय ।। भाई जिन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि–जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-मोहान्धकारविनाशनाय दीप ॥ ६ ॥

धूप भेलि दश विधि करीजी, परिमल जुत शुभ लाय, जम्बू दीप तने सकलजी जिन थल पूजों भाय ॥ भाई०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, अष्ट करम क्षय जाय ॥ भाई जिन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि–जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-अष्टकर्मदहनाय धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग विदाम लेजी, और भले फल लाय, जंबूदीप तने सकलजी, जिन थल पूजों भाय ॥ भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, लाभ मोक्ष फल पाय ॥ भाई जिन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि–जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥ ८ ॥

जल चन्दन को आदि देजी, वसु द्रव अर्घ मिलाय । जम्बूदीप तने सकलजी, जिन थल पूजों भाय ॥ भाई०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, अजर अमर तन पाय ॥ भाई०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि–जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो-अनर्घपदप्राप्तये अर्घम ॥ ९ ॥

छंद जोगीरासा–जंबू दीप सुखेतर माही, हैं जेते जिन गेहा, रतन मई वो विगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा ॥ १० ॥
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही । तिन सब को मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि–जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो महार्घम् ॥ ११ ॥

जयमाला

छंद बेसरी–जंबू द्वीप विषै जिन गेहा, तिनकी माल सुनो करि नेहा । सुनते ज्ञान होय सुख पावै, पुण्य बधै अदभुत जस ल्यावै ।१।

छंद पद्धरि

जिन थान दीप जंबू मझार, लख मेरु सुदर्शन तीर्थ सार । तिस ऊपर जिनके थान जोय, ते पूजों मन-वच-कर्म धोय ॥ २ ॥

गजदंतों पे जिन गेह जानि, बिन किये रतनमय शुभ निधान। तहां रतनबिंब अति शुभ्र सोय, ते पूजों मनवच हरष होय॥ ३॥ तरु शाल्मली जंबू सुजान, तिनपे जिनमंदिर अचल मान। तिन मांहि रतनमय बिंब जोय, ते पूजों मन-वच हर्ष होय॥ ४॥ पट जानि कुलाचल गिरि सु सार, तिनपे जिनमंदिर पाप जारि। तिनपे जिन मंदिर सुभग सोय, ते पूजों मन-वच हर्ष होय॥ ५॥ भरत ऐरावत वैताड जानि, तिनपै जिनमंदिर अचल मानि। प्रतिमा तिनमें मणिरूप जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ ६॥ पूरब विदेह वैताड़ मांहि, जिनमंदिर मणिमय अचल ठाहिं। है अचल बिंब जिन मांहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ ७॥ पश्चिम विदेह वैताड थाय, जिन गेह तिनों के शीश ठांय। जिन बिंब तिनों में जान सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ ८॥ वखार शिखर के शीश पांय, पूरब विदेह के मांहि थाय। तिनपे जिनमंदिर तीर्थ सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ ९॥ पश्चिम विदेह वखार जान, तिन शीश गेह जिनके सु मान। प्रतिमा मणिमय तिन मांहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ १०॥ जे नंदी परवत मांहि थाय, जिन गेह और बिन किये पाय। तिनमें प्रतिमा जिन शीश सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ ११॥ जे क्रिये थान कैलास मांहि, मंदिर तिनके अति सुभग थाहि। तहां प्रतिमा विनय स्वरूप सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ १२॥ भरत ऐरावत मांहि पाय, भवि करवाये जिन थान थाय। तहां विनयसहित जिनबिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ १३॥ जे होय विदेह सु पूर्व मांहि, जिन भवन भव्य कृति सुभग ठांहि। तिन मांहि विनयजुत बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ १४॥ जो पश्चिम विदेह मझार जानि, चैत्यालय भविकृत जोग मानि। जुत विनय तिनों में बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ १५॥ जे तीर्थस्थान सुकृत निधान, हैं सिद्ध क्षेत्र महिमा सुथान। तहां सुर नर पूजैं दीन होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ १६॥ जे अतिशय क्षेत्र सु पूज्य थाय, ते विनय सहित जिन बिंब पाय। पूजें तैं सुकृत लाभ होय, तें पूजों मन वच हर्ष होय॥ १७॥ इत्यादिक जम्बू दीप मांहि, जिन थान बिंब जिन विनय ठांहि। सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्र जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥ १८॥

दोहा—

क्षेतर जंबू द्वीप के, होसबंध जिनथान। तिन पूजैं सुख थल मिले, ते पूजों हठ ठान॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति समुच्चय पूजा समाप्त ॥

॥ अथ सुदर्शनमेरु सम्बन्धी पूजा ॥

छंद हरिगीतिका—दीप जंबू विषैं मेरु सु, नाम शुभ दर्शन लह्यो । इन विषै पोडस थाम जिनके, शोभ जुत सुर जय कह्यो ॥
तिन मांहि बिंब जिनेशके हैं, रूप जिन तन सोहहीं । धरि भक्ति भाव नमाय शिर निज, पूजि हैं पुनि की मही ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुसम्बन्धि-जिन चैत्यालय अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ, स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालय अत्र मम सन्निधौ भव भव, सन्निधिकरणम् ।

छद अडिल्ल— मेरु सम्बन्धी थान जिनेश्वर के सही, भव्यन को हितकार दैन शिव की मही ।
राजत हैं जिन बिंब तिनों के पाय जी, निर्मल जल ले पूजों भाव लगायजी ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-जिनचैत्यालयेभ्यो जलं० ॥ १ ॥

छंद जोगीरासा— मेरु सुदर्शन के षोडस हैं, थान जिनेश्वर भोई, तिन महिं प्रतिमा जिन आकारो, ध्रुव थानक सुख दाई ।
चंदन तें श्री जिन पद पूजों, उत्सव धार अपारो, ता फल भव आताप नाश हो, उपजै हित तिन केरो ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबधि-जिनचैत्यालयेभ्यो चदनं० ॥ २ ॥

छंद हरिगीतिका— अक्षत अखंडित धवल सुन्दर, धोय सुध करि लाइये, धरि थार में कर लेय अपने, हरप बहुत बधाइये ।
शुभ थान पोडस मेरु के जिन, बिंब पद पूजा करों, ता फलैं थान अखंड पावैं, तासतैं श्रुति ऊचरों ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबधि-जिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

दीप जंबू मांहि मेरु सु नाम शुभ दर्शन कह्यो, जिन थान पोडस ता संबंधी, ध्रुव स्थानक बनि रह्यो ।
तिन बीच बिंब जिनेश के पद पूजिये सुख लायजी । ता फलैं नाशै मदन को मद, जीव सुखपद पायजी ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबधि-जिनचैत्यालयेभ्यो पुष्पं० ॥ ४ ॥

मेरु के जिन थान पोडस, अचल मणिमय राजिए, तहं देव खग नित पूज ठानैं, तासतैं शुभ पाजिये ।

ते बिंब में भी लेय शुभ चरु, जजों मन वच कायजी; ता फलैं दुखदा रोग दुद्दर, क्षुधा को क्षय कारजी ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

थान तो जिन राज जू के, मेरुपे चिरके सही, तिन मांहि बिंब सु रतनमय हैं, छवी जिनसी बनि रही।
तिन बिंब के पद लाय दीपक, आरती सु चिंते करो, ताफलैं होय अज्ञानतम को, नाश सम्यक चित धरो ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

मेरुके जिन थान सुन्दर, सकल को सुखदाय हैं, तिन मांहि बिंब जिनेशके, भवि जीव पूजन जाय हैं।
जिन बिंब के पद धूप दश विधि, लायके पूजन करों, ता फलैं आठों कर्म अरि, क्षय होय शुध पदको धरों।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

मेरु जिन थल जानि षोडस, महा पुनि फलदाय है, देव खग ही पूज ठानैं, और को नहिं जाय हैं।
तिन बिंबके पद लाय शुभ फल, पूजिहों सुख कार नैं, ता फलैं शिवफल होय सुन्दर, सकल भवदुख टारनैं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल लेय चंदन अक्षत पुष्प चरु, दीप धूपफला सही, वसु द्रव्य करि मैं अरघ शुभदा, आनि के करमें लही।
जिन थान षोडस मेरु के जिन, बिंब पद पूजा करों, ता फलैं कबहू जगत के बिच, फेर ना भव को धरो ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

मेरुके सब थान तीरथ पाप हर, सुखदाय हैं, जिन पूज्य सुर खग लेय पुन फल, फेर जिन गुण गाय हैं।
जिन बिंब तें सब रूप जिनको, तास पद सेवा करों, ता फलैं और न चाह मेरे, जनम जग में ना धरों ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा — मेरु थान जिनके सही, मंगल दायक जान। पूजों भवि मन लायके, आलस तम को मान ॥ १ ॥

छंद बेसरी—मेरुस्थान महा सुखदाई, तिसपे जिन चैत्यालय भाई। तिनको पूजे होय सुज्ञानी, तो पावो आतम रिधि छानी ॥२॥
ये सब थान पुन्य के गेहा, देखत ही उपजे उर नेहा। हरप होत ही पुण्य उपावै, ताफल ही अद्भुत सुखलावै ॥३॥
तो दरशन महिमा को भाई, वरनै कवि मुख कबलों जाई। दरशन होत पाप क्षय होई, और कहा फल भापै कोई ॥४॥
पुण्यवंत ही दरशन पावै, हीन-पुण्यतें मेरु न जावै। गये मेरु तिनके पद सेवैं, अजर अमर पद सो जिय लेवैं ॥५॥
तातैं भो भवि चित्त लगावो, भक्ति भाव तैं जिन गुण ध्यावो। होय महाफल सुखदा भाई, लहो पूज्य पद सब अघ जाई।६।
जिन ध्यायो तिननै सुख पायो, इम सुनि हम भी मन ललचायो। तातें मन वच काय लगाई, मैं जिनपद की विनती लाई।७
जो फल और भव्य जन पायो, सो फल मैं भी मांगन आयो। तातैं देव दया मो कीजे, मनवांछित मोकूं फल दीजे।८
मैं तो दीन अधम जग मांही, तुम जिन दीन तार सुखदाई। अधम उधार विरद है तेरो, तातें भव दुख मेटो मेरो।९।
इत्यादिक मैं अरज कराऊं, बहुरि बहुरि जिन तुम गुण गाऊं। धन्य तिन्हें जे मेरु सिधावैं, जाय तहां जिन पूजा लावैं।१०
मैं तो शक्तिहीन हूं देवा, मैं पाया तुम थुति का भेवा। तातें इस ही थल में स्वामी, भावन भाय जजों जिन नामी ११

दोहा— मेरु जान की शक्ति नहीं, अर पूजा मन धाय। ता वशि वसुद्रव पूजि हों, करों भावना भाय ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो महार्घम्।

॥ इति समुचय पूजा सपूर्ण ॥

॥ अथ चार वन संबंधि प्रत्येक पूजा प्रारम्भ ॥

(प्रथम भद्रशालवने)

छंद अडिल्ल— भद्रशाल वन विषै थान जिन देव के, पूजे शिव सुर होय लहै इस टेवके।
ते जिनवर को विंब द्रव्य वसु लायजी, मैं पूजत हूं पॉय महा हित पायजी ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु-भद्रशालवनसम्बन्धि-जिनचैत्यालय अत्रावतरावतर संवौपट्, आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रशालवनसम्बन्धि-जिनचैत्यालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु-भद्रशालवनसम्बन्धि-जिनचैत्यालय अत्र मम सन्निधौ भव भव, वपट् ॥ १ ॥

छंद पद्धरि—ले निरमल नीर सुगंध कार, धरि कनकझारि बहु हुलसधारि। वन भद्रशाल जिन गेह बिंब, पूजों मन वच इक थान थंब ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिन चैत्यालयेभ्यो जलम् ॥ २ ॥

घसि बावन चंदन नीर लाय, धरि कनक रकेबी हर्ष भाय । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब, पूजों मन-वच इक थान थंब ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो चन्दनम् ॥ ३ ॥

अक्षत अखंड नख सहित लाय.अति उज्जल बास सुगंध धाय । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब,पूजों मन वच इक थान थंब ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतम् ॥ ४ ॥

ले कल्प वृक्षके फूल सार, अलि गुञ्जत अपने हाथ धार । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब, पूजों मन वच इक थान थंब ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवन सबन्धि-जिन चैत्यालयेभ्यो पुष्पम् ॥ ५ ॥

नैवेद्य सकल रस पूर जान, सदभक्ति भाव कर मांहि आन । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब, पूजों मन वच इक थान थंब ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिन चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ६ ॥

धरि कनक पात्र मणि दीप लाय,तम नाशन ज्योति स्वभक्ति भाय । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब,पूजों मन वच इक थान थंब ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवजसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो दीपम् ॥ ७ ॥

धरि दशधा धूप सुगन्ध कार, खेऊं हरपित हो अग्नि सार । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब, पूजों मन वच इक थान थंब ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिन चैत्यालयेभ्यो धूपम् ॥ ८ ॥

श्रीफल आदिक शुभ फल अनूप, मैं लाय हरप हों सुख स्वरूप । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब, पूजों मन वच इक थान थंब ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिन चैत्यालयेभ्यो फलम् ॥ ९ ॥

जल चंदन अक्षत पहुपलाय, चरु दीप धूप फल अरघ लाय । वन भद्रशाल जिन गेह बिंब, पूजों मन वच इक थान थंब ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

ये भद्रशाल वन थान जोय, तिनमें जिन प्रतिमा अचल सोय । तिनके पदपूजत अरघ आनि,मैं पूजों मन वच हरप ठानि ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद पद्धरि--वन भद्रशाल पूरब दिशाय, द्वाविंशतिजोजन सहित भाय । तहं त्रस थावर सुख दुःख लेय, इस गति दुख छेदक पद जजेय ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवन- पूर्वदिशासवंधि-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

दक्षिण दिशि अरुण जु भद्रशाल, दो शत पचास जोजन विशाल । तहं त्रस थावर सुख दुःख लेय, इस गति दुख छेदक पद जजेय ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवन-दक्षिणदिशसवंधि-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ १३ ॥

वन भद्रशाल पश्चिम सु मेर, जोजन हजार बाईस हेर । तहं त्रस थावर सुख दुःख लेय, इस गति दुख छेदक पद जजेय ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवन-पश्चिमदिशासवधि-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

वन भद्रशाल उत्तर सु लोय, दो शत पचास जोजन सु जोय । तहं त्रस थावर सुख दुःख लेय, इस गति दुख छेदक पद जजेय ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवन-उत्तरदिशासंबधि-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

चौपई--पूरब भद्रशाल वन सोय, रतन बिंब जिन मंदिर जोय । तिनमें जिन प्रतिमा जिन रूप, पूजे मिटे कर्म अघ धूप ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसवधि-पूर्वदिशि जिनचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

भद्रशाल वन दक्षिण दिशा, तहं जिन थाम मनोहर लसा । तिनमें रतन बिंब जिनरूप, पूजे मिटे कर्म अघ धूप ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसंबधि-दक्षिणदिश-जिनचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

भद्रशाल पश्चिम दिश जोय, ध्रुव तहां जिन मंदिर सोय । जिन प्रतिमा तिनमें जिनरूप, पूजे मिटे कर्म अघ धूप ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसवधि-पश्चिमदिशि जिनचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १८ ॥

भद्रशाल वन उत्तर दिशा, जिन मंदिर शोभै मन वसा । तिनमें प्रतिमा अघ हर रूप, पूजें मिटे कर्म अघ धूप ।

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसंबधि-उत्तरदिशजिन-चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

छंद अडिल्ल-

भद्रशाल वन चवदिशि, चव जिन धाम हैं । बिंब रतन जिन देव, तने हित ठाम हैं ।
सुर खग तो तहँ जाय, पांय पूजन करैं । मैं इहां भावन भाय, जजों मुझ अघ हरैं ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनसंबधि-उत्तरदिशि जिन-चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—नन्दन वन पूरव दिशि जोय, त्रस थावर तहां उपजत सोय। इन गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों हितधार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवनपूर्वदिशि-त्रसस्थावर-गति-छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

नन्दन वन दक्षिण दिशि जान, स्थावर-त्रस जिय सुख दुख खान। इन गति छेद भये भवपार, तिन पद अर्घ जजों हितधार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवनदक्षिणदिशि त्रसस्थावरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

मेरु पछिम दिशि नंदन वना, त्रस थावर तहां उपजत घना। इन गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों हित धार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवन-पश्चिमदिशि-त्रसस्थावरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

नन्दन वन उत्तर दिशि सोय, त्रस स्थावर उतपति जे होय। इन गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों हितधार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवन-उत्तरदिशि-त्रसस्थावरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

छंद अडिल्ल—

नन्दनवनकी शोभा कवलों पाइये, तिन थान कमी त्रस थावर बहु पाइये।
अपने अपने थान सकल जिय दिन भरे, इन गति छेदक देव जजों मंगल करै ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवनचतुर्दिक्षु त्रसस्थावरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

चौपई—नन्दनवन पूरव दिशि जोय, थान जिनेश अचल अविलोय। प्रतिमा मणिमय जिन आकार, तिन पद अर्घ जजों थिति धार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवनपूर्वदिशसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

नन्दन वन दक्षिण दिशि सोय, रतनमई जिन थानक जोय। तिनमें बिंब जिनेश अकार, तिन पद अर्घ जजों थुति धार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवनदक्षिणदिशसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

नन्दन वन पश्चिम दिशि जान, तीर्थ तहां जिनवर के थान। बिंब देव जिनके तहँ सार, तिन पद अर्घ जजों थुति धार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवनपश्चिमदिशसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

नन्दन वन उत्तर दिश थाय, जिन थानक महिमा अधिकाय। बिंब तहां जिनके आकार, तिन पद अर्घ जजों थुति धार ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवनउत्तरदिशसम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल— नन्दन वन जिन थान च्यार शुभ पाइये, देव खगां तहां नमैं और नहिं जाइये।
यहां मैं भावन भाय पूज्य जिनकी करूं, ता फल अघकुल जाति फेर नहिं भव धरूं॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसम्बन्धि-चतुर्जिनचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घम्॥ १०॥

चौपई—नन्दनवन देवन को थान, मानी नाम महल अधिकान। या गति उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसम्बन्धि-लोकपालस्य मानीनाममन्दिरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम्॥ ११॥

याही वन में मन्दिर जान, चारन ताको नाम बखान। या गति उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसम्बन्धिलोकपालस्य चारणनाममन्दिरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम्॥ १२॥

मन्दिर गोल बडे विस्तार, गंधर्व नाम याहि वन सार। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसम्बन्धिलोकपालस्य गधर्वनाममदिरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम्॥ १३॥

नन्दन अरनि विषै लख सही, चित्रा नामा मन्दिर कहो। या गति उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसम्बन्धिलोकपालस्य चित्रानाममन्दिरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम्॥ ७४॥

नन्दनवन सुर सोम सु रहे, ताको लोकपाल इम कहै। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधिलोकपालस्य सोमेश्वरनाममन्दिरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं॥ १५॥

लोकपाल जिम ताको नाम, नन्दन वन में है शुभ ठाम। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबधि-जिमनाम-लोकपालस्य गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं॥ १६॥

वरुण देव नंदन वन रहै, लोकपाल तिसको सव कहै। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-वासितवरुणनामलोकपालस्य देवगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं॥ १७॥

है कुमेर नामा सुर सोय, लोकपाल नन्दन वन जोय। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं नदनवनसंबंधिकुमेरनाम-लोकपाल गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं॥ १८॥

नन्दन वन ईशान सु दिशा, है बलभद्र महल सुख फसा। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नंदनवनसंबंधि-ईशानविदिशायाम् बलभद्रनाम-मन्दिरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

याही मंदिर अधिपति सही, व्यंतर बलिभदर है कही। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-बलभद्र-भवनस्य पतिः बलभद्रव्यंतरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

नन्दन वन में कूट उतंग, नंदन ही तिस नाम सु चंग। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि नंदननामकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

मंदिर नाम कूट शुभ रंग, नंदन वन में जानि सुचंग। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-मन्दिरनामकूट-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

नन्दन वन में कूट अनूप, नाम निषद्ध तास गुण रूप। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-निषधनामकूट-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

नन्दन विषै अरुण इक कूट, है हिमवान नाम दुख छूट। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-हिमवाननामकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥

कूट एक नंदन वन मांहि, नाम रजत ताको मन मांहि। या गति उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-रजतनामकूटगति-छेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

नाम कूट है रुचिक महान, नन्दन वन कटनी के थान। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-रुचिकनामकूटगति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

नन्दन वन मनमोहन कूट, सागर नाम महा सुख जूट। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-सागरनामकूट-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २७ ॥

कूट नाम है वज्र सदीव, नन्दन वन में सुखदा जीव। या गति उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।
ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-वज्रनामकूट-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं ॥ २८ ॥

छंद अडिल्ल—

नन्दन वन के मांहि कूट नंदन सही, ताकी अधिपति मेघधरा देवी कही ।
सुन्दर तुंग अनूप हेम रतनामई, या गति छेदक देव पॉय जजि हूँ सही ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-नन्दनकूटअध्यक्षा-मेघधरा-देवीगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ २६ ॥

नंदन वन में मंदिर नामा कूट है, मेघवती देवी तामें दुख छूट है ।
अपने पुण्य के जोर आप सुखतें ठई, या गति छेदक देव पॉय जजि हूँ सही ।

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-मन्दिरनामा-कूटअध्यक्षामेघवतीदेवी-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

नंदन वन में निषध नाम शुभ कूट है, तहां स्वमेघा नाम देवी अघ रुठ है ।
अपने ही शुभ भावन को फल भोगई, या गति छेदक देव पॉय जजि हों सही ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबधि निषद्धकूटअध्यक्षा-मेघादेवी-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

नन्दन वन हिमवान कूट अधिपती कही, मेघ मालिनी नाम देवि सुख की मही ।
विद्या आदि अनेक गुणा जुत सो ठही, या गति छेदक देव पॉय जजि हों सही ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबंधि-हिमवानकूटअध्यक्षा-मेघमालिनी-देवीगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

नंदन वन में रजत कूट शुभ नाम है, तापे देवी तोयधरा गुण ठाम है ।
अपने पुण्य फल भोग महा सुख जुत भई, या गति छेदक देवि पॉय जजि हों सही ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबधि-रजतकूटअध्यक्षा-तोयधरा-देवीगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

नंदन वन में रुचिक कूट अति चंग है, तापे देवी रहै विचित्रा अंग है ।
अपने पुण्य के जोग घने सुख में ठही, या गति छेदक देव पॉय जजि हों सही ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसंबधि रुचिककूटअध्यक्षा-विचित्रानाम-देवीगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३४ ॥

नन्दन वन में सागर कूट सुहावनो, तापे देवी महल अधिक विद्या वनो ।

देवी पुष्प माल रंजित अति ही भई, या गति छेदक देव पांय जजि हूँ सही ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसम्बन्धि-सागरनामकूटअध्यक्षा-पुष्पमाला-देवीगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

वज्रकूट नन्दन वन में शुभ पाइए, देवी अनंदिता को मंदिर गाइये ।
सो कोऊ पुण्य योग महा सुख सों ठई, या गति छेदक देव पाँय जजि हों सही ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवन-वज्रकूटअध्यक्षा-अनंदितादेवी-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

छंद जोगीरासा—मेघंकरा अरु मेघवती लख, फेर सुमेघा जानो । मेघादि मालिनी तोयधरा है, और विचित्रा जानो ।
अनंदिता जुत पुष्पमाल है, अष्ट देवि सुख दाई । इन गति छेद भये जिन मूरति, तिन पद अर्घ चढाई ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवनसबंधि-अष्टअधिष्ठात्री मेघंकरादि अष्टदेवी गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

जयमाला

सोरठा— नंदन वन अतिसार, तीरथ सब को हित भई । इहाँतें बहुमुनि धार, कर्म जारि शिव को गये ॥ १ ॥

छंद वेसरी—वन नन्दन मनमोहन भाई, ताकी च्यार दिशा सुख दाई । मंदिर चार देव जिन केरा, पूजे मिटै जगत का फेरा ॥२॥
रतन जड़ित कंचन में सोई, बिंब तहाँ मणिमय सब होई । सुन्दर जो तन जिनवर केरा, पूजें नाश होय जग फेरा ॥३॥
और सुनों नंदन वन मांही, वापी कूप शिखर अधिकाही । इन गति छेदक कर्मन जेरा, तिन पद जजों मिटै भव फेरा ॥४॥
और तहां चव मणिमय थाना, ते मन्दिर सब गोल कहाना । लोक पाल सुरका तहां वासा, है सौधर्म इन्द्र का दासा॥५॥
सोम नाम आदिक सुर जानों, बहु देवन के स्वामी मानो । गिरि कन्दा देवी इन जोवो, सादे तीन कोड़ि मन मोवो ॥६॥
सौधर्म स्वर्ग मांहि रनवासो, स्वयंप्रभै आदिक सुर जासो । तिन चव थान मांहि थिति जानो, बहु अध धार देव इन मानो ।७
पट्लच्च छयासठ सहस बताये, पट्सठ छयासठ स्वर्ग सु गाये । एते स्वर्गन के हैं स्वामी, इन गति छेदक पूजों नामी ॥८॥
इन मंदिर नंदन वन जो है, तुङ्ग पचास जोजन तहँ सोहै । जोजन तीन व्यास तिन गाये, सकल महल कंचन के थाये ॥९॥
और सुनो नंदन वन मांही, विदिश ईशान व्यंत्र थल ठाई । जोजन शत ऊंचे शुभ जानो, अरु चौड़े शत जोजन मानो ॥१०।

ऊपर जोजन व्यास पचासा, है बलभद्र नाम इस खासा। याही नाम धार सुर सोई, यामें तिष्ठै और न कोई ॥११॥
और कही रचना सुन भाई, नन्दन वन में जो विधि थाई। कूट आठ तहँ तुङ्ग जु गाये, तिनमें मंदिर बहु सोभाये ॥१२॥
तिन में देवी रहैं सुजानो, दिक्कुमार का अधिक सुहानो। इत्यादिक रचना बहु होई, इन गति छेद जजों पद दोई ॥१३॥
इस ही वन में जे जे ठामा, दुख सुख रूप रहैं जिय धामा। तिन गति छेद मोक्ष जिन पाई, तिनको हमने अर्घ चढाई ॥१४॥
ऐसे थान विषै नहिं आवै, जे अपने सब कर्म खिपावै। या वन माहि इकेन्द्री पइये, कै पंचेन्द्री धारक गइये ॥१५॥
विकलत्रय नहिं या थल भोई, सो शोभा कछु वरनी न जाई। तहँ चारन मुनि ध्यान धरावैं, कर्मकाटिकै शिवकूं जावैं ॥१६॥
ऐसो नन्दन वन हितकारो, जीव जहां वह उत्पति धारो। इन गति छेद भये शिव संता, तिनकूं अर्घ जजों अघ हंता ॥१७॥
और थान जिनके सुखकारी, नन्दनवन शोभा अति भारी। तिनमें बिंब जिनेश बताये, तिन पद हमने शीश नमाये ॥१८॥

दोहा— नन्दनवन सुर रमन कूं, बनी भली शुभ ठाम। कै इहां तें शिवजात हैं, तातैं तीरथ ठाम ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवन सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो जयमालार्घं नि० स्वाहा ॥ १६ ॥

॥ अथ सौमनस वन संबंधी पूजा ॥

छंद जोगीरासा—सौमनसा उपवन के मांही, थान जिनन्द सुखदाई। तिनमें प्रतिमा रतनमई हैं, जिन तनसी सो भाई ॥
सुरनर सेव करै तिन पदकी, पुण्य घनो उपराजै। या लख पांय जजों तिनके मैं महा शुद्ध फल काजै ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरौ सौमनसवने जिनचैत्यालयस्थजिनबिंवसमूह अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरौ सौमनसवने जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिंवसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरौ सौमनसवने जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिंबसमूह अत्र सन्निहितो भव भव वषट्।

छंद अडिल्ल— क्षीरोदधि को नीर कनकझारी लियो, उच्छव जुत करि भाव आपने कर कियो।
अरणि सोमवन मांहि थान जिनके सही, ते पूजों मन लाय जनम दुख हरि मही ॥

ॐ ह्रीं सोमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो जलम् ॥ २ ॥

चंदन घसि शुभकार मांहि गंधकारजी, रतन कटोरी धारि लेय कर सारजी ।
सोम अरणि जिन गेह पूज्य सुख थानजी, ता फल भव तप जाय कहै जिनवानि जी ॥
ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो चन्दनम् ॥ ३ ॥

अक्षत उज्वल मुक्ताफल से जानिये, महा शुद्ध कर भाव सहित कर आनिये ।
सौम अरणि जिन गेह पूज्य सुख धामजी, हैं जे जिनके थान अखय पद कामजी ॥
ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो अक्षतम् ॥ ४ ॥

फूल सुगन्ध अपार सार कोमल सही, गुञ्जत अलि कर राग भले करसों लही ।
महा सौम वन वीच थान जिन पाइये, तिन पद पूजों सहज काम मद ढाइये ॥
ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो पुष्पम् ॥ ५ ॥

पट् रस पूर मिलाय सुभग पातर धरा, मन वच तन हुलसाय आप करले खरा ।
सौम अरणि जिन थान पूज सुख दायजी, ताफल सारा क्षुधा रोग क्षय जायजी ॥
ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ६ ॥

दीपक तमको हरनहार दुति कारजी, हेम थाल धरि लाय महा सुख धारजी ।
सौम अरणि जिन थान पूज्य सुख दाय है, ता फल मिथ्या धूम सकल नशि जाय है ॥
ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो दीपम् ॥ ७ ॥

धूप सुगंधित लाय अगनि में जारिये, खेवत निज कर लेय हरप बहु धारिये ।
सौम अरणि जिन थान पूज्य सुखदाय है, ता फल आठों कर्म नाश को पाय है ॥
ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो धूपम् ॥ ८ ॥

श्रीफल खारक लोंग विदाम सुपारियां, पिस्ता आदि अनेक फलां कर धारिया ।

सौम अरणि जिनें थान महा सुखदाय है, ता फल थानक मोच्च तनौं फल पाय है ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो फलम् ॥ ६ ॥

जल चंदन अच्चत प्रसून नैवेद्यले, दीप धूप फल मेलि अरघ शुभ भेलिले ।
सौम अरणि जिन थान महासुख दायजी, ता फल जग सुख सहित मोच्च मिल जायजी ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

छंद गीतिका—सौमनस वनके मांहि जिन थल, सदा अचल बताइये, तहँ देव खग ही पूज करि हैं, महा पुण्य उपाइये ।
तिस रीति सुनि हम भाव उपजे, अरघ लेकर आइया । ता फलै जामन मरन नाशै, और को फल गाइया ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो महार्घम् ॥ ११ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद गीतिका—मेरु ऊपरि सौमनस वन, पूर्व दिशि ताकी सही, त्रस थावरां जिय होय बहुते, लहै दुख सुख तिस मही ॥
तिस काय मांही राग वसि हो, छाडिनो नहि चाहि है, इस गति छेदक देवके पद पूजितैं दुख जाय है ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने पूर्वदिशि त्रसस्थावरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

मेरु दर्शन वन समंधी, दच्चिण दिशी कूं जानिये, है सोमवन हू थान सुन्दर, त्रस सु थावर मानिये ।
अलप ज्ञान वशाय आतम, काय में थिति चाह है । इन गति छेदक देव के पद, पूज्य तें अघ जाय है ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने दच्चिणदिशि त्रसस्थावर-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

सोमवन शुभ मेरु ऊपर, दिशा पश्चिम जानिये, त्रसजीव थावर मरै उपजै, सुख दुखा बहु मानिये ।
तिस थान ही में भाव धरके, सदा थिर पद चाहि है, इन गति छेदक देवके पद पूज्यतें दुख जाय है ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने पश्चिमदिशि त्रसस्थावर गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

मेरु ऊपर सोमवन की, दिशा उत्तर सोहनी, त्रसस्थावर होय बहुते, परे सबको जोहनी ।
ऐसी जु काया पाय दुखमय, आप उर सुख भाय है । इन गति छेदक देवके पद पूज्यतें दुख जाय है ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने उत्तरदिशि त्रसस्थावरगतिछेदकाजनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

॥ छंद पद्धरि ॥

गिरि मेरु तनो वन सौम जान,तहँ पूरब दिश जिन थान मान । जिन प्रतिमा तिनमें जिन स्वरूप, तिन पूजे मिटि हैं कर्मधूप ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने पूर्वदिशि जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

गिरि मेरु सौम-वन दच्छिण जोय,तहँ मणि मय जिनके थान सोय । जिन प्रतिमां जिनमें जिन स्वरूप तिन पूजे मिटि है कर्मधूप ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने दच्छिणदिशि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

गिर मेरु सौम वन पछिम सोय, जिन थानक सुन्दर पाय होय । जिन प्रतिमा जिन में जिन स्वरूप, तिनपूजे मिटि है कर्मधूप ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने पश्चिमदिशि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

वन मेरु सौम में उतर जोय, जिन थान मनोहर तुङ्ग सोय । जिन प्रतिमा जिनमें जिन स्वरूप, तिन पूजे मिटि है कर्मधूप ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने उत्तरदिशि जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

छंद गीतिका—सौमवन थल थान सुरसो, कहत शोभा किम बने । तिस मांहि चव दिश थान जिनके, चार भवके अघ हने ॥
खग देव नित तिस तीर्थ जावैं, पूज्य के शुभ थल लहै । इस थान मैं भी भाय भावन,पूज्यहूं फल अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल— पूरब दिस वन सौम माहि सुन्दर सही, वज्र नाम तिस जान भलो मंदिर मही ।
लोकपाल सुर रहै कनक नग में कहे, या गति छेदक देव पॉय हम थुति ठहे ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने पूर्वदिशायाम् लोकपालसम्बन्धिवज्रनाममंदिर गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

सौम अरनि के थान सुरग थल से बने, दच्छिण दिस तिस मांहि लोकपालन तने ।

मंदिर थिति को थान वज्रप्रभ नाम है, या गति छेदक देव जजों शिव काम है ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने दक्षिणदिशायाम् लोकपालसम्बन्धि-वज्रप्रभनाम-मंदिर-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

आछ्यो वन गिरि मेरु ऊपरैं सोम है, लोकपाल के थान पछिम दिस सोह हैं ।
जहँ सुवर्ण मन्दिर को नाम वखानिये, या गति छेदक देव जजों, प्रति मानिये ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने पश्चिमदिशायाम् लोकपालसम्बन्धि-स्वर्णमन्दिरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

मेरु सुदर्शन अरणि सौम सुखदा मही, लोकपाल तहँ रहै अहि मंदिर सही ।
स्वर्णप्रभ है नाम महल को जानिये, या गति छेदक देव जजे धन मानिये ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने उत्तरदिशायाम लोकपालसम्बन्धि-स्वर्णप्रभनाम मंदिरगति छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

मेरु सोम वन थान महा सुखदाय है, मंदिर तहँ चव लोकपाल के पाय है ।
तिनपैं सुर थुति करैं महा सुख पायजी, या गति छेदक देव नमों सुखदायजी ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्दिक्सम्बन्धि मन्दिररक्षकदेवलोकपालगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— सोम महा वन थंभ जो, जिन थानक तहँ पाँय । तातैं तीरथ वरणयो, मोक्ष तहां तैं जाय ॥ १ ॥

चाल मुनियानन्द—मेरु परथम तनों सोमवन जानिए, सुरग सो थान अति शोभ जुत मानिये ।
ताल वापी घने शिखर बहु सोहनो, देव क्रीडा तनें मन्दिर मन मोहनो ॥ २ ॥
रत्नजुत थान रमणीक बहु पाइये, मुनि तहाँ ध्यान धरि थान शिव जाइये ।
कवलों शोभ कवि आप मुखतें भनै, ध्रुव थानक सबै नाहिं कबहू हनै ॥ ३ ॥
लोकपाल स्वर्गके स्वर्ग तैं आइये, मन्दिर चव मणिमई इन तने पाइये ।
तुंग जोजन कहे वीस अरु पांचजी, व्यास इन अर्घ जानो सकल सांचजी ॥ ४ ॥

मंदिर सब गोल आकार स्वर्ग से कहे, अधिपति देव इनके महा सुख ठये ।
बहुत देवी करैं सेव तिनकी सही, घने सुर आन मानें इन की कही ॥ ५ ॥
और व्यन्तर तने थान सुखदाय हैं, नाम बलभद्र शिरदार सुर पाय हैं ।
आदि इन और जे थान सुख दुख मई, या गति छेद धन्य त्याग भव शिव लई ॥ ६ ॥
और चव दिशा थान है सुन्दर सही, देव जिन राज के बिंब तिनमें कही ।
अचल ध्रुव ज्ञान मूरति जिसे जिनवरा, पूज्य है सुरनरा काज अघ के हरा ॥ ७ ॥
पूजि जिन थान कूं आप भव धनि कहै, इन्द्र भी भक्त अति दीन हो मुख वहै ।
ज्ञान बहु नाहि जो सकल श्रुति किम चहै, गुण तमो पार चव ज्ञान धर ना लहै ॥ ८ ॥
देव जिन मांहि गुण को नहीं पारजी, कब लगैं और कहैं कथन को सारजी ।
भाय इम भावना बहुत पुण्य पाय है, उदै तब होय फल मोच्छ थल पाय है ॥ ९ ॥
या तरैं भव्य जना देव जिनराज के, गाय गुण पुण्य लहैं वांछि मन काज के
सुजस ऐसो सुन्यो कान में देव को, शरण यातें लयो जान सब भेव को ॥ १० ॥
और जो देव जिनराज बहु तारिया, बहुत संत जीवके काज बहु सारिया ।
जानि मोहि अधम ज्यों तारिये जिनवरा, भक्ति है टेक तजि बनै अति श्रुति करा ॥ ११ ॥

सोरठा— इत्यादिक शुभ बात, सौम अरणि में पाइए । इनमें है गुण पांत, तिनको पूजो भव्य जन ॥

ॐ ह्रीं सौमनसवने चतुर्दिक चतुर्जिनालयेभ्यो जयमालार्घम् ।

॥ इति सौमनस वन सम्बन्धि पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ पांडुकवन संबंधी पूजा ॥

छंद पद्धरि–पांडुकवन में जिन थान सोय, तिन मांहि अकृत्रिम बिंब जोय। सुरखग तो ते पूजें सुजाय, मैं यहाँ थापन करि पूज लाय।१।

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक् चतुर्जिनालयस्थ जिन बिंब समूह अत्र अवतर अवतर (संवौषट्)

ॐ ह्रीं पाडुकवने चतुर्दिक् चतुर्जिनालयस्थ जिन बिंब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापध)

ॐ ह्रीं पाडुकवने चतुर्दिक् चतुर्जिनालयस्थ जिन बिंब समूह अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल—ते गुरु मेरे उर बसो—छीरो दधिको नीर ले, निरमल अति सुख दाय। पांडुक वन जिन थानजे, पूजों मन-वच-काय ॥
ता फल जन्म जरा सही, तत् छिन सब मिटि जाय। पांडुक वन जिन थान जे० ॥२॥

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालयस्थजिन बिंबेभ्यो जलम् ॥

चंदन घसि शुभ बावनो, निरमल नीर मिलाय, पांडुक वन जिन थान जे, पूजौं मन-वच-काय ॥
ता फल भव-आताप या, सब ही जाय खिपाय ॥ पांडुक वन जिन थान जे० ॥३॥

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो चन्दनम् ॥

अक्षत मुक्ता फल जिसे, शुद्ध रु उज्वल लाय, पांडुक वन जिन थानजे, पूजों मन-वच-काय ॥
ता फल पद पावै अखै, फिर भव में नहीं आय ॥ पांडुक वन जिन भवन जे० ॥४॥

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालयस्थजिन बिंबेभ्यो अक्षतम् ॥

फूल सुगंध मिलाय के, सुर द्रुम से ले आय, पांडुक वन जिन थानजे, पूजों मन वच काय।
ता फल मदन नशाय के, निरदूषण सब थाय ॥ पांडुक वन जिन थान जे० ॥

ॐ ह्रीं पाडुकवने चतुर्दिकचतुर्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो पुष्प० ॥ ४ ॥

मोदक फेनी घेवरा, चरु नैवेद्य सु लाय, पांडुक वन जिन थानजे, पूजों मन वच काय।
ता फल भूख नशाय है, जो तिरपति चिर थाय ॥ पांडुक वनजिन थान जे० ॥

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालस्थजिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक तम हर ले सही, जिन चरणों पैं धाय। पांडुक वन जिन थानजे, पूजों मन वच काय।
ता फल नाश अज्ञान को, तम सब ही मिट जाय ॥ पांडुक वन जिन थान जे०॥

ॐ ह्री पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो दीपं० ॥ ६ ॥

दश गंध इकठी ठानि के, करिके धूप जराय । पांडुक वन जिन थान जे, पूजों मन वच काय ।
ता फल कर्म सवै सही, ततच्छण ही जर जाय ॥ पांडुन वन जिन थान जे० ॥

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालस्थजिनविंवेभ्यो धूप० ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग मिलाय के,फल बहु विधि के पाय । पांडुक वन जिन थान जे,पूजों मन वच काय ।
ता फल योग इसो मिले,जो शिव फल को पाय ॥ पांडुक वन जिनथान जे० ॥

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिचक्तुर्जिनालस्थजिनेविंवेभ्यो फलं० ॥ ८ ॥

जल चंदन आदिक सबै,द्रव्य आठ मिलाय । पांडुक वन जिन थान जे,पूजों मन वच काय ।
ता फल फल अद्भुत लहै, तहां काल न जाय ॥ पांडुक वन जिन थान जे० ॥

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालयस्थजिनविंवेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

छंद हरिगीतिका—पांडुक सुवन मेरु सुदर्शन, शीश पै राजे सही ; चव थान तीरथ धाम जिनके, चव दिशा शोभै मही ।
तिन मांहि विंब जिनेश के हैं, पूज जिनकी कीजिये । ता फलै कोलों कहै भवि जन, जनम मरण की लीजिये ।

ॐ ह्रीं पांडुकवने चतुर्दिक्चतुर्जिनालयस्थजिनविंवेभ्यो महार्घम्० ॥ १० ॥

जयमाला

दोहा— थान जिनेश्वर देव के, पांडुक वन के मांहि । तिन पूजन भावन करों, ता फल अघ च्चय जाहि ॥ १ ॥

छद वेसरी

पांडुक वन शोभा को गावै, तहां सुरनर उच्छव को आवै । ताके विदिशनि में सुन भाई, तीरथ थान सवै सुखदाई ॥ २ ॥
इक इक दिशि इक जिन गृह मानो,तिनमें मणिमय विंब वखानो । ध्रुव सदा अति तुंग वताये,तीनलोक करि पूज्य सु गाये ।३॥
देव खगां थुति वहु विधि लावै,गीत नाद संगीत वनावै । वहु विधि नृत्य करै पुनि काजै,ताफल चहै मोच्च सुख साजैं ॥ ४ ॥
और यहां पांडुक वन मांही,चारों दिशि सुर मंदिर भाई । लोक पाल सुर को सुनि वासो,कन्चन वरन तुंग सुख रासो ॥ ५ ॥

साढे बारह जोजन भाई, ऊंचे महल महा सुख दाई। व्यास तनों अब सुनि विसतारो, जोजन साढी सात सु धारो ॥ ६ ॥
ये सब सोधर्महि के दासा, तिनका इन महलनि में वासा। बहुत लच्छ इनके घर भाई, उपमां मुख तें कही न जाई ॥ ७ ॥
पांडुक वन में और सथाना, सो अब सुनो तके श्रुत गाना। चव दिशि चार शिला शुभ गाई, तिन महिमा कछु कही न जाई ॥८॥
तहां सुर देव जिनेश्वर लावैं, फिर सिंहासन पे थित ठावैं। बहुरि जाय क्षीरोदधि देवा, लावैं जल करते बहु सेवा ॥ ९ ॥
एक सहस बसु कुंभ सु ल्यावैं, जय जय शब्द करत मग जावैं। फेरि आपने हरि करि देवै, सो घट बडे हरष करि लेवै ॥ १० ॥
सो जिन शीश सनान करावै, तातैं यह वन तीरथ गावै। जनम कल्याण अनंत जिन केरा, भये जजों मिटि है भव फेरा ॥ ११ ॥
इत्यादिक पांडुक वन मांही, रचना बनी अनादि सु भाही। ता करि पांडुक वन शुभ गायो, नाना वृछितै सहित सुहायो ॥ १२ ॥
मुनि केते तिस वन में भाई, ध्यान अगनि तें कर्म जराई। गये मोक्ष तहं तैं यह थानो, पांडुक वन शुभ तीरथ जानो ॥ १३ ॥

दोहा—यह जयमाल सुहावनी, पढै सुनै जो कोय। ताको तिन थानक तनी, पूजा को फल होय ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं पांडुकवनसम्बन्धि जयमाला अर्घम् ॥

॥ अथ सुदर्शन मेरु संबन्धी समुच्चय जयमाला ॥

दोहा— मेरु सुदर्शन सब विषै, तीरथ पावन कार, तुङ्ग बनो शोभै अधिक, जिन थल मंडित सार ॥ १ ॥

॥ छंद बेसरी ॥

मेरु विषै जिनवर के गेहा, इम लखि भवि जावैं करि नेहा। ताकी महिमा आगम गाई, मैं यहाँ अल्प कहूँ सुखदाई ॥ २ ॥
मेरु कंद पृथ्वी के मांही, जोजन सहस एक की ठांही। भूमि ऊपरै वन शुभ गायो, भद्रशाल गिर चव दिश पायो ॥ ३ ॥
पूरब पश्चिम तिस विसतारा, जोजन सहस बीस दो धारा। उत्तर दक्षिण की सुन भाई, जोजन दो सौ पचास बताई ॥ ४ ॥
तामें चव दिशि ही जिन गेहा, तिनमें रतन बिंब जिन नेहा। पूजा को सुर खग तो जावैं, और भव्य धरि भावन भावैं ॥ ५ ॥
भद्रशालतें ऊपर जइये, पंच शतक जोजन तब अइये। नंदन वन तहँ अति शुभ आवै, मेरु गिरद कटनी पै पावै ॥ ६ ॥
कटनी व्यास व्यास वन सोही, जोजन पांच सैकड़ा होही। जामें भी चव दिश चवे गेहा, पूजैं सुर खग करि अति नेहा ॥ ७ ॥
नंदन वन तैं ऊपर जावै, जोजन इतने गिनत बतावै। साढी बासठ सहस उतंगो, आवै तबै सोम वन चंगो ॥ ८ ॥

कटनी व्यास पंच शत भाई, तापै सौम अरण सुखदाई। तामें चव दिस ही सुन भाई, व्यन्तर देव थान शुभ दाई ॥ ९ ॥
चव दिश ताकें सुन्दर थानो, जिनवर गेह तीर्थ ध्रुव मानो। पूजन को तहां सुर खग आवैं, भूमि गोचरी भावन भावें ॥ १० ॥
बहुरि मेरु गिरि ऊपरि जइये,जोजन सहस छत्तीस सु पइये। पांडुक वन तहाँ तीरथ खासो,जोजन पंच शत पट क्रम आसो ।११।
तामें चव दिशि चव जिन गेहा,तिनमें बिंब सुभग जिन जेहा। देव तहाँ पूजा विधि ठानें, अपनो सुर पद धनि धनि मानें ।१२।
पांडुक वन चउ दिशि के मांही, चार शिला तीरथ शुभ ठाही। तिनमें जनम कल्याणक होवैं,देखत भविके अघमल खोवैं ।१३।
शत जोजन लांबी जिस जानो, चौडी तातैं अर्द्ध बखानो। जोजन आठ तनो दल होई, अर्द्ध चन्द्र आकार सुजोई ॥१४॥
चार शिला के हैं चव नामा,चार वरण भिन भिन शुभ ठाना। पांडुक शिला कनकमय जानो,सो परथम तो यह शिल मानो ।१५।
पांडुक बला शिल दूजी भाई, चांदी सम तिस वरण बताई। तीजी रक्त शिला शुभ मानो, ताया कंचन सम तन जानो ॥१६॥
रक्त कंबल चौथी को नामो, माणक रतन जुसो शुभ ठामो। तथा रुधिर के रंग को धारैं,इहा कल्याण होय अघ जारैं ॥१७॥
ये ही शिला चार शुभ ठामो, इन पै तुङ्ग सिंहासन धामो। एक एक शिल पे सिंह पीठा, तीन तीन सुभ ज्ञानी दीठा ॥१८॥
एक तुङ्ग मधि लघु दोय पासैं,तुङ्गोपरि जिन लघु हरि भासैं। कलश सहस वसु शिल शिल जानो, इह रचना ध्रुव अथिर न मानो १९
जेती रचना मेरु सुगाई, ते सब ही नित अचल बताई। इन्यादिक शोभा सुखकारी, पांडुक वन जानो अति प्यारी ॥२०॥
ता मधि एक चूलिका जानो,वैडूरज मणि सो तिहि मानो। दोय बीस तुङ्ग जोजन होई,षोडश जिन थल भवि मल खोई ।२१।
और सुनो गिरि रचना सोई, अद्भुत अकृत्रिम शुभ होई। बाल अन्तरैं ऋजु विमाना, पैंतालिस लख जोजन जाना ॥२२॥
मेरु कछु तलि रतना जडियो,और सबैं कंचन सम पडियो। जोडि सकल लख जोजन होई,षोडशजिन थल भविमल खोई।२३
ये जिन थान मेरु के भाई, देव खगां ठानैं थुति आई। तातैं मैं भी भावन भाऊं, शक्ति समान पुण्य उपजाऊं ॥२४॥
सोरठा— मेरु थान जिन बिंब, परसत सुकृत ऊपजै। छूटै पाप कुटुम्ब, टेक धार तातैं भजों ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धी समुच्चय जयमाला पूर्णार्घं ।

॥ अथ सुदर्शन मेरु संबंधी चार गजदंत पूजा ॥

छंद हरिगीतिका—मेरु शुभ दर्शन सम्बन्धी, चार गज दंते कहे, तिन मेरु इक सुभलोक लागी, चोक इक विदिशा रहे।

जिन चारि ही पें चार मंदिर, अचल कंचन नग जरे, इन मांहि विंब सु देव जिनके, पूजतें पातक झरे ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितजिनालयस्थ जिनविंब समूह अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितजिनालयस्थ जिनविंबसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितजिनालयस्थ जिन विंब समूह अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ॥

छंद जोगीरासा—निरमल पानी क्षीरोदधिको, करधरि झारी भाई । निरमल मन तन वचन ठानिके, भक्ति हिये अधिकाई ॥
चव गज दंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहाँ चढाऊँ । ता फल जनम जरा दुख नाशै, अजर अमर पद पाऊं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबन्धिचतुर्विदिशाया चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिन-मन्दिरेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन अधिक सुगंधित, गुंजित भंवरे तापै, मलयागिरि अति शीत उपावन, धरि कर जुगले आपै ।
चव गज दंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊं । ता फल भव आताप नाश हो, अजर अमर पद पाऊं ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसबंधि-चतुर्विदिशाया चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो चदनं० ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल जाय कली से, नख शिख शुद्ध बनाई । धोय सुभग करि लेकर अपने, हिरदै अति हरषाई ।
चव गज दंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊं । ता फल ठाम अखै फल आवै, और न वांछा गाऊं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसबंधि-चतुर्विदिशाया चतुर्गजदंतोपरिचतुर्जिनालयेभ्यो अक्षत० ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ गंध बहुधारी, रंग विरंगे भाई । घ्राण वश्य होके अलि भरमें, सुरतरु से अधिकाई ।
चव गज दंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊं । ता फल काम विकार नाश करि, निर आकुलता थाऊं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसबंधि-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदंतोपरि-चतुर्जिनालयेभ्यो पुष्प० ॥ ४ ॥

षट् रस नेवज तुरत आपने, हाथ विषै ले आयो । पूजन करने काज आपने, देव सेव पद ध्यायो ।
चव गज दंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊं । ता फल नाशै भूख बावरी, वेदन सकल मिटाऊं ॥

ॐ ह्रां सुदर्शनमेरुसबंधि चतुर्विदिशायां चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीप रतन के कनक थाल में, जोय पुंज ले आनो । ज्योति जिन्हों की है तम नाशक, सो अपने कर ठानो ।

चव गज दंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊं । ता फल नाश होय मोह तम, ज्ञानि केवल पाऊं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-चतुर्विदिशाया-चतुर्गजदंतोपरिचतुर्जिनालयेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

दशधा वास मिलाय धूप करि, ले निज कर हरषाये । खेय अगनि मधि गाय जिनंद गुण, पूजन कूं उमगाये ।
चवे गज दंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊं । ता फल कर्म तनों क्षय उपजै, और नहीं फल पाऊं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो धूपं० ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक पिस्ता भाई । इनको आदि घने फल करले, पूजन कूं उमगाई ।
चव गज दंत शिखर शिर ऊपर,जिन थल तहां चढाऊं । ता फल मोक्ष तनो फल उपजे,तातैं जिनगुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसबंधि-चतुर्विदिशाया चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो फलं० ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल जानो । ले वसु द्रव्य रु अरघ ठानि के, मन शुध करि के ठानो ।
चव गज दंत शिखर शिर ऊपर,जिन थल तहां चढाऊं । ता फल भव का भरम मेटि है, और कहा गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबधि-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

चव गज दंते तुंग घने हैं, सुभग भलो आकारो । तिनपै च्यारि जिनेश्वर के थल, शोभा अधिक अपारो ।
तिनके बिंब विराजत सुंदर, पूजन चित ललचायो । जोड़ि दरब वसु अरघ ठानि के, जै जै जै जिन गायो ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि चतुर्विदिशायां चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो महार्घं० ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद गीतिका—माल्यवान सुमेरु गिरि को, जान गजदंतो सही । तिस ऊपरै जिनदेव को थल, पूजियतु तीरथ मही ।
तिस मांहि बिंब जिनेश के शुभ, रतन रूप बखानिये । मैं जजों मन वच काय ले करि, अर्घ वसु द्रव आनिये ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि माल्यवानगजदंतोपरि जिनालयेभ्यो अर्घं० ॥ १२ ॥

मेरु का गज दंत ये ही, मालिवान सुहावनो । नव कूट ऊपरि महा सुन्दर, अधिक मन का भावनो ।

इन विषै उत्पति जीव बहुते, आपने अघ वस परे। तिन गति छेदक देव के पद, पूजतैं वांछित सरैं ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदंतसंबंधि-गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ १३ ॥

या ही सु गज दंता जु ऊपर, सिद्ध कूट बखानिये। इस कूट ऊपरि थान जिन को, और पै नहिं मानिये।
इन विषै उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गति छेदक देव के पद, पूजते वांछित सरैं ॥

ॐ ह्रीं माल्यवान गजदंतोपरि प्रथमसिद्धकूट-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ १४ ॥

माल्यवान गज दंत ऊपरि, माल्यवान सुकूट है। बहु तुंग सुन्दर हरप कारी, देव तहँ सुख लूट है।
इन विषैं उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसिं परे। तिन गति छेदक देव के पद, पूजतें वांछित सरे ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदंतोपरि द्वितीय माल्यवान कूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ १५ ॥

मेरु का गज दंत पहला, माल्यवान बताय है। ता ऊपरै है कूट सुन्दर, उतर गौरव गाय है ॥
इन विषै उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गति छेदक देव के पद, पूजतें वांछित सरे ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदन्तसम्बन्धि-तृतीयकौरवकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

प्रथम ही गज दंत ऊपरि, कूट चौथा जानि है। है नाम तिसका कच्छ सुखदा, और सुनि अधिकानि है।
इन विषै उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गतिछेदक देवके पद, पूजतें वांछित सरे ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदन्तसम्बन्धि-चतुर्थकच्छकूट-गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम ॥ १७ ॥

पहल ही गज दंत के शिर, कूट पंचम आनिये। है नाम सागर कूट को शुभ, जीव थावर थानिये।
इन विषैं उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गति छेदक देवके पद, पूजतें वांछित सरे ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदन्तसम्बन्धि-पञ्चमसागर-नामा-कूट-गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

माल्यवान गज दन्त ऊपर, कूट षष्ठम जानिये। है नाम जाका रजत सुन्दर, खंड थावर मानिये।
इन विषै उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गति छेदक देव के पद, पूजतें वांछित सरे ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदन्तसम्बन्धि-षष्ठमरजतनामाकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

मेरु का गजदन्त सुन्दर, माल्यवान सुगाइयें। ता ऊपरै है कूट पूरण, नाम तास बताइये।
इन विषै उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गति छेदक देवके पद, पूजते वांछित सरे ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदन्त-ऊपरि सप्तमपूर्णभद्रनामा कूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

प्रथम ही गज दन्त ऊपर, कूट अष्टम जानिये। तिस नाम सीता तुङ्ग दीरघ, अधिक सुन्दर मानिये।
इन विषै उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गति छेदक देवके पद, पूजतें वांछित सरे ॥

ॐ ह्रीं माल्यवान गजदतउपरि अष्टम सीतानामाकूट-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

गज दन्त है तिस नाम सुनि अब, मानवान वखानिये। तिस ऊपरै है कूट हरिसह नाम धारक जानिये।
इन विषै उतपति जीव बहुते, आपने अघ वसि परे। तिन गति छेदक देवके पद, पूजतें वांछित सरें ॥

ॐ ह्रीं माल्यवानगजदन्तउपरि हरिसहनामा नवमकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

यह कूट नव गज दंत ऊपरि, जानिये सुखदायजी। इन कूट सागर रजत ऊपर, व्यन्तरी शुभ पायजी।
इक नाम भोगा जानि दूजी, भोग मालिनी नाम है। इन गति छेदक देवके पद, जजे हो शिवठाम है ॥

ॐ ह्रीं माल्यवाननाम गजदन्त ऊपरि नवकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

छंद अडिल्ल—

माल्यवान गजदन्त ऊपरैं जानिये, सागर रजत सु कूट शीश पे मानिये।
भोगाभोग्य मालिनी देवी व्यंतरी, इन गति छेदक देव पूजिये अघ हरी ॥

ॐ ह्रीं माल्यवान गजदन्त सम्बन्धि सागररजतकूटनिवासिनी देव्य गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

॥ अथ द्वितीय महासोमनस गजदन्त संबन्धी प्रत्येक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल—

महा सोम गज दन्त दूसरो है सही, तापै है सिध कूट जिनालय की मही।
भूव तहाँ जिन बिंब रतन के मानिये, वसु द्रव्य अर्घ मिलाय जजों पद जानिये ॥

ॐ ह्रीं महासौमनसगजदन्त सम्बन्धि जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

महा सोम गज दन्त तुंग शुभ गाइये, पृथ्वी कायक जीव तनों पद पाइये।
इनमें उतपति छेदक भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं महासौमनसगजदन्तसम्बन्धि पृथ्वीकायकजीव-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

कूट दूसरो महा सौमनस जानिये, रचना बहु तहँ ज्ञान थकी सब आनिये।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं महासौमनसगजदन्तसम्बन्धि द्वितीयसौमनसकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

कूट तीसरा देवकुरु तिस नाम है, दूजे गज दन्ते पै वाको धाम है।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं महासौमनसगजदन्तसम्बन्धि तृतीयदेवकुरुनाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

महा सौमनस दूजो गजदन्त जानिये, तापै मगल कूट नाम शुभ मानिये।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं महासौमनस गजदन्त सम्बन्धि चतुर्थमगलकूट गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

या ही गजदन्त ऊपर तुंग बखानिये, विमल नाम है कूट पंचमा मानिये।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं महासौमनसगजदन्तसम्बन्धि-पचमविमल नामकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

महा सौम गज दन्त ऊपरैं हैं सही, कांचन नामा कूट भले सुख की मही।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं सौमनसगजदन्तसम्बन्धि काचननामाकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

दूजा गजदन्त ऊपर सुभग सुहावनो, नाम विसष्टि कूट तुङ्ग सुख धावनो।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं महासौमनस गजदन्त ऊपरि सप्तम विशिष्टनामाकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

महा सौमनस गजदन्त ऊपरि जोइये, सात कूट हितकार तुङ्ग मन मोहिए ।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजे होय सकल अघ छारजी ॥

ॐ ह्रीं महासौमनसगजदन्तऊपरि अष्टमकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

छंद जोगीरासा—महा सौमनस गजदन्त ऊपरि, जोइये दोय यह भाई । विमल नाम कंचन गिर दूजो, इनपै मिंद्र सहाई ॥
तिनमें वत्समित्र सुमित्रा, व्यन्तर देवी राजै । इनकी गति हर मोक्ष भए सिध, ते पूजों सिध काजै ॥

ॐ ह्रीं महासौमनम गजदन्तऊपरि विमलकांचनकूटनिवासिनी देव्य. गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३४ ॥

॥ विद्युतप्रभ नाम तृतीय गजदन्तसम्बन्धी अर्घ ॥

॥ छंद पद्धरि ॥

विद्युत प्रभ शुभ गज दंत जोय,सिध कूट तहाँ जिन मिंद्रसोय । तिनमें जिन प्रतिमा जिन समान, मैं पूजूं तिन पद अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदन्तसम्बन्धि जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

या ही गज दंत सु उपरि जोय,सिध कूट तुङ्ग अति सुभग सोय । याकी गति छेदक देव जानि,मैं पूजों मन-वच अरघ आनि ।

ॐ ह्रीं विद्युत प्रभ गजदन्तसम्बन्धि सिद्धकूटनाम गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

विद्युत प्रभ गज दंत जोय, विद्युत प्रभ ही शुभ कूट सोय । याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन-वच अरघ आनि ॥

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभ तृतीयगजदन्त उपरि विद्युतप्रभकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

है कूटदेव शुभमय अनूप, बहु शोभा तुङ्ग स्वरूप रूप । या कीगति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन वच अरघ आनि ॥

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदन्तउपरि देवकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

या ही गज दन्त ऊपर सुजान, है कूट परम नामा बखान । याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन-वच अरघ आनि ॥

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदन्तऊपरि पद्मनामाकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

विद्युत प्रभ गज दन्त सोय, है पतन कूट शुभ धाम जोय । याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन वच अरघ आनि ॥

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदन्तऊपरि पतनकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

याही गज दन्त सुशीश जानि, है स्वस्तिक नामा कूट मानि। याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन वच अर्घ आनि ॥

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदंतउपरि स्वस्तिकनामकूटगतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

सत ज्वाल कूट सप्तम सुभाय, गज दंत इसी पे तुंग पाय। याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन वच अरघ आनि।

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदंतउपरि सत्वज्वालनामाकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं० ॥ ४३ ॥

सीतोदा कूट अनूप जोय, विद्युत प्रभ नाम गज दंत सोय। याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन वच अरघ आनि।

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदंतउपरि सीतोदानामकअष्टमकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

विद्युत प्रभ है गज दंत जोय, हरि नाम कूट है अधिक सोय। याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मनवच अरघ आनि।

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदंतउपरि हरिनामकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

विद्युत गज दंता शीश जाय, नव कूट तुंग अति सुभग पाय। याकी गति छेदक देव जानि, मैं पूजों मन वच अरघआनि।

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदंतउपरि नवकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

छंद जोगीरासा—पतन नाम अर स्वस्तिक दोऊ, कूट शीश पै जानो। वारिषेण अरु अटला देवी, रहै महा सुख थानो।
मंदिर देवी वसत है तामें, सुख सो काल खिपावै। इनकी गति हरि देव भये जे, तिन पूजे शिव पावै ॥

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभगजदंतउपरि पतनस्वस्तिककूटनिवासिनीव्यंतरदेवीगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥

॥ गंधमादन नामक चतुर्थ गजदंत संबंधी अर्घ ॥

चौपई—गज रद गंध मदन पे जानि, सिद्ध कूट शिर जिन थल मानि। तिनमें प्रतिमा जिन आकार, ते पूजों कर वसु द्रव धार।

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदंतउपरि सिद्धकूटजिनमन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

गज रद गंध मदन परि सही, सिद्ध कूट है तीरथ मही। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों सुध होय।

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदंतउपरि गंधमालिनीनामाकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४९ ॥

गंध मादन गज दंत पै सोय, गंध मादन ही कूट सु जोय। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजें शिव सुख होय ॥

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदंतउपरि गंधमादनकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

याही गज रद ऊपरि जाय, उत्तर नामा कूट सु थाय। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजे शिव सुख होय।

ॐ ह्रीं गन्धमादनगजदंतउपरि उत्तरनामाकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५१ ॥

गंध मालिनी कूट सुजोय, गंध मादन गजदंते सोय। याकी उतपति छेदक जानि, तिनके पद पूजों थुति ठानि।

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदंतउपरि गंधमालिनी कूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

लोहित नामा कूट सु जोय, गंध मादन गज दंते सोय। यामें उतपति छेदक जानि, तिनके पद पूजे अघ हानि।

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदंतउपरि लोहितनामा कूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५३ ॥

गंध मादन गज दन्ते जाय, स्फटिक कूट तुङ्ग तहँ पाय। यामें उतपति छेदक जानि, तिनके पद पूजे अघ हानि ॥

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदन्तउपरि स्फटिकनामा कूट गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

या ही गजदन्ते शिर जोय, आनन्दनाम कूट अवलोय। यामें उतपति छेदक सही, तिन पद पूजे तैं शिव मही ॥

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदन्तउपरि आनन्दनाम कूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

गंध मादन गजदन्ते शीश, कूट सात दीरघ शुभ दीस। इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अरघ सँजोय ॥

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदन्तउपरि सप्तकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

छंद अडिल्ल—

स्फटिक कूट सुलोहित कूट विषै सही, भोग करा अर भोगवती देवी कही।
रतन महल इन विंतर देवी के कहे, या गति छेदक सोय जजों मन वच ठहे ॥

ॐ ह्रीं गंधमादनगजदन्तउपरि स्फटिक-लोहितकूटनिवासिनीदेव्यः गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम ॥ ५७ ॥

छंद हरिगीतिका—मालिवान जु सौमनस है, विद्युतप्रभगंध मादनैं। ये प्रथम मेरु सुचारि गज दन्त, जानि सुखके साधनैं ॥
इन शीश जिनके च्यारि मंदिर, पूजिहों जिन पद सही। फिर कूट है बत्तीस जिनके, पूजि गति छेदक ठही ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-चतुर्गजदन्तोपरि जिनचैत्यालय-द्वात्रिंशत्कूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम ॥ ५८ ॥

तोन
तोक

॥ जयमाला ॥

दोहा— मेरु सुदर्शन को भलो, कह्यो कथन सुखदाय। सुनिते अति सुख ऊपजे, पढे बुद्धि अधिकाय ॥ १ ॥

॥ छंद वेसरो ॥

गजदंते या विधि है भाई, विदेह क्षेत्र में मेरु सु थाई। ताके पूरब पश्चिम सोई, भद्रशाल वन वेदी होई ॥ २ ॥
तिन वेदी की नोकें भाई, निषध नील तें आन मिलाई। मेरु तनी चव दिश को जानो, पडे चार गज दन्त बखानो ॥३॥
मेरु थकी इक नोक लगाई, दूजी निषध नील नौ आई। ऐसे गजदंते चव जानो, अब सुनि इनको अर्द्ध प्रमानो ॥४॥
नील निषध कानी तो जानो, जोजन चव शत तुङ्ग बखानो। मेरू पे जिन मंदिर जानो, तहँ के जिन पूजों थुति आनो ॥५॥
देव खगां तहँ पूजन आवैं, ले फल पुण्य सुथानक जावैं। ऐसे चव गज दंते भाई, चव जिन मंदिर है सुखदाई ॥६॥
इन चव पै है कूट उतंगा, तीस दोय जानो मन रंगा। मालिवान गजदन्ता सोही, सब वैडूर्य रतन सो होई ॥७॥
ता परि कूट कहे नव भाई, अब सुनि नाम कहूँ हित दाई। परथम सिद्ध कूट हितकारी, मालिवान दूजो दुखहारी ॥८॥
उत्तर कौरव तीजो जानों, कच्छकूट चवथो सुख थानो। पंचम सागर कूट बतायो, षष्टम रजत नाम हित लायो ॥९॥
पूरण भद्र सातमें होई, सीता कूट अठमों सो ही। कूट नवांहर अति शुभ जानो, ये नव कूट अन्य सम जानो ॥१०॥
गज दन्त महा सौमनस दूजा, चांदी सम रंग जिन धुनि सूजा। इन पे कूट सात है भाई, सुन्दर तुङ्ग नाम सुख दाई ॥११॥
परथम सिद्ध कूट है खासा, याही पे जिन मन्दिर भाषा। रतन बिंब जिन तनसे सोवैं, पूजें सुरखग निज मन धोवैं ॥१२॥
मेरी शक्ति जान की नाहीं, तातैं हम यहाँ भावन माही। ले वसुद्रव्य बिंब जिन सेऊं, ता फल जामन मरण न लेऊं ॥१३॥
महा सौमनस दूजा कूटा, देव कुरू तीजा अघ छूटा। चौथा मंगल कूट बताया, विमल कूट शुभ पंचम गाया ॥१४॥
पष्ठम कांचन कूट सु भाई, कूट विशिष्ट सातमां थाई। विमल कूट कांचन पे जोई, व्यन्तर देवी के थल होई ॥१५॥
ऐसे सात कूट शुभ गाये, दूजे गजदंता पे पाये। तीजा विद्युत प्रभ गज दंता, ताया सोने समरंग संता ॥१६॥
तापे कूट कहे नव भाई, सुन्दर तुङ्ग सर्व सुखदाई। परथम सिद्ध कूट जिन गेहा, पूजैं सुर खग करि बहु नेहा ॥१७॥
मैं भी मन-वच-काय उछाचा, पूजन की भावन शुभ भावा। दूजा कूटविद्युत प्रभ भाई, देव कुरू तीजा अधिकाई ॥१८॥

पदम कूट चौथा हितकारी, पतन नाम पंचम अति भारी। पद्म स्वस्तिक कूट बताया, सत्व ज्वाल अति सप्तम गाया ।१९॥
सीतोदा अष्टम है भाई, फिर हरि कूट नवा सुखदाई। पतन और स्वस्तिक पै मानो, व्यन्तर देवी को शुभ थानो ॥२०॥
चौथा गज दंता सुन भारी, नाम गंध मादन सुखकारी। कंचन सम रंग पीला जानो, यापै सात कूट शुभ मानो ॥२१॥
पहला सिद्ध कूट पहिचानो, याही पे जिन मंदिर जानो। रतन बिंब जिन से सुखकारी, तिन पद मन वच धोक हमारी ।२२।
गंध मादन है कूट पियारा, उत्तर कूट तीसरा न्यारा। गंध मालिनी चौथा जोई, पंचम कूट लोहिता होई ॥२३॥
षष्टम स्फुटिक जु कूट बताया, आनन्द कूट अन्त पै गाया। स्फुटिक लोहित पै सुनि भाई, व्यन्तर देवी बसै बताई ॥२४॥
ऐसे सात कूट तुम जानो, चवथे गज दंते शिर थानो। चारों गज दन्तन के जोई, मिलि के सकल तीस दो होई ॥२५॥
ये सब थान कहे सुखदाई, इनमें उतपति है जिय भाई। तिन गति छेद भये शिव कंता, पूजों तिन पद मन वच संता ॥२६।
जुग ही गज दंतन में मानों, इक इक मारग गुफा सु थानो। तिनमें सरित निकसि दधि जावै, क्षेत्र विदेह बीच होय ध्यावै ।२७
इन पै रचना ते सब गाई, रतन कनकमय, शुभग बताई। सुर के क्रीड करन के थाना, महा मनोग्य तुङ्ग अधिकाना ॥२८॥
देव जिनेश्वर हैं तहँ गेहा, तातैं गजदंत तीरथ नेहा। देव खगां तहँ पूजन जावै, बहु थुति कर निज पाप गमावै ॥२९॥
मेरी भी परणति शुभ होवैं, कवि जिन थान सकल यह जोवैं। सो कोई पुण्य उदै तै भाई, परभौ में विधि मिलि है जाई ।३०।
या भव तों उस थल नहिं जानो, बनै नहीं यह दृढ चित आनौ। तातैं भावन ही सुखकारी, दिन प्रति तिन पद ढोक हमारी ३१
मेरे और भाव कछु नाहीं, जिनकी भक्ति बहुत उर माहीं। ये ही भौ भौ में मोहि आवो, ये ही मेरे पाप खिपावो ॥३२॥

दोहा— ये गजदन्त चार विधि, कही अलप सो जानि। इन सम्बन्धि जिन पूजके, टेक धन्य भव मानि ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि-चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो जयमालार्घम्।

॥ अथ भरतक्षेत्र संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीतिका—भरत खेतर दीप जंबू, मांहि शुभ थल राजिये। तिस मांहि जिनके थान सुन्दर, विनय सहित विराजिये।
तिन बीच प्रतिमा शुद्ध मूरति, सुरत में जैसी कही। पूजा तिनकी करन को शुभ भावतैं विनती ठही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि जिनालयस्थ जिनबिंबसमूह अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि-जिनालयस्थ-जिनबिंबसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ., स्थापनम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबधि-जिनालयस्थ-जिनबिंब समूह अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल जोगीरासा—क्षीरोदधि को निरमल पानी, कनक पियाले आनो। ले अपने कर हरप धार करि, सफल आज दिन मानो।
भरत क्षेत्र जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई। पूजों तिन फल जमम जरा दुख, दोप न उपजै कोई॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो जलं० ॥ १ ॥

चंदन घसि शुचि निरमल जल से, मलय सुगंधित धारी। ले शुभकारी जिन मंदिर को, मन वच काय संवारी।
भरत क्षेत्र जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई। पूजों तिन फल भव—तप नाशैं, अवर न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं० ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल जायकली से, श्वेत वरण अधिकाई। धार हरप उर ले अपने कर, अनुमोदन जुत भाई।
भरत क्षेत्र जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई, पूजों तिन फल नाश करम को, अक्षय पद को जोई॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

फूल महा गंध धार सार ले, वरण भलो सुखकारी। तापै अलि वशि होय बास के, गुंजे तें कर धारी।
भरत क्षेत्र जिन गेह जितें हैं, बिंब शुद्ध तहं होई। पूजों तिन फल नाश काम को, और न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं० ॥ ४ ॥

पट् रस मय नैवेद्य खेद विन, तुरत बना कर लायो, घाल थाल कंचन भरपूरण, उमगे ही चित आयो।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई। पूजों तिन फल होय क्षुधाक्षय, अवरन वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं० ॥ ५ ॥

रतन दीप अति ज्योति प्रकाशी, कंचन थाल भराई। अपने मुखतें मधुर शब्द करि, जिनवर के गुण गाई।
भरत क्षेत्र जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई। पूजों ता फल नाशन तम को, और न वांछा कोइ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं० ॥ ६ ॥

दश विधि गंध मिलाय धूप कर, अपने कर में धारों। मन वच काय शुद्ध करि वसु अरि, अगनि विषै ले जारों
भरत क्षेत्र जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई। पूजों ता फल होय करम क्षय, और न वांछा कोई ॥
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं० ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी, खारक शुद्ध मंगाऊँ। पिस्ता चारु मनोहर लेकर, इन आदिक बहु लाऊँ।
भरत क्षेत्र जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई। पूजों ता फल शिवफल उपजे, और न वांछा कोई ॥
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं० ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत पहूप चरु, दीप धूप फल भाई। मेलि वसु द्रव अरघ करूं शुभ, अति आनंद उर लाई।
भरत क्षेत्र जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई। पूजों ता फल हो अनर्घ्य पद, और न वांछा कोई ॥
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल—

भरत क्षेत्र नगं—खान देश रतना भरयो, तामें सरिता घनी बहुत झरना झरयो।
धर्म ध्यान में बैठ जीव शिवपुर लहै, ते थानक हूँ जजों देव जिनवर रहैं ॥
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपभरतक्षेत्रसंबधि-जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घं० ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल—

याहि भरत के मांहि खंड षट जानिये, आरज एक मलेच्छ पंच मन आनिये।
जीव तहां त्रस थावर बहु उपजाय है, तिनको गति छेदक देव जजों सुख पाय है ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसबंधि-त्रसथावरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ १ ॥

पंच मलेछनि मांहि धरम नहिं पाइये, पंचेन्द्रिय के भोग घने तहं गाइये।
पाप पुण्य जे किये पूर्व फल भोगवै, या गति छेदक देव जजों शिव जोग वै ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि-पंचम्लेच्छ-खंडगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २ ॥

भरत क्षेत्र के आरज खंड विषै सही, होय काल षट् जानि महा सुख दुख मही।
अपने कीने कर्म जीव फल पाय हैं, या गति छेदक देव जजों शिव थाय हैं॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रे आर्यखण्डसम्बन्धि-उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३॥

पहले काल मझार जीव हो जुगलिया, मरके ह्वै सुर जाय दुखनि को उगलिया।
धर्म निमित तहँ नाहिं भोग में रति सही, या गति छेदक देव जजों हो शिव मही॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रे आर्यखण्डसम्बन्धि प्रथमकाल-उत्पत्तिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४॥

दूजे काल सम्बन्धि जीव सु जानिये, कर्म उदय सुख लहै दुःख करि हानिये।
काय छांडि सुर होय अवर नहिं पाइये। या गति छेदक देव जजों अर्घाइये॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रे आर्यखण्डसम्बन्धि द्वितीयकाल-उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५॥

तीजे काल मझार जुगल अति सुखकरा, मनवांछित सुख बने महा सुखकी धरा।
देव होय तजि काय आय लों सुखलहै, तिन गति छेदक देव जजों सब अघ दहै॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रे आर्यखण्डसम्बन्धि तृतीयकाल-उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६॥

एक दोय त्रय काल जुगल दी ऊपजे, एक दोय त्रय पल्य आयु बहु रूप जे।
कल्प वृक्ष दश जाति सहित सुखपाय है, या गति छेदक देव जजों हित दाय है॥

ॐ ह्रीं रतक्षेत्रे आर्यखण्डसम्बन्धि भोगभूमि-गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७॥

सुरस जातिके कल्प वृक्ष बहु जानिये, मन वांछित सुख देंय काय सुख दानिये।
तुङ्ग घने सौभाय खंध थावर तनों, या गति छेदक देव जजों मन वच तनों॥

ॐ ह्रीं सुरसजाति-कल्प-वृक्षगति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८॥

कल्प वृक्ष वादित्र जाति के जानिये, मन वांछित वादित्र देय सुख खानिये।
शोभ तिन्हों की देख नयन मन मोहि हैं, या गति छेदक देव जजों अघ खोहि है॥

ॐ ह्रीं वादित्रजातिकल्पवृक्ष-गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९॥

भूपण नामा कल्प वृक्ष सुखदाय है, पृथ्वीकाय स्वरूप तुङ्ग अधिकाय है।
नाना भूपण देय जीव वांछै तिको, या गति छेदक देव जजों मन वच इको ॥

ॐ ह्रीं भूपणजातिकल्पवृक्ष-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

कुसुम जाति सुर वृक्ष अधिक शोभा लिये, गंध बहुत तिस मांहि वरण अतिशय किये।
मन वांछित दे फूल घ्राण सुखदाय है, या गति छेदक देव जजों शिव पाय है ॥

ॐ ह्रीं कुसुमजाति कल्पवृक्ष-गति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

ज्योतिप जाति अनूप कल्प तरु जोइये, तिनके तेज निहार सूर शशि खोइये।
महा उद्योत कराय नाथ तम को कियो, या गति छेदक देव जजो धनि है जियो ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषजातिकल्पवृक्ष-गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

दीपक जाति अनूप कल्पतरु सार है, है तमनाशक सार करै दुखटार है।
इनकी महिमा कौन करै कवि रायजी, इन गति छेदक देव जजों सुखपायजी ॥

ॐ ह्रीं दीपजाति कल्पवृक्ष-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

मंदिर जातिक कल्प सु वृक्ष अपारजी, मन वांछित है महल महा सुखकारजी।
तुंग घने शोभाय दाय हित के सही, या गति छेदक देव जजों शिवदाय ही ॥

ॐ ह्रीं गृहजातिकल्पवृक्ष-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

भोजन जाति सु कल्प वृक्ष बहु सोहना, वांछित भोजन देय भूख मद खोहना।
पृथ्वी कायक खंध घने थावर तने, या गति छेदक देव जजों पुनि ह्वै घने ॥

ॐ ह्रीं गृहजातिकल्पवृक्ष-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

भाजन जातिक कल्प वृक्ष बहु है सही, वांछित भाजन देय महासुख की मही।
मनकी आशा पूरै चाह गमाय है, या गति छेदक देव जजों हित लाय है ॥

ॐ ह्रीं भाजनजाति कल्पवृक्ष-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

वस्त्र जाति के कल्पवृक्ष गुण आगरो, वांछित कपडा देय महासुख सागरो ।
तुंग घनो विस्तार तासको जानिये, या गति छेदक देव जजों दुख हानिये ॥

ॐ ह्रीं वस्त्रजाति कल्पवृक्ष-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

छंद गीतिका—रस जाति बाजा जाति भूषण, फूल जाति बताइये, फिर जाति दीपक जात ज्योतिप, जाति गृह दे थाइये ।
अरु देय भाजन जाति वरन सु, बहुरि बहु पर दे सही, दश जाति यह सुर वृक्ष गति हर, पूजि है शिवदा मही ॥

ॐ ह्रीं दशजाति कल्प वृक्ष-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

काल पहलो चार कोडा-कोडि सागर जानिये, त्रय कोश काया आयु त्रय पलि, असन दिन त्रय ठानिये ।
जलचरा नहि होय उतपति, जीव थलचर जो कहे, इन गतिच्छेदक देवके पद, पूजितैं भव दुख हरे ॥

ॐ ह्रीं प्रथमकाले चतु' कोडाकोडि सागर उत्कृष्टस्थिति तथा थलचर जीव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१६॥

प्रथम काल मझार नभचर होय जीव सुहावना, तिन काल आयुष जानि पूरव, मिनख जो फल थावना ।
अरु मरै तब सुर आय उपजै, और गति जावै नहीं, इन गति छेदक देव के पद, पूजि हैं शिव सुर ठही ॥

ॐ ह्रीं प्रथमकाले चतु. कोड़ाकोडि सागर उत्कृष्ट स्थिति—नभचर जीव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

छंद अडिल्ल— दूजो काल सु कोडा कोडी तीन को, दोय कोश तन आयु दोय पलि जीव को ।
जलचर तो तहाँ नाहिं जीव थलचर कहे, इन गति छेदक देव जजें सब अघ दहे ॥

ॐ ह्रीं मध्यमभोग भूमि विधेयक द्वितीयकाले त्रिकोडाकोडि उत्कृष्टआयुथलचर जीव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

दूजा काल मझार सार जिय जानिये, नभचर उपजे जीव सकल सुख दानिये ।
दो दिन पीछे खाय बहेड़ा सम सही, या गति छेदक देव जजे सुख की मही ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयकाले नभचरजीवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २२ ॥

तीजो काल सु कोड़ा कोड़ी दोय है, एक कोश तन आयु एक पलि होय है ।
जलचर तो तहं नाहिं, जीव थलचर सही, इन गति छेदक देव जजों मन वच ठही ॥

ॐ ह्रीं कोडाकोड़ी द्वयप्रमाण तृतीयकाल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २३ ॥

छंद अडिल्ल—

तीजे काल मझार एक दिन बीच है, भोजन लेवै जीव भूख को टीच है।
तहं उपजे नभचरा जीव बहु जानिये, या गति छेदक देव जजों सुख थानिये ॥

ॐ ह्रीं तृतीयकालसंबंधि-नभचर जीवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २४ ॥

काल तीसरा मांहि कछू बाकी रहै, पल्य आठवां भाग काल तब इम ठहे।
कुलकर चवधे होय, जनम ही जानिये, इन गति छेदक देव जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं तृतीयकालान्ते चतुर्दश कुलकर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २५ ॥

प्रथम प्रति श्रुत नाम जान कुलकर तनों, काय धनुष दश आठ सैंकडा की गिनो।
पल्य तनो दश भाग आयु को धार है, या गति छेदक देव जजों हितकार है ॥

ॐ ह्रीं प्रथमप्रतिश्रुत नामकुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २६ ॥

दूजो सनमति नाम बड़ो मतिमान है, काय धनुष तेरह के तुंग प्रमान है।
पल्य तणों शत भाग आयु को धार है, या गति छेदक देव जजों भव पार है ॥

ॐ ह्रीं सन्मतिनाम द्वितीयकुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २७ ॥

तीजो कुलकर खेमंकर तिस नाम है, काय आठसै धनुप गुणन को धाम है।
पल्य हजारवें भाग आयु को धार है, या गति छेदक देव जजों भव पार है ॥

ॐ ह्रीं क्षेमंकर नाम तृतीय कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ २८ ॥

चौथा कुलकर क्षेमंधर नामा सही, काय धनुष सौ पौणी आठ तनी कही।
पलि हजार दश भाग आयु के धार है, या गति छेदक देव जजों भव पार है ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थक्षेमंधरनाम कुलकर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ २९ ॥

सीमंधर है नाम पांचवां कुल करा, काय धनुप शत साड़ी सात तनी धरा।
पल्य तने लख भाग आयु का धार है, या गति छेदक देव जजों भवपार है ॥

ॐ ह्रीं पंचम सीमधर नामकुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

६ अडिल्ल—

छट्ठा कुलकर सीमंकर शुभ नाम है, सवा सातसै धनुष काय सुख धाम है।
पल्य तने दश लाख भाग की आयु है, या गति छेदक देव जजों शिव पाय है ॥

ॐ ह्रीं षष्ठम सीमकर नामकुलकर गदिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३१ ॥

सप्तम कुलकर नाम विमल वाहन सही, धनुष सातसै काय तुंग तिस की कही ।
पल्य कोटिवें भाग आयु को पाय है, या गति छेदक देव जजों शिव जाय है ॥

ॐ ह्रीं सप्तमकुलकर विमलवाहन गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

चक्षुष्मान सु कुलकर अष्टम जानिये, पौण सातसै धनुष काय तिस मानिये ।
पल्य कोटि दशभाग आयु के धार हैं, या गति छेदक देव जजों भव पार है ॥

ॐ ह्रीं अष्टमचक्षुष्मान कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

नवमां कुलकर यशस्वी जुतमान है, साढी छः सौ धनुष काय गुण ठाम है ।
पल्य कोटि शत भाग आयु के धार है, या गति छेदक देव जजों भव पार है ॥

ॐ ह्रीं नवमयशस्वीनाम कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

अभिचन्द्र नामा दशमा कुलकर सही, धनुष सवा छः सौ तन ताको शुभ मही ।
सहसकोटि पलि भाग आयु को धार हैं, या गति छेदक देव जजों भव पार है ॥

ॐ ह्रीं दशम अभिचन्द्रनाम कुलकर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

नाम तासु चन्द्राभ ग्यारमां कुलकरा, छःसौ धनुष तुंग काय ताने धरा ।
सहस कोटि दश भाग पल्य की आयु है, या गति छेदक देव जजे शिव पाय है ॥

ॐ ह्रीं एकादशाचन्द्राभनामकुलकरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

कुलकर है मरुदेव बारमों जानिये, पौणी छःसौ धनुपकाय तसु मानिये ।
लच्च कोटिमों भाग आयु के धार है, या गति छेदक देव जजों भव पार है ॥

ॐ ह्रीं द्वादशम मरुदेवनाम कुलकुर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

नाम प्रसेनाजित तेरमां कुलकरा, साढी पांचसै धनुष काय तानै धरा ।
भाग लक्षदश कोटि पल्य की आयु है, या गति छेदक देव जजों शिव पाय है ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशमप्रसेनजित नाम कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥३८॥

चौदह कुलकर नाभिराय परगट सही, सवा पांचसै धनुषकाय तानै लही ।
कोटि पूर्व की आयु तने यह धार है, या गति छेदक देव जजो भव पार है ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशम नाभिराय नाम कुलकरगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घः ॥ ३९ ॥

छंद पद्धरि—

यह चौदह कुलकर जानि वीर, मरजाद लोक की कहै धीर ।
है अवधि ज्ञान के स्मृति धार, या गति छेदक जजि होय पार ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकर गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— चौदह कुलकर जो करी, लोक विषै जे रीति । सो भापो चित दे सुनो, समझे उपजे प्रीति ॥ १ ॥

चाल सुनयानन्द —

प्रथम कुलकर समै ज्योति कल्पवृक्ष की, मंद होकर लखी ज्योति शशि सूर की ।
भय तबै ऊपज्यो कुलकरां क्षय कियो, काय में कनक सो वर्ण तानै लियो ॥ २ ॥
दूसरे मनुष को समय जब आइयो, बहुत मंद ज्योति कल्प वृक्ष पड जाइयो ।
तारका जानि जन देख भय को लियो, बोधके सकल भय खोय कुलकर दियो ॥ ३ ॥
तीसरे मनुजके समय दुष्ट जीवरा, वराह सिंह स्याल भयकार दीखें खरा ।
देखिजन भय लयो कुलकरां नै हरयो, तन तनों वर्ण पहले समा ही धरयो ॥ ४ ॥
जीव अति क्रूर मिरगादि चवथा समै, देखि तब भय लयो लोक अवतार में ।
इन तनो भय प्रजा को सकल नासियो, वाणि जिन देव की मांहि इमि भापियो ॥ ५ ॥
पांचमें कुलकरा समय सुरद्रुम जे, अलप से रह गये परस्पर ग्राम जे ।

सीम तब बांट दीनी सबन को सही, कनक सा काय याकी भई सुखमई ॥ ६ ॥
छटे कुलकर समय वृक्ष सुर तुच्छ हे, लोक तब परस्पर लरैन उद्यत भये ।
भूप तब आपनो चिन्ह अपनो दियो, सर्व लोकां तबै बहुत सुख को लियो ॥ ७ ॥
कनकमय काय इन सात कुलकर तनी, या समें आदि घोड़ा गजा चढि बनी ।
आठमें कुलकरा समै इस विधि ठई, मात पिता जान लागे शिशु पा भयी ॥ ८ ॥
नवम कुलकर समै बाल जाये सही, मातपित बहुत जीने लगे तिस मही ।
दशम कुलकर समै तात शिष्य को कही, सूर शशि आदि दिखलावनो इम ठई ॥ ९ ॥
ग्यारमें कुलकरां समै माता पिता, बहुत जीने लगे क्रीडना देखता ।
बारमें कुलकरां के समै भिच सई, मेघ बरसा घनी नीर तातैं भई ॥ १० ॥
और बहु ताल जलपूर के भरि रहे, तिरन के काज नावादि तिनने ठहे ।
तेरमें मनुज के समय याने कह्यो, बालकी जरा छेदन तनी इन ठयो ॥ ११ ॥
अन्त कुलकर यह सीख सब को दई, बाल होते लख्यो नाभि कमलै सई ।
छेदनें को सकल कह्या समझायजी, इस विधि इन समय दोय अधिकायजी ॥ १२ ॥

दोहा—प्रथम काल जन तन वरन, कनक समां मन लाय । दूजे काल सु ऊगते, सूरज सा तन थाय ॥ १३ ॥
तीजे काल विषै वरन, जन तिन को हो श्याम । चोथे काल जु पाइये पांचों वरन सु धाम ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥

॥ चतुर्थकाल में चौबीस जिन कथन ॥

दोहा— पीछे चौथे काल की, रचना होय अनूप । इन गति छेदक देव पद, जजों ज्ञान सुख रूप ॥ १ ॥
चौपई—अब जे चौथे काल मझार, उपजे पुरुष शलाका सार । तिनको कथन सुनो मन लाय, त्रेसठि जीवन के उपजाय ॥२॥
जिन चौबीस जगत गुरु देव, तिनकी सुर नर कर रहे सेव । द्वादश चक्री होय महान, हैं षट् खंड विषै तिन आन ॥३॥

नव बलभद्र होय सुखदाय, राजभोग फिर सुर शिव जाय । नव नारायण अति बल धार, तीन खंड विजयी निरधार ॥ ४ ॥
वासुदेव अरु प्रतिनारायण, होय तिकों भी नव मन आन । तन तज के परलोकैं जाय, अपनी परणति फल को गाय ॥ ५ ॥
नव नारायण नव बल देव, नव प्रतिहर अवतर स्वयमेव । द्वादश चक्री जिन चौवीस, ये त्रेसठ नर उत्तम दीस ॥ ६ ॥
ये ही पुरुष शलाका जान, कोऊ तो तद्भव शिव थान । कोऊ को भव ले शिव होय, निकट भव्य अति उत्तम जोय ॥ ७ ॥

॥ इतिभक्ति ॥ (इत्याशीर्वाद.)

॥ भरत क्षेत्र संबंधी वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन जानिये, सुमति पदम जिन देव सुपारस मानिये ।
चंदा जिन पुष्पदंत जानि शीतल सही, श्री श्रेयांस जिन वासु पूज्य शिव की मही ॥ १ ॥
विमल अनंत जिन धर्म शांति जिन जोड़ये, कुंथ अर मल्लि देव पूजि अघ खोड़ये ।
मुनिसुव्रत नमि नेम पार्श्व महावीरजी, ये चौवीसों देव करो भव तीरजी ॥ २ ॥
ये ही सुख दातार सदा मंगल करें, ये ही पुण्य फल दाय सकल संकट हरें ।
ये ही त्रिभुवन नाथ जगत के सुख करा, ये ही अधम उधार घने का अघ हरा ॥ ३ ॥
ऐसे देव निहार शरण में आइया, पूजों पद जिन देव हरष बहु पाइया ।
ता विधि जग जश होय विरद की ज्यों रहै, और न वांछा कोई तार भव भनि कहै ॥ ४ ॥
तोसे दाता और नाहिं या भवन में, नाम लेत ते तिरै तीर्थ के गमन में ।
तारन तुम सम और न दीन दयालजी, मो सम पतित उधार विरद तुम पालजी ॥ ५ ॥

दोहा—इत्यादिक मो मन विषै, वांछा पूरी देव । सेव तुम्है करि शिव लहै, मैं चाहूं तुम सेव ।

छंद अडिल्ल—

ऋषभ आदि महावीर पूजते जानिये, वीस चार जिनराज भक्ति इन आनिये ।
प्रतिमा तिनकी थापि भली विधि पूजिये, अष्ट द्रव्य दे पाय फलैं अघ धूजिये ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ : ठ : स्थापना ।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

छंद गीतिका– नीर निरमल गंध धारा, बीच तें लायो सही । धरि कनक झारी आप करले, पूज को उद्यत ठई ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, वीस चार जिनंद हैं । यह जजों जल तिन चरण आगे, मिटै भव तप फंद है ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं० ॥ १ ॥

बावनो चंदन सु घसि के, निर्मल जल मिश्रित कियो । धर रतन झारी मांहि करले, भक्ति जिन की चित दियो ।
ऋषभादि जिन महावीर परियंत, वीस चार जिनंद हैं । यह जजों चंदन चरन आगे, मिटै भव तप फंद है ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चंदनं० ॥ २ ॥

अक्षत सु उज्ज्वल खंड विन हैं, रूप मुक्ता फल जिसे । धर सुभग भाजन भाव जुत हैं, पूज जिन को मनस से ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, वीस चार जिनंद है । यह जजों अक्षत चरन आगे, अखय पद जिन वंद्य है ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

फूल गंध समेत सब रंग, नयन घ्राण जु सुख मई । ले आपने कर हरष धरि के, पूजने आयो सही ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, वीस चार जिनंद हैं । यह जजों पुष्प जु चरण आगे, काम गज हर फंद हैं ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पं० ॥ ४ ॥

नैवेद षट् रस पूर उज्ज्वल, भाव भावत लाइयो, करधार सुंदर थाल में ले, मुखै जिन गुण गाइयो ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यन्त, वीस चार जिनन्द हैं, यह जजों चरु शुभ चरण आगे, मिटै क्षुध को फंद है ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यन्त चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक उद्योत सु रतनकारी, नाश तम को सो करे, जो थाल भरले हरष धरके, आपने करमें धरे ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यन्त वीस चार जिनन्द हैं, यह जजों दीपक चरण आगे, कटे अज्ञतम खंड है ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विधि लाय सुन्दर, अगर आदि मिलायजी, मैं भले भावन आपने कर, अग्नि मांहि खिवायजी ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यन्त, बीस चार जिनन्द हैं, यह जजों धूप जु चरण आगे, जले अघ के फंद हैं ॥

ॐ ऋषभादिमहावीरपर्यन्त चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल बिदाम अनार खारक, और फल बहु लाइयो, धर हुलस चितकर कायको शुभ आप कर ले आइयो ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यन्त, बीस चार जिनन्द हैं, यह जजों फल शुभ चरण आगे, मोक्ष फलको कंद है ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल मलय अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फला सही, कर अर्घ आठों दरब केरी, आपने करमें ठही ।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यन्त, बीस चार जिनन्द हैं, यह जजों अरघ सु चरण आगे, सबै सुखको कन्द हैं ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यन्तचतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

शुभ अरघ सुन्दर आठ द्रव की,मेलि निज कर लाइये, बहु हरप धर तन पुलक तो हौं भक्ति जिन की गाइये ।
वृषभादि जिन महावीर पर्यन्त, बीस चार जिनन्द हैं, यह जजों अरघ जु चरण आगे, हरैं सब अघ वृन्द हैं ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यन्तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घम ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—वृषभदेव के पूजों पाय, प्रापति वृष की तातैं थाहि । ऐसे जानि अरघ शुभ लेय, मन वच तन करि पूज करेय ॥

ॐ ह्रीं वृषभ जिनाय अर्घम् ॥ १ ॥

अजित जिनंदतें जय नहिं लई, लिये करम तिन ने चय पई । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन वच तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अजित जिनाय अर्घम् ॥ २ ॥

संभव स्वामी नामी देव, भविजन को करता गुण भेव । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन वच तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं सम्भवनाथाय अर्घम् ॥ ३ ॥

चौपाई—अभिनन्दन अभिप्राय सुजान, निर्भय फल भव्यन को थाय । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन वच तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दननाथाय अर्घम् ॥ ४ ॥

सुमति नाथ सुमती दातार, नाम धार उतरे भव पार । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथाय अर्घम् ॥ ५ ॥

पद्मनाथ के पूजन हेत, आवत सुर नर हरप समेत । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभु जिनाय अर्घम् ॥ ६ ॥

भो सुपार्श्व पारस जिन देव, सेवत भविजन सुखकरि लेय । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथाय अर्घम् ॥ ७ ॥

चन्द्रप्रभु विच किरण मनोज्ञ, सुनतें भागें कर्म अजोग । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ ८ ॥

पुष्पदन्त सब ही सुखकार, धर्म सुगन्ध तनों दातार । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ ९ ॥

शीतलनाथ अधिक गुण रूप, शीतल ह्वै मारयो अरि भूप । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १० ॥

श्री श्रेयांश जिन निर्मल भाव, मोह अरी जीत्यो करि चाव । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय अर्घम् ॥ ११ ॥

वासुपूज्य जग पूजक देव, वास सुरग शिव दे तुम सेव । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १२ ॥

देव मल कर्म सु खोय, निर्मल भये ज्ञान शुध जोय । यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथाय अर्घम् ॥ १३ ॥

चौपाई—अनन्त नाथ जिन जगत उदार, किये अनन्त जीव भव पार। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथाय अर्घम् ॥ १४ ॥

धर्मनाथ जिन धर्म जहाज, धारि घने भवि धर भव पाज। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १५ ॥

शान्तिनाथ समता कर सोय, जीते अघ अरि तारो मोय। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथाय अर्घम् ॥ १६ ॥

कुंथनाथ करुणाजुत देव, कुञ्जर कुंथु उधार करेव। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं कुंथनाथाय अर्घम् ॥ १७ ॥

अर जिन कर्म अरी कर छेव, तुम तारक मेरे अघ भेव। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अरनाथाय अर्घम् ॥ १८ ॥

मल्लिदेव सम मल्ल न कोय, मोह जिसे मल्लन कुल खोय। यातैं मैं जिन पूज कराय मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं मल्लिनाथाय अर्घम् ॥ १९ ॥

मुनिसुव्रत मन जनन हार, मनमथ भूपति कीने छार। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत जिनाय अर्घम् ॥ २० ॥

नमीनाथ नमिहूँ पद तोय, करुणा करि मेरे अघ खोय। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथाय अर्घम् ॥ २१ ॥

नेमि जिनेश नमन सुखकार, नमिकर जीव भये भव पार। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घम् ॥ २२ ॥

पारश देव पार्श्व गुण धार, जीव कुधात कनक करतार। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घम् ॥ २३ ॥

महावीर सम वीर न कोय, तानै कर्म अरी कुल खोय। यातैं मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं महावीर जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ २४ ॥

छंद अडिल्ल— आदिनाथ जिन देव आदि महावीरलों, बीस चार जिन देव जयो अरि धीर लों।
सबही मंगल कारण सबको है सही, मन-वच-तन करि अर्घ जजों इन पद मही ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यन्त चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— अब जिन बीसरु चारकी, शुभ जयमाल अनूप। वंदे पूजे पढि सुणै, मिटै पाप मय धूप ॥ १ ॥

छंद हरिगीतिका–सर्वार्थ सिद्धि सु छोड़ आये, थल अजोध्या अवतरे। नृप नाभि मोरा देवि उरवसि दोज साढैं सुख भरैं।
वदि चैत नवमी जनम उतरापाढ तन कंचन समा, तन तुङ्ग धनु सौ पांच लक्षण, वैल जिन वृप में पमा ॥ २ ॥
आये अजोध्या छांडि विजय, विमानजित शत्रु घरां, विजया सु देवी गर्भ पायो, जेठ वदि दोजें खरा।
है तन धनुप शत चार साढी, हेम वरणी सुख मई, लक्ष बहतरि पूर्व आयुस, गज सु लक्षण अजितई ॥ ३ ॥
ग्रीव प्रथम सु छांडि श्रावसती सु पुर संभव भये, जितार नृप जसुसेन माता, गर्भ फागुन वदि लये।
दिन अष्टमी तन कनक सम है, चार शत धनुपै सही, लख आयु पूरब साठि लक्षण घोटका को शुभ मई ॥ ४ ॥
छांडि विजय विमान संवर, राय घर जोध्या भये, सिद्धार्थ माता गर्भ लीनों वैशाख सुदि छट्टै अये।
तन धनुप सौ है तीन साढी, हेम सी अभिनन्द की, है आयु पूर्व पचास लख की, चिन्ह मरकट वदन की ॥ ५ ॥
छांडि विजय विमान जोध्या, मेघ प्रभ घर आइये, मंगलादे दोज श्रावण, सु दिन गर्भज पाइये।
तन धनुप शत है तीन हिम सम, चिन्ह कोक सु जानिये, लख आयु पूर्व चवाल दीरघ, सुमति जिन की मानिये ॥ ६ ॥
ग्रीव ऊपरि छांडि धरनी, नृपसु कौसांबी पुरैं, माता सुसीमा माघ वदि छटि, गर्भ पद्म जिनेश्वरैं।
तन धनुप दोय पचास दीरघ, रक्त वरण पिछानिये, लख तीस पूरब आयु लक्षण, कमल को हित दानिये ॥ ७ ॥
वाणारसी पुर ग्रीव नव तजि, सु प्रतिष्ठ भूपति घरां, पृथला सु देवी गर्भ पायो, भादो सुदी सातैं खरा।

तन धनुप द्वयसै नील वर्णो, चिह्न साथ्यो जानिये, लख पूर्व बीस जु आयु दीरघ, सुपार्श्व जिनकी मानिये ॥ ८ ॥
छोड़ि विजय विमान चंदा, पुरी नृप महा सेन के, देवि लच्मणा गर्भ आये, चैत सुदि पांचैन के ।
तन धनुप ऊंचो डेढ सौ को, पूर्व दश लख आय है, तन वरन चंद समान उजले, चंद लच्चण पाय है ॥ ९ ॥
आरण सुरग तैं आय नृप, सुग्रीव किहकंदा पुरे, फागुन वदी नवमी सुरामा, देवि के उर अवतरे ।
काय ऊंची शत धनुप दो, लच पूरव थिति कही, है मगर लच्चण चन्द्र सो तन, पुष्पदंत जिनेसही ॥ १० ॥
देवी सुनन्दा राय दढरथ, पुरी भद्रावति कही, चैत वदि आठैं अच्युततैं, आय शीतल जिन सही ।
है पूर्व लख इक आयु काय सु, धनुप निव्वे जानिये, कल्पतरु लच्चण कहा है, हेम तन मन आनिये ॥ ११ ॥
राय विमल सु सिंहपुर में, नारि विमला नाम है, वदि जेठ छटि श्रेयांस उपजे, त्याग पुष्प विमान है ।
तन वर्ष लख चौरासि आयुस, धनुप अस्सी जानिये, तन हेम वर्णो अति मनोहर, चिन्ह गैंडा मानिये ॥ १२ ॥
चम्पापुरी वसुपूज्य नरपति, नारि विजया जोइये, छट वदी साढ सु गर्भ आये, महा शुक्रजु खोइये ।
लख वर्ष वहतरि आयु जानो, काय सत्तर चाप है, तन लाल लच्चण महिप को है, वासुपूज्य सु आप है ॥ १३ ॥
भूप कृत धर्मा सु नगरी, कपिल रम्या नारि हैं, वदि दशैं जेठ सु गर्भ आये, विमल जिन भरतार है ।
पुनि साठ लाख सु वर्ष की थिति, काय साठ जु धनुक है, सूअर सु लच्चण जान तन में काय का रंग कनक है ॥१४॥
आये अजोध्या छांड पुष्पोत्तर विमान सुहावनो, सिंहसेन नृप जयश्यामरानी, सुत अनन्त गुणावनो ।
तन तुङ्ग धनुप पचास आयुस, लच्य तीस सु जानिये, हिम वरन काया जान जिनके चिन्ह सेही मानिये ॥ १५ ॥
रत्नपुर में भानु राजा, सुव्रता देवी कही, वैशाख सुदि नव गर्भ आये, धर्म जिन तन हिम सही ।
धनुप पैंतालीस काया, आयु वर्ष दश लाखजी, तन हेम वरणो चिन्ह सुन्दर, वज्र दंड सु भाख जी ॥ १६ ॥
सर्वार्थ सिध तजि आय गजपुर, भादु वदि सातैं कही, विश्वसेन भूपति देवि ऐरा, शान्ति जिन गर्भे सही ।
पुनि एक लाख सु वर्ष की थिति, धनुप चालिस तन कह्यो, हिम वरन काया चिन्ह मृगको, जगत को सुखदा ठह्यो ॥१७॥
सर्वार्थ सिध को छांडि के हथ नागपुर गर्भे लयो, श्रीमती देवी उरै श्रावण, सुदी दशमी दिन ठयो ।
थिति सहस्र वर्ष पिचानवे की, धनुपतन पैंतीस है, जिन कुंथ काया हेम वरणी, छाग लच्चण दीस है ॥ १८ ॥

छांड अपराजित विमान सु, गज पुरै आये सही, बदि तीज फागुन गर्भ आये, मातु मित्रा सुख मही।
जिन तात नाम सुदर्शनो, तन पीत अरह जिनेश को, जे तीस धनुष सु मीन लच्छन, थित चुरासी सहस को ॥ १६ ॥
छांडि अपराजित विमान सु आय मिथलापुर भये, परजावती उर मल्लि आये, कुम्भ नृप घर में जये।
सुदि चैत एकै हेम सो तन, काय धनुष पच्चीस है, शुभ आयु वर्ष पचास सहसरु कुम्भ चिन्ह जगीश है ॥ २० ॥
प्राणत सुरग से आय कोसांबी पुरै श्रावण बदी, वप्रा सु देवी गर्भ दुतिया राय मित्र नृपै तदी।
श्याम वरणों धनुष बीस जु, चिन्ह कच्छप को सही, थिति वर्ष तीस प्रमाण सहसरु, जानिये सुख की मही ॥ २१ ॥
छांडि अपराजित सुरग को आप मिथला पुर लयो, नृप विजय विमला नार ताके, गर्भ नमि जिनको भयो।
आसोज बदि की दोज हिम सी, काय पंदरह धनुक है, थिति दश हजार सु वर्ष लच्छन, नील कमल सुत्रनक है ॥२२॥
छांडि विजय विमान द्वारावती पुर आये सही, नृप समुद विजय सु नारदेवी, शिवा शिव की है मही।
काती सुदी छटि नेमि गर्भसु, श्याम तन दश धनुष है, वर्ष सहसरु शंख लच्छन, मोक्ष पति जग जनक है ॥ २३ ॥
स्वर्ग प्राणत छांड वाणारसी वैशाखै सुदी, विश्वसेन भूपति नारि वामा, दोज को जनमें तदी।
तन नील वरणों धनुष नवको वरष इक शत आयु है, लक्षण सु सर्प जु पार्श्व जिनको, भक्त को सुखदाय है ॥ २४ ॥
छोड पुष्पोत्तर दिवस जिन कुण्डलपुर सिद्धार्थ घर, प्रिय कारिणी के गर्भ श्री महावीर आये सुदिन वर।
सुदी दोज है वैशाख की तन, सात कर सुवरण जसा, वर वर्ष बहतरि आयु जिनकी, सिंह लक्षण मन बसा ॥ २५ ॥

दोहा—मात तात तन चिन्ह रंग, आयु काय इन आदि। चौबीसों जिन के कहे, जजों टेक अघ बादि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेभ्यो जयमाला अर्घं ॥ २६ ॥

चक्री गति छेदक अर्घ

दोहा—भरत अदि ब्रमदत्त लों, द्वादश चक्री जान। इन गति छेदक शिव गये, जजों तिन्हें थुति ठान ॥

ॐ ह्रीं जबूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धिपटखंडसाधकद्वादशचक्रीगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

आदि जिनेश समैं चक्रीस, साधे पट खँड भूतल ईश। राय भरत जिन दीसत जोय, या गति छेद जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं आदिन'थसमयेभरतक्षेत्रेभरतचक्रीगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

तीन
क

अजित नाथ दूजा जिन समै, सगर चक्रि अति सुख सों रमैं। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं अजितनाथसमये सगरचक्री गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

धर्म शांति जिन अंतर समै, मघवा नाम चक्रि सुख रमै। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं धर्मशान्ति अन्तरे मघवानामचक्रीगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

धर्म शान्ति जिन अंतर मोय, चक्रि सनतकुमार सु जोय। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं धर्मशान्तिअन्तरे सनत्कुमारचक्रीगतिछेदक जिनेभ्यो ॥ ५ ॥

शान्तिनाथ जिन अपना होय, चक्री-पद पायो अधिकोय। छिनवै सहस नारि को ईश, या गतिछेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथसमये स्वयं शान्तिनाथचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

कुंथनाथ जिन अपना सोय, येही जिन षट खँड-पति होय। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं कुंथनाथसमये स्वयं कुंभनाथ जिन चक्री गति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

अरहनाथ जिन आपन सोय, ये ही जिन पट खँड पति होय। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं अरहनाथ जिन समये स्वयं अरहनाथ चक्री गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

अरह मल्लि जिन अन्तर मांहि, चक्री सुभौम भये सुख ठांहि। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं अरहमल्लिनाथान्तरे सुभौमचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

मलि मुनि सुव्रत अन्तर थाय, महा पदम चक्री उपजाय। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं मल्लि मुनिसुव्रतान्तरे महापद्मचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

मुनि सुव्रत नमि अन्तर मांहि, अन्तर में हरिषेण सु ठांहि। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत नमि अंतरे हरिषेण चक्री-गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

नमि नेम जिन अन्तर मांहि, जयनामा चक्री उपजाहि। छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं नमिनेम अन्तरे जयनामाचक्रीगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ११ ॥

नेमि पार्श्व जिन अन्तर ठोर, ब्रह्मदत्त चक्री गुणमोर । छिनवै सहस नारि को ईश, या गति छेद जजों जगदीश ॥

ॐ ह्रीं नेमिपार्श्वान्तरे ब्रह्मदत्तचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ १२ ॥

अडिल्ल— ये द्वादश चक्रीश महा बलधार हैं, नव निधि चौदह रतन अवर लछि सार हैं ।
सुर खग सेवैं पॉय छहों खंडके धनी, इन गति छेदक देव जजों अद्भुत गुनी ॥

ॐ ह्रीं द्वादशचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

दोहा— नव तिरखंडी जे भये, भूप महा बलवान । काय छांड परगति भये, या गति छेद निदान ॥

ॐ ह्रीं नवकेशव-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

चौपई–श्री श्रेयांश जिन वारै भये, नाम त्रिपृष्ट त्रिखंडी भये । तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांशजिनत्रिपृष्ठिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

वासुपूज्य जिन वारै सोय, नारायण द्विपृष्ट है जोय । तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद भये भगवान ॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्य जिनवरसमये द्विपृष्टनारायण गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

विमलनाथ जिनवारै भया, केशवनाम स्वयम्भू दया । तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद भये भगवान ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथसमये स्वम्भूनामनारायण गति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

श्री अनन्त के समये सही, पुरुषोत्तम त्रिखंडि जयमही । तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथसमये पुरुषोत्तमनारायण गति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

धर्मनाथ जिन वारै सोय, पुरुष सिंह तिरखंडी होय । तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथसमये पुरुषसिंह नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

अरह मल्लि जिन अन्तर मांहि, पुरुषपुण्डरिक केशव थाहि । तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं अरह मल्लि अन्तराले पुरुषपुंडरीकनाम नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

मुनिसुव्रत मल्लि जिन ठोर, पुरुषदत्त नारायण जोर । तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत मल्लिचान्तराले पुरुषदत्तनाम नारायणगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

मुनिसुव्रतनमि अन्तर होय, नारायण केशव तहां जोय। तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत नमिअन्तराले लक्ष्मणनाम नारायण गति छेद जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

नेमिनाथ के समये सही, कृष्णनाम नारायण ठही। तीन खंड नायक बलवान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथ समये श्रीकृष्णनाम नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

सोरठा— येही नव नाराण, तीन खंड स्वामी भये। इन गति छेदक जानि, जजों तासु पद देव के ॥

ॐ ह्रीं नवत्रिखंडीकेशव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

चौपई—विजय नाम हलधर बलवान, भये त्रिपृष्ट समय गुणवान। हल मूसल आयुध तिन पास, इन गति छेद जजों गुणरास ॥

ॐ ह्रीं विजयनाम बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

अचल नाम हलधर नर ईश, द्वि पृष्ट समय सुख दीस। हल मूसल आयुध तिन पास, इन गति छेद जजों गुणरास ॥

ॐ ह्रीं अचलनाम हलधर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

है बलभद्रजु नाम सुधर्म, भये स्वयंभू समय सुकर्म। हल मूसल आयुध तिन पास, इन गति छेद जजों गुण रास ॥

ॐ ह्रीं सुधर्म नाम बलभद्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

सुप्रभ नामक हलधर सोय, पुरुषोत्तम समय में होय। हल मूसल आयुध तिन पास, इन गति छेद जजों गुण रास ॥

ॐ ह्रीं सुप्रभ नाम बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

सुदर्शन नामक हलधर जान, पुरुष सिंह वारै गुणखान। हल मूसल आयुध तिन पास, इन गतिछेद जजों गुणरास ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन नाम बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

नंदीनाम हलधर जोय पुंडरीकपुर वारै होय। हलमूसल आयुध तिन पास, या गति छेद जजों गुणरास ॥

ॐ ह्रीं नदीनामक बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

नंदि मित्र बलभद्र सु जोय, पुरुष दत्त के वारै होय। हल मूसल आयुध तिन पास, इन गति छेद जजों गुणरास ॥

ॐ ह्रीं नदीमित्र नामक बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

रामचन्द्र हलधर नरराय , नारायण के समय सु थाय । हल मूसल आयुध तिन पास, इन गति छेद जजों गुणरास ॥

ॐ ह्रीं रामचन्द्र नामक बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

पदम नाम बलभदर जान, कृष्णदेव के समये आन । हल मूसल आयुध तिन पास, इन गति छेद जजों गुणरास ॥

ॐ ह्रीं पद्मनाम बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

छंद अडिल्ल—

येही नव बलभद्र महा बलवान हैं, नव ही केशव समय भये हैं थान हैं ।
छांडि काय शिव जाय तथा सुर लोकजी, इन गति छेदक देव जजों सुख थोक जी ॥

ॐ ह्री नव बलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३४ ॥

अश्वग्रीव प्रतिनारायण बलवान है, सोलह सहस सुनारि घने गुण जान हैं ।
नारायण कर मोत पाय पर गति लहै, या गति छेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं अश्वग्रीव प्रतिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

तारक है तसु नाम जासु प्रति हर तनो, जग पालत ज्यों मात पिता हितकर गिनो ।
नारायण कर मोत पाय परगति लहै, या गति छेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं तारक प्रतिनारायण गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

मेरक है तसु नाम सु प्रतिहर को सही, पुण्य जोगतें भये त्रिखंडी नृप मही ।
नारायण कर मोत पाय पर गति लहै, या गतिछेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं मेरक नाम प्रतिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

नाम निशुम्भ जु प्रतिनारायण जानिये, महा पुण्य परताब तेज युत मानिये ।
नारायण कर मोतपाय परगति लहै, या गतिछेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं निशुंभनाम प्रतिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥

मधुकैटभ है नाम प्रतिहर को सही, अपने पौरूष आगे जीती सब मही ।

छंद अडिल्ल— नारायण कर मोत पाय परगति लहै, या गतिछेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं मधु कैटभ नाम प्रति नारायण गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

नाम तासु बलि जान प्रतिनारायण को, सुर सब राखै विनय तिन्हों कीं बाण को ।
नारायण कर मोत पाय परगति लहै, या गति छेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं बलि नाम प्रतिनारायण गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

प्रति हरि प्रहरण कहा तासु का नाम है, योवन विद्या बुद्धि कला को धाम है ।
नारायण कर मोत पाय परगति लहै, या गति छेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं प्रहरणनाम प्रतिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

रावण ताको नाम प्रतिहरि है सही, राक्षस है तिस वंश रूप महिमा लही ।
नारायण कर मोत पाय परगति लहै, या गति छेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं रावणनामक प्रतिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

जरासिंध प्रतिनारायण जानों सही, कृष्णदेवतें महायुद्ध तानें ठही ।
नारायण कर मोत पाय परगति लहै, या गति छेदक देव जजों सब अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं जरासिंधप्रतिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४३ ॥

छंद जोगीरासा—अश्वग्रीव तारक है मेरक, और निशुम्भ सु जानो । मधुकैटभ बलि है प्रहैरण, रावण नाम बखानो ॥
ये तो आठ खगां प्रतिहरि हैं, जरासिंध खग नाहीं । इन गति छेद भये शिव नायक, जिन पद पूज करांही ॥

ॐ ह्रीं प्रतिनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

॥ नव नारद गतिछेदक अर्घ ॥

चौपाई—हरि त्रिपृष्ट के समय मझार, भीम नाम नारद मनधार । या गति छेद भये भवपार, इन पद जजे मिटै भव भार ॥

ॐ ह्रीं भीम नाम प्रथम नारद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

हरि द्विपृष्ट के वारै भये, नारद महाभीम जे थये । या गति छेद भये भव तार, इन पद जजे मिटै भवभार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय महाभीमनाम नारद गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

स्वयंभु नारायण के समै, रुद्र नाम नारद शुभ रमै । या गति छेद भये भवतार, इन पद जजे मिटे भव भार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय रुद्रनाम नारद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

पुरुषोत्तम हरि समये मांहि, महा रुद्र नारद मन लाहिं । या गति छेद भये भव पार, इन पद जजे मिटै भव भार ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ महारुद्रनामक नारद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

पुरुषसिंह हरि समय मझार, काल नाम नारद को सार । या गति छेद भये भव पार, इन पद जजे मिटै भव भार ॥

ॐ ह्रीं काल नाम पचम नारद गति छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पुरुष पुण्डरिक हरि के काल, नारद भये नाम महा काल । या गति छेद भये भव पार, इन पद जजे मिटै भव भार ॥

ॐ ह्री पष्ठम महाकालनामक नारद–गतिछेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

पुरुषदत्त नारायण भये, तब ही दुर्मुख नारद थये । या गति छेद भये भव पार, इन पद जजे मिटै भव भार ॥

ॐ ह्रीं सप्तमदुर्मुखनाम नारद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

नारायण नामक हरि भये, नरक मुखी नारद तब थये । या गति छेद भये भव पार. इन पद जजे मिटै भव भार ॥

ॐ ह्रीं अष्टमनरक मुखनाम नारद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

कृष्णदेव समये में भये, अधो मुखी नारद शुभ थये । या गति छेद भये भवपार, इन पद जजे मिटै भव भार ॥

ॐ ह्रीं नवम अधोमुखनाम नारद गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद गीता—भीम अरु महा भीम रुद्र रु, महारुद्रदत कालजी, महा काल दुरमुख नरकमुख है, अधोमुख गुणपालजी ।
यह नवों नारद कलह मूली, मान के सागर सही, इन गति छेदक देव के पद, जजे फल शिव सुर मही ॥

ॐ ह्रीं नवनारद गति छेदक जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ ग्यारह रुद्र गतिछेदक अर्घ ॥

आदिनाथ जिन समय मझार, भीमावलि रुद्र सुखकार। या गति छेद भये भव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं भीमावलिनाम रुद्रगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

अजितदेव वारै शुभ भये, रुद्रनाम जित शत्रु थये। या गति छेद भये भव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय जितशत्रुनाम गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

पुष्पदन्त जिन समय मझार, रुद्रनाम ही रुद्र सुधार। या गति छेद भये भव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं तृतीयरुद्रनाम रुद्रगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

शीतल जिन वारे में भये, नयन विशाल रुद्र उपजये। या गतिछेद भये भव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश।

ॐ ह्रीं विशाल नयन चतुर्थ रुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

श्री श्रेयांश जिन वारै भये, सुप्रतिष्ठ रुद्र शुभ थये। या गतिछेद भये भव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं पंचम सुप्रतिष्ठ नामरूद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

वासुपूज्य जिन समय मझार, अचल नाम रूद्र अति सार। या गति छेदभये भव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं षष्ठम अचल नाम रुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

विमलदेव जिन वारै सोय, पुंडरीक रूद्र अवलोय। या गति छेदभये शिवईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं पुंडरीक नामरुद्र ग..छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

अनंतनाथ जिन वारै सही, अजितंजयरुद्र उपजई। या गति छेद भये शिव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं अष्टम अजितंजय नामरुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८ ॥

धर्मनाथ जिन समय्रे जोय, जितनामी रुद्र तहँ होय। या गति छेद भये भव ईश, तिन पद अर्घ जजो नय शीश ॥

ॐ ह्रीं नवम जित नामरुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

शान्तिनाथ समय बिच भये, पीठ नामरुद्र जो थये। या गतिछेद भये शिव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं दशम पीठ नामरुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

महावीर बारै जो भाय, सत्यक तनय रुद्र कहाय। या गति छेद भये शिव ईश, तिन पद अर्घ जजों नय शीश ॥

ॐ ह्रीं एकादशम सत्यकिजः नामरुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

छंद अडिल्ल— जा जिन के बारे में जे रुद्दर भये, तिन तन के सब नाम खोल यामें दिये ॥
मिश्र जोगतें उतपति इनकी जानिये, इन गतिछेदक देव जजों उर आनिये ॥

ॐ ह्रीं एकादश रुद्र गति छेदक जिनेभ्यो महार्घं ॥ १२ ॥

॥ सर्व त्रेसठ शलाका

चौपाई–जिन चौबीस जगत के नाथ, द्वादश चक्री बहु गुण साथ। नव हरि नव प्रतिहरि नव हली, ये त्रेसठजन बहु गुण बली ॥१॥
नव नारद कलह को लाल, एकादश रूद्दर सुख चाल। कामदेव चौबीस सुजान, चौदह कुलकर अति गुण खान ॥२॥
वीस चार जिन माता सती, अरु चौबीस पिता जिन पती। ये इकसो उनहत्तर जोय, जीव ऊंच पद धारक सोय ॥ ३ ॥
अब जिनन्द चौबीसों तने, वंश कहूं जो आगम भने। जा जा वंश विषै जिन सोय, सो ही विधि भाषूं अवलोय ॥ ४ ॥

सवैया ३१— महावीर नाथ वंशी पार्श्व जिन उग्रवंशी, मुनिसुव्रत नेमि हरि वंश मांहि जानिये।
धर्म कुंथ अर एव तीन जिन राज देव, कहे कुरु वंश नभ मांहि रवि मानिये ॥
बाकी जिनराज देव सप्तदश कहे सो तो, सब इक्ष्वाकुवंश मांहि मन आनिये।
ऐसे पंच थोक वंश तामें देव सबै जान, कुल के उजागर श्योनायक समानिये ॥ ५ ॥

दोहा— ऐसे कुल चौबीस की, कथा कही मनलाय, और उन्हैत्तरि एकसौ, जीव थान बतलाय ॥ ६ ॥
इन गति छेदक देव जो, सो सब जिय हितकार, तातैं द्रव्य मिलाय वसु, जजों पॉय जिन सार ॥

ॐ ह्रीं त्रिषष्ठिशलाकापुरुषसम्बन्धिएकोनसप्ततिः शतैक च गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

॥ जम्बूद्वीप सम्बन्धी अतीत चतुर्विंशति पूजा ॥

अब चौबीस अतीत जे, होय गये भगवान। तिनकी थुति मन वच करों, मोहि देहु तुम ज्ञान ॥ १ ॥

तिनकी भक्ति प्रभावतें, वहुते अधम तिराय। इम सुनि यश या भवन में, मैं विनऊं थुति लाय ॥ २ ॥
तुम प्रभु तारन अधम के, मो सम अधम न कोय। तार मोहि विनती करों, और न जाचन कोय ॥ ३ ॥
पतित उधारन हो प्रभो, मैं पतीत अति देव। तार तार विनती करूं, कै भो-भो दे सेव ॥ ४ ॥
अशरण को तुम शरण हो, हो अनाथ के नाथ। मैं अशरन विन नाथ हूँ, भक्ति देहु मोहि साथ ॥ ५ ॥

॥ इति भक्ति ॥

॥ स्थापना ॥

छंद अडिल्ल—

होय गये जिन चार वीस आगे सही, तिन इन मुख वच सुने धन्य ते नर कही॥
हम तो भावन भाय पूजने कारनै, करि है इह आह्वान अरज इम इम सुनै ॥

ॐ ह्रीं अतीतकालचतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर संवौषट् (आह्वाननम्)
ॐ ह्रीं अतीतकाल चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अतीतकाल चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधि करणम्।

छंद अडिल्ल—

गंगा निरमल जसो जल लाइयो, कनक झारिका धार भक्ति मन लाइयो।
होय गये जिन बीसचार जिनपद जजों, जनम जरा मृतु रोग नास फलतें तजों ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र सबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं० ॥ १ ॥

चंदन घसि शुभ नीर भली वहु गंध मई, रतन रकेवी थारि लाइयो थुति चई।
होय गये जिन बीस चारि जिन पद जजों, ताफल भव आताप आपने सब तजों ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरत क्षेत्र सबधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चंदन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल खंड विना मोती समां, ले अपने कर भक्ति भाव आनँद रमा।
होय गये जिन बीसचार तिन पद सही, पूजों ता फल होय अखयपद की मही ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र सबधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल देवद्रुम तने भ्रमर शोभा लये, गंध घनी के धार रंग महिमा ठये।
होय गये जिन बीस चार तिन पद सही, पूजे मदन नशाय भाव समता ठई ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

पूरण पट् रस मेल चारु चरु लाइयो, कनक पात्र में थाल भले गुण गाइयो।
होय गये जिन बीस चार तिन पद सही, ता फल अपनी व्याधि भूख सारी दही ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि अतीत काल चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

रतन दीप बहु लाय सकल तम के हरा, कनक थाल में भक्ति भाव कर सब भरा।
होय गये जिन बीस चार तिन पद जजों, ता फल अपने मोह तिमिर सब ही तजो ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

धूप घनी गँध धार सार दश विधि सही, खेऊं वह्नि मांहि हरष उर में थही।
होय गये जिन बीस चार जिन पद जजों, ता फल कर्म जलाय छार सम कर तजों ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी जानिये, पिस्ता आदिक भले भले फल आनिये।
होय गये जिन बीस चार तिन पद जजों, ता फल शिव फल होय सकल अघको तजों ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु लाइये, दीप धूप फल अर्घ बनाकर ध्याइये।
होय गये जिन चार बीस तिन पद जजों, ता फल भव दुख सबै आपने अघ तजों ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

जंबू भरत मझार हो गये जिन सही, बीस चार जग पूज जजैं हो शिव मही।
तातैं वसु द्रव लाय अर्घ कीना भली, पूजों मैं जिन राज अतीते थिति रली ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घं ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घाणि

चौपाई—जिन निर्वाणनाथ सुख दाय, होय गये इस खेतर मांहि। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि श्रीनिर्वाण अतीतजिनाय अर्घम् ॥ १ ॥

सागर नाम देव जो सही, होय गये इस खेतर मही। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्र सम्बन्धि सगर अतीत जिनाय अर्घम् ॥ २ ॥

महा साधु नाम जिन देव, होय गये इस क्षेतर एव। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्र सम्बन्धि महासाधुनाम अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

विमल प्रभू नामा जिन सोय, होय गये भरत हि में जोय। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्र सम्बन्धि विमलप्रभनाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

शुद्ध भाव नामा जिन सही, होय गये इस खेतर मही। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि शुद्धप्रभ नाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ ५ ॥

श्रीधर नाम देव जिन सोय, होय गये इस क्षेतर जोय। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि श्रीधरनाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ ६ ॥

दत्तनाम जिनदेव महान, होय गये भारत के थान। तिनके पदमें अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि दत्तनाथ अतीत जिनाय अर्घम् ॥ ७ ॥

अमल प्रभ नामा जिन सोय, होय गये, भारत में जोय। तिनके पद में अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि अमलप्रभ नाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ ८ ॥

अगनिनाथ नामा जिनदेव, होय गये भारत में जेव। तिनके पद में अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि अग्निनाथ नाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ १० ॥

संजयनाम महा जिन सोय, होय गये भारत में जोय। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि सयमनाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ ११ ॥

पुष्पांजलि नामा जिनदेव, होय गये भारत में एव । तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि पुष्पांजलिनाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ १२ ॥

शिवगण नाम नाम जिन देव, होय गये भारत में एव। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि शिवगणनाम अतीत जिनाय अर्घम् ॥ १३ ॥

उचसाह नामा परमेश, होय गये भारत के देश तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रसम्बन्धि उत्तसाहनामअतीत जिनाय अर्घम् ॥ १४ ॥

ज्ञान नेत्र तीर्थंकर सही, होय गये भारत के मही। तिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि ज्ञाननेत्र अतीत जिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

परमेश्वर नामा भगवान, होय गये भारत के थान। तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संवधि परमेश्वर नाम अतीत जिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

विमलेश्वर नामा भगवान, होय गये भारत के थान। तिन के पद ये अर्घ चढाय पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जवूद्वीप भरतक्षेत्र सबधि विमलेश्वर नाम अतीत जिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

नाम जथारथ देव जिनेश, होय गये भारत के देश। तिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संवधि यथार्थ देव अतीत काल जिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

नाम यशोधर जिन वर देव, होय गये भारत में तेव। तिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जवूद्वीप भरतक्षेत्र संवंधि यशोधर नाम अतीत जिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

कृष्ण देव सब जग हितकार, होय गये भारत में सार। तिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र सवधि कृष्णमति नाम अतीत जिनाय अर्घं ॥ २० ॥

नाम ज्ञान मति देव महान, होय गये भारत के थान। तिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरतक्षेत्र संबंधि ज्ञानमति अतीत जिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

नाम विशुद्ध मती जिन जोय, होय गये भारत में सोय। तिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरत क्षेत्र संबंधि विशुद्धमतिनाम अतीत जिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

श्री भद्र नामा जिन सही, होय गये भारत के मही। जिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरत क्षेत्र संबंधि श्रीभद्र अतीत जिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

शान्ति युक्त नामा जिन देव, होय गये भारत में तेव। तिन के पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरत क्षेत्र संबधि शान्तियुक्ति नाम अतीत जिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

छंद अडिल्ल— देव जिनेश्वर भये अतीत जु काल में, बीस चार जग पाल नवों तिन भाल मैं।
यही भक्ति के तार शरण मोकों रहो, अर्घ जजों तिन पांय पाप मेरे दहो ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप भरत क्षेत्र संबंधि अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

जयमाला

दोहा— जिन चौबीस अतीत जे, होय गये भगवान। तिन पद पूजे सुख मिले, तिन ही सों वर थान ॥ १ ॥

छंद–चेसरी

जय निर्वाण नाथ जिन देवा, तुम सेवा निरवाय सुख मेवा। सागर जिन सेवो मन भाई, तो सागर सम सुख उपजाई ॥२॥
महा साधु जिन के पद सेवो, तो भवि महा साधु पद लेवो। विमल प्रभ जिन जे गुण गासी, सो जिय विमल होय शिव जासी ॥३॥
शुद्ध भाव जिन के गुण गावे, सो भवि ज्ञान सुधा रस पावे। श्रीधर जिन को जो जिय सेवै, सो शिव नारि तनो सुख पेवै ॥४॥
दत्तनाथ जिन के पद ध्यावो, दत्त सु नाथ तनो पद पावो। अमल प्रभ सेवा जे ठाने, सो जिय अमल ज्ञान फल आने ॥५॥
उद्धर जिनकी जो थुति ठानै, जो जग ते उद्धरनो आनै। अग्नि नाथ के जो गुण गावै, सो जिय अग्नि ध्यान उपजावे ॥६॥
संयम जिन के जो पद सेवै, सो जिय संयम शुध पद लेवै। पुष्पांजलि जिन को जो ध्यावै, पुष्प थकी जिन पूजा पावै ॥७॥

शिवगण जिन के जो गुण गासी, सो जिय शिव गुण को फल पासी । उत्तसाह प्रभु के गुण गावो, तो उत्कृष्ट पूज पद पावो ॥८॥
ज्ञान नेत्र जिन गुण जो गासी, सो जिय केवल ज्ञान उपासी । परमेश्वर जिन के पद ध्याऊं, ता फल परमेश्वर पद पाऊं ॥९॥
विमलेश्वर जिन ध्यान करावै, सो भवि विमल आप हो जावे । नाम यथारथ जिन गुण सेवो, थान जथारथ को सुख लेवो ॥१०॥
नाम जसोधर जिन पद सेवै, सो भवि जग जश ले सुख वेवै । कृष्ण देव प्रभु को पद ध्यावो, तो सबही कारज सिध लावो ॥११॥
नाम ज्ञान मति जिन मन आने, सो भवि ज्ञान पाय जस ठाने । जो विशुद्ध मति जिन ढिग आवै, सो विशुद्ध मति को फल पावे ॥१२॥
जिन श्री भद्र शरण ते आसी सो जिय मोक्ष सिरी फल पासी । शान्ति युक्त जिन सेवे सोहीं, सो जिय मोक्ष युक्त पद होही ॥१३॥

दोहा— ऐसे जिन चौबीस जे, भये महा शुभ कार । तिन पद अर्घ जजों सही, मोको हो सुखकार ॥

ॐ ह्रीं अतीतकाल चतुर्विंशति जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घम् ॥ १४ ॥

॥ अनागत काल चतुर्विंशति जिनपूजा ॥

सोरठा— आगामी जिन राज, वीस चार जिन होहिंगे । ते पूजों मन लाय, मेरे भव दुख को हरो ॥१॥
ये चौबीसों देव, अधम उधारन मैं सुनों । मैं करिहों इन सेव, मोसो अधम न और है ॥२॥
ये जिन पतित उधार, मैं भी पतित सुजिन वरा । मोकों भवतैं तार, और न वांछा है प्रभो ॥३॥
तुम जिन दीन दयाल, दीन और मोसो नहीं । मेरी कर प्रतिपाल, भव दुख मेटो जगत गुरु ॥४॥
भक्ति तिहारी देव सब ही को सुख दाय है । तातैं शरण कहेव, तार तार प्रभु वीनऊं ॥५॥

॥ इति भक्ति ॥ (पुस्पांजलिं क्षिपेत्)

॥ स्थापना ॥

दोहा— पद्मनाभि जिन आदि दे, अनंत वीर्य पर्यंत । आगामी चौबीस जिन, जजों थापि यहाँ संत ॥

ॐ ह्रीं अनागतकाले पद्मनाभि आदि अनत वीर्य पर्यंत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौपट् ।
ॐ ह्रीं अनागतकाले पद्मनाभि आदि अनंत वीर्य पर्यंत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अनागतकाले पद्मनाभि अनंत वीर्य पर्यंत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अत्र मम सन्निधौसन्निधिकरणम् ।

छंद–बेसरी

निरमल जल गंगा तैं आऊं, आगामी जिन चरन चढाऊं। ता फल जनम जरा मृत्यु नाशै, लोक तास मकर सम भापै ॥

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन मलयागिर घन लाऊं, आगामी जिन चरण चढाऊं। भव आताप तास फल जावे, निर आकुलता सुख को पावे ॥

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चदनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल खंड बिन लाऊं, आगामी जिन चरण चढाऊं। ता फल हो अक्षय पद भाई, क्षय होने की रीति मिटाई ॥

ॐ ॐ अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

कल्पद्रुम से फूल सु लाऊं, आगामी जिन चरण चढाऊं। ता फल कामनाश होजावे, तब ही ब्रह्मचर्य मन आवे ॥

ॐ ह्रीं अनागतचतुर्विंशति जिनेभ्यों पुष्पम् ॥ ४ ॥

नाना रस मय चरु ले आऊं, आगामी जिन चरण चढाऊं। ता फल भूख सभी नश जावे, तब निरमल निर वांछित थावे।

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतन जिस्यो कर लाऊं आगामी जिन चरण चढाऊं। ता फल मिथ्यातम क्षय होई, तब सम्यक परकाशै सोई ॥

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप भली दश विधि करलाऊं, आगामी जिन चरण चढाऊं। ताफल सकल ध्यान उपजावे, तामें कर्म काठ क्षय पावे ॥

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल आदि सुभग फल लाऊं, आगामी जिन चरन चढाऊं। ता फल मोक्षथान फल होई, जामन मरन फेर नहहिं कोई ॥

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल आदिक वसु द्रव्य मिलाऊं, आगामी जिन चरन चढाऊं। ता फल मोक्ष पूज्य पद पावे, भव भरमन को फिर नहिं आवे ॥

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल— जंबू भरत के मांहि होहिगें अब सही, पद्मनाभि जिन आदि वीस चव इस मही।
तिन पद मन वच काय पूज्य ठानौं भली, ताफल मेरी सकल पापपरणति टली ॥

ॐ ह्रीं अनागन चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घाणि ॥

दोहा— आवत चौबीसी विषै, पद्मनाभि जिन देव। तिन पद मन वच काय शुभ, अरघ करों कर सेव ॥

ॐ ह्रीं अनागत पद्मनाभि जिनाय अर्घम् ॥ १ ॥

आवत चोवीसी विषै होय प्रभु सुरदेव, तिन पद मन वच काय शुभ, अर्घ जजों कर सेव ॥

ॐ ह्रीं अनागत सुरदेव जिनाय अर्घम् ॥ २ ॥

आवत चौबीसी विषै, होवें सुप्रभ देव, तिन पद मन वच काय शुभ, अर्घ जजों कर सेव ॥

ॐ ह्रीं अनागत सुप्रभ जिनाय अर्घम् ॥ २ ॥

आवत चौबीसी विषै होय स्वयं प्रभ देव, तिन पद मन वच काय शुभ, अर्घ जजों कर सेव ॥

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभ जिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

चौपई—सरवातम जिनवर को नाम, पूजे मिटे पाप दुख ठाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अनागत सर्वात्म (सर्वायुध) जिनाय अर्घम् ॥ ५ ॥

देवपुत्र जिनवर को नाम, तिन पूजे पावै सुख ठाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अनागत देवपुत्र जिनाय अर्घम् ॥ ६ ॥

कुलपुत्र जिनवर को नाम, ताहि जपे पावे सुख ठाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अनागत कुलपुत्र देव जिनाय अर्घम् ॥ ७ ॥

नाम उदंक जिनेश्वर तनो, ता पूजे अघ सुख तें अनो-। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अनागत उदंकजिनाय अर्घम् ॥ ८ ॥

प्रोष्टलनाम है जिन तनो, नाम लेत तिस निज अघ हनो। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं अनागत प्रोष्टल जिनाय अर्घम् ॥ ९ ॥

जयकीरति जिनवर को नाम, तिन सेयां अति सुख को ठाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अनागत जयकीर्तिजिनाय अर्घम् ॥ १० ॥

पूर्णबुद्ध जिनजी को नाम, तिन सेवा अति सुख को ठाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अनागत पूर्णबुद्ध जिनाय अर्घम् ॥ ११ ॥

अरहनाथ जिनवर को सही, सेवातें पावै शिव मही। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य अरहनाथजिनाय अर्घम् ॥ १२ ॥

निःपाप जिनजी को नाम, सेवातें टूटें अघ धाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य निःपाप जिनाय अर्घम् ॥ १३ ॥

निःकषाय जिनजी को नाम, दीनदयाल पाल गुण ठाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य निःकषाय जिनाय अर्घम् ॥ १४ ॥

विपुलनाम जिनवर को सही, सेवातें पावै शिव मही। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य विपुलमतिजिनाय अर्घम् ॥ १५ ॥

निरमलनाम जिनेश्वर तनों, सेवातें जानै अघ हनो। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य निरमल जिनाय अर्घम् ॥ १६ ॥

चित्रगुप्त प्रभुजी को नाम, सेवो भवि, पावो शिव ठाम। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य चित्रगुप्तजिनाय अर्घम् ॥ १७ ॥

गुप्त समाधि जिनेश्वर सही, तिनको ध्यावो भवि शुध मही। आगम चौबीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य समाधि गुप्तजिनाय अर्घम् ॥ १८ ॥

नाम स्वयंप्रभ देव जिनेश, मूरति शान्ति महा शुभ भेष। आगम चौवीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य स्वयप्रभ जिनाय अर्घम् ॥ १९ ॥

अनिवृत्त जिनजी को नाम, सेवत होय ज्ञान उर ठाम। आगम चौवीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य अनिवृत्तजिनाय अर्घम् ॥ २० ॥

जयनामा भगवन को नाम, ध्यावो भवि पावो सुख धाम। आगम चौवीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य जयनाम जिनाय अर्घम् ॥ २१ ॥

नाम विमल जिन सहित तनों, ध्याये होय ज्ञान उर घनो। आगम चौवीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य विमलनाम जिनाय अर्घम् ॥ २२ ॥

देवपाल त्रिभुवन भगवान, पावैंगे सुध केवलज्ञान। आगम चौवीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य देवपाल जिनाय अर्घम् ॥ २३ ॥

नाम अनन्त वीर्य भगवान, ध्याये भवि पावे शुभ ज्ञान। आगम चौवीसी में होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भविष्यत्कालस्य अनन्तवीर्य जिनाय अर्घम् ॥ २४ ॥

छंद अडिल्ल—

पद्मनाम जिन आदि और जिन जानिये, अनन्तवीर्य पर्यन्त महा सुख थानिये।
बीस चार जिन देव होहिंगे अब सही, ते पूजों वसु द्रव्य थकी फल सुखमही ॥

ॐ ह्रीं अनागत पद्मनाम आदि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घम् ॥ २५ ॥

॥ आगामी कालके कुलकर गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई—कनकनाम कुलकर को जान, आगे होंगे अब सुख धाम। याकी गति हरि शिवको गये, ता पद हम निज शिरको नये ॥

ॐ ह्रीं अनागत कनकनाम कुलकर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

कनक प्रभ कुलकर को नाम, अगले काल होहिंगे जाम , याकी गति हरि शिव को गये, ता पद हम निज शिरको नये ॥

ॐ ह्रीं अनागत कनकप्रभनामकुलकरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

कनक राज कुलकर जे सही, अगले काल हौहिंगे कही । याकी गति हरि शिवको गये, ता पद हम निज शिरको नये ॥

ॐ ह्रीं अनागतकनकराज कुलकरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

कुलकर नाम कनकध्वज सही, आगम काल होय इम कही । याकी गति हरि शिव को जाय, ता पद हम ये अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकनकध्वजनामकुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

कनकपुङ्गव कुलकर सही, आगम काल होय इस मही । या की गति हरि शिव को जाय, ता पद पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकनकपुंगवनामकुलकरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

नलिननाम कुलकर को सही, आगम काल होय इस मही । सो गति छेद होय भव पार, तिन पद पूजों अर्घ सुधार ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि नलिननाम कुलकरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

नलिन प्रभ कुलकर को सही, आगमकाल होय इम कही । सो गति छेद होय शिवराय, तिन यद पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धिनलिनप्रभ नाम कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

नलिन राज कुलकर है सही, आगम काल होय इम कही । या गति छेद शुद्ध पद पाय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धिनलिनराज कुलकरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

नलिनध्वज कुलकर को नांम, आगमकाल होय सुख धाम । या गति छेद होय शिव राय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागत कालसम्बन्धि नलिनराज कुलकरगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

नलिन पुंगव कुलकर को नाम, आगम काल होय सुख धाम । या गति छेद होय शिव राय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागत कालसंबंधि नलिन पुंगव नाम कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

पदम नाम कुल कर को सही, आगम काल होय इम कही । सो गति छेद होय शिवराय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि पद्मनामकुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

पद्मप्रभ कुलकर को नाम, आगमकाल होय सुख धाम। सो गति छेद होय शिवराय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्री अनागतकालसम्बन्धि पद्मप्रभ कुलकरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

पद्मध्वज कुलकर को नाम, आगमकाल होय सुखधाम। सो गति छेद होय शिवराय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि पद्मध्वजनाम कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१३॥

पदम पुङ्गवै कुलकर नाम, आगमकाल होय सुख धाम। सो गति छेद होय शिवराय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि पद्मपुङ्गवनाम कुलकरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १४ ॥

महापद्म कुलकर को नाम, आगमकाल होय सुख धाम। सो गति छेद होय शिव राय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि महापद्मनाम कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

पद्म पद्म कुलकर बुध धार, आगमकाल होय सुखकार। सो गति छेद होय शिवराय, तिन पद हम शुभ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि पद्मपद्मकुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छंद अडिल्ल—

ऐसे षोडश कुलकर उपजेंगे सही, आवतकाल मझार महासुख की मही।
कर्म कार्यके ज्ञाता षोडश ये कहे, इन गति छेदक देव जजों मन वच ठहे ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि षोडश कुलकर गतिछेदक जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १७ ॥

॥ अनागतकाल चक्री गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—भरत नाम चक्री को सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि भरतचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

दीरघदंत चक्रि अब सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि दीर्घदन्तनामचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

मुक्तदंत चक्री जो सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धिमुक्तदन्तचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

गूढ़ दन्त चक्री जो सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि गूढदन्तचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

श्रीयपेण पटखंडी सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि श्रीपेणनामचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

श्रीय भूत चक्री जे सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि श्रीभूतनामचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

श्रीयकान्त चक्री जो सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि श्रीकान्तनामचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

पदमनाम चक्री को सही, आगम काल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि पद्मनामचक्रीगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

महा पदम चक्री जो सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकाल सम्बन्धि महापद्मनाम चक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

चित्र वाहन चक्री को नाम आगम काल होय इस ठाम। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि चित्रवाहननाम चक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

विमल वाहन चक्री को नाम, आगमकाल होय इस ठाम। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि विमलवाहननामचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

अरिष्ट सेन चक्री को नाम, आगम काल होय इस ठाम। या गति छेद होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धि अरिष्टसेननाम चक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

छंद अडिल्ल—

भरत आदि अरिष्ट सेन तक जानिये, द्वादश चक्री होय महाबल खानिये।
आगमकाल विषै अब होंगे धीरजी, तिन गति छेदक देव जजे भव तीरजी ॥

ॐ ह्रीं अनागतकालसम्बन्धिद्वादशचक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

॥ भविष्यत्काल सम्बन्धी नारायणगतिछेदक अर्घ ॥

चौपई–नन्दी नाम त्रिखंडी सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय जिननाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहार नन्दीनाम नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

नन्दषेण नारायण सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय शिवनाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहारनन्दषेणनाम नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

नन्दिमित्र नारायण सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय जिननाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहारनन्दिमित्रनाम नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

नंदभूत नारायण सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय जिन नाथ, जिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहार नन्दभूतनाम नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

अचल नाम नारायण सही, आगम काल होय इस मही। या गति छेद होय जिन नाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहारअचलनामनारायणगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

त्रिखंडी जु महानल सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय जिन नाथ, दिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहार महाबलनाम नारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

अति बल नाम त्रिखंडी सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय जिन नाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहार अतिबल नाम त्रिखंडी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

नाम त्रिपृष्ट त्रिखंडी सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय जिन नाथ, जिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहार त्रिपृष्टनामनारायण गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

द्विपृष्टनाम नारायण सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद होय शिवनाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहारद्विपृष्टनाम नारायणगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

श्रीचन्द्र वलभद्र सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद भये शिव नाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं होनहार श्रीचन्द्रनाम वलभद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल—
चन्द्र आदि श्रीचन्द्रतलक शुभ जानिये, ये नव हो वलभद्र महासुख मानिये।
आगमकाल मझार पुरुष ये होय हैं, इन गति छेदक देव जजे अघ खोय हैं ॥

ॐ ह्रीं होनहार नव वलभद्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ होनहार नव प्रति नारायण गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—श्रीकंठ प्रतिहर है सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद भये शिवराय, तिन पद अर्घ जजों शिर नाय ॥

ॐ ह्रीं होनहार श्रीकंठनाम प्रतिहर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

हरीकंठ है प्रतिहर सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद भये शिव राय, तिन पद अर्घ जजों शिरनाय ॥

ॐ ह्रीं हरिकठ नाम प्रतिहर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

अश्वकंठ है प्रतीहर सही, आगम काल होय इस मही। या गति छेद भये शिव राय, तिन पद अर्घ जजों शिरनाय ॥

ॐ ह्रीं होनहार अश्वकण्ठनाम प्रतिहर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

नाम सुकंठ प्रतिहर सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद भये शिवराय, तिन पद अर्घ जजों शिरनाय ॥

ॐ ह्रीं होनहार सुकठनाम प्रतिहर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

शिखा कंठ प्रतिहर है सही, आगम काल होय इस मही। या गति छेद भये शिव राय, तिन पद अर्घ जजों शिरनाय ॥

ॐ ह्रीं होनहार शिखा कण्ठ-नाम प्रतिहर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५ ॥

अश्वग्रीव प्रतिहर जो सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद भये शिव राय, तिन पद अर्घ जजों शिरनाय ॥

ॐ ह्रीं होनहार अश्वग्रीव नाम प्रतिहर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

हयग्रीव प्रतिहर जो सही, आगम काल होय इस मही। या गति छेद भये शिव राय, तिन पद अर्घ जजों शिर नाय ॥

ॐ ह्रीं होनहार हयग्रीवनाम प्रतिहर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७ ॥

मयूरग्रीव प्रतिहर जो सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद भये शिवराय, तिन पद अर्घ जजों शिरनाय ॥

ॐ ह्रीं होनहारमयूरग्रीवनाम प्रतिहर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

प्रतिहर नीलकंठ जो सही, आगमकाल होय इस मही। या गति छेद भये शिवराय, तिन पद अर्घ जजों शिर नाय ॥

ॐ ह्रीं होनहार नीलकठ प्रतिहर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल—

नव श्री कंठादिक प्रतिहर शुभ जानिये, आगम काल मझार होय अव जानिये।
इत्यादिक नव जीव पुरुष पदवी धरा, इन गतिछेदक देव जजे हो सुख खरा ॥

ॐ ह्रीं होनहार नवप्रतिहर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

नव हरि नव प्रति हरी हली नव जानिये, द्वादश चक्री चारवीस जिन मानिये।
ये त्रेसठ नर कहे सर्व उत्कृष्ट जी, तिन गति छेदक देव जजों सुख पुष्ट जी ॥

ॐ ह्रीं त्रिषष्ठिशलाका पुरुष गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

॥ पंचमकाल के अन्त में होने वाले चार धर्मीजीवों के गति छेदक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल—

इन्द्रराज तिस नाम अचारज जानिये, तिनके शिष्य वीरांगद मुनि वर मानिये।
ये पंचम के अन्त होय वृष धारजी, इन गति छेदक देव जजों मद हारजी ॥

ॐ ह्रीं पंचमकालान्ते वीरांगदनाम महामुनि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

सर्व श्री आर्य का सुधर्म की धार है, विनय सहित धर्म सेवित होसी सार है ॥
ये पंचम के अंत होय वृष धारजी, इन गति छेदक देव जजों मद टारजी ॥

ॐ ह्रीं पंचमकालान्ते सर्व श्री नाम आर्यका गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

नाम अगनिला श्रावक जिन वृष सेवको, होसी आगैं आय महादृढ देव को।
ये पंचम के अन्त होय वृष धारजी, इन गति छेदक देव जजों मद टारजी ॥

ॐ ह्रीं पंमच कालान्ते अग्निलनामश्रावकगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

पंगसेन तिस नाम श्राविका जानिये, धर्म जिनेश्वर सेवत अति सुख मानिये।
ये पंचम के अन्त होय वृष धारजी, इन गतिछेदक देव जजों मद टारजी ॥

ॐ ह्रीं पचमकालान्ते पग सेना नाम श्राविका गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

पंचम काल मझार धर्म के घातका, कल्की होवैं दुष्ट महा अति पातका।
नाम चतुर्मुख क्रूर धर्म नहिं पाइये, या गति छेदक देव जजों शिव जाइये ॥

ॐ ह्रीं पञ्चमकालान्ते चतुर्मुख नाम कल्की गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

नष्ट कालके अन्त होय वृष घातियो, जलमथ ताको नाम दुष्ट अति पातियो।
होसी कल्की धर्म तवैं नहिं पाइयो, या गति छेदक देव जजों शिव पाइयो ॥

ॐ ह्रीं पञ्चमकालान्ते जलमथनामकल्की गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

छठे काल के अन्त पवन अति होयजी, ताकी वेग मझार गिरा बहु होयगी।
भारी गिर भी सबै उडै ज्यों तुल सही, या गति छेदक देव जजों शिव की मही ॥

ॐ ह्रीं षष्ठकालान्ते पवन उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

चौपई—क्षार महा रस वर्षा जोय, तातैं सबै छार भू होय। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमकालान्ते क्षाररसवर्षायां उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

महा अगनि की वर्षा होय, सब ही भू रस जालै सोय। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमकालान्ते महा अग्निवर्षायां उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्। ९ ॥

अति ही शीत पड़ेगी सही, ताकी वेदन अति ही कही। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमकालान्ते अतिशीतवर्षाया उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

विषकी वर्षा होगी सही, तातैं सब ही विषमय ठही। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमकालान्ते विषवर्षायां उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

धूल तनी वर्षा अति जान, काल अन्त ह्वै अति दुख दान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं षष्टमकालान्ते धूलिवर्षायां उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

धूम तनी वर्षा अति जान, काल अंत होगी इम ठान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं षष्टमकालान्ते धूमवर्षायां उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

छंद गीतिका— पवन वर्षा चार रसकी, अगनि शीत रु विप सही, रज धूम वर्षा सात ये, सब सात सात दिनै कही।
गुणचास दिन लों होय दुखदा, फेर सुख वर्षा बनै। इन विषै उतपति छेद के पद, पूजतै निज अघहनै ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमकालान्ते सप्तप्रकार वर्षायां उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अघम् ॥ १४ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—आगामी त्रेसठ पुरुष, होय शलाका सोय। नाम माल तिन की कहै, कह्यो सकल अवलोय ॥ १ ॥

छंद वेसरी—पदम नाथ अब जिनवर होसी, सूर देव मेरे अघ खोसी। नाथ सुपार्श्व जगत के प्यारे, स्वयं प्रभू जिन मो अघ टारे ।२॥
सर्वातम जिनवर सुख दाई, देव पुत्र पूजों जिन भाई। कुल सु पुत्र जिनवर भगवानो, नाम उदंक जिनेश बखानो ॥ ३ ॥
प्रोष्टल नाम जजों जिन देवा,जय कीरति जिनकी शुभ सेवा। मुनिसुव्रत जिन भव दधि तारो,अरजिन देव सबै अघ टारो ॥४॥
है निःपाप नाम जिन केरो,निःकपाय जिन धर्म हि हेरो। विमल देव को नित शिरनाऊं,निरमल नामा जिनगुण गाऊं ॥५॥
चित्रगुप्त नाम जिन राजै,गुपत समाधि देव सुख काजै। स्वयंप्रभो जिन जग के तारा, अनिवृत्तक जिन सुख कर सारा॥६॥
जय नामा जिन जग जस लीनो,विमल देव जिन शिव रस भीनो। देव पाल जिनके गुण ध्याऊं,अनंतवीर्य नमों अघ ढाऊं ।७।
ये तो जिन चौबीसों भाई, तिन पद अर्घ जजों श्रुति लाई। फिर सुनि जो चक्री अब होसी,देव खगां तिनके पद जोसी ।८।
भरत प्रथम दीरघ रद दूजो, मुक्त दंत तें छः खंड धूजो। गूढदंत श्रीषेण बतायो, श्रीयभूत श्रीकांत सु नायो ॥९॥
पदम नाम चक्री को होई, महा पदम नवमों अवलोई। चित्र वहन दशमों चक्रीशा, विमल वहन पट खंड नरीशा ॥१०॥
अरीषेण अंत नृप नाथो, इन द्वादश चक्री को साथो। अब सुन वासुदेव नव होसी, नंदी नाम प्रथम सुख जोसी ॥११॥
नंदमित्र नंदसेन बखानो, नंदभूत अरि अचल सु मानो। नाम महाबल अति बल होई, फेर त्रिपृष्ट आठमों जोई ॥१२॥

नाम द्विपृष्ट अंत हरि होसी, तीन खंड के अति दुख खोसी। अब नव हलधर नाम सुनाऊं, चंद नाम पहले को गाऊं ।१३।
महाचंद्र चंदर धर जानो, हरि चंदर सिंह चंद्र सु मानो। हो वर चन्द्र पूर्ण चंद होसी, शुभ चंदर अष्टम अरि खोसी ॥१४॥
नवमों हरि चन्दर हरि होई, अब सुनि नव प्रतिहर अवलोई। श्रीकंठ हरिकंठ बतायो, अश्व कंठ सु कंठ सुहायो ॥१५॥
शिखीकंठ अश्वग्रीव बतायो, हयग्रीवी शिखि ग्रीवी गायो। इत्यादिक त्रेसठ नर जानो, इन गति हर पद अर्घ चढानो।१६।
दोहा—नर त्रेसठ अब होहिंगे, अगले काल मंझार। इन गति छेदक देव पद, जजों शीश कर धार ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो तथा भविष्यत् त्रिषष्टि शला का पुरुष गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं।

विशेष अर्घ

चौपई—जंबू भरत आर्य के मांहि, है खाडी उपदधि बतलाहि। यामैं उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जम्बूभरत आर्यखंड संबंधि उपसमुद्रे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

विजयारध की दक्षिण दिशा, पूर्व म्लेच्छ खंड वृष नशा। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रस्य विजयार्द्धस्य दक्षिणदिशायाः पूर्वम्लेच्छखंडे उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

विजयारध की दक्षिण दिशा. पश्चिम दिशा म्लेच्छ सु वसा। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रस्य विजयार्द्धस्य दक्षिणदिशाया' म्लेच्छखंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

सिद्ध क्षेत्र पूजा

दोहा—सिद्ध क्षेत्र जग ऊंच थल, कहे जगत के मांहि। नमों शीश कर लाय के, फिर जग फिरनो नांहि ॥ १ ॥
सिद्ध भए इन थान तें, जीव घने अघ छोरि। तातैं मैं शिर नाय हों, मन वच तन को मोरि ॥ २ ॥
नमों सिद्ध जिन क्षेत्र को, विनय सहित थुति लाय। सो जिय अघ रज धोय के, सिद्ध देव पद पाय ॥ ३ ॥
मिटै पाप सुमिरन किए, जजे होय शिव वीर। तातैं बहु थुति ठान के, जजैं क्षेत्र सिध तीर ॥ ४ ॥
जो पहुँचन की शक्ति है, सो पहुँचे तहं जाय। दीन शक्ति पहुँचे नहीं, मैं यहां भावन भाय ॥ ५ ॥ इति पुष्पांजलिं॥

स्थापना

छन्द अडिल्ल—

भरत क्षेत्र के बीच सिद्ध खेतर जिते, शुक्ल ध्यान कर मुनि वर निज कर्म हते।
सो खेतर इस जगह थापि मन लाय के, कर आह्वानन पूजों मन वच काय के ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि सिद्धक्षेत्र अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल-मुनयानंद

छंद लक्ष्मीवती—

नीर निरमल घनो लाय गंगा तनो, कनक झारी विषै भक्ति भावन घनो।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजिहों जन्म जर रोग नाशन कही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यः जलं ॥ १ ॥

चंदन घसि बावनो नीर निरमल थकी, घालि शुभ पात्र मन वचन तैं थुति ठकी।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि हों ताप भव रोग नाशन कही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्य· चंदन० ॥ २ ॥

ऊजले खंड बिन जान अक्षत महा, आपने हाथ ले भक्ति करना चहा।
भरत क्षेतर तने सिद्ध क्षेतर सही, पूजि पद होय फल अखय जिन धुनि कही ॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र संबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्य· अक्षतं ॥ ३॥

पुष्प सुर वृक्ष के लाय निज हाथजी, गंध बहु वर्ण शुभ रंग तिस माथजी।
भरत क्षेतर तने सिद्ध क्षेतर सही, पूजि फल काम का नाश हो धुनि कही ॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र सबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

घृत मिष्टान्न रस पूर तुरतै किया, घालि शुभ पात्र में हाथ अपने लिया।
भरत क्षेतर तने सिद्ध क्षेतर सही, पूजि फल भूख नाशै सकल इम कही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र सबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

सकल दीपन विषै दीप मणिमय भलो, कनक थाल धर कर आपने ले चलो।
भरत क्षेतर तने सिद्ध क्षेतर सही, पूजि फल नाश ह्वै मोह तम को मही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप दश विधि महा गंध दायक लई, अगनि में खेय मुख तें भली थुति ठई।
भरतक्षेत्र तने सिद्ध क्षेतर सही, पूजि फल कर्म दाहै लहै शिव मही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

दाख पिसता सिरीफल भले जानिये, लौंग खारक इनै आदि फल आनिये।
भरत क्षेतर तने सिद्ध क्षेतर सही, पूज फल मोक्ष हो यह जिन धुनि कही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो फल० ॥ ८ ॥

नीर चंदन अछत पुष्प चरु जोइये, दीप धूप फल तथा अर्घ संजोइये।
भरत क्षेतर तने सिद्ध क्षेतर सही, पूज फल नाश ह्वै पाप मल इम कही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

छंद हरिगीतिका—जिन थानतें वसु कर्म जारी, मोक्ष को प्रापति भये। सो थान ही बहु पुण्य दायक, सेवतें सब सुख लये।
इमि जानि मन वच काय शुध कर, पूजि हैं मन लायजी। ता फलें अविचल वास पावै, पुण्य को वरनाय जी ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो महार्घं ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घ

छंद जोगीरासा—अष्टापद गिरि तीरथ गायो, पाप हरन को थानो। यातैं आदि जिनेश आदि दे, शिव पाई ध्रुव थानो।
काल अनंत रहैं थिर थानक, फेर जनम नहिं होई। ऐसे लख सिध क्षेत्र जानके, अर्घ जजों मद खोई ॥

ॐ ह्रीं कैलाश गिर सिद्ध क्षेत्राय अर्घं ॥ १ ॥

यह पर्वत है थान मनोहर, तुंग घनो सुखदाई। यामें जीव घने त्रस थावर, नंदी वेडत भाई।
जीव सकल इक इन्द्री आदिक पंचेन्द्री जुत जानो। इन गति छेद भये शिव स्वामी, तिन प्रति अर्घ चढानो॥

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतसम्बन्धित्रसस्थावर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ २॥

वासुपूज्य जिन द्वादशमां है, जगत तात हितकारी। चंपापुरतैं गये शिवालय, सो चेतर अवधारी।
अष्ट दरब तैं पूजों सो थल, तीरथ अघ हर भाई। ता फल भव भरमण मिट जावै, और जु वांछा नाहीं॥

ॐ ह्रीं चम्पापुरी सिद्धक्षेत्राय अर्घम्॥ ३॥

यो ही चंपापुर शुभ थानक, मंगलीक थल गायो। जीव घने त्रस थावर हैं जहँ, तिन परणति फल पायो॥
एकेन्द्री आदिक बहु आतम, पंचेन्द्री लों जानो। या गति छेद भये शिव थानक, तिन पद अर्घ चढानो॥

ॐ ह्रीं चम्पापुर सम्बन्धि त्रस स्थावर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ४॥

उर्जयन्त शिखर मन मोहन, तीरथ परगट भाई, कोटि बहत्तरि सात सैंकडा, यहां तैं शिव थल पाई।
नेमि जिनेश वरी शिव नारी, याही के शिर जानो। ऐसा थान लख्यो सब सुखदा, तहँ में अर्घ चढानो॥

ॐ ह्रीं ऊर्जयन्त शिखरे नेमिनाथादि द्विसप्तति: कोटि सप्तशतमुनयः मुक्तिगताः तेभ्यः अर्घं॥ ५॥

यो ही गिरि गिरनार महा थल, सब ही को सुखकारी, जीव घने त्रस थावर यामें, उत्पत्ति तन धारी॥
विकलेन्द्री एकेन्द्री आदिक, पंचेन्द्री बहु थाई, इन गति छेद भये शिववासी, तिन पद अर्घ चढाई॥

ॐ ह्रीं गिरिनारशिखर सम्बन्धि त्रसस्थावर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ६॥

पावांपुर सिध थानक तीरथ, पाप हरन को थानो, महावीर तहं ही शिव पाई, करम तनो कर हानो।
लाड नरेन्द्र जु आदि मुनीश्वर, पांच कोटि मुनि राई, छांड सकल अघ मुकति वरीहै, तिन थल अर्घ जजाई॥

ॐ ह्रीं पावापुर सिद्धक्षेत्रे लाड नरिन्द्रादि पंचकोटि मुनयः मुक्तिगताः तेभ्य अर्घम्॥ ७॥

जगत जीवके पाप हरन को, तीरथ है शुभ भाई, ऐसो पावांपुर हितकारी, है थल सुन्दर थाई।

तामें त्रस थावर बहु उपजे, पावे सुख दुख भारी, या गति छेद भये शिव मूरत, तिन पद अर्घ हमारी ॥

ॐ ह्रीं पावापुरसम्बन्धि त्रसस्थावर गति उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

शिखर समेद थकी शिव परनी, वीस जिनेश्वर जानो, तीरथ निरमल है सिध थानक, पूजनीक मगमानो ।
तातैं पूजैं बहु सुख उपजै, पाप डरै दुख दाई, तातैं ऐसे थान जानके, अर्घ जजों सुख पाई ॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्राय अर्घम् ॥ ९ ॥

याही सिद्ध क्षेत्रके मांही, जीव घने अति पइये, कोई त्रस है कोई थावर, पावत सुख दुख लइये ।
तातैं इनमें उतपात सुनके, मैं मनमें भय खायो, या गति छेद भये शिव थानक, जिन पद अर्घ चढायो ॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र सम्बन्धि त्रसस्थावर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

नगर तारवर है सिध खेतर, पूजनीक शुभ थानो, आठ कोडि मुनि मुक्ति गये हैं, सिद्ध भये जग जानो ।
पूजै अति सुख होय तासको, त्रय जग को सुखकारी, तातैं मैं भी मन वच तन कर, पूजों मन वच धारी ॥

ॐ ह्रीं तारवर नामनगरसिद्ध क्षेत्राय अर्घम् ॥ ११ ॥

तारावर नगरी के शुभ थल, जीव घने उपजाई । थावरत्रस निजके कर्मन वश सुख दुख भुगते भाई ।
इन गति निंद्य सथानक मांही, धर्म नेह नहिं जानो, या गति छेद भये शिव आतम, तिन पद अर्घ चढानो ॥

ॐ ह्रीं तारावरनगरसम्बन्धित्रसथावर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

छंद गीतिका— क्षेत्र शत्रुंजय मनोहर, पुण्यक्षेत्र बखानिये, तीन पांडव मुक्ति पाई, और सुन मन आनिये ।
आठ कोडि मुनिंद्र अघहरि, सिद्धथल वासो कियो, वसु द्रव्यते तिस थान को, मम पूजने को मन भयो ॥

ॐ ह्रीं शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्राय अर्घम् ॥ १३ ॥

छंद जोगीरासा—श्री शत्रुंजय शिखर तुंग है, जगत पूज्य हित थानो, जीवन को सुखदायक शिवथल, मुनिरंजन को जानो ।
यामें त्रस थावर की उतपति दुख सुख पावत भाई, या गति छेद भये शिव मूरत, तिन पद अर्घ चढाई ॥

ॐ ह्रीं शत्रुञ्जयसम्बन्धि त्रसथावर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

कोडि शिलातें कोडि मुनिन्द, मुक्ति गये तातैं गुण वृन्द । ऐसे सिद्धक्षेत्र अवलोय, अर्घ जजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं कोडिशिला सिद्ध क्षेत्राय अर्घम् ॥ ३५ ॥

याही कोडि शिला तुम लखो, पृथ्वी कायक को दल अखो । यामें उत्पति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कोडि शिला संबधि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

छंद अडिल्ल—

इत्यादिक सिद्ध क्षेत्र कहे मन लायजी, और कहे जिन वाणी माँ सुखदायजी ।
ते थल सुखदा जानि आनि वसु द्रव सही, मन वच तन शुभ ठानि जजों सिध थल मही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घम् ॥ ३७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— सिद्ध क्षेत्रके नाम कुछ, कहूं भक्ति मन लाय । ताको सुनि मंगल लहै, अद्भुत फल को पाय ॥ १ ॥

॥ छंद चेमरी ॥

गिरि कैलाश चतुरदिशि सरिता, है सिध क्षेत्र काम शुभ करता । इहां तैं मुक्ति बहुत ने पाई, ऐसे जान नमों शिर नाई ॥ २ ॥
चंपापुर तीरथ को थानो, ताहि जजे हो शिवपुर थानो । इहां तैं बहु मुनि ने शिव पाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥ ३ ॥
शिखर समेद पाप मल धोवै, जाकों जो जिव दरशन जोवै । नगर तारवर तैं शिव जाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥ ४ ॥
है गिरनार शिखर सिध थानो, इहं तैं भये जीव सिध मानो । पावांपुरतैं अति शिवजाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥ ५ ॥
श्रीशत्रुञ्जय शिखर सुजानो, सिद्ध क्षेत्र त्रय जगश्रुति ठानो । श्रीगजपंथ शिखर थल थाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥ ६ ॥
तुंगी गिर भी शिखर उतंगा, है सिध क्षेतर अति ही चंगा । सोनागिर सिध क्षेतर थाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥ ७ ॥
रेवा नन्दी तीरथ जानो, है तीरथ शुभ फलको दानो । नदी चेलना सिध थल थाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥ ८ ॥
रेवा नदी सिद्ध वर कूटा, इस थल बहु जिय के अघ छूटा । ये सिध क्षेत्र अती सुखदाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥ ९ ॥
बडवा नगर दक्षिण दिश जानो, द्रोणागिर पर्वत शुभ मानो । तहँ तैं शिव बहुतन ने पाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥१०॥

फल होडी पश्चिम दिश जानो, द्रोणा गिरि पर्वत शुभ मानो। तहं ते भी शिव बहुते पाई ऐसे, जान नमों शिरनाई ॥११॥
अचला पुर की दिश ईशानो, मेढ नाम पर्वत इक जानो। सिद्ध क्षेत्र, यहां तै शिवजाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥१२॥
वंशस्थल वन के सुन प्यारे, कुंथ नाम पर्वत दुख जारे। कोडि शिला शिव कोडि सुजाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ॥१३॥
छंद सोरठा—ये शिव थानक वीर, सब ही को मंगल करो। करो भवोदधि तीर, महिमा शुभ परिणाम की।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं ॥ १४ ॥

॥विजयार्द्ध पर्वत सबंधी चैत्यालय पूजा॥

छंद अडिल्ल—भरत क्षेत्र विजयारध सबको सुख मई, जुगल श्रेणि जिन थान सहित शोभित सही।
देव खगा नित सेव तहां बहु विधि करैं, हम इहां भावन भाय थापि थुति अनुसरैं ॥

ॐ ह्रीं भरत विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं भरत विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः, स्थापनम्।
ॐ ह्रीं भरत विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ, सन्निधिकरणं।

छंद हरिगीतिका—जल लेय निरमल कनक झारी, हरष कर कर लाइयो। धनि मान अपनी काय रसना, देव के गुण गाइयो।
जे भरत विजयारध समंधी, थान जिन पूजें सही। ते जजों मन वच काय शुभतें, मिटै जनम जरा मही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं० ॥ १ ॥

घसि बावनो चंदन सु जल तैं, सुभग पातर लाइयो। बहु और मेलि सुगंध यामें, मुखे जिन गुण गाइयो।
जे भरत विजयारध समन्धी, थान जिन राजे सही। ते जजों मन वच काय शुभ ते, मिटै भव तप की मही ॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं० ॥ २ ॥

शुभ गंध उज्ज्वल खांड विन ले, श्वेत तंदुल सुखकरा। धर थाल शुभ कर हरष उर में, पाप सब मानों झरा।
जे भरत विजयारध समंधी, थान जिन राजै सही। ते जजों मन वच काय शुभतैं, अक्षय पद पावै मही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

ले फूल सुंदर गंध धारक, वरन नाना भांति जी। तिन ऊपरै परिमल वशी हो, आय अलि की पांति जी।
जे भरत विजयारध समन्धी, थान जिन राजे सही। ते जजों मन वच काय शुभतैं, मदन जुर नाशै सही ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं० ॥ ४ ॥

नैसेद्य पट रस पूर सुन्दर, तुरत कर मन मोहनो। धरि महा सुभग सुथाल लेकर, चलूं कर धर सोहनो ॥
जे भरत विजयारध समंधी, थान जिन राजैं सही। ते जजों मन वच काय शुभ तैं, भूख नाशन कूं कही ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

ले दीप रतन मनोज्ञ तम हर, आपने कर सुख करा। वहु धार आनंद लेय के धन, कनक वासन में धरा ॥
जे भरत विजयारध समंधी, थान जिन राजै सही। ते जजों मन वच काय शुभ तैं मिटे मिथ्या तम मही ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप दश विधि गंध दायक, महा सुन्दर लाइये। धरि अगनि भीतर हरप उर में, आप कर तैं खेइये ॥
जे भरत विजयारध समंधी, थान जिन राजै सही। ते जजों मन वच काय शुभ तैं, कर्म दाहन को कही ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल बदाम मंगाय खारक, लौंग पिस्ता जानिये। इन आदि शुभ फल लेय सुन्दर धार पातर आनिये ॥
जे भरत विजयारध समंधि, थान जिन राजै सही। ते जजों मन वच काय शुभ तैं, अधिक फल पावों मही ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यलयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

सलिल चंदन अमल तंदुल, पुष्प चरु दीपक धरूं। वर धूप फल वसु द्रव्य लेकर, पूज जिन पातक हरूं ॥
जे भरत विजयारध समंधी, थान जिन राजै सही। ते जजों मन वच काय शुभ तैं, अधिक फल पावों मही ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

भरत क्षेतर मांहि परवत, भलो विजयारध कह्यो। तिस मांहि द्वय है श्रेणि सुन्दर, ताहि तैं शोभित ठह्यो ॥
तहां थान जिन के महा सुन्दर, बिंब जिन से राजिये। ते जजों दरव मिलाय आठों फलै शिव सुख पाजिये ॥
ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्जो अर्घं ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ॥ (चौपाई)

विजयारध शुभ भारत तनो, ताके शीश कूट सिध गिनो । तापै शुभ जिनवर को थान, ते पूजों मन वच तन ठान ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध ऊपरि सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

याही सिद्ध कूट के मांहि, थावर त्रस जीवन उपजांहि । इसमें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्ध सम्बन्धिसिद्धकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

दक्षिणार्द्ध कूट शुभ नाम, त्रस थावर उतपति को ठाम । या गति उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्धसम्बन्धि दक्षिणार्द्ध भरतकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

खंड प्रपात कूट को नाम, षट कायक जीवन को धाम । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध सम्बन्धि खण्डप्रपात कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

पूरणभद्र कूट को नाम, थावर जंगम जीवन धाम । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्धसम्बन्धि पूर्णभद्र नामकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

विजयारध कुमार शुभ कूट, थावरत्रस जीवन तहँ छूट । या गति उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध सम्बन्धिविजयार्द्ध कुमारकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

मणिभद्र है कूट जु नाम, विजयारध ऊपर है ठाम । या में उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध सम्बन्धिमणिभद्रनाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

विजयारध शिर ऊपर जोय, तामिश्रा गुह कूट सु होय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध सम्बन्धि तामिश्रागुहकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

भरत क्षेत्र विजयारध ठाम, उत्तर भरत कूट तिस धाम । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध सम्बन्धि उत्तरभरतकूट गति छेदकजिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

विजयारध शुभ भारत तनो, श्रवण कूट ता ऊपर गिनो । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध संबधि उत्तर भरतकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

ये नव कूट कनक जे जान, विजयारध ऊपर जे मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके चरण नमों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं भरतविजयार्द्ध सम्बन्धि नवकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ११ ॥

छंद अडिल—

खंड प्रपातन कूट ऊपरै जानिये, नृतमालन है देव व्यंतरा थानिये।
या गति छेदक देव सकल सुखकारजी, तिनको पद में अर्घ जजूं हित धारजी ॥

ॐ ह्रीं खंड प्रपातन कूट वासी नृतमालदेव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ १२ ॥

तामिश्रकूट ऊपरै जानो देवजी, कृत्त माल है नाम व्यंतरै सेवजी।
बड़ी विभूति सु पाय धाय सुख में रह्यो, या गतिछेदक देव जजों मन वच ठयो ॥

ॐ ह्रीं तामिश्र कूट संवधि कृतमाल नाम देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ १३ ॥

दक्षिणार्द्ध भरत के ऊपर है सही, दक्षिणार्द्ध है देव भरत सुख की मही।
नाना विधि सुख पाय मगन तामें रहै, या गतिछेदक देव जजों सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणार्द्ध भरत कूट संवंधि दक्षिणार्द्ध भरत नाम देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ १४ ॥

पूर्ण भद्र है देव तहां अति लसत है, पूर्ण भद्र है कूट ऊपरै वसत है।
नाना विधि सुख पाय मगन तामें रहै, या गतिछेदक देव जजों सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं पूर्णभद्र नाम कूट संस्थित पूर्णभद्र देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

विजयारध की कूट कुमार सु है सही, या ही नाम सु देव वसै सुख की मही।
नाना विधि सुख पाय मगन तामें रहै, या गतिछेदक देव जजों सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य कुमार नामकूटस्थित कुमार नाम देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ १६ ॥

मान भद्र सुख दाय कूट को नाम है, या पै इस ही नाम देव को ठाम है।
नाना विधि सुख पाय मगन तामें रहै, या गतिछेदक देव जजों सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य मानभद्रनाम कूट स्थित मानभद्र देव गति छेदकजिनेभ्यो अर्घंम् ॥ १७ ॥

उत्तर भरत जु कूट ऊपरै जानिये, याही कूट समान नाम तिस मानिये।
नाना विधि सुख पाय मगन तामें रहै, या गतिछेदक देव जजों सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तर भरत नाम कूटस्थित उत्तर भरत देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

श्रवण नाम शुभ कूट ऊपरै जोइये, श्रवण नाम है देव तहां मद मोहिये।
नाना विधि सुख पाय मगन तामें रहै, या गतिछेदक देव जजों सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य श्रवण नाम कूट स्थित श्रवण नाम देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

विजयार्द्ध की दक्षिण श्रेणी संबंधि नगरी—गतिछेदक अर्घ

चौपई—विजयारध दक्षिण की श्रेणी, किनामित नगर शुभ देणि। यामें उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजो मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां किंनामित नाम नगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरी तनी, किंनरगीत सु शोभा बनी। यामें उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां किंनर गीत नाम नगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

विजयारध दक्षिण की श्रेणि, है नरगीत नगरि सुख देणि। यामें उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्या नरगीत नाम नगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जान, तहँ बहुकेत नगर सुख थान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्या बहुकेत नामनगरउत्पत्तिगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

विजयारध की दक्षिण श्रेणि, पुंडरीक पुर अति सुख देणि। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां पुंडरीकपुर उत्पत्तिगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जोय, सिंहध्वज पुर अद्‌भुत सोय। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां सिंहध्वजपुरनगर उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जान, श्वेतध्वज नगरी तहँ मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां श्वेतध्वजनगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

खग गिरि दक्षिण श्रेणी सही, गरुडध्वज पुर शोभा मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां गरुडध्वज नगरीउत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिर तणी, श्रीप्रभ नगरी तहां शुभ बनी। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां श्रीप्रभनाम नगरी उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि भाय, श्रीधर नगर तहां सुखदाय। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां खगगिरिनामनगरी गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जान, लोहार्गल नगरी शुभ मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां लोहार्गलनामनगरी उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

खग गिरि दक्षिण श्रेणी तास, अरिंजय पुर सुख को वास। या में उतपति छेदक सोय; तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां अरिंजयनामनगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

खग गिरि श्रेणी दक्षिणदिशा, वज्रार्गल पुर तहां अति लसा। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां वज्रार्गलनाम नगरी उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

खग गिरि दक्षिण श्रेणी सही, वज्राढ्यापुर सुख की मही। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां वज्राढ्यापुर उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिर तनी, पुर विमोचि तहँ शोभा घनी। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां विमोचि पुर नगर उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

विजयारध की दक्षिण श्रेणि, नाम भलो जय नगरी येनि। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां जय नाम नगरी उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, शकट मुखी अति शोभा मही। यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां शकट मुखी नाम नगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सोय, चतुर्मुखी तहँ नगर सु जोय। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां चतुर्मुख नाम नगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरी सही, बहु मुख नगर तहां सुख मही। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या बहुमुखी नाम नगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जान, अरजस्कापुर सुर सम मान। यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां अरजस्कापुरनगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

विजयारध की दक्षिण श्रेणि, पुर विरजस्का है सुख देणि। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां विरजस्का पुर नगर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

विजयारध दक्षिण दिश श्रेणि, रथनूपुर जानों सुख देणि। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां रथनूपुर नाम नगर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, मेखलाग्रपुर सुख की मही। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां मेखलाग्रपुर नगर उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २३ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, क्षेमचरीपुर शोभा मही। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां क्षेमचरी नाम नगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, अपराजित पुर शोभा मही। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां अपराजित नाम नगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

विजयारध की दक्षिण श्रेणि, काम पुष्पपुर अति सुख देणि। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां काम पुष्प नामनगरी उत्पतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जान, गगन चरी नगरी सुख दान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां गगनचरी नामनगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, विनयचरीपुर शोभा सही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या विनयचरीपुर उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

विजयारध की दक्षिण श्रेणि, शुक्र नगर सब को सुख देणि । या मैं उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या शुक्रनामनगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

दक्षिण श्रेणि खग गिरि सही, संजयंतपुर तहँ सुख मही । या मैं उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां संजयंतपुर उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

दक्षिण श्रेणि खग गिरि सही, जयंती नगरी सुख मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद्र खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां जयंतीनगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरी सही, विजया पुर है शिव पुर मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां विजया नामनगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

दक्षिण श्रेणि जान खग गिरी, वैजयंत नाम नगरी सुख करी । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां वैजयंत नामनगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

विजयारध दक्षिण दिश सही, क्षेमंकर तहां सुख की मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या क्षेमंकर नाम नगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

दक्षिण श्रेणि खग गिरि जान, है चन्द्राभ नगर सुख मान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या चद्राभनाम नगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, है सूर्याभ नगर शुभ मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ विजयार्द्धस्य ह्रीं दक्षिणश्रेण्यां सूर्याभनगर उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, चित्रकूट है शुभ की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या चित्रकूट नगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

विजयारध दक्षिण की श्रेणि, महाकूट तुर तहां सुख देणि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या महाकूटपुरनामनगरी उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३८ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिर सही, हेम कूट तहां सुख की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या हेमकूटपुर नाम नगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिर सही, नाम त्रिकूट-नगर सुख मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या त्रिकूटनाम नगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, मेघ कूट तहां सुख की मही। या में उतपत्ति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां मेघकूटनामनगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जान, है विचित्र कूट पुर मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां विचित्रकूटनामपुर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि गिनो, वैश्रमण कूट पुर मिनो। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या वैश्रवणनाम पूर उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

विजयारध की दक्षिण श्रेणि, सूर्य नगरपुर तहां सुख देणि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां सूर्यपुर नाम नगर उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, चंद्र नाम पुर तहां शुभ मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या चन्द्रपुरनाम नगर उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, नित्योद्योतिनी सुख की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां नित्योद्योतिनीपुर उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्गो अर्घम् ॥ ४ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि जान, नगर त्रिमुख तहां अति सुख मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या त्रिमुखीनाम नगर उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

दक्षिण श्रेणी खग गिरि सही, नित्य वाहिनी पुर सुख मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेण्यां नित्य वाहिनी नाम नगरी उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

विजयारध की दक्षिण श्रेणि, सुमुखी नगर तहां हित देणि। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्यां सुमुखी नगरी उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४९ ॥

छंद अडिल्ल— विजयारध की दक्षिण श्रेणी जानिये, नगरी तहां पचास वास खग मानिये।
देव जिसे नर जान नगर सुरथान से, तिनमें उतपति छेद जजों पद भान से ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेण्या पञ्चाशत्नगर्यां उत्पतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

॥ उत्तर श्रेणी गतिच्छेदक अर्घ ॥

छंद पद्धरि—विजयारध उत्तर श्रेणि जान, तहँ अर्जुनपुर सुख को खजान। या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या अर्जुनपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, तहां अरुणी नगरी सुखद मान। या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां अरुणीपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध जान, कैलाशनगर तहँ सुभग मान। या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या कैलाशपुरे उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणिजान, वरुणी नगरी तहँ हर्ष दान। या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां वरुणीनामनगर्यां उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, विद्युत्प्रभ सुन्दर नगर मान। या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या विद्युत्प्रभनामनगरी-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

उचार श्रेणी विजयार्द्ध जान, किलकिल नगरी है सुखद मान । या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या किलकिलपुरउत्पत्तिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

विजयारध उचार श्रेणि भाय, चूडामणि पुर तहां अति सुहाय । या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां चूडामणि पुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

विजयारध उचार श्रेणि जेय, शशि प्रभा नगर सुख दाय तेय । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां शशिप्रभनामनगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

विजयारध उचार श्रेणि सार, वंशाल नगर अति सुख अधार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या वशालनामपुरे गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

विजयारध उचार श्रेणिजान, पुर पुष्प चूल अति सुभग मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या पुष्पचूल पुरे उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

उचार श्रेणी विजयार्द्ध जान, पुर हंस नगर तहँ सुख निधान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां हसपुरे उत्पत्ति गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

विजयारध उचार श्रेणिसार, तहँ नाम वलाहकपुर उदार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ि जयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या वलाहपुरे उत्पत्तिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

विजयारध उचार श्रेणि जान, पुर भलो शिवंकर तहां मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां शिवङ्करपुरे उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १३ ॥

विजयारध उचार श्रेणिसार, श्री सौध नगर तहँ सुखाधार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या श्रीसोधनामपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १४ ॥

उतर श्रेणी विजयार्द्ध जान, पुर चमर नाम सुख को बखान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या चमरपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १५ ॥

उतर श्रेणी विजयार्द्ध जान, शिव मंदिर नामा नगर मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेण्यां शिवमन्दिरपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणिसार, वसु मत्कानगर पुर हरप धार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तारश्रेण्या वसुमत्कापुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

उत्तर श्रेणी खगगिर पिछान, वसुमती नगरको नाम जान । ता में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां वसुमती नाम नगर्यां गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, सिद्धारथ नगरी सुभग मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या सिद्धार्थनगर्यां उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, शत्रुंजयनगरी हरप मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या शत्रुञ्जयनाम पुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, तहँ केतु माल पुर सुभग धार । या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां ध्वजमाल नामपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध जान, सुरेन्द्रकान्त पुर सुखद थान । यामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तारश्रेण्या सुरेन्द्रकान्त नामपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

विजयारध उतर श्रेणिवास, पुर गगननन्द अति सुख निवास । या में उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तारश्रेण्यां गगननन्दनपुरे उत्पतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध सार, तहां पुर अशोक शोभा अपार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेण्या अशोकपुरे उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, तहँ पुर विशोक सुर सम सुधार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेण्या विशोकपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध जान, पुर वीतशोक है सुख निधान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या वीतशोकपुरे उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध सार, अलकापुर तहँ अति शोभ धार । तामें उतपति हर सिद्ध होय; तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या अलकानामपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणिसार, पुर तिलक तहां है शोभ धार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां तिलकानामनगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, तहां अम्बर तिलका सुभग मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों कुमद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या अम्बर तिलकानगरी उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, मन्दर नगरी तहां सुखनिधान । ता में उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेण्या मन्दर नाम पुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, पुर कुमुद तहां अति सुखद थान । ता में उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां कुमुदपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

उत्तर श्रेणी खग गिरि पिछान, पुर कुंद तहां सुख का निधान । तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां कुंद नगरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

खग गिरि उत्तर श्रेणी सुजान, पुर गगन वल्लभा नाम मान । तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या गगन वल्लभ पुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणी जान, पुर दिव्य तिलक है सुखद थान । तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या दिव्यतिलकपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, पुर भूमि तिलक है सुख निधान । तामें उत्पत्ति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां भूमितिलक पुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध जान, गंधर्व नगर है सुख निधान। तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां गधर्व नगरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

उत्तर श्रेणी खग गिरि पिछान, है मुक्तहार नगरी सुजान। तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां मुक्ताहार पुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, नगरी नैमिप सब सुख अधार। तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां नैमिपनाम नगरी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, पुर अग्निज्वाल सुख का अगार। तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां अग्निपुरनामपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, है महाज्वाल पुर मख अगार। तामें उत्पति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां महाज्वालपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध जान, पुर श्रीनिकेत जानो सुजान। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां श्रीनिकेतपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४१ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, है नाम जयावह नगर मान। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेण्यां जयावह नाम नगर–उत्पत्तिछेधक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

उत्तर श्रेणी खग गिरि पिछान, श्रीवासनगर सुख का निधान। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या श्रीनिवासपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, मणिवज्र नगर सोहै करार। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां मणिवज्रपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, भद्राश्व नगर शोभै अपार। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां भद्राश्वपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४५ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जेय, पुरनाम धनंजय सुभग तेय । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु जोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां धनजयपुरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

उत्तर श्रेणी खग गिरि सुजान, गोक्षीर नगर शोभै महान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां गोक्षीर नगरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, अक्षोभ नगर विन है विकार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां अक्षोभ नगरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध जान, पुर शैल शिखर तहाँ सुभग मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां गिरिशिखर नगरे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४९ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, पृथ्वीपुर है तहँ नगर धार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां धरणीपुरे उत्पत्तिगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि सार, पुर जानि धारणिपुर करार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिन के पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या धारणीपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ५१ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जेय, दुरगा नगरी आनन्द देय । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां दुर्गा पुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ५२ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, दुर्द्धर नगरी तहँ हर्ष मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या दुर्द्धर नाम नगर्यां उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ५३ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणिसार, पुरनाम सुदर्शन हिये धार । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या सुदर्शन नाम नगर्यां उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ५४ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणिजान, पुर नाम महेन्दर सुखद मान । तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पदपूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या महेन्द्रपुर नगरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ५५ ॥

उत्तर श्रेणी विजयार्द्ध जान, है नाम विजयपुर सुख निधान। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां विजयपुरनामनगरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, पुर है सुगंध तहँ सुख निधान। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां सुगंधिनी नाम नगर्यां उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

खग गिरि उत्तर श्रेणी सुजान, वज्रार्द्ध नगर है सुख निधान। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां वज्रार्द्धतरपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जान, रत्नाकर पुर तहँ सुखद मान। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेण्यां रत्नकारपुरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

विजयारध उत्तर श्रेणि जेय, रत्नपुर अति आनंद देय। तामें उतपति हर सिद्ध होय, तिनके पद पूजों मद जु खोय ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्यां रत्नपुर नगरे उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

छंद अडिल्ल—

विजयारध की उत्तर श्रेणी में सही, नगरी साठ जु कही देव सी है मही।
तिनमें उतपति छेद भये भव पारजी, मैं पूजों ता पद अर्घ धार सुखकार जी ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेण्या सर्वापि षष्टिः नगरीषु उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— विजयारध रचना सकल, कहूँ अल्प विस्तार। इस थल उतपति छेद शिव, गये जजों शिव धार ॥ १ ॥

छंद वेसरी—विजयारध भारत सु वखानो, पूरव पश्चिम नीके जानो। है पचास जोजन चौडाई, जोजन पांच वीस लंबाई ॥२॥

चांदी वरण श्रेणि जुगधारी, दश इक शत तहां नगरी सारी। दक्षिण श्रेणि पचास वताई, उत्तर साठ नगर सुखदाई ॥३॥

ते नगरी मणि कनक जडाई, वहु विस्तार तिन्हों का भाई। कोट तथा दरवाजे जानो, वापी वन सरवर जुत मानो ॥४॥

जो साधै विद्या कर आवै, सो ही साधक नाम कहावै। तात पक्ष में जो चलि आई, सो कुल विद्या नाम कहाई ॥५॥

माता पक्ष विषै चलि आई, ताही विद्या जाति कहाई। इन त्रय विद्या जुत खग जानो, षट कारज नित और बखानो ॥६॥
इज्या दत्ति वार्ता कहिये, संयम तप स्वाध्यायी रहिये। पूज्य पदारथ पूजै सोई, ईर्या नाम क्रिया तहां होई ॥७॥
असि मषि आदि विणज अन जानो, सोही दूजी वार्ता मानो। देना दान दत्त क्रिय सोई, पठन आदि स्वाध्याय जु होई ॥८॥
अविरति त्याग संजम सो जानो, तप करना सो तपक्रिय मानो। ये षटकारज तहँ नित पइये, इन जुत गिर बहु शोभा लहिए ॥९॥
पर कूट शोभ अति आनो, गिर नृप शिर यह मुकुट जु जानो। सिद्धकूट पै है जिन गेहा, एक कोश लंबा शुभ देहा ॥१०॥
पद्रह शतक धनुष तुङ्ग जानो, व्यास हजार धनुष का मानो। दूजा कूट नाम सुन भाई, दक्षिण अर्द्ध भरत सुखदाई ॥११॥
खंड प्रपातन कूट सुजानो, या में नृत्य माल सुर थानो। पूरण भद्र कूट हितकारी, विजयारध कुमार फिर धारी ॥१२॥
मानभद्र कूट सरूपा, तामिश्रगुह सप्तम गिन भूपा। यापै कृतमल व्यन्तर जानो, उत्तर कूट भरत शुभ मानो ॥१३॥
श्रमण कूट है नवमां भाई, कनक तने सब कूट सुगाई। और कूट पै सुर थल जानो, कूट नाम जो सुर का मानो ॥१४॥
ऐसो खग गिरि जान अनूपा, या गति छेद भये शिव भूपा। तिनके पद में अर्घ चढाऊं, मन वच काया कर थुति गाऊं ॥१६॥

दोहा— विजयारध ऊपर सही, कहे देव जिन थान। तिनको अर्घ जजों सही, अष्ट द्रव्य कर आन ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्ध सम्बन्धि जिनालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घम् ॥ १७ ॥

॥ भारत क्षेत्र सम्बन्धी अर्घ ॥

छंद अडिल्ल—

विजयारध की दक्षिण दिश को मानिये, पूरव तनो मलेच्छ धर्म नहिं जानिये।
ताकी उतपति छेद भये शिव रायजी, तिनके पद शिरनाय जजों मन लायजी ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरदिशायां पूर्वम्लेच्छ खंडे गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

विजयारध की उत्तर दिशि में है सही, मध्य म्लेच्छजु खंड धर्म विन सब मही।
ताकी उतपति छेद भये शिव रायजी, तिनके पद शिर नाय जजों मन लायजी ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरदिशायां मध्यम्लेच्छखडे उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

छंद जोगीरासा—याही मध्य म्लेच्छ विषै गिर, वृषभाचल तिस नामो। जोजन तुङ्ग जु व्यास इतो है, अर्द्ध ऊपरै ठामो ॥

षटखंडी ते भये अनंते, सो यहां नाम लिखावै। कनकरतनमय परवत नीको, या गति हर सु जजावै ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरदिशाया म्लेच्छखडे वृषभाचलपर्वतस्योपरि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

छंद अडिल्ल—

विजयारध की उत्तर दिश को जानिये, पश्चिम म्लेच्छ खंड में वृष की हानियें।
तामें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं भवि सुखकार जी ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धस्य उत्तरदिशाया पश्चिम म्लेच्छखडे उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

भरत क्षेत्र षट खंडी चक्री सम गिंनो, बहु निधि रतन सुधार यह नर निधि जनों।
तीर्थङ्कर हरि चक्री यामें ऊपजे, या गति हर को जजों कटै अघ धूपजे ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य भरतक्षेत्रे उत्पत्तिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥

॥ हिमवान पर्वत सम्बन्धी चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

जम्बूद्वीप तनो जु कुलाचल जानिये, है हिमवान सुनाम महा शुभ थानिये।
तिन पै जिनके थान देव पूजा करै, हम यहां भावन थापि जजैं अरु अघ हरैं ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि हिमवननाम कुलाचले जिनालयस्थ जिन समूह अत्रावतरावतर।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि हिमवन नाम कुलाचले जिनालयस्थ जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि हिमवन नाम कुलाचले जिनालयस्थजिन समूह अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

॥ छंद पद्धरि ॥

जल निरमल नीर सुगंध लाय, धरि कनक झारिका सुभग मांहि। हिमवान शीश जिन बिंब सोय, पूजों मन वच तन हरष होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शीश जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

घसि बावन चंदन नीर लाय, धरि कनक रकेबी सुभग भाय। हिमवान शीश जिन बिंब सोय, पूजों मन वच तन हरष होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शीश जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

अक्षत अखंड उज्वल सुजान, मैं ल्यायो निरमल भाव ठान। हिमवान शीश जिन बिंब सोय, पूजों मन वच तन हरप होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवानशिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

पुष्प गंध युत सुभग जान, मैं ले आयो बहु हरप ठान। हिमवान शीश जिनगेह सोय, पूजों मन वच तन हरप होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थजिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य मवै रस पूर जान, मैं लायो अब ही हरप ठान। हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरप होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

मणिमय दीपक अति सुभग ठान,भरि कनक थाल लायो सुजान। हिमवान शीश जिन गेह सोय,पूजों मन वच तन हरप होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

ले दशधा धूप सुगन्ध सानि, खेऊँ अगनी में लाय थानि। हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरप होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

फल श्रीफल लौंग बिदाम जेय, शुभ खारक पिस्ता हाथ लेय। हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरप होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत पुष्प जान, चरु दीप धूप फल अर्घ आन। हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरप होय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखर जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल—

भलो कुलाचल जान प्रथम हिमवानजी, जंबूद्वीप मझार दंड उपमानजी।
तिनपे है जिन थान भले जिन रायके, मैं पूजों तिन पाय सकल सुखदाय के ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि हिमवानशीश जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—प्रथमकूट सिद्धायत जान, सुन्दर उच्च महा सुख खान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान गिरि शीश सिद्धायतन कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

याही कूट सिद्धायत शीश, है जिन मंदिर त्रिभुवन ईश। तिनमें बिंब देव जिनतने, तिन पद अघ जजों थुति ठने ॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वत शिखरे सिद्धायतन कूट जिनेचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

हिमवन गिरि के शीश जान, हिमवन नामा ही कूट मान। यामें उत्पति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वत शिखरे हिमवन कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

हिमवन याही कूट मझार, हिमवन देव रहै बलधार। या गतिछेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों कर धार ॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वत शिखरे हिमवन देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

हिमवन गिरि के शीश मझार, भरत कूट अति शोभा धार। या गतिछेद भये भव पार; तिन पद पूजों शिव तैं सार ॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वत शिखरे भरतकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही कूट शीश पे जान,भरत नाम ही देव सु मान। या गतिछेद सिद्ध पद लयो, तिन पद अर्घ जजों शिर नयो ॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वते भरत नाम कूट स्थित भरन नाम देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

हिमवन गिरि पै उज्वल थान, कूट इलाद नाम शुभ जान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वते इलाद कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

याही कूट इलाके शीश, व्यंतर देवी निवसै दीश। या गतिछेद भये शिव राय, तिन पद अर्घ जजों शिर नाय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे इलादकूट स्थित व्यंतर देवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

हिमवन गिर के शीश सुजान, गंगा नाम कूट सुख दान,। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे गंगा नाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

याही गंगा कूट सुजान, ऊपर देवी व्यंतर थान। या गतिछेदक भये शिव राय, तिन पद अर्घ जजों मन लाय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वत शिखरे गंगा कूट स्थित व्यंतर देवी गतिछे क जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

हिमवन गिरि के शीश सु थान, श्रीय नाम है कूट सु जान। या गतिछेद भये शिव नाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे श्रीय नाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

याही श्रीय कूट के शीश, व्यंतर देवी बीसवा वीस। जा गति छेद भये जग नाथ, तिन पद अर्घ जजों जुग हाथ।

ॐ ह्रीं हिमवान गिरिशिखरे श्रीयकूटस्थित व्यंतरदेवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

हिमवन गिरि के शीश सुजान, रोहितास है कूट सुमान। या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे रोहितास्या कूट उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

रोहितास्या कूट सुनाम, तापर व्यंतर देवी धाम। या गतिछेद भये शिवराय, तिन पद पूजों अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे रोहितास्याकूटस्थित व्यतरदेवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

हिमवन गिरि के शीश मझार, सिद्ध कूट है अति सुखकार। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे सिद्ध कूट उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

याही सिद्ध कूट पै जोय, व्यंतर देवी वसि है सोय। या गतिछेदक उत्पति सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री हिमवन शिखरे सिद्धकूटस्थित व्यतरदेवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

हिमवन गिरि के शीश सुजान, सुरा नाम है कूट महान। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे सुरा नाम कूट उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

याही हिमवन गिरि के शीश, सुरा कूट पै देवी दीस। या गति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों अघ टार ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे सुरा कूट स्थित व्यतर देवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

हिमवन गिरि के ऊपर सही, हेमवत नाम कूट सुख मही। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे हेमवत कूट उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

याही हिमवन कूट मझार, देव वसै हिमवत ही सार। या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान कूट स्थित व्यतर देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

हिमवत गिरि के शीश मझार, वैश्रवण है कूट सुधार। या गति छेद भये जिनदेव, तिन पद अर्घ जजों कर सेव ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे वैश्रवण कूट उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

वैश्रवण या कूट मझार, वैश्रवण ही देव सुधार । या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे वैश्रवण कूट स्थित वैश्रवण देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

हिमवन गिरि के शीश सुजान, एकादश है कूट सुमान । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे एकादश कूट उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

हिमवन गिरि के शीश मझार, पद्म द्रह अति जल आगार । या गति उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवनगिरि शिखरे पद्मद्रह उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

याही पद्म द्रह के माहि, कमल एक उत्कृष्ट बताय । या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवन शिखरे पद्मद्रहे उत्कृष्ट कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

याही पदम द्रहे जो फूल, वा वासिनि श्री देवी सूल । या गति उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहे पद्मवासिनीदेवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

छंद अरिल्ल—

पदम द्रहे में कमल एक उत्कृष्ट है, ताही के परिवार कमल अनपुष्ट हैं ।
या ही उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढावें शिव सुखकारजी ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहसंबंधि मुख्य कमल एक तथा अन्य अनेक पारिवारिक कमलगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७॥

तिनही कमल परिवार ऊपरैं है सही, श्री देवी परिवार देव तिष्ठै मही ।
इनकी गति हरि शुद्ध आतमा जे भये, तिनके पद हम अर्घ पूज्य सब अंग नये ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहे मुख्यकमले श्री देवी परिवार देवगति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

श्री देवी की सभा तीन विधि है सही, अंतर बाह्य रु मध्य इमें जानों सही ।
आदित चन्द्र सु नाम जंतु तीजी गिनो, इन गति छेदक देव जजत मन वच ठनो ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहे त्रिधा परिषद जाति देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

सभा अभ्यन्तर आदित नाम बखानिये, गुण तीस सहस बत्तीस देव परमानिये ।

एते ही हैं कमल इन्ही देवन तने, इन गति छेदक देव जजें मन वच तने ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहे वासिनीदेवी अभ्यन्तर परिषद् सबंधि कमल तथा कमलवासी देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

पद्म कुंड जु वासिनि देवी जानिये, ताकी दूजी सभा मध्य की मानिये।
तहां देव चालीस हजार कहे सही, इन गति छेदक देव जजें शिव सुर मही ॥

ॐ ह्रीं कमलवासिनी श्रीदेवी मध्यम सभा सवधि कमल तथा कमलवासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

कमल वासिनी श्री देवी पहली कही, ताकी बाह्य सभा सु कमल सुख की मही।
गुणतिस सहस अड़ताल महा सुखकार है, इन गति छेदक देव जजे अघ छार है ॥

ॐ ह्रीं कमलवासिनी देवी व ह्य परिषद सबधि कमल तथा कमल वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

मध्य कमल तैं पूरव दिशकूं जानिये, चार हजार सु कमल महा सुख दानिये।
तिनपे इक इक देव अंग रक्षक रहै, इन गति छेदक देव जजें सब अघ दहैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवी–कमल–मूलत पूर्व दिशा सवधि देव व अगरक्षक गति–छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

मूल कमल तें दक्षिण दिश कूं जानिये, चार हजार सु कमल महा सुख दानिये।
तिनपे देव रहै अंग रक्षक सारजी, इन गति छेदक देव जजे भव पार जी ॥

ॐ ह्रीं श्री देवीमूलकमलस्य दक्षिणदिशायां चतुसहस्रकमलोपरि अङ्गरक्षकदेव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

मूल कमल के पश्चिम दिश को जानिये, चार हजार सु कमल सकल मन मानिए।
तिनपे देव रहें अंग रक्षक सारजी, इन गति छेदक देव जजें भवि पारजी ॥

ॐ ह्रीं श्री देवी मूलकमलस्य पश्चिमदिशायां चतु सहस्र कमलोपरि अग रक्षक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३५ ॥

मूल कमल तें उत्तर दिश को जानिये, पद्म कुंड चव सहस कमल सुख मानिये।
तिन ऊपरि अंग रक्षक देव वसे सही, इन गति छेदक देव जजे हो सुख मही ॥

ॐ ह्रीं श्री देवी मूलकमलस्य उत्तरदिशायां चतु सहस्र कमलोपरि अग रक्षक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

मूल कमल तैं चव विदिशि चव दिशा विषै, कमल एक सो आठ महा शोभा लसै ।
तिन पै देव रहै प्रतिहार सु जानिये, इन गति छेदक देव जजों शिव मानिये ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहे देवी मूल कमलस्य चतुर्दिक् दिशा विदिशायां निवासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

पद्मद्रहे में श्री देवी शुभ जानिये, तिनके सुर सामान्य जाति मन आनिये ।
चार हजार सु गति कमलन की है सही, इन गति छेदक देव जजों शिव सुर मही ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहे वासिनी देवी संबधि-सामानिक जाति देव गति छेदक-जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

श्री देवी की सेना सात प्रकार है, हाथी घोड़ा रथ अर बैल जसा रहै ।
गंधव नृत्यक और पयादे जानिये, इन गति छेदक देव जजों शिव मानिये ॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहे निवासिनी देवी सबधि सप्तप्रकार सेना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

हिमवन गिरि तैं गंगा निकसी है सही, पूरब दिशि को गमन करत दक्षिण गई ।
चवदह सहस सु नंदी या में है मिली, या गति छेदक देव जजे शुभ विधि मिली ॥

ॐ ह्रीं हिमवन गिरितः गंगा नदी उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

पदम कुंड तैं निकसि खगा चल दिस गई, सिंधु नदी है नाम दिशा पश्चिम भई ।
बहुत नदी परिवार सहित दधि में मिली, या गति छेदक देव जजे गति हो भली ॥

ॐ ह्रीं हिमवन गिरितः सिंधु नदी उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

हिमवन गिरितः निकसी रोहितास्या नदी, उत्तर दिश पडी बहुत नदिन जुत हो फदी ।
अर्द्ध प्रदक्षिण देय नाभि गिरि दधि गई, या गति छेदक देव जजे अघ बुधि चई ॥

ॐ ह्रीं हिमवन गिरित रोहितास्या उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

हिमवन गिरितैं कूट नदी द्रह है सही, कमलादिक रचना की महिमा सब कही ।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिनके पद मैं अर्घ जजों सुख कारजी ॥

ॐ ह्रीं हिमगिरि सबधि कूट नदी द्रहादि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— पर्वत गिरि हिमवान की, महिमा बहुत प्रकार। तिन गति हर शिव कूं गये, जजों तास पद सार ॥ १ ॥

चौपई—जंबू द्वीप विषै हिमवान, दंडाकार पड्यो विच थान। पूरव पश्चिम नौंके जानि, ऊंचो सो जोजन को मानि ॥२॥
ग्यारह कूट तास पै कहे, रतन मई अति शोभा ठहे। सिद्धायत पे जिनवर थान, पूजें देव तहा बहु आन ॥३॥
औरन पै सुर तिष्ठै सही, यथा योग्य तिन की विधि कही। बीस पांच जोजन तुंग जान, गोलाकार कूट शुचि आन ॥४॥
तापै पद्म कुंड है सोय, जोजन सहस लँबाई जोय। चौडे जोजन पंचशत कहे, दश जोजन ऊंचे वर ठये ॥५॥
ता मधि कमल एक, मणि मई, जोजन व्यास एक वरणई। तापै श्री देवी को वास, और कमल इस के चहुँ पास ॥६॥
एक लाख चालीस हजार, एक सैंकडा पंद्रह धार। ये ते कमल जान परिवार, तिन पै देव बसै वर सार ॥७॥
कमल एक के पैंड़ी जोय, एक सहस अरु ग्यारह होय। इन ही द्रह तैं नंदी तीन, निकस चली अति शोभा लीन ॥८॥
दोय भरत में आई सई, सरिता इक उत्तर को गई। गोमुख नाली को आकार, दोय कोश की चौड़ी सार ॥९॥
रतन मई द्रह को जल जाय, दूर धार परवत तैं आय। जोजन बीस पांच गिरि छोर, गहराकार पडै झग झोर ॥१०॥
चौड़ी दश जोजन ह्वै पडी, कुंड एक तामें आऊड़ी। ता कुंड सरिता पडि है आय, सो दश जोजन औंडी भाय ॥११॥
जोजन साठ व्यास विस्तार, तामें इक टापू है सार। दोय कोश तुंग जल सोय, जोजन आठ व्यास अवलोय ॥१२॥
ता टापू पै इक गिरि सही, दश जोजन तुंग ता मही। नीचे परवत जोजन चार, मध्य विषै अंते इक धार ॥१३॥
ता परवत ऊपर मन लाय, श्री देवी को मन्दिर थाय। ता मंदिर पर कमल सुजान, कमल तीन कर्णिका मान ॥१४॥
कर्णिका पै सिंहपीठ सु जोय, सिंह पीठ पे जिन विंब सोय। विंब शीश पे सरिता आय, सपरस कर जल कुंड समाय ॥१५॥
कुँड तैं निकसी दक्षिणा आय, खग गिरि गुफा पहूँची जाय। किंनर की देली तलि होय, जोजन आठ फैलती सोय ॥१६॥
निकसी जाय पार कू सही, सरिता दोय गुफा तैं लही। पूरव पश्चिम गुफा मझार, दोय कुंड जानों निरधार ॥१७॥
एक नाम है उनमन सही, या में अद्भुत महिमा लही। बहुत भार जो वस्तू होय, तो भी नाहिं डबोवै कोय ॥१८॥
दूजी नाम निमगना सही, हलकी भी डूबै इस मही, जोजन व्यास दोय जुत होय, गंगा विषै मिलत है सोय ॥१९॥

दूजी गुफा मिश्र है नाम, नदी निकसने को है ठाम। फिर ये नदी जाय दधि मिलै, बहुते वेग नीर तें चलै ॥२०॥
नदी एक उत्तर दिश आय, अर्द्ध प्रदक्षिण नामि गिरि थाय। पश्चिम जाय समद में मिलै, और विशेष वाणि जिन भलै ॥२१॥

दोहा— इन आदिक हिमवान की, उत्पति छेदै सोय। जजों पांय तिन सिद्ध के, ता फल तिन सा होय ॥२२॥

ॐ ह्रीं हिमवान गिरि संवधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ इति ॥

॥हेमवत क्षेत्र संवंधी जघन्य भोग भूमि गतिछेदक अर्घ॥

छंद—अडिल्ल—

क्षेत्र हेमवत भोग भूमि शुभ जानिये, एक कोश तन आयु पल्य इक मानिये।
इक दिन पीछे खाय आवले सम नरा, या गतिछेदक देव जजों शिव सुख खरा ॥

ॐ ह्रीं हेमवत क्षेत्रे जघन्य भोग भूमि मनुष्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

याही हिमवत क्षेतर माही जानिये, नभचर जीव उपाय करम वश आनिये।
इन गति उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं शिव करतारजी ॥

ॐ ह्रीं हेमवत क्षेत्रे जघन्य भोग भूमि नभचर जीव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

जघन भोग भूमिया थल चर जीव है, उपजै विनसै आयु घने सदीव है।
इन गति उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं शिव करतारजी ॥

ॐ ह्रीं जघन्य भाग भूमि थलचर जीव उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही हिमवत क्षेत्र विकलत्रय ना कही, एकेंद्री जल आदि जीव उपजै सही।
इन गति उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं शिव करतारजी ॥

ॐ ह्रीं हेमवत क्षेत्रे जघन्य भोग भूमि विकलत्रय उत्पत्ति गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याही हिमवत क्षेतर ठाम सुजानिये, कल्प विरछ दश भेद महा सुख दानिये।
या गति उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं शिव करतारजी ॥

ॐ ह्रीं हेमवत क्षेत्रे जघन्य भोग भूमि दश प्रकार कल्प वृक्ष गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

छंद—हरिगीतिका

हेमवत शुभ क्षेत्र मांही, नाभि गिर इक जानिये। फिर तुंग जोजन एक सहसरु, और चालिस मानिये॥
है गोल ढोल अकार सुन्दर, खंध थावर जिय तनो। या गतिछेदक देव के पद, पूज तैं शिव सुर गिनों॥

ॐ ह्रीं हेमवत क्षेत्र जघन्य भोग भूमि संबधि नाभि गिरि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ६॥

चौपई—इत्यादिक हिमवत थल मांहि, जीव स्थानक जे अधिकाहिं। तिन में उत्पति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं हेमवत क्षेत्र संबंधि जीव उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ७॥

॥महा हिमवान पर्वत संबंधी जिन चैत्यालय पूजा॥

छंद—अडिल्ल

महा हिमवान जु परवत ऊपर जानिये, सिद्ध कूट पे जिनथल जिन बिंब मानिये।
सुर खग तो वहां जाय बिंब पूजा करे, हम यहां भावन भाय थापि पूजन धरे॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान गिरि संस्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट्

ॐ ह्रीं महाहिमवान गिरि संस्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ. ठः

ॐ ह्रीं महाहिमवान गिरि संस्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरण

छंद—हरिगीतिका—लेय निरमल नीर याही, थान के द्रह को सही। धरि कनक झारी आप करले, भक्ति को मनसा ठही॥
गिरि महा हिमवन देव जिन थल, पूजि हूँ मन लायजी। तिस फलै जामन मरण नासै, और फल कहा गायजी॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान् शिखरस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं॥ १॥

बावनो चंदन सु घसि के, नीर सुभग मिलाइये। ले आपने कर सुभग वासन, हरष के गुण गाइये॥
गिरि महा हिमवन देव जिन थल, पूजि हूँ मन लायजी। मैं जजों चंदन पाप जिनके, ताप भव के जायजी॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान् शिखरस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं॥ २॥

…य अक्षत ऊजले शुभ, खंड विन सुख दायजी। धरि थाल कंचन हुलस मन वच, काय सुध कर लायजी॥

गिरि महा हिमवन देव जिन थल, पूजि हूँ मन लायजी। ता फलै पदवी अखय पावे, और कहा अधिकायजी ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुर द्रुम के सु आने, शुद्ध वरन सुहावने। अलि मोह वसि हो गैल तिनकी, भ्रमै अति सुख दावने ॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, थान की पूजा करों। ता फलै योद्धा काम अरि को, खेद विनशै दुख हरों ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन विंबेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

तुरत कृत चरु घिरत मिष्टा, दुग्ध लोन मिलाइये। इन आदि षट् रस पूर सुन्दर, रसन अति सुख दाइये ॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, थान की पूजा करों। तिस फलै राग अनादि को संग, भूख नामक परिहरों ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन विंबेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीप मणिमय नाश तम को, थाल भर कर लाइयो। धरि हरप हिरदै मानि धन भव, देव जिन गुण गाइये ॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, थान की पूजा करों। ता फलै दुखदा मोह दर्शन, सहित मिथ्या तम हरों ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन विंबेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

धूप दश विधि गंध दायक, अगनि में जारों सही। तिस धूम नभ में फैल चहुँ दिश, गंध शुभ कीनी मही ॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, विंब की पूजा करों। ता फलै जारों कर्म आठों, खेद विन शिव तिय वरों ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन विंबेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

फल लोंग श्रीफल सुभग खारक, भले जान विदामजी। इन आदि लाय मनोज्ञ फल अति, महा सुख के धामजी ॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, विंब की पूजा करों। ता फलै सुख तैं होय शिव थल, कर्म को पुनि ना धरों ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन विंबेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

उदक चंदन अक्षत पुष्प रु, चरू दीप वखानिये। फिर धूप फल जुत द्रव्य आठों, मेल अर्घ जु आनिये ॥
गिरि महा हिमवन शीश ऊपरि, थान जिन राजै सही। ते जजों मन वच काय सुध करि, होय ता फल शिव मही ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन विंबेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

छंद—अडिल्ल—

शीश महा हिमवन के जिन थल सो कहे, तिस थल के हैं विंब भवन के अघ दहे।
मैं भी अरघ बनाय गाय गुण आइयो, पूजों हरप बढाय हरप बहु पाइयो ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन शिखरे जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घ छंद—पद्धरि

गिरि महा जु हिमवन शीश थान, तहँ सिद्ध कूट जिन गेह मान। तिन में जिन विंब सु पापहार, मैं पूजों तिन पद अर्घ सार ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन शिखरे सिद्ध कूट जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

है महा जु हिमवन शीश जोय, सिध कूट महा उन्नत सु होय। तामें उत्पति हर देव सार, तिनके पद पूजों पाप टार ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन शिखरे सिद्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

गिरि महा हिमवन की कूट जोय, तिस नाम महा हिमवान होय। तामें उत्पति हर देव सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन शीर्षे महाहिमवान कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

गिरि महा हिमवन की कूट जोय, तिस नाम महा हिमवान होय। तिन वासी सुर गति छेद सार, तिनके पद पूजों पाप जार ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान शीर्षे महाहिमवान कूटवासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

महा हिमवन परवत शीश जान, है कूट हेमवत नाम मान। तामें उत्पति हर देव सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय।

ॐ ह्रीं महा हिमवान् शिखरे हेमवतनाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

गिरि महा जु हिमवन कूट जान, तिस हेमवंत शुभ नाम मान। ता वासी सुर गति छेद सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं हिमवान गिरि शिखरे हिमवान कूटवासीदेव गति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

गिरि महा हिमवन पै कूट जान, है नाम रोहिता सुभग मान। तामें उत्पति हर देव सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवान गिरिशिखरे रोहिता कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

गिरि महा हिमवन के शीश जान, तिस रोहित कूट सु नाम जान। ता वासीसुर गति छेद सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवान शिखरे रोहिता कूटवासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

गिर महा हिमवन के शीश जान, है हरी कूट तिस नाम मान । तामें उत्पति हर देव सोय. तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवान शिखरे हरिकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

गिरि महा हिमवन के शीश जान, है हरी कूट शुभ नाम मान । ता वासी सुर गति देव सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवान शिखरे हरिकूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

गिर महा हिमवन के शीश सार, हरि कांत कूट है सुभ अगार । तामें उत्पति हर सिद्ध होय, ताके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन शिखरे हरिकांत कूट गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

गिर महा हिमवन के शीश जेय, हरि कांत कूट है सुभग तेय । तिन वासी सुर गति छेद सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवान शिखरे हरिकांत कूटवासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२ ॥

महा हिमवन गिरी के शीश जान, हरि वर्पक नामा कूट मान । तामें उत्पति हर देव सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवान शिखरे हरि वर्पकनाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १३ ॥

गिरी महा हिमवन के शीश जान, हरि वर्पक नामा कूट मान । तिस वासी सुरगति छेद सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन शिखरे हरि वर्पक नामकूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

महा हिमवन गिरि के शीश जेय, वैडूर्य नाम है कूट तेय । तामें उत्पति हर देव होय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवान शिखरे वैडूर्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

गिरि महा हिमवन के शीश सार, वैडूर्य कूट है जोग धार । ता वासी सुर गति छेद सोय, तिनके पद पूजों पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन शिखरे वैडूर्य कूटस्थित देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छंद—अडिल्ल

महा हिमवन गिरि ऊपर शुभ मूरति बने, कूट आठ तिन नाम सबै भिन भिन ठने ।
तिनके वासी देव और सब थल सही, तिनमें उत्पति छेद जजे हो शिव मही ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन गिरि संबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

महा हिमवन गिरि शीश कुंड जवरो सही, महा पद्म तिस नाम बड़ी तिन की मही ।

या की उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढायँ जजों हित कारजी ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन गिरि शिखरे महापद्मद्रह गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

महा पद्म के माहि कमल सुख दायजी, जोजन दोय सु व्यास तुंग वहु पायजी ।
यामें उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं मन वच सारजी ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन शिखरे महापद्मद्रहे कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

महा पद्म के कमल ऊपरैं है सही, ह्री देवी को वास रतन मय तिन मही ।
याकी उत्पति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाय जजों हित कारजी ॥

ॐ ह्रीं महा पद्मद्रहे कमल वासिनी ह्री देवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

महा पद्म द्रह मांहि कमल मुख एक है, ताही के परिवार कमल बहुते कहैं ।
तिन की उत्पति छेद भये भव पारजी, अरघ जजों तिन चरण महा सुख कारजी ॥

ॐ ह्रीं महा पद्मद्रहे मुख्य कमल सबंधि अनेक कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१॥

ये ही जो परिवार कमल ऊपर सही, ह्री देवी परिवार देव वसि है सही ।
इनकी उतपति छेद भये भव पार जी, तिन पद अर्घ चढाऊं शिव हित कारजी ॥

ॐ ह्रीं महा पद्मद्रहे ह्री देवी परिवार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

महा पद्म द्रह मांहि थकी निकसी सही, नदी रोहिता नाम महा जल की मही ।
ताकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं मन वच सारजी ॥

ॐ ह्रीं महा पद्म ह्रदतः रोहित नदी उतपत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २३ ॥

हरि कान्ता है नाम नदी को जानिये, महा पद्म तें चली घनी जल खानिये ।
या की उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ चढाऊं मन वच सारजी ॥

ॐ ह्रीं महा पद्म ह्रदत हरिकान्ता नदी उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥

छंदगितिका—महा हिमवन कुंड तापर, तुंग परवत सोहनो। तिस मांहि ते द्वय चलै नंदी, कमल करि मन मोहनो।
कमल ऊपर देव वासो, और वहु उपमा कही। या गति छेदक देव के पद, पूजते हों शिव मही ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन गिरी संबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— महा हिमवन गिरि शीश जे, कहे जिनेश्वर थान। तहं पूजन सुर खग करें, हम यहां भावन जान ॥ १ ॥

छंद वेसरी

महा हिमवन गिरि अति विसतारो, दंडा कार भूमि पे धारो। जोजन द्वय शत तुंग वतायो. हरि भू दोनों व्यास सु थायो ॥ २ ॥
ता परि महा पद्म हद जानो, दोय सहस लंबो तिस मानो। एक सहस जोजन को व्यासो, जोजन वीस गहरता जासो ॥ ३ ॥
तातैं जुग नंदी उपजाई, पूरव पश्चिम की दिशि धाई। कमल तहां द्वय जोजन व्यासो, और कमल वहु है तिस पासो ॥ ४ ॥
ऊपर घर देवन के गाये, कूट नाम सों देव वताये। इन गति छेद सिद्ध पद पाई, तिनके पद मैं जजों सु भाई ॥ ५ ॥
पहला सिद्ध कूट है भाई, तामें जिन चैत्यालय थाई। रतन विंव विन किये वताई, महा मनोग्य थान जुत थाई ॥ ६ ॥
सुर खग तो यहां पूजन ठाने, हम से यहां पर भाव न आने। ता करि ही यहां पूज्य उपारें, मन वच काय देव गुण गावे ॥ ७ ॥
ताकी थुति करि पाप नसावे, अनुक्रम ते सव कर्म खिपावे। मैं तो शक्ति हीन अति भाई, तातैं घर वैठे थुति गायी ॥ ८ ॥
पुण्यवान प्रत्यक्ष हि जावे,महा हिमवन पै जिन हि जिजावै। तिनके फल की कहु का कहिये, ता फल तो सहजैं विलसहिये ॥ ९ ॥
और वहुत रचना गिरि केरी, कहते वुद्ध कहां हैं मेरी। कह तो केवलज्ञानी पावै, कह प्रत्यक्ष देव वन आवै ॥ १० ॥
ऐसो महा हिमवन-गिरि भाई, रूपा सम तिस वर्ण सु थाई। जम्बू द्वीप विषय इहां जानो, मेरु दखिण दिश थान वखानो ॥ ११ ॥
दोहा—महा हिमवन गिरि सुभग थल, रचना अधिक अनूप। या सम्बंध उतपति सकल, छेद जजों सुख रूप ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं महा हिमवन पर्वत संबंधि जयमाला पूर्णार्घं ॥ इति ॥

॥ हरि क्षेत्र गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—हरि क्षेत्र दीरघ विस्तार, भूमि मनोज्ञ सचित जिय धार। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हरिक्षेत्र भोगभूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

या हरि भोग भूमि के मांय, एक अक्ष जिय जल तन पाय। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हरिक्षेत्र भोगभूमिसंबंधि जलकायजीव उत्पत्ति गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

हरि क्षेत्र विकलत्रय नाहिं, भू चर पंचेन्द्रिय जिय थाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हरिक्षेत्र भोगभूमि संबंधि-भूचर पचेन्द्रिय उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही हरि क्षेतर के ठाहि,जुगल सहित नभ चर जिय पाहि। यामें उतपति छेदक सोय,तिन पद अर्घ जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं हरिक्षेत्रे नभचर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याही हरि क्षेतर है सार, उपजै जुगल महा गुण धार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं हरिक्षेत्र सबधि मनुष्य गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही भोग भूमि थल मांहि, दश विध कल्प वृक्ष सुख दाहिं। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं हरिक्षेत्र संबधि दश प्रकार कल्प वृक्ष गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

छंद गीतिका—याहि हरि खेतर सुमधि में,नाभि गिरि सोभै सही। तुंग जोजन सहस भीसम, ढोल आकृति तिस मही ॥
तहां और रचना घनी सुखदा, वाणि जिनतैं जानिये। या गतिच्छेदक देवके पद, पूजितैं सुख आनिये ॥

ॐ ह्रीं हरि क्षेत्र मध्यभागे नाभि गिरि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

आयु पल्य दो काय जानो, कोश दोय बताइये। दिन दोय पीछे खाय भोजन, बहेडा सम गाइये ॥
हित परसपर बहु रूप बुधिवल, पृथक विक्रय जानिये। या गतिच्छेदक देव के पद पूजि फल अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं हरिक्षेत्र भोगभूमि संवधि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

॥ निषधं पर्वत पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

निपध कुलाचल शीश थान जिनके सही, तिन में बिंब जिन राज मोक्षकी है मही।
सुर खग तो तहां जाय पूजने को लहैं, हम यहां भावन भाय थापि सब अघ दहैं ॥

ॐ ह्रीं निषधपर्वतसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्रावतरावतर।
ॐ ह्रीं निपधपर्वतसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं निपधपर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद अडिल्ल—

क्षीरोदधि को नीर महा निरमल सही, कनकझारिका मांहि लेय सुखकी मही।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके, पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

घसि के बावन चंदन नीर मिलाइयो, रतन पियाले धार आप कर लाइयो।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके, पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

मुक्ता फल से उज्वल अक्षत खंड विना, अपने कर जुगलेय भक्ति जुत चित ठना।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके, पूजों मन वच काय पाय सुख भेवके ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचल सम्बधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगंध अपार रंग सुन्दर सही, ले अपने कर मांहि भ्रमर गुंजत रही।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देव के, पूजों मन वच काय पाय सुख भेवके ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचल संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

षट रस जुत नैवेद्य तुरत बनवाइके, उज्वल भावन लाय लेय हरपाय के।

निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके, पूजों मन वच काय पाय सुख भेवके ॥

ॐ ह्री निपध कुलाचल सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन बनवाय महा सुख उर सही,कनक थाल भरलाय नाश तम के सही ।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके,पूजों मन वच काय पाय सुख भेवके ॥

ॐ ह्री निपध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

दशधा धूप मिलाय गंध करतारजी, ले अपने कर मांहि अगनि महि जारजी ।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके, पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के ॥

ॐ ह्रीं निपधकुलाचलसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी सारजी, खारक आदिक और लेय फल भारजी ।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके, पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत प्रसून चरुले सही, दीप धूप फल लेय अरघ ठानो कही ।
निपध कुलाचल शीश थान जिन देवके, पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के ॥

ॐ ह्रीं निपधकुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

घाल जोगीरासा—नीपध पर्वत शीश ऊपरै, श्री जिन थान बतायो, रतन मई तहां बिंब विराजै, बहुतन को अघ ढायो ।
सुर खग पूजि लहै फल भव को, पूज तहां कर भाई, मैं भी मन वच काय भाव तें, पूजा की विधि ठांई ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचलसम्बन्धि श्री.जिन चैत्यालयेभ्य अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई–निपध कुलाचल पैं सिधकूट, तिस पै जिन चैत्यालय छूट । तिन पूजे सब अघ नस जाय, इमि लखि पूजों अरघ चढाय ॥

ॐ ह्रीं निपधकुलाचले सिद्धकूट जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

निपध कुलाचल शीश सुजान, सिद्धकूट अति तुंग बखान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचले सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

निपध कुलाचल ऊपर जेय, निपध कूट ही जानों तेय । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निषधकुलाचले निषधनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

या ही निपध कूट पर सही, देव रहै अति सुख की मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचले निषध कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

निपध कुलाचल शीश सुजान,हरि वर्षक इक कूट जु मान । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपधकुलाचले हरिवर्षक कूटवासीगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

या हरि वर्प कूट पर सही, देव रहै अति सुख की मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपधकुलाचले हरिवर्पककूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

निपध कुलाचल ऊपर सही, पूर्व विदेह कूट की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री निपध कुलाचले पूर्वविदेह कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

पूर्व विदेह कूट के मांहि, देव बसै सब ही सुख पाहि । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले पूर्व विदेह कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

निषध कुलाचल ऊपर जान, है हरि नाम कूट सुख दान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचले हरि नाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या हरि कूट ऊपरै सही, देव रहैं लख के सुख मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले हरि कूट स्थित देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

निपध कुलाचल शीश मझार, कूट नाम धृत है सुख कार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके मद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले धृत नाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

या ही धृता कूट के मांहि, देव रहैं नाना सुख पाहि । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले धृता नाम कूट स्थित देव गतिछेदक जिनेभ्यो ॥ १२ ॥

निपध कुलाचल शीश मझार, सीतोदा कूट सु प्यार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले सीतोदा कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

या सीतोदा कूट सुजान, देव रहै अति आनंद मान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले सीतोदा कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

अपर विदेह कूट को जान, निपध कुलाचल ऊपर मान, । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले अपर विदेह नाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

अपर विदेह कूट के शीश, देव रहै तहँ बिसवा बीस । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले अपर विदेह कूट स्थित देव गतिछेदक जिनेभ्योअर्घम् ॥ १६ ॥

निपध कुलाचल ऊपर सार, रुचिक नाम है कूट जु धार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले रुचिक नाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

या ही रुचिक कूट के मांहि, देव रहै नाना सुख पाहि । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुलाचले रुचिक नाम कूट स्थित देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

छंद-पद्धरि

या निपध कुलाचल शीश जान, नव कूट कहे तहां देव मान । इन की गति छेदक देव सोय, तिनके पद पूजों हर्ष खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध पर्वत संबंधि नव कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

चोपाई—निपध कुलाचल ऊपर जान, नाम तिगछ द्रह जल खान । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निपध कुचालले तिगिंछ ह्रद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

द्रह तिगिंछ ते उत्पति भई, हरित नदी पूरव को गई । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचले तिगिंछ ह्रदतः हरित नदी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

तिगिंछ कुंड तैं उत्पति जान, सीतोदा नंदी को मान । या की उत्पति छेदक रोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचले तिगिंछ ह्रदत सितोदा नदी उत्पत्ति छेदकजिनेभ्यो अर्घम ॥ २२ ॥

कमल तिगिंछ कुंड में जान, चव जोजन ऊंचो जल मान । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं तिगिंछ कुंडे चव योजन उन्नत कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

याही कमल विपै जो रहै, देवी धृति नामा सव कहै । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं तिगिंछ कुडे कमल वासिनी धृति देवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

द्रह तिगिंछ कमल लघु और, है परिवार जाति के जोर । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं तिगिंछ ह्रदे मूल कमल परित अनेक लघु कमलानि गतिछेदक जिनेभ्गो अर्घम् ॥ २५ ॥

इन परिवार कमल के मांहि, देव वसे देवी चर ठाहि । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं तिगिंछ ह्रदे परिवार कमल वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

छंद गीतिका—निपध परवत ऊपरै सु, तिगिंछ कुंड वखानिये, वह चजी तहंते दोय नंदो, पूर्व पश्चिम जानिये ।
तिस कुंड मांही कमल तिनपै, देव देवी सुख भरैं, इन गतिच्छेदक देव के पद, पूजते सव अघ झरैं ॥

ॐ ह्रीं निपध पर्वत सवधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—निपध कुलाचल शीश पे, देव जिनेश्वर थान । देव पूजि सुखले वहां, मैं पूजों तजि मान ॥ १ ॥

चाल मुनयानंद—
निपध पर्वत तनो नाम शुभ जानिये, चारसौ जोजना तुंग शुभ मानिये ।
व्यास हरि क्षेत्रते दुगुन जानों सही, ऊपरें कुंड तिगिंछ जल की मही ॥ २ ॥

दोय नंदी तनो व्यास तामें ठयो, पूर्व पश्चिम दिशा नीर नंदी वह्यो ।
नाल नंदी निकसने तनी जो कही, नाक मुख नयन जुग गाय मुखसी सही ॥ ३ ॥
कुंड दीरघ सहस च्यार जोजन भन्यो, व्यास दो सहस जोजन तनो इम भन्यो ।
जान चालीस जोजन गहर सारजी, कमल ताके विषै घने विसतार जी ॥ ४ ॥
चार जोजन कमल व्यास जानों सही, तुंग भी जल थकी च्यार जोजन कही ।
देवि को वास मंदिर सहित जानिये, और परिवार के कमल बहु मानिये ॥ ५ ॥
मूल के कमलतें अर्ध तुंग व्यास है, देवी परिवार के देव को वास है ।
रतनमय कमल सब हरित मय काय है, ध्रुव सब काल चय ताहि कभूं पाय है ॥ ६ ॥
और नव कूट या पर्वत पै जानिये, प्रथम सिद्ध कूट पै देव जिन थानिये ।
निषध दूजो कहूं कूट सुखकारजी, तीसरो कूट हरिवर्ष दुखहारजी ॥ ७ ॥
पूरब विदेह चवथो कह्यो कूटजी, पांचमो हरि जान कूट दुख छूटजी ।
धृति नामा कह्यो कूट पष्टम सही, सातमों कूट सीतोदा सुख की मही ॥ ८ ॥
आठमों नाम अपर विदेह कह्यो कूटजी, रुचक नवमों कह्यो कूट दुख छूटजी ।
कूट सब गोल हैं रतन तने जानिये, देवके वास इन ऊपरै मानिये ॥ ९ ॥
कूट परमान तुंग आय परवत थकी, भाग चौथो कहै रीति ऐसे धकी ।
इनै आदि और रचना घनी जानिये, निषध गिरि सकल में दीर्घ गिरि मानिये ॥ १० ॥

दोहा— निषध कुलाचल में सही, रचना थान अपार । तिन गति छेदक देवको, जजों अरघ कर धार ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं निषधपर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालय जयमालार्घम् ॥ इति ॥

॥ विदेह क्षेत्रसंबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल— क्षेत्र विदेह सुथान जान जिनदेवके, बिंब तहां मणि मई भले जिन सेवके ।

तिनको पूजे भव्य पुण्य बहुतो लहै, हम यहां भावन भाय थापि जजि अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर, आह्वाननम्

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ वषट् सन्निधिकरणम् ।

छंद गीतिका— कनकझारी विषै निरमल, नीर भरकर लाइयो, गंधयुत जल क्षीरनिधि, को मुखै जिन गुण गाइयो ॥
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान शुभ राजै सही । ते जजों मन वच काय शुभ तैं, जनम जुर मिटि है कही ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

घसि बावनो चंदन सुजलतें,सुभग सुरभित जो कह्यो । करि काय मन वच शुद्ध अपने,भगति कर जुगकर लह्यो ॥
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान शुभ राजैं सही । ते जजों अपने सुफल काजे, जनम तप ता फल दही ॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र सम्बन्धि जिनालयेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत अखंडित धवल सुन्दर, नयन को सुखदायजी । गंधजुत कर शुद्ध लेकर, मैं हरप बहु पायजी ।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजै सही । ते जजों मन वच काय शुभतैं, अक्षय फल कारज कही ॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र सम्बन्धि जिनालयेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

पुष्प शुभ बहुरंग जुत ले, आपने कर लाइयो । वसि नासिका अलि शोर करते, मानु जिन गुण गाइयो ॥
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजें सही । ते जजों मन वच काय शुभतैं,मदन बल नाशै कही ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिनालयेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद पट् रस पूर वांछित, बहुत विधि के लीजिये । भरि कनक थाली भगति जुत हो, नरम चित को कीजिये ॥
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजै सही । ते जजों मन वच काय शुभतैं, भूख भय नाशै कही ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र संबधि जिन चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन से कनक पातर, धार बहु ले आइयो । तम मोह नाशै ज्ञान शुभ हो, भाग मिथ्यातम गयो ।

खेतर विदेह विपै जिनेश्वर,थान जिन राजै सही । ते जजों मन वच काय शुभतैं, अज्ञान नाशन की मही ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सवन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो दीप० ॥ ५ ॥

धूप दश विधि गंध जुत ले, आदि अगर मिलाइयो । ले आपने कर मांहि सुन्दर, हरप के गुण गाइयो ।
खेतर विदेह विपै जिनेश्वर, थान जिन राजें सही । ते जजों मन वच काय शुभतें, कर्म दुख मेटन कही ॥

ॐ ह्री विदेहक्षेत्र सवधि जिन चैत्यालयेभ्यो धूप० ॥ ७ ॥

फल जाति श्रीफल लोंग खारक, और लेय विदाम जी । पिस्तादि वहुत मिलाय के मैं, और फल शुभ कामजी ।
खेतर विदेह विपै जिनेश्वर, थान जिन राजैं सही । ते जजों मन वच काय शुभतैं, मोक्ष फल पावन कही ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सवधि जिन चैत्यालयेभ्यो फल० ॥ ८ ॥

उदक चंदन और तंदुल, पुष्प चरु दीपक धरूं । वर धूप निरमल फल विविध, कर एकठे पातक हरूं ।
खेतर विदेह विपै जिनेश्वर, थान जिन राजे सही । ते जजों मन वच काय शुभतैं, फलै पंचम गति मही ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र संवधि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ० ॥ ६ ॥

छंद अडिल—
क्षेत्र विदेह मझार थान जिनके सही, तिनमें विंब अनूप महा सुख की मही ।
तिन पद द्रव्य मिलाय अर्घ वसु लाइयो, मन वच तन कर पूजि भले गुण गाइयो ।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र सवधि जिन चैत्यालयेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

छंद वेसरी—क्षेत्र विदेह विपै जिन गेहा, तिनमें विंब जिनेश्वर जेहा । तिनकी पूजा सुर खग ठानै, हम यहां उर में भावन आनै ॥
तुंग घने चैत्यालय होई, महिमा सवको भापै जोई । पुण्य उपावन के शुभ थाना, पूजा फल तें हो अघ हाना ॥ २ ॥
धन्य तिन्हें जो उस थल जावै, पूज्य जिनेश मनुष्य फल पावै । किये पाप अगले सब खोवै,अनुक्रम तें शिवको सुख जोवै ॥३॥
क्षेत्र सकल ही उज्वल जानो, नर धरमी सेवक जिन मानो । जागि जागि चरचा जिन वानी, करै पाप परणति की हानि ॥४॥

विनय ठान जिन पूजै भाई, या भव परभव में सुख दाई। अष्ट द्रव्य उज्वल कर लावै, तातैं भाव प्रफुल्लित थावैं ॥ ५ ॥
सदा काल मुनि की मुख वानी, सुनिये शुभ क्षेत्र में कानी। जिन थल जाय जती नित सेवे, अघ हरके सुख संचय लेवे ॥६॥
नित प्रति जिन उच्छव तहां लहिये, कवि मुख महिमा कवलों कहिये। मुख धुनि जे जिन के गुण गावे, भले कान जे सुर तसु भावे ।७॥
नैननि सों गुरु जन अवलोवै, मन सुध सो विकलप जिन होवै। अंगनि से जिनके पद नइये, इत्यादिक शुभ तहां सब लहिये ॥८॥

दोहा— महिमा क्षेत्र विदेह की, कहै कहां लों कोय। जिन शास्वत वरतै तहां, मैं पूजों मद खोय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं विदेह संबंधि जिनालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं।

पूर्व विदेह क्षेत्र पूजा

छंद अडिल्ल— पूर्व विदेह नदी दक्षिण उत्तर सही, षोडश जानि विदेह देव थल सी मही।
जिनवर के जहाँ थान भविक पूजा करै, हम इहां भावन थापि आपने अघ हरै ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर, संवौषट्।
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ.।
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ, सन्निधि करणम्।

चौपई—निरमल उदक लेय कर मॉहि, निरमल ही निज भाव कराहि। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

चंदन नीर गंध घसि लाय, भव तप हरने को उमगाय। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिन चैत्यालयेभ्यो चदनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल धोय अनूप, देखत अक्षय नारी रूप। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिन चैत्यालयेभ्यो अक्षतं ॥ ३॥

फूल सुगंध वरन अधिकाय, काम नाश को उद्यम लाय। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिन चैत्यालयेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, भूखनाश को उद्यम लाय। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रतन सुदीपक ले निज हाथ, तम अज्ञान नाशन शुभ साथ। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

अगर कपूर तनी कर धूप, दाहन अघ होने सुख रूप। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम अनादि, सो फल चहि करने अघ वादि। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसम्बन्धि जिनालयेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत अरु फूल, लेय अर्घ करि जिन अनुकूल। पूर्व विदेह जिते जिन गेह, पूजों मन वच तन करि नेह ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसम्बन्धि जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल—
पूर्व विदेह विषै जिनवर के थान हैं, पूजत पुण्य उपाय लहै शुभ ज्ञान हैं।
या सुन मन ललचाय भाव शुभ भावना, अर्घ जजों जिन पाय सुभग उर ध्यावना ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसम्बन्धि जिनालयेभ्यो महार्घं ॥ १० ॥

॥ प्रथम विदेह क्षेत्र अर्घ ॥

[सुदर्शन मेरू की पूर्व दिशा मे नदी के उत्तर तट पर भद्रशाल वन की वेदी से लगता हुआ विदेह क्षेत्र है। इसके पास से प्रथम विदेह जानना चाहिये। यहा से परिक्रमावत चैत्यालय है। उनके प्रत्येक अर्घ निम्न लिखित हैं]।

पूर्व विदेह नदी मधि जानि, पंच मलेच्छ धर्म तहँ हानि। इन गति छेदक देव जु सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुपूर्वदिशायां विदेहक्षेत्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

याहि विदेह क्षेत्र में जान, पंच मलेच्छ धर्म तहँ हानि। इन गति छेदक देव जु सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुपूर्वदिशायां विदेहक्षेत्रस्य पंच म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

इनहि मलेच्छ खंड में जेह, वृषभाचल पर्वत हैं तेह। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशायां म्लेच्छखण्डस्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥
या ही खंड विदेह मझार, विजयारध पर्वत है सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशायां विदेहक्षेत्रस्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥
या ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी उत्तर मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशायां विदेहक्षेत्रस्थितदक्षिणश्रेणि विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥
या हि विदेह खगाचल जान, ताकी उत्तर श्रेणी मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशायां विदेहक्षेत्रस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥
या ही विजयारध पै जान, सिद्ध कूट इक उत्तम मान। या में उतपति छेदक सोय तिन के पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पूर्व दिशाया विदेह क्षेत्र स्थित विजयार्द्धस्य सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥
इस ही सिद्ध कूट पै जान, जिन मंदिर जिन से बिंबमान। तिन पद अर्घ जजों थुति लाय, ता फल उत्तम थानक आय ॥
ॐ ह्रीं प्रथम विदेह क्षेत्रे विजयार्द्धस्य पर्वत सम्बन्धि सिद्ध कूट जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥
या ही विजयारध पै जान, अन्य कूट है बहु गुण खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह क्षेत्रे विजयार्द्धस्यान्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥
इन ही कूटन पे सुख खान, देव निवास भले गुण थान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथम विदेह संबधि विजयार्द्ध कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥
पूर्व विदेह उत्तर दिशजान, प्रथम विदेह आर्य खंड मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य आर्य खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ११ ॥
या ही आरज खंड मझार, खाडी एक समुद आकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य प्रथम विदेहे आर्य खडे ह्रद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

पूर्व विदेह उत्तर दिश जान, प्रथम खंड़ चक्री पुरमान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य उत्तरदिशायां चक्री सवधि खेमानाम नगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

पूर्व विदेह उत्तर दिश जान, कच्छा देश खंड पट मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य उत्तरदिशि कच्छ देश गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

याही कच्छा देश मझार, रक्ता नाम नदी को सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे कच्छ देशे रक्ता नाम नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

पूर्व विदेह उत्तर दिश जान, रक्तोदा नंदी तहं मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य उत्तर दिशाया रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

कच्छ देश संबंधी देव, मगधादिक जिनवर के सेव । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य कच्छ देश सबंधि मागध देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

॥ सुकच्छा देश संबंधी अर्घं ॥

चोपई—प्रथम मेरु पूरव दिश सही, उत्तर देश सु कच्छा मही । या में उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह सवधि सुकच्छादेश गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

याहि सु कच्छ देश के मांहि, पंच मलेच्छ धर्म है नांहि । या में उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेह सुकच्छदेशे पंच म्लेच्छ खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

या हि मलेच्छ खंड में जान, वृषभाचल गिरि उत्तम थान । या में उतपति छेदक सोये, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुकच्छदेशे वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

या हि सुकच्छा देश मझार, विजयारध गिरि जानों सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुकच्छ देशे विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

याही विजयारध के माहिं, दक्षिण श्रेणी उत्तम ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

या ही खग चल पै शुभ थान, उत्तर श्रेणी में शुभ मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

या ही विजयारध के शीश, कूट कहे सुन्दर जगदीश। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे विजयार्द्धस्य शिखरे कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

विजयारध पै कूट बताय, तिन पै देव बसै सुख पाय। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे विजयार्द्धस्य कूटवासीदेव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

या ही विजयारध पे जान, सिद्धकूट पे जिनको थान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छदेशे विजयार्द्ध उपरि सिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

या हि सुकच्छ देश में जान, आरज खण्ड महा सुख खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे आर्यखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

या हि सुकच्छा समंधी जान, उप समुद्र महा जलखान। या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे उपसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

याहि सुकच्छादेश सुमान, खेमपुरी चक्री थल मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छदेशे आर्यखडे चक्रीसम्बन्धी खेमपुरीनगरी गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

जानि सुकच्छ देश मंझार, रक्तानंदी जल की धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छदेशे रक्तानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

याहि सुकच्छा देश मझार, रक्तोदा नन्दी सुखकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

याहि सुकच्छा देशमझार, है अद्भुत जिन गृह सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशसम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

या हि सुकच्छदेश में जान, वासी मगधादिक सुर मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशे मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

॥ महा कच्छ देश गतिछेदक अर्घ ॥

चोपई—प्रथम मेरु पूरव दिश जान, उत्तर दिश महाकछ थल मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसम्बन्धि महाकच्छादेश गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

या ही महाकच्छ थल मांहि. खंड मलेछ धर्म तहं नाहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहसम्बन्धि महाकच्छादेशस्थितम्लेच्छखंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

महाकच्छ अन आरज खंड, तिनमें वृपभाचल सुख मंड । या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाकच्छादेशसम्बन्धि वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

या ही महाकच्छ थल मांहि, विजयारध गिरि उत्तम ठांहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाकच्छादेशसस्थित विजयार्द्धगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

या ही विजयारध के सही, दक्षिण श्रेणी की शुभ मही । या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाकच्छदेशे विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

यह महा कच्छ थल खग गिरा, उत्तर दिश तहां शोभा भरा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाकच्छदेशे विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ३९ ॥

या ही विजयारध के शीश, कूट बसै है सुर खग दीस । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाकच्छादेशे विजयार्द्धस्य कूट सस्थित देव गति छेदक जिनेभ्यो अघम् ॥ ४० ॥

या ही विजयारध पे जान, सिद्धकूट पे जिन थल मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाकच्छादेशे विजयार्द्धस्य सिद्धकूट जिनालयेभ्यो गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

इस महा कच्छ देश मँझार, आरज खण्ड सबनि में सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाकच्छादेशे आर्यखण्ड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

इस महा कच्छ देश मँझार, उपसमुद्र महा जलकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महाच्छादेशे उपसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

या ही महा कच्छ मँझार, चक्री वसन तनों पुर सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहमहाच्छादेशे चक्रीयोग्यअरिष्टा नगर। गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

इस महाकच्छ सु देश मझार, रक्तानन्दी जल की धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्री पूर्वविदेहमहाकच्छादेशे रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

इस महाकच्छा देशमझार, रक्तोदा नन्दी इकसार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहमहाकच्छादेशे रक्तोदानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

या महा कच्छादेश मझार, है अद्भुत जिन गृह सुखकार । या में उतपति छेदक सोय जिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहमहाकच्छादेशे श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥

याहि महा कछ देश मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहमहाकच्छादेशे मगधादिकदेवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

॥ वच्छकावतीदेश गतिछेदक अर्घ ॥

मेरु पूर्व कछकावति देश, नन्दी उत्तर तट शुभ भेस । या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेहेकच्छकावतीदेश गति-छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

मेरु पूर्व कच्छकावती धारा, तामें खंड मलेच्छ सु खरा। या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे कच्छकावतीदेशस्थितम्लेच्छखंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

मेरु पूर्व कच्छकावति देश, तामें वृपभाचल शुभ वेश। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विदेहे कच्छकावतीदेशस्थित वृपभाचलगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

मेरु पूर्व कच्छकावति देश, ताको विजयारध शुभ वेश। या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं मेरुपूर्व कच्छकावतीदेश विजयार्द्ध गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

या ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी है शुभ थान। या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे कच्छकावतिदेशे विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

या ही विजयारध की सार, उत्तर श्रेणी सब सुखकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावतीदेशे विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५४ ॥

या ही विजयारध पै जान, कूट कहे शुभ तुंग बखान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावतीदेशे विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५५ ॥

इन ही कूट ऊपरैं जेय, देव बसें सुख दायक तेय। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहेकच्छकावतीदेशे विजयार्द्धस्य कूट संबंधि देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५६ ॥

या ही विजयारध पे जान, सिद्ध कूट पे जिन थल मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहकच्छ कावती देशे विजयार्द्धस्य सिद्ध कूट जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ ५७ ॥

मेरु पूर्व कच्छकावति देश, तहं आरज खंड उत्तम वेश। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छ कावती देशे आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५८ ॥

या ही कच्छकावती जान, ऊपर जल सागर की खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावती देश सम्बन्धि उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

या ही कच्छकावती सार, चक्री पुर अरिष्ट दुखहार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावती देशे चक्री सम्बन्धि अरिष्ट पुर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

या ही कच्छकावती जान, रक्ता नंदी जल बहु मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावती देश संबंधि रक्ता नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

या ही कच्छकावती सार, रक्तोदा नंदी जलधार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावती देश संबंधि रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ६२ ॥

या ही कच्छकावती सार, है अद्भुत जिनगृह सुखकार। तिनमें बिंब विराजें सही, सो मैं पूजों मन वच ठही।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावती देश स्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ ६३ ॥

मेरु पूर्व कच्छकावति जान, देव रहैं तिस थानक मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह कच्छकावती देशे मागधादि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

॥ आवर्ता देश गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—मेरु पूर्व आवर्ता देश, सीता नंदी उत्तर जेस। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह आवर्ता देशे गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६५ ॥

या आवर्ता देश मझार, खंड मलेच्छ धर्म बिन सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह आवर्ता देशे म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६६ ॥

या आवर्ता देशमझार, वृषभाचल गिरि सुन्दर सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे आवर्तादेशे वृषभाचल गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

या ही आवर्ता थल मांहि, विजयारध पर्वत इक थाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

या ही विजयारथ के शीश, दक्षिण श्रेणी बिसवाबीस । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सीतानदी-उत्तर तटे आवर्ता देश सबधि विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

याही विजयारध की जेय, उत्तर श्रेणी शुभतर लेय । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सीता नदी उत्तर तट आवर्ता देश सबधि विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् । ७० ॥

याही विजयारध पै जान, कूट कहे अति सुख की खान । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे आवर्ता देश सस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

इनही कूटन पे शुभ जेय, देव रहै सब उत्तम तेह । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आवर्ता देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट सवधि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

याही विजयारध पे जान, सिद्ध कूट पे जिनथल मान । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आवर्ता देश स्थित विजयार्द्धस्य सिद्ध कूट जिन मन्दिरभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

या आवर्ता देश मझार, आर्य खंड सब ही में सार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह आर्वता देश स्थित आर्य खंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

या आवर्ता देश मझार, खाडी सागर जल अति धार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आर्वर्ता देश संबधि उपसमुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

याही आरज खंड मझार, चक्री पुरु खड़गा मन धार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आवर्ता देश स्थित चक्री सवधि खडगापुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

या आवर्ता देश मझार, रक्ता नंदी जल बहुधार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आवर्ता देश रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

इस आवर्ता देश सुजान, रक्तोदा नंदी जल खान । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आंवर्ता देश रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७८ ॥

इस आवर्ता देश मझार, जिन मन्दिर अति शोहै सार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आवर्ता देश स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

इस आवर्ता देश मझार, देव रहै मगधादिक सार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे आवर्ता देश स्थित मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८० ॥

॥ लांगला वर्ता देश गतिछेंदक अर्घम् ॥

लांगलावर्ता देश सुजान, मेरु पूर्व दिश उत्तम मान । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सीता नदी उत्तर तट लांगलावर्ता देश गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

लांगलावर्ता देश मझार, खंड मलेछ धर्म बिन सार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे लांगलावर्ता देश स्थित म्लेच्छ खंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

याही लांगलावर्त सु देश, तामें वृषभाचल शुभ वेश । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे लांगलावर्ता देश स्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

याही लांगलावर्त सु देश, विजयारध में है शुभ वेश । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे लांगलावर्ता देश स्थित विजयार्द्धस्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी शुभ थल मान । यामें उत्पपि छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे लांगलावर्त्ता देश स्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

या ही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी खग चल मान । या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लांगलवर्त्ता देशसम्बन्धि विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

याही विजयारध की सही, कूट कहे अति सुन्दर मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लांगलावर्तादेशे विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

इन कूटन के वासी सही, देव महा ऋधि धारक कही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लागलावर्तादेशे विजयार्द्धस्य उपरि महाऋद्धिधारक देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

या ही विजयारध के शीश, सिद्धकूट पे जिन थल दीस । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लागलावर्तादेशस्थितविजयार्द्धस्य सिद्ध कूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

या ही लांगलावर्तादेश, ताको आरज खंड सुवेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लांगलावर्तादेशस्थित आर्यखडगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

याही लांगतवर्ता मांहि, है उपसागर जल बहु ठाहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लागलावर्तादेशस्थित उपसागरगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९१ ॥

याही लांगलदेश सुमाहि, ग्राम मजूपा चक्री ठांहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लागलावर्तादेशे चक्रासम्बन्धि मजूपानगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९२ ॥

या ही लांगलवर्तादेश, रक्तानन्दी सुन्दरवेश । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लागलावर्तादेशे रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९३ ॥

याही लांगल देश मझार, रक्तोदानन्दी जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लागलावर्ता देशे रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९४ ॥

या ही लांगलावर्तादेश, जिन मंदिर जिन बिंब सुवेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे लागलावर्तादेशसम्बन्धि जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

या ही लांगलावर्त सुदेश, देव रहें मगधादिक देश । या में उतपति छेदक, सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री पूर्वविदेहे लागलावर्तादेशसम्बन्धि मगधादिकदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

॥ पुष्कलादेशसम्बन्धि गतिछेदक अर्घ ॥

चोपई—मेरु पूर्व नदी उत्तरा, देश पुष्कला सुन्दर खरा । । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी उत्तरभागे पुष्कलादेश गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९७ ॥

याहि पुष्कला देश मंझार, खंड मलेच्छ धर्म विन धार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलादेशस्थितम्लेच्छखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९८ ॥

याहि पुष्कलादेश सुथान, वृषभाचल गिरि उत्तम मान । या की उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलादेशस्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९९ ॥

या हि पुष्कला देश मझार, गिरि वैताढ सही सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलादेशे विजयार्द्धस्य गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०० ॥

या ही खग गिरि उत्तर जेंव, उत्तर श्रेणी सब सुख देव । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री पूर्व विदेहे पुष्कला देशे विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०१ ॥

या ही विजयारध की जान, कूट वनी ऊंची सुख दान । या में उत्पतिछेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलादेशे विजयार्द्धस्य कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०२ ॥

या ही विजयारध के शीश, वासी कूट देव सुख ईश । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलादेशे विजयार्द्धस्य कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०३ ॥

या ही विजयारध पै सही, सिद्धकूट सिर जिन गृह मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलादेशे विजयार्द्धस्य सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १०४ ॥

या ही पुष्कल देश मझार, आर्य खंड शोभै अधिकार । या से उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलादेशे आर्यखड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०५ ॥

या ही पुष्कल देश सुजान, है उपसागर सुख की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलादेशे उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०६ ॥

इसहि पुष्कलादेश मझार, चक्री नगर ओपधी सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री पूर्वविदेहस्य पुष्कलादेहे चक्रीनगर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०७ ॥

या हि पुष्कलादेश मझार, रक्तानंदी अति जलधार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलादेशे रक्तानाम नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

या ही पुष्कल देश मझार, रक्तोदा नंदी सुखकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलादेशे रक्तोदा नंदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

या ही पुष्कल देश मझार, है जिन मन्दिर शोभित सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलादेशे श्रीजिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ११० ॥

या हि पुष्कला देश बताय, मगधादिक जे देव सहाय। या में उतपति, छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलादेशसम्बन्धि मगधादिदेव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

॥ अष्टम पुष्कलावती देश गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई—मेरु प्रथम पूरब दिश जान, पुष्कलावती उत्तर मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी उत्तरतटे पुष्कलावतीदेश गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

या हि पुष्कलावती मझार, पंच मलेच्छ धर्म नहिं धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी उत्तरभागे पुष्कलावतीदेशपंचम्लेच्छखड गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

इस पुष्कल वति देश मझार, वृषभाचल गिरि उत्तम धार। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी उत्तरभागे पुष्कलावती देशस्थित वृषभाचलगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११४ ॥

या ही पुष्कलदेश सुजान, विजयारध खग पति को थान। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी उत्तर भागे पुष्कलावती देशविजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११५ ॥

याहि पुष्कलावती सु देश, विजयारध दक्षिण शुभ वेश। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी उत्तरभागे पुष्कलावतीदेश विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

या ही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी उत्तम मान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य सीतानद्री उत्तरभागे पुष्कलावती देशे विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११७ ॥

या ही खग चल शीश महान, कहे कूट अति उन्नत थान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य सीता नदी भागे पुष्कलावती देशस्थित, विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११८ ॥

इन ही कूटन पे पुनिरास, देव बसै अति सुख परकाश । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य पुष्कलावती देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११९ ॥

इस ही खग चल शीश सुजान, सिद्ध कूट पे जिन थल मान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य पुष्कलावतो देश स्थित विजयार्द्धे सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १२० ॥

या ही पुष्कलावती मझार, आरज खंड सुभग थल सार । या मे उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य पुष्कलावतो देश स्थित आर्य खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२१ ॥

इसही पुष्कलावती सुदेश, खाडी सागर जल को वेश, या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य पुष्कलावती देश स्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२२ ॥

या ही पुष्कलावती मझार, पुण्डरीकणी नगरी सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलावतिदेशे चक्री संबधि पु डरीकणी नगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२३ ॥

या ही पुष्कलावती मझार, रक्ता नंदी बहु जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे पुष्कलावतोदेशे रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२४ ॥

इस ही पुष्कलावती सुदेश, रक्तोदा नंदी सुख वेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहस्य पुष्कलावती देशे रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२५ ॥

या ही पुष्कलावती सु देश, ता में जिन मंदिर शुभ वेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलावती देशसम्बन्धि जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम ॥ १२६ ॥

या ही पुष्कलावती सु मांहि, देव तहां मगधादिक पाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्य पुष्कलावती देशस्थित मगधादिकदेव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२७ ॥

छंद अडिल्ल—

मेरु सुदर्शन सार विदेह बखानिये, सीता नदी तासु तट उत्तर मानिये ।
देश आठ गतिहार जजों ताको सही, और तहां जिन गेह जजों सुख की मही ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पूर्वदिशि पूर्वविदेहे सीतानदी उत्तरभागे कच्छादिकदेश गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२८ ॥

॥ सीता नदी दक्षिणतट स्थित देश गतिछेदक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल—

प्रथम मेरु पूरव दिश सीता सरित है, दक्षिण देवारण्य वना-वन भरित है ।
या गति छेदक देव जास पदको नमों, अष्ट द्रव्य करि पूज्य आपने अघ दहों ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी दक्षिणभागे उत्तरभागे च देवारण्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२९ ॥

चौपई—दक्षिण तट में वत्सा देश, तामें रचना अति शुभ वेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सीता नदी दक्षिण तटे वत्सादेश गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३० ॥

याही वत्सा देश मझार, खंड मलेच्छ पंच वृषटार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सीता नदी दक्षिण तटे वत्सादेशस्थित पचम्लेच्छ खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १३१ ॥

याही वत्सा देश मझार. वृषभाचल गिरि जानों सार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सीतानदी दक्षिण तटे वत्सादेश स्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३२ ॥

याही वत्सा देश सु मांहि, विजयारध गिरि उत्तम ठांहि । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सीता दक्षिण तटे वत्सादेश स्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३३ ॥

याही विजयारध की सही, दक्षिण श्रेणी सुर सम मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे वत्सा देशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३४ ॥

याही विजयारध के शीश, सिद्ध कूट जिन मंदिर दीश । तहँ जिन विंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुवत्सा देशे विजयार्द्ध सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १५४ ॥

याहि सुवत्सा देश मझार, आर्यखंड जानो सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुवत्सादेशस्थित आर्यखंडगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५५ ॥

याहि सुवत्सा देश सुजान, है उपसागर जल की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुवत्सादेशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५६ ॥

याहि सुवत्सा देश मझार, चक्री नगर कुंडला सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुवत्सादेशे सबंधि कुण्डलानगर चक्री गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५७ ॥

याहि सुवत्सा देश मझार, नन्दी रक्ता है सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुवत्सादेशे रक्ता नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं॥ १५८ ॥

या हि सुवत्सादेश मझार, रक्तोदा नंदी सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुवत्सादेशे रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५९ ॥

याहि सुवत्सा देश मझार, है जिन मन्दिर सुख आगार । तिन पद वसु द्रव अर्घ मिलाय, पूजों मन वच तन लवलाय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुवत्सादेशे सम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ १६० ॥

या हि सुवत्सा देश मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुवत्सादेशासम्बन्धि गति छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६१ ॥

॥ प्रथम सुदर्शनमेरु सम्बन्धि पूर्वविदेह में सीतानदीके दक्षिण तट महावत्सादेशके गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई–प्रथम मेरु के पूरव जान, सीता नंदी दक्षिण मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी दक्षिणतटे महावत्सादेशगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६२ ॥

महा जु वत्सा देश मझार, खंड मलेच्छ पंच मन धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे महावत्सादेशे पंचम्लेच्छखंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६३ ॥

महा सुवत्सा देश मझार, वृषभाचल गिरि उत्तम सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे महावत्सादेशे वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६४ ॥

महा जु वत्सा देश सु जेय, तामें विजयारध गिरि लेय। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशे विजयार्द्धस्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १६५ ॥

या ही विजयारध के मांहि, दक्षिण श्रेणी उत्तम ठाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशे विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६६ ॥

याही विजयारध की सही, उत्तर श्रेणी सुख की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशे विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६७ ॥

याही विजयारध के शीश, कूट कहे सुन्दर जगदीश। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६८ ॥

इन ही कूटन पे मन लाय, देव वसे नाना सुख पाय। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूटवासी देव गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६९ ॥

याही विजयारध सिध कूट, तापे जिन गृह हैं अघ छूट। तामें बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री पूर्वविदेहे महावत्सा देशस्थित विजयार्द्धस्य सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम ॥ १७० ॥

महा सु वत्सा देश मझार, आरज खंड वसे सुखकार। या में उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशस्थित आर्यखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७१ ॥

महा जु वत्सा देश सुमांहि, है उपसागर जल बहु पाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७२ ॥

महा सुवत्सा देश मझार, चक्री पुर अपराजित मार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेशे चक्री सम्बन्धि अपराजितानगरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१७३ ॥

महा सुवत्सा देश मझार, रक्ता नन्दी जल की धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे महावत्सा देश रक्ता नद्री गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७४ ॥

महा जु वत्सा देश सुसार, रक्तोदा नंदी जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सा देश सबंधि रक्तोदा नद्री गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७५ ॥

महा सु वत्सा देश मझार, है जिन मन्दिर धूप आगार । तिन में बिंब जिनेश्वर तने, तिन पद अर्घ जजों अघ हने ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सादेश संबंधि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १७६ ॥

महा जु वत्सा देश मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे महावत्सा देशे मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७७ ॥

॥ चतुर्थ वत्साकावती देश संबंधी गतिछेदक अर्घ ॥

मेरु पूर्व दक्षिण को सही, वत्सकावती अदभुत मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धिपूर्वविदेह सीता नद्री दक्षिण तटे वत्सकावती देशगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७८ ॥

याहि वत्सका देश मझार, खंड मलेच्छ धर्म विन धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पर्वविदेहे वत्सकावती देशसम्बन्धि म्लेच्छ खंड गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७६ ॥

या हि वत्साकावती मझार, वृपभाचल जानों अधिकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देश स्थित वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८० ॥

या हि वत्सकावती मझार, विजयारध गिरि जानों सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे वत्सकावती देश स्थितविजयार्द्धस्य गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८१ ॥

या ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी उत्तम मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे वत्सकावती देशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८२ ॥

या ही विजयारध की जेय, उत्तर श्रेणी शुभ थल तेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देश विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८३ ॥

या ही खग चल शीश सुसार, कूट कहे नाना गुण धार । या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्साकावती देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८४ ॥

या ही खग चल शीश सु कूट, देव बसे नाना दुख छूट । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८५ ॥

या ही रूपाचल शिर जान, सिद्ध कूट पै जिन थल मान । तिनमें विंब जिनेश्वर तने, मन वच तन तें अर्घ जु ठने ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेह वत्सकावतीदेशे विजयार्द्ध सम्बन्धि सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम्॥ १८६ ॥

या हि वत्सकावती जु मांहि, आरज खंड महा सुख ठांहि । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देशस्थित आर्यखंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८७ ॥

या हि वत्सकावती मझार, है उपसागर अति जल धार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देशस्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८८ ॥

या ही वत्सकावती सुजान, चक्री पुर प्रभंकर मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देश सम्बन्धी चक्रीनगर प्रभंकर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १८९ ॥

याही वत्सकावती सुठाम, नदी सु रक्तोदा शुभ नाम । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देशस्थित रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९० ॥

या ही वत्सकावती मझार, नंदी रक्ता है जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रींपूर्वविदेहे वत्सकावती देशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९१ ॥

या ही वत्साकावती मझार, चैत्यालय जिन बिंब जुत धार । अष्ट द्रव्य मय अर्घ बनाय, तिन पद पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देश सम्बन्धि श्री जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ १९२ ॥

या ही वत्सकावती मझार, देव रहे मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे वत्सकावती देश संबंधि मगधादिकदेव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९३ ॥

॥ सुदर्शन मेरु सम्बन्धि पूर्व विदेह के रम्यादेश गतिछेदक अर्घ ॥

प्रथम मेरु पूरव दिशि जान, रम्या देश महा सुख खान । या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु सम्बधि पूर्वविदेहे सीतानदी दक्षिणतट रम्यादेश गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ १९४ ॥

या ही रम्या देश जु मांहि, खंड मलेच्छ धर्म तहां नाहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतादक्षिणतटे रम्यादेशस्थित पचम्लेछ खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९५ ॥

इसही रम्या देश मझार, वृषभाचल गिरि उन्नत धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्या देशस्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९६ ॥

या ही रम्या देश सु सार, तामे विजयारध गिरि सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्या देशस्थित विजयार्द्धस्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९७ ॥

या ही विजयारध की सही, दक्षिण श्रेणी उत्तम मही । या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ पूर्वविदेहे रम्या देशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९८ ॥

या ही विजयारध के मांहि, उत्तर श्रेणी बहु सुख ठाहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्या देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९९ ॥

या ही खग गिरि शीश सु सार, कूट कहे नाना गुण धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्या देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०० ॥

या ही विजयारध पे सही, देव रहे अति सुख की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पर्वविदेहे रम्या देशस्थित विजयार्द्ध संवधिदेव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०१ ॥

या ही विजयारध पे जान, सिद्ध कूट गिरि जिन थल मान । अष्ट दरव मय अर्घ बनाय, तिनके पद पूजों मन लाय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्यादेश स्थित विजयार्द्ध सिद्धकूट जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०२ ॥

या ही रम्या देश सु मांहि, आरज खंड महा सुख पाहि । तिनमें विंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्यादेश सम्बन्धि आर्यखड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०३ ॥

या ही रम्या देश मझार, है उपसागर जल बहुधार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्यादेशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ २०४ ॥

याही रम्या देशा सु सही, अंकापुर चक्री की मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्यादेशस्थित चक्री सम्बन्धि अङ्कापुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०५ ॥

इस ही रम्या देश सु जान, रक्ता नंदी अति जलवान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्यादेशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ २०६ ॥

या ही रम्या देश जु सही, रक्तोदा नंदी जल मही । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रम्यादेशस्थित रक्तोदानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २०७ ॥

या ही रम्या देश सु सही, जिन चैत्यालय सुख की मही । अष्ट-द्रव्य मय अर्घ बनाय, तिनके पद पूजों मन लाय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रम्यादेश सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ २०८ ॥

या ही रम्या देश जु मांहि, मगधादिक शुभ देव रहाय । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदशन मेरु पूर्वविदेहरम्यादेश सम्बन्धि मगधादिक देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ २०९ ॥

॥ सुदर्शन मेरुकेपूर्वमें सीताके दक्षिण तट सुरम्या देशगतिच्छेदक अर्घ ॥

प्रथम मेरु के पूरब जान, देश सु रम्या सुख की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पूर्व विदेह सीता नदी दक्षिण तटे सुरम्या देश उत्पत्तिच्छेदक गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१० ॥

याहि सुरम्यादेश मझार, खंड मलेच्छ थान वृपहार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्यादेशे पंचम्लेच्छखंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २११ ॥

याहि सुरम्या देशमझार, वृपभाचल जानों गिर सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्यादेशस्थित वृपभाचल उत्पतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१२ ॥

याहि सुरम्यादेशमझार, रूपाचल गिरि सुख करतार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुरम्यादेशस्थित रूपाचल उत्पत्ति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१३ ॥

या ही विजयारध की सही, दक्षिण श्रेणी उत्तम मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्यादेशस्थित रूपाचल दक्षिणश्रेणि उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१४ ॥

याहि सुरम्या देश मझार, खग गिरि उत्तर श्रेणी धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्यादेशस्थित रूपाचल उत्तर श्रेणी उत्पति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् । २१५ ॥

याही खग गिरि ऊपर जान, कूट थोक सुन्दर शुभ मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुरम्यादेशस्थित विजयार्द्ध कूट उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१६ ॥

याही खग चल कूट अनूप, तहाँ रहै सुर अति सुखरूप । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुरम्यादेशे विजयार्द्धस्थित देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१७ ॥

या ही विजयारध सिध कूट, तापै जिन मंदिर अघ छूट । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीतानदी दक्षिणतटे सुरम्यादेश स्थित सिद्ध कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ २१८ ॥

याहि सुरम्य देश मझार, आरज खंड महा सुखकार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुरम्या देश स्थित आर्य खंड उत्पति गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१९ ॥

याहि सुरम्या देश मझार, है उप सागर जल की धार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सुरम्या देशस्थित उपसागर उत्पतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२० ॥

याहि सुरम्या देश मझार, चक्री पुर पद्मावति सार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्या देशस्थित चक्री सवधि पद्मावती पुर उत्पतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२१ ॥

याहि सुरम्या देश मझार, रक्ता नंदी बहु जल धार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्या देश स्थित रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२२ ॥

याहि सुरम्या देश मझार, रक्तोदा नंदी जल भार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्या देश स्थित रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२३ ॥

याहि सुरम्या देश मझार, जिन मन्दिर शोहै अतिसार । जिनमें बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे सुरम्या देश सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ २२४ ॥

याहि सुरम्या देश मझार, मगधादिक सुर उत्तम सार । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पूर्व दिशि पूर्वविदेह सीता दक्षिण तट सुरम्या देश सबंधि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२५ ॥

॥ सुदर्शन मेरु की पूर्व दिशामें सीता के दक्षिण तट सप्तम रमणीया देश संबंधी अर्घ ॥

चौपई–प्रथम मेरु पूरव दिश जान, दक्षिण तट सीता की मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पूर्व दिशि पूर्व विदेहे सीता नदी दक्षिण तटे रमणीया देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२६ ॥

याही देश रमणिया मांहि, खंड मलेच्छ धर्म तहँ नाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश संबंधि म्लेच्छ खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२७ ॥

देश रमणिया उत्तम धरा, वृषभाचल गिरि उत्तम खरा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश स्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

या रमणीया देश मझार, विजयारध जानों हित कार, । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश स्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२९ ॥

याही विजयारध के जेय, दक्षिण श्रेणी खग सुख देय। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश स्थित दक्षिण श्रेणि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३० ॥

याही विजयारध की सही, उत्तर श्रेणी सुख की मही। या में उतपति छेदक सोय; तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३१ ॥

याही विजयारध पे जान, कूट कहे अति शोभा वान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रमणीया देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३२ ॥

याही विजयारध गिरिजान, कूट कहे तहाँ सुरके थान। यामें उत्तपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देशस्थित रमणीयादेश विजयार्द्धस्य कूट देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३३ ॥

या ही विजयारध गिरि शीश, जिन मन्दिर अति शोभा दीस। या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश विजयार्द्धस्य सम्बन्धि श्री जिनमदिरेभ्यो अर्घं ॥ २३४ ॥

या रमणीया देश मझार, आर्य खंड क्षेतर सुखकार। यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश संबंधि आर्य खड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३५ ॥

रमणी देश बसै शुभ थान, यामें उपसागर जल खान। या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीयादेश स्थितउपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३६ ॥

या रमणीया देश मझार, शुभा नाम चक्री पुर सार। यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देशचक्री सबंधि शुभा नामनगरो गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३७ ॥

या रमणीया देश मझार, रक्ता नंदी है जल धार। यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देशसंबंधि रक्तानदी उत्पत्तिछेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २३८ ॥

या रमणीया देरा मझार, रक्तोदा नंदी सुखकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देशसंबंधि रक्तोदानदी उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३९ ॥

या रमणीया देश मझार, जिन मन्दिर शोभै हितकार । या में बिंब विराजे सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे रमणीया देश सवन्धि जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ २४० ॥

देश वसै रमणीया येह, रहै देव मगधादिक जेय । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे रमणीया देश सवन्धि मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ २४१ ॥

॥ प्रथम मेरु के पूर्वभाग में पूर्वविदेह सीतादक्षिणतट मंगलावतीदेश संबंधी अर्घ ॥

प्रथम देश पूरव दिश सार, मंगलावती देश शुभ कार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपूर्वदिशि पूर्व विदेहे मंगलावती देश उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४२ ॥

याही मंगलावती सु ठाम, खंड मलेच्छ नहीं वृप धाम । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे सीता दक्षिण तटे मंगलावती देशस्थित म्लेच्छखंड गतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४३ ॥

या ही मंगलावती मझार, वृषभाचल जानों गिरि सार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पूर्वविदेह सीता दक्षिणतटे मंगलावती देशस्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ २४४ ॥

या ही मंगलावती सुठाम, विजयारध तहँ पुण्य सु धाम । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावतीदेशस्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४५ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी अति सुख दान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मंगलावतीदेशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४६ ॥

याही विजयारध की सही, उत्तर श्रेणी सुख की मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावतीदेशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४७ ॥

या ही विजयारंध के मांहि, कूट कहे ऊंचे सुख ठाहि । यामें उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेहे मगलावती देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४८ ॥

इन ही कूटन के शिर जान, देव वसै अति ही सुख मान । यामें उतपपि छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देशस्थित विजयार्द्धस्थ कूट उत्पत्ति देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४९ ॥

या ही विजयारध के शीश, है जिन थल राजैं जगदीश । या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मंगलावती देशस्थित विजयार्द्धस्य उपरि सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५० ॥

याहि मंगलावती सुदेश, आरज खंड क्षेत्र सुभ वेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देशस्थित आर्यखंड उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५१ ॥

याही आरज खंड मझार, है उपसागर जल आधार । या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री पूर्व विदेहे मगलावती देशस्थित उपसागर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५२ ॥

मंगलावती देश के माहिं, रत्न संचये चक्री ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देशस्थित चक्री संवधि रत्न संचयपुर नगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५३ ॥

मंगलावती देश के मांहि, रक्ता नंदी है शुभ ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मंगलावती देशस्थित रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २५४ ॥

याहि मंगलावती सुदेश, रक्तोदा नंदी शुभ वेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मंगलावती देशस्थित रक्तोदानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५५ ॥

याहि मंगलावती सुदेश, जिन मंदिर सोहै शुभ वेश । तिन में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावतीदेश संवधि श्री जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ २५६ ॥

याहि मंगलावती मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देश सवधि मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५७ ॥

छंद—गीतिका—मेरु पूरव दिशा सरिता, नाम सीता जानिये । ताके जु दोनो तट विषै हैं, क्षेत्र षोडश मानिये ॥

इहां तें सदा शिव थान जानों, यह विदेह सुहावने । इन गतिच्छेदक देव के पद, जजों शिव सुख पावने ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सबंधि पूर्वदिशि सीतानद्या उत्तरदक्षिणतटे षोडश देश-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥२५८॥

॥ जयमाला ॥

॥ छंद वेसरी ॥

कच्छा देश सुकच्छा जानो, महा कच्छा कच्छकावति मानो । आवर्ता है देश सरूपा, लांगलावर्ता देश अनूपा ॥ १ ॥
देश पुष्कला जानि सुभाई, पुष्कलावती देश सुखदाई । ये देश उत्तर दिशि जानों, पूरब सीतानंदी मानों ॥ २ ॥
वत्सादेश सुवत्सा भाई, महावत्सका है सुखदाई । वत्सकावती देश हितकारी, रम्या देश सुरम्या भारी ॥ ३ ॥
देश रमणिया अद्भुत जानो, मंगलावती देश सुख थानो । ये सीता नंदी तट भाई, दक्षिण उत्तर शोभा पाई ॥ ४ ॥
इन इक इक नगरी में जानों, एक एक चक्री ध्रुव थानो । रचना और भरत ज्यों सारी, ये चौरस भरत धनुकारी ॥ ५ ॥
खेमा खेम पुरी शुभ थानो,जानि अरिष्टा अरिष्ट पुर मानो । खडगा नगर मंजूषा भाई, औषधि पुंडरीक पुर थाई ॥ ६ ॥
जानि सुसीमा कुंडल ग्रामा, अपराजिता प्रभंकर ठामा । अंका अरु पदमावति नगरी, शुभानाग पुर सेवत अगरी ॥ ७ ॥
रतन संचयेपुर सुखदाई, ये षोडश नगरी लख भाई । चक्री इनही में उपजावे, रतन महल तुंग कोट बनावे ॥ ८ ॥
बहु विस्तार घने दरवाजे, तिनको देखत सुरपुर लाजे । तहां तुंग जिन वर के गेहा, तिन पद पूजों मन वच नेहा ॥ ९ ॥
ये षोडश हैं क्षेत्र विदेहा, प्रथम मेरु पूरब दिश जेहा । तहां सदा शिव मारग पइये, तीर्थंकर मुनिवर तहँ लहिये ॥१०॥
तहाँ सदा जिन मुख की वाणी,सुने भव्य पापन की हाणी । और धर्म पाखंड न पइये, एक धर्म शुध नित प्रति लहिये ॥११॥
ऐसो थान पुण्यतें पावे,पुण्य विना खोटे थल थावे । इस रुख आठ वक्षार सुहाई, जिनपे जिन थल मणिमय जोई ॥१२॥
षोडश गिरि वैताढ अनूपा, तिनपे जिन थल त्रिभुवन भूपा । सुर नर हू पूजे मन लाई, मैं यहां पूजों भावन भाई ॥१३॥
है षट दीरघ नंदी जोई, और बीस नन्दी लघु होई । सीता अरु सीतोदा जानो, इनहीतें खंड भाग सु मानो ॥१४॥
इन आदिक गिर सीता जेई, शुभ थल रूप महा पुनि तेई । तिन गति छेद भये भव पारा, तिनके पद पूजों मद टारा ॥१५॥

दोहा— पूरव थान विदेह में, कहे थान जिन राय । ते सब पूजों अरघतें, मन वच तन करि काय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पूर्वविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ जंबू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल— जंबू द्वीप विषै जु मेरु दक्षिण दिशा, जम्बू नामा वृक्ष तुंग अति शुभ लसा ।
ताकी शाखा ऊपर इक जिन थान है, ते जिनवर यहां थापि जजों थुति ठान है ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिण दिशा जंबूवृक्ष संबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्रावतरावतर ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिण दिशा जबूवृक्ष सबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्र तिष्ठ ष्ठि ठः ठ

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिण दिशा जबूवृक्ष संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्र मम सन्निधौ सन्निधि करणम्

चौपई–निरमल नीर क्षीर दधि तनों, कनक झारि का में शुभ ठनो, जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जबूवृक्ष संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

चंदन गंध नीर घसवाय, लाऊं कर धर भक्ति बढाय । जंबू वृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जबूवृक्ष संबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो चंदन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल लेय विशाल, आ पहुँच्यो काटन अघ जाल । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष संबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

पुष्प सुगंध वरण अधिकाय, लायो काम हरन उमगाय । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जबूवृक्ष संबधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस चरु सुभग बनाय, कर धरले आऊं चित लाय । जंबू वृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष संबधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक रतन कनक थल जेय, मिथ्या नाश करन को तेय । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगंध बनाय, खेऊं अगनि हरप मनलाय। जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबू वृक्ष सबंधि जिन चैतालय जिनेभ्यो धूप ॥७॥

श्रीफल लोंग बदाम अपार, ले आयो शुभ परिणति धार। जंबू वृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबू वृक्ष सबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो फल ॥८॥

जल चंदन अक्षत सब लेय, आयो अघमल धोवन जेय। जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

अडिल्ल छंद—

आठ दरब कर लेय महा हरपाय के, पूजों जिन के पाय अष्ट गुण भाय के।
जंबूवृक्ष के ऊपर जिन थल जे कहे, तिन पद मन वच तन शुभ पूजत धनि भये ॥

ॐ ह्रीं जंबू वृक्ष सबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥१०॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपाई—जंबू वृक्ष तुंग भय खाय, जीव इकेन्द्री को खंध थाय। तामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप संबंधि जंबू वृक्ष गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥११॥

जंबू वृक्ष ऊपरै देव, तिष्ठत है अति शोभ करेव। इन गति छेद भये भव पार, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सबंधि देव-गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— मेरू थल ईशान दिश, उत्तर कुरु भूजान। तहां वृक्ष जंबू सही, बहु रचना जुत मान ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

उत्तर भोग भूमि के मांही, थांवल एक कनकमय ठांही। जोजन पांच सैंकडा भाई, है विस्तार गोल अधिकाई ॥ २ ॥
वसु जोजन मधि मोटा जानो, और आध जोजन तुंग मानो। ताके ऊपर मध्यसु भाई, एक पीठिका और बताई ॥ ३ ॥

पीठ आठ जोजन तुंग होई, वारह जोजन व्यास सु जोई । ऊपर पीठ व्यास सुनि भाई, जोजन चार तना अधिकाई ॥ ४ ॥
तिस ही थल के ऊपर जानो, वारह वेदी है शुभ थानो । वलयाकार कनकमय होई, रतन जडित सुन्दर सुखहोई ॥ ५ ॥
वेदी सब अध जोजन तुंगा, लागे रतन सुभग नग मूंगा । जोजन षोडश भागे चोडी, शोभै सुरग कोट की जोडी ॥ ६ ॥
पहले एक वेदिका जानो, दूजी ता दोन्यों फिर मानो । ताको घेर तीसरी होई, ऐसे भिन भिन वारह होई ॥ ७ ॥
इक इक वेदी चव दरवाजे, अंतराल एकादश साजे । दो अंतराल विषे सुन्य जानो, तहां नहीं कुछ रचना मानो ॥ ८ ॥
तीजे अन्तराल में भाई, आठ अधिक इक शत तरु थाई । तिनपे यक्षदेव उत्कृष्टा, भोगें पुन्य तना फल मिष्टा ॥ ९ ॥
चौथे हैं अन्तरपुर कानी, जंबू वृक्ष चार सुख दानी । तिनपे यक्ष देव को वासो, आगे और सुने धुनि भाषो ॥१०॥
पंचम अंतराल में भाई, वन वापी वहु विधि की पाई । अंतराल छट्टे मधि जानो, सुनी कही रचना नहिं मानो ॥११॥
अंतराल सप्तम में पइये, सोलह सहस्र वृक्ष तहां लहिये । तिनपे यक्ष देव है भाई, रहै देव अंग रक्षक ठाई ॥१२॥
अष्टम अन्तराल चवकानी, चार हजार वृक्ष मखयानी । तिनपे सामानिक सुरवासो, आगे सुनो कथन सुख रासो ॥१३॥
नवमां अन्तराल में जानो, सहस वतीस विरछ लग ठानो । तिनपे पारिषदा सुर थाये, अपने सुकृत से सुख पाये ॥१४॥
दशमां अन्तराल मे भाई, चालिस सहस वृक्ष सुखदाई । तिनपै रहै पारिषद देवा, चाव घनों उर जिनकी सेवा ॥१५॥
एकादशम अन्तरा माही, अडतालीस सहस तरु ठाही । पारीषद तहं देवा होई, सेवक जिनके सब अघ खोई ॥१६॥
वारम अन्तराल महि जानो, जंबू वृक्ष सात सुख दानो । तिनपे वसे महत्तर देवा, तिष्ठै नाना विधि सुख भेवा ॥१७॥
सब मिलि वृक्ष एक लख जोई, चालिस सहस एक शत होई । ऊपर वीस सकल मिल जानो, ये परिवार विरछ शुभ मानो ।१८
जोजन दोय वडे तुंग दोई, ता ऊपरि चव शाखा जोई । जोजन आधे चौडी शाखा, वसु जोजन लंबी जिन भाषा ॥१९॥
वज्र मई ये शाखा जानो, उप शाखा रतनामय मानो । मूंगा सम रंग फूल अनूपा, फल मृदंग जिसा गुण भूपा ॥२०॥
ये तरु पृथ्वी काय सुजानो, वनसपतीका नाहि वखानो । जंबू वृक्ष जिसा आकारा, तातें जंबू नाम उचारा ॥२१॥
जोजन दश ऊंचा है भाई, मधि चौडा षट जोजन थाई । ऊपर चार जोजना चौडा, मुंह तैं कौलौं कहि वच थोडा ॥२२॥
मुख जंबू तरु उत्तर शाखा, तापे जिन मंदिर धुनि भाखा । और तीन शाखा पे भाई यक्ष देश मंदिर सुखदाई ॥२३॥
आदर देव अनादर नामा, व्यन्तर देव वसै सुख ठामा । मूल विरछ का जो परमाणों, तिनतैं अर्ध परिवार सुजाणौ ॥२४॥

तरु परिवार ऊपरें भाई, सुर परिवार तने सुखदाई। आदिरादि व्यन्तर के सारे, हैं परिवार देव सब प्यारे ॥२५॥
इत्यादिक महिमा तरु केरी, कहतें बुद्धि कहो कहां मेरी। तापे जिनका मंदिर होई, पूजे पाप रहैना कोई ॥२६॥
देव खगा तहां पूजा लावे, पूरब कृत सब पाप नशावे। हम यहां घर में भावन ठानै, तातैं ही अपने अघ भानै ॥२७॥
दोहा— जंबु वृक्ष अति सोहनो, नाना रतन स्वरूप। ता ऊपरि जिन भवन को, जजों होय शिव भूप ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो जयमालार्घम् ॥

॥ पश्चिम विदेह सम्बन्धि जिनालय पूजा ॥

छंद गीतिका—मेरु पश्चिम दिशा जानो, क्षेत्र भले विदेहजी, तिस थान भीतर जिन मुनी नित, कर्म हर शिव लेयजी।
ऐसे महा शुभ क्षेत्र में, जिन थान मुनि का मानिये, ते थापि इह शुभ भावना करि, जजों मन वच आनिये ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहसंबन्धि जिनालस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ।
ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल सुनयानंद— लाय शुभ नीर निरमल घनो सुख करा, कनक झारी विषै मेलि निज कर धरा।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेह जी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

बावनो चंदन घसि नीर ले निरमलो, सुभग वासन ठान मन अति भलो।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों कर नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल भला खंड बिन लाइयो, हरष धर मन वचन काय गुण गाइयो।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल शुभ रंग गंध सहित शोभा मई, गूंथ कर माल सू आपने कर लई ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्वन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

जात नैवेद्य शुभ रस मई हित करा, कनकथाली विषै ल्याय हूँ दुख हरा ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्वन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीप मणि मई तम नाशकर जानिये, थाल भर कनक को भक्ति कर आनिये ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेह सम्वन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

धूप दश विधि तनी, गंधकर लाइयो, अगनि मधि खेपने चित्त उमगाइयो ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥
ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिमविदेहसम्वन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग वादाम खारक सही, आदि इन को भले और फल ले वही ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों कर नेहजी ॥
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्वन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु दीप ले, धूप फल अर्घ कर पाप वुद्धि लीयले ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों कर नेहजी ॥
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सम्वन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

छंद हरिगीतिका—यह मेरु परथम दिशा पश्चिम, सुभग थान विदेह है। तहां थान जिनके महा सुन्दर, बिंब जल सुख लेय है ॥
ते भावना शुभ भाय हम ही, पूजते हैं थान जी। तिस फलें भवके सकल दुख मिटि, होय उर में ज्ञानजी ॥
ॐ ह्री प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सम्वन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घम् ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल— सीतोदा नंदी विदेह पश्चिम विषै, ताके दक्षिण भाग देश पदमा अखै ।
भद्रशाल तें लगत जहां यह देश है, या गति छेदक देव जजों शिव भेय है ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम दिशा सीतोदानदी दक्षिणदिशा पद्मावती देश उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो ॥ १ ॥

चौपाई—याही पदमा देश मझार, खंड मलेच्छ पंच मन धार । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमदिशा पश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशस्थित पचम्लेच्छखड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

पदमादेश सम्बंधी सही, वृषभाचल नामा अधिकही । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेह पद्मादेशस्थित वृषभाचल उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही पदमा देश मझार, विजयारध पर्वत इक सार । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमादिशापश्चिमविदेहस्थित विजयार्द्धगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

या ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी खग चल मान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणीगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

या ही खग गिरि के पहिचान, उत्तर श्रेणी उत्तम मान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशविजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणो गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

याही विजयारध शिर जान, कूट मनोहर उत्तम थान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेह सीतोदादक्षिणतटपद्मादेशविजयार्द्धस्य कूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

विजयारध की है जो कूट, देव बसै नाना सुख लूट । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशविजयार्द्धकूट देवगतिछेदक जिनेभ्यों अर्घम् ॥ ८ ॥

तापे इक जिनवर का थान, तिन पद पूजों अर्घ सुजान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितविजयार्द्धसिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या ही पद्मादेश मझार, आरज खंड महा सुखकार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेहपद्मादेशस्थित आर्यखंड उत्पतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

पद्मा देश विषै सुखकार, जानो उपसागर जल धार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमदिशा पश्चिमविदेहपद्मादेशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

पद्मादेश विषै लख सार, चक्री नगर अश्वपुर सार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशा पश्चिम विदेहे पद्मा देश स्थित चक्री नगर अश्वपुर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

रक्ता नंदी अति जल धार, देखत उपजै उर तें प्यार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेह पद्मादेशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

रक्तोदा नंदी विसतार, लिख्यो त्रिलोक सार में सार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेह पद्मादेशस्थित रक्तोदानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

या ही पदमा देश मझार, देव रहै मगधादिक सार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितमगधादिकदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

छंद अडिल्ल—

याही पद्मा देश सकल हितकार है, नाना रचना जिन मंदिर अति सार है।
तिनमें बिंब जिनेश्वर के हैं सारजी, तिन पद अर्घ जजों मैं सब मद टारजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशा पश्चिम विदेह पद्मा देश स्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

॥ सुपद्मा देश संबंधी गतिच्छेद अर्घ ॥

मेरु थकी पश्चिम दिशि जोय, मेरु सु पदमा उत्तम सोय। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम दिशा पश्चिम विदेहे सीतोदा दक्षिण तटे सुपद्मा देश उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

याहि सुपदमा देश मझार, पंच म्लेच्छ खंड अति सार। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शमेरु पश्चिम विदेहे सीता दक्षिण तटे सुपद्मा देश स्थित पंच म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १८ ॥

देश सु पदमा जानों सहीं, है वृपभाचल सुखकी मही। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित वृपभाचल उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

जानि सुपदमा देश विशाल, जामें विजयारध गुणमाल। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी गुण की खान। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

याही खग चल की पहिचान, उत्तर श्रेणी उत्तम मान। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

याही विजयारध के जोय, कूट कहे ऊपर शुभ सोय। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

याही विजयारध शिर कूट, तिन पै देव रहैं अघ छूट। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्ध सवधि देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥

इसही विजयारध पे सही, सिद्ध कूट पे जिन थल कही। यामें बिंब जिनेश्वर सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेह सुपद्मा देश विजयार्द्ध स्थित सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

याहि सुपदमा देश विशाल, जानो आर्य खंड गुण माल। या गति छेद भये भव पार, तिंन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित आर्य खड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

देश सु पदमा आरज धरा, तामें उपसागर जल भरा। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेह सुपद्मा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

याहि सुपदमा देश जु मान, सिंह पुरी चक्री उपजान। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेह सुपदमा देश स्थित चक्री सबंधि सिंहपुरी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

महा पद्मावति देश मझार, विजयारध उत्तर दिश सार । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशाया महापद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

याही विजयारध के शीश, कूट तुंग महा शुभ शीश । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महापद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

याही खग गिरि कूट सुजान, तिनके वासी सुर सुख मान । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित विजयार्द्ध वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

याही विजयारध पे जान, सिद्ध कूट पे जिन थल मान । या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

महा पद्मावति देश मझार, आर्य खंड जानों सुख कार । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

या ही महा पद्मावति देश, है उप सागर जल निधि शेष । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित उप सागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

महा पद्मावति है शुभ देश, चक्री पुर महापुरी सुभेप । या की गति छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशाया महा पद्मा देशस्थित चक्री संबंधि महापुरी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

महा पदमावति देश मझार, है रक्तानन्दी जलधार । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे महापद्मा देशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

याही महा पद्मावति देश, रक्तोदा नंदी जल भेप । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे महापद्मादेशस्थित रक्तोदा नदीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

महा पद्मावती थल मांहि, देव बसै मगधादिक ठाहि । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे महापद्मा देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

याही महा पद्मवति माहिं, है जिन थान पुण्य की ठाहिं। तिनको मैं वसु द्रव्य मिलाय, पूजों जय जय अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे महापद्म देशस्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

॥ पद्मकावती देश सम्बन्धि गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, पद्मकावती देश महान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमदिशायां पश्चिमविदेहे पद्मकावतीदेश उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

या पद्मकावति देश मझार, देश मलेच्छ पंच अधिकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमदिशायां पश्चिमविदेहे पद्मकावति देशस्थित पंचम्लेच्छखंड उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

या पद्मकावति देश मझार, वृषभाचल पर्वत है सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमदिशाया पश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित वृषभाचलगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

या पद्मकावति देश सुजान, तामें सुरगवासी गिरि मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावतीदेशसम्बन्धि विजयार्द्धगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी शोभावान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

या ही खग चल पर्वत मांहि, उत्तर श्रेणी उत्तम ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे पद्मकावती दे[illegible]वजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

विजयारध इस ही शिर जान, कूट कहे जो उत्तम थान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

या विजयारध के जो कूट, तिनपे देव बसे दुख छूट। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धसम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

या विजयारध के शिर कूट, तापरि जिन मंदिर अघ छूट। या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धे सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

याही पद्मावती सुदेश, तिनके आरज खंड सुवेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित आर्यखड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

या पद्मकावति देश सुमान, है उपसागर जल की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

पद्मकावती देश जु मांहि, विजय पुर चक्री की ठांहि । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेह पद्मकावती देशस्थित चक्री सबंधि विजयापुरी नाम नगरो गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

पद्मकावति देश के मांहि, रक्ता नंदी जल की ठांहि । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्माकावती देश स्थित रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

याही पद्मकावति देश, रक्तोदा नंदी जल भेप । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्मकावती देश स्थित रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

याही पद्मकावति देश, देव बसै मगधादिक भेप । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्मकावती देशस्थित मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

या पद्मकावती देश मझार, है जेते जिन मन्दिर सार । तिनमें जिनजी के बिंब सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्मकावती देश स्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

॥ शंखा देश गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई–प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, शंखा देश महा सुख मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीता नदी दक्षिण तटे शंखा देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

याही शंखा देश मझार, खंड मलेच्छ पंच अधिकार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीता नदी दक्षिण तटे शंखा देश स्थित पंच म्लेच्छ खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

इसही शंखा देश सु माहि, वृषभाचल गिरि उत्तम ठाहि। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६७ ॥

इसही शंखा देश सुजान, विजयारध गिरि उत्तर मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देशस्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६८ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी को शुभ मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देशस्थित दक्षिण श्रेणी विजयार्द्धस्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६९ ॥

याही शंखा देश मझार, विजयारध उत्तर दिश सार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

याही विजयारध के शीश, कूट महा सुन्दर अति दीश। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देशस्थित विजयार्द्ध कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

याही विजयारध शिरजान, कूट वास करते सुर मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देशस्थित कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

याही विजयारध शिर कूट, तापे जिन मन्दिर अघ छूट। यामें बिंब विराजे सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देशस्थित विजयार्द्ध सबंधि सिद्ध कूट मन्दिरेभ्य अर्घम्। ७३ ॥

याही शंखा देश मझार, आरज खंड जानि सुख कार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित आर्य खण्ड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ।

याही शंखा देश मझार, है उपसागर जल की धार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

याही शंखा देश मझार, अरजा पुर चक्री को सार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देश स्थित चक्री संबधि अरजा देश गति छेदक जिनेश्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

याही शंखा देश सु माहिं, रक्ता नंदी है शुभ ठाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देशे रक्ता नदी गति छेदक जिनेभ्यो अ ॥ ७७ ॥

याही शंखा देश सु मांहि, रक्तोदा नंदी जल ठांहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७८ ॥

इसही शंखा देश सुजान, मगधादिक सुर वसि हैं मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७९ ॥

छंद अडिल्ल—

याही शंखा देश सु मांहीं जानिये, जिन मंदिर शुभ खान महा हित दानिये ।
तिन पै विंब जिनेश्वर के अघ हार हैं, मैं पूजों मन लाय करो भव पार हैं ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखादेशसंबधि जिनमंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ ८० ॥ इति ॥

॥ निलिनी देश संबंधि अर्घ ॥

चौपई—प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, नलिनी देश महा सुख खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेश उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

याही नलिनी देश मझार, खंड मलेच्छ पंच अधिकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलनिदेशस्थित पंचम्लेच्छखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

इसही नलिनी देश सु मांहि, वृषभाचल गिरि अति सुख ठांहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे निलिनी देशस्थित वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

इसही नलिनी देश मझार, विजयारध जानों गिरिसार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेहे निलनि देशस्थित विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

याही विजयारध के सही, दक्षिण श्रेणी उत्तम मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

इस ही विजयारध के मांहि, उत्तर श्रेणी अति सुख ठांहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

याही विजयारध की सही, कूट कहे अति ऊरध मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेशस्थित विजयार्द्धस्य कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

ये ही खग गिरि कूट सु मान, तिनके वासी देव सु भान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित विजयार्द्ध वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

याही खग गिरि के शिर कूट, है जिन मन्दिर अघ से छूट । या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनिदेशविजयार्द्धसिद्ध कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

या ही नलिनी देश मझार, आर्य खंड जानों सुखकार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पदपूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित आर्यखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

निलिनी देश याहि थल माहिं, है उपसागर जलनिधि ठाहिं । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९१ ॥

या ही निलिनी देश मझार, विरजा पुर चक्री का सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनि देशस्थित चक्री सम्बन्धि विरजापुर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९२ ॥

या ही नलिनी देश मझार, नन्दी रक्ता है सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९३ ॥

या ही नलिनी देश मझार, नन्दी रक्तोदा जलधार । यां में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेशस्थित रक्तोदा नाम नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९४ ॥

या ही नलिनी देश मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

याही नलिनी देश मझार, है जिन मंदिर अघ को टार । या में बिंब विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेश सम्बन्धि जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

॥ सप्तम कुमुदा देश सम्बन्धि अर्घ ॥

चोपई—प्रथम देश पश्चिम दिश जान, नाम कुमुद है गुण की खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सीतोदादक्षिणतटे कुमुदादेश–उत्पत्तिछेदक–जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

या ही कुमुदा देश जु माहिं, पंच मलेच्छ थान अधिकाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित पंचम्लेच्छ खंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

या ही कुमुदा देश मझार, वृपभाचल गिरि जानों सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित वृपभाचल गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

इस ही कुमुद देशमें सही, विजयारध गिरि उत्तम कही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०० ॥

इस ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी उत्तम मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०१ ॥

याही विजयारध की सही, उत्तर श्रेणी उत्तम मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे कुमदा देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०२ ॥

याही विजयारध की जान, कूट कहे शोभा की खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०३ ॥

याही विजयारध पे जान, देव कूट वासी जु महान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमदा देश स्थित विजयार्द्ध वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १०४ ॥

याही विजयारध के शीश, सिद्ध कूट जिन विसवा वीस। तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित विजयार्द्धे सिद्ध कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घ ॥ १०५ ॥

याही कुमुदा देश जु मांहिं, आरज खंड महा सुख ठाहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमदा देश स्थित आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०६ ॥

याही कुमुदा देश मझार, उपसागर है बहु जल धार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०७ ॥

याही कुमुदा देश मझार, चक्री पुर अशोक है सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित चक्री संबंधि अशोक पुर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

याही देश कुमुद थल माहिं, रक्ता नंदी बहु शुभ पाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित रक्ता नंदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

याही कुमुद देश में जान, रक्तोदा नंदी जल खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११० ॥

याही कुमुदा देश में थाय, देव बड़े मगधादिक पाय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १११ ॥

याही कुमुदा देश मझार, है जिन थान घने गुन धार । तिनमें बिंब विराजे सोय, तिनको पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदादेश स्थित जिनालयेभ्यो अर्घं ॥ ११२ ॥

॥ अष्टम सरिता देश संबंधी अर्घ ॥

प्रथम देश पश्चिम दिश जोय, सीतोदा दक्षिण तट होय । सरिता देश महा सुख खान, या गति छेद जजों अघ हान ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा दक्षिण तटे सरिता देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

याही सरिता देश सु जोय, खंड म्लेच्छ थान है सोय । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित पच म्लेच्छ खड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११४ ॥

इसही सरिता देश सु जान, वृषभाचल पर्वत हित खान। या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरू पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित वृषभाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११५ ॥

इसही सरिता देश सु जान, विजयारध जानों सुख खान। या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

इस ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी सुख की खान। या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११७ ॥

याही विजयारध की जेय, उत्तर श्रेणी सुर सम तेय। या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११८ ॥

याही खग चल ऊपर सही, कूट कहे अति शोभा मई। या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११९ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहै भुगतै सुख मही। या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्री प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध कूटवासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२० ॥

या ही विजयारध शिर जान, सिद्ध कूट पै जिन थल मान। या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरू पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध संवधि कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ १२१ ॥

इस ही सरित देश का सही, आरज खंड महा सुख मही। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२२ ॥

याही सरित देश में सही, है उपसागर जल की मही। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश-स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२३ ॥

याही सरित देश में सही, वीतशोक चक्री पुर कही। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित चक्री सबंधी वीत शोकपुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२४ ॥

इसही सरित देश के मांहि, है रक्ता नंदी जल ठाहिं। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित रक्तानदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२५ ॥

याही सरित देश में जान, रक्तोदा नंदी जल मान। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२६ ॥

इस ही सरित देश में सही, देव बसै मगधादिक कही। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२७ ॥

इस ही सरिता देश जु सही, है जिन मंदिर पुण्य सु मही। तिन में विंब जिनेश्वर सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देव स्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १२८ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, सीतोदा दोउ तट पर मान। भूधारण उपवन ही थाय, तिन गति छेदक पूजों पांय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा दक्षिण उभय तटे भूधारण वन गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२९ ॥

॥ सीतोदा उत्तर तट संबंधी देश–रचना गति छेदक अर्घ ॥

चौपई–प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, वप्रादेश महा गुण खान। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सीतोदा उत्तर तटे वप्रादेश उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३० ॥

इस ही वप्रादेश मझार, खंड मलेच्छ धर्म बिनसार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथ मेरु पश्चिमविदेहे सीतोदा उत्तरतटे वप्रादेशस्थित पचम्लेच्छ खड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३१ ॥

याही वप्रा देश सु माहिं, वृषभाचल जानों गिरि ठाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे वप्रा देश स्थित वृषभाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३२ ॥

या ही वप्रा देश मझार, विजयारध गिरि जानों सार। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे वप्रादेश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३३ ॥

इस ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी सुख की खान। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे वप्रा देश स्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३४ ॥

याही वप्रादेश सुमांहि, विजयारध उत्तर दिश ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३५ ॥

याही खगचल ऊपर सही, कूट कहे ते उत्तम मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३६ ॥

इस ही कूट ऊपरैं सही, देव वसै भुगतैं सुख मही। या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३७ ॥

याही विजयारध शिरजान, सिद्धकूट पे जिन थल मान। तहां विंब जिनवर के सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धे सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १३८ ॥

या ही वप्रादेश मझार, आरज खंड महागुण धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित आर्यखंडगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३९ ॥

याही वप्रादेश सु मांहि, है उपसागर जल की ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४० ॥

याही वप्रादेश मझार, विजयारध चक्री की सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह वप्रादेशस्थित चक्री सम्बन्धि विजयार्द्धपुरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४१ ॥

या ही वप्रादेश मझार, रक्तानंदी है जल धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४२ ॥

या ही वप्रादेश सुजान, रक्तोदा नंदी जलखान। या में उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित रक्तोदा नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४३ ॥

याही वप्रादेश मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित मगधादिकदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४४ ॥

याही वप्रादेश सुजान, है जिन भवन महा सुखदान । तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित जिन मन्दिरेभ्यो महार्घम् ॥ १४५ ॥

॥ सुदर्शनमेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर तट सुवप्रादेश सम्बन्धि अर्घ ॥

मेरु पश्चिम नदि उत्तरा, देश सु वप्रा जानों खरा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तरतटे सुवप्रादेश उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४६ ॥

याहि सु वप्रा देश मझार, खंड मलेच्छ धर्म विनसार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित पंचम्लेच्छखड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४७ ॥

याहि सुवप्रा देश सुजान, वृषभाचल गिरि है सुखखान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४८ ॥

याहि सुवप्रा देश वखान, तामें विजयारध गिरि जान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४९ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी सुभ की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५० ॥

याही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी गुण की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों पद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थिन उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५१ ॥

याही विजयारध के जान, कूट महा ऊंचे सुख खान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५२ ॥

याही विजयारध शिर कूट, तिन वासी सुर सुख बहु लूट। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्ध वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५३ ॥

याही विजयारध शिर जेय, सिद्ध कूट पे जिन थल तेय। यामें विम्ब विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेह सुवप्रादेशस्थित सिद्ध कूट जिन मदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १५४ ॥

याहि सुवप्रादेश वखान, आरज खंड महा सुख दान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित आर्य खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५५ ॥

याहि सुवप्रादेश मझार, है उपसागर जल बहु धार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रा देशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५६ ॥

याहि सुवप्रादेश मझार, वैजयंत चक्री पुर सार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित चक्री सबधि वैजयंत पुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५७ ॥

याहि सुवप्रादेश वखान, रक्ता नंदी जल निधि जान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदहे सुवप्रादेशस्थित रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५८ ॥

इसहि सुवप्रादेश मझार, रक्तोदा नंदी अधिकार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सु वप्रा देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५९ ॥

याहि सुवप्रा देश वखान, देव वसैं मगधादिक जान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रा देश स्थिते मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १६० ॥

याहि सुवप्रा देश मझार, है जिन भवन पुण्य के तार। या में विंब विराजै सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सुवप्रा देश संस्थिते जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ १६१ ॥

॥ सुदर्शन मेरु पश्चिम दिशा में पश्चिम विदेह संबंधी महावप्रा देश गति छेदक अर्घ ॥

मेरु पश्चिम सीतोदा जान, ताकी उत्तर दिश को मान। महा सु वप्रा देश सु जोय, या गति छेद जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे महावप्रा देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६२ ॥

याहि महा वप्रा शुभ देश, पंच म्लेच्छ खंड शुभ भेष। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे महावप्रादेश स्थिते पच म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६३ ॥

याहि महा वप्रा जु मझार, वृषभाचल जानों हितकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते वृषभाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६४ ॥

इस महा वप्रा देश मझार, विजयारध गिरि जानों सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६५ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी महा गुण खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६६ ॥

इस ही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी बहु गुण खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६७ ॥

या ही विजयारध पे सही, कूट कहे अति सुख की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६८ ॥

या ही विजयारध पे जान, कूट तने वासी सुर मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महावप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६९ ॥

याही विजयारध पे जान, सिद्ध कूट पे जिन थल मान। या में विंब विराजे सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देशे विजयार्द्ध संस्थिते सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १७० ॥

याही महा सु वप्रा देश, आरज खंड महा शुभ भेष। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७१ ॥

या महा वप्रा देश मझार, है उपसागर जल की धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७२ ॥

या महा वप्रा देश सु भाय, चक्री पुर जयंता मन लाय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेह महा वप्रा देश स्थित चक्री संबंधि जयत नगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७३ ॥

या महा वप्रा देश बखान, रक्ता नंदी जलनिधि जान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश सस्थित रक्तानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७४ ॥

या महा वप्रा देश विशाल, रक्तोदा नंदी विन ताल । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७५ ॥

या महा वप्रा देश सदीव, देव रहै मगधादिक जीव । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपश्चिम विदेहे महा वप्रा देश सस्थिते मगधादिक देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७६ ॥

याहि महा वप्रा शुभ देश, ता में जिन मंदिर शुभ भेष । तिन में बिंब विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे महा वप्रा देशसंस्थिते-जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १७७ ॥

॥ सुदर्शन मेरु के पश्चिम में पश्चिम विदेह वप्रकावती देश गति छेदक अर्घ ॥

मेरु पश्चिम नदी उत्तरा, देश वप्रकावती शुभ धरा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतो उत्तर तटे वप्रकावती देश उत्पति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७८ ॥

याहि वप्रकावती सुदेश, खंड मलेच्छ धर्म विन लेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा तटे वप्रकावती संदेशस्थिते पच म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७९ ॥

याहि वप्रकावती सदेश, ता में वृषभाचल शुभ भेष । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुपश्चिम विदेह वप्रकावती देश संस्थिते वृषभाचल गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८० ॥

देश वप्रकावती सु जोय, तापे विजयारध की जोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश संस्थिते विजयार्द्धगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८१ ॥

याही विजयारध की सोय, दक्षिण श्रेणी बहु शुभ जोय । या ही उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध दक्षिणश्रेणी [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८२ ॥

इस ही विजयारध की सार, उत्तर श्रेणी सुर मन धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध उत्तरश्रेणी [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८३ ॥

या ही खग चल ऊपर सोय, कूट महा सुंदर अवलोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८४ ॥

इस ही खग चल कूट महान, तिन में देव बसें अधिकान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध कूट [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८५ ॥

इस ही खग चल ऊपर सोय, सिद्ध कूट पे जिन थल जोय । या में जिन बिराजें सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध सिद्धकूट [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८६ ॥

या हि वप्रकावती सु देश, तामें आरज खंड सु वेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित आर्यखंड [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८७ ॥

या ही वप्र कावती मझार, है उपसागर जल बहु धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित उपसागर [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८८ ॥

इस ही वप्रकावती मझार, अपराजित नगरी पुर सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित नगरी निवासी अपराजित नगरी [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८९ ॥

देश वप्रकावती सु माहिं, रक्ता नंदी अति जल ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देश मध्ये रक्तानदी [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १९० ॥

देश वप्रकावती सु जोय, रक्तोदा नंदी तहं सोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देश मध्ये रक्तोदा नदी [illegible] जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १९१ ॥

याहि वप्रकावती सु देश, देव नसै मगधादिक वेश, या मे उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश सबंधि मगधादिक गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९२ ॥

याहि वप्र कावती सु देश, तहं जिन मंदिर सुन्दर वेश । या में विंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश स्थित जिन मदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १९३ ॥

॥ सुदर्शन मेरु के पश्चिम में पश्चिम विदेह के गधा देश संबंधी अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, सीतोदा नंदी तट मान । गंधा देश सुरग सम जोय, या गति छेदक जजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तरतटे गधादेश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९४ ॥

याही गंधा देश मभार, खंड मलेच्छ धर्म जहं टार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सीतोदाउत्तरतटे गंधादेशस्थित पच म्लेच्छ गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १९५ ॥

या ही गंधा देश सुजान, वृपभाचल जानों सुख खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतादा उत्तर तटे गधादेश स्थित वृपभाचल गति छेदक जिनेभ्योअर्घ ॥ १९६ ॥

इसही गंधा देश मभार, विजयारध जानों सुख कार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १९७ ॥

या ही विजयारध की जोय, दक्षिण श्रेणी उत्तम सोय, या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९८ ॥

इस ही खगचल की मन लाय, उत्तर श्रेणी अति सुखदाय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधा देशस्थित विजयार्द्ध स्य उत्तर श्रेणा गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९९ ॥

इस ही विजयारध शिर जान, कूट कहे अति ऊंचे मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देशस्थित विजयार्द्ध कूट गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ २०० ॥

या ही विजयारध के शीश, कूट कहे अति सुंदर दीश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गधा देश स्थित विजयार्द्ध कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०१ ॥

या विजयारध ऊपर सही, देव जिनेश्वर थानक मही । या में विंम्ब विराजे सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधा देश स्थित जिन मदिरेभ्यो अर्घं ॥ २०२ ॥

या ही गंधा देश सुजान, तामें आरज खंड सु मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देश स्थित आर्य खड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २०३ ॥

या ही गंधा देश मझार, है उपसागर बहु जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २०४ ॥

याही गंधा देश मझार, चक्री पुर चक्री को सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधा देश स्थित चक्री सम्बन्धि चक्री पुर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०५ ॥

इस ही गंधा देश मझार, रक्ता नंदी बहु जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित रक्ता नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०६ ॥

या ही गंधा देश मझार, रक्तोदा नंदी जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०७ ॥

याही गंधा देश महान, है जिन भवन पाप क्षय थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देश स्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ २०८ ॥

याही गंधा देश सु जोय, देव रहै मगधादिक सोय, या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०९

॥ पश्चिम विदेह संबंधी सुगंधा देश गति छेदक अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, सीतोदा उतर तट मान । देश सुगंधा उत्तम मही, या गति छेदक पूजों सही ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे सुगंधा देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१० ॥

याहि सुगंधा देश महान, खंड मलेच्छ धर्म विन थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुगधा देश स्थित पंच म्लेच्छ खड उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २११ ॥

याहि सुगंधा देश मझार, वृषभाचल जानों गिरि सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्री प्रथममेरु पश्चिम विदे० सुगधा देश स्थित वृपभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१२ ॥

याहि सुगंधा देश सुजान, विजयारध गिरि उत्तम ठान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुगधा देशसस्थिते विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१३ ॥

याही विजयारध की सार, दक्षिण श्रेणी शुभ करतार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे सुगधादेश संस्थित विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१४ ॥

या ही विजयारध की जेय, उत्तर श्रेणी बहु सुख मेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुगधा देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१५ ॥

याही विजयारध शिर सार, कूट कहे ऊंचे सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सुगधादेश संस्थित विजयार्द्धस्य कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१६ ॥

इस ही कूट ऊपरै सही, देव बसै अति सुख की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगन्धादेशसस्थित विजयार्द्धस्य देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१७ ॥

याहि सुगन्धा देश महान, विजयारध सिध कूट बखान । या में बिंब विराजे सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगंधादेशसंस्थितविजयार्द्धस्य सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम ॥ २१८ ॥

याहि सुगंधा देश मझार, आर्य खंड जानों हितकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थित आर्यखडगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१९ ॥

याहि सुगंधा देश सु सार, तामैं उपसागर जलधार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुगन्धादेशस्थित उपसागरउत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२० ॥

याहि सुगंधा देश स्वरूप, खडग पुरी चक्री थल रूप । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुगन्धादेशस्थित चक्रीमन्दिर खड्गपुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२१ ॥

याहि सुगंधादेश विशाल, रक्ता नंदी जल की धार । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२२ ॥

याहि सुगन्धा देश विशाल, रक्तोदा नन्दी जल ताल । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२३ ॥

याहि सुगंधा देश मझार, देव रहैं मगधादिक सार । यामें उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थितमगधादिक देव गति छेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २२४ ॥

याहि सुगंधा देश महान, हैं जिन थानक पुण्य सुदान । या में थिर विराजे मोय, तिन पद अर्चं जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुगन्धादेशमध्यस्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ २२५ ॥

॥ प्रथममेरु पश्चिमविदेह में सीतोदा नदी के उत्तरतट में स्थित गंधिला देशसंबन्धि अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश सार, देश गंधिला जग मनहार । या मे उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे गंधिलादेश उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२६ ॥

देश गंधिला इस ही माहिं, खंड मलेच्छ धर्मबिन ठाहिं । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे गंधिला देश स्थित म्लेच्छखण्ड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२७ ॥

याहि गंधिला देश मझार, वृषभाचल जानों हितकार । यामें उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सीतोदादक्षिणतटे गंधिलादेशस्थित वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२५ ॥

देश गंधिला इस ही ठोर, विजयारध गिरि सब शिर मोर । यामें उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे गंधिलादेशस्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२६ ॥

याही विजयारध की सही, दक्षिण श्रेणी उत्तम मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधिलादेशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३० ॥

या ही विजयारध की मान, उत्तर श्रेणी सुर सम जान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गधिला देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३१ ॥

इस ही विजयारध पर जेय, कूट कहे उत्तम थल तेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गधिलादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३२ ॥

याही विजयारध शिर जान, देव बसै कूटन के थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गंधिलादेशस्थित'कूटवासी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३३ ॥

याही विजयारध पे सही, सिद्ध कूट पे जिन थल मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधिला देशस्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ २३४ ॥

याहि गंधिला देश मझार, आरज खंड महा सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित आर्यखंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३५ ॥

याहि गंधिला देश सु जोय, है उपसागर जलनिधि तोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधिलादेशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३६ ॥

इस ही देश गंधिला ठाहिं, चक्री नगर अयोध्या थाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधिलादेशे चक्रीसम्बन्धि अयोध्यापुरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३७ ॥

देश गंधिला इस ही माहिं, रक्तानंदी है जल ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित रक्तानदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३८ ॥

याहि गंधिला देश मझार, रक्तोदा नंदी जलधार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित रक्तोदानदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३९ ॥

इस हि गंधिला देश सुथान, देव रहें मगधादिक जान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधिला देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४० ॥

देश गंधिला या में सही, हैं जिन भवन पुण्य की मही। या में बिंब विराजै सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित मगधादिक जिन मन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ २४१ ॥

॥ प्रथममेरु पश्चिमविदेह में गंधमालिनी देश सम्बन्धि गतिछेदक अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम है सोय, सीतोदा उत्तर तट होय। गंधमालनी देश महान, या गति छेद जजों शिव थान ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सीतोदा उत्तरतटे गंधमालिनी देशउत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४२ ॥

इस ही गंध मालिनी देश, खंड मलेच्छ धर्म नहिं लेश। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेहे गंधामलिनि देशस्थित पंचम्लेच्छखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४३ ॥

देश जु गंध मालिनी जान, है वृषभाचल तिस पर भान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गंध मालिनी देशस्थित वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४४ ॥

इसही गंध मालिनी देश, विजयारध जानों शुभ भेष। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंध मालिनी देशस्थित विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४५ ॥

गंध मालिनी देश सु माहिं, विजयारध दक्षिण दिश ठाहि। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धदक्षिणश्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४६ ॥

इस ही विजयारध की सार, उत्तर श्रेणी है सुखकार। यामें उतपतिछेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४७ ॥

याही विजयारध पे सही, कूट कहे ऊंचे सुख मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहेगधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २४८ ॥

इस ही विजयारध शिर जेय, कूट निवासी है सुर तेय। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४६ ॥

या ही विजयारध के शीश, सिद्धकूट पे जिन थल दीश। या में बिंब विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५० ॥

याही गंध मालिनी देश, आरजखंड कह्यो शुभ भेप। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधमालिनी देशस्थित आर्यखडगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५१ ॥

गंध मालिनी शुभ थल माहिं; है उपसागर जलनिधि ठाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधमालिनी देशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५२ ॥

या ही गंध मालिनी देश, चक्री नगर अवध्या तेस। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित अवध्यानगरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५३ ॥

या ही गंध मालिनी धरा, रक्ता नंदी है जल भरा। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५४ ॥

गंध मालिनी देश महान, रक्तोदानंदी शुभ मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५५ ॥

याही गंध मालिनी देश, देव रहै मगधादिक भेष। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५६ ॥

गंध मालिनी देश मझार, है जिन भवन पुण्य मय सार। या में बिंब जिनेश्वर तने, मन वच पूजों अर्घ सुठने ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५७ ॥

छंद गीतिका—इस मेरु पश्चिम दिशा शिवदा कहे षोडश थान ये। इन क्षेत्र बीस विचित्र रचना और भवन प्रमानिये ॥

इन भवन बीच सु बिंब मणिमय, शोभ को मुखतें कहै। तिन पांय अर्घ चढाय भविजन, कष्ट बिन सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं गन्धमालिनी देश सम्बन्धि श्री जिन चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घम् ॥

॥ जयमाल ॥

दोहा— प्रथम मेरु पश्चिम दिशा, सीतोदा के तीर । जुग तट पे षोडश सुभग, थान विदेह सु वीर ॥

छंद वेसरी—पद्मा देश सुपद्मा जानो, देश महा पद्मा फिर मानो । देश पद्मकावती सु भाई, शंखा देश पंचमा थाई ॥२॥
नलिनी देश देश शिर मोरा, कुमदा देश सातमी ठोरा । सरित देश है अष्टम वीरा, प्रथम मेरुको पश्चिम तीरा ॥३॥
सीतोदा नन्दी की जानो, दक्षिण तट शुभ देश बखानो । अब वाही सरिता के थाये, उत्तर तट वसु देश बताये ॥४॥
तिनके नाम जोर के कहिये, वप्रादेश प्रथम ही लहिये । देश सुवप्रा दूजा भाई, देश महावप्रा सुखदाई ॥५॥
देश वप्रकावती स्वरूपा, गंधा देश देशमें भूपा । देश सुगंधा षष्टम जानो, गंधलादेश सातमा मानो ॥६॥
गंधमालिनी अष्टम देशा, सब मिलि अष्टम देश सुभेषा । षोडश देश कहे हितकारी, तहँते लहै भव्य शिवनारी ॥७॥
इनमें इक इक पुर सुखदाई, इन बिन दूसर उपजे नाहीं । अश्वपुरी पहली सुख ठाहीं, इनके भेद सुनो हितदाही ॥८॥
दूजी सिंह पुरी सब जानो, महापुरी तीजी मन आनो । विजय पुरी चौथी शुभ गाई, अरजा पंचम नगर सुभाई ॥९॥
विरजा षष्टम नगरी गाई, नाम अशोक सप्तमी भाई । पुरी वीतशोका मन ल्यावो, नवमी विजयापुरी सु गावो ॥१०॥
वैजयन्त नगरी शुभ जानो, नगरी फेर जयन्ती आनो । नगरी अपरा जिता सुहाई, चक्रीपुरी सकल मन भाई ॥११॥
खडग पुरी सब को सुख रूपा, नाम अजोध्या पुर सब भूपा । अन्त अवध्या पुर मन भावो, शोभा अधिक सहित समभावो१२
ये षोडश चक्री पुर गाये, कनक रतन जुत मन्दिर भाये । मुनि भोजन तहँ नित कर जावे, विहरत जिन भी उस थल जावे१३
इत्यादिक ये देश अनूपा, प्रथम मेरु पश्चिम दिश भूपा । थान विदेह जु शुभ थल गाये, पुण्यवान जीवन ने पाये ॥२४॥
जिन मुख की वाणी तहां हो है, सुनि भवि अपने अघ मल धो है । देवागम तहँ होय सदीवा, सेवै जिन उत्सवमें जीवा ॥१५॥
कनक कोट चक्री पुर थायो, तुंग घने अति सुन्दर गायो । बड़े द्वार ताके इक सहसा, छोटे द्वार अधिक गिन जैसा ॥१६॥
तिनके मणिमय जान कपाटा, तिन देखत सुर का मद फाटा । ता पुर में चौपथ मग जानो, तिन को एक सहस परमानो ॥१७॥
द्वादस सहस गली तहं गाई, इत्यादिक रचना बहु पाई । पुर के बाह्य बाग शुभ गाये, तीन सैंकड़ा साठ गिनाये ॥१८॥
पुरजन राज भवन सब जानो, रतन मई सब ही सुख थानो । इन आदिक रचना हितकारी, पश्चिम क्षेत्र विदेह अपारी ॥१९॥

जीव तहां पुण्य पाप उपावै, अपने भाव जसी गति जावै। या गति छेद वरी शिव नारी, तिन पद अर्घ जजों सुख कारी ॥२०॥

दोहा— प्रथम मेरु पश्चिम दिशा, षोडश थान विदेह। तिन गति हर शिव को गये, सो पूजों करि नेह।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सवधि जयमाला पूर्णार्घं ॥ इति ॥

॥ विदेह सम्बन्धि वक्षार गिरि स्थित चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीतिका—वक्षार जंबू तने षोडश, मेरु दो तरफा परे। हैं वरन सबके हेम से, निज शोभ से सुर मन हरे।
गिरि कौन दक्षिण और उत्तर से सभी नदियां घिरी। तिन कूट पर हैं भवन जिनके, पूजते जिन को हरी ॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार गिरि सर्वधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार गिरि संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार गिरि संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—प्रथम मेरु प्रथम वक्षार, चित्र कूट तसु नाम विचार। ता ऊपर जिन भवन उजास, मैं पूजों शिव पुर प्रकाश।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीपे विदेहक्षेत्र चित्र कूट वक्षार सबंधि सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

दूजो पद्म कूट वक्षार, तिनपे जिनको मंदिर सार। विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो विदेह क्षेत्र पद्मकूट नाम वक्षार संवधि सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

तीजो नलिन नाम वक्षार, तापर जिन मन्दिर अधिकार। विंब तहां जिन के अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेह क्षेत्रे नलिन नाम वक्षार स्थित सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

चौथो एक शैल वक्षार, तापर जिन मन्दिर हितकार। विंब तहां जिन के अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेह क्षेत्रे एक शैल वक्षार स्थित सिद्ध कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

नाम त्रिकूट पंचमों शैल, तापे जिन मन्दिर विन मैल। विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो विदेह क्षेत्रे त्रिकूट नाम वक्षार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

षष्ठम वैश्रवण वखार, ताके ऊपर जिन गृह सार। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेहक्षेत्रे वैश्रवण नाम वखार स्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

अंजनात्म सप्तम वखार, जिनके भवन तास पे सार। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे अंजनात्म वखार स्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

अंजन अष्टम शुभ वखार, जिन मन्दिर तापे अघ टार। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्री प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे अजन नाम वखार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

श्रद्धावान जान वखार, ता ऊपर जिन भवन सु सार। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेह क्षेत्रे श्रद्धावान वखार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

विजटावान वखार सुजान, ऊपर ताके जिन थल मान। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ सँजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेहक्षेत्रे विजटावान वखार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

आशीविष वखार सुजान, ऊपर ताके जिन थल मान। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे अशीविष वखारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

नाम सुखावह शुभ वखार, ता ऊपर जिन मन्दिर सार। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथमेमरोः विदेहक्षेत्रे सुखावह नाम वखारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

चन्द्रमाल परवत वखार, ऊपर जिन मन्दिर सुखकार। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो. विदेहक्षेत्रे चन्द्रमालवखार स्थित जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

सूर्यमाल वखार सुजोय, ता ऊपर जिन थानक होय। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो विदेहक्षेत्रे सूर्यमाल वखारस्थित जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

नागमाल वखार अनूप, ऊपर जिन थल सुन्दर रूप। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहक्षेत्रे नागमाल वखारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

देवमाल पर्वत वखार, ता ऊपर जिन मन्दिर सार। विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथगमेरोः विदेहक्षेत्रे देवमालवखारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

अडिल्ल—

षोडश हैं वखार मेरु परथम तने, तिन ऊपर जिन थान पुण्य थानक बने।
विंब तहां मणि मई अकृत्रिम हैं सही, तिनके पद में पूजों चाहन शिव मही ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे चित्रकूट नाम वखार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

सोरठा—

प्रथम जान वखार, चित्रकूट तिस नाम है। या गति छेदक सार, तिन पद पूजों हर्ष कर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहे क्षेत्रे चित्रकूट नाम वखार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

दूजो जो वखार, पद्मकूट तसु नाम है। या गति छेदक सार, तिन पद पूजों हर्षकर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे पद्मकूटवखार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

तीजो पर्वत सोय, नलिन कूट तसु नाम है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्षकर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे नलिननाम वखार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

चौथा पर्वत सोय, एकशैल तिस नाम है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे एकशैलवखार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

नाम त्रिकूट सुजोय, पंचम गिर वखारहै। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु-विदेहक्षेत्रे चित्रकूटनाम वखार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

कूट वैसरवण सोय, अष्टम है वखार गिर। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे वैश्रवणनामवखार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

अंजनात्मा सु होय, है वखार शुभा मही। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु विदेहक्षेत्रे अंजनात्मवखार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं २४ ॥

अंजन अष्टम सोय, है वखार सुहावना। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्षधर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहे क्षेत्रे अजननाम वखार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

श्रद्धावान जु सोय, गिरि वक्षार विदेह में। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्षधर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहक्षेत्रे श्रद्धावान वक्षार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

विजटावान जु होय, दशमा गिरि वक्षार है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्षधर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहक्षेत्रे विजटावान वक्षारगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

आशीविष है सोय, एकादश वक्षार ही। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेहक्षेत्रे आशीविष वक्षार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नाम सुखावह होय, द्वादशमा वक्षार का। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो. विदेहक्षेत्रे सुखावह वक्षार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

चद्रमाल है सोय, तेरहमा वक्षार ही। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घधर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो. विदेहक्षेत्रे चंद्रमाल नाम वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

सूर्य माल है सोय, चौदहमां वक्षार जी। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेह क्षेत्रे सूर्यमाल वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

नागमाल है सोय, पन्द्रहमा वक्षार का। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे नागपाल वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

देव माल जु सोय, षोडशमा वक्षार है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे देवमाल वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

दोहा— षोडश गिरि वक्षार हैं, प्रथम मेरु के जान। तिन गति छेदक देव के, पांय जजों हित मान।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्र संबंधि वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३४ ॥

॥ द्वादश विभंगा नदी गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—गाधवती सरिता मन लाय, जानि विभंगा अति जल ठाय। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हरषित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सवधि गाधवती विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

जानि विभंगा नदी सु सार, है द्रहवती नाम सुखकार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि द्रहवती विभगा नदी गति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

पंकवती सरिता जल धार, दूजी नदी विभंगा सार। या गति छेदक देव जु होय। तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सम्बन्धि पकवतो विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

तप्त जला नंदी को नाम, वेग घने दीरघ जल ठाम। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबंधि तप्तजला विभगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥

मत्तजला सरिता जल खान, शोभै तट दोनों अधिकान। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबंधि मत्तजला विभगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

उनमतजला नदी है सार, उज्वल वरणी तट पे धार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि उनमत्तजला विभगा-नदी गति-छेदक-जिनेभ्यो-अर्घं ॥ ४० ॥

क्षारोदा नंदी को नाम, दोऊ तट शोभा वन धाम। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि क्षारोदा विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४१ ॥

सीतोदा नंदी है जेय, ताके जल अति निर्मल तेय। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं-प्रथम मेरु सबधि सीतोदा विभगा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

श्रोतवाहिनी सरिता जान, क्षेत्र विदेह माँहि यह मान। या गति छेदक जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबधि श्रोत वाहिनी विभगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥

गंभीर मालिनी सरिता सार, क्षेत्र विदेह विषै जल धार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि गंभीर मालिनी विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

फेन मालिनी नंदी सार, वहती क्षेत्र विदेह मझार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु संबधि फेन मालिनी विभगा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

उर्मिमालिनी सरिता सार, क्षेत्र विदेह विषैं निरधार । या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुसंबंधि उर्मिमालिनी विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

छंद–अडिल्ल—

एती द्वादश नदी विभंगा जानिये, क्षेत्र विदेह विषै अति जल की खानिये ।
मान पोत्र द्रहतै चलि सरिता है मिली, तिन गति हर शिव लई जजों हो बुध भली ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः षोडश वक्षार सवंधि द्वादश विभंगा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

प्रथम मेरु के षोडश लख वक्षारजी, द्वादश और विभंगा सरिता सारजी ।
तिन की उतपति छेद सिद्ध पद पाइयो, तिन पद हम यह मन वच अर्घ चढाइयो ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो. षोडश वक्षार सबधि द्वादश नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

॥ प्रत्येक बक्षार संबंधी चार चार कूट गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई–चित्र कूट परथम वक्षार, तापे चित्र कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः चित्र कूट वक्षार संबंधि चित्रकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

चित्र कूट ऊपर ही सही, सिद्ध कूट है सुख की मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरो चित्र कूट बक्षार संबंधि सिद्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

चित्र कूट परथम वक्षार, तापे कच्छा कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः चित्र कूट बक्षार संवधि कच्छा कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३ ॥

इसही चित्र कूट वक्षार, ऊपर कूट सु कच्छा सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः चित्र कूट बक्षार संवधि सु कच्छा कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

दूजो पद्म नाम वक्षार, तापे नलिन कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो' पद्मनाम वक्षार संबधि नलिननाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पद्म द्वितिय वक्षार उचार, तापे सिद्ध कूट मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो' पद्म वक्षार सवंधि सिद्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

याही पद्मकूट बद्मार, महाकच्छ तहँ कूट सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खयो ॥

ॐ ह्रीं प्रमथमेरो' पद्म कूट बद्मार सबंधि महाकच्छ कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

पद्म कूट पर्वत पर जान, कच्छकावती कूट बखान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो पद्म कूट बद्मार संबधि कच्छकावती कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

तीजो नलिन नाम बद्मार, तापे नलिन कूट निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो' नलिन बद्मार संबधि नलिन कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

तीजो नलिन नाम बद्मार, तापे सिद्ध कूट मन धार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके:पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः नलिन बद्मार संबधि सिद्धकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १० ॥

याही नलिन कूट बद्मार, आवर्ता तसु कूट सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथममेरुनलिनबद्मारसंबधि आवर्ता कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

याही नलिन ऊपरै सही, लांगलवर्त कूट शुभ मही। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नलिन बद्मार सबंधि लांगलावर्त कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

एक शैल बद्मार सु जान, तापे शैल कूट भी मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बद्मार सबधि शैल कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

शैलवान बद्मार सु जान, तापे सिद्ध कूट सुख खान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बद्मार संबंधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

शैल नाम इस ही बद्मार, उपरि पुष्कला कूट जु सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बद्मार संबंधि पुष्कला कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

शैलवान बद्मार अनूप, पुष्कलवती कूट शुभ रूप। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बद्मार संबधि पुष्कलावती कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १६ ॥

पंचम गिरि वखार त्रिकूट, तापे नाम त्रिकूट सु कूट । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट वखार सम्बन्धि त्रिकूट नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

जानो शैल त्रिकूट सु भाय, तापे सिद्ध कूट मन लाय । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट वखार सम्बन्धि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

याही गिरि वखार त्रिकूट, तापे वत्सा कूट अनूप । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट संबंधि वत्सा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

इस वखार त्रिकूट मझार, उपरि सुवत्सा कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट वखार संबंधि सुवत्सा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

वैश्रवण पष्ठम वखार, वैसरवण है कूट सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वखार संबंधि वैसरवण कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

वैश्रवण वखारे सही, सिद्धकूट है अदभुत मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वखार संबंधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

वैसरवण नामा वखार, है महावत्सा कूट सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वखार संबंधि महावत्साकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

वैश्रवण नामा वखार, वत्सकावती कूट शुभ कार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वखार संबंधि वत्सकावती कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥

अंजनात्म वखारे सही, सिद्ध कूट है उत्तम मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु अंजनात्म वखार संबंधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

अंजनात्म वखारे सही, कूट महावत्सा जो कही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु अंजनात्म वखार संबंधि महावत्सा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

अञ्जनात्म सप्तम वक्षार, कूट अञ्जनातम है सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अंजनात्मवक्षारसंबंधि अंजनात्मकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

है अंजनात्म भलो विस्तार, कूट सुरम्या ऊपर सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अजनात्मवक्षारसम्बन्धि सुरम्याकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

अष्टम अंजन जो वक्षार, तापे अंजन कूट जु सार। या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अजनवक्षारसवन्धि अजनकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ·९ ॥

अंजन अष्टम तर्वत जेय, तापे सिद्ध कूट गिन लेय। या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अजनवक्षार सम्वन्धिसिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

अष्टम अंजन शुभ वक्षार, तापे रमणिया कूट सुधार। या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अंजनवक्षार सम्वन्धि रमणिया कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

अंजन गिरि वक्षार सुसार, कूट मंगलावति निरधार। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अजनावक्षार सम्वन्धि मगलावती कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३२ ॥

दोपा— पूर्व दिशा वक्षार वसु, तिनके कूट महान। तिन गति छेदक देवके, जजों द्रव्य वसु आन ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अष्टवक्षार सम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

चौपई—श्रद्धावान नवम वक्षार, श्रद्धावान कूट तहँ सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु श्रद्धावान वक्षार सम्बन्धि श्रद्धावान कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

श्रद्धावान् पर्वत पे सही, सिद्धकूट है उत्तम मही। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु श्रद्धावानवक्षार सम्बन्धि सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

श्रद्धावान भलो वक्षार, तापे पदमा कूट जु सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु श्रद्धावान वक्षार सम्बन्धि पद्माकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

श्रद्धावान भलो वखार, कूट सुपद्मा ऊपर सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु श्रद्धावानवखार सम्बन्धि सुपद्माकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

विजटावान दशम वखार, तापे विजटा कूट जु धार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखार सम्बन्धि विजटाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

विजटावान वखार सुजान, तापे सिद्ध कूट शुभ मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखारस्थित सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

विजटावान वखार सु तेय, महा पद्म तहँ कूट गिनेय। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखार सम्बन्धि महापद्मकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

विजटावान भलो विस्तार, कूट पद्मकावती जु सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखारसम्बन्धि पद्मकावती कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

आसी विष वखार जु सार, कूट तहां आशीविष मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविष वखार सम्बन्धि आशीविष कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

आशीविष नामा वखार, तापे सिद्ध कूट मन हार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविष वखार संबंधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

है वखार आशीविष जेय, तापे शंखा कूट गिनेय। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविश वखार सम्बन्धि शंखा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

या पर्वत आशीविष मांहि, ऊपर नलिन सु कूट बताहि। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविष वखार संबंधि नलिन कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

नाम सुखावह है वखार, तापे कूट सुखावह सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वखार संबंधि सुखावह कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

नाम सुखावह शुभ वक्षार, ऊपर सिद्ध कूट मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वक्षार सवधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् । ४७ ॥

गिरि वक्षार सुखावह सार, तापे कुमदा कूट सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वक्षार सम्बन्धि कुमदा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

जान सुखावह जो वक्षार, तापर सरित कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वक्षार सम्बन्धि सरित कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

चन्द्रमाल गिरि लख वक्षार, चन्द्रमाल कूट तसु सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्र माल वक्षार सवंधि चन्द्र माल कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

चन्द्रमाल जानो वक्षार, तापे सिद्ध कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्रमाल वक्षार सम्बन्धि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

चन्द्र माल नामा वक्षार, वप्रा कूट तहां है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्रमाल वक्षार सम्बन्धि वप्रा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

याही चन्द्र माल गिरि जान, ऊपर कूट सुवप्रा मान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्रमाल वक्षार सवधि सुवप्राकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

सूर्यमाल चौदम वक्षार, सूर्य माल तहं कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्यमाल वक्षार सवधि सूर्यमाल कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५४ ॥

सूर्यमाल पर्वत वक्षार, तापे सिद्ध कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्यमाल वक्षार सवधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५५ ॥

सूर्यमाल जो है वक्षार, कूट तहां महा वप्रा सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्य माल वक्षार सवधि महावप्रा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५६ ॥

सूर्यमाल शुभ ह बक्षार, कूट वप्रकाव ी सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्यमाल बक्षार सम्बन्धि वप्रकावती कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

नागमाल पंद्रम बक्षार, नागमाल तहं कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नागमाल बक्षार सम्बन्धि नाग माल कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

नाग माल पर्वत बक्षार, तापे सिद्ध कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नाग माल बक्षार सन्बन्धि सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

नाग माल गिरि पे शुभ सही, गंध नाम है कूट जु मही । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नागमाल बक्षारसम्बन्धि गन्ध नाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

नाग माल पर्वत पे जोय, कूट सुगंधा जानो सोय । ता की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नागमाल बक्षारसम्बन्धि सुगन्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

देवमाल बक्षार सु जान, देव माल तहॅ कूट जु मान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु देवमाल बक्षार सम्बन्धि देवकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

देवमाल परवत पे सही, सिद्धकूट है उत्तम मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु देवमाल बक्षार सबंधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६३ ॥

देव माल जानो बक्षार, गॅधला कूट तहां पे सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु देव माल बक्षार सबधि गधला कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६४ ॥

देव माल गिरि ऊपर सही, गंधमालिनी कूट जु मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु देव माल बक्षार संबंधि गधमालिनी कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६५ ॥

छंद अडिल्ल—

प्रथम मेरु बक्षार दोऊ दिशि जानिये । तिन ऊपर चव कूट, महा सुख थानिये ।
तिन की उतपति छेद, गये शिव थान जी । तिन पद पूजों अर्घ भले कर आन जी ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु षोडश बक्षार संबधि चैत्यालय कूट वा गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६६ ॥

।। उत्तर कुरु भोग भूमि गतिच्छेदक अर्घ ।।

दोहा— उत्तर कुरु की भूमि में, उपजत जिय बहु आय । सो उतपति छेदकनिको, पूजों हर्ष बढाय ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि गति छेदक अत्रावतरावतर संवौषट् (आह्वाननम्) ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि गति छेदक अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ. स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि गति छेदक अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम ।

चौपई–ये उत्कृष्ट सु आरज थान, उपजै इहां नर शुभ फलवान । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि सवधि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ।। २ ।।

उत्तर भोग भूमि में सार, पशू होय पुण्य के धार । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्पित होय ।।

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि तिर्यञ्च गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ।। ३ ।।

उत्तर भोग भूमि के माहि, नभचर जीव होय अधिकाहि । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्पित होय ।।

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सबन्धि नभचर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ।। ४ ।।

उत्तर भोग भूमि की ठोर, थल चर जीव बसें बहु जोर । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ।।

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि थलचरजीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ।। ५ ।।

उत्तर कुरु भू माहि सुजान, उपजै सुर द्रुम दश विधि मान । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ।।

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि दशप्रकार कल्पवृक्ष गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ।। ६ ।।

हरिगीतिका–यह जाति उत्तर भोग भू की धरा उत्कृष्टी कही । तहँ आयु पल्य सु तीन नर पशु, तीन क्रोस जु तन सही ।।
दिन तीन अन्तर खाय भोजन, वृक्ष दशधा कल्प हैं । इन गतिच्छेदक देवके पद, जजों पापनि अल्प हैं ।।

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ।। इति ।।

।। शालमली वृक्ष सम्बन्धि चैत्यालय पूजा ।।

छंद हरिगीतिका–वर-मेरु की उत्तर दिशा में, वृक्ष शालमली कह्यो । जहँ रतनमय है सकल रचना, तासु पे जिन थल ठयो ।।

तहँ बिंब सब ही रतन मणिमय, सकल को सुखदायजी। फिर जाय सुरखग वहां पूजें, हम जजैं मन भायजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु उत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु उत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं प्रथममेरुउत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद अडिल्ल—

गंगा निरमल नीर लाय शुभ भावजी, कनकपात्र में घाल हिये कर चावजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों थुति ठान जरामृत दाहिये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि श्रीजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन घसि शुभ नीर सुगन्ध अपारजी, कनकपात्र ले धार भक्तिजुत सारजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों थुति ठान जनम दाह ढाहिये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल गंध खंड विन जोयके, ले अपने कर निरमल नीर सुधोय के।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, तिन पद अक्षत पूजि अखै पद पाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल गंध बहु भांति वरन सुखदायजी, ले अपने करमाल भक्ति बहुलायजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों थुति लाय काम अति दाहिये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

षटरस जुत नैवेद्य तुरत कर लाइयो, सुभग पात्र धरि श्री जिनके गुण गाइयो।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइयो, ते पूजों मन लाय भूख क्षय जाइयो ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय तमहर ज्योति प्रकाशता, कनक थाल में लाय सुखै थुति भाषता।

शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों मन लाय मिथ्या तम जाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शालमली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

दशधा धूप मिलाय गंध आछी करी, अगनि विषै हरपाय सकल ही ले धरी ।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइयो, धूप लाय ते जजों कर्म क्षय पाइयो ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी लाइये, इन आदिक बहु फल सुभग गुण गाइये ।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, पूजेतें शुभ भाव मोक्ष फल पाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मली वृक्षसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दनाक्षत पुष्प फेर चरु लायके, दीप धूप फल अर्घ लेय गुणगाय के ।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, पूजे ते शुभ भाव सिद्ध पद पाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—
ये शालमली तरु पे सुजान, जिन थानक मणिमय विंबमान ।
तिनके पद पूजों भक्ति लाय, ता फलतें शिव सुर थान पाय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि श्रीजिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—शाल्मली तरु पृथ्वीकाय, हरित काय मनमें नहिं लाय । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं शाल्मली वृक्ष गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

याही शालमली तरु माहिं, देव रहै नाना सुख पाहिं । याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं शाल्मलीवृक्षसम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— शालमली तरु ऊपरैं, जिन थानक शुभ जान। जजैं देव भव सफल करि, मैं पूजों धनि मान ॥

छंद वेसरी—भोग भूमि नामा थल माहीं,जंबू वृक्ष महा सुख ठाहीं। दश जोजन तो तुंग बतायो,मधि तें दश जोजन को गायो ॥२॥
ऊपर जोजन चव का व्यासा, शोभा अधिक सुरत में भाषा। चव शाखा ताके लखि भाई, वज्रमई सुन्दर बतलाई ॥३॥
दक्षिण शाखा पे जिन गेहा, तहं पूजे सुर नर कर नेहा। शाखा और तिनों पे भाई, देव रहै शोभा अधिकाई ॥४॥
व्यंतर देव तनों यहां वासो,पूजों जिन करि करि सुख आशो। या भी विरछ तनों व्याख्यानो,जंबू वृक्ष तनों सब जानों ॥५॥
पहला कोट वेदिका सारी,तरु परिवार गिणत सम धारी। तिन पे भी सुन हरि का वासा,पूजों जिन सुख करि अघ नाशा ॥६॥
या तरु रचना कबलों कहिये,बुध थोडी शोभा बहु लहिये। शाखा लघु रतना मय जानो,मूंगा सम तहां फूल बखानो ॥७॥
ताके फल दीरघ अति काये, मृदंग से जिनवाणी थाये। रचना देखि देव मन मोहै, जिन पूजें अद्भुत फल हो है ॥८॥
तहां सदा जिन पूजन भाई, देव खगां ही पहुँचे जाई। और जीव का मोसर नाहीं, धन्य तिन्हें जो पूजैं यहां ही ॥९॥
जिन पद पूजें अघ क्षय जावै,जीव भक्ति तें बहु सुख पावै। ते धनि जे ऐसे जिन पूजैं, तिनके पूरब अघ सब धूजैं ॥१०॥
हम तो यहां तें मन वच काई, पूज रचें भव धन गिन भाई।-इत्यादिक इस तरु की बातें, देखे सुने पाप सब जाते ॥११॥
या का सब व्याख्यान अनूपा, जंबू तरु का सकल सरूपा। ताको फल आगे कर आये, तैसा ही यह जानो भाये ॥१२॥

दोहा— शालमली शोभा सहित, वृक्ष कह्यो सुख दाय। जजों ताम पे जिन भवन, ता फल बहु सुख पाय ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं शालमली वृक्ष संबंधि जिन चैत्यालय जयमालाघम् ॥ इति ॥

॥ अथ नील कुलाचल पूजा प्रारभ्यते ॥

छंद अडिल्ल—
प्रथम मेरु की उत्तर दिशि को जानिये, नील कुलाचल महा सुभग थल मानिये।
ता ऊपर जिन थान बिंब हैं सुख मई, सो मैं पूजों थापि यहां मन वच सई ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ स्थापनम्।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

छंद गीतिका—नीर निरमल क्षीर दधि को, महा सुख दायक सही । मैं लेय झारी कनक माहीं, आपने कर की मही ।
जिन थान परवत नील ऊपरि, तास पद पूजा करों । तिस फलै जामन मरण के दुख, नाश हों सहजै करो ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

घसि नीर गंध सु धार चन्दन, सकल को सुखदाय ही । धरि कनक पातर भक्ति उर धरि, तास पद पूजों सही ॥
जिन थान पर्वत नील ऊपर, तास पद पूजों सही । ता फलै भव आताप नाशै, वाणि जिन ऐसे कही ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

सुभग उज्वल खंड विन ही, अक्षत निरमल लाइयो । ले आपने कर हरष धरिके, देव जिन गुण गाइयो ॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही । ता फलै थानक अखय पावै, भव भ्रमण परिणति रही ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुर द्रुम तने सुन्दर, गन्ध की उपमा घनी । ले आप कर अति भक्ति उरधर, पाप की परिणति हनी ॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही । ता फलै दुखदा मदन नाशै, पाय हैं सुख की मही ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य षटरस सहित सुखदा, तुरत को कीनों लियो । धरि सुभग पातर आप करले, भक्ति जुत शुभचित कियो ॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही । ता फलै जठरानल विनाशै, और फल की को कही ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रतन दीपक ज्योति करता, तम हरा सुन्दर गिनो । धरि कनक पातर आरती कर, हरष बहु हिरदै ठनो ॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही । ता फलै मिथ्या रोग नाशै, सुरत में ऐसे कही ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विध गंधदायक, घ्राणको सुखदायजी । लें हरष जुत तें आपने कर, धरों वह्नि मांहिजी ॥

नील कुलाचल कमल मझार, देवी कीर्ति रही सुखकार। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि कमलवासिनी कीर्ति देवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

कीरति देवी के परिवार, देव रहैं कमल में सार। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचल सम्बन्धि कीर्तिदेवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

केशरि कुंड नील गिरि शीश, तहँ तें सीता नदी चलीस। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि सीता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

केशरि नाम कुंड तें चली, नरकान्ता सरिता दधि मिली। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि नरकान्ता नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

नंदी परवत कुंड सुजान, कमल आदि देवी सुरमान। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि ह्रदनदी कमलदेवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— नील कुलाचल ऊपरैं, है जिन थान सयान। देव खगा पूजै तहां, हम पूजैं इह ठान ॥ १ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

जंबी द्वीप गिरि उत्तर धारा, मेरु कुलाचल सब गिरि लारा। दंडाकार भूमि में थाया, पूरब पश्चिम नौक बताया ॥ २ ॥
चौपड पासावत आकारा, ऊपर हेट व्यास सम धारा। ऊंचा जोजन चव शत भाई, व्यास निषध परवत सम थाई ॥३॥
मोरकंठसा वरण बताया, तथा सब्ज पन्ना मय गाया। इसपे नव शुभ कूट बताये, देवतने तिसपे थल गाये ॥ ४ ॥
कूट तुंग ऐसे मन लावो, निज गिरि तें आधे समझावो। सकल गिरी रतनों के कूटा, दोनों वन वेदी दुख छूटा ॥ ५ ॥
या गिरि ऊपर द्रह शुभ जानो, केशरि ताको नाम बखानो। लंबा कुंड तना विसतारा, च्यार सहस जोजन मन धारा ॥६॥
जोजन सहस दोय का व्यासा, ऊंचा जोजन चालिस भाषा। फिर इन दधि मधि कमल सुहाये, देवीदेव बसै तहां ठाये ॥७॥
फिर तिन में तें नन्दी आई, पूरब अपर चाल दधि याही। इन आदिक बहुत विसतारा, जान लेय जिन धुनि तें सारा ॥८॥

ऐसो नील कुलाचल भाई, उपमा ताकी वरणी न जाई । तापै देव जिनन्द सु थानो, सो मैं पूजों हो अघ हानो ॥९॥
या परवत की रचना सारी, भुगतै भटकै जीव संसारी । या की उतपति हर शिव जावै, ता पद पूजन सुर खग आवै ॥१०॥

सोरठा— नील कुलाचल होय, सब जीवन सुखदाय है । या गति छेदक सोय, अर्घ जजों पद तासु के ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल सम्बन्धि जयमाला पूर्णार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥ रम्यकक्षेत्र सम्बन्धि गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—रम्यक नाम क्षेत्र शुभ लसा, मेरु सुदर्शन उत्तर दिशा । भोग भूमि मध्य की जान, या गति छेद जजों थुति ठान ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुउत्तरदिशा रम्यक् क्षेत्रगतिच्छेदक जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु उत्तरदिशा रम्यक् क्षेत्रगतिच्छेदक जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु उत्तरदिशा रम्यक् क्षेत्रगतिच्छेदक जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

मेरु तनी दिश उत्तर जान, रम्यक क्षेत्र रहै सुख खान । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि रम्यक क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

याही रम्यक थल मे सार, होय मनुष्य पुण्य अवतार । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र सम्बन्धि मनुष्यगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

रम्यक क्षेतर मांही सही, जलचर पशू होंय इस मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र सम्बन्धि जलचर जीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

रम्यक भोग भूमि विच जेय, नभचर जीव ऊपजै तेय । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्रसम्बन्धि नभचरजीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याही रम्यक थल मधि जान, परवत भलो नाभि गिरि मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यकक्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

रम्यक क्षेत्र भली भू माहिं, कल्प वृक्ष जाति दश ठाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र संबंधि दश प्रकार कल्प वृक्ष गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

छंद अडिल्ल— रम्यक खेतर माहिं आयु पलि दोय है, दोय कोस तन मंद कषाई होय है।
दो दिन अंतर आय बुद्धि बल सुन्दरा, इन गति छेदक देव जजों सुर शिव करा ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र संबधि उत्पति छेदक जिनेभ्यो महार्घम् ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ रुक्मि पर्वत संबंधि अकृत्रिम चैत्यालय पूजा ॥

चौपई—रुक्मी नाम कुलाचल सोय, मेरु तनी उत्तर दिश जोय। तापे है जिन थल जिन बिंब, ताहि जजों मन वच इक थम्ब ॥

ॐ ह्रींप्रथम मेरु रुक्मिनाम पर्वत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु रुक्मिनाम पर्वत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु रुक्मिनाम पर्वत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद जोगीरासा—नीर महा निरमल सुखकारी, क्षीरोदधि सम भाई। झारीकनक तनी भर करले, भक्ति धार अधिकाई ॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी, बिंबन को पूजों शुभ भावन, जामन मरण निवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन पावन जलतें, खूब घिसऊं भाई। कनक पियाले धार लेयकर, हरष घनों उपजाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनिको पूजों शुभ भावन, जामन मरण निवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

तन्दुल उज्वल खंड विना ले, सब ही नोक धराये। सुभग रकेबी थाल लेयकर, मनमें बहु उमगाये।
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, थान अखै फलधारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल कलप द्रुम के हितकारी, गंध धरा शुभकारी। वर्ण मनोज्ञ अनेक जातिके, ले अपने कर धारी ॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मंदिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, कामवंश सब जारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

तुरत करत नैवेद्य महा शुभ, षटरस पूरित भाई। सुभग थाल भर लेकर अपने, हरषधार अधिकाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मंदिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, रोग क्षुधा निरवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई तमहारी, ज्योति प्रकाशक भाई। कनकथाल भर लेय आरती, जिन पूजन मन लाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनिको पूजों शुभ भावन, मिथ्या तम क्षयकारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप भली दश गंध तनी शुभ, मेलि इकट्ठी लायो। खेवन को मनसा वच काया, जिन चरणा उमगायो ॥
रुक्मीनाम कुलालाच ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, कर्मनाश को धारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी, खारक पिसता भाई। इन आदिक फल लाय मनोहर, नैनन को सुखदाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मंदिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, मोक्ष फला करतारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल लाये। इनको अरघ बनाय सुभग चित, अंग अंग हुलसाये ॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, अद्भुत फल करवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

द्वरि—जिन पूजातें जगपूज्य होय, फिर स्वर्गमोक्ष ह्वै कर्म खोय। इमि जानि पूजिये देव पांय, तातैं भव वांछित सुख सु थाय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—रुक्मी नाम कुलाचल जान, सिद्धकूट उत्तम थल मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

रुक्मी भलो कुलाचल सार, तापे रुक्मी कूट जु धार । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि रुक्मिनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याही रुक्मी परवत शीश, रयम्क नाम कूट सुदीश । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि रम्यकनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही रुक्मी परवत सही, नारी नाम कूट की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि नारीनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

रुक्मीनाम कुलाचल सही, तामें बुद्ध कूट की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि बुद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

ये ही कुलाचल रुक्मी जान, रूप कुला तहँ कूट वखान । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि रूपकुला कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

नाम कुलाचल रुक्मीजान, हिरण्यनाम की कूट वखान । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचलसम्बन्धि हिरण्यनामकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

रुक्मी नाम कुलाचल सार, मणि कंचन तहँ कूट सुधार । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल सम्बन्धि मणिकाचन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

ये ही रुक्मी के वसुकूट, देव रहें सुख से अघ छूट । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल सम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

रुक्मी नाम कुलाचल जान, पुंडरीक महाद्रह मान । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल सम्बन्धि महापुण्डरीक ह्रदगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

महा पुंडरीक द्रह माहि, कमल कह्यो मणिमय हित ठाहि । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल होय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल महापुडरीक ह्रदसंबन्धि कमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

पुंडरीक ह्रद कमल सु तेय, तापर कमल महा अति जेय । ता में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल पुंडरीकह्रदकमलमवधि बुद्धिदेवो गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

महा पुंडरीक कमलद्रह सार, तापे बुधि देवी थुति धार । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल पुडरीकह्रद कमल सम्बन्धि बुद्धिदेवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३ ॥

बुध देवी परिवार सु देव, बसै और कमलन में जेव । ता की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल महापुडरीकह्रदकमलवासो बुद्धिदेवी परिवारदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

महा पुंडरीक द्रह सही, नारी सरिता उतपति भई । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल महा पुडरीकह्रद सम्बन्धि नारो नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

महा पुंडरीक द्रह जान, नदी रूप्य कूला निकसान । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाथ कुलाचल महापुडरीक ह्रद सम्बन्धि रूप्यकूलानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छंद अडिल्ल—

नंदी द्रह गिरि फूल और सुर जो सही, इन आदिक जो रचना सब ही सुखमयी ।
रुक्मी नाम कुलाचल जो विधि जानिये, ता गति छेदक सोय जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल संबधि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

॥ जयमाला ॥

चौपई—रुक्मी नाम कुलाचल सोय, ताकी रचना गावैं जोय । सुनत कथन हित उपजै सही, होय पाप क्षय शुभ फल मही ॥१॥

छन्द वेसरी

रुक्मी नाम कुलाचल जानो, जंबू द्वीप विषै शुभ थानो । दंडाकार तुंग अधिकाई, पूरब परिचम नोक बताई ॥ २ ॥
श्वेत वरण रूपा सम होई, ताकी महिमा लखै न कोई । जोजन द्वय शत ऊंचा जानो, चौडाई आगम तें मानो ॥ ३ ॥
महा पुंडरीक पे कुंडा, जोजन दश द्रह जानों ऊंडा । दोय सहस जोजन लंबाई, व्यास जोजना सहस बताई ॥ ४ ॥
तामें कमल रतन मय मानो, तहं पे बुध देवी को थानो, जोजन दोय कमल का वासा, ऊंचा जल सम कछु अधिकासा ॥५॥
ता द्रह में दो सरिता आई, नारी रूप्य कुला लख भाई । सो चलि बहु नंदी-जुत होई, मिली समद लवणोदधि सोई ॥६॥
और कमल लघु द्रह में भाई, घने कहे परिवार बताई । तिन पे बुधि देवी परिवारा, देव रहै नाना सुख धारा ॥ ७ ॥
इत्यादिक रुक्मी गिरि मांही, रचना घनी वाणि जिन गाही । और ऊपरै कूट बताये, तिन पे देव बसे धुनि गाये ॥ ८ ॥
तिन पे एक कूट सिध जानो, तापे जिन को थान बखानो । बिंब महा सुन्दर जिन जैसा, सो मैं पूजों सिध फल ऐसा ॥९॥
देव खगां नित पूजा ठाने, अपने तन को सफल कराने । हम तो मन वच काय लगाई, यहां ही भावन भावैं भाई ॥ १० ॥

दोहा—

रुक्मी परवत ऊपरैं, देव जिनेश्वर थान । देव खगां उस थल जजें, हम यहां भावन जान ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय पूजा महार्घं ॥ ११ ॥ इति० ॥

॥ हैरण्यवत क्षेत्र संबंधी उत्पति छेदक अर्घ ॥

चौपई—क्षेत्र विदेह हिरण्यवत सोय, तहं पे आयु एक पलि होय । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं हैं शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र संबंधि मनुष्य गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

जय जय भोग भूमि मन लाय, होय पशू पंचेन्द्री आय । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं हैं शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्य वत क्षेत्र संबंधि भोग भूमि पंचेन्द्रिय पशु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥३ ॥

जघन्य भोग भूमि के मांहिं, थलचर जीव होय तिस ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं हैं शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र संबंधि जघन्य भोग भूमि थलचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ ४ ॥

जघन्य भोग भूमि के मांहि, दशधा कल्प वृक्ष तिस ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं ह्वै शिव मही ॥

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र संबधि जघन्य भोग भूमि दश प्रकार कल्पवृक्ष गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याहि जघन्य भोग भू मांहि, थावर होय विकलत्रय नाहि । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं ह्वै शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र सबधि जघन्य भोग भूमि स्थावर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

है हैरण्य क्षेत्र बिच सार, नाभि नाम गिरि है सुख कार । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं ह्वै शिव मही ॥

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र सबधि नाभि गिरि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

छंद हरिगीतिका—इस भोग भूमि जघन मांही, आयु इक पलि की सही । तन एक कोस जु तुंग जानो, बुद्धि बल सम रूप ही ।
इक रोज अंतर खाय भोजन, आंवले सम जानिये । या गति छेदक देव पूजे, स्वर्ग शिव सुख मानिये ॥

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र जघन्य भोग भूमि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥ इति० ॥

॥ शिखरी पर्वत पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

शिखरी नाम कुलाचल ऊपर जानिये, सिद्ध कूट शिर जिनको थान बखानिये ।
देव खगा तहां जाय पूज्य जिमि सुख लहै, हम इहां भावन थापि पूजि के अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ, सन्निधिकरणम् ।

छंद गीतिका—लाय निरमल नीर सुखदा, क्षीर दधि सम जानिये । कनक झारी हरप जुत ह्वैं, आपने कर आनिये ।
शिखरी कुलाचल शीश जिनके, थान जो सुखदाय है । मैं जजौं धारा देय जल की, जरा जनम नशाइये ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

घसि नीर निरमल मांहि चंदन, घ्राण को सुख दाय जी । फिर कनक थाली आप कर ले, भक्ति बहु उर लायजी ।

शिखरी कुलाचल शीश जिन को, थान जो सुख दाय है। मैं जजों चंदन पाय जिनके, फलै भव तप जाय है ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

शुभ लेय अक्षत जान मुक्ता, फल समा उज्वल सही। बिन खंड नख शिख शुद्ध जानो, गंध जुत तंदुल कही।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी। ता फलै होई अखंड सुख फल फेर दुख नहीं पायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुर द्रुम गंध दायक वरण नाना जानिये। तिस गंध बसि हो भ्रमर आवैं, पहुप ऐसे आनिये ॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी। ता फलै नाशै मदन को मद, सहज ही दुख जायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नैवेद्य पट रस पूर वांछित, जीभ को सुखदा सही। ले तुरत कीनों आप कर ले, महा उज्वल शुभ मही।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी। ता फलै भूख विनाश पावै, दोष सब ही जाय जी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो ॥ नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीप तमहर रतन कारी, घटपटा परकाशियो। धर थाल कंचन आप करले; भक्ति बहु मुख भाषियो।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी। ता फलै मिथ्या रोग नाशै, ज्ञान प्रकटै आय जी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

अगर आदि मिलाय दश विधि, धूप मन मानी धरों। बिन धूम अगनी माहि धर करि, भाव निरमल निज करों।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी। ता फलै नाशै कर्म सब ही, सिद्ध को पद पायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

लाय श्रीफल लोंग पिस्ता, सुभग पुंगी फल सही। खारक बिदाम सु आदि दे के, फल लिये बहु सुख मही।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी। ता फलै उपजे मोक्ष के फल, और क्या अधिकाय जी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

नीर चंदन सुभग अक्षत, फूल चरु दीपक सही। वर धूप दशधा फल मनोहर, मेलि के वसु अर्घ ही।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी। ता फलै अदभुत होय महिमा, सिद्ध को पद पार जी।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

जल आदि द्रव्य मिलाय आगे, अरघ सुखदा लायजी। ले आपने कर आरती शुभ, जिन तने गुण गायजी ॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, जजों जिन मन लाय जी। ता फलै उपजे देव खग नर, फेर शिव थलपायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घ

छंद चौपई–शिखरी नाम कुलाचल जान, तापे सिद्ध कूट मन आन। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सबंधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

याहि कुलाचल शिखरी जान, तापे शिखरी कूट बखान। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सबन्धि शिखरी कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

शिखरी पर्वत ऊपर जान, हिरण्य कूट है बहु सुख खान। याकी उत्पति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि हिरण्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

नाम कुलाचल शिखरी जोय, रस देवी तहँ कूट जु सोय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि रस देवी कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याहि कुलाचल शिखरी जान, तापे रक्ता कूट बखान। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि रक्ता कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

शिखरी भला कुलाचल सोय, लक्ष्मी कूट महा सुख होय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि लक्ष्मी कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

जान कुलाचल शिखरी जेय, तापे सुवरन कूट गिनेय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि सुवर्ण कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

शिखरी नाम कुलाचल मही, रक्त बरण तहँ कूट जु मही । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल संबधी रक्तवती कूट गतिच्छेदक जिनेभ्य अर्घम् ॥ ८ ॥

नाम महा गिरि शिखरी जान, गंधवती तहाँ कूट बखान । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि गधवती कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

शिखरी पर्वत ऊपर सही, कूटैरावत की शुभ मही । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि ऐरावत कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

शिखरी नाम कुलाचल जोय, कूट तहाँ मणि कांचन सोय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखर नाम कुलाचल सम्बन्धि मणि कांचन कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

कूट कुलाचल शिखरी शीश. तिन पे देव बसै अवनीश । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

शिखरी नाम कुलाचल जान, तापै पुंडरीक द्रह खान । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि पुंडरीक ह्रद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

पुंडरीक द्रह में अवलोय, मूल कमल मणि मय इक जोय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि ह्रद कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

शिखरी गिरि के द्रह में जोय, कमल वासिनी देवी सोय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि ह्रद वासिनी लक्ष्मी देवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

पुंडरीक द्रह कमल जु सोय, ता परिवार कमल अरु होय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कमल परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १६ ॥

इन परिवार कमल सुर जोय, लच्मी देवी परिकर होय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि लच्मी देवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

पुंडरीक द्रह शिखरी शीश , रक्ता नदी थान ये दीश। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि रक्तानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

पुंडरीक द्रह में ते चली, रक्तोदा नंदी मन रली। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि रक्तोदा नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ १९ ॥

कनक कुला नंदी मन लाय, पुंडरीक द्रह तें उपजाय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल संबधी स्वर्ण कूलानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

गिरि द्रह कूट कमल सुर जोय, इत्यादिक रचना सब सोय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल संबधि कमल वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— शिखरी गिरि ऊपर सही, है जिनवर को धाम। सो में यहां भावन भजों, देव जजों तिस ठाम ॥ १ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

जंबू द्वीप विषै गिरि जानो, शिखरी ताको नाम बखानो। चौपड पासे के आकारा, हेठ व्यास जे तो शिर धारा ॥ २ ॥
पूरब पश्चिम नोक बताई, शत जोजन ऊंचो है भाई। कनक जिसो रंग ताको जानो, तापै पुंडरीक द्रह मानो ॥ ३ ॥
सो यह द्रह जोजन शत पांचा, व्याम कह्यो जिन ध्वनि में सांचा। लंबा सहस जोजना भाई, दश जोजन ऊंचा सुख दाई। ४ ॥
ता द्रह मांहिं कमल सुखकारी, रतन मई जोजन विसतारी। तापे देवी लच्मी वासो, नंदी तीन चली इस मा सो ॥ ५ ॥
और घने द्रह में सुनि भाई, कमल घने लघु अति सुखदाई। तिन पे देव रहैं हितकारी, लच्मी देवी के परिवारी ॥ ६ ॥
फिर शिखरी परवत पे भाई, कूट कहे एकादश ठाई। तिन पे देव रहै सुखकारी, सिद्ध कूट पेजिन थल भारी ॥ ७ ॥
ताको देव नमें थुति लाई, नभचर में बहुते गुणगाई। ताके फल बहु पुण्य उपावै, अनुक्रम तें जिनको पद पावै ॥ ८ ॥

तातै मैं भी मन वच काई, अष्ट द्रव्य शुध लेकर भाई। भावन ये पूजे जिन देवा, भो भो मिलै फेर तुम सेवा ॥ ९ ॥

दोहा— ऐसे शिखरी गिरि परै, सिद्ध कूट पे जान। थान भले जिन देव को, ताहि जजों हित आन ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सबंधि सिद्ध कूट चैत्यालय जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ १० ॥ इति० ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

जंबू दीप तनों ऐरावत जानिये, क्षेतर महा मनोज्ञ मोक्षदा मानिये।
तहँ थानक जिन देव तने शोभै सही, सो मैं जजों सुभाय भावना जुत ठही ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप संबधि ऐरावत क्षेत्रस्थ जिन चैत्यालय जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं जबू द्वीप सबधि ऐरावत क्षेत्रस्थ जिन चैत्यालय जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं जबू द्वीप संबधि ऐरावत क्षेत्रस्थ जिन चैत्यालय जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निकरणम्।

छंद—जोगीरासा—गंगा सरिता को शुभ पानी, कनक कलश भरि लाऊं। ले अपने कर बहु हरषे चित, पूजन को उमगाऊं ॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों जल सेती, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन पावन चित कर, गंध धार सुखकारी। निरमल जल घसि के शुध कीनो, रतन पियाले धारी ॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों चंदन से, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल खंड बिना शुभ, मुक्ताफल से जानो। कनक रकेबी धार मनोहर पुन्य थकी मन मानो ॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जो जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों अक्षय सों, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ भले गंध धारी, नाना वरण सु भाई। इत्यादिक बहुते गुण धारक, घ्राण नयन सुखदाई ॥
ऐरावत क्षेतर थल माहीं, जो जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों फूलन सों, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

पटरस पूर मिलाय मनोहर, महती किरिया धारी। वांछित खाजा फीणी मोदक, ले आया सुखकारी ॥
ऐरावत चेतर के माहीं, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों शुभ चरु से, जय जय जय जिन राये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई तम हारी, ज्योति पुंज अधिकाई। कनक थाल भर लेकर अपने, करों आरती भाई ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों दीपक से, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

अगर कपूर मिलाय और सब, दशधा धूप मिलाऊं। अपने करतें अगनि माहिं सब खेऊं अति सुख पाऊं ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं जे जिन थान बताये। ते मैं पूजों शुद्ध धूपतें, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानों। इनको आदि भले फल लेके हिय में हर्ष समानो ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं, जेजिन थान बताये। ते सब पूजों शुभ फल लेके, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल लाई। इन आदिक शुभ द्रव्य लेयकर, अर्घकरों हितदाई ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों सु अर्घ ले, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद गीतिका—कर लेय वसु द्रव अरघ सुन्दर आरती सुखदायजी। फिर गाइये गुण जगत गुरुके, वचन मन लव लायजी ॥
शुभ क्षेत्र ऐरावत तने जिन, थानको मन लाव रे। मैं जजों अर्घ चढाय जय जय शब्द तें सुख पाव रे ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—ऐरावत क्षेतरके माहिं, प्रथमकाल जो रचन थाहि। ता में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र प्रथमकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

ऐरावत में दूजो काल, होय पशु नर आदि विशाल। ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र द्वितीयकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

ऐरावत क्षेतर में जान, होय पशु नर उतपति मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र तृतीयकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

ऐरावत क्षेतर में सही, कुलकर होवे शुभ की मही। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अत कुलकर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

ऐरावत क्षेतर के माहीं, चोथे काल पशु नर पाहिं।। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र चतुर्थकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र संबंधि वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा ॥

छंद—अडिल्ल—

प्रथम मेरु ऐरावत खेतर जानिये, वर्तमान चौवीस भये जिन मानिये।
बाल चन्द जिन आदि अन्त वीरसेनजी चौवीसों जिन थापि जजों सुख लेनजी ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद-गीतिका—नीर निरमल गंध जुत शुभ, हरष मन कर के सही। शुभ पद्म द्रह को लाय, ऐसो कनक झारी में सही ॥
पूज्य जिन चौवीस ऐरावत विषै जो हो रहे। ते हरो मेरे पाप मल सब आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन घसों शुभ बावनो मैं, नीर गंध मिलाय जी। भरि रतन झारी आप करले, हरष बहु विधि पायजी ॥
पूज्य जिन चौवीस ऐरावत विषै जो हो रहे। ते हरो मेरे पाप मल सब आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत अखंड सुगंध उज्वल, महा सुखदा जानिये । ले कनक थाल भराय सुन्दर, आप भव दधि भानिये ॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल नाना वरण धारक गंध जुत सब पाट हैं । ले माल जाकी महा सुन्दर, काम मद की दाट है ॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नैवेद्य पट रस पूर वांछित, तुरत कर में लाय जी । धर थाल सुन्दर आप कर ले, देव जिन गुण गायजी ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

ले रतन दीपक ध्वांत नाशक, ज्योति बहु परकाशिया । भर थाल कंचन आप करले, देव जिन गुण गाइया ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विधि गंध की कर, पीस के शुभ लाइयो । धरि अगनि भीतर आप कर तें, भक्ति जुत गुण गाइयो ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत,-विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

लौंग पिस्ता और श्रीफल, खारका सुख दाय है । शुभ जान पुंगी फल बिदाम सु, और फल बहु लाय है ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

उदक चंदन पुष्प अक्षत, दीप धूप फला सही । करि अर्घ सुख दा आरती ले, दान उर की शुभ मही ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशित जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि–क्षेतर ऐरावत माहि सोय, चौबीस जिनंद जो होय जोय। ता समै देव खग पूजि लाय, मैं अर्घ जजों इह भाव भाय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बंधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्ये अर्घ ॥

चौपई–बाल चन्द्र पहले जिन सोय, होय रहे ऐरावत जोय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि बालचन्द्र नामा प्रथम वर्तमान जिनाय अर्घं ॥ १ ॥

सुव्रत जिन ऐरावत मांय, होय रहे सब को सुख दाय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि सुव्रत नाम वर्तमान जिनाय अर्घं ॥ २ ॥

अगनिसेन जिन जी हो रहे, ऐरावत क्षेतर में भये। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि वर्तमान अगनि सेन जिनाय अर्घम् ॥ ३ ॥

ऐरावत क्षेतर में जोय, नंद सेन जिन हो रहे सोय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि वर्तमान नंदसेन जिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

श्रीदत नाम जिनेश्वर कहे, सो भी ऐरावत में थये। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि वर्तमान श्री दत्त जिनाय अर्घम् ॥ ५ ॥

ऐरावत खेतर में सार, जिन व्रत धर हो रहे सुधार। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।
ॐ ह्री ऐरावत क्षेत्र सबधि वर्तमान जिनव्रत जिनाय अर्घम् ॥ ॥ ६ ॥

सोमचन्द्र जिन जो हो रहे, ऐरावत क्षेतर में थहे। सुरखग पूजें थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान सोमचन्द्र नाम जिनाय अर्घम् ॥ ७ ॥

धृत धीरज जिनवर ये भये, ऐरावत में कर्मन जये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि धृति धैर्य वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ ८ ॥

शतायुप जिनजी हो रहे, ऐरावत खेतर में रहे। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शतायुप वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ ९ ॥

शिवशतायु नाम भगवान, ऐरावत ह्वै रहे सुजान। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शिवशतायु वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ १० ॥

जिनवर श्रेयांश होय रहे, सो भी ऐरावत में भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि श्रेयांस जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ॥ ११ ॥

होय रहे अतिजल जिन जोय, ऐरावत खेतर में होय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्री ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान अतिजल जिनाय अर्घम् ॥ १२ ॥

सिंहसेन जिनवरजी होय, ते भी ऐरावत में सोय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान सिंहसेन जिनाय अर्घम् ॥ १३ ॥

जिन उपशान्त वरत है जान, ऐरावत खेतर के मान। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान उपशान्त जिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

गुप्तासन जिन भी हो रहे, क्षेत्र भले ऐरावत भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान गुप्तासन जिनाय अर्घम् ॥ १५ ॥

अन्त वीर्य जिन भी हो रहे, सो ऐरावत खेतर थहे। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान अन्तवीर्य जिनाय अर्घम् ॥ १६ ॥

स्वामी पार्श्व होय जिन रहे, ऐरावत खेतर में भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि पार्श्वजिनाय अर्घम् ॥ १७ ॥

जिन अतिध्यान होय सो रहे, सोभी ऐरावत में भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत सम्बन्धि अतिध्यान वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ १८ ॥

होय रहे मरुदेव जिनन्द, ऐरावत खेतर सुखकन्द । सुरखग पूजे थे तत्र आय, मैं अत्र जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान मरुदेव जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १९ ॥

श्रीधर जिन हो रहे सुजान, ऐरावत खेतर में मान । सुरखग पूजे थे तत्र आय, मैं अत्र जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान श्रीधर जिनाय अर्घम् ॥ २० ॥

श्याम कंठ नामा जिन सोय, होय रहे ऐरावत जोय । सुरखग पूजे थे तत्र आय, मैं अत्र जजों सुभावत भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि वर्तमान श्यामकंठ जिनाय अर्घम् ॥ २१ ॥

अग्नि प्रभ जिनजी ह्वै रहे, ऐरावत क्षेतर में भये । सुरखग पूजेथे तत्र आय, मैं अत्र जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान अग्निप्रभ जिनाय अर्घम् ॥ २२ ॥

अग्निदत्त जिन होके रहे, ऐरावत खेतर में रहे । सुरखग पूजे थे तत्र आय, मैं अत्र जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान अग्निदत्त जिनाय अर्घम् ॥ २३ ॥

वीर सेन जिन जग पति नीत, सो भी कर्म अरी को जीत । सुर खग पूजे थे तत्र आय, मैं अत्र जजों सु भावन भाय ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बधि वर्तमान वीर सेन जिनाय अर्घम् ॥ २५ ॥

छंद अडिल्ल—

बाल चन्द्र जिन आदि भये वृष ईशजी, वीर सेन परयंत हुए चौवीस जी ।
इनके पूजों पाय सु अरघ चढाय के, ता फल शिव सुर होय पाप क्षय लाय के ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घम् ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—

ऐरावत क्षेतर विषै, वर्तमान चौवीस । बाल चन्द्र आदिक प्रभू, पूजों बिसवा वीस ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

बाल चन्द्र जिन ने शिव पाई, ता दिन सुर गन वृष्टि कराई । सुव्रत देव सिद्ध पद पायो, जब हरि निज मुख जय जय गायो ॥२॥

अगनि सेन जिन जहं विचराई, तब बहु जीवन ने शिव पाई। नंद सेन जिन जहं वच लागे, तब ही पाप चौर तहं भागे ॥३॥
श्री दत देव वरी शिव नारी, तब परजा हरषी सब सारी। जिन व्रत धरि तब केवल पायो, तबहरि निज मुख जैजै गायो ॥४॥
सोमचन्द्र जिन तब विचराये, ता प्रसाद भवि पुण्य कमाये। धृति धीरज जिनको तिन सेयो, तानै आप पार गुण वेयो ॥ ५ ॥
शत आयुष जिन सेव कराई,ता जीवन ने शिव लब लाई। शिव शतायु जिन गुण तिन गायो,सो जिव निज भव सफल करायो ॥६॥
श्री श्रेयांस शिव वर ने पाये, तब बहु मुनि संग जाती लाये। तब श्रुत जल जिन मुनि पद पायो, तबही पंचाश्चर्य करायो ॥७॥
सिहसेन जिन तप तब जान्यो,सकल करम तब निज क्षय मान्यो। जिन उपशान्त स्वामि चित कीनो,छांडि जगत मग शिवरस भीनो ।८।
गुप्तासन जब केवल पायो, तब ही लोकालोक लखायो। अनंतवीर्य अपने घर ओरे, तब जग जीव शरन बहु दौरे ॥९॥
पार्श्व स्वामि जिन जन हित दाई,बिन कारण बंधू लख भाई। जिन अति ध्यान शुक्ल असि लीनी,कर्म काठ दहिकर रज कीनी १०
जिन मरु देव मरण भय छारयो, क्रोध मान छल को मद डारयो। श्री धर निज अटूट धन पायो, हरि सुर खग लखि शीश नवायो
श्याम कंठ जिन शरणै आयो, सो जिव शिव के देव कहायो। अगनि प्रभ जिन के गुण गासी, अब भी सो जिय वांछित पासी १२
अग्नि दत्त जिन कर्म खिपायो, घने जीव शिव राह लगायो। वीर सेन जिन अघ अरि जीते, तब ही कर्म तने रस वीते ॥१३॥
ऐसे जिन चौबीस व्यतीता, ऐरावत खेतर अघ जीता। अब यहां जो भवि तिन गुण गावै, सो भी जिन सो ही फल पावै ॥१४॥
दोहा— वर्ते जिन चौबीस ते, ऐरावत थल माहिं। जजों अरघ जयमाल भनि, मन वच टेक लगाहिं ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ इति०॥

॥ ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति पूजा ॥

छंद गीतिका—तहं देव खग नित पूज ठानै, दरब वसु कर लायजी। कर द्रव्य सब विधि जजै भाव सु, जिन तने गुण गायजी।
जिन क्षेत्र ऐरावत सु माहीं, वीस चौ बीते सही। ते जजों मन वच काय शुभतें, थापि के इसही मही ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि अतीत चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

॥ चाल जोगीरासा ॥

निरमल पानी शुभ कर आनी, उज्वल गंध सुभावो। कनक झारिका थाल मनोहर, पूजन को कर चावो॥
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चौवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं॥ १॥

चंदन बावन पावन कारी, निरमल नीर घसाई। धार कनक प्याले शुभ चित कह, अपने कर ले भाई।
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चौवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र संबधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चन्दनम्॥ २॥

अक्षत उज्ज्वल मुक्ता फल सम, खंड विना ले आयो। थाल मनोहर भर के शुभ चित, अपने कर में लायो।
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चौवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतम्॥ ३॥

फूल सुगंध मनोज्ञ बनाके, नाना विधि के जानो। माल तिन्हों की लेकर अपने, कंचन थान सु आनो।
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चोवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पम॥ ४॥

पट रस पूर बनाय तुरत ही, खाजे फेनी भाई। मोदक आदि मनोज्ञ लेयकर, कनक पात्र सुखदाई॥
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चोवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हैं, तिनके अघ अरि जीते॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम्॥ ५॥

दीपक मणिमय तमहर सुन्दर, ज्योति करा हितदाई। कनक थाल भरि लेय आरती, अपने कर उममाई॥
जंबूदीप तने ऐरावत जिन चौवीस व्यतीते। तेहू मन वच काय जजत हैं तिनके अघ अरि जीते॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम्॥ ६॥

चंदन अगर कपूर आदिदे, दशधा गंध मिलाई। तिनकी सुखदा धूप बनाऊं, खेऊं चित हरपाई॥

जंबूद्वीप तने ऐरावत जिन चौबीस व्यतीते । तेहू मन वच काय जजत हैं तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानो । इन आदिक बहुलेय मनोहर, फल अति ही सुखदानो ॥
जंबू द्वीप तने ऐरावत जिन चौबीस व्यतीते । तेहू मन वच जजत काय हैं तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पहुप ले, चरु दीपक तम हारा । धूप फला वसु लाय सभी को अर्घ करों सुखकारा ॥
जंबू द्वीप तने ऐरावत जिन चौबीस व्यतीते । तेहू मन वच जजत काय हैं तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

छंद पद्धरि—वसु द्रव्यसु अर्घ बनाय सोय, अपने करले महा हर्ष जोय ॥ ऐरावत जिन चौबीस सार, होगयें जजों ते हर्षकार ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धिअतीत जिन चौबीस जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

चौपई—पंचरूप जिनवर भगवान, मानै सुरगण तिनकी आन । होयगये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि पचरूप नाम अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

जिनधर नामा जिनवर सोय, जजैं भव्य तिनके अघ खोय । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि जिनधरनामा अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

संप्रतीक नामा जिन सोय, सुरनर हू पूजैं मद खोय । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि सम्प्रतीकनामा अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

उर्जयन्त जिनवर भगवान, लोकालोक वस्तु के जान । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि उर्जयन्त नामा अतीत जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

अधिनायक जिनजीको नाम, जजे होय मंगल शुभ काम । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अधिनायकनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

अभिनन्दन जिन जग आधार, मोको करो भवोदधि पार । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अभिनंदननाम अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

जिन रतनेश दया मो लेहु, भवसागरतैं पार करेहु। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि रतनेश नामा अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

रामेश्वर जिन शिव भरतार, भव्यन को मंगल के धार। होय गये ऐरावत थान, जिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि रामेश्वर नामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

अंगोछत जिन जग आधार, मोकों करो भवोदधि पार। होय गये ऐरावत थान, जिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अंगोछत नामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

नाम विनाश कह्यो जिन तनों, सो प्रभु मेरे सब अघ हनों। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि विनाशक नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

नाम अरोष कहे भगवान, देह सदा थल शिव सुरथान। होय गये ऐरावत थान, तिद पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अरोषकनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

नाम सुबुद्धि कहे जिनराय। भो भो भक्तन को सुखदाय। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि सुबुद्धिनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नाम प्रदत्त कहे जिन सोय। भो भो मांहि शरण मो होय। होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि प्रदत्तनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

नाम कुमार देव जिन सोय, ज्ञानानन्द के दाता होय। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि कुमारनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

सर्व शैलवर जिनवर सोय, मंगल करता 'सबके होय। होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि सर्वशैल नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

परभंजन जिन सब सुखदाय, अघ हर भव्यन को हित लाय। होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि प्रभजननामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

है सौभाग देव जिनराय, नाशें कर्म आठ सुख पाय । होय गये ऐरावत थान तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि सौभाग्यनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

दिनकर देव जिनेश्वर सही, तार तार जिन भव वन मही । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रसम्बन्धि दिनकर नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

व्रतविंद् नामदेव जिन सोय, बहुते अधम तने अघ खोय । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि व्रतविंदनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

नामदेव सिद्धकर सार, कीने दीन घने भवपार । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजौ थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धकर अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

ज्ञान शरीर देव भगवान, ज्ञानदेह पूजै भविवान । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि ज्ञान शरीर नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

कलपद्रुम जिन वांछित दाय, सेवत ही सब पाप नशाय । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि कल्पद्रुम नामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

तीर्थ फलेश देव जिन सोय, देवै हैं सब अघ मल खोय । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि तीर्थफलेशनामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

चरम प्रभ जिन सब सुखकार, तारन दुख शरीरते पार । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि चरमप्रभनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

सोरठा— येही जिन चौबीस, ऐरावत थल होगये । ते पूजौं जग ईश, जय जय जिन मंगल करन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि पचरूपादि चरम प्रभजिनपर्यन्त चौबीस जिनाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— ऐरावत चेतर विषैं, होय गये जिन सोय । कहूँ माल तिन गुनन की, ते मो उरमें होय ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

पंच रूप जिन सव सुखदाई, पंचमगति भक्तन चकसाई । जिनधर देव धर्म आकारो, औरन कूं दे धर्म सुमारो ॥ २ ॥
संप्रतीक तीजे जिन जानो, भये प्रतीत देव शिवथानो । उरजयन्त सव उरकी जानों, कहो कहां मेरे अघ हानो ॥ ३ ॥
अधि ज्ञायक जिन सव विध जानो, अधिक संपदा श्रुति ते मानो । अभिनन्दन जिनको अति सेवै, सो जिय सदा कालसुख लेवै ॥४॥
रत्नसेन जिन सप्तम देवा, गुन रतनन के दायक मेवा । अष्टम रामेश्वर जिन जानों, रमत सकल वस्तुनमें मानों ॥५॥
देव अंगोछत नव-ये होई, तिनमें अपनी अघरज खोई । देव विनाशक नामा भाई, तिन श्रुति आठों कर्म नशाई ॥ ६ ॥
देव अरोषक ग्यारम होई, करे कर्म चय क्रोध न कोई । नाम सुवुद्धि भली वुध देवे, ताके नसे पाप जिन सेवै ॥ ७ ॥
देव प्रदत्त पार भव ठानै, सेवक को नाना सुख आनै । है कुमार जिन कारज कारी, तिनने रिपुहर कुमति निवारी ॥ ८ ॥
सर्व शैल जिन अति वलधारी, कर्म शैल को वज्र संवारी । परभंजन जिन सव हित जानो, पर जीवन के पाप सुभानो ॥ ९ ॥
जिन सौभाग्य भागते पावे, भाग्य उदैते शरणै आवै । दिनकर जिन मिथ्यातमहारी, सूरज सम महिमा तिन धारी ॥ १० ॥
देवव्रत विद सव सुख वेवा, वेग वेग दे अपनी सेवा । जिन सिधकर सिध थान सिधाये, दे शिव ताको शरणै आये ॥ ११ ॥
ज्ञान शरीर देव भगवन्ता, ज्ञान देहि मोको भव हन्ता । कल्पद्रुम जिन वांछित दाई, सुरतरुसी तिन रीति धराई ॥ १२ ॥
जिन तीरथ फलेश सुख खानी, पूजैं फल तीरथ सो दानी । चरमप्रभ जिन सव अघ हारी, चरम सदैव संपदा धारी ॥ १३ ॥
ये जिन वीस चार भव हंता, ऐरावत खेतर में संता । होय गये भविकर भव पारा, ते मोकों भी होय सहारा ॥ १४ ॥

सोरठा— ये चौवीस जिनेश, माल कही तिन गुनन की । सो हि धर्म के भेप, शरण होय मोहि सर्वदा ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिन जयमाल पूर्णार्घं ॥ १५ ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत पूजा ॥

छन्द अडिल्ल— ऐरावत खेतर में जिन अव होय जी, वीस च्यार भगवान कर्म मल खोय जी ।
सिद्धारथ जिन आदि अगनिदतलों सही, जजों भक्ति धर थापि यहां की शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि अनागत चतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि अनागत चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि अनागतं चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट सन्निधिकरण।

॥ छंद पद्धरि ॥

ले निरमल नीर उदार होय, धरि कनक पात्र निजपाप धोय। ऐरावत क्षेतर मांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

घसि बावन चन्दन नीर लाय, धरि कनक भारिका हरष भाय। ऐरावत क्षेतर मांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अक्षत शुभ मुक्ताफल सुजेम। उज्ज्वल अखंड ले धार येम। ऐरावत खेतर माहिं सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

ले फूल मनोहर गंध धार, बहु वरन और आकार सार। ऐरावत क्षेतर-मांहि सोय। जिन जजों अनागत पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

पट् रस नैवेद मिलाय ठान, खाजा फेनी मोदक जुआन। ऐरावत क्षेतर मांहि सोय, जिन जजौं अनागत पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक तमहर मणिमय समान, धरिं हेमपात्र में भक्ति आन। ऐरावत क्षेतर माहिं सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

करि अगर आदि दश धूप गंध, जारों अगनी भवहरन फंद। ऐरावत क्षेतरमांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसबधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल बिदाम आदिक अपार, बहुजात तने फल लेय सार। ऐरावत क्षेतरमांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत फूल लाय, चरु दीप धूप फल अरघ भाय। ऐरावत क्षेतर माहिं सोय, जिन जजौं अनागत पाप खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

गीताछंद—दीप जम्बू उतर दिशि में क्षेत्र ऐरावत कह्यो । तहां के अनागत जानि जिनवर, वीस चव तिन अघ दह्यो ।
तिनके सुचरण अरघ ठानों, पाप नाशन कारनै । ते होउ मोहि सहाय जिनवर कर्ममलकूं टारनै ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसंबंधि अनागत चतुर्विंशति जिन चरणाग्रे महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—जल चंदन सब अरघ मिलाय, पूजन आयो हरप उपाय । ऐरावत क्षेतरमें सोय, सिद्धारथ जिन पूजों सोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागतसिद्धारथनामा जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

विमलनाथ जिनवर है सोय, आगामी होंगे अघ खोय । ऐरावत क्षेतर के थान, ते मैं पूजौं अर्घ जु आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अनागत विमलनाथ नामा जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

जिन जय घोप सोप अघढाला, तुम दरशन शुति तें अघ टाला । आगामी अबहोंगे सही, तिन पद जजों होय शिवमही ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागत जयघोष नाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

नंदसेन जिन भव जगईश, आगामी होंगे जगदीश । ऐरावत क्षेतर के मांहि, ते मैं पूजौं अर्घ चढाहि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बंधि अनागत नन्दसेन नाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

स्वर्गमंगल श्री जिनराय, अब होंगे ऐरावत ठाहिं । तिनपद वसु द्रव अर्घ संजोय, पूजा करैं हरप चित होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत स्वर्गमंगलनाम जिनेभ्यो अर्घ ॥ ५ ॥

विद्याधर जिम जग आधार, अब होंगे ऐरावत सार । तिनपद वसु द्रव्य अर्घ मिलाय, पूजा करों हरप मन लाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत विद्याधरनाम वर्तमान जिनाय अर्घ ॥ ६ ॥

जिन निर्वाण देव है सोय, जानि अनागत तीरथ होय । ऐरावत क्षेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बधि अनागत निर्वाणनाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

धर्मध्वज नामा जिन देव, आगमकाल होहिंगे देव । ऐरावत खेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि अनागत धर्मध्वजनाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

सिद्धसेन जिनवर को नाम, होय अनागत समय सु धाम । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि अनागत सिद्धसेननाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

महासेन जिनजी मन लाय, होय अनागत तीरथ भाय । ऐरावत चेतर के माहि, मैं पूजों वसु अर्घ सु लाहि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि अनागत महासेन जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ॥ १० ॥

रवि शशि नामदेव जिन सोय, ये भी जान अनागत होय । ऐरावत चेतर में जान, मैं पूजों अर्घ सु आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत रविशशि नाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

सत्यसेन नामा भगवान, होय अनागत अति सुखमान । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अनागत सत्यसेन नामा जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

जिन श्री जानि चंद्र जगतात, होय अनागत सब सुखदात । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि श्री चंद्र नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३ ॥

मही चंद्र देवीपति देव, आगामी होंगे सुर सेव । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबन्धि महीचद्र नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

श्रुतांजन जिन जग आधार, होय अनागत जगपति सार । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि श्रुताजन नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

देव सेन नामा प्रभु सोय, आगामी सु काल में होय । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि देवसेन नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

सुव्रत देव देव पद आय, सो भी होय अनागत आय । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि सुव्रत नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

देव सुपार्श्व जगत हितकार, अगले काल होय शिवसार । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि सुपार्श्व नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

है जिनेन्द्र जिनवर को नाम, होय अनागत काल सुठान । ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिनेन्द्र नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घम् । १९ ॥

देव सु कौशल करुणा निधि, अगले काल होय शिव सिधी । ऐरावत चेतर में जानि, जो मैं पूजों अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि सुकौशल नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घम् । २० ॥

देव अनंत नंत सुख दाय, अगले काल होहिगे आय । ऐरावत चेतर में जानि, जो मैं पूजों अर्घ सु आन ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि अनत नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

देव विमल मल कर्म जु खोय, ते भी आवत समये होय । ऐरावत चेतर में जानि, जो मैं पूजों अर्घ सु आन ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि विमल नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

अमृत सेन देव जिन सही, होय काल अगले सुख मही । ऐरावत चेतर में जान, जो मैं पूजों अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि अमृत सेन नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

देव अगनिदत जिन शिव नाथ, आगम काल होय शिव साथ । ऐरावत चेतर मैं जान, जो मैं पूजों अर्घ सु आनि ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि अगनिदत्त नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

छंद अडिल्ल—

सिद्धारथ जिन आदि अगनि दत्त लों सही । बीस चार जिन देव जगत तीरथ मही ।
ऐरावत चेतर में अब जिन होय हैं, तिनके पद में अर्घ जजों मल खोय है ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि अनागत काल सिद्धार्थ आदि अगनि दत्त पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—

ऐरावत चेतर विषै, आगम काल सु आय । उपजेंगे जिन बीस चव, धर्म जिहाज स्वभाव ।

॥ छन्द पद्धरि ॥

पहले सिद्धारथ होय आप, ते जजों सिद्ध हो शुद्ध थाय । जिन विमल नाम दूजे सु जान, जे करों विमल सब कर्म हान ॥२॥
जय घोप नाम जिन देव सोय, जय करें भक्त के पाप धोय । जिन नंद सेन चौथे बखान, जग जिय आनंद दे सकल जान ॥३॥

मंगल स्वर्ग पंचमहि जोय, सेवक के नित प्रति कुशल होय। पष्ठम विज्ञाधर जगत तार, ते देव आपको रूप सार ॥ ४ ॥
निर्वाण देव निर्वाण होय, जो जजै तासु निर्वाण होय। जिन धर्म ध्वज वृषकेतु जान, सेवै धर्म ध्वज होय आन ॥ ५ ॥

। छंद बेसरी ॥

सिद्ध सेन सिद्धी कर काजा, जाय होंहिगे त्रिभुवन राजा। महासेन जिन अति बल धारी, महा सैन्य कर्मन की जारी ॥ ६ ॥
रवि शशि देव तने परकाशा, होवेगा मिथ्यातम नाशा। सत्यसेन द्वादशमें जानों, तिनके उदै असत को हानो ॥ ७ ॥
जिन श्री चंद्र चंद सम मानो, भव्य उदधि को चन्द्र समानो। महीचंद्र चौधम जिन देवा, तिनकी रवि शशि करि है सेवा ॥८॥
श्रुतांजन पंद्रम जिन होई, श्रुत अंजन के दाता सोई। देव सेन षोडश में देवा, जीती कर्म सैन्य स्वयमेवा ॥ ६ ॥
देव सुव्रत सतरहमें जानों, देय बरत करि है अघ हानो। देव जिनेन्द्र नाम भगवाना, पूजेंगे हरि तजि तजि माना ॥ १० ॥
देव सुपार्श्व पास जो आवे, लोहे से पारस बन जावे। देव सुकौशल बीसम होई, थिति सब कर्मन की सब खोई ॥ ११ ॥
देव अनंत नंत सुख धारी, भक्तन को सच्चे गुण कारी। विमल देव है बीसम जानों, विमल करै सेवक को मानों ॥ १२ ॥
अमृत सेन देव जिन राजा, कर्म दाह कों अमृत साजा। अंतिम अगनि दत्त जिनराई, कर्म दहन को अगनि कहाई ॥ १३ ॥
जो ये जिन चौबीस सु गाये, आगम काल होंयगे आये। ऐरावत क्षेतर में भाई, तिन पद हमने अर्घ चढाई ॥ १४ ॥

दोहा— आगामी जिन होहिंगे, ऐरावत थल सोय। तिनपद पूजों "टेक" सजि। भव भव शरनों होय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घं ॥ १५ ॥ इति० ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र संबंधि गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—ऐरावत आरज खण्ड मांहि, नगर अयोध्या है सुभ ठाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐराबत क्षेत्र सबधि अयोध्या नगर उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

ऐरावत के आरज थान, है उपसागर जल की खान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि उपसमुद्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ २ ॥

ऐरावत क्षेतर के माहिं, देव रहै मगधादिक ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ३ ॥

ऐरावत क्षेतर में जान, खंड मलेछ धर्म विन मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं एरावत क्षेत्र संबधि म्लेछखंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

ऐरावत क्षेतर जो सही, वृषभाचल गिर तहं शुभ मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वृषभाचल गिर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५ ॥

ऐरावत इस क्षेत्र सु सार, विजयारध गिर भू में सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयारध पर्वत गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

याही विजयारध की सही, जानों दक्षिण दिश की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रस्य विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

याही खग गिर दक्षिण सारा, नगर कहै उत्तम सुखकारा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध दक्षिणश्रेणीनगरी उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८ ॥

ऐरावत में खगगिर मान, उत्तरश्रेणी उत्तम जान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो ॥ ९ ॥

खग गिरि विजयारध की सही, उत्तरदिश नगरी शुभ मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पदपूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध उत्तरश्रेणी नगरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

विजयारध ऐराव तशीश, सिद्धकूट पे जिन थल दीश । या में बिंब विराजै सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्धसंबंधि सिद्धकूट जिन चैत्यालस्य जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

ऐरावत विजयारध मांहि, सिद्धकूट शुभ कूट कहांहि । या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धस्य सिद्धकूट गतिच्छेदक जिने... अर्घम् ॥ १२ ॥

ऐरावत खग गिरपै कूट, उत्तरार्द्ध ऐरावत कूट । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध उत्तरार्द्धस्य ऐरावतनामाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १३ ॥

ऐरावत विजयारध जानि, तामिश्र गुह तहां बखान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध उपरितामिश्रकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

ऐरावत विजयारध मांहि, कूटमणिभद्रा तहँ मांहि । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धउपरि मणिभद्रकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

ऐरावत के खग चलसार, कूट तहां विजयार्द्ध कुमार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धउपरि विजयार्द्ध कुमार नामाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

विजयारध ऐरावत जान, पूरणभद्र कूट तहँ मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध सम्बन्धि पूर्णभद्रकूट गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

ऐरावत खग को गिर जेय, खण्ड प्रपात कूट तहां हेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध सम्बन्धि खंडप्रपातकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

ऐरावत विजयारध जानि, दक्षिण ऐरावत शुभ मानि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्धसम्बन्धि दक्षिण ऐरावतकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

ऐरावत विजयारध जेय, तहां वैश्रवण कूट गिणेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्ध सम्बन्धि वैश्रवणकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

ऐरावत विजयारध कूट, तिनपै देव बसै दुखछूट । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

छंद अडिल्ल— ऐरावत विजयारध सिद्ध सु थान है । गये कर्म हरि मोक्ष तहां ते ठान है ॥
तिन थानक की रज मो मस्तक लाय हों । अर्घ लेय सो जजों सिद्धथल भाय हों ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

चौबई—जम्बूदीप तनौं परकार, गोलाकार तुंग विसतार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप कोट सम्बन्धि उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

जम्बूद्वीप कोटका जान, विजयारध पूरब दिशमान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप विजयनामा पूर्वद्वार सम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

सो यह विजयनाम सुद्वार, ताके रक्षक देव सुसार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप विजयद्वार रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

कोट द्वीप जंबू को सार, ताकौ वैजयन्त शुभ द्वार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप संबधि कोट वैजयतनामा दक्षिण द्वार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

वैजयंत दक्षिण को द्वार, ताके रक्षक देव जु धार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप सबधि वैजयंत द्वार वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

जंबूद्वीप कोटका सही, नाम जयंत द्वार शुभ मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जबू द्वीप संबधि जयंत नाम पश्चिम द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नाम जयंत नाम रखपाल, देव रहै नाना गुण माल। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप संबंधि जयंत द्वार रक्षपाल देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

जंबू दीप कोट का कह्या, द्वार नाम अपराजित रह्या। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित नाम उत्तर कोट द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

अपराजित द्वार के सही, रक्षक देव जान गुण मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्री जबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित द्वार रक्षक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

लवणोदधि जल पूर भराय, नाना जीव जंतु तहं पाय। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं लवणोदधि सबंधि जीव जंतु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

लवणोदधि में जलचर जीव, मच्छादिक बहु जान सदीव। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं लवणोदधि संबंधि जलचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा। ते जजों जल तें भाव शुध हो, नाश जनम जरा करा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

घसि अगर चंदन नीर शुभतें, गंध दायक शुभ मई। धरि कनक प्याले आरती ले, अरघ देकर थुति चई।
जे धातकी खण्ड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा। ते जजों चंदन आपने कर नाश भव तप की करा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चद्नं ॥ २ ॥

अक्षत अखंडित महा उज्वल, गंधजुत मुक्ता समा, ले आपने कर घालि भाजन, भक्ति जुत शोभापमा।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघहरा, ते जजों मन वच काय अक्षत, होय अक्षत पद खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

शुचि फूल सुन्दरकल्पद्रुमके, गंध जुत शोभा मई, तिन वरण नानाभांति ऐसे, लेय अपने कर सई।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा। ते जजों मन वच काय फूलन,काम मद तिन क्षय करा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य खाजा सुभग मोदक, और फीणी जानिये, इन आदि पट रस पूर व्यंजन, आप करले आनिये।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय चरुले, भूख नाशन को खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रतन दीपक हार तम को, सूर सम परकाशिया, भरि कनक थाली आप करले, सकल अघ जर नाशिया।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंन जिन के अघ हरा। ते जजों मन वच काय दीपक, मोह तम जारन खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विधि मेल गंध सु, अगर आदिक सारजी, ते दहों अगनी माहिं करतें, हरप बहु मन धारजी।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय धूप सु, अष्ट अरि जारन खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंडसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

जम्बूद्वीप कोटका जान, विजयारध पूरब दिशमान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप विजयनामा पूर्वद्वार सम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

सो यह विजयनाम सुद्वार, ताके रक्षक देव सुसार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप विजयद्वार रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

कोट द्वीप जंबू को सार, ताकौ वैजयन्त शुभ द्वार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप सवधि कोट वैजयंतनामा दक्षिण द्वार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

वैजयंत दक्षिण को द्वार, ताके रक्षक देव जु धार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप सबंधि वैजयंत द्वार वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

जंबूद्वीप कोटका सही, नाम जयंत द्वार शुभ मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जबू द्वीप संबंधि जयंत नाम पश्चिम द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नाम जयंत नाम रखपाल, देव रहै नाना गुण माल। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप संबधि जयंत द्वार रक्षपाल देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

जंबू दीप कोट का कहा, द्वार नाम अपराजित रहा। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित नाम उत्तर कोट द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

अपराजित द्वार के सही, रक्षक देव जान गुण मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ही जबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित द्वार रक्षक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

लवणोदधि जल पूर भराय, नाना जीव जंतु तहं पाय। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं लवणोदधि संबंधि जीव जतु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

लवणोदधि में जलचर जीव, मच्छादिक बहु जान सदीव। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं लवणोदधि संबंधि जलचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

लवणोदधि मधि जल के सार, पाताला उत्कृष्टे धार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं लवणोदधि सवधि उत्कृष्ट पाताल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

खारोदधि पहले दधि माहिं, मध्यम वडवानल के ठाहिं । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्री लवणोदधि सवधि मध्यम पाताल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

जंबूद्वीप सु गिरि दधि जान, ता में जधन पताला जान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं लवणोदधि जघन्य पाताला गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

चाल जोगीरासा—मेरु कुलाचल क्षेतर नंदी, कुंड कूट गिरि जानो । विजयारध वृषभाचल नगरी, अरु वक्षार प्रमानो ।
वन सुर सागर जंबू द्वीप में रचना है इत्यादि । इन में उतपति छेद भये शिव, जय जय जय जिन आदि ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप लवणोदधि रचना सम्बन्धि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— जंबु द्वीप जिन गेह जे, जजों अष्ट विधि सोय । कहों माल दधि द्वीप की, रचना जैसी होय ॥ १ ॥

चौपई—जंबू द्वीप विषै गिरि जान, तीन सैंकडा ग्यारह मान । तितने ही तिन दोल्यों सही, वेदी मणि मय है शुभ मही ॥ २ ॥
कुंड विषै वेदी जुत सोय, यह छब्बीस कहे सब जोय । तितनी मणि शुभ वेदी फिरी, इन द्रह में नंदी अनुसरी ॥ ३ ॥
इन नंदी के दो तट जान, वेदी मणि मय शोभित खान । अब इनको सुण भिन भिन भेद, समझै मिटै भरम को खेद ।४।
जान कुलाचल पट इक मेर, जिमक नाम गिरि चार सु हेर । कंचन गिरि द्वय सौ मन लाय, दिग्गज नामक आठ वताय ।५।
पोडश जानो गिरि वक्षार, चव गज दंता सब मन हार । गिरि वैताड तीस चव जान, वृषभाचल चवतीस सु आन ॥ ६ ॥
पर्वत च्यार नाभि गिरि सार, सब गिरि मिल त्रय शत अर ग्यार । अब सुनि कुंडनि की शुभ कथा, समझे ज्ञान वान जिन यथा
सीता आदि नदी तहां पडै, चौदह कुंड तिसी थल अडै । इन में गिरि गिरि पै सुर थान, सुर थल पै जिन विंब बखान ॥८॥
ते सुर खग करि पूजत सही, मैं इहाँ पूजों भावन मही । बारह कुंड विभंगा तने, जान विदेह क्षेत्र में बने ॥ ९ ॥
और विदेह क्षेत्र में जोय, गंगा सम नंदी है सोय । चौसठ कुंड कहे ते सार, तहं तें नंदी निकसै भार ॥ १० ॥

ये सब कुंड कहे मिलवाय, गिनती निव्वे जानो भाय । अब सुनि द्रह छवीस सो सही, जान कुलाचल पे पट कही ॥ ११ ॥
सीता नंदी में दश जोय, दश सीतोदा मांहि सु होय । ये सब द्रह छवीस लखि सार, अब सुनि नदी नवे परिवार ॥ १२ ॥
गंगा सिंधु सु रक्ता जान, रक्तोदा मिल वच मन आन । छप्पन सहस नदी जल मई, है परिवार इन्ही का सई ॥ १३ ॥
रोहित रोहितास मन लाय, सुवरन रूप्यकुला हित दाय । बारह सहस लाख इक जोय, सरिता यह परिवार सु होय ॥ १४ ॥
हरि हरकान्ता नारी सोय, नरकान्ता दिक वच मन होय । इन मिच नंदी को परिवार, दोय लाख चौबीस हजार ॥ १५ ॥
सीता औ सीतोदा जान, इमि परिवार नदी सुन कान । एक लाख अडतीस हजार, और सुनो आगे विसतार ॥ १६ ॥
चेत्र विदेह विभंगा सार, बारह नदी वहुत जल धार । तिन परिवार सुनो दे कान, सहस बतीस लाख त्रय मान ॥ १७ ॥
चेत्र विदेह नदी मन लाय, चौसठ गंगा सम अधिकाय । तिन परिवार सुनों मन धार, आठ लाख छिनवै हज्जार ॥ १८ ॥
सब जोड़े परिहार सु होय, निव्वे मूल नदी सब कोय । सतरह लख बाणव हज्जार, ऊपर नव्वे अधिके सार ॥ १९ ॥
जंबू द्वीप विषै सब जोय, नंदी द्रह गिरि आदिक सोय । रचना और घनी है सही, तिन गति छेद जजों सुख मही ॥ २० ॥
जंबू द्वीप कोट तुंग जानि, जोजन आठ कह्या जिन बानि । चौथे बारह जोजन हेठ, ऊपर जोजन एक समेट ॥ २१ ॥
धरती माहिं नीव दो कोश, सो तो वज्र मई सब ठोस । और कोट सब बहु मणि मई, चव दरवाजे शोभा सई ॥ २२ ॥
पदम वेदिका गढ पे जान, कनक मई शोभा सुख दान । दोय कोश ऊंची मन लाय, धनुप पांचसै चौडी थाय ॥ २३ ॥
जान कंगुरे पंकति इसी, मानो ज्योतिप माला तिसी । वैडूरज मणि के सब कूट, वेदी पार्श्व दोऊ वन जूट ॥ २४ ॥
दोय कोश ऊंचे मन लाय, चौडे धनुप पांच सै भाय । ऐसे जान कंगुरे सार, वन की रचना अति सुखकार ॥ २५ ॥
ता वन कनक शिला शुभ थापि, मन्दिर तुंग रतन मय थापि । तिन मन्दिर में व्यंतर देव, रहे महा पुन्य फल लेव ॥ २६ ॥
दरवाजन के हैं चव नाम, विजय वैजयंत जयंत सु ठाम । अपराजित चौथो मन लाय, इन में सुर के महल बताय ॥ २७ ॥
तिन द्वारन पे है शुभ मही, देवन की शुभ नगरी कही । बारह हजार जोजन विस्तार, चौडी अर्द्ध जान हितकार ॥ २८ ॥
चव ही द्वारन पे पुर जान, रतन मई रचना अधिकान । तिनपे विजय विजयंत जयंत, अपराजित ये देव बसंत ॥ २९ ॥
इन आदिक रचना बहु जान, इन गति छेद जजों शिव दान । अब सुन लवणोदधि की कथा, जिन आगम में कहि है यथा ॥
लवणोदधि को वलय सु व्यास, दोय लाख जोजन जिन भास । मध्य गिरै ऊंडो मन लाय, जोजन सोलह सहस बताय ।३१

दोऊ तट अनुक्रम घट वाय, तीर विषै तुच्छ जल पाय । सागर मधि दिश विदिशा जान, पाताले जानो जल खान ॥ ३२ ॥
चव दिश चव पाताले जोय, सो तो लख लख जोजन होय । चवदिशा को जानो सही, ते दश जोजन सहस जु कही ।३४।
इनके अन्तर आठ हजार, सहस और पाताले सार । ये सब एक सहस जोजना, ऊंचे जान महा शुभ मना ॥ ३४ ॥
ये सब हैं मिरदंगाकार, इन मे तीन भाग हैं सार । भाग नीचले पवन सु जोय, ऊपर भाग कह्यो जल सोय ॥ ३५ ॥
मध्य भाग में जुग ही जान, जल अरु पवन मिश्रिता मान । जल जब वधै पवन तब घटै, पवन वधै तब ही जल घटै ॥३६॥
इन करि जल घटि वढि है सोय, शुक्ल कृष्ण पख में अवलोय । ग्यारह सहस जघन जल जान, उत्कृष्ट सोलह सहस बखान ॥
मध्य भाग जल ऊंडो सोय, जे तो या विधि भाख्यो जोय । जोजन पांच कृष्ण पख वटै, सुकल पक्ष इतनो वधि मिटै ।३८॥
पातालन दो ओर सुजान, परवत हैं सब के मन आन । ते गिरि जल में ऊंचे सही, तिन पे देव रहैं शुभ मही ॥ ३९ ॥
वधि जल तें मधि में नभ मांहि, जोजन सात सैकडा ठाहि । ऊपर दोय कोश सुर ग्राम, नाग कुमार वसै तिस ठाम ॥ ४० ॥
ते पुर लंबे चौड़े जान, बारह सहस जोजना आन । और इसी सागर के माहिं, जान कुभोग भूमि की ठाहिं ॥ ४१ ॥
तिनके मुख सब पशु समान, और शरीर मनुप सम जान । इत्यादिक या दधि में सार, जानों रचना बहु परकार ॥ ४२ ॥
याही दधि जिव त्रस स्थावरा, और घनी रचना कूं धरा । या मे उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥४३॥

दोहा— जंबू द्वीप जिन चैत्य जे, जजों भक्ति मन लाय । दीप उदधि गति छेद जो, मोकूं करो सहाय ॥ ४४ ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ इति० ॥

॥ धातकी खंड पूजा ॥

छंद अडिल्ल— खंड धात के माहिं भवन जिन हैं सही, पूजें तिस ढिग जीव तथा सुर खग कही ।
तहं जावन की शक्ति नहीं मुझ पाइये, तातें मन वच थापि जजों यहां भाइये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं धातकी खड सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धातकी खड सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

छंद हरिगीतिका—जल लेय प्राशुक महा निर्मल सुधा सम उत्तम सही, धरि कनक भारी रतन जड़ित सु, आपने कर की मही ।

जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा। ते जजों जल तें भाव शुध हो, नाश जनम जरा करा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड सम्बधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

घसि अगर चंदन नीर शुभतें, गंध दायक शुभ मई। धरि कनक प्याले आरती ले, अरघ देकर थुति चई।
जे धातकी खण्ड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा। ते जजों चंदन आपने कर नाश भव तप की करा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड सम्बधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

अच्छत अखंडित महा उज्वल, गंधजुत मुक्ता समा, ले आपने कर थालि भाजन, भक्ति जुत शोभापमा।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघहरा, ते जजों मन वच काय अच्छत, होय अच्छत पद खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

शुचि फूल सुन्दरकल्पद्रुमके, गंध जुत शोभा मई, तिन वरण नानाभांति ऐसे, लेय अपने कर सई।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा। ते जजों मन वच काय फूलन,काम मद तिन क्षय करा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य खाजा सुभग मोदक, औंर फीणी जानिये, इन आदि पट रस पूर व्यंजन, आप करले आनिये।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय चरुले, भूख नाशन को खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड सम्बधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रतन दीपक हार तम को, दूर सम परकाशिया, भरि कनक थाली आप करले, सकल अघ जर नाशिया।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंन जिन के अघ हरा। ते जजों मन वच काय दीपक, मोह तम जारन खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड सम्बधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विधि मेल गंध सु, अगर आदिक सारजी, ते दहों अगनी माहिं करतें, हरप बहु मन धारजी।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय धूप सु, अष्ट अरि जारन खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंडसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल बिदाम सु लौंग खारक, सुभग पुंगी फल सही, इन आदि बहुफल जाति सुन्दर, लाइयो अति सुख मही ॥
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा। ते जजों मन वच काय फल ले, मोक्षफल उपजे खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल भलो चंदन लेय अक्षत, फूल चरु दीपक सही, फल आदि द्रव्य मिलाय आठों, भरे पातर मधि लही।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय अर्घ सु, सकल वांछित सुखकरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

चौपई–खंड धातकी दूजो जान. ता थानक जिन मन्दिर मान। तिन पद अर्घ जजों मन लाय, ता फल होय सकल सुख दाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खंड धातकी के विषैं, हैं जिन मन्दिर सोय। तिनको मन वच काय तें, जजों महासुध होय ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

खंड धातकी दूजो जानो, चार लाख जोजन पर मानो। वलय व्यास एता मन लावो, मेरु दोय ताके मधि पावो ॥ २ ॥
एक मेरु पूरब दिश मानो, विजय नाम भव्य हित जानो। इनपे हैं जे जिन वर गेहा, तिनको नमों ठान बहु नेहा ॥ ३ ॥
मेरु दूसरा पश्चिम कानी, अचल नाम ताको सुख दानी। या पे है जिनवर के थाना, तिनकों नमों ठानि उर माना ॥४॥
गोलाकार क्षेत्र है भाई, लवणोदधि के पार जु थाई। या में रचना और घनेरी, मेटो देव तास की फेरी ॥ ५ ॥
पाप उदय या खेतर पायो, तामें जीव पशू सब थायो। ताके दुख की को मुख गावे, सेव देव जिनकी से जावे ॥ ६ ॥
फेर मनुष हो बहु दुख लीनो, भोगन की वांछा अति भीनो। ताके कष्ट कहो को गावे, सेव देव जिनकी से जावे ॥ ७ ॥
फिर या खेतर में विधि योगा, लहै पुण्य तें नाना भोगा। सो भी छांडि और गति पाई, थिर नहिं थिर इक जिन थुति भाई ॥८॥
याही क्षेत्र धातकी माहीं, नर पशु होय सकल विचराई। ताके दुख की को मुख गावे, सेव देव जिन की से जावे ॥ ९ ॥
इस उत्तर जिनवर के गेहा, तहां भव्य पूजों करि सेवा। विजयारध या खंड जिन थाना, सुर खग इहां पूजें तजि माना ॥१०॥

मेरु आदि इस खंड जिन गेहा, तहां सुर जाय जजें कर नेहा। नाना विधि की भक्ति उपावे, जय जय जय जिन मुखतें गावें ॥११॥
भक्ति प्रभाव दाव शुभ पायो, जिनगुण गावन को उमगायो। जो जिय प्रभु तुम शरणै आयो, तानें निज भव सफल करायो ॥१२॥
हैं जिन या भव संकट माहीं, तुम विन कोऊ शरणों नाहीं। जो जिय प्रभु तुम शरणै आयो, तानें निज भव सफल करायो ॥१३।
ऐसे बहु विधि भक्ति उपावै, ता फल सुर शिव मारग जावे। तुम प्रभु दीन–तार सुनि आयो, सुमरत ही सब पाप पलायो ॥१४॥
मेरी भी यह विनती स्वामी, वह दिन वेग करो जग नामी। मैं भी खंड धातकी माहीं, तुम प्रभाव तें जनमों नाहीं ॥ १५ ॥
देव जिनेश्वर पद श्रुति मेरी, भव भव मे श्रुति पावों तेरी। खंड धातकी थल में देवा, उतपति हरो करों तुम सेवा ॥ १६ ॥

दोहा— खंड धातकी के विषै, उतपति छेदो देव। और सकल भ्रम मेटि के, देहु तिहारी सेव ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड सर्वधि जिन चैत्याल्यस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ इति ॥

॥ धातकी खंड की पूर्व में स्थित मेरु आदि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल—
खंड धात की मांहि मेरु पूरब सही, खेतर सात कुलाचल पट अति सुख मही।
विजयारध इन आदि थान जिन थल जजों, तहं पूजत सुर खगां थापि मैं यहां जजों ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद गीतिका—नीर निरमल चीर दधि को, जीव भ्रम तामें नहीं। धरि कनकझारी आपने कर, हरप जुत होके सही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जो जिन थान हैं। ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशासम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

बावनो चंदन सुघसि के, भक्तियुत आन्यो सही। ता माहिं और सुगन्ध मेली, घालि शुभ पातर मही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जो जिन थान हैं। ते जजों मन वच काय शुभ तें, होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत अखंडित नीन नख शिख, धवल अति सुखदाय है। सुन्दर सुगन्ध स्वरूप मुक्ता, फल जिसे ले आय है।
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जो जिन थान है, ते जजों मन वच काय शुभ तें, होय उर शुभ ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुन्दर वरन नाना, गंध जुत शोभा मई। कल्पद्रुमके जान भविजन, लायके पूजा ठई।
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जोजिन थान है। ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुभ ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य खाजा और फीणी, घेवरा मोदक मई, इन आदि महती लेय चरु, जिन देवकी पूजा ठई।
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जो जिन थान है। ते जजों मन वच काय शुभ तें, होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्री धातकी खड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम ॥ ५ ॥

दीप रतन स्वरूप जसे तम तने घातक सही। भरि थाल अपने हाथ में ले, आरती शुभ की मही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जोजिन थान है। ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुभ ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्य. दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दशधा अगर चंदन, और लाय कपूरजी। इन आदि गंध मिलाय सब ही, अगनि माहीं चूरजी ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जो जिन थान है। ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल सुपारी लोंग खारक, और जान विदामजी। इन आदि बहु विधि लाय शुभ फल आपने हित कामजी।
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जो जिन थान है। ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदनाक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप भला सही। ये आनि आठों द्रव्य सुखदा, अर्घ ले निज कर मही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जोजिन थान है। ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि–लख खंड धातकी पूर्व मेर, तिन आदि और शुभ क्षेत्र हेर। तहां थान जिनेश्वर जान सोय, ते जजों भक्ति धर अरघ जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—खंड धातकी पूर्व दिश, मेरु आदि जिन थान। ते मैं भक्ति उपाय के, जजों सकल तजि मान ॥

॥ छंद वेसरी ॥

पूरब मेरु धातकी खंडा, तहां हैं जिन मन्दिर अघ छंडा। धन्य तिन्हें पूजें उस ठाहीं, हम में जाने का बल नाहीं ॥ १ ॥
तातें इस ही थल में जानो, हाथ जोड़ करि हैं थुति मानो। इम थल तें यह अरजी स्वामी, भव भव शरण देहु मो नामी ॥२॥
और चाह मेरे कछु नाहीं, तुम गुण गान चाह उर माहीं। तुम थुति ही सुर शिव सुख देवे, तुम महिमा तें दुख नहिं वेवे ॥३॥
तुम प्रभु दीन–तार सुनि आयो, मैं अति दीन शरण तुम जायो। पतित उधारन विरद तिहारो, हूँ अति पतित जिनद मो तारो ॥४॥
तुम प्रभु अशरण शरण बताये, बहुते अशरण पार लगाये। इम सुनि जिन तुम शरणै आयो, मैं अशरण जिन तुम पद पायो ॥
नाथ नाहि ताके भव माहीं, तुम अनाथ के नाथ कहाहीं। जय जय जय करुणानिधि देवा, बहुत कठिन पाई तुम सेवा ॥६॥
जय जय भव सागर को नावा, जय जय भव वन साथ कहावा। जय जय शिव दायक जग पीवा, जय जय सुर हरि नाथ सदीवा ॥
जय जय धर्मी धर्मा सागर, गुण अनंत रत्नों के आकर। जय जय शिव दायक जग पीवा, जय जय तुम थुति हरप सदीवा ॥८॥
इत्यादिक थुति कर खग देवा, पुण्य उपाय जाय थल लेवा। कै जिन खेतर के नर सोई, पूजें तिन्हें धन्य फल होई ॥९॥
मैं तो शक्ति हीन हूँ स्वामी, किस विधि जाऊं अन्तर यामी। तातें इस ही थल तें देवा, मन वच काय करों तुम सेवा ॥१०॥

दोहा–दीप धातुकी जिन भवन, सो मैं जजों सु भाय। जजों और भव भाव धरि, जो कछु है सुख चाव ॥१२॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अघंम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खड में पूर्व दिशा स्थित विजय मेरु संबंधी भरत क्षेत्र पूजा ॥

छंद-गीतिका–खंड धातकि पूर्व मेरु सु, भरत खेतर ता तनो। तहाँ विजय पूरब थान जिनके, किये विन के ये गिनो ॥
तिस थान जानो कोय विधि ना, भापि हों मन वचन ही। तातें सु द्रव्य मिलाय आठों, थापि जजि हों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु सवधि भरत क्षेत्र जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु सम्बन्धि भरत क्षेत्र जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापन।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु सम्बन्धि भरत क्षेत्र जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरण।

छंद-जोगीरासा—निरमल पानी मैं कर आनी, गंगा जल सो भाई। कनक भारिका में करि के शुभ, अपने चित हरषाई ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत क्षेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहाँ भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु भरत क्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन शुभ जल ते घसिके भवि, और कपूर मिलाई। गंध भली अलि को मन मोहन, रतन भारि भरि भाई ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत क्षेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहाँ भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

मुक्ताफल से खंड विना शुध, अक्षत लेकर भाई। पूजन को अपने कर लेकर, मन वच तन हरषाई ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में भरत क्षेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु भरतसबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ भले अधिकारी, नाना भांति सु प्यारे। जैसी शोभा कल्प पुष्प की, तैसी ही यह धारे ॥
खंड धात की पूरब दिशि में, भरत क्षेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु भरतक्षेत्रसंबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

षट रस पूर मनोज्ञ तुरत कर, शुभ नैवेद्य बनायो। खाजा फेनी मोदक आदिक, सो अपने कर लायो ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत क्षेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक तमके हारी सुखदा, रतन थाल भरलायो। तिन प्रकाशतें घटपट दीखै, शुभचित अति हरषायो।
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत क्षेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप सुगंध मिलाय सु दशधा, और कपूर सु भाई । जाके खवत धूम शिखा नभ, फल रहा महकाई ।
खण्ड धातकी पूरव दिशि में, भरत चेत्र जिन राजे । ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व मेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी, पिस्तादिक शुभ भाई । इन आदिक बहुते फल लेके, पूजन को मन लाई ॥
खंड धातकी पूरव दिशिमें, भरत चेत्र जिन राजे । ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अचत प्रसून ले, चरु दीपक सुखदाई । धूप फलादि मिलाय दरव वसु, अर्घ बना हर्षाई ॥
खंड धातकी पूरव दिशि में, भरत चेत्र जिन राजे । ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिवकाजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंडपूर्वमेरु भरत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—जल चंदन आदिक अर्घ लाय, भरत धातकी खंड थाय । जिन मन्दिर में जिन बिंब सोय, मैं जजों अरघ तिन भक्ति जोय ।

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु भरत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—खंड धातकी पूरव मेर, भरत मांहिं उपसागर हेर । ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

पूरब मेरु धातकी खंड, भारतवासी देव प्रचंड । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खण्ड धातकी पूरव भर्त, विजयारध खग गिरि सुख कर्त । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी उत्तम ठान । याकी उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मरु संबंधि विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अघम ॥ ४ ॥

याही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी उत्तम मान। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बंधि विजयार्द्ध उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही विजयारध पे सही, कूट कहे ते उत्तम मही। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि विजयार्द्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इन ही कूटन पे शुभ भाय, देव रहै नाना सुख पाय। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि विजयार्द्धस्थित देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

याही विजयारध सिध कूट, तापे जिन थल अघ तहँ छूट। तामें विंत्र देव जिन सोय, तिन पद अर्घ जजों मद-खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि विजयार्द्धस्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

खण्ड धातकी पूरब जान, खण्ड मलेच्छ भरत के मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्डपूर्व मेरु सम्बन्धि म्लेच्छ खण्डगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

इस ही भारत म्लेच्छ सुजान, जिनमें वृषभाचल गिरि मान। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि म्लेच्छ खण्डस्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

खण्ड धातकी पूरब जान, ताको भरत क्षेत्र उनमान। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि भरत क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—खण्ड धातकी पूर्व दिश, भरत क्षेत्र मनलाय। तहँ जिनथल वंदूं सकल, आठों द्रव्य मिलाय ॥

सोरठा—दूजे द्वीप मझार, पूरब दिश को भरत जे। क्षेत्र भलो सुभकार, जीव तहां ते शुभ लहैं ॥ १ ॥

याहू के षट खण्ड, तिनमें इक आरज सही। पंच मलेच्छ जु खंड, विजयारध ता मध्य है ॥ २ ॥

जुग श्रेणी तिस माहिं, तहां रहै खग बल धरा। कूट तास के ठाहिं, देव वसै जिन सेवका ॥ ३ ॥

शिव सु कूट इक जोय, तापे जिन मन्दिर सही। सुर खग पूजैं सोय, सफल आपको भव करै ॥ ४

एक अयोध्या सोय, आरज-खण्ड विषै सही। उपसागर तहँ जोय, दोय म्लेच्छ आरज विषै ॥ ५ ॥
तीन मलेच्छ सुजान, खग गिरि की उत्तर दिशा। तहँ वृषभाचल मान, चक्री निज नाम हि लिखै ॥ ६ ॥
ऐसे या थल माहिं, पट खंड हि मन लाइये। क्षेत्र भरत के माहिं, जिन थल अघहारी सही ॥ ७ ॥
तिन जिन थल के माहिं, आय भविक पूजा करै। नाना पुण्य उपाय, पाप हरै पूरब किये ॥ ८ ॥
मो जावन की धीर, शक्ति नहीं तिस थान में। तातैं इस थल धीर, पूजों भावन अर्घ तें ॥ ९ ॥

दोहा—जंबू भरत के सम कथन, जान लेहु बुधिवान। पूजों या गति छेद को, जय जय जय भगवान ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व मेरु भरत क्षेत्र संबंधि जयमालार्घं ॥ इति०

हेमवत क्षेत्र संबंधी गति छेदक अर्घ

छंद-अडिल्ल—

खण्ड धातकी पूरब हिमवत क्षेत्र ही, भोग भूमि है जघन मानुषी शुभ मही।
एक कोश तन आयु एक पलि जानिये, या गति छेदक देव जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र संबधि मनुष्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

खण्ड धातुकी पूरब हिमवत है सही, भोग भूमि यह जघन सुखन की मही।
होय पशु यहां नभचर शुभके भावजी, या गति छेदक देव जजों कर चावजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र संबधि नभचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि भोग भू माहि जीव थलचर सही, एक कोश तन सुन्दर-अति सुखकी मही।
होय पशू यहां थल चर शुभके भावजी, तिन गति छेदक देव जजों कर चावजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र संबंधि थल चर पशु गति छेदक जिनेभ्य अर्घम् ॥ ३ ॥

याही खण्ड धात की पूरब दिश सही, हिमवत खेतर बीच नाभि गिरि की मही।
ढोलाकार उतुंग गोल शुभ जानिये, या-गति छेदक देव जजों थुति ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

चौपई–खंड धातकी पूरब जान, हिमवत क्षेत्र सु आरज थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र सबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५ ॥

॥ हरि क्षेत्र सम्बन्धि गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई—पूरब खंड धातकी माहिं, हरि क्षेत्र आरज नर पाहिं । इनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र मवधि मनुष्य गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ६ ॥

या ही हरि खेतर में सही, होय पशू नभचर इस मही । इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा हरिक्षेत्र मध्यभोगभूमि सम्बन्धि नभचर जीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७ ॥

इस ही क्षेत्र हरी मनलाय, थलचर जीव ऊपजै आय । इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा हरिक्षेत्र मध्यमभोग भूमि सम्बन्धि थलचर जोवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इस ही हरी क्षेत्र में जान, नाभी पर्वत है हित दान । इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा हरिक्षेत्र मध्यम भोगभूमि सम्बन्धि नाभिगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—हरि पूर्व धातकी खंड खेत, नर पशु सुर रहते सुख समेत । तन दोय कोश पलि दोय आय, न गतिछेदक के जजों पाय॥

ॐ ह्री धातकी खण्ड पूर्वहरिक्षेत्र सम्बन्धि मध्यमभोगभूमि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १० ॥

चौपई–खंड धातकी पूरब जान, भोग भूमि उत्कृष्ट प्रमान । होय मनुष्य आर्य अवलोय, तिन गति छेद जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्डपूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमि मनुष्यगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इस ही भोग भूमि में जान, होय पशु नभचारी मान । इनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री धातकीखण्ड पूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमिसम्बन्धि नभचरजीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

इसही भोग भूमि थल माहिं, थलचर जीय होय मन लाहि । इनकी उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री धातकीखण्ड पूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमिसम्बन्धि थलचरजीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इसही भोग भूमि थलमाहिं, मानुष पशु उपजै तहँ आहि । इनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमि सम्बन्धि मनुष्यगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

॥ जम्बू वृक्ष सम्बन्धि पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

खंड धातकी पूरब मेरु सु जानिये, ताके जंबू वृक्ष रतनमय मानिये ।
ता ऊपर जिन थान बिंब जिनके सही, जान शक्ति मो नाहिं जजों इस ही मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरुसम्बन्धि जम्बूवृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि जम्बूवृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि जम्बूवृक्षस्थित जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

छंद लक्ष्मीवती—

नीर ले शुभग निरमल सु आभा मई, कनकझारी भरी आप कर ले ठई ।
धातकी खंड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनो जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालस्य जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

सुगन्ध चन्दन घसों नीर निर्मल भलो, लेय शुभ पात्र में पूजने को चलो ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनों जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु जबूवृक्षसबधि जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

लेय अक्षत विना खंड उज्वल सही, लेय मुक्ता फला आश शुभ की मही ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनो जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु जंबूवृक्षसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल सुर द्रुम तने वरन नाना सही, लेय कर माल उर भक्ति जुत ह्वै रही ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनो, जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरुजबूवृक्ष सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

छः रसों युक्त नैवेद्य मन लायजी, धार शुभ पात्र में आप कर भायजी ।
धातकी खण्ड पूरव दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जम्बू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीप मणि ज्योति सामान तम के हरा, थाल भरि आप कर लेय आयो खरा ।
धातकी खण्ड पूरव दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विध भली कूट कर लाइयो, खेय वह्नी विषै हर्ष बहु पाइयो ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु जंबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

सुभग नारेल अरु लोंग बादामजी, आदि इन और फल लेय शिवकाम जी ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जंबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम ॥ ८ ॥

नीर गंध तंदुला फूल चरु दीपजी, धूप फल मेलकर अर्घ शिव दीयजी ।
धातकी खण्ड पूर्वदिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनों जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु जबू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद गीतिका—धातकी खण्ड पूर्व दिशि में, वृक्ष जंबू जानिये । तिस ऊपरै जिन थान मणिमय, बिंब तिसमें मानिये ॥
तहँ देव खग तो जाय पूजैं, शक्ति हम में है नहीं । तातें जु इस थल थाप पूजें, अर्घ धरि निज कर महीं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जंबू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— दीप धातकी खण्ड में, पूरब दिशि को जान । जंबू तरु पे जिन भवन, जजों भक्ति उर आन ॥ १ ॥

चौपई—खण्ड धातकी पूरब मेर, ताकी दक्षिण दिश को हेर। थंभ एक सुभग मन हार, तापे कटनी तीन सुधार ॥ २ ॥
चौ दिशि कोट तनी विधि सही, वापी वन तें सोभैं मही। इत्यादिक रचना बहु मान, आगेजंबू दीप सो जान ॥ ३ ॥
ता ऊपर जंबू तरु जोय, शाखा चार कही शुभ सोय। शाखा तीन ऊपरैं सही, है जिन भवन पुण्य की मही ॥ ४ ॥
शाखा एक ऊपरैं सही, है जिन भवन पुण्य की मही। विंब तहां मणिमय मन लाय, पूजैं देव खगां नहँ जाय ॥ ५ ॥
अपने भव को उज्वल करै, नाना विधि की श्रुति उचरैं। अपनो आज सफल भव भयो, दर्श तिहारो मनमें लयो ॥६॥
आज पाप सब गये पलाय, आज पुण्य पायो अधिकाय। देखत देव सेव को चहैं, मो जिय शिव मारग को लहैं ॥७॥
जय जय जय जिन नायक देव, सेवक को निज मम कर लेव। मैं या भव में भ्रम्यो अपार, ताको नाहीं वारापार ॥८॥
जो पुण्ययोग आप पद लये, सो निज भव दुख को जल दये। इत्यादिक सुर खग दुति थान, लेय पुण्य अघ कर निज हान ।९।
ऐसे जंबू तरु जिन थान, रतन मई शुभ ठान सुजान। फूल पान फल कर रमणीक, ऐसो वृक्ष जंबू है ठीक ॥ १० ॥

दोहा— ऐसे जंबू तरु विषैं, थान जिनेश्वर सोय। जजों महा सुख कारणैं, और न वांछा कोय ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घम् ॥

॥ शालमली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल— खण्ड धातकी पूरब मेरु सुजानिये, शालमली तरु हेठ जिनालय मानिये।
ता ऊपर जिन विंब देव मन मोय है, जजों थापि इम थान पाप दुख खोय है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा मेरु सम्बन्धि शालमली वृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा मेरु सम्बन्धि शालमली वृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा मेरु सम्बन्धि शालमली वृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निहितो सन्निधिकरणम्।

छंद अडिल्ल— निरमल नीर सुलाय कनक झारी भरों, लेव आय कर माहिं हरष हिरदै धरों।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु शालमलीवृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन नीर थकी घसि लाइयो, सुभग पात्र में घाल, देव गुण गाइयो ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत जान अखण्डित मुक्ता फल समा, गंध धार अति उज्जल लेकर अति रमा ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्व मेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

नाना वरण सुगंध फूल सुखदाय है, सो मैं लायो देव यजन कों भाय ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरुल्मलो वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नाना रसमय पूर तुरत कर लाइयो, खाजा फीणी मोदक आदि सुभाइयो है ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतन समान हरै तमभार को, थार मांहि ले आयो अति उजियार को ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

दशधा गंध मिलाय अगर आदिक सही, खेऊं वह्नि मझार चाव मो मन मही ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु शाल्मलि वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुखारक जोइये, ते अपने कर लाय सुफल शिव होइये ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु शाल्मली वृक्ष सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु दीप ही, धूपफला वसु द्रव्य मेलि लायो यहीं।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु मही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वमेरु शाल्मली वृक्ष सवधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

चौपई—खंड धातकी पूरव जान, शालमली पे जिन थल मान। बिंब तहां शुचि जिनवर रूप, तिन पद जजों मिटै अघ धूप ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु शालमली वृक्ष सवधि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खण्ड धातकी पूर्व दिश, शालमली तरु जान। तापे जिन थल पूजिये, मन वच तन पहिचान ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

ये ही शालमली तरु जानो, रतनमई शोभा अधिकानो। रचना सकल तास समजोई, तिनकी रचना अदभुत होई ॥ २ ॥
शाखा तीन ऊपरैं भाई, देव रहैं तिनपे सुखदाई। इक शाखा ऊपर जिन गेहा, सुर खग ही पूजें कर नेहा ॥ ३ ॥
मोमें शक्ति जान की नाहीं, पूजन की वांछा अधिकाहीं। तातें मन वच काय लगाई, पूजों इस ही थल में भाई ॥ ४ ॥
धन्य तिन्हें जो परतछ जावें, भाग्य हीन मोसर नहिं पावें। मेरी शक्ति समा मैं कीनी, पूजा भक्ति भावना भीनी ॥ ५ ॥
जैसा फल प्रत्यक्ष सु होई, तैसो भाव जजै ले कोई। ऐसी जान पूज्य मैं ठानी, मो अघदेव करो सव हानी ॥ ६ ॥
दोहा—भाग्य भले मोसर मिल्यो, जिन पूजन को आय। ता फल भव भव जिय सुखी, होय सदा अघ जाय ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खण्ड की पूर्व मेरु सम्बन्धी गज दन्त पूजा ॥

छंद अडिल्ल— मेरु धातकी खंड दिशा पूरव कही, तहां चार गज दन्तन की उत्तम मही।
तिन चारन पे भवन चार जिन देवके, ते यहां थापिर जजों काय मन वच थके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरुसम्बन्धि चतुर्गजदन्तस्थित चैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्रावतर २।
ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु सवधि चतुर्गजदन्तस्थित जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु सवधि चतुर्गजदन्तस्थित जिन बिंब अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल जोगीरासा—निरमल पानी त्रस विन कहिये कनक भारि में लायो, अपने करमें ले हरपे चित, सुफल सुमन ललचायो ।
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दंतन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां विंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु गजदन्त संबंधि चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन पावनकारी, भावन भावत लायो, निरमल नीर थकी घसिके धर, कनक पियाले मायो ।
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां विंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरुगजदन्त सम्बन्धि चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अच्चत उज्वल मुक्ताफल से, खण्ड विना ले भाई । धोय किये शुचि ले अपने कर, भक्ति सहित उमगाई ॥
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां विंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु गजदन्तसबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अच्चतम् ॥ ३ ॥

फूल कलप तरु से ले आयो, वर्ण गंध बहुधारी । माल बनाय सुभाव हरप धरि, जग करि कामनि वारी ॥
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां विंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु गजदन्त सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

खाजा फीणी मोदक घेवर, इन आदिक चरु भाई । पट रस पूरित ले अपने कर, भूख जु नाश कराई ।
खंड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां विंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु गजदन्तसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई से तमहर, ज्योति प्रकाशक जानो । धार कनक पातर में करले, तीरथ को उमगानो ॥
खंड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पै जोवै । है जिन मन्दिर तहां विंब शुभ, पूजे से मद खोवे ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु गजदन्त सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

दशधा गंध सुधार अगरसी, नन्दन केलि मिलाई । खेवन को अपने करमें ले, कर्म दहन करवाई ॥
खंड धातकी मेरु सु पूरन, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां विंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥
ॐ ह्रीं धातक खण्ड पूर्व मेरुगजदन्तसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी, खारक अति सुखकारी। इन आदिक सु भले फल लायो, भक्ति हिये बहुधारी।
खण्ड धातकी मेरु सु पूरव, गज दन्तन पे जोवै। है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु गजदन्त सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम्॥ ८॥

जल चंदन अक्षत पहूपचरु, दीप धूप फल जानो। मेलि सकल करि अरघ मनोहर, ले आयो हित दानो॥
खंड धातकी मेरु सु पूरव, गज दन्तन पै जोवै। है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ पूजे से मद खोवै॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्व मेरु गजदन्त सर्वांग जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्॥ ९॥

छंद अडिल्ल— खंड धातकी पूरव मेरु सु जानिये, ताके गज दन्तनपे जिन थल मानिये।
तहँ जिनवर के बिंब महा सुखदाय है, ते में अरघ चढाय जजों हित लाय है॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरुगजदन्त सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्॥ १०॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपाई—पूर्व धातकी खंड सुमेर, ताके गज दन्तन पर हेर। कूट कहे जो उत्तम खान, या गति छेद जजों भगवान॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु गजदन्त सम्बन्धि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं॥ १॥

इनही गजदन्तन पे सही, कूट कहे शोभा की मही। तिनपे देव व्यन्तरा रहै, या गति छेद जजों अघ दहै॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरुगजदन्त सम्बन्धि कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं॥ २॥

याही मेरु प्रथम गजदन्त, ता ऊपर जिन थान सुसन्त। तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं धातको खड पूर्वमेरु प्रथमगजदन्त माल्यवान सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो अर्घम्॥ ३॥

इसी मेरु दूजो गजदन्त, ता ऊपरि जिन थान सुसन्त। तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु द्वितीय महा सौमनस गजदन्तसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्॥ ४॥

इसी मेरु तीजो गजदन्त, ता ऊपर जिन मंदिर सन्त। बिंब महा जिनवर के सोय, तिनके पद पूजों मदखोय॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वमेरुतृतीय विद्युत प्रभ गजदन्तसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्॥ ५॥

इसी मेरु चौथो गज दन्त, तापे जिन थल शोभावंत। विंब तहां जिनवर के सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु चतुर्थगन्धमादन गजदन्तसम्बन्धि जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

दोहा— इन चारों गजदन्त पे, है जिन गेह अनूप। ते पूजों वसु द्रव्य तें, काटन संकट धूप ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु चतुर्गजदन्त सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ ७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खंड धात पूरब दिशा, मेरु तने गजदन्त। तिनपे जिनके थान हैं, ते पूजों अघ हन्त ॥

चाल मुनियानंद— जान गजदन्त ये चार या मेरु के, कूट इन ऊपरे हैं घने घेरके।
(छंद लक्ष्मीवती) नाम परमाण सिध कूट आदिक सही, और तिन शीश सुर भवन शोभामई ॥ २ ॥
रंग आकार आदिक सबै सुख करा, मेरु सुम्मेरसम जान वरणन खरा ॥
कूट सिद्ध ऊपरै देव तिन थान है, ते जजों भाव धर देहि शिवदान है ॥ ३ ॥

सरठा— नमैं देव खग आय, उस ही थानक जायके। हम यहां भावन भाय, अर्घ जजों जिन पायजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खंड के पूर्व मेरु के पूर्व विदेहसम्बन्धि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीतिका—मेरु धातकि खंड पूरब थान सकल विदेहजी। तिस मांहि मंदिर देव जिनके, कहे बहु गुण गेहजी ॥
वहां विंब है जिन देवजी के, देव जिन से जानिये। ते जजों मन वच काय सेती, अर्घ तें मन आनिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरुविदेहक्षेत्र संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल जोगीरासा—नभसो निरमल नीर विना त्रस, क्षीरोदधि सो जानो। कनक पियालो धर कर आन्यो, हरष सहित अधिकानो ॥
खंड धातकी पूरब से सब, थान विदेह बताये। तहँ जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र संवन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन वावन निर्मलधारी,नीर सुगंध घसाई । कनक पियाले धाल भगति जुत, अपने कर ले भाई ॥
खंड धातकी पूरव से सव, थान विदेह वताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरुविदेह सम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल खंड विना शुभ, वीन वीन कर लाये । शुभ पातर में धाल लेय कर, हरप हरप उमगाये ॥
खंड धातकी पूरव से सव, थान विदेह वताये । तह जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम ॥ ३ ॥

फूल सुगंध सुवरण मनोहर, नाना रंग के भाई । काम नाशनी होय शक्तिफल, यों कर ले उमगाई ॥
खंड धातकी पूरव से सव, थान विदेह वताये । तहँ जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरुविदेहक्षेत्र सम्वन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

पटरस पूरित तुरत वनाये, खाजा फीणी लायो । मोदक आदिक जे चरु निज कर, पूजन को उमगायो ॥
खंड धातकी पूरव से सव, थान विदेह वताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्वन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम ॥ ५ ॥

दीपक तमहर रतन मई सो, महा ज्योति परकाशी । कंचन पातर धाल घनेसे, करले वहु थुति भापी ॥
खंड धातकी पूरव से सव थान विदेह वताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिनपद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सर्वधिजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप अगर आदिक दश गन्धी, एक जगह करदीनी । खेवन को अघ जारन कारन, अपने कर में लीनी ॥
खंड धातकी पूरव से सव थान विदेह वताये । तहँ जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी, खारक सुभग मिलाई । इन आदिक फल लेय मनोहर, हरपधार अधिकाई ॥

खंड धातकी पूरब से सब थान विदेह बताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह संबधि जिनालयस्थजिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल भाई । मेलि सबों का अरघ बनाऊं, लेकर अति सुखदाई ॥
खंड धातकी पूरब से सब थान विदेह बताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह क्षेत्र संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—कर अर्घ आप कर लेय आय,वरदीप धात पूरब बताय । जिन गेह विदेहन क्षेत्रमांहि, मैं पूजों थुतिकर अर्घ लाहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—खंड धातकी पूरब येह, त्रस थावर युत क्षेत्र विदेह । इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरुविदेहक्षेत्र संबंधि त्रसस्थावर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

छंद अडिल्ल—
खंड धातकी पूरब मेरु विदेहजी, तहाँ खगा चल सबै रूप मय जेहजी ।
तामें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह क्षेत्र सम्बन्धि वैताढगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याही गिरि वैताढ दक्षिण दिश जानिये, जीव घने त्रस थावर, उपजत मानिये ।
तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी । तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु संबंधि दक्षिण वैताढ गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही विजयारध की उत्तर श्रेणि जी, थावर त्रस जिय होय दुःख सुख लेणि जी ।
तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि वैताढउत्तर श्रेणि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

इस ही विजयारध के ऊपर जानिये, कूट महा शुभ थान दुःख की हानिये ।

तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी । तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेह क्षेत्रसम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इस ही खग गिरि ऊपर कूट बताइये, तिनके ऊपर देव रहैं धुनि गाइये ।
तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खडपूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धकूटवासीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही विजयारध ऊपर सिध कूट है, तिसपे जिनके थान पाप सब छूट है ।
बिंब तहां जिनवर के सुभग विराजिये, तिन पद अर्घ चढाय जजों हित साजिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

खंड धातकी पूरब दिशि को जानिये, सरिता नाम विभंगा जल की खानिये ।
इनकी उतपति छेद भये भवपारजी, तिन पद अर्घ जजों मनवचतन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि विभंगानदी गतिच्छेजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

पूर्व धातकी खंड विषै शुभ जानिये, गिरि वक्षार सुनाम तुंग अधिकानिये ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी । तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ।

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि वक्षारगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

इसही गिरि वक्षार उपरै है सही, कूट महा शुभ थान तरसथावर मही ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि वक्षारकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

इसही गिरि वक्षार ऊपरै है सही, सिद्धकूट जिनथान पुण्यकी शुभ मही ।
बिंब तहां जिनदेव जिसे सुखकारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सबधि सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इसही गिरि वक्षारकूटपे जानिये, देव रहैं सुखमान भले गुण खानिये।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र वक्षारसम्बंधि कूटवासी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

खंड धातकी पूरव दिश सु विदेह है, तिस थानक में सरिता रक्ता जेह है।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि रक्तानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

पूर्व धातकी खंड विदेह सुसार है, रक्तोदानंदी तहँ बहु जल धार है।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि रक्तोदानदी गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

खंड धातकी पूरब दिशा विदेहजी, तिनमें उपदधि सागर जहां जलगेहजी।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि उपदधिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

मेरू पूर्व विदेह धातकी सार है, देश विदेह विषै वृषभाचल धार है।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धिवृषभाचलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

खंड धातकी पूरब मेरु सुजानिये, देश विदेह सु नगर अयोध्या मानिये।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धिअयोध्यानगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

खंड धातकी पूरब मेरु विदेह में, देव रहै मगधादिक अपने गेह में।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्व विदेहक्षेत्र सम्बन्धि मगधादिक देव गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

खंड धातकी पूरव मेरु सुजानिये,तहां मलेच्छ सुखंड धर्म नहिं मानिये ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि म्लेच्छ खड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

खंड धातकी पूरव सार विदेहजी, आरजखंड तहँ सार धर्मजुत जेहजी ।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसंबधि आर्यखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

छंद गीतिका—खंड धात सु मेरु पूरव, भले क्षेत्र विदेह में, तहां देव जिनके गेह सुन्दर, जजों थुति कर नेह में ।
तिस क्षेत्र मांही जनम मृत्यु छेद जे शिव थल लहा, तिन पांय को मैं जजों मन वच, काय कर सुख हो महा ॥

ॐ ह्रींधातकी खड विजयमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खंड धातकी पूर्वदिशि, विजय मेरु शुभ ठाम । तिनके क्षेत्र विदेह में, जजों सु जिनवर धाम ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

खंड धातकी पूरव मेरा, तहां विदेह क्षेत्र बहु घेरा । गिरि वखार तहां हितकारी, तहँ जिन मन्दिर हैं अवहारी ॥ २ ॥
षोडश तो वखार सु जानो, अरु बत्तीस खगाचल मानो । तिनमें जिन मन्दिर सुखकारी, ते हां जजों पाय मनहारी ॥ ३ ॥
और घने खेतर जुत गेहा, तिनको जजों ठान बहु नेहा । इत्यादिक तहँ ते जिन धामा, ते सब पूजों मन वच कामा ॥४॥
कंचन गेह बिंब मणिमय हैं, कृत्रिम अकृत्रिम समये हैं । देव खगां नरते पुण्यवाना, पूजे मन वच तन धरि काना ॥ ५ ॥
ताके फल शिव सुख उपजावै, जग भरमण में फेर न आवै । उनको तन पायो हितकारी, सेवै चरण भक्ति उरधारी ॥ ६ ॥
मुखते भक्ति करे हो दीना, जय जय जिन करुणा रस भीना । सेव तिहारी तें दुखजावै, पाप फंद में कबहु न आवै ॥ ७ ॥
हो अनाथ के नाथ दयाला, करुणा सागर गुण की माला । दीन दयाल दया हम कीजे, भव भव शरणो तुम पद दीजे ॥८॥
अहो देव तुम थुति बिन देवा, करी बहुत या जग की सेवा । अब कोउ सुकृत तुम ढिंग आयो, परसत ही भव सफल करायो

इत्यादिक भज विनती ठानै, लगे पाप सब अपने भानै। अब भी यहां जो भावन भासी, सो अब 'टेक' छोड शिवजासी ॥१०॥

दोहा—खंड धातकी पूर्व दिश, देव थान जो होय। तिनको अर्घ जजों सही, मन वच तन मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि पूजा जयमालार्घं (इति०)

॥ धातकी खंडविजयमेरु संबंधी विदेहक्षेत्र के वर्तमान चार जिनालय पूजा ॥

दोहा—खंड धातकी पूर्व के, थान विदेह सु जान। तहँ वर्तें हैं जिन चतुक, ते पूजों इस थान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड विजयमेरु विदेहक्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिन अत्रावतरावतर संवौषट्

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्

छंद गीतिका-नीर निरमल गंग सरिता धार को लायो सही। भरि कनक झारी आप करले, उर विषै हुलसत मही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजो सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो जलं।

रगड़ बावन सुभग चन्दन, सलिल संग मिलाय जी। उर भक्ति जुत धर सुभग पातर, लेय अपने कर मही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजो सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो चंदन।

अक्षत अखंडित महा उज्वल, नोक जुत अति सोहने। धरि सुभग पातर आप करले, लगे पाप जु धोवने ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो अक्षत।

कल्प तरु से फूल सुन्दर गंध जुत मन मोहने। तिन दाम कर ले आप कर में, चल्यो काम विगोवने ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो पुष्पं।

नैवेद्य षट रस पूर वांछित, भूख वेदन के हरा । सुभग थाल मिलाय करले, यजन को मनवच करा ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो नैवेद्य ।

दीप मणि मय नाश तम के ज्योति से परकाशिया । धरि कनक थाली लेय कर में पाप सब के टालिया ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सवंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो दीप ।

धूप दस विधि गंध जुत ले, वस्तु मेल बनावही । फिर अगनि खेवन पूजने को, काय मन वच लावही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो धूप ।

श्रीफल विदाम सु लोंग खारक, आदि शुभ फल लाइये । तिन तें जजों जिन देव के पद, मोक्ष फल मन भाइये ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदह क्षेत्र संबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो फल ॥८॥

जल चंदनाक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप फला सही । ले आठ ही शुध द्रव्य सुन्दर, अरघ कर निज कर ठही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सवधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

छंद–अडिल्ल—

खंड धातकी पूरव मेरु सु जानिये, क्षेत्र विदेह विषैं चव जिनवर मानिये ।
तिनके पद हों जजों द्रव्य वसु लायके, मन वच काया तीन लाय थुति गायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संवधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद–अडिल्ल—

संजयंत जिन खंड धातकी में सही, रहे शाश्वते नाम भविक तारक मही ।

ते हौं पूजों मन वच द्रव्य चढाय के, करो मोहि शिव देव दीन सम भाय के ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि शाश्वत सजयत जिनाय अर्घम् ॥१॥

खंड धातकी पूरब मेरु तहां सही, क्षेत्र विदेह स्वयंप्रभ जिन की है मही ।
ते हौं पूजों मन वच काय लगाय के, करो मोहि शिव देव, दीन सम भायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि शाश्वत स्वयप्रभ जिनाय अर्घम् ॥२॥

पूर्व धातकी खंड तहां जिन जानिये, ऋपभानन शुभ नाम शाश्वता मानिये ।
ते हौं पूजों मन वच काय लगाय के, करो मोहि शिव देव, दीन सम भायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबंधि शाश्वत ऋपभानन जिनाय अर्घम् ॥३॥

पूर्व धातकी मेरु तहां जिन अवतरा, अनंत वीर्य तिन नाम शाश्वते है खरा ।
ते हौं पूजों मन वच काय लगाय के, करो मोहि शिव देव, दीन सम भायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि शाश्वत अनंतवीर्य जिनाय अर्घं ॥४॥

खंड धातकी पूरब दिशा बखानिये, ताको वर्णन भिन्न भिन्न ही मानिये ।
तिन पद सुर हरि पूज पुण्य बहुतो लहैं, मैं भी तिन पद जजों फलै सब अघ दहै ।

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि शाश्वत जिनेभ्यो महार्घं ॥५॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–खंड धातकी में शाश्वते, तिष्ठै चव जिन सोय । नाम माल तिन की जपे, मिटे पाप सुख होय ॥१॥

छन्द–वेसरी

जिन संजातक देव बनावा, तिन पद जजे मिटे भव दावा । तातैं मैं पूजों चित लाई, भव भव मोकों भक्ति सदाई ॥२॥
देव स्वयं प्रभ सब हितकारी, मेट हमारी अघ–बुधि सारी । तुम शरणै आये सुख होई, भव की बाधा रहै न कोई ॥३॥
ऋपभानन जिनको ऋपि ध्यावै, ता फल अपने कर्म नशावै । ते जिन मोको होय सहाई, मो मन में अब ऐसी आई ॥४॥

अनंत वीर्य जिन अनंत सुज्ञानी, किये कर्म सब अपने हानी। औरन को शिव दे अघ तोरैं, ते जिन करुणा कर मो ओरैं ॥५॥
ये ही चारों जिन अघ हारी, छेदो मो फेरो संसारी। भो जिन ! और न वांच्छा कोई, भव भव शरण तिहारी होई ॥६॥
तुम शरणौं विन जग भरमायो, अब शुभ पुण्य उदय मो आयो। तार देव जिन विनती मेरी, मैं अब शरण देव जिन केरी ॥७॥
ऐसे मैं अति मन वच काई, पूजों पल पल शीश नमाई। तिन पद सुर खग पूज करावै, जय जय जय जिन धुनि मुख गावै ॥८॥
इत्यादिक शोभा किम कहिये, बुध थोरी गुण पार न पइये। देव विरद तारक है तेरो, मेट मेट जिन मो भव फेरो ॥९॥

दोहा—चार शाश्वते जिन सदा, खंड धातकी मांय। पूरब दिश में मैं जजों, आठों द्रव्य चढाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सवधि शाश्वत चतुर्जिनेभ्यो अर्घं

धातकीखंड पूर्व दिशा में स्थित नील पर्वत संबंधी जिन पूजा

दोहा—खंड धातकी नील गिरि, पूरब दिशा अनूप। ता में जिन मन्दिर अचल, जजे मिटै भव धूप ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सवधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सवधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ. ठ.।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सवधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ, सन्निधिकरणम्।

छंद—अडिल्ल

निरमल जल शुभ कनक भारिका में भरो, भक्ति भाव करि शुद्ध तीन जोगन करों।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सवधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥१॥

चंदन सुभग मिलाय नीर तें घसि लियो, कनक पियाले लाय अती हरषो हियो।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संवधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदन ॥२॥

अक्षत उज्वल धोय शुद्ध करवाय के, खंड विवर्जित कनक थाल भरवाय के।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥३॥

नाना वरण सु फूल सुगंध मिलाय के, लायो उर विधि सार मदन भय खायके।
खंड धातकी पूरव दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प॥४॥

खाजा फीणी घेवर नाना रस मई, इन आदिक नैवेद्य लेय आयो सही।
खंड धातकी पूरव दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं॥५॥

दीपक तम के नाश करन हारे सही, रतन मई ले हाथ हरष आयो सही।
खंड धातकी पूरव दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीप॥६॥

दश विधि धूप मिलाय गंधकारी सही, अगनि मांहि धर खेऊं फल सब अघ दही।
खंड धातकी पूरव दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूप॥७॥

फल ले लोंग विदाम सुपारी श्री फला, इन आदिक शुभ और अनेक जु निरमला।
खंड धातकी पूरव दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फल॥८॥

जल चंदन अच्छत पुष्प चरू लाइये, दीप धूप फल मेलि अर्घ उपजाइये॥
खंड धातकी पूरव दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं॥९॥

॥-प्रत्येक अर्घ॥

सोरठा—नील कुलाचल कूठ, तिनमें उतपति जे हरै। होय सिद्ध अघ छूट, तिन पद पूजों अर्घ सों॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबधि सिद्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥१॥

नीलाचल पे देख, कूटन के वासीन को । तिन गति हर स्वयमेव, मोक्ष भये जिन पद नमों ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबंधि सिद्ध कूट वासी देव गतिछेदक अर्घम् ॥२॥

छंद–अडिल्ल—

नीलाचल की दक्षिण दिश को जानिये, भोग भूमि उत्कृष्ट सुखों की खानिये ।
ताकी उतपति छेद सिद्ध पद को गये, तिन पद अर्घ चढाय सबै ही अघ दहे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा उत्कृष्ट भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥३॥

खंड धातकी मेरु पूर्व दिश को सही, तहां समंधी वृक्ष दोय मणि मय कही ।
जंबू शाल मली शुभ तिन के नाम हैं, तिन पे जिन के थान जजों सुख धाम है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा जबू शाल्मली वृक्ष संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥४॥

इनही वृक्षन पे सुर तिष्ठत है सही, नाना विधि सुख लहै महा पुण्य की मही ।
तिन की गति को छेद भये जिनरायजी, अर्घ जजों तिन ही के पद थुति लायजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा जंबू शाल्मली वृक्ष सबधि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥५॥

खंड धातकी पूरब दिश को है सही, रम्यक नामा क्षेत्र अधिक शोभा मही ।
तहां भोग भू जान यहां सुख कारनी, इन गति छेद जजों थुति है अघ हारनी ॥

ॐ ही धातकी खड पूर्व दिशा रम्यक क्षेत्र सबधि मध्यम भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६॥

इस ही धरा मध्य नाभी गिरि है सही, तुंग ढोल आकार गोल ताकी मही ।
या में उतपति छेद भये शिव रायजी, तिनके पद ले अर्घ जजों मन लायजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नाभि गिर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥७॥

॥ रुक्मि कुलाचल स्थित जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीतिका–खंड धात सु पूर्वदिश में, रुक्मिनाम कुलाचला । तिस ऊपरै जिन थान सुंदर, देखि सुर खग मन चला ।
ते बिंब पूजें भक्ति सेती, भावना हम यहां करें । करि थापना आह्वान जुत ही, पूज अपने दुख हरें ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा रुक्मिनाम कुलाचलस्थित जिन चैत्यालयस्थजिन अत्रावतर २ आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा रुक्मिनाम कुलाचलस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा रुक्मिनाम कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ अत्र मम सन्निधौ भव भव, सन्निधिकरणम् ।

छंद अडिल्ल—

निरमल नीर सु लाय शुद्ध भावन सही, कनकझारिका धार भक्ति उरमें लही ।
खंड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन सुभग सुगंध नीर घसि लाइके, नाना विधि थुति कंठ कीन चित लायके ।
खंड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशरुक्मिकुलाचलस्थित जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत कुन्द समान अखंडित आन है, लायो नख शिख शुद्ध अखय पद मान है ।
खंड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम ॥ ३ ॥

नाना वरण सुगंध फूल शोभा मई, लायो पूजन काज हरष उरमें सही ।
खण्ड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिन पे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा रुक्मिकुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

षटरस जुत नैवेद्य तुरत कर लाइयो, खाजा फीणी और अधिक करवाइयो ।
खण्ड धातकी पूरब दिश रुक्मिगिरा, तिनपे जो जिन थान जजो मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय तमहारक ले आइयो, चाहत ज्ञान उद्योत देव गुण गाइयो ।
खण्ड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जोजिन थान जजौ मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप सुगंध कपूर आदि मिलवायके, खेवन आयो जिन पद आगे भायके।
खण्ड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी सुखमई, इन आदिक फल लेय चरन आयो सही।
खण्ड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजो मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अन्तत पुष्प चरु दीप ही, धूप फला इन आदि अरघ ठानी मही।
खण्ड धात की पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिंनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि–दिश खण्ड धातकी पूर्वजोय, तहां रुक्मी परवत शीश होय। जिन मंदिरमें जिन विंब जान, हमपूजें तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मिपर्वत संबन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

पूरव दिश धातकि खंड थान, रुक्मी गिरि पै शुभ कूट जान। तिस थानक उतपति छेद सोय, ते पूजों मन वच काय जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी कुलाचल सवधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥२॥

दिश पूर्व धातकी खंड जान, तहँ पर्वत रुक्मी नाम मान। तिन कूटन वासी देव सोय, तिस गति छेदक पूजों सु जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी कुलाचल सबंधि कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥३॥

दिश पूर्व धातकी खंड जान, रुक्मी गिरि को शुभ कुन्ड मान। ता के मधि उतपति छेद सोय, तिनके पद पूजों भक्त होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी कुलाचल संवधि महा पुडरीक ह्रद उतपति छेदक अर्घम् ॥४॥

पूरव दिश धातकि मेरु जोय, तहाँ रुक्मी गिरि को कमल सोय। ताकी गति उतपति छेद सोय, तिनके पद पूजों अर्घ जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा रुक्मो कुलाचल सवधि महा पुन्डरीक ह्रद स्थित कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥५॥

पूरव सु धातकी खंड जोय, रुक्मी गिरि उतपति सरित सोय। इन में उतपति हर देव जान, तिनके पद पूजों अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी गिरि संबंधि नदी उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६॥

इसही रुक्मी गिरि कुंड सोय, तहँ कमल निवासी देव होय। याकी उतपति के छेद जोय, तिनके पद पूजें हर्ष होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा रुक्मी गिरि सवधि कमल वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥७॥

रुक्मी गिरि धातकि खंड सार, पूरव दिश हृद ताको सुधार। तहँ रहैं देवि परिवार देव, तिन गति हरि पूजों धार सेव ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी गिरि सवधि कमल निवासी देवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥८॥

चौपाई–खंड धातकी पूरब दिशा, चेत्र हिरएय रहै शुभ लसा। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा सवधि हैरएयवत चेत्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥९॥

इसही चेत्र मध्य के मांहि, नाभी गिरि शुभ पर्वत ठाहिं। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूव दिशा हिरएयवत चेत्र सवधि नाभिगिरि छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१०॥

इसही चेत्र हिरएय जु मांहि, कल्प वृक्ष दश विधि के ठाहिं। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातको खड पूर्व दिशा हिरएयवत चेत्र भोगभूमि सबंधि दश प्रकार कल्प वृक्ष गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥११॥

चेत्र हिरएय आर्य शुभ सार, तिनमें मनुप पशू बहुधार। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा हिरएयवत चेत्र सवधि मनुष्य पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१२॥

छंद–अडिल्ल—
खंड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, चेत्र हिरएय सु सार और शोभा धरा।
इनमें उतपति देव नरा तिरयग सही, तिन पद छेदक देव जजों पुण्य की मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मीगिरि तथा हिरएयवत चेत्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१३॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–खंड धातकी पूर्व दिश, रुक्मी गिरि शुभ थान। तिनपे जिन मन्दिर सुभग, मैं पूजों धरि ध्यान ॥१॥

छन्द–वेसरी

इसही गिरि पूजन सुर आवै, नाना खग बहु भक्ति उपावै। मधुरी ध्वनि गावैं स्वर लाई, नृत्य करै बहु युक्ति उपाई ॥२॥
तार तार मुख तें इम भाखै, आप दीनता उर में राखै। इस विधि करि खग तो निज जाई, अपने करे सफल भव भाई ॥३॥

हम जाने की शक्ती नाहीं, भक्ति भाव पूजन को चाही। तातें यह विनती है मेरी, काटो देव जगत की फेरी ॥४॥
मैं अति दीन दीनपति देवा, भव भव मो को हो प्रभु सेवा। और न वांच्छा मेरे स्वामी, तार मोहि अब अन्तरयामी ॥५॥
तुम बिन और देव सब रागी, तातें मैं तुम पूजन लागी। तुमको पूज भये पशु देवा, मैं इम जान करों तुम सेवा ॥६॥

दोहा—

शक्ति हीन जाणों नहीं, भक्ति प्रेरणा पाय। यातें इसही थान ते, जजों महा थुति लाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा रुक्मी नाम कुलाचल सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् (इति)

॥ धातकी खंड की पूर्व दिशा में शिखरी पर्वत संबंधि पूजा ॥

दोहा—

खंड धातकी पूर्व दिश, शिखरी पर्वत जान। ताके ऊपर जिन भवन, थापि जजों इह थान ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत सबधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत सबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ स्थापनम।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत संबधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद–अडिल्ल—

निरमल नीर सु लाय सुभग पातर सही, भक्ति भाव करि पूजन की शुभ विधि ठही ॥
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥१॥

चंदन घसि शुभ नीर भाव शुचि लाइये, कनक झारिका धार घने गुण गाइये।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदन ॥२।

अक्षत लाय अखंड अखै पद कारणै, भावन भावन सार, कुमति के कारने।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥

नाना वरण सुगन्ध फूल सुर वृक्षके, कामनाशके काज लाय शुभ धरम के।

खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥

घनरस जुत नैवेद्य तुरत करवायके, पातर धर उर भक्ति भाव चित लायके ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥

दीपक मणिमय सार हार तमके सही, कनकथाल में लाय भक्ति मुखतें रही ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥

दशधा गंध मिलाय धूप करके भली, ले आयो शुभ भाव वास चहुँदिश चली ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी जानिये, इन आदिक फल और घने ले आनिये ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥

जल चदन अक्षत पुष्प चरु दीप हो, धूप फला इन आदि अर्घ आगे ठही ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन चन्द्र, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥

।
हरा ॥
:थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल—

पूर्व धातकी खण्ड नाम शिखरी सई, सुन्दर वरण सुथान महा शोभा मई।
इनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मद टार है॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा शिखरी पर्वसम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम्॥ १॥

इस ही गिरि की कूट तुंग शुभ जानियें, सुखदायक है नयनन को यह थानिये।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्री धातकीखड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसबधि सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ २॥

खण्डधातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिनमें जो शुभ कुंड नीरसे है भरा।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसम्बन्धि ह्रद उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ३॥

पूरब दिश, शिखरी गिर धातकि, खण्ड में, ह्रदमांही जो कमल नीर परखण्ड में।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसम्बन्धि ह्रदकमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम॥ ४॥

खण्ड धातकी पूरबदिश को जानिये, शिखरी गिरि तें उतपति सरिता मानिये।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा शिखरी गिरिसम्बन्धि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ५॥

इस ही शिखरी गिरि की कमल निवासिनी, देवी औ परिवार दुःख की नाशिनी।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा शिखरीगिरिसम्बन्धि देवी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ६॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—

खण्ड धातकी पूर्वदिश, शिखरी गिरि सुखदाय। तापे जिनथल को जजों, मन वच काय लगाय॥

॥ छंद वेसरी ॥

इस गिरि धाम कह्यो जिन केरो, तुंग घनो अरु है बहु फेरो। सुर खगही तहँ वंदन जावे, नाना थुति कर अर्घ चढावे ॥ २ ॥
करौं गान मधुरी ध्वनि सोई, नटै नाट उर भक्ति सँजोई। अपने जनम सफल करवावै, जय जय जय जय घोष करावे ॥ ३ ॥
करै वीनती सुर खग आई, तार तार मोको जिनराई। या भव गहन वनी के माँही, तुम बिन कोई शरणो नाहीं ॥ ४ ॥
तुम शरणै आवे जो जीवा, सो जिय पावे सुसुख सदीवा। भो जिन तुम देवन के देवा, हरो पाप बकसो निज सेवा ॥ ५ ॥
सफल जीव ने जो तन पायो, श्रीजिनको नित अंग गमायो। ऐसे भक्तिधार सुर जावे, ताफल बहु विधि पुण्य उपावे ॥ ६ ॥

सोरठा— भक्तिवान तहँ जाय, मैं तो सब विधि दीन हूँ। तातैं इस ही ठाय, पूजन भावन सों करौं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खण्डके पूर्वदिशा में स्थित ऐरावतक्षेत्र पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

ऐरावत शुभ क्षेत्र धातकी खण्ड है, शोहै जिनवर थान पुण्य परचण्ड है।
जाने की नहि शक्ति भाव पूजन भयो, तातैं इसही जगह थापि पूजन ठयो ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ट तिष्ठ। ठ ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चोपई—निरमल नीर भाव शुभ लाय, कनकपात्र में ले शुध भाय। खण्ड धात पूरव दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन घसि कर होय, पावन नीर मिलाया सोय। खण्ड धात पूरव दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल खण्ड न कोय, लायो कर शुध हर्षित होय। खण्डधात पूरव दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

सुरतरु जैसे फूल सुलाय, गंध रंग तिनमें अधिकाय। खण्ड धात पूरव दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नानारस नैवेद्य बनाय, सुभगपात्र में धर उमगाय । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिनथल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिश ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई बनवाय, कनकथाल में सो धरवाय । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिश ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप अगर की दश विधि कही, सो में लायो हुलसत मही । खण्ड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग विदाम सुजान, इन आदिक शुभ फल ले आन । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अच्छत अरु फूल, दीप धूप फल चरु अनुकूल । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

खंड धातकी पूरब दिशा, ऐरावत खेतर शुभ लसा । सिद्ध क्षेत्र तहँके सब जोय, तिनके अर्घ जजों सुख होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिश ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ ॥ १ ॥

इसही ऐरावत थल माहिं, विजयारध परवत शुभ ठाहिं । ताके ऊपर श्रीजिन गेह, मो मैं पूजों कर बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध स्थित चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खण्ड धात पूरब दिशि जान, ऐरावत खेतर शुभ मान । है उपसागर तामें मही, ता गति छेद नमों इस ठहीं ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही ऐरावत दधि माहिं, देव रहैं मगधादिक ठाहिं । तिन गति छेद भये शिव राय, तिन पद पूजों अर्घ मिलाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इस ही ऐरावत के माहिं, नगर अयोध्या दिक बहु ठाहि । तिन गति छेद भये शिवराय, तिन पद पूजों अर्घ मिलाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अयोध्यानगरी,गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही ऐरावत का सही, विजयारध गिरि उत्तम मही । इसमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजो मद खोय ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इस ही ऐरावत के माहिं, विजयारध के कूट बताहिं । इसमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

खड धातकी पूरब दिशा, ऐरावत विजयारध लसा । ताके कूट निवासी देव, ता गति छेद जजों करि सेव ॥

ॐ ह्रीं धातकीखडपूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध स्थित देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

धात खण्ड ऐरावत माहिं, पूरब दिश तहँ नन्दी पाहिं । तिन गति छेद भये भवपार, तिनको जजों अर्घ शिरधार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि नदी गतिच्छेनक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

इस ही ऐरावत थल माहिं, पंचमलेच्छ खण्ड समझाहिं । तिनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि पंचम्लेच्छ खड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

खण्ड धात ऐरावत जान, पूरब दिश वृषभाचल मान । ता में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।'

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि वृषभाचलगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इस ही ऐरावत की सही, आरजखण्ड महा शुभ मही । तामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि आर्यखडगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

इस ही आरज खण्ड सु माहिं, जिन चौबीस हुए सुख पाहिं । तिनके पद में अरघ चढाय, पूजत हौं मन वच तन काय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इस ऐरावत खेतर माहिं, होनहार चौबीसी पाहि । तिन जिन बीस चार अवलोय, पूजों मन वच अरघ सजोय ।

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धिअनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

ऐरावत इसही थल मांहि, वर्तमान जिनके सुखदाहि । तिनके पद वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ उतारों भक्ति बढाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

इस ऐरावत खेतर माहिं, तीनों चौबीसी सुख दाहि। तिनके पद शुभ अर्घ चढाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधि भूत भविष्यत वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छंद अडिल्ल— खण्ड धातकी पूरब दिशको जानिये, ऐरावत शुभ क्षेत्र तहां सुख थानिये।
तामें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजों अर्घ धार कर थारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खण्ड धातकी पूर्वदिश, ऐरावत शुभ थान। धाम तहां जिन देवके, जजों अर्घ ले आन ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

तिनके पूजे शिवसुख होई, अधिक और महिमा कहा जोई। पूजै सुर नर खग सुख काजे, देख विभूति देव सब लाजे ॥ १ ॥
तुङ्ग घने शुभ है आकारो, जिनको लखे मिटै अघ भारो। पुण्य विना उस थल किम जइये, तातें यहां ही भावन भइये ॥ ३ ॥
अष्टद्रव्य ले पूजा कीनी, भक्ति विषै निज परिणति दीनी। अरघ उतारों अघ क्षय काजे, ता फल पूरब कृत अघ भाजे ॥४॥
करों वीनती भो जिन देवा, आय लई तुम पद की सेवा। तुम शरणै बिन काल गमायो, सो सब विरथ गयो अघ पायो ॥५॥
अब काउ पुण्य योग तें देवा, आय लई तुम पद की सेवा। मो को तार वैन इम गाये, इत्यादिक करि पुण्य उपाये ॥६॥

सोरठ— पूजे जिनके पाय, अष्ट द्रव्य मिलवाय के। जय जय जय जिनराय, नमों चरन शिव कारणै ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जयमालाऽर्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खंड पश्चिमदिशा अचल मेरु सम्बन्धी पूजा ॥

चौपई—खण्ड धातकी पश्चिम मेरु क्षेत्र कुलाचल आदिक हेर। जहां तहां जिन थानक होय, ते हों जजों शुद्ध मन होय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा सबंधि मेर्वादिचैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिमदिशासबंधि मेर्वादि चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिमदिशासंबंधि मेरुवादि चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निहितौ सन्निधिकरणम।

छंद अडिल्ल—

निरमल नीर सु भाय लाय सुख कारजी, कनक पात्र धरि भक्ति भाव बहु धारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन घसिहों निर्मल नीर मिलाय के, कनक पात्र ले धार भाय मन लाय के।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल खंड विना शुभ लाइयो, कनक थाल में धाल घने गुण गाइयो।
खंड धात की पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत० ॥ ३ ॥

फूल सुगंध मनोज्ञ वरन नाना सही, सो ले अपने हाथ यजन मन सो ठही।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशाया मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प० ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाये सुख करा, खाजा फीणी आदि लाय हों सुख करा।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं० ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई शुभ तम के हारजी, कनक थाल भरि आने कर थुति सारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशाया मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीप० ॥ ६ ॥

दशधा धूप मिलाय गंध बहुकारजी, खेऊं अगनि मझार पाप क्षय कारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषैं, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा संबंधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूप० ॥ ७ ॥

तीन
लोक

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी खारका, इन आदिक फल सारमुक्ति कर तारका।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, हैं जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा संबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलं० ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत पुष्पं चरु दीप ही, धूप फलादिक ठान अरघ करमें ठही।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा सबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ६ ॥

अष्ट द्रव्य करि अर्घ बनाया सारजी, पूजन को उमगाय बना मन हारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा सबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यों महार्घं ॥ १० ॥

जयमाला

दोहा— खंड धात पश्चिम दिशा, मेरादिक जिन थान। ते हों पूजों भाव धरि, जानत केवलज्ञान ॥ १ ॥

छंद—वेसरी

पश्चिम दिश के धातकि माही, जिन थानक जिस तिस थल माहीं। ते हों पूजों मन वच काई, ताके पूज बने शिव पाई ॥ २ ॥
शक्ति वहां जाने की नाहीं, प्रेरी भक्ति हिये उमगाही। ता वसि इस ही थल तें भाई, यजन आठ विधि अर्घ चढाई ॥ ३ ॥
ताकूं पूजन सुर सब आवैं, खग पूजे बहु पुण्य उपावैं। दीन होय मुखतें श्रुति बोले, लगे आपने अघ सब धोले ॥ ४ ॥
करैं नृत्य मधुरी धुनि गावैं, नाना विधि संगीत बजावैं। अपनो जनम सफल ता मानै, ज्यों ज्यों जिनकी भक्ति आनै ॥ ५ ॥
कह मुखसे श्री जिनवर देवा, भव भव माहिं देह तो सेवा। तेरी सेवा है सुख दानी, यह कहते हैं मुनिवर ज्ञानी ॥ ६ ॥

दोहा— इत्यादिक सुर खग नरा, श्रुति कर पूज सिधाय। हमहू इस थानक थकी, पूज भावना भाय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिमदिशा संबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं ॥ इति० ॥

॥ धातकी खंड के पश्चिम में स्थित भरत क्षेत्र पूजा ॥

दोहा— खंड धात पश्चिम दिशा, भरत क्षेत्र शुभ थान। तहां गेह जिन देव के, जजों थाप इस थान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सबंधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्। आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ, तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ संन्निधिकरणम्।

छंद अडिल्ल—

क्षीरोदधि को निरमल नीर सु लाइयो, नाना विधि जिन देव तने गुण गाइयो।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं॰ ॥ १ ॥

चंदन गंध अपार सु घस करि लाइयो, नाना विधि जिन देव तने गुण गाइयो।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं॰ ॥ २ ॥

खंड विवर्जित अक्षत उज्वल जानिये, शुद्ध नीर से धोय आप कर आनिये।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं॰ ॥ ३ ॥

फूल सुगंध अपार वरन नाना मई, मानो सुर तरु तने अधिक शोभा लई।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्रसंबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं॰ ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बने सुख दायजी, सो मैं कनक तने पातर धर लायजी।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुन्य बहु पावना॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं॰ ॥ ५ ॥

दीपक तम हर लाय भक्ति मन में धरी, लेय आरती आप वचन मन तन करी।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुन्य बहु पावना॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपं॰ ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगंध अगर आदिक करी, वह्नी शुभ पर जाल लेय तामें धरी ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशासम्बन्धि भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग बिदाम मिलाइयो, इन आदिक फल और लेय उमगाइयो ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशासम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु दीप ही, धूप फलादिक ठान अरघ करमें ठही ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—पश्चिम धात खण्ड के माहिं, भरत विषै जिन थानक पाहिं । तिनको अष्ट दरब मिलवाय, पूजत हो नाना गुण पाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

खंड धातकी पश्चिम जान, है वैताढ खगा चल मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि वैताढ गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खंड धातकी पश्चिम दिशा, भरत अयोध्या नगरी लसा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि अयोध्यानगरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

खंड धातकी पश्चिम सार, सागर रक्षक सुर वल धार । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि सागर रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इस ही गिरि वैताढ मझार, कूट कहे सुन्दर आकार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि वैताढ कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इसही खग गिरि कूंटन शीश, देव बसे हैं, विसवा वीस । तिनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही विजयारध पे जान, सिद्धकूट पे जिन थल मान । तिनमें बिंब विराजै सौय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्धस्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

खंड धात पश्चिमदिशि माहिं, म्लेच्छ भरत के पंच बताहिं । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिम दिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि पंच म्लेच्छ खंड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

खंड धात पश्चिम दिशि जान, तामें वृषभाचल गिरि मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि वृषभाचलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

इसही भरतक्षेत्र के माहिं, सिद्ध क्षेत्र पुण्य की ठाहिं । तिनमें मन वच काय लगाय, अर्घ चढाऊं भक्ति उपाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि सिद्ध क्षेत्रभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

पश्चिमधात भरत के माहिं, गति हर सिद्ध भये दुख नाहिं । और सिद्ध क्षेत्र जिन थान, इन पद अर्घ जजों धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनेभ्यो महार्घम् ॥ ११ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— पश्चिम धात सु खंड में भरत थान जिन धाम । तिनमें पूजों अर्घ धरि, चहत मोक्ष का ठाम ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

खंड दूसरा जानो भाई, पश्चिम दिश में भरत उपाही । तामें जिनके धाम अनूपा, जजों मिटै सब अघ की धूपा ॥ २ ॥

जाने की मो शक्ति नाहीं, इस ही थल में भावन भाई । करों पूज मेरे शुभ काजे, आठ दरब श्री जिनराजे ॥ ३ ॥

करों भक्ति जो जिनवर देवा, भव भव मोहि देव निज सेवा । भक्ति किये तेरी शिव जावे, भजे देव जिन सुर उपजावे ॥४॥

या भव गहन वनी के माहीं, क्रोधादिक जिय क्रूर रहाहीं । व्यसन सात भीलन की वस्ती, तिन आगे सब का बल नस्ती ॥५॥

ऐसी अटवी में हम आये, भो जिन बहुविधि संकट पाये । सो दुख तुम बिन कौन निवारे, मै अनाथ हूँ शरण तिहारे ॥६॥

दोहा— ऐसी विनती करत ही, उपजत पुण्य सु आय । नमों चरण को शीश मैं, जय जय जय जिनराय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जयमालाऽर्घम् ॥ इति ॥

॥ हिमवान पर्वत सम्बन्धी जिनालय पूजा ॥

दोहा—खंड धात पश्चिम दिशा, गिरि हिमवन शुभ जान । तिस शिर जिन मन्दिर सही, जजों थापि थुति आन ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवन कुलाचलसंबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवन कुलाचलसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ ।

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवन कुलाचल संबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निविकरणम् ।

चौपई—नीर मनोहर झारी धरों, ले अपने कर थुति अनुसरों । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥१॥

चंदन भलो गंध जुत सार, कनक तने पातर में धार । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवतपर्वत सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल स्वच्छ अपार, मुक्ताफल से श्वेत सुधार । धात सु पश्चिम हिमवन सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

नाना वरण फूल शुभ सार, ले आये अति ही सुखकार । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवतपर्वत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नूतन रसमयकर नैवेद, लायो कर उरको निरखेद । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई सुखदाय, लायो तम नाशन हित भाय । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम ॥ ६ ॥

धूप सुगंध लाय दशजात, अगनि विषै डारों उमगात । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपार, इन आदिक बहु फल करधार । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत चरु लेय, फूल दीप फल धूप मिलेय। धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—याहि हिमाचल ऊपर सही, कूट कहे अति शोभा मई। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

इनही कूटन पे सुर रहैं, अपनी शुभ परिणति फल लहैं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि कूट निवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि हिमाचल पे इकजान, कुंड पदम नामा सुख खान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा हिमवतपर्वत सम्बन्धि पद्महृद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इस ही पदम कुंड के माहिं, है शुभ कमल शोभ अधिकाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वत पद्महृदसम्बन्धि कमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

या ही हिमवत कुंड जु माहि, कमल वासिनी देवी ठाहिं। ता गति छेद भये सिध सोय, तिनके पद पूजौं मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वत पद्महृद सम्बन्धि कमलनिवासी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही हिमवन गिरितैं सार, नन्दी निकली जल की धार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वत सम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

खंड धात पश्चिम दिश जान, हिमवत क्षेत्र सुशोभा थान। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवतक्षेत्र सम्बन्धि उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

छंद अडिल्ल—
खंड धातकी पश्चिम दिशि हिमवन सही, तामें बहु विधि रचना अति ही बन रही।
तिनमें उतपति छेद सिद्ध पद पाय है, तिन पद अर्घ चढाये उर मद जाय है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवन पर्वत उत्पत्तिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—— परिचम गिरि हिमवन शिखर, खंड धातकी मांहिं । तहां गेह जिन देवके, जजों भक्ति मन लाय ॥ १ ॥

छंद पद्धरि—मैं शक्ति हीन बहु देव नाथ, वहां जाना नहिं मेरे जु हाथ । धनि जीवन को तहँ पूज जाय, मैं इसही थलतें भक्तिभाय॥२॥
भो देवां पति जिन देव नाथ, मैं अरज करूं हूँ जोरि हाथ । अति दीन मोहि जानों सुदेव, मैं जाचों भव भव आप सेव॥३॥
तुम सेवा करें मुनिन्द आय, जिन सेवा पातक दूर जाय । हरि सुर पूजें बहु भक्ति जोय, मैं हूँ पूजों इक चित्त होय ॥४॥
मैं किये पाप बहुते सुजान, ताको फल दुखदा अब पिछान । तातें भो जिनवर अरज येह, दुख नाहिं मोहि हो करो जेह ।५।
तुम विना और नहिं दीन पाल, मैं दीन घनों बुध को जु बाल । तुम करुणासागर भो जिनेश, मेरो अति ही प्रभु दीन भेष ६
इम जान तार देवाधि देव, मैं आठ दरब ले करो सेव । तुम नाम धार ते सुगति होय, तो भक्ति मोहि दे नमों तोय ॥

दोहा—— ऐसे थुति कर भाव जुत, खंड धात की थान । परिचम दिश जिन देव थल, जजों 'टेक' उर आन ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड परिचमदिशा हिमवान पर्वत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥

॥ धातकी खंडके पश्चिमदिशा में स्थित महा हिमवान गिरि पूजा ॥

चौपई—खंड धातकी पश्चिम दिशा, महा हिमवान कुलाचल लसा । ता पर हैं जिनवर के थान, तेह जजों थापि इस थान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

छंदपुअडिल्ल—— निरमल जल शुभ गंगादिक को लाइयो, कनकझारिका माहिं धार गुण गाइयो ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन महा सुगंध नीर घसि लाइयो, ताकी गंध लुभाय भ्रमर भरमाइयो ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उत्तम खंड-विना उज्वल सही, मुक्ताफल से शोभमान अखियन मही ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

सुर द्रुम से वर कुसुम लाय करपें लिया, नाना वरण अपार गंध जुत शोभया ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

षटरस पूरित तुरत ठान के चरु किया, कनकथाल में लेय हृदय हर्षित भया ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक मणि आकार महातम के हरा, लेय आरती आयो सुर शिव की धरा ।
पश्चिम धातकि खड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि जिनलायस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप सुगंध मिलाय महा सुखदायजी, लायो अग्निमझार खेवने भायजी ।
पश्चिमधातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग विदाम सुजानिये, इन आदिक फलसार भाव धरि मानिये ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत फूल चरु दीप ही, धूप फला वसु द्रव्य अर्घ तिनकी मही ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डपश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—याहि महा हिमवन गिरि शीश, कूट कहे सुन्दर जगदीश । तामें उतपति हर शिव होय, तिनपद अर्घ जजों मदखोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

इस ही कूटन के थल माहिं, देव रहै निज पुण्य वसाहिं । तिन गति छेद भये भव पार, ताके पद पूजों थुति धार ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि महा हिमवन गिरि माहिं,कुंड बन्यो तहँ बहु जल पाहिं । ताकी उतपति हर शिव होय,तिन पद अर्घ जजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा महा हिमवान गिरि सवधि महापद्मह्रदगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही गिर ह्रद माहि सुजान, पुण्य कमल को सुन्दर पान । ताकी उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महाहिमवान सम्बन्धि कमलगतिछेदक जिनेभ्या अर्घम् ॥ ४ ॥

याही कमल किरणका मांहि, देवी रहै महा सुख पाहिं । याकी उतपति हरि शिव होय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि कमलवासिनी देवीगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही देवी के परिवार, देवी देव वसै अतिसार । तिन गति छेद भए भवपार, तिन पद अर्घ जजो थुति धार ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल कमलनिवासिनी देवी परिवार देवी देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ६ ॥

इस ही ह्रदतै जल की रासि, नदी दोय चली जिन भासि । तिनकी उतपति छेदक सोय,सो सिधपूजौं मनमद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि नदीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

छन्द अडिल्ल—

जघन भागभू महा हिमवन भरतसी । एक पल्य तिथि एक कोश तन सुख लसी ॥
ऐसे नर पशु होय कालका सरल है । तिन गतिछेदक देव पूजतें अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान दक्षिण दिशा जघन्य भोग भूमि नर पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

इसही जघन भोग भूमिही जानिये । परवत ढोलाकार नाभि गिर मानिये ॥
याकी गति हरि देव भए सिध सोय है । तिनके पद मैं जजों हरण मन होय है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान पर्वत दक्षिण दिशा जघन्य भोग भूमि नाभि गिर नाम पर्वत उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

आयु दाय पाल-काय ...

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम महाहिमवान उत्तर दिशा मध्यभोग भूमिगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

इसही के मधि आर्य क्षेत्र में जानिये । नाभि नाम गिर सोय ढोल सो मानिए ॥
याकी उतपति छेदक सो पूजों सही । आठ दरब से अरघ ठानि पूजों यहीं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा महा हिमवान उत्तर दिशि मध्य भोग भूमि वृषभाचल पर्वत उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ ११ ॥

ऐसे महा हिमवान संबंधी उतपति । भोग भूमि दोय जघन मध्य वरतें जिती ॥
इनमें उतपति छेद भए भव पार जी । तिनके पद में जजों महा सुखकार जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा महा हिमवान कुलाचल संबंधि जघन्य भोग भूमि, मध्य भोगभूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥ १२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–पश्चिम दिशा जु धातकी, महा हिमवन गिर सोय । ता पर जिन मंदिर सही, ते पूजों मद खोय ॥ १ ॥

छन्द वेसरी

खंड धातकी पश्चिम भाई, महाहिमवान कुलाचल थाई । लंबो तो क्षेतर सम जानो, ऊंचो चौडो अति सम मानों ॥ २
तामें कुण्ड कमल मधि जानो, देवी धाम फूल में मानों । और कमल बहु हैं जिम माहीं, तहँ देवी परिवार रहाहीं ॥ ३
नदी चलैं नीर विकराला, बडी धार अरु वेग कराला । ऊपर शिखर तने हैं कूटा, तिनमें देव रहें अब छूटा ॥ ४ ॥
और कूट इकपे जिनगेहा, तहँ सुर खग पूजैं कर नेहा । करैं भक्ति नाना गुण गावें, अपने आनम सुफल करावें ॥ ५
दोऊ पारस गिर के भाई, जघन्य मध्य आरज थल थाई । तिन दोऊ क्षेतर के माहीं, दोय नाभि गिर हैं सुख ठाहीं ।
इत्यादिक रचना बहु होई, जाने जिनको विरला कोई । गिरपै जो जिन भवन बतावे, ताको हमने शीश नवावें ॥ ७

दोहा–ऐसे जिन पूजकनिको, मन वच भावन भाय । "टेक" सांच जीवन जिको, जिनवर को गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा महा हिमवान कुलाचल संबंधि जिनपूजा जयमाला पूर्णार्घंम् (...

॥ धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधी पूजा ॥

चौपई—खण्ड धातकी पश्चिम दिशा, नाम निषध पर्वत शुभ लसा। तापे जिनके मंदिर सार, सो इहां थापि जजों सुख धार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चौपई—जल निर्मल गंगादिक लाय, तिन ढिंग लावत पाप पलाय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

चन्दन निरमल जल घसि लाय, मन वच तन करि भक्ति उपाय। खड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल शुद्ध अपार, मुक्ताफल से धर कर सार। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगंध वरन अधिकाय, तिनकी माल ठानिले आय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, खाजा फेनी आदिक लाय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तमहार, भरकर थाल लाय हितकार। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगंध मिलाय, अगनि विषै खेऊं मन लाय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बादाम सुपार, इन आदिक बहु फल ले सार। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

तीन लोक

जल चंदन अक्षत पुष्प सार, नैवेद दीप धूप फल धार। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

सोरठा—इसही गिरतैं सोय, नदी निकसती जल भरी। ता गति छेदक होय, तिन पद पूजों अर्घ सों ॥

ॐ धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

इसहि कुलाचल शीश, कुन्ड बन्यो जल राशि को। इन गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ सों ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

इनही द्रह विच सोय, कमल रतन मय सार है। तिन गति छेदक सोय, तिनके पद पूजों सही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही कमलनि माहिं, देव निवासी सुख करै। तिन गति हरि शिव ठाहिं, ते मैं पूजों अर्घ सों ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि कमल वासिनी देवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इसही निषध सुशीश, कूट कहे ऊरध घने। तिन गतिछेदक ईश, तिन पद अर्घ जजों सदा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा कुलाचल सम्बन्धि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इन कूटन के माहिं, देव रहै सुख से सदा। तिन गति छेदक माहिं, सो मैं पूजों अर्घ से ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

छंद—अडिल्ल —

पर्वत कुन्ड कमल सरिता श्री आदि जो, तिन गति छेदक देव जजों अघवाद जो।
इस गिर के शिर देव जिनेश्वरथान जी, ताको अर्घ जजों मन वच तन आन जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

चौपई—इसही निषध कुलाचल जान, भोग भूमि उत्कृष्ट हि मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि उत्कृष्ट भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—पश्चिम दिश धातकि धरा, निषध कुलाचल जान । तिसपै जे जिननाथ हैं, जजों तास थुति ठान ॥ १ ॥

वेसरी छन्द

इस थल जिन पूजन सुर आवैं, केई खगपति भी वहां जावें । भूमि गोचरी को गम नाहीं, सुरखग पूजैं हित उपजाहीं ॥२॥
जावत ही सब जय जय गावै, बार बार जिन शीश नवावें । कहैं तार भुवितैं जिनराई, तुम थुति भले पुण्यतें पाई ॥३॥
अब सो करो भ्रमण जग छूटै, उर अज्ञान भाव सब टूटै । तुमबिन और अज्ञानी देवा, तुम सर्वज्ञ जानि पद सेवा ॥४॥
तुम सो ज्ञान करो सुखकारी, तुम सब जीवन करुणा धारी । मो प्रति अति की दया उपावो, कहो कहा मैं कर्म खिपावों ॥
ऐसे विनती खग सुर ध्याने, धन्य २ अपनो भव मानें । हमतो शक्ति हीन हैं देवा, इस थल तें करि हों तुम सेवा ॥६॥

दोहा—जाने से सुकृत बने, सो अब औसर नाहिं । धर्म चाहि कारन भविक, भाव यहाँ ही माहि ॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घम् । इति

॥ चार गजदंतों के शिखर संबंधी पूजा ॥

चौपई—खंड धातकी पश्चिम दिशा, चव गजदंत मेरु तें लसा । तिनपै जिन मंदिर सुखदाय, ते सब थापि जजों लवलाया ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतर २ संवौषट् , आह्वानन ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ: ठः स्थापन । अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

छंद—अडिल्ल—

जे जल निरमल गंध मई सुख दायजी, कनक झारिका मेलि भाव थुति भायजी ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंते जिनथान जजों मद भानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चव गजदंत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन गंध अपार हेरकर लाइयो, निर्मल जलतें घिस्यो हरष बहु पाइयो ।
खड धातकी पश्चिम दिश को जानिये, गजदन्तें जिनथान जजों मद भानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु चवगजदंत संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन । २ ॥

अक्षत उज्ज्वल अखंड सुगन्ध मनोहरा, मुक्ताफल से सुभग हिये विच सुखकरा ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदन्तें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चवगजदंत संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगंध अपार वरन नाना सही, कल्प वृक्ष से जान सु निज के कर लही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु चतुर्गजदत सबंधि जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद तुरत कर लाइयो, खाजां फेनी मोदक और मिलाइयो ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं खड पश्चिम मेरु गजदत सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

रतन दीप तम धातक शोभा दाय है, धूम विना परकाश जास ले आय है ।
खड धातकी पश्चिम दिशि को जानियो, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा चतुर्गजदंत संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप मिलाय अगर आदिक सही, अगनि खेवने में उमगायो अधि कही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा चतुर्गजदंत संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्री फल लोंग बिदाम सुपारी सुखमई, और अनेक भले शुभ फल मैं ले सही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु चतुर्गजदत सबधि जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु सुखकरा, दीप धूप फल लेय अरघ शुभ अघ हरा ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत सबंधि जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दरव आठ ले उज्ज्वल सुखकारी सही, अरघ बनाये सार महाहित की मही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घम् ॥

चौपई—इनही गजदंतनपे सोय, कूट कहे सुख दायक सोय । इनमें उतपति छेदक जान, अर्घ जजों ताके पद आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत संबधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

ये ही कूट महा शुभ थान, तिनपै देव बसै जुत ज्ञान । जगति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत संबंधि कूट वासी देव गतिछेद जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि मेरु के चव दिशि सही, भद्र शाल वन उत्तम मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु संबंधि भद्रशालवन उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही मेरु सम्बन्धी सोय, उत्कृष्टी आरज भू जोय । यामें उतपति हरि शिव गये, तिन पद अर्घ जजों शिर नये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु संबधि उत्कृष्ट भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इनही भोग भूमि थल माहिं, जंबू शाल मली वृक्ष ठाहिं । तिनमें देव जिनेश्वर थान, ते हो जजों अर्घ जुत ज्ञान ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु जम्बुशाल्मली वृक्ष सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

येही जम्बुशाल्मली सोय, इनपे देव बसै सुख सोय । तिनकी उतपति छेदक जान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु जम्बुशाल्मली वृक्ष सम्बन्धि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

पूरब पश्चिम मेरु सुदिशा, जानि विदेह थान शुभ लसा । तिनमें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम पूरब पश्चिम विदेह सम्बन्धि उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

इनही क्षेत्र विदेह मझार, नदी कही महाजल धार । तिनकी उतपति छेदक सोय, अर्घ जजों तिनके पद जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिमदिशा विदेह क्षेत्र सम्बन्धि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इसही क्षेत्र विदेह मझार, और विभंगा नंदी सार । तिनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सम्बन्धि विभगा नद्या गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

क्षेत्र विदेह इसी थल माहिं, षोडश गिरि वक्षार सुठाहिं । तिनपै देव जिनेश्वर थान, अर्घ मिलाय जजों जिन स्वामि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

इनही गिरि वक्षार सु सही, कूट कहे सोहे शुभ मही । जा थल उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम विदेह वक्षार गिरि संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इनही कूटन के सिरदेव, वास करे नाना सुख सेव । तिन गति हर सो शिवपुर गये, तिन पद अर्घ जजों शिर नये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम विदेह वक्षार गिरि सबधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२ ॥

इसही क्षेत्र विदेह मझार, है उपसागर बहु जल धार । तिनमैं उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातक खण्ड पश्चिम विदेह सबंधि उपसमुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इनही क्षेत्र विदेह मझार, वृषभाचल पर्वत हितकार । तिनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय ॥

ॐ धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सबधि वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

धात खण्ड पश्चिम दिशि मांहि, क्षेत्र विदेह खगा चल ठांहि । या की उतपति छेदक सोय तिनपद अर्घ जजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सबधि विजयार्द्ध पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

इनही विजयारध के शीश, है जिनथान जगतपति ईश । तिनमैं विंब जिनेश्वर सोय, तिनपद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम विदेह सम्बन्धि विजयार्द्ध स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

इसही थांन विदेह मझार, देव रहै नाना थल सार । तिनकी उतपति छेदक होय, तिनकेपद पूजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड मेरु विदेह सम्बन्धि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

ये ही थान विदेह मझार, वरतै सदा देव अवसार । तिनपद अर्घ जजौं मन लाय, ता फल मोक्ष महा फल पाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

छन्द–अडिल्ल— ऐसे थान विषैं वहु जिनके थान हैं, नंदीपुर गिर दीप अरणि अनजान हैं।
इनमें उतपति छेद गये शिव थान हीं, तिनके पद जुग अर्घ जजौं सुख मान ही ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह संबंधि सर्व थान उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

जयमाला

दोहा–पश्चिम दिशि धातकि विषै, थल विदेह जिनराज। ते मैं पूजौं भाव सों, अर्घ लेय हित काज ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

खण्ड धातकी पश्चिम दिशा, चार लाख भूवास विशेषा। वलयाकार गोल है भाई इक्षाकार गोल इस थांई ॥ २ ॥
दक्षिण उत्तर यह गिर जानौ, इनतैं क्षेत्र विभाग बखानौं। इनपै दोय जिनेश्वर धाम, ते हीं जजों सुरग शिव कामा ॥३॥
तहाँ पश्चिम दिशि मैं सुख करि, क्षेत्र एक मधि मेरु सुसारे। तास विदेह क्षेत्र में भाई, रचनावनी कही जिनराई ॥४॥
नदी तालाव बावडी शिखरा, दीप उदधि नगरी सुख आगरा। तिनमें सदा देव जिनराजै, ते मैं नमों सुसुए शिव काजै ॥
तिनथल और जिनेश्वर थान।, जजों देव खग नर पुन्य वान। हम जाने की शक्ति नाहीं, जजों इहां तैं हम हित लाहिं ॥
दोहा–ऐसे पश्चिम धातकी, श्री जिन क्षेत्र विदेह। सो हम भावन भासके, जजों ठान वहु नेह ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम् ॥ इति सम्पूर्ण ॥

॥ पश्चिमदिशा नीलाचल संबंधी पूजा ॥

दोहा–धात खण्ड पश्चिम दिशा, नील कुलाचल सोय। तापैं जिनथानक निको, जजौं थाहि सुध होय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल जिन चैत्यालय अत्रावतरवतर संवौषट् आह्वानन।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधि करणं।
चौपई–निर्मल नीर महा सुख दाय, कनक झारिका में धरिलाय। पश्चिम धातकि नील, सुखरा तापैं जिन पूजों मैं वरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिनेभे जल ॥ १ ॥
चन्दन सुभग गन्द अधिकाय, सो मैं नीरथकी घसिलाय। पश्चिम धातकी नील सुधरा, तापैं जिन पूजों मैं वरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल धोय अपार, ले आयो नाना श्रुति धार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

नाना वरण सुगन्ध अपार, फूल माल लायो हित धार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, ता पें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

खाजा फेणी मोदक आदि, क्षुधारोग करने कूं वादि। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक तमके नाशक सही, कनक थाल भर लायो मही। पश्चिम धातकि नील सुखरा, तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दश विधि धूप गंध जुतसार, लेआयो उर हरष अपार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन मैं पूजौं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम अपार, और सुभग फल लायो सार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन पूजौं मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत शुभ सार, इन आदिक वसु द्रव्य अपार। पश्चिम धातकि नील सुखरा, तापें जिन मैं पूजौं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई–इसही नील कुलाचल तने, कूट महा अति सुन्दर बने। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजौं वसु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबधि कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

इनही कूटन पे सुर रहै, नाना भोग आपलों लहै। तिन गति छेद भए सिध होय, ते मैं पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संवधि कूट वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

इसही नील कुलाचल तनो, कुन्ड मनोज्ञराशि जल वनो। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सवधि कुंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

इनही कुंड विषै मणि मई, कमल कूल इक शोभा लही। ता गति छेद भए भवपार, ते सिध पूजों अर्घ सुधार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इसही कमल तने परिवार, और कमल जानों बहु सार। तिन गतिछेद गये शिव सोय, ते जिन पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि कुण्ड-कमल-परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इनही कमलनमे सुर सोय, वास करै देवी कुल जोय। या गतिछेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि कमल वासिनी देवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही नील कुलाचल थकी, नदी दोय चलै जल पकी। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों उर मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

इसही गिरकी उत्तर दिशा, रम्यक क्षेतर आरज लसा। ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों उर मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि रम्यक क्षेत्र जघन्य भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

याही रम्यक क्षेतर माहिं, नाभिनाम एक पर्वत थाहिं। यामें उतपति हर शिव गये, तिन पद हम पूजों शिर नये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबधि रम्यक क्षेत्र नाभिगिर पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छन्द–अडिल्ल——

ऐसे पश्चिम धातकि नील कुलाचला, नंदो कूट सु कुण्ड फूल आदिक भला।
इनमें उतपति छेद भये भव पार जी, तिनके थापन अर्घ जजों मद टार जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबधि गतिछेदक जिन चैत्यालय जिनेभ्या अर्घम ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–पचिश्म धातकि नीलगिर, तामें जिन को थान। तेमें पूजों भाव धरि, मन वच काया जान ॥ १ ॥

बेसरी–छन्द

पश्चिम धातकि खण्ड सुमाहीं, नील कुलाचल शुभ गिरि ठाहीं। तामें कनक रतन जडवायो, नाना और शोभ जुत गायो ॥
तामें जिनको थान अनूपा, देव खगा पूजें श्रुति रूपा। हमतो शक्ति रहित है भाई, उसथल जान शक्ति नहिं पाई ॥ २ ॥

तातें इह ही भावन भावें, पूजन कर बहु पुण्य उपावैं। भाग धन्य हम जानौ भाई, जिन पूजन की परिणति आई ॥ ४ ॥
करों वीनती भो जिन देवा, तार तार करिहूँ तुम सेवा। तुमही देव भवोदधितारी, तो मेरी उर करुणा धारी ॥ ५ ॥
तुमविन और न कोय सहाई, तुम विन कारण बंधु कहाई। मैं या भव में अति दुख पायो, भव भरमन तें तुम पद आयो ॥
दोहा—अब जो हम करने जसी, होय सु कीजे देव। 'टेक' हिये ऐसी बनी, तजूं न तुम पद सेव ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल संबधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो पूर्णार्घं ॥

॥ रुक्मी नाम कुलाचल पूजा ॥

दोहा—धातकि पचिश्चम खंड में, रुक्मी पर्वत सोय। तापें जिन मन्दिर सही, जजों थाप इत जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा रुक्मी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ. ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

चौपई—निर्मल नीर गंध सो लाय, धरिके कनक थाल में भाय। पश्चिम दिशा धातकी मांहिं, रुक्मी गिर पूजों जिन ठांहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

बावन चंदन सी कसवोय, लायो घसि जल निर्मल धोय। पश्चिम दिशा धातकी मांहिं, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

मुक्ताफल से अक्षतसार, खंड रहित उज्ज्वल अधिकार। पश्चिम दिशा धातकी मांहिं, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगन्ध कलपतरु जिसे, ले आयो नाना रंग तिसे। पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यों पुष्पं ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद बनाय, ले आयो उर भक्ति बढ़ाय। पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिमी दिशा रुक्मिनाम कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तम हरा, कनक थाल ले तामें भरा। पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप सुगन्ध भेल दश भेद, ले आयो खेवन निरखेद । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग विदाम सुन्याय, इन आदिक फल और सुभाय । पश्चिम दिशा धातकी माहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥८ ॥

जल चन्दन अक्षत चरुसार, पुष्प दीप फल धूप सुधार । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिर पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

अर्घ बनाय महा सुखकार, ले आयो नाना सुखधार । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—याही रुक्मी गिरि के शीस, कूट कहे शोभामय दीस । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

इन ही कूटन के मधि जानि, देव रहे नाना सुख मान । तिन गतिछेद भए भवपार, ते सब सिद्ध नमूं सुखकार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याही रुक्मी गिर के शीस, जिन चैत्यालय अति सुखदीस । तिन में बिम्ब विराजै सोय, ते मैं पूजों मन सुध होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही रुक्मी गिर के माहिं, कुंड कह्यो बहु जल की ठाहिं । ता गतिछेद भए जिनराय, ते जिन जजों अर्घ सुभ लाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबंधि ह्रदगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याही कुंड थकी दो जान, सरिता निकसी जल की खान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अरघ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबंधि द्रह—गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इस ही रुक्मी गिर ह्रद माहिं, कमल कहे बहु मन वच ठाहिं । ता में उतपति छेतक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबंधि ह्रद—कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इन ही कमलन के मधि सही, देवी देव वसें सुख महीं। सो गतिछेदक भए भव पार, सिद्ध नमों ते मंगल कार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि कमल वासिनी देवी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

या रुक्मी गिरि उत्तरदिशा, हिरण्यवत क्षेतर शुभ लसा। यामें छेदक उतपति सोय, ते सिध पूजों मनवच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचलत' उत्तर दिशा हिरण्यवत क्षेत्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

या हिरण्यवत खेतर माहिं, उपजै मनुष्य पशू शुभ ठाहिं। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों हर्षित होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि गिरि उत्तर दिशा हिरण्यवत क्षेत्र सम्बन्धि मनुष्य पशु युगलगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या हिरण्यवत की भूजानि, पर्वत नाभि कहे हित खानि। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मनवच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम रुक्मि गिरत. उत्तर दिशाया हिरण्यवत क्षेत्र नाभि गिर नामा पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

ऐसे पश्चिम धातकि माहिं, हिरण्य क्षेत्र रुक्मि गिरि ठाहि। इनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि गिर हिरण्यवत क्षेत्र सवधि उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ११ ॥

॥ जयमाला ॥

दोह–पश्चिम धातकी खण्ड में, रुक्मि गिरि पैं जोय। मन्दिर जिन को सो कह्यो, ते पूजों मद खोय ॥ १ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

इस थल जिन पूजन सुर आवै, किन्नर औ विद्याधर आवै। भूमि गोचरी का गम नाहीं, तातैं पूजत हौं इस ठाहीं ॥ २ ॥
द्रव्य आठ का अरघ बनाऊं, भक्तिधार जिनके गुण गाऊं। करूं वीनती भो जिन देवा, भो भो देहि तुम्हारी सेवा ॥ ३ ॥
भक्ति रावरी तें सुर होई, नीच ऊंच दीखै नहिं कोई। शरण तिहारो पशुहुन लीन्हो, तिनको दुख हर कारज कीन्हो ॥४॥
मिनख होय जो तुम गुन गावै, तो वह जीव सहज शिव पावै। तातैं मो सुनि अधमउधारा, तुम बिन और न लागै प्यारा ॥
तातैं जिन अब कीजे सोई, ता विधि मोकों सुख जै होई। तुम तो सब विधि जानत देवा, कहैं कहा बहु दे तुम सेवा ॥६॥

दोहा–ऐसे जिन पूजों यहां, भावन भाय सदीव। ता फल से सुख ऊपजै, औ शुधता ले जीव ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकीखण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—खंड धात पश्चिम दिशा, शिखरी पर्वत जान। ता ऊपर जिन गेह हैं, ते पूजों थुति ठानि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौषट आह्वाननं ॥

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई—निरमल नीर क्षीर दधि समा, कनक पात्र में धर अतिरमा। धात खंड पश्चिम दिश सोय, शिखरी गिर पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी गिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन सुभग अनूपम लाय, घसि करि उत्तम जल मिलवाय। धात खंड पश्चिम दिश जोय, शिखरी गिर पूजों जिन सोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी गिरि सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत मुक्ताफल से लाय, उज्ज्वल कंद कली सम थाय। धात खंड पश्चिम दिश जोय, शिखरी गिर पूजों जिन सोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

नाना वर्ण फूल शुभ लाय, गंध घनी सुरतरुसी भाय। धात खंड पश्चिम दिश सोय, शिखरी गिर पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातको खड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा फीणी मोदक सार, घेवर आदि लेय सुखकार। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय तम क्षयकार, लेय आरती आयो सार। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि वन्दों जिन जोय।

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरीनाम कुलाचल संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप गंधजुत सही, लेकर खेवन आयो सही। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग बदाम, इनको आदि लेय फल काम। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरो नाम कुलाचल सवधि चैत्यालयस्थ जिन जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत चरु दीप, पुष्प धूप फल लेय महीप । धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घम् ॥

चौपाई—या शिखरी गिर पे जिन गेह, तें हूं पूजौं मन कर नेह । ता फल मोक्ष सुरा खग थाय, ध्यावत हैं इन्द्रादिक आय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥
इन ही कूटन पैं सुर रहे, नानाविधि सुकृत फल लहै । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी कुलाचल कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥
याही शिखरी गिर पें जान, कूट कहे शोभा अधिकानप । तां में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥
इसही शिखरी गिर पे सही, कुंड बन्यो बहु जल की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि कुंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥
याही कुंड विषै शुभ कही, नदी दोय नीर की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥
याही कुण्ड विषै मनलाय, कमल कह्या मणिमय सुखदाय । तिनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥
इस ही कमल विषै जो रहै, देवी नाना सुख कों लहै । तिन गति छेद भए भवपार, ते सब सिद्ध जजों थुतिधार ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कमल वासिनी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥
या ही शिखरी पर्वत माहिं, नाना विधि के थानक पाहिं । तिन में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—शिखरी गिर पै सुर खगा, पूजत हैं जिन जाय । हम पें शक्ति न जान की, यो पूजों इस ठाय ॥ १ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

या गिरि जो है जिनका गेहा, जजैं भक्ति करि सुर खग नेहा । हम भी इहां तें भावन भाई, पूज रचैं जैं ज जिनराई ॥२॥
करें भक्त मुख गान अपारा, देव जजैं जिन राज सु प्यारा । करें अरज सुनि हो जगनाथा, काढि भवोदधितैं गहि हाथा ॥
तुम आलंबन तें भव सिधा, अल्प तोय जिम होय सुबंधा । तुम गुण गाय चोर से जीवा, सुर उपजे यह नाम सदीवा ॥
मैं तो नाथ शरण अब आयो, मन वचकाय सकल लगवायो । तातैं करुणा धारो मेरी, मेटो नाथ दीन की फेरी ॥५॥
तुम ही जगत देव जगनाथा, तुम ही भवसागर की पाथा । तुम ही मात तात सुखदाई तातैं तारो हो जिनराई ॥ ६ ॥
दोहा–और घनी कहनी कहा, जानत हो जिनराय । तातैं तुम यह वीनती, सबधो कर्म नशाय ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालय पूजा जयमाला पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा–खण्ड धात पश्चिम दिशा, ऐरावत शुभ धाम । तहां थान जिन देव के, ते पूजों इस ठाम ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्रावतर संवौषट् आह्वानन ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई–नीर निर्मलो गंग समान, सुभग पात्र में धरके आन । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन बावन पावन कार, लायो घसि जल गंध अपार । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अक्षत मुक्ता फल सम जान, उज्ज्वल श्वेत बुंद से आन । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ ३ ॥

फूल सुगन्ध वरन अधिकाय, ले आयो उर भक्ति बढ़ाय । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, ले आयो हरपे चित भाय। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीप रतन के सुभग बनाय, तमहारी दुतिकारी लाय। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप अनूप बनाय, खेवन आयो सेव उपाय। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु ऐरावत क्षेत्र सबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम अपार, और अनेक लेय फल सार। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु ऐरावत क्षेत्र सबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत चरु धूप, पुष्प दीप फल लेय अनूप। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—धात खण्ड ऐरावत माहिं, तिष्ठत तिहां जिन मन्दिर ठांहि। ते हों पूजों मन वचकाय, अष्ट द्रव्य करि अर्घ बनाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

खंड धात ऐरावत माहिं, सिद्ध क्षेत्र ते सब सिध ठांहि। ते हों पूजों मन वच काय, अर्घ ठानि बहु भक्ति भराय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खण्ड धातकी पश्चिम दिशा, आरज भूमि तहां शुभ लसा। या गति छेद भए भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि आर्य क्षेत्रगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

या ही आर्य खंड के माहिं, उपसागर बहु जल की ठाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि उपसमुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

या ही खण्ड सु आरज ठौर, नगर अयोध्या सब शिर मोर। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि अयोध्या नगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

या ह्री ऐरावत थल माहिं, आरज खंड देश सो पाहिं । तिन गति छेद भए भव पार, ते सिध पूजों मन वच सार ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि आर्य खड देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

या ह्री ऐरावत भूमाहिं, विजयारध खग गिरि शुभ ठाहि । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्द्ध गिरि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

या ह्री विजयारध के शीश, कूट कहे शुभ गिर के ईश । तिन गति छेद भए भव पार, ते मैं जजों अरघ ते सार ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्द्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इसही विजयारध के कूट, देव वसै सब अघ तहँ छूट । इन गति छेद भए भवपार, तिन पद अर्घ जजों नयसार ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयारध कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या ही विजयारध के माहिं, कूट कहे सिद्धारथ ठाहिं । ताके ऊपर है जिन गेह, सो हों जजों ठानि बहु नेह ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र-विजयार्द्ध कूट संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

या ही ऐरावत के माहिं, वृषभाचल पर्वत शुभ ठाहिं । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि वृषभाचल पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इस ऐरावत क्षेत्र जु माहिं, खण्ड मलेछ पंच मन लाहिं । इनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि पच म्लेच्छे गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

ऐसे ऐरावत की धरा, यामें बहु विधि थानक भरा । ता में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

या ही ऐरावत में जानि, होय गई चोइसी मानि । तिनके पद शुभ अर्घ बनाय, पूजों भक्ति लाय गुण गाय ॥
ॐ ह्रीं धातको खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ १४ ॥

ऐरावत की याही धरा, वर्तमान जिन चौवीस खरा । तिनके पद में अरघ बनाय, पूजा करों घने गुण गाय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

या ही ऐरावत में सोय, होंगे जिन चौबीस सुजोय । तिनके चरणों मन वचकाय, अर्घ चढाऊं अति हरषाय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छद–अडिल्ल—

ऐरावत इस मांहि जानि जिन थल घने, और अतीत अनागत वरते जिन भने ।
इन आदिक सिध चेतर तीरथ धामजी, तिनको मन वचकाय नमो हित कामजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधी जिन सिद्ध क्षेत्र तीर्थेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

चौपई–दधि दूजा कालो दधि जान, आठ लाख जोजन परमान । तामें उतपति छेदक सोय, सो सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं कालोदधि समुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

याही कालोदधि के माहि, देव रहै परवत की ठाहिं । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं कालोदधि निवासी देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–पश्चिम धातकि खण्ड में, ऐरावत थल मानि । तहाँ देव जिन थल नमों, अर्घ लेय श्रुति आनि ॥ १ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

खण्ड धातकी दूजा भाई, ताके पश्चिम दिश अधिकाई । ऐरावत क्षेत्र सुखकारा, तामें षट खण्ड शोभ अपारा ॥ २ ॥
पंच मलेछ खण्ड है नीका, आरज खण्ड एक सुख टीका । खण्ड मलेछ थकी शिवनाहीं, मोक्ष होत है आरज माहीं ॥ ३ ॥
ऐसे ऐरावत थलमाहीं, खण्ड कहे षट् संशय नाहीं । ता बिचि एक खगाचल जानौं, श्रेणी द्वय शिरकूट बखानों ॥ ४ ॥
इन कूटन पै देव रहावै, एक कूट पै जिन थल पावै । विजयारध उत्तर को जानो, खण्ड मलेच्छ तीन श्रुति गानो ॥ ५ ॥
तिन बिचले खंड में सुन भाई, वृषभाचल पर्वत सुखदाई । चक्री लिखे तहाँ निज नामा, खग गिरि दक्षिण आरज ठामा ॥ ६ ॥
ता आरज में उपदधि जानो, नगर अजोध्यादिक सब मानो । और घने बहु तीरथ थाना, सिद्ध क्षेत्र आदि अघ दाना ॥ ७ ॥
तिनको मैं वंदों हर्षाई, हाथ जोडकर शीश नमाई । ऐसे ऐरावत की रचना, जान हरष कर पुण्य सु सिचना ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जयमाला पूर्णार्घम् ॥

॥ इति धातकी खंड पूजन समाप्त ॥

॥ पुष्कराद्ध द्वीप मंदिर मेरु संबंधि पूजा ॥

दोहा–शोभा सारी सुखमई, पुष्करार्द्ध की जान । तिस खेतर जिन गेह सो, जजों थापि इम थान ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई—निर्मल नीर क्षीरदधि समा, शुभ पात्र में ले अतिरमा । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों थुति लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन शुभ जल तें घसि वाय, कनक पियालै धर मन लाय । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल खण्ड न कोय, आछे शुभ जल तें फिर धोय । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ रंग अधिकाय, गंध घनी जुत ते सब लाय । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा घेवर मोदक सार, इन आदिक चरु ले अधिकार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तम हार, ले आयो कर पात्रै धार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप करी दशधा शुभ कार, खेवन आयो बहु विधि धार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बदाम अपार, इन आदिक फल ले सुख कार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल ले शुभ सरु । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

जल मल आदि द्रव्य वसु लाय, अर्घ करूं सुखदायक भाय । पुष्कर अर्ध द्वीप के माहिं, जिन थल पूजों जे मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपसंबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—पुष्कर आधे दीप में, जे जिन मंदिर होय। ते सब मन वचकायतैं, जजों अर्घ ले जोय ॥ १ ॥

॥ चेसरी छन्द ॥

अर्ध पुष्कर जो द्वीप अनूपा, सुन्दर अधिक सकल में भूपा। तहां गेह जिनके सुखदाई, पूजैं देव खगासुर आई ॥ २ ॥
अपना जन्म सफल कर आवैं, देव जिनेश तनी थुति गावैं। करैं नृत्य सुर खग नर भारी, हरैं पाप पुण्य ले अधिकारी ॥ ३ ॥
हम में शक्ति जान की नाहीं, तातैं इह थानक थुति गाहीं। अष्ट द्रव्य सुन्दर ले आए, इहां तें जिन पद अर्घ चढाए ॥
फिर विनती हम इस विधि ठानैं, पुनि पुनि भक्ति करैं सुख गावैं। अहो देव देवापति देवा, भव भव देय आपनी सेवा ॥ ५ ॥
विन तुम सेव देव जिन राई, मैं चव गति नाच्यो अधिकाई। तिन दुख की मुख तैं क्या कहिए, तुम सर्वज्ञ सकल लख लहिए ॥
भो जिन अब तो शरण तिहारो, तुम मेटो भव वन संसारो। तुम विन और शरण नहि कोई, करो योग्य सो तुम अब होई ॥
दोहा—ऐसे विनती ठानि कै, पूजा करिय जिनेश। ताको फल यह ऊपजै, मिटै चार गति भेश ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घम ॥ इति ॥

॥ पुष्कराद्धं द्वीप के पूर्व दिशा संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—पुष्कराद्धं द्वीप की, पूरब दिशि को जोय। जिन मन्दिर राजैं सुभग, जजों थाप इहां सोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

चौपई—निर्मल नीर चीर दधि समा, ले आयो कर पातर रमा। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मन्दिर तें जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

चन्दन घसि जल सुभग मिलाय, गंध घनी सो हम ले आय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिशि माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत मुक्ता फल सम जोय, उज्ज्वल खण्ड विना ले सोय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगंध बना रंग सोय, मानो कमल बेलि के होय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजो सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, ले आयो बहु भक्ति चढ़ाय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तम हार, ले अपने कर हर्ष सुधार। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

दशधा धूप गंध जुत सार, खेवन आयो हर्ष अपार। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहि, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

योग्य बदाम सुपारी लौंग, ले आयो तुम पूजन योग। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प लाय, इन आदिक वसु द्रव्य सुभाय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई–पुष्कर अर्ध द्वीप के माहि, पूरब भरत क्षेत्र के माहिं, तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशायां भरतक्षेत्र संबधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १ ॥

भरत पूर्व पुष्कर में जहां, देव रहे सुखवासी तहां। या में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा या भरत क्षेत्र सम्बन्धि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

इसही भरत क्षेत्र सुभ ठाम, उपजत मनुप पशू गुण धाम। या में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र संबधि मनुष्य पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

पुष्कर अर्ध भरत भू ओर, विजयारध खगगिरि शुभ ठोर। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशायां भरत क्षेत्र संबधि विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

इसही विजयारध के कूट, तुंग घने देखत दुख छूट। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र संबंधि विजयार्द्ध कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

इनही कूटन के शिर जान, देव रहे नाना सुख खान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र विजयार्द्ध कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

इसही विजयारध पै सही, कूट शीश जिन मंदिर कही। तहां विम्ब जिनके आकार, ते हौं जजों सकल मद टार ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशायां विजयार्द्ध कूट संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

पुष्कर पूर्व भरत के मांहि, सिद्ध क्षेत्र सुर शिव सुखदांहि। ते हौं मन वच हर्ष बढाय, पूजों आठों अंग नमाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र सबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

याही भरत क्षेत्र के मांहि, खंड म्लेच्छ पंच शुभ ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र सबधि पचम्लेच्छ खड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

भरत अर्ध पुष्कर की ठोर, वृषभाचल पर्वतगिरि और। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र सबधी वृषभाचल पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

ऐसे भरत सु पुष्कर मांहि, पूरब दिश जिन थल सो पांहि। तिन में बिंब जिनेश्वर तने, जिन पद पूजि सकल अघ हनें ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशायां भरत क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

पुष्कर अर्ध पूर्व हिमवान्, ताके ऊपर जिनको थान। तामें बिंब देव जिन राज, सो मैं पूजो सुरशिव काज ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशायां हिमवान कुलाचल शीश जिन चत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२ ॥

इसही हिमवन पै सही, कूट कहे तिनके शुभ मही। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशाया हिमवान् कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इनही कूटन उपरि सही, देव रहे नाना सुख मही। या की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशाया हिमवान कुलाचल कूटवासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

इनही कूटन ऊपरि जेय, कुंड पदम नामा जलगेय। ता में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशायां हिमवान सबंधि पद्म द्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

इनहीं कुण्ड विषै सुखकार, कमल घने आगम अनुसार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया हिमवान संबंधि पद्म ह्रद कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

इनही कमल वास करतार, देवी देव रहे अधिकार। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया हिमवान पर्वत सबंधि कमल निवासी देवी, देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

इस ही पदम कुंड तें सही, सरिता तीन चली जल मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशि पद्म कुंड सम्बन्धी नदी गतिच्छेदक जिनभ्यो अर्घं ॥ १८ ॥

पुष्करार्द्ध पूरब दिश मांहि, हिमवन क्षेत्र बहुत सुख पाहि। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया हिमवन क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

इस ही हिमवत आरज ठांन, मनुप पशु गति छेदक जान। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र सम्बन्धी नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

इस ही हिमवत क्षेतर मांहि, नाभि नाम पर्वत सुख ठाहिं। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

अर्ध पूर्व पुष्कर की धरा, महा हिमवत पर्वत तिहि खरा। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा महा हिमवन पर्वत सम्बन्धि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

याहि महा हिमवन गिरि शीश, कूट कहे सुन्दर शुभ ईश। तिन की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा महा हिमवन पर्वत सम्बन्धि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

इस ही हिमवन कूट सुजान, जिन मन्दिर है पुण्य सुखान। तिन में बिम्ब जिनेश्वर सोय, ते मैं पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा महा हिमवान पर्वत शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥

इस हि महा हिमवन के कूट, तिन में देव बसै अघ छूट। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा महाहिमवान कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

इस ही महा हिमवन गिरि ठोर, ऊपर महा पदम कुंड और। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा महा हिमवान पर्वत सम्बन्धि महा पद्म ह्रद गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

याहि महा पदम कुंड माहिं, कमल कहे सुन्दर शुभ ठांहि। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा महाहिमवन गिरि महा पद्म ह्रद सम्बन्धि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

इस ही कमलनि में सुख खांनि, देवी देव रहै अधिकानि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा महाहिमवान महा पद्म कुंड सम्बन्धि कमल देवी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २८ ॥

इस ही महा पदम द्रह तनी, सरिता दोय चली जलघनी। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अर्घ पुष्कर पूर्व दिशा महा पद्म कुंड सम्बन्धि सरिता गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

अर्द्ध पूर्व पुष्कर खंड सही, तांको हरि क्षेत्र शुभ मही। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हरिनामा क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

याही हरि क्षेत्र के मांहि, नर तिर्यंच जुगल उपजांहि। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हरि क्षेत्र सम्बन्धि मनुष्य पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

इस ही हरि क्षेत्र के मांहि, पर्वत नाभि कह्यो सुख ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हरि क्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

अडिल्ल छन्द—पुष्करार्ध शुभ द्वीप पूर्व दिश जानिये, निषध नाम तहां पर्वत एक बखानिये।
ऊपर ताके जिन मंदिर शुभसार हैं, ते ही पूजों भाव सहित सुखकार हैं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा निषध नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

चौपाई—या ही निषध शिखर पे जान, कूट कहे बहु सुख की खान। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराध द्वीप पूर्व दिशा निषध कुलाचल सम्बन्धि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहै नाना शुभ मही। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्घ पूर्व दिशा निषध कुलाचलसंबंधि कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

याहि निषध कुलाचल ठौर, ऊपर कुंड तहां जल जोर। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा निषध कुलाचल सबंधि तिगंछ नामा कुंडगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

याहि कुंडतिगंछ सु मांहि, कमल बने मणिमय शुभ ठांहि। तिनमें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध दिशा पूर्व निषध पर्वत कुंड संबंधि कमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

इनही कमल वास करतार, देवी देव बसे बहुसार। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा तिगछ कुंड संबंधि कमल वासी देवी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥
याहि कुंड तिगंछ सुमांहि, नदी दोय चलैं जल ठांहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा तिगछ कुंड संबंधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥
छन्द पद्धरि-वर पुष्कर पूरव दीप सोय, तहां क्षेत्र विदेहसु थान जोय। तिस थान देव जिनराज गेह, ते पूजों मनवच अर्घ लेय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध द्वीप पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥
चौपाई-पुष्करार्ध पूरव दिश मांहि, मेरु विदेह क्षेत्र के ठांहि। ताके भद्रशाल वन धाम, है जिन गेह जजों शिवकाम ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा सुदर्शन मेरौ भद्रशाल वन संबधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४१ ॥
याहि मेरु सोमनस वन सही, है जिन मंदिर चव वन मही। तिनमें बिंब कहे जिन राज, ते ही जजों सुरग शिवकाज ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा सुदर्शन मेरौ सौमनस वन संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥
पुष्करार्ध पूरब दिश सोय, मेरु तहां नंदन वन जोय। तामें जिन मंदिर अघहरा, ते ही जजों अर्घ ले खरा ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशायां सुदर्शन मेरौ नन्दन वन संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥
इसही मेरू ऊपर सार, पांडुक नामा सुभ वन धार। तहां चार जिन मंदिर मही, तेहू जजों जैन शिव मही ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशायां सुदर्शन मेरौ पांडुक नामा वन संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥
इस ही मेरु कहे सब थान, देव रहै नाना सुख मान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपस्य पूर्व दिशायां सुदर्शन मेरु संबंधि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४५ ॥
इस ही पांडुक वन में सोय, पांडुक नाम शिला अवलोय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशाया मेरौ पाण्डुक वन संबंधि पांडुक शिला उत्पत्ति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥
इस ही मेरु संबंधी जोय, चव गजदंत ऊपरै सोय। है जिन मंदिर चव अघहरा, ते सब जजों सुरगशिव करा ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा चतुर्गजदंतसंबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥
इन ही चव गजदंत के मांहि, देव रहै कूटन के ठांहि। तिनकी उतपति हरि शिव गये, जिन सिध पायन को हम नये ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा मेरु चतुर्गजदंतसंबंधी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

इनही चवगजदंतन मांहि, जीव ऊपजे केइक मांहि । तिन गति छेद भये भवपार, सो जिन जजौं सकल मदटार ॥

ॐ ह्री पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु चतुर्गजदंत संबधि जीवउत्पत्ति छेदक जिनभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

इस ही मेरु संबधी दोय, जंबूशालमली तरु सोय । तिनके थान जिनेश्वर जांनि, पूजा करों हरष शुभ ठांनि ॥

ॐ ह्री पुष्कराद्ध पूर्व दिशा जंबूशालमली वृक्ष संबधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

इस ही जंबूशालमलि मांहि, देव रहैं तरु ऊपर ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा जबूशाल्मली वृक्ष निवासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

याहि मेरु दक्षिण दिश सोय, भोग भूमि उत्कृष्टी जोय । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु दक्षिण दिशा उत्कृष्ट भोग भूमि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

इसही मेरु की उत्तर दिशा, भोग भूमि उत्कृष्टी लसा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व मेरू उत्तर दिशा उत्कृष्ट भोग भूमि संबंधी उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५३ ॥

इसही मेरु संबंधी जान, गिरिवक्षार शिखर शुभ मान । तिनपे जिन मंदिर जे होय, ते सब पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु संबधि षोडश वक्षार उपरि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

याहि मेरु बिदेह सुमांहि, जे सब गिरि वक्षार सुजान । तिन में देव बसैं सुखकार, तिन गति छेद जजों श्रुतिधार ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह संबधी षोडश वक्षार वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५५ ॥

इसही क्षेत्र विदेह सुमांहि, नंदी सकल महाजल ठांहि । तिन गति छेद भये सिध सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र संबधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

याहि क्षेत्र विदेह मझार, विजयारध पर्वत सो सार । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र संबंधि द्वात्रिंशत् विजयार्ध पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

इनही विजयारधं के शीश, कूट कहे अति सुन्दर दीश । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा बिदेह क्षेत्र संबन्धि विजयार्ध कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५८ ॥

इनही कूटन के शिर जोय, देव रहै अति सुखिया होय । तिनकी उतपति हर शिव गये, ते सिध हमने सब पूजिये ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र विजयार्ध कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५६ ॥

इनही विजयारध के शीश, कूट कहें सिद्धारथ दीश। तिनमें ही जिन मंदिर सोय, ते मैं पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह विजयार्ध सबन्धि सिद्धार्थ कूट स्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घ ॥ ६० ॥

इस ही क्षेत्र विदेह सुमांहि, वृषभाचल पर्वत शुभ ठांहि। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र सबंधि वृषभाचल पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, है उप सागर बहु जल धार, तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र संबंधि उपसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

इन ही क्षेत्र विदेह मझार, भूतार्णवदेवार्णवसार। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र भूतार्णव देवार्णव वन सबधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

पूरब पुष्कराद्ध शुभ मेर, तहँ वन भद्रशाल औ हेर। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु सबधि भद्रशालादिवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

अडिल्ल छन्द—पुष्कराद्ध पूरब दिश मैं शुभ जानिए, पर्वत नील सुनाम कुलाचल मानिये।
ताकी उतपति छेद भये भवपार जी, ते सिध पूजों मन वचकाय सुधार जी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु संबंधि नील कुलचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६५ ॥

चौपई—इस ही नील कुलाचल शीश, कूट कहे अति शोभा दीश। तिन गति छेद भए भवपार, ते सिध पूजों मनवच सार ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा मेरु संबधि नील नामा कुलाचल कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

इस ही कूटन पे शुभधाम, देव रहैं जिनको सुख थाम। इनकी गति हरि ते शिव गये, तिनपद हम मनवच क्रम नये ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु नील कुलाचल सबंधि कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

याहि नील कुलाचल मांहि, कूट शीश जिन मन्दिर ठांहि। तेही मन वच काय बनाय, पूजों भली भक्ति मन लाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

इस ही नील कुलाचल सार, ऊपर कुण्ड कह्यो निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि केसरी नामा ह्रद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

याही कुण्ड विषें शुभकार, कमल कहे सुख के करतार। तिनकी गति को हरि शिव होय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७० ॥

इन ही कमलन मांहि सुजान, देवी देव रहै अधिकान। तिन की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा नील कुलाचल ह्रद सवधि कमलवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

याही नीलाचल द्रह थकी, नदी दोय चली जल थकी। तिन की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सबमद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशानील कुलाचल सवंधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७२ ॥

छंद अडिल्ल—

पुष्कराद्ध सुदीप पूर्व दिश जानिये, रम्यक नामा क्षेत्र सु आरज मानिये।
ताकी उतपति छेद भये भवपारजी, ते सिध पूजों सार सकल मदटारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशाया रम्यक नाम देश गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

चौपाई—याही रम्यक थल के मांहि, है गिरि नाभि महा सुख ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशाया रम्यक क्षेत्र सवधि नाभि नाम पर्वत गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७४ ॥

याही रम्यक क्षेतर मांहि, मनुप पशु उपजै तिस ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशाया रम्यक क्षेत्र सवधि मनुष्य पशु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७५ ॥

पुष्कराद्ध पूरव दिश मांहि, रुकमी नाम कुलाचल पांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि नाम कुलाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७६ ॥

याही रुकमी गिरि पे सही, कूट कहे अति शोभा मही। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूव दिशाया रुक्मि नाम कुलाचल संवधि कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७७ ॥

इनही कूटन के शिर जान, देव रहे नाना सुख मान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मी नाम कुलाचल कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७८ ॥

याही रुकमी गिरि पे कूट, तिन ऊपर जिन थल अघ छूट। बिंब तहां जिनवर के सही. ते हों पूजों पुण्य सु मही ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि गिरि संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७९ ॥

याही रुकमी गिरि पे सही, कुंड एक जल धारा कही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि कुलाचल सवधि द्रह गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

याही गिरी कुंड के मांहि, कमल कहे मणिमय अधिकांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि नाम कुलाचल कुंड कमल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८१ ॥

इनही कमलन ऊपर सहीं, देवी देव रहे सुख मही । तिनकी उतपति छेदक मोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि कुलाचल सबंधि कमलवासी देवी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८२ ॥

याही रुकमी गिरि पे सही, नंदी दोय चले जल मही । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि कुलाचल संबंधि नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८३ ॥

पूरव पुष्करार्ध मंझार, हैरण्य क्षेत्र बसै शुभकार । तामें उतपति छेदक मोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा हैरण्यवत क्षेत्र सबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८४ ॥

या हैरण्य क्षेत्र के माहिं, पर्वत नाम नाभि गिरि पांहि । तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा हैरण्य क्षेत्र संबधि नाभि नाम गिरि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

इस ही हैरण्य क्षेत्र भू ठोर, मनुष्य पशू उपजत है जोर । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा हैरण्य क्षेत्र सबंधि मनुष्य पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८६ ॥

पुष्कराद्ध पूर्व दिश माहिं, शिखरी नाम कुलाचल पाहि । ताके ऊपर है जिन गेह, तिनको पूजों करि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८७ ॥

याहीं शिखरी गिरि पे सही, कूट कहे नाना सुख मही । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८८ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहे सब सुख की मही । इनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

याही शिखरी गिरि ये सार, कुंड कह्यो बहु जल की धार । ताकी उतपति छेदक मोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल ह्रद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

याही शिखरी के द्रह माहिं, कमल कहे मणिमय शुभ ठांहि । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल ह्रद कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६१ ॥

इनही कमलन के मधि रहे, देवी देव महा सुख लहैं। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोग ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल ह्रद कमल वासी देवी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९२ ॥

याही शिखरी गिरि तें जान, नदी तीन चली जल खान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९३ ॥

छंद—अडिल्ल—

पूरव पुष्कर द्वीप माहिं शुभकार हैं, शिखरी नाम कुलाचल सुख आगार है।
तामें उतपति छेद भये भवपारजी, ते सिध पूजों मन वच काया सारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा शिखरी कुलाचल संबधि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९४ ॥

पूरव पुष्कर द्वीप माहिं को जानिये, ऐरावत है क्षेत्र महा सुख खानिये।
तामें जे जिन गेह महा तीरथ मही, ते हों मन वच काय जजों शिवदा सही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

चौपाई—याही ऐरावत थल मांहि, आरज खँड महा सुख ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि आर्य खड गतिदछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ९६ ॥

याही आरज क्षेतर मांहि, है जिन मन्दिर पुण्य सु ठांहि। बिंब तहां जिनके आकार, ते हों जजों अरघ धरिसार ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र आर्य खड सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ ॥ ९७ ॥

इसही खँड आरज की ठोर, है सिध क्षेतर तीरथ जोर। तिनको मन वच काय लगाय, पूजों अर्घ लेय थुति गाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशाया ऐरावत क्षेत्र आर्यखड सबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम ॥ ९८ ॥

या आरज क्षेतर में जान, होय गये चौबीस सो मान। ते जिन वसु विधि अर्घ चढ़ाय, पूजों मन वच तन थुतिलाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९९ ॥

याही ऐरावत जिन देव, वर्तमान अब हैं स्वयमेव। तिनकों मनवचकाय लगाय, अर्घ थकी पूजों थुति लाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वे दिशाश्र ऐरावत क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०० ॥

याहि ऐरावत थल मांहि, आगामी जिन हो हैं ठांहि । ते चौवीसों ही भगवान, पूजों अर्घ आनि धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०१ ॥

या ऐरावत आरज मान, देव बसे नाना सुख ठांन । तिन ऊपर जिन मन्दिर सोय, ते हों पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि आर्य क्षेत्र स्थित देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०२ ॥

याही ऐरावत में सही, होय तीन चौवीसी कही । तिन जिनवर के दो पद जान, अर्घ चढाऊँ सुध तन आन ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि भूत भविष्यत वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०३ ॥

याही ऐरावत थल मांहि, विजयारध पर्वत खग ठांहि । तिन गति छेद भये भवपार, ते सिध पूजों मनवच सार ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०४ ॥

याही ऐरावत वैताढ, तापे कूट कहे सुख वाढ । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०५ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहे शोभा मन मही । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०६ ॥

याही विजयारध के शीश, जिन मन्दिर अति शोभा दीश । तिनमें बिंब विराजे सोय, अर्घ जजों शुभ मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्द्ध शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०७ ॥

याही ऐरावत की जान, विजयारध जुग श्रेणी मान । यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र विजयार्ध युगल श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०८ ॥

या ऐरावत आरज माहिं, उपसागर बहु जल तहां पाहिं । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत आरज क्षेत्र सबंधि उप समुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०९ ॥

इसही ऐरावत की ठोर, पंचम्लेच्छ धर्म बिन और । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि पचम्लेच्छ खंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१० ॥

या ऐरावत क्षेतर माहिं, वृषभाचल पर्वत मन लाहि । यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधि वृषभाचल पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २११ ॥

या आरज ऐरावत मान, देव वसे मगधादिक ठांन। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

या ऐरावत क्षेतर माहि, नाभी गिरि पर्वत शुभ ठांहि। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि नाभि गिरि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

याही ऐरावत थल माहिं, जिन मन्दिर शोभा अधिकांहि। तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, अर्घ बनाय जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११४ ॥

छंद–अडिल्ल—
पुष्कराद्ध वर द्वीप सु ऐरावत सही, नाना विधि रचना जुत ताकी शुभ मही।
ताकी उतपति छेद भये भव पारजी, ते सिध पूजों मन वच काया सारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि चक्रीपुर आदि नाना रचना उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— पूरब पुष्कराद्ध में, मेरु आदि जिनगेह। ते सब पूजों भक्ति धर, धार हिये बहु नेह ॥ १ ॥

छंद वेसरी–पुष्कराद्ध पूरब दिश भाई, मेरु एक के वन सुखदाई। चव गजदंत विरछ जुग जान, जंबू शालमली मन आन ॥ २ ॥
याही मेरु उत्तर दखिणाउ, पर्वत पट अति जान सिखाऊ। सात क्षेत्र सुन इनके नामा, पहला भरत महा सुख ठामा ॥ ३ ॥
यामें विजयारध गिरि भाई, दूजो क्षेत्र हैमवत पाई। यामें भोगभूमि सो जानो, तामें जवन्य रीति सब मानों ॥ ४ ॥
क्षेतर तीजो हरि सुखकारी, चतुर्थ क्षेत्र विदेह सु धारी। या विदेह में और सु ठामा, क्षेत्र बतीस जान शुभ धामा ॥ ५ ॥
षोडश यामें गिरि वक्षारा, नाम विभंगा द्वादश धारा। गिरि वैताढ वत्तीस अनूपा, इन आदिक बहु और स्वरूपा ॥ ६ ॥
रम्यक क्षेत्र और शुभ जानो, हैरण्यवत क्षेतर शुभ मानो। सप्तम ऐरावत है भाई, विजयारध है याकी ठांई ॥ ७ ॥
फेर कहूँ षट गिरि के नामा, हिमवन फिर महाहिम वन ठांमा। तृतीय निषध कुलाचल होई, चतुर्थ नील महा शुभ जोई ॥८॥
रुक्मी पर्वत है अधिकारा, षष्टम शिखरी पर्वत सारा। इन सब पे इक इक हृद जानो, इह मधि कमल सुरन को थानो ॥ ९ ॥
सब ही गिरि मेरादिक भाई, तिन पर जिनवर के थल पाई। तिनको सुर खगं पूजे सारे, भवित करें तातें अघ न्यारे ॥ १० ॥
सप्त क्षेत्र में तीस सुधामा, कर्म भूमि अरु आरज ठामा। अन आरज में धर्म जु नाहीं, कर्म भूमि में सिध थल पाई ॥ ११ ॥

तिनमें क्षेत्र विदेह सु थानो, तहां सदा है शिवपुर जानो। सदा काल चौथा ही होई, काल फिरन यहां होय न कोई ॥ १२ ॥
भरत ऐरावत क्षेतर मांही, काल फिरन पट विधि तिन ठांहि। चौथे काल तहां शिव होई, और काल वृष थानक जोई ॥ १३ ॥
ऐसे इस क्षेतर ते जानो, काल फिरन की रीति पिछानो। ते सिध लोक शिखर पे होई, भक्ति धार मैं पूजों सोई ॥ १४ ॥

दोहा— ऐसे क्षेतर अर्द्ध में, पूरव दिश को जान। सिध थानक जिन गेह सब, जजों सु मन वच ठांनि।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा सबधिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घम् ॥ इत ॥

॥ पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा— दीप सु पुष्कर अर्द्ध की, पश्चिम दिशा जु जान। जिन मंदिर सब अघ हरा, जजों थाप थुति आन ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौपट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन।
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिमदिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

चौपई—नीर निरमलो प्राशुक हिमा, ले आयो कर पातर रमा। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्याजयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन बावन गंध अपार, ले आयो जल ते घसि सार। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल नखसिखसार, धोय किये उर को सुखकार। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ रंग अधिकाय, सो मैं ले आयो शुभ भाय। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, ले आयो उर हरप बढाय। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई करवाय, शुभग पात्र में धरि हम लाय। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मन्दिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप करी दशधा गँध लेय, अग्नि माहिं खेवक उमगेय। पुष्कराद्ध पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मन्दिर जे होय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम अपार, पूंगीफल इम आदिक सार। पुष्कराद्ध पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल गंधाक्षत पुष्प मिलाय, चरु दीपक फल धूप सुलाय। पुष्कराद्ध पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

प्रत्येक अर्घ

चौपई—पुष्कराद्ध पश्चिम दिश जान, तामें भरत क्षेत्र शुभ खान। तिस थानक जिन मन्दिर सोय, ते हों पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥

याही भरत क्षेत्र के माहिं, सिद्ध क्षेत्र शुभ तीरथ ठांहि। कर्म काट तहां ते शिव गये, तिन सिध पाय अरघ धर नये ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संवधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम ॥ २ ॥

भरत क्षेत्र इसही दिश ओर, जिन चौबीस देव शिरमोर। काल अतीत विषे हैं गये, तिन पद अर्घ लाय हम नये ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सवधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३ ॥

याही भरत भूमि के माहि, वर्तमान जिनवर सो पांहि। वर्तमान वरते अघहरा, ते चौबीस जजों शुभ धरा ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सवधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

पुष्कराद्ध पश्चिम की धरा, जिन चौबीस भरत के खरा। आगम काल हो यंगे सही, ते प्रभु पूजों शिव की मही ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सवधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही भरत धरा में जान, विजयारध पे जिन थल मान। तिनको मन वच काय सुधरा, अर्घ जजों बहु विनय उच्चरा ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र विजयार्थ सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही भरत क्षेत्र को सही, आरज खंड भलो शुभ मही। याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन शुध होय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संवधि आर्य खंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७ ॥

याही भरत खेतर द्वार, उप सागर अति जल को धारें । यामें उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पाप मंजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥ ८ ॥

याही भरत माहिं सुखकार, देव रहें अपने थल सार । तिन गति छेद को जिन नोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥ ९ ॥

याही भरत क्षेत्र में मही, विजयारध गिरि नग की मही । याकी उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों मन वच दोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥ १० ॥

याही विजयारध के शीश, कूट कहे सुन्दर शुभ दीस । उनकी उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥ ११ ॥

उनही कूटन पे सुर रहें, ते नाना शोभा सुख लहें । इनकी उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥ १२ ॥

याही भरत क्षेत्र में मही, पंच अनारज खेतर कही । उनकी उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥ १३ ॥

इनही क्षेत्र अनारज ठोर, मध्य भाग वृषभाचल जोर । यामें उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥ १४ ॥

याही भरत क्षेत्र की मही, नाना विधि की रचना कही । तिनमें उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] नाना [illegible] रचना [illegible] ॥ १५ ॥

छंद–अडिल्ल— पुष्करार्द्ध शुभद्वीपतनों पश्चिम दिशा, हिमवन नाम कुलाचल पर्वत सुखलसा ।

ता ऊपर जिनधाम अकृतिम मणिमई, ते हों पूजों अर्घ ल्याय मन वच मही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल [illegible] ॥ १६ ॥

चौपई–याही हिमवन गिरि पे जान, कूट कहे उत्तम सुखदान । तिनकी उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल [illegible] ॥ १७ ॥

इनही कूटन ऊपर सार, देव रहे नाना सुखकार । तिनकी उतपति छेदक मोर, ते जिन पूजों पापं संजोर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल [illegible] ॥ १८ ॥

याही हिमवन पर्वत ठोर, कुंड कह्यो तामें जल नोर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि ह्रदगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १६ ॥

याही कुंड विषै अति जान, कमल कह्यो मणिमय सो मान। याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल सबंधि ह्रद कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २० ॥

याही कमल मांहि शुभ थान, देवी देव रहैं तहां जान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवन ह्रदकमलवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २१ ॥

याही हिमवन पर्वत थकी, नदी तीन तहां में थकी। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवन कुलाचल सबंधि नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २२ ॥

याही हिमवन पर्वत मांहि, वहु विधि रचना कहिये ताहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल सबंधि अनेक रचना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

आगे हिमवत खेतर मांहि, मनुष्य पशु आरज सब पांहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवत क्षेत्र सबंधि मनुष्य पशु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २४ ॥

याही हिमवत खेतर मांहि, नाभि नाम गिरि पर्वत पांहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया हिमवन क्षेत्र संबधि नाभि गिरि नामा पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

याही हिमवत क्षेत्र सु जान, आर्य जीव वहुत विधिमान। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया हिमवन क्षेत्र सबंधि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २६ ॥

छंद अडिल्ल—

पुष्करार्द्ध शुभ द्वीप सु पश्चिम जानिये, महा हिमवान कुलाचल तहां इक मानिये।
ता ऊपर जिन धाम जजों सो सुखमई, अरघ लेय कर मांहि भक्ति धर उर सही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया महा हिमवान कुलाचल ऊपरि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

चौपई—याहि महाहिमवन गिरि जान, कुट मनोज्ञ कहे हितदान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया महा हिमवान कुलाचल सबंधि कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २८ ॥

इन ही कूट ऊपरैं जान, देव वसै अति ही सुखमान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धे पश्चिम दिशाया महा हिमवान क्षेत्र सबंधि कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २९ ॥

याहि महाहिमवन गिरि जोय, कुण्ड महा जलथानक सोय। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां हिमवान कुलाचल संबंधि ह्रदगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

याही कुण्ड महा जल मांहि, कमल कहे मणिमय सो ठांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां महाहिमवन कुलाचल संबंधि कमलगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

इनही कमलनि के मध सार, देवी देव रहें अधिकार। तिन की उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया महाहिमवान संबंधि ह्रद कमल वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

याहि महा हिमवन तैं जान, नदी दोय चली जल खान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया महा हिमवान संबंधि नदीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

याहि महा हिमवन गिरि मान, नाना रूप स्थान अधिकान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां महा हिमवान गिरि संबंधि नाना रूप स्थान गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३४ ॥

पुष्कराद्ध पश्चिम दिशि जान, हरि खेतर ताके अधिमान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया हरि क्षेत्र संबंधि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

याही हरि क्षेत्र में सही, मनुष्य पशु उपजें इस मही। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां हरि क्षेत्र संबंधि मनुष्य पशुगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

इस ही हरि क्षेत्र में जान, नाभिमान पर्वत मन आन। तिन की उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां हरि क्षेत्र संबंधि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

पश्चिम पुष्कराद्ध भू मांहि, निषध नाम पर्वत सो पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया हरिक्षेत्रस्य निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥

याही निषध कुलाचल मान, कूट मनोज्ञ तास पै जान। तिन में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया हरि क्षेत्रस्य निषध कुलाचल संबंधि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

इन ही कूटन ऊपर सार, देव रहे बहु लब्धि के धार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया निषध कुलाचल संबंधि कूटवासी देव गतिच्छेद जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

याही निषध कुलाचल शीश, कुण्ड एक जल ही जल दीश। ता में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां निषध कुलाचल सबंधि ह्रदगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

याही कुण्ड विषै मन लाय, कमल कहे मणिमय सब भाय। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया निषध कुलाचलस्य ह्रद सबंधि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

इन ही कमल किरण के माहिं, देवी देव बसै अधिकांहि। ता में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया निषध कुलाचलस्य ह्रद सबंधि कमल वासी देवी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४३ ॥

इन ही निषध कुण्ड तै मान, नदी दोय चली जल खान। तिन में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया निषध कुलाचल सबंधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

याही निषध कुलाचल मांहि, भूमि अनेक सुभग शुभ ठांहि। तामें उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया निषध कुलाचल सबंधि सर्व रचनागतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४५ ॥

छंद अडिल्ल—
पश्चिम पुष्कर अर्ध माहि को जानिये, क्षेत्र विदेह सुथान महा सुख मानिये।
तामें जिनके थान तीर्थ सब अघ हरा, तेहूं पूजों अर्घलेय मन वच धरा ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

चौपई—याही विदेह क्षेत्र के माहिं, सिद्ध क्षेत्र तीरथ शुभ ठांहि। तिन की उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

याही क्षेत्र विदेह मझार, षोडश गिरि वक्षार सुसार। ऊपरि तितने ही जिनगेह, ते सब जजों मान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि षोडश वक्षार गिरि ऊपरि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

याही क्षेत्र विदेह सुसार, है वक्षार गिरि षोडश धार। तिन में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि षोडश वक्षार गिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

पश्चिम अर्ध पुष्कर के मांहि, क्षेत्र विदेह खगाचल माहिं। तिन सब पै जिन मंदिर थान, तेहों जजों अर्घ कर आन ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि द्वात्रिंशत विजयार्ध स्थित द्वात्रिंशत-जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

इन ही विजयारध के मांहि, हो मनुष्य तिर्यंच सुठांहि। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि विजयार्द्धस्य मनुष्य पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५१ ॥

इनही क्षेत्र विदेह मझार, नंदी नाम विभंगा सार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि विभगा नदीगतच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

इन ही क्षेत्र विदेह मझार, वृषभाचल बत्तीस सु धार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि द्वात्रिंशत् वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५३ ॥

इन ही विदेह सुभग मझार, उप सागर वहु जल की धार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, जम्बूशाल्मली तरु सार। तिन ऊपरि जिनवर के थान, ते हों जजों अर्घ शुभ आन ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि जम्बूशाल्मली वृक्षयो. जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

इन ही जम्बूशाल्मली मांहि, देव वसै शाखा के ठांहि। तिन की उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र संबंधि जम्बूशाल्मली स्थित देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

इन ही क्षेत्र विदेह मझार, भोग भूमि उत्कृष्टी सार। तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां उत्कृष्ट भोग भूमिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, मेरु नाम गिरि मधि थल सार। ता ऊपरि जिनवरथल सोय, ते सिध जजों हर्ष युत होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

इस ही मेरु सुवन मन लाय, भद्रशाल तिस नाम कहाय। ता में जिन मंदिर चव सोय, ते हूं जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया भद्रशाल वन सबंधि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५९ ॥

नन्दनवन इस मेरु मझार, ता मधि चार सुभग थल सार। जिन मंदिर शोभे अवहरा, ते हों जजो अर्घ तै खरा ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबधी नन्दनवन चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६० ॥

याही मेरु सोमवन माहिं, चारों दिशा सुभग मन लाहि। चव जिन मंदिर तीरथ सोय, ते हों जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबंधि सौमनस वन सबंधि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६१ ॥

पांडुक वन इस मेरु मझार, ताकी चव दिशा में सार। चार जिन मंदिर तीरथ सोय, ते हों जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया मेरु पाडुक वन सबधि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

याही मेरु चार वन सार, तामें नाना भेद अपार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते हों जजों अर्घ जुत होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिन दिशाया मेरु सबधि चतुर्वनगतिन्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

याही मेरु वनों के मांहि, देव रहें नाना सुख पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, तेहूँ जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया मेरु निवासी दे गतिन्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

याही मेरु चवदिश चव वना, पांडुक नाम सकल दुख हना। तहँ चव शिला जिनवर नहवाय, ता में गति हर जजों सुभाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबधि जिनेन्द्रस्य चतुर्ह वन पाडुकशिलागतिन्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

याही पुष्कर अर्ध मझार, पश्चिम मेरु सकल सुख सार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया मेरु सबधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६६ ॥

छंद—अडिल्ल—

पश्चिम दिश की अर्ध द्वीप पुष्कर मही, नील कुलाचल नाम तास ऊपरि सही।
है जिनवर को गेह अकिरतम सारजी, ते हों पूजों अर्घ थकी थुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां मेरु सबंधि नील कुलाचले जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

चौपई—याही मेरु कुलाचल मांहि, ऊपरि कूट कहे हित दाहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां नील कुलाचल सबधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६८ ॥

इन ही कूटन पै शुभ मान, देव रहे नाना सुख खान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां नील कुलाचल संबधि कूटवासी देव गतिछेदक जिनेभ्या अर्घ ॥ ६९ ॥

याही नील कुलाचल शीश, कुण्ड कह्यो बहु जल को ईश। ता में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया नील कुलाचल सबधि ह्रद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ७० ॥

याही कुण्ड विषै पहिचान, कमल कहे नाना मणि खान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया नील कुलाचल सबधि ह्रद कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

इन ही कमलन के अधि सोय, देवी देव रहे सुख होय। तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया नील कुलाचल सबधि ह्रद-कमलवासी देवी देवगतिन्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७२ ॥

याही नील कुलाचल मांहि, नंदी दोय चली अधिकांहि । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां नील कुलाचल संबंधि नंदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

इसही नील कुलाचल माहिं, नाना रचना जुत भू पाहि । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया नील कुलाचल संबंधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

पश्चिम पुष्करार्द्ध दिशसार, रम्यक नाम क्षेत्र शुभ सार । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रम्यक नाम क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७५ ॥

याही रम्यक क्षेत्र सु मांहि, नाभि नाम गिरि अति शोभांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रम्यक क्षेत्र मध्ये नाभिनामा पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

याही रम्यक क्षेत्र सु मांहि, मनुष्य पशु उपजैं अधिकांहि । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया रम्यक क्षेत्र सबंधि भोगभूमिस्थित मनुष्यपशुगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७७ ॥

छन्द अडिल्ल— पुष्कर पश्चिम अर्ध भाग में जानिये, रुक्मी नाम कुलाचल सुखदा मानिये ।
ता ऊपर जिन गेह अकृत्रिम मणि मई, सो हम पूजैं सुखदायक पुनि की सही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७८ ॥

चौपई—याही रुक्मी गिरि पै जान, कूट कहे अति ऊंचे मान । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७९ ॥

या रुकमी गिरि कूटन मांहि, देव वसैं नाना गुण पांहि । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि कूटवासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८० ॥

याही रुक्मी पर्वत शीश, कुण्ड कह्यो बहु जल तहँ दीश । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि ह्रद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

याही कुण्ड विषै शुभ जान, कमल कहे मणिमय शुभ खान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि कुण्ड स्थित कमल उत्पत्ति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८२ ॥

इन ही कमल ऊपरैं सही, देवी देव वसैं अधिकही । तिन की उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया रुक्मि नाम कुलाचल सबंधि ह्रद कमल वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८३ ॥

याही रुक्मी गिरि सो जान, नंदी शिखा चली जल खान। याकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल सबंधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८४ ॥

दोहा—पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा रुक्मी पर्वत सोय। तिन गति हरि शिव को गये, ते सिध पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया रुक्मि नाम कुलाचल संबधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८५ ॥

चौपई—पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश मांहि, हैरण्यवत खेतर शुभ पांहि। तामें उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां हैरण्यवत क्षेत्र सबधि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८६ ॥

यां हिरण्यवत खेतर मान, मनुष्य पशू उपजै अधिकान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां हैरण्यवत क्षेत्र सबधि मनुष्य पशुगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

याही हिरण्यवत खेतर मांहि, नाभि नाम पर्वत तहां पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां हैरण्यवत क्षेत्र संबधि, नाभि गिरिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८८ ॥

पश्चिम पुष्करार्द्ध के मांहि, शिखरीनाम कुलाचल पाहि। ता ऊपर जिनवर के धाम, सो मैं जजों स्वर्ग शिव काम ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां शिखरी नाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८९ ॥

वेसरी छन्द—

याही शिखरी गिरि पै जानो, कूट वडो सुन्दर सब थनो। तिन में उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया शिखरी कुलाचल सबधि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

इन ही कूटन ऊपरि जानों, देव रहे धर हर्ष अमानों। तिन की उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां शिखरी कुलाचल सबधि कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९१ ॥

याही शिखरी पर्वत जोवे, ऊपरि कुण्ड कह्यो दुख खोवे। याकी उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया शिखरी कुलाचल सबधि द्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९२ ॥

याही कुण्ड माहि मनलाया कमल, कहे शोभा अधिकाया। ताकी उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया शिखरी कुलाचल कुण्ड सबधि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९३ ॥

इन ही कमलन पे मन लाये, देवी देव वसै सुखदाये। तिनकी उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां शिखरी कुलाचल सबधि कमल वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९४ ॥

याही शिखरी गिरि पै जाने, नदी तीन चली जल खाने। तिनकी उत्पति छेदक सोवे, ते सिध पूजों अर्घ संजोवे ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां शिखरी नाम कुलाचल सबंधि त्रय नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

पश्चिम पुष्कर अर्ध सु मांही, शिखरी नाम कुलाचल पांही। तामें उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सबंधि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

छंद अडिल्ल–

पश्चिम पुष्करार्थ द्वीप के जानिये, ऐरावत शुभ क्षेत्र महा सुखदानिये।
तामें जिन के थान तीर्थ उज्ज्वल सही, ते सब अर्घ बनाय जजों पुरकी मही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९७ ॥

चौपई–याही ऐरावत थल मांहि, सिद्ध क्षेत्र सुर कर थुति लांहि। तिन शुभ ठाम सु अर्घ चढाय, पूजों मन वच काय लगाय।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ ९८ ॥

याही ऐरावत के मांहि, जिन चौबीस अतीत कहांहि। होवे इस ही थल में देव, तिन पद अर्घ जजों करि सेव ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९९ ॥

इस ही ऐरावत की ठौर, वर्तमान जिनवर सिर मोर। बीस चार तीरथ जग नाथ, तिन पद अर्घ जजों कर चाव ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०० ॥

ऐरावत इस ही में जान, जिन चौबीस होयंगे मान। आगम काल विषै सो देव, तिन पद अर्घ जजों करि सेव ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०१ ॥

इस ही ऐरावत की धरा, तीन काल वरती जिनवरा। सत्तर दोय होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों शुभ जान ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र त्रिकाल सबंधि भूत भविष्यत वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०२ ॥

याही ऐरावत के मांहि, विजयारध पै जिन थल पांहि। तिनमें बिंब जिनेश अकार, ते हों जजों अर्घ धरि सार ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि विजयार्द्धस्य जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०३ ॥

याही खगगिरि ऊपरि जान, कूट कहै दीरघ शुभ खान। ताकी उत्पति हर शिव गये, ते हों जजों अर्घ कर लये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि विजयार्द्ध कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०४ ॥

इन ही कूटन ऊपर सार, देव वसै सुन्दर आकार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र सबंधि विजयार्द्ध कटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०५ ॥

याही ऐरावन की ठोर, मनुष्य पशू उपजें तन जोर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्रस्य वैताढ सवधि मनुष्य पशुगति उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०६ ॥

याही ऐरावत भू जान, ता में उपसागर जल थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र उपसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०७ ॥

याही ऐरावत भू जेय, देव रहे मगधादिक तेय। याकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सवधि मगधादिक गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

इस ऐरावत खेतर मांहि, पंच म्लेच्छ खण्ड वृष नांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबाध पंचम्लेच्छ खण्डगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

इस ही म्लेच्छ खण्ड भू मांहि, तिन में वृषभाचल गिरि पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्रस्य म्लेच्छ खण्ड सनेधि वृषभाचलगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ११० ॥

छंद–अडिल्ल— पश्चिम दिश आधे पुष्कर की जानिये, ऐरावत शुभ क्षेत्र महा सुख खानिये।
तामें उत्पति छेद भए भव पारजी, ते सिध पूजों मन वच काय लगारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र सवधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

चौपई–इस ही थल दक्षिण उत्तरा, ईक्ष्वाकार दोय गिरवरा। तिनमें रतन मई जिन गेह, ते हों नमों ठान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे सवधि द्वय इक्ष्वाकार सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

छंद–अडिल्ल— पुष्करार्ध मझार दिशा पश्चिम सही, है जिन गेह सुथान तीर्थ शुभ की मही।
ते सब सुर खग जजैं हम बल हीन हैं, तातैं इस ही थान जजों हो दीन हैं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महा अर्घम ॥ ११३ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— पश्चिम पुष्कर अर्ध में, जहाँ जहाँ जिन गेह। सो सब अर्घ बनाय शुभ, जजो सहित बहु नेह ॥ १ ॥

छंद वेसरी–प्रथम मेरु पे षोडप गेहा, तेहों जजों ठान बहु नेहा। और कुलाचल पैं जिनथाना, ते भी नमों छांड़ि सब माना ॥२॥
विजयारध चौवीस बताये तिन पे भिन भिन जिन थल गाये। ते भी अर्घ बनाय सु भाई, पूजों मन वच तन सुध काई ॥३॥

है वच्चार पोडश सुखदाई, तिन पै पोडश जिन गृह पाई । ते भी अर्घ बनाय सरूपा, पूजों धार भक्ति शिव भूपा ॥४॥
ईच्वाकार दोय गिरि नीका, तिन पैं भी जिन मन्दिर टीका । तहँ जाने की शक्ती नाहीं, जजैं यहां ही तें थुति लांहि ॥५॥
नंदी गिरिवर के जे कुण्डा, तिन टापुनि पैं बहु गिरि तुण्डा । तिन पै देवन के गृह होई, तहां इक कमल रतन मय जोई ॥६॥
तिस ही कमल ऊपरैं जानों, सिंहासन सुन्दर शुभ मानों । ताके ऊपर हैं जिन बिंबा, ते हों जजों छांडि के कुण्डा ॥७॥
और सकल स्थानक के मांही, सिद्ध क्षेत्रे जे तीरथ ठांहि । ते हूँ मन वच अर्घ सु आनों, पूजन करि हों जै जै ठानों ॥८॥
इत्यादिक जे मंगल दाई, ते हूँ जजों भक्ति मन लाई । देव खगा तो उस थल जावे, हम भी इस थल भावन भावैं ॥९॥
पुण्य प्रेरणा परिणति आई, तब ही यह उपजै वर भाई । और भी जे भव २ सुख चाहे, तो जिनवरजी के गुण गावे ॥१०॥
तिन गुण गावे सब सुख होवे, सकल पाप मल अगले धोवे । तातैं सकल छांडि परमादा, सेवा जिन कहनी क्या ज्यादा ॥११॥
दोहा—ऐसे पुष्कर अर्ध के, पश्चिम जे जिन गेह । पूजों भवि जिन भाव सों, ते अघ शिर जल देह ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ पूजा जयमाला पूर्णार्घम् । इति ॥

॥ मानुषोत्तर पर्वत संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोह—मानुपोत्र पर्वत विषै, चव दिश चव जिन धाम । ते हों जजों सुथापि इहां, भक्ति धार शिव काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं ।

चौपई—निर्मल नीर क्षीर दधि समा, शुभग पात्र ल्यायो चित रमा । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबंधि चतुर्दिश चतुजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन गंध अपार, जल तें घसि ल्यायो कर सार । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि चतुर्दिश चतुजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल अखंड सुगन्ध, धोय लायो सुगन्ध करि खंड । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबंधि चतुर्दिश चतुजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

कल्प वृक्ष से फूल सुभाय, गंध भली नाना रंगलाय । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबंधि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा फीणी घेवर ल्याय, मोदक आदि सुभग चरु भाय । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो निर्वेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तमहार, कनक थाल लायो भर सार । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पर्वत सम्बधि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप० ॥ ६ ॥

धूप सुगन्ध मेल दश मही, लायो जिन पद खेवन मही । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बधि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप० ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बदाम अपार, पूंगीफल आदिक फल सार । मानुपोत्र चवदिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर सम्बन्धि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल० ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प सोय, इन आदिक वसु द्रव्य संजोय । मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद–अडिल्ल—

मानुपोत्तर चवदिश जिन वर के धामजी, सुर खगही तहँ जाय नहीं अन कामजी ।
शक्ति हीन हम तनी जान शक्ति नहीं, तातैं इहां ही भावन करि के पूजों सही ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत चतुर्दिशा सम्बन्धि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपाई—मानुपोत्र पर्वत पै जान, पूरब दिश जिन मदिर आन । तहां बिम्ब जिनवर के सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पूर्व दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

दक्षिण दिश इस गिरि के जेय, जिन मंदिर शोभे अति तेय । बिम्ब तहां जिन के आकार, तेहों जजों अर्घ कर धार ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत दक्षिण दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

मानुपोत्र पर्वत इस ठौर, हैं जिन भवन सुतीरथ जोर । पश्चिम दिश सुर खग पुजवाय, सो मैं पूजों अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत उत्तर दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

मानुपोत्र की उत्तर दिशा, है जिन मंदिर शोभै लसा । पूजै देव भक्ति मन लाय, सो मैं पूजों अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत उत्तरदिशायां जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

मनुपोत्र पर्वत चव कूट, तिन पै है चव जिन गृह छूट । तिन को अर्घ यहां ही लाय, पूजों भक्ति भाव अधिकाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपत्तर पर्वतस्य चतुर्दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

मानुपोत्र पर्वत पै जान, हैं पट् कूट सुरन के थान । तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबधि पट्कूटानां देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

इनही पट् कूटन पै सही, गरुड कुमार देव तैं रही । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि कूटवासो गरुड कुमार जाति देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

मानुषोत्तर पर्वत के शीश द्वादश, कूट और तहां दीश । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबधि द्वादश कूट सुवर्णकुमार देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इनही द्वादश कूट मझार, हेम कुमार सुदिशा कुमार । ये देवी अरु देव रहाय, इनकी गति हर सिद्ध कहाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि द्वादशकूट वासो देवी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

या ही मानुपोत्तर गिरि मांहि, चौदह द्वार नदी के पांहि । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वतस्य चतुर्दशनदो नाम चतुर्दशद्वार सम्बन्धि उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

मानुपोत्तर पर्वत पै सही, वीस दोय शुभ कूट सु मही । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि द्वाविंशति कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

याही मानुपोत्र गिरि मांहि, उतपति जीव घने ही पांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पर्वत सम्बन्धि उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— मानुपोत्र पर्वत विषै, कहे जिनेश्वर थान । तिनको अर्घ जजों सही, मन वच तन सुध आन ॥ १ ॥

॥ वेसरा छन्द ॥

पुष्करार्द्ध द्वीप के मांहि, वलयाकार गिरी तिस ठांहि । ऊंचो सतरे सै इक ईशा, योजन इतने दीरघ दीशा ॥ २ ॥
भू में व्यास तना परमाना, एक सहस्र बाईश तुजाना । यह तो योजन नीचे चौरा, ऊपरि व्यास सतक चव ओरा ॥३॥
फिर चौवीस अधिक मिलवाओ, इतना ऊपर चौड़ा पाओ । तिन पै एक वेदिका, जानों, चार हजार धनुष्य तुंग मानों ॥४॥

धनुप सवासौं चौडी होई, वलयाकार गिरी सम जोई। तिनके ऊपर कोटि वाईसा, चव ऊपर तैं जिनगृह दीसा ॥ ५ ॥
वाकी अष्टादश जे कूट, तिन पै देव रहैं अघ छूट। पट कूटन पै देवी वासा, ऐसे जिनवाणी में भासा ॥ ६ ॥
सवा तीस योजन सुनि भाई, चार सैंकड़ा और बताई। इतना मानुपोत्तर भू मांही, नेम जेम जानो मन ठांही ॥ ७ ॥
चव दिश त्रय त्रय कूट बताये, दो दो विदिशा में त्रय गाये। एक एक भीतर चवकानी, एक एक जिन गृह तहं जानी ॥८॥
तिनकों सुरखग पूजें जाई, अर्घ करैं वसु द्रव्य मिलाई। हम तो जान शक्ति नहि पाई, तातैं इहां तैं अर्घ चढ़ाई ॥ ९ ॥

दोहा—— मनुपोत्तर चवदिश विपैं, हैं जिनके चव धाम। तिन थल पूजैं थल लहैं, टेक मुक्ति फल मान ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घम् ॥ इति० ॥

॥ अढाई द्वीप समुच्चय जयमाला ॥

दोहा—— द्वीप अढाइ के विपै, जे जे जिनके थान। ते सव अर्घ बनाय के, जजैं सु मन वच काय ॥ १ ॥
द्वीप अढ़ाई में जिती, रचना वनी अनादि। ते थोडी भापी सही, समझैं सशय वादि ॥ २ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

प्रथमं द्वीप जम्बू के मांही, पर्वत त्रय सत ग्यारह पाहीं। इतनी ही वेदी गिरिलारै, रतन मई शोभा तिन सारै ॥ ३ ॥
नव्वे कुण्ड वन्दूं भू माही, तितनी वेदो इनके ठांही। इह छव्वीस वेदी जुत होई, वेदी मणि मय शोभे सोई ॥ ४ ॥
अव इनके सुन भिन भिन रूपा, नंदी का परमाण अनूपा। जंबू द्वीप विपैं इक मेरा, पट गिरि नाम कुलाचल हेरा ॥५॥
चार यमक गिरि सरिता तीरे, कंचन गिरि दो सौ शुभ नीरै। वड़ी नदी के तट यह पइये, दिग्गज नाम आठ तहां लइये ॥६॥
पोडश गिरि वखार सुहाई, क्षेत्र विदेह विपैं यह पाई। चव गज दंतापर्वत होहैं, तीस चार विजयार्ध शोहैं ॥ ७ ॥
वृपभाचल चौतीस उतंगा, नाभि नाम गिरि चार सुचंगा। ये सव पर्वत लेय मिलाई, तीस सैंकड़ा ग्यारह भाई ॥ ८ ॥
कुण्ड निव्वे का सुनो सरूपा, नंदी आवत गिरि तैं भूपा। चौदह कुण्ड महा सुखकारी, तिनमें इक इक टापू धारी ॥९॥
टापुन पै इक इक गिरि जानों, तिन पै देवन के हैं थानो। देवि महल पै कमल वताये, कमल माहि सिंहासन गाये ॥१०॥
सिंह पीठ पै जिन आकारा, विम्ब ऊपरैं सरिता धारा। करै सदा जल न्होन सुभाई, चौदह तो ऐसे कुण्ड थांही ॥११॥
तिन तैं सरित विभंगा आवै, वारह कुण्ड विदेह सु पावै। चौसठ कुण्ड विदेह में जानो, तिनमें नंदी गंग समानो ॥१२॥

ऐसे नव्वे कुण्ड बताये, अब छत्तीस द्रहैं सुन वाये। षट द्रह कुलाचलों के शीशा, बहु जल रासि कहैं जगदीशा ॥१३॥
सीता नदी पै दश जानो, दश सीतोदा मांहि वखानो। यह छव्वीस द्रहैं जल रासा, और सुनो जु कुण्ड धुनि भासा ॥१४॥
विजयारध की गुफा सु मांही, दो दो कुण्ड कहे जल थांही। तिन तैं सरिता निकसत भाई, उन्मगना निर मगन कहाई।१५।
इक इक विजयारध की लारै, चव चव कुण्ड कहे विस्तारै। सब खग गिरि चौंतीस सुजानो, सब कुण्डन जोड़े परमानो।१६।
अधिक छत्तीस एक सौ होई, अब सुन सरिता की विधि सोई। गंगा सिधु रक्ता रक्तोदा, चार नदी यह जलकी सोधा।१७।
छप्पन सहस्र कहा परिवारा, नदी और जानो पथ धारा। रोहित रोहितास्य द्वय भेवा, सुवर्ण रूप के कुल दो एवा ॥१८॥
इन चव सरिता का परिवारा, एक लाख द्वादश हज्जारा। हरि हरि कान्ता नामा सोई, नर कांता चारों मिल होई ॥१६॥
इन चारों का सुनि परिवारा, और दोय लख का विस्तारा। और दोय सरिता की वातैं, भापों जिन कीनी विख्यातैं ॥२२॥
सीता सीतोदा द्वय जानो, तिन रिवा(नदी सुनि कानो। एक लाख अड़सठ सुहजारा, और विदेह विभंग विचारा ॥२१॥
तिन नदीन का सुन परिवारा, तीन लाख छत्तीस हजारा। और विदेह नदी गंगासी, चौंसठ सरिता दीरघ वासी ॥२२॥
तिन चौंसठ का सुनि परिवारा, आठ लाख छिनवे सु हजारा। सर्व नदी मिलवाओ वीरा, मूल और परिवार सुधीरा ॥२३॥
सत्तरह लाख वानवे हजारा, नव्वे मूल ऊपरै धारा। फिर उपसागर हैं चौंतीसा, इन आदिक जिन कुण्ड सु दीसा ॥२४॥
ये तो एक मेरु संग जानो, ऐसे ही पंचनमग मानो। हीन अधिकता जो परमाना, यथा योग्य जानो तुम स्याना ॥२५॥
लख योजन के मेरु सुदीपा, द्वय लख योजन उदधि सुदीपा। खण्ड धातकी चौ लख व्यासा, कालोदधि वसु लख कोव्यासा।२६।
पुष्कर षोडश लाख बताया, मानुषोत्तर अर्ध सुधाया। ऐसे योजन लख पैंताली, मनुष्य लोक जानो शिव पाली ॥ २७ ॥
मानुषोत्तर वलयाकारा, कनक मई पर्वत शुभ धारा। योजन सतरह सौ इक्कीसा, ऊंचा गिरि भाष्या जगदीशा ॥ २८ ॥
ता भू व्यास तना विस्तारा, एक हजार योजन मन धारा। ऊपर तेइस और मिलाओ, इतना मोटा तो भू पाओ ॥ २६ ॥
ऊपर चौड़ाई परमानो, योजन चव शत चौविस मानों। ता ऊपर इक वेदी भाई, चार हजार धनुष तुंगगाई ॥ ३० ॥
सवा कोश मोटी मन आनो, वलयाकृत ऊपर सो मानों। ताके ऊपर चव जिन गेहा, सो सुरखग पुजों करि नेहा ॥३१॥
गज दंतन पै बीस बताये, तीस कुलाचल के मन भाए। जम्बू शालमली दश जानो, ये जिन गेह जजों शिव थानो ॥३२॥
गिरि वखार असी जिन गेहा, पूजें मिटै पाप तै नेहा। विजयारध सत्तर सौ जानों, ते जिन गेह जजों अब हानों ॥ ३३॥

ये सब मनुष्य लोक के मांही, दो कम चौसठ जिन थल पांही। सुर खग तो प्रत्यक्ष जा पूजैं, हम इह थापि जजैं अघ धूजैं ।३४।

दोहा—— द्वीप अढ़ाई के विषैं, कहे थान जिन राज। बिना किये सुध मणिमई, ते पूजों शिव काज ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं अढ़ाई द्वीप सम्बन्धि पूजा जयमाला पूर्णार्घं ॥ इति० ॥

॥ द्वीपसमुद्रों के देवगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई–पुष्कराद्ध पशु लोक मझार, दक्षिण चक्षुमान सुरसार। याकी गति हर ते शिव होय, जे सिध जजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं तिर्यक लोक पुष्कराद्ध संबंधि दक्षिण दिशाया स्वामी चक्षुमान देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १ ॥

या ही पुष्कर अर्ध सुजान, उत्तर चक्षुमान सुरमान। या की गति हर ते शिव होय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तिर्यकलोकस्य पुष्कराद्ध द्वीप सबधि उत्तरदिशाया स्वामी चक्षुमान देवगति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २ ॥

पुष्कर सागर दक्षिण जान, श्री प्रभनाम देव सुख दान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध समुद्रस्य दक्षिण दिशाय स्वामी श्रीप्रभ देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३ ॥

या ही पुष्कर दधि में सार, उत्तर श्रीधर देव सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध समुद्र सबधि उत्तर दिशाया स्वामी श्रीधर देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

वारुणि द्वीप दक्षिण दिश जेय, वरुण देव स्वामी गिन लेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वारुणी द्वीप सबधि दक्षिण दिशाया स्वामी वरुण देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

या ही वारुणि द्वीप मझार, वरुण प्रभसुर उत्तर सार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वारुणी द्वीप सबंधि उत्तर दिशाया स्वामी वरुणप्रभदेव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

दक्षिण वारुण सागर मांहि, मध्य नाम सुर है तिस ठांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण दिश वारुणी द्वीप सबंधि उत्तरदिशा मध्य देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७ ॥

समुद्र वारुणी उत्तर सार, मध्य नाम देव हितकार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वारुणी समुद्र उत्तर दिशा सबंधि मध्यनामा देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

क्षीर द्वीप दक्षिण दिशि जान, पांडु नाम सुर अधिपति मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीर द्वीप सबंधि दक्षिण दिशायाः स्वामी पाडुक नाम देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

क्षीर द्वीप की उत्तर दिशा, पुष्पदंत सुर अधिपति लसा। या गति छेद भए भवपार, ते सिध जजों अरघ करि सार ॥

ॐ ह्रीं क्षीर द्वीप सबधि उत्तर दिशाया' स्वामी पुष्पदत नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

क्षीर उदधि की दक्षिण दिशा, विमल नाम सुर स्वामी लसा। याकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीरो दधि सबधि दक्षिण दिशाया. स्वामी विमल नाम देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

क्षीर समुद्र उत्तर दिश सार, विमल प्रभ सुर है निरधार। ताकी में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीर समुद्र सबधि उत्तर दिशाया: स्वामी विमल प्रभ नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

घृत सु दीप की दक्षिण दिशा, सुप्रभ सुर स्वामी तहँ लसा। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृत दीप सबधि दक्षिण दिशाया: स्वामी सुप्रभ नामा देवगतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

उत्तर दिशि घृत द्वीप मझार, महा प्रभ सुर ईसर सार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृ दीप सर्वधि उत्तर दिशाया. स्वामी महा प्रभ नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

घृत समुद्र सु दक्षिण सार, स्वामी कनक नाम सुर धार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृत समुद्र संबधि दक्षिण दिशाया' स्वामी कनक नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

घृत सागर के उत्तर जान, कनक प्रभ सुर स्वामी मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृत सागर संबधि उत्तर दिशाया' स्वामी कनक प्रभा नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

क्षुद्र द्वीप के दक्षिण सार, पुन्य नाम सुर स्वामी धार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र द्वीप संबधि दक्षिण दिशाया स्वामी पुन्य नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

क्षुद्र द्वीप उत्तर दिशि जान, पुन्य प्रभ सुर स्वामी मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र द्वीप सर्वधि उत्तर दिशाया. स्वामी पुन्य प्रभ नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

क्षुद्र समुद्र दक्षिण दिशि सार, स्वामी देव गन्ध सुर सार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र समुद्र संबधि दक्षिण दिशाया स्वामी देव गन्ध नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १९ ॥

क्षुद्र समुद्र उत्तर दिशि सार, महा गन्ध सुर स्वामी धार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र समुद्र सबधि उत्तर दिशाया. स्वामी महा गन्ध नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

द्वीप नंदीश्वर दक्षिण सार, नंद नाम सुर अधिपति सार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री नंदीश्वर द्वीप संबधि दक्षिण दिशाया स्वामी नंद नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २१ ॥

द्वीप नंदीश्वर उत्तर जेय, नंद प्रभ सुर स्वामी तेय। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप संबधि उत्तर दिशाया स्वामी नंदप्रभनामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

॥ नंदीश्वर द्वीप संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—नंदीश्वर चव दिश सही, बावन जिनके धाम। जहां जान शक्ती नहीं, जजों थापि इस ठाम ॥

ॐ ह्रीं अष्टम नंदीश्वर द्वीपे चतुर्दिक् द्विपचाशज्जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

चौपई—निर्मल जल शुभकारी लेय, मनवचतन बहु हर्ष धरेय। नंदीश्वर चव दिश जिन धाम, पूजों द्रव्य थकी शिव काम ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन घसि शुभ सार, निर्मल भाव सहित कर धार। नंदीश्वर चव दिश जिन धाम, पूजों द्रव्य थकी शिव काम ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल धोय अपार, ले आयो अपने कर धार। नंदीश्वर चव दिश जिन धाम, पूजों द्रव्य थकी शिव काम ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

सुर तरु के से फूल सुगन्ध, नाना वरण काम के फन्द। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, मोदक आदि अनेक सुभाय। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक रतन समान विहार, ले आयो शुभ पातर धार। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगन्धित सोय, ले आयो खेवन मन होय। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बदाम अनूप, पूगी फल ले आदिक तूप। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥ ८

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

छंद—अडिल्ल—

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु लाइये, दीप धूप फल मेल अर्घ करवाइये ॥
नंदीश्वर चव दिशा गेह भगवान के, ते सब इहां तैं पूजों कर सुर गान के ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर चतुर्दिक् संबंधि द्विपचाशत् जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

जयमाला

दोहा—

नदीसुर शुभ द्वीप में, जिन चैत्यालय सोय, बावन चव–दिश के सही, ते पूजों मद खोय ॥ १ ॥

मनुयानन्द की चाल—द्वीप नंदीश्वरा अष्टमा जानिये, तीर्थ जिन भवन महा पापहर मानिये।
मनुष्य का गमन नहिं तास थल मानिये, देव हरि लेय के शब्द सुख आनिये ॥ २ ॥
शची जुत आय हरि भक्ति जिन की करैं, पाप कर्म जारि शिव थान मनसा धरैं।
स्वर्ग सोलहतने हरी सवैं आयजी, ज्योतिपा व्यंतरा असुर यश गायजी ॥ ३ ॥
इंद्र सौधर्म ईशान द्वय जानिये, और असुरादि के इंद्र द्वय मानिये।
च्यारि दिशि चार हरि पूज जिनकी करें, पहर दो दो तनी भक्ति करि अघ हरैं ॥ ४ ॥
फिर वह इंद्र और दिशा को जाय है, या तरह दीप प्रक्रम्य निति दाय है।
आपना आपना लेय परवारजी, फिरै पूजते सभी देव हरपायजी ॥ ५ ॥
सभी निज मुख थकी शब्द जय जय करैं, गान नृत्य भक्ति कर आपने अघ हरै।
आठ दिन रैन दिन पुन्य उपजाय हैं, आपनो सुर तनों सफल पद लाय हैं ॥ ६ ॥
वरष इक मांहि वेर तीन सुर आय हैं, द्वीप नंदीश्वरै पूजि जिन लाय हैं।
मास फाल्गुन सु आपाढ़ कार्तिकविषै, ठानि शुभ जात ये भक्ति मुखतैं अखै ॥ ७ ॥
चार अंजन गिरी द्वीप में है सही, दधि गिरी वाणि में पोडशा सुखमही।
तीस दो रतिकरा सर्व बावन कहे, शीश सब के भवन जिन तने हैं रहे ॥ ८ ॥

किये बिना सकल विधि काल चिर की सही, मणि मई बिम्ब जिनराज सुकृत मही।
धन्य जो जीव यह थान पूजा करै, तास फल फिर नहीं जनम मरणा करै ॥ ६ ॥
दोहा—शक्ति नही हम जान की, भक्ती प्रेरे आय। तातैं मनवच "टेक" शुभ, पूजत मनवचकाय ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीप सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घं ॥ इति ॥

॥ नंदीश्वर द्वीप के पूर्व दिशा संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—पूरव दिशि जिन के भवन, तेरह जिन आवास। ते पूजों इहां थापि के, करण सकल अघ नाश ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापन।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चौपई—निर्मल उदधि चीर जललाय, कनक पात्र में धार सुभाय। नंदीश्वर पूरव दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा संबधि एक अञ्जन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्ट रतिकर गिरि स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥
चंदन बावन जल वसिवाय, कनक पात्र में धार शुभाय। नंदीश्वर पूरव दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पर्व दिशा सबधि एक अजन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्ट रतिकर गिरि त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन ॥ २ ॥
अक्षत शाल खंड को नांहि, नख शिख शुद्ध बीनकर लांहि। नंदीश्वर पूर्व दिश जोय, तेरह पूजों जिन थल सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अजन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्ट रतिकर गिरि त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥
नाना वरण गंध सुखदाय, ऐसे सुफूल लेय हम आय। नंदीश्वर पूरव दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अजन गिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्ट रतिकरगिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥
खाजा फीणी मोदक सार, इत्यादिक चरु लेय अपार। नंदीश्वर पूरव दिश जोय, तेरह जिनथल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अञ्जन गिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दीपक रतन मई तमहरा, ले आयो शुभ पात्रहि भरा। नंदीश्वर पूरव दिश जोय, तेरह जिनथल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अञ्जन गिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥
दश विध गंधलाय के सही, धूप करी लाया पुनि मही। नंदीश्वर पूरव दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अञ्जनगिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग बदाम, पूगी फल आदिक ले धाम । नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा सबंधि एक अंजन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प भाय, चरु वर दीप धूप फल लाय । ले नंदीश्वर पूरब जोय, तेरह जिनथल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा सबंधि एक अंजनगिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्य लयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल—
अंजन गिरि इक दधि गिरि चार बखानिये, रतिकर आठ सु पूरब दिशको मानिये ।
इनपै इक इक गेह देव जिन के सही पूजें सुर तो जाय, जजैं हम इस मही ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एकअंजनगिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरिस्थित त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं० ॥१०॥इति

॥ नंदीश्वर द्वीप के दक्षिण दिशा की पूजा ॥

दोहा—नंदीश्वर दक्षिण दिशा, तेरह जिन के धाम । जजैं देव तहां जाय कें, हम पूजैं इस ठाम ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिण दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन । अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापन ।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ।

॥ छंद वेसरी ॥

पदम कुण्ड का निर्मलनीरा, पात्र धार हर लायो पीरा । नंदीश्वर दक्षिण जिनगेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं० ॥ १ ॥

चन्दन गंध अगर सम होई, जल से घसि लायो शुभ जोई । नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल शुद्ध बताये, धोय शुद्ध जल तैं कर लाये । नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

नाना वरण फूल सुखदाई, गंध सहित लेकर थुति गाई । नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशाया त्रयोदश, जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा फीणी घेवर सारा, मोदक आदिक ले चरु प्यारा। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहौं जजौं ठानि बहु नेहा ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मईमन लाया, तमहर ज्ञान करा सुखदाया। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहौं जजौं ठान बहु नेहा ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप० ॥ ६ ॥

धूप सुगंध लेय दशभाई, लायो अधिक ठान अधिकाई। नंदीश्वर दक्षिण जिनगेहा, तेहौं जजौं ठान बहु नेहा ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं० ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लौंग बदामा, इन आदिक शुभ फल ले नामा। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहौं जजौं ठान बहु नेहा ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल० ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत चरु लाये, पुष्प सु दीप धूप फल भाये। नंदीश्वर दक्षिण जिनगेहा, तेहौं जजौं ठानि बहु नेहा ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥९॥

छंद अडिल्ल—

नंदीश्वर की दक्षिणदिश को जानिये, अंजनगिरि इक चव दधिमुख गिरि मानिये।
रति गिर आठ सदीव सकल दशत्रयगिरा, इनपे इक इक थान जिनेश जजौं खरा ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं० ॥ १० ॥ इति

॥ नंदीश्वर द्वीप के पश्चिम दिशा संबंधि पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

नंदीश्वर की पश्चिम दिश को जानिये, तेरह पर्वत मणिमय सुखदा मानिये।
तिन में इक इक गेह देव जिन के सही, पूजैं सुर तहां जाय जजैं हम इस मही ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः स्थापनं। अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

॥ मुनियानन्द की चाल ॥

लेयजल सुभग पातर विषैं सारजी, भक्ति मन वच तनी काय कर धार जी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजौं जिन पाय, धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल० ॥ १ ॥

वावना चन्दना रंग घसि जल करी, धार शुभ पात्र में वीनती उच्चरी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज. मानजी ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं० ॥ २ ॥

लेय विन खंड के अक्षता शुभ मई, ऊजले जोर सब श्वेत तिन शुभ मई।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिनपाय धनि जन्म निज मानजी ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

फूल गंध सहित ले भक्ति कर भायजी, रंग नानामई, रक्त पीताय जी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिनपाय धनि जन्म निज मानजी ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं० ॥ ४ ॥

सुभग नैवेद्यरस सहित सुन्दर सही, और ले मोदका भक्ति धर उर सही।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज मानजी ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं० ॥ ५ ॥

तमहरा मणि जिसे दीप का लाइये, थाल धरि हाथ में भक्ति मुख गाइये।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिनपाय धनि जन्म निज मानजी ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप दशविधकरी गंध सुखदायजी, खेवने आय कर भक्ति वर भायजी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज मानजी ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं० ॥ ७ ॥

लेय खारक तथा लोंग श्रीफल सही, आदि इन और फल आन पुनि की मही।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज मानजी ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश।जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

नीर चन्दना अछत फूल चरु सुखकरा, दीप फल धूप फिर मेल अर्घं करा।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धाम जी, जजों जिन पाय धरि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ६ ॥ इति

॥ उत्तर दिशा संबंधि पूजा ॥

दोहा—नंदीश्वर उत्तर दिशा, तेरह जिन वर धाम । सुर पूजैं तहां जायकैं, हम पूजैं इस ठाम ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ।

सोरठा—निर्मल नीर सुलाय, कनक पात्र धरि सुख मही । उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन पाय, गंध सहित बहु लाइये । उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं० ॥ २ ॥

अक्षत अति सुखदाय, उज्वल खण्ड विना लिये । उत्तर दिश जिनराय नदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत० ॥ ३ ॥

सुर तरु पुष्प सु भाय, नाना रँग युत लाइयो । उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प० ॥ ४ ॥

शुभ नैवेद्य बनाय, नानारस युत लाइयो । उत्तर दिश जिन राय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंद श्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय लाय, तमहर घट परकाशते । उत्तर दिश जिन धाम, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं० ॥ ६ ॥

धूप सुगंध मिलाय, दशविध की ले आइये । उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नद श्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्री फल लौंग बदाम, पिस्ता आदिक फल सही। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं० ॥ ८ ॥

जल चदन सु मिलाय, मेल द्रव्य वसु आनिये। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ छंद पद्धडी ॥

नंदीश्वर उत्तर दिश पिछान, तहँ तेरह जिन थल सुभग मान। ते पूजों द्रव्य मिलाय आठ, ताफल सब जल दे कर्म आठ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं ॥ १० ॥ इति

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—नंदीश्वर पूरव दिश जान, अंजन एक महा गिरि मान। ता ऊपर इक जिन के गेह, सो हूं जजों ठान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां अंजन गिरि सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ १ ॥

याही अंजन गिरि सम सोय, नील वर्ण अति सुन्दर होय। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशाया अजनगिरि सबंधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ २ ॥

या अंजन गिरि पूरव दिशा, नंदा नाम बावडी लसा। या में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीप पूर्व दिशायां नंदानाम वापिका गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ३ ॥

या नंदा वापी के मांहि, दधि गिरिनामा पर्वत पांहि। ताको उतपति को हर देव, तिन के पद पूजों करि सेव ॥

ॐ ह्रीं नंदोश्वर पूर्व दिशाया अजन गिरि सबंधि पूर्व नदानामा वापी दधि गिरिनामा पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ४ ॥

या ही दधि गिरि ऊपर जान, श्री जिन मंदिर मणि मय खान। ते हों मन वचकाय लगाय, पूजों जय जय शब्द कराय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां दधि गिरि सबधि शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ५ ॥

नंदोत्तर इस वापी तीर, पर्वत रतिकर दो शुभ वीर। तिन की उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां अंजन गिरित' पूर्व दिशायां नदोत्तरावापी सबंधि द्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ६ ॥

इन ही रति कर युगगिरि शीश, है जिन मंदिर युग दो ईश। तिन के पाय नमों मद खोय, ता फल शिव थानक सुर होय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अजन गिरि पूर्व दिशाया नंदानामा वापितः पूर्व दिशाया द्वयरतिकरनाम पर्वत सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ७ ॥

नंदा नाम बावड़ी सार, ताके पूरब दिश वन धार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशाया नदावापी पूर्वे दिशायां वन सबंधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

नंदानाम बावड़ो जोय, ताके दक्षिण वन है सोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पूर्वे दिशायां नंदा वाप्यः दक्षिण दिशाया वन सबधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ।

नंदीश्वर नंदा बावड़ी, ताकी पश्चिम दिश वन झडी। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ सजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीपे पूर्वे दिशायां नदा वाप्यः पश्चिम दिशायां वन सवधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्। १० ॥

नंदीश्वर नंदा बावड़ी, ताकी उत्तर दिश वन झड़ी। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीपे नंदा वाप्यः उत्तर दिशायां वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

नंदीश्वर पूरब दिश जान, नदवती वापी शुभ खान। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदवती वापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नंदवती इस वापी मांहि, है पर्वत मधि दधि गिरि ठांहि। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्वे दिशाया नदवतीवापीमध्ये दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

याही नंदवती मांही, दधि गिरि पै जिन मंदिर पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदवती वापी मध्ये दधि गिरि सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

नंदवती वापी इस तीर, रतिकर पर्वत नामा तीर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदवती वापी संबधि रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

इन ही रतिकर पर्वत ठौर, ऊपर जिन मंदिर अघ तोर। तिन में बिम्ब विराजै सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदवतीवापीस्थ रतिकर सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

नंदवती इस वापी तीर, पूरब दिश को वैन गंभीर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदवती वापी पूर्वे वन गतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

वापी नंद वती तिस पास, दच्छिण दिश वन सुख की रास। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नंदवती वापी दच्छिण वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

वापी नंदवती ढिग जान, पश्चिम दिश वन सघन पिछान। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नंदवती वापी पश्चिम वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

नंदवती इस वापी ठौर, उत्तर दिश वन सघन जु ठौर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नन्दवती वापी उत्तर दिशिविन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

नंदीश्वर पूरब दिश जान, नंदोत्तरा वावड़ी मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अंजन गिरि संबंधि नंदोत्तरा वापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

नंदोत्तर वापी इस मांहि, दधिगिरि नामा पर्वत पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अजन गिरितः दच्छिण नदोत्तरा वापी संबधि दधि गिरि पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २२ ॥

नंदीश्वर पूरब दिश जान, नंदोत्तर वापीका मान। मध्य विषैं गिरि दधि पै सोय, जिन मंदिर पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अजन गिरितः दच्छिणदिशायां नदोत्तरावापीसबंधि दधिगिरिपर्वतस्थित जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥२३॥

नंदोत्तर इस वापी तीर, पर्वत रतिकर दो शुभ वीर। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरा वापी संबधि द्वय रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

नंदोत्तरा वावडी तीर, रतिकर दोय तुंग धरि धीर। तिन पै चैत्यालय द्वय जान, तिनपद जजों मोक्ष फल दान ॥
ॐ ह्री नंदीश्वर पूर्व दिशायां नंदोत्तरा वापी संबधि द्वयरतिकरपर्वतस्थित जिन भवन जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

नंदोत्तरा वावडी पास, पूरब दिशा वनी जिन भास। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरा वापी पूर्व वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

नंदोत्तरा वावड़ी तीर, ताकी दच्छिण दिश वन वीर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरावापी दच्छिणदिशवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २७ ॥

याही नंदोत्तर वापी पास, पश्चिम दिश वन शोभारास। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरा वापी पश्चिम दिशवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नंदोत्तरा इस वापी तनो, उत्तर वन अति सुन्दर गिनो। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरावापी उत्तर दिशिवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

नंदीश्वर पूरब दिश जान, वापी है नंदपेणा मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अञ्जनगिरि उत्तर दिशि नंदपेणावापी सबधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

या नंदपेणा वापी मांहि, है दधिगिरि पर्वत सुख दांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां अजन गिरित. पश्चिम नदपेणावापी मध्ये दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

या नंदपेणा के शुभठान, है दधिमुख नामा गिरि जान। तापै जिनवर के शुभथान, तेहौं जजों जोर युग पान ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदपेणावापी सबधि गिरि शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

नंदपेणा इस वापी तीर, रतिकर दोय कहे दृढ धीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशाया नदपेणावापीतीर द्वयरतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

या नंदपेणा में रतिकरा, तिन पैं जिन मंदिर अघ हरा। तिन कों मनवचकाय लगाय, अर्घ चढाऊं अति हर्षाय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदपेणा वापीतीर द्वय रतिकर पर्वत जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

याही नन्दपेणा बावडी, ताकी पूरबदिश बन झडी। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पूर्वदिशायां नन्दपेणावापी पूर्ववनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

नन्दपेणा इस वापी मझार, दक्षिण दिशको है वनसार। ताको उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशाया नन्दपेणावापीदक्षिणदिशिवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

नन्दीश्वर पूरब नन्दपेण, वापी पश्चिमवन सुख देण। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशाया नन्दपेणावापीदक्षिणदिशि वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

नन्दीश्वर पूरब नन्दपेण, वापी पश्चिम वन सुख देण। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पूर्वदिशाया नन्दपेणावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

या नन्दषेणा वापी सोय, ताकी उत्तरदिश वन जोय । ताकी उतपतिछेदक मोय, ते सिध पूजों मन मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशायां नन्दषेणावापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

अडिल्ल छन्द—

नन्दीश्वर पूरबदिश अंजनगिरि सही, चव वापी चवदधि गिरि रतिकर वसु कही ।
षोडशवन गिरिवापी गतिहर सिध जजों, तेरह जिनके धाम भक्ति उरमें भजों ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पूर्वदिशाया एक अंजनगिरि चतुर्वापीसम्बन्धि चतुर्दधिगिरिअष्टरतिकरपर्वतषोडशवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

॥ दक्षिण दिशा सम्बन्धी पूजा ॥

अडिल्ल छन्द—

नन्दीश्वर की दक्षिणदिशको जानिये, अंजनगिरि पर्वत है सुखदा मानिये ।
ताकी उतपति छेद भये भव पारजी, ते सिध मन वच काय जजों थुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशायां अंजनगिरिसम्बन्धि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

नन्दीश्वर दक्षिणदिश भाय, अञ्जनगिरिपैं जिन थल पाय । ताकी भक्तिभावतें सही, पूजा करें अर्घ कर लही ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अंजनगिरिसम्बन्धिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

या ही अञ्जनगिरितैं सही, अरजा वापी पूरब कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशायां अंजनगिरितः पूर्वदिशायां अरजानामवापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

या अरजावापी मधिजान, दधिगिरि नामा पर्वत मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशायां अंजनगिरित: पूर्वदिशायां अरजानामावापी दधिगिरिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

याही दधिगिरि ऊपरि जेय, हैं, जिनमन्दिर परथम तेय । देव तहां पूजों मन लाय, मैंभी पूजों अर्घ बनाय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरदक्षिण दिशायां अरजावापी मध्ये दधिगिरिशीश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

याही अरजा वापी तीर, रतिकर दोय कहे गिरिधीर । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिण दिशाया अरजावापीतीरे द्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

नन्दीश्वरदक्षिणदिशि सार, अरजा वापी के तट धार । रतिकर पैं दो जिनके गेह, तेहों जजों ठान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशायां अरजानामावापीतोरद्वयरतिकर पर्वतशीशजिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ४७ ॥

अरजा वापीके सुखकार, पूरवदिशा महावन सार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशायां अरजावापी पूर्वदिशिवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

याही अरजा वापी तीर, दक्षिणदिश वन गहन गंभीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अरजावापी दक्षिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

याही अरजा वापी पास, पश्चिमवन, इक द्रुगकी रास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अरजावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

अरजा वापीके सुखदाय, उत्तरदिश वन जघर पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अरजावापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर दक्षिणदिश अञ्जनगिरि सही, ताकी दक्षिण विरजा वापी जल मही ।
ताकी उतपति छेद भए भव पारजी, ते सिध पूजों अर्घ थकी थुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर दक्षिणदिशा अजनगिरित. दक्षिणदिशविरजानामवापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

चोपई—विरजा इसही वापी मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत मांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों अरघ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर दक्षिणदिशायां विरजावापी दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

याही दधि गिरि ऊपर सार, जिनवरजी के मंदिर धार । देव तहां पूजे मन लाय, हम इस थल तें भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया विरजावापी दधिगिरिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

याही विरजा वापी तीर, रतिकर दोय महागिरि धीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशायां विरजावापी तीरद्वय रतिकरपर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

इनही रतिकर परवत शीश, है जिन मन्दिर शोभा दीश । देव इन्द्र पूजे इन मांहि, हम इस थानक भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशा विरजावापी रतिकर पर्वतशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

इसही विरजावापी तीर, पूरवदिशवन झम्मा धीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशाविरजावापी पूर्ववनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

याही विरजावापी पास, दक्षिण दिशा महावन रास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशा विरजावापी दक्षिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

ताकी पश्चिमवन गिन लेय, वापी विरजा गुण मय तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशाविरजावापी पश्चिमवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

वापी विरजा इसही पास, उत्तर दिशा महावन रासि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा विरजावापी उत्तरदिशावनगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

नन्दीश्वर दक्षिण दिश जान, अंजन गिरि ते पश्चिम मान । वापी गतशोका जल खानि, या गति छेद जजों अघहानि ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा अंजनगिरि पश्चिमदिशा गतशोकानाम वापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

योगत शोका वापी मांहि, है परवत दधि गिरि सुख ठांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा अजनगिरि पश्चिमदिशागतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

याही दधि गिरि ऊपरि सही, है जिन मन्दिर तीरथ मही । पूजै देव महा शुभ लाय, हम इहं पूजैं अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा गतशोकावापी मध्य दधिगिरिशीशजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

या गत शोका वापी तीर, रतिकर दोय बडे गिरि धीर । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर दक्षिणदिशागतशोकावापीतीर द्वयरतिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

इनही रतिकर पर्वत शीश, है जिन मंदिर जगपति ईश । देव जजैं इस थल तो जाय, हम इहां भावन अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा गतशोका वापी तीर द्वयरतिपर्वतशीश जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

यागत शोका वापी तनो, पूरब दिश वन शोभा वनो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशागतशोकावापी पूर्वदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

या गतशोका वापी सार, ताकी दक्षिण दिश वन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा गतशोकावापी दक्षिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

वापी गत शोका इस ठाम, पश्चिमदिश वन सुन्दर धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशागतशोकावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६८॥

या गतशोका वापी जेय, ताके उत्तर दिश वन तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशागतशोकावापीतीर उत्तरदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

नन्दीश्वर दक्षिण दिश जान, वीत शोक वापी गत मान । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा अंजनगिरि उत्तरदिशावीतशोकानामवापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

वीत शोक वापी की ठोर, दधि गिरि पर्वत जल मधि जोर । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा अजनगिरि उत्तरदिशावीतशोकावापी मध्यगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥७१॥

याही दधि गिरि ऊपर सही, तीरथ भलो पाप हर मही । सुन्दर जिनको धाम निवास, मैं पूजों पूरो मन आस ।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशवीतशोकावापी दधिगिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

वीत शोक वापी के तीर, रतिकर दोय तुङ्ग बहु धीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकानाम वापी तीरद्वयरतिकरपर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥७३॥

इनही रतिकर के सिर जेय, विगर किये सुन्दर जिन गेह । देव जजैं प्रत्यक्षहि जाहिं, हम त्रिन शक्ति जजैं इस ठाहिं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकावापी तीरद्वयरतिकरशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

वीत शोक वापी इस पास, पूरव दिश वन द्रुम की रास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकावापी पूर्ववन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

याही वीतशोका बावडी, याके दक्षिण दिश वन झडी । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर दक्षिण दिशावीतशोकावापी दक्षिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

वीत शोकवापी या सार, ताके पश्चिम दिश वन धार । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकवापीपश्चिमववनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

वापी वीत शोक सु जान, ताके उत्तर दिश वन मान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजो अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकावापी उत्तरदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७८ ॥

गीता छन्द— दीप नन्दीसुर सुदक्षिण एक अंजन गिरि सही, चार वापी मांहि दधिगिरि चार तेभी शुभ मही ।
आठ रतिकर सकल त्रयदश, गिरि यहां जिन धाम है । ते जजौं षोडश वना आदिक छेदने गति ठाम है ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा एकअंजनगिरिचतुर्दधिगिरि अष्टरतिकर पर्वतगतिच्छेदकसिद्धेभ्योः त्रयोदशजिनचैत्यालयस्थगिरिचतुर्वापिका-षोडशवन त्रयोदशगिरिगतिच्छेदकजिन पूजा महार्घम् ॥ इति ॥

॥ पश्चिमदिशा सम्बन्धि जिन पूजा अर्घ ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर पश्चिमदिशि अंजन गिरि सही, तुम मनोहर धाम शोभते अति मही ।
याकी गति हर भये सिद्ध अघ हारिया, ते सिध पूजों अर्घ थकी थुति धारिया ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशि अंजनगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८२ ॥

चौपई—याही अञ्जनगिरि पे जान, पापहारि जिन थान सु मान । देव धन्य जे तहँ पर जाय, पूजैं हम इह भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा एक अंजनगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

याही अंजन गिरि ते जान, विजयावापी पूरव मान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ नन्दीश्वर पश्चिमदिशा अंजनगिरि पूर्वदिशा-विजयनामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

याही विजया वापी मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत पांहि । तापें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अंजनगिरि पूर्वदिशा विजयनामावापीसम्बन्धि दधिगिरि गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

विजया वापी दधि गिरि शीश, जिन मन्दिर हर जगके ईश । देवनि करि जहँ पूजा होय, हम इहां पूजें सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अजनगिरिपूर्वदिशाविजयवापी मध्यदधिगिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

याही विजया वापी तीर, रतिकर द्वय पर्वत अति धीर । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाअजनगिरिपूर्वविजयावापी तीरेद्वय रतिकरपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

इसही रतिकर पर्वत सही, है जिन मंदिर पुनि की मही, पूजें देव तहां शुभ लाय, हम यहां पूजें अर्घ बनाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयावापी तटद्वय रतिशीशजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

याही विजया वापी तीर, पूरववन अति गहन गंभीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयावापीतटपूर्ववनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

विजयानाम बावडी येह, ताकी दक्षिण दिश वन जेह। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयानामवापीदक्षिणदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

विजया वापी पश्चिम सार, महा गहनवन शोभा धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयानामबावडो पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९१ ॥

उत्तरदिश वन गुण की राश, याही विजया वापी पास। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयावापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९२ ॥

नन्दीश्वर पश्चिम दिश जान, वापी वैजयन्त इक मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशवैजयन्तीनामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९३ ॥

याही वैजयन्त के मांहि, दधि गिरिनाम महागिरि ठांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशावैजयन्तीवापिकामध्यदधिगिरिपर्वतगिरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९४ ॥

वैजयन्त वापी की ठौर, दधि गिरि ऊपर जिन थल जोर। तहां देव ही पूजा करें, हम इहँ भावन भाय अघ हरें ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशावैजयन्ती वापिकादधिगिरिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

याही वापी के मुख सार, रतिकर दोय महा सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा वैजयन्तवापीमध्यरतिकरपर्वतगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

इनही रतिकर ऊपर सही, जिन को मंदिर तीरथ मही। तिनको देव जजैं शुति लाय, मैं भी पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी रतिकरपर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९७ ॥

वैजयन्त इस वापी तीर, पूरब दिश वन शोभा वीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अरघ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशावैजयन्तीवापी पूर्वदिश वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९८ ॥

वैजयन्त इस वापी पास, दक्षिणवन अति शोभा राश । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी दक्षिणदिशवनवतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९९ ॥

वैजयन्त इस वापी ढिगै, पश्चिम दिश वन शोभा लगै । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी पश्चिमवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०० ॥

वापी वैजयन्ती जान, उत्तरदिश वन द्रुम की थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी उत्तरदिशवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०१ ॥

नन्दीश्वर पश्चिमदिश जान, वैजयन्ति वापी जल खान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा अजनगिरि पश्चिमदिशा वैजयन्तीनामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०२ ॥

विजयन्त वापी के मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत पांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाजयन्ती नामावापी मध्यदधिगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०३ ॥

वापि जयन्ती के मधि ठोर, दधि गिरि पे जिन मंदिर जोर । तहां जाय सुर पूजा करें, पूरव बांधे अघ को हरें ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाजयन्तीवापीदधिगिरिशीशजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०४ ॥

जयन्ती इस वापी तीर, रतिकर द्वय पर्वत अति धीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाजयन्ती वापी तटद्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०५ ॥

इनही रतिकर पर्वत सही, है जिन मंदिर पुण्य सु मही । धन्य देव हर पूजैं तहां, भावन हम पूजैं इस ठहां ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशाजयन्ती वापी तटरतिकर पर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०६ ॥

जयन्ती इस वापी तने, पूरबवन अति सुन्दर बने । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाजयन्ती वापी सम्बन्धि पूर्व वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०७ ॥

या जयन्ति वापी के तीर, दक्षिण दिस वन शोभा धीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशा जयन्ती दक्षिणवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

याही जयन्ती है बावडी, ताकी पश्चिम दिशवन झडी। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा जयन्तीनामावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०६ ॥

वापी नाम जयन्ती पास, उत्तरदिशा महावन तास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशाजयन्तीवापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११० ॥

नन्दीश्वर पश्चिम दिश जान, है अपराजित वापी मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिमदिशा अजनगिरि उत्तरदिशा अपराजितानामवापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

या अपराजित वापी मांहि, दधिगिरि नामा परवत पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिमदिशाअपराजितानामवापीदधिगिरिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

या अपराजित वापी मांहि, दधि गिरि पे जिन थान बतांहिं। पुण्य बिना तहां जान न होय, यों हम इहां जजें सुध होय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वरपश्चिमदिशाअपराजितानामवापीमध्यदधिगिरिसम्बन्धिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

अपराजिता वापिका पास, रतिकर नाम महागिरि भास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वरपश्चिमदिशा अपराजितानामवापीतटद्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११४ ॥

इनही रतिकर पर्वत शीश, है जिन मंदिर विशवा बीस। पूजे देव सेव बहु लाय, ते थल में भी जजों सुभाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अपराजितानाम वापीतट रतिकर पर्वत शीशजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११५ ॥

याही अपराजित के पासि, पूरवदिश वन द्रुम की रासि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिमदिशा अपराजितवापी पूर्व दिशवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

याही अपराजित बावडी, ताकी दक्षिणदिशि वन झड़ी। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशा अपराजितवापीदक्षिणदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११७ ॥

वापी अपराजिता सु मान, ताकी पश्चिमदिश वन जान। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा अपराजितावापी पश्चिमवनगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११८ ॥

वापी इस अपराजित मांहिं, उत्तर दिश वन शोभा ठाहिं। ताकी उत्पत छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिमदिशा अपराजितानामवापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

छन्द गीता—द्वीप नंदी सुर सुपश्चिम येक अंजन गिरि सही, चव वापिका में चार दधि गिरि आठ फिर रतिकर मही।
सब तीन अरु दश मेल ऊपर देव जिनके थानजी, ते जजौं पोडश वनादिक गती हर सिध जानजी ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अपराजितवापीसम्बन्धि एक अजनगिरिचतु दधिगिरिअष्टरतिकरचववापीपोडशवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम्॥१२०॥

॥ उत्तर दिशा पूजा लिख्यते ॥

छंद वेसरी—नन्दीश्वर उत्तरदिश भ ई, अंजन गिरि इक परवत थाही। तामें उतपति छेदक देव, तिन पद जजों धार उर सेव ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा अजनगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२१ ॥

चौपई—याही अंजन गिरि पे जान, है जिनमंदिर तीरथ मान। पूजैं देव सकल भव हरें, हम यहां जजें अर्घ अघ हरें ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा अजनगिरिशीशजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२२ ॥

नन्दीश्वर उत्तर दिश मान, रम्यानाम बावडी मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा अजनगिरि पूर्वदिशारम्यानामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२३ ॥

याही रम्यावापी मांही, दधि गिरि नामा पर्वत पांही। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यानामा वापी मध्य दधिगिरि पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२४ ॥

याही दधि गिरि ऊपर जेय, रतन मई जिनवर के गेह। पूजैं धनपति तो वहाँ जाय, हम भावन यहाँ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यानाम वापी दधिगिरि सबधि जिन चैत्यालस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२५ ॥

याही रम्यावापी तीर, रतिकर दोय तुंग अति धीर। तिन गतिछेद भये सिद्ध होय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी मध्य द्वय रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२६ ॥

इनही रतिकर गिरि पे जान, श्री जिन राजभवन सुख खान । देव सबै पूजे तहां जाय, हम इस थल ते भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरउत्तर दिशा रम्यावापी तीर द्वय रतिकर गिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ १२७ ॥

याही रम्यावापी पास, पूरब दिश वन शोभा रास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजौं अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी पूर्व दिशा वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२८ ॥

याही रम्या वापी ढिंगें, दक्षिण दिशवन सुन्दर जगें । ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी दक्षिण वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२९ ॥

रम्या इस वापी के पास, पश्चिम दिशवन द्रुम की रास । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी पश्चिम वनगच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३० ॥

रम्या वापी इसके धरा, उत्तर दिश वन शोभे खरा । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी उत्तर वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३१ ॥

नंदीश्वर उत्तर दिश धरा, नाम रमणिया वापी खरा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर अजनगिरि दक्षिण दिशा रमणीयानाम वापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३२ ॥

या रमणीया वापी मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत पांहि । ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापी दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३३ ॥

याही दधि गिरि ऊपर जेय, जिन मंदिर के सुन्दर गेह । ताकूं पूजै सुर हरि आय, हम यहां पूजत भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापी मध्य दधिगिरि संबन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३४ ।

या रमणीया वापी कने, रतिकर द्वय पर्वत दुख हने । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापी तीरद्वय रतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३५ ॥

इनही रतिकर ऊपर सार, है जिन मंदिर अघ के हार । तिन पद जजें पाप क्षय होय, तातें हम पूजें मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापी तीरद्वय रतिकर पर्वत ऊपरि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३६ ॥

नाम रमणिया वापी जेय, ताके पूरव दिश वन तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापीपूर्व वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३७ ॥

वापी नाम रमणिया भली, ताकी दक्षिण दिश वन रली । ताकी उत्पति छेदक सोय,ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापीं दक्षिण दिशि वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१३८॥

वापी भली रमणीया येह, ताकी पश्चिम दिश वन तेह । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर दिशा रमणिया वापी पश्चिम वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३६ ॥

याहि रमणिया वापी पास, ताकी उत्तर वन द्रुम रास, ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा रमणीया वापी उत्तर वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४० ॥

नंदीश्वर की उत्तर दिशा, सुप्रभनाम बावडी लसा । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशायां अजनगिरि पश्चिमदिशा सुप्रभनामवापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४१ ॥

याही सुप्रभ वापी मांहि, दधि गिरि नामा परवत पांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभावापी मध्यदधिगिरिपर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४२ ॥

याही सु दधि गिरि ता ऊपरे, हैं जिन भवन भवि के अघ हरे । पूजैं पुण्य धार पुनि लेय, हम इहां जजैं भाव करि तेय॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभानामवापी दधिगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४३ ॥

याही सु प्रभा वापी जान, ताकी तीर सु रतिकर मान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदिशा सुप्रभावापी तीरद्वय रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४४ ॥

इनही रतिकर के सिर सार, हैं जिन भवन पाप क्षय कार । पूजैं भव्य पुण्य उपजाय, हम यहां जजैं सकल मद ढाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभानामवापी तटद्वय रतिकर गिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४५ ॥

नाम सुप्रभा वापी येह, ताकी पूरब दिश वन तेह । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभावापीपूर्वदिशावनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४६ ॥

नाम सुप्रभा वापी येह, ताकी दक्षिण दिशवन तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशासुप्रभानामवापी दक्षिणवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४७ ॥

याहि सुप्रभा वापी तीर, पश्चिम दिश वन गहन गंभीर। ताकी उतपत्ति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभावापी पश्चिमदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १४८ ॥

याहि सुप्रभा वापी लार, उत्तर दिश वन शोभे सार। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशासुप्रभावापी उत्तरदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४९ ॥

नन्दीश्वर उत्तर दिश माहिं, यशोभद्र वापी तहँ पाहिं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरउत्तरदिशाया यशोभद्रवापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५० ॥

यशोभद्र वापी के विषै, दधि मुख नामा पर्वत लसै। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी मध्य दधिमुखगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५१ ॥

याही दधि गिरि परवत माहिं, श्रीजिन मंदिर अति सुख दाहिं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां दधिगिरि मध्य जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १५२ ॥

याही वापी के मधि जान, रतिकर दोय महा सुख दान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशाया यशोभद्रवापी मध्य द्वे रतिकर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५३ ॥

इन रतिकर के ऊपर जान, जिन मंदिर दो सुख की खान। तामें श्रीजिन प्रतिमा सोय, ते मैं जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशाय यश भद्रवापी मध्य द्वे रतिकर सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५४ ॥

यशोभद्र वापी के तीर, रव दिशवन गहर गँभीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते मैं जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी पूर्ववनउत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५५ ॥

यशोभद्र वापी जल भरी, ताकी दक्षिण दिश वन खरी। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी दक्षिणवन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५६ ॥

यशोभद्र वापी है बडी, ताकी पश्चिम दिश वन झडी। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी पश्चिमदिशावन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५७ ॥

यशोभद्र वापी सुखकार, ताकी उत्तर दिश वन सार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशायां यशोभद्रवापिका उत्तरवन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५८ ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर उत्तर इक अंजन गिरी सही, चवदिश वापी चार मध्य दधि गिरि मही।
रतिकर अष्ट सु पोडश वन भी जानिये, तेरह जिनके गेह पूज अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा एक अंजनगिरि चतु दधिगिरिअष्टरतिकर पर्वत तथा चतुर्वापी सम्बन्धि पोडशवनगतिच्छेदक त्रयोदशजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५९ ॥

छंद गीतिका—वर दीप नन्दीश्वर सु चव दिश, चार अंजन गिरि सही। तहँ चतुर्दिश वापी सुपोडश, तिन विषे दधि गिरि मही ॥
सब जान तीस रु दोय रतिकर, सकल बावन थान हैं। तिन ऊपरै जिन गेह बावन, ते जजों शुभ जान हैं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप चतुर्दिशचतुरअञ्जनगिरि पोडशदधिगिरिद्वात्रिंशत्रतिकरपर्वत द्विपंचाशज्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६० ॥

॥ जयमाला ॥

छंद गीतिका—अब आरती सुनि दीप नंदीश्वर तनी सुख कारनी। तिन मांहि दीप सुमुद्रका विस्तार शुभ हित कारनी ॥
फिर द्वीप अष्टम मांहि जिन थल, तासकी महिमा सही। जो धरे अपने उर विषैं भवि, लहै सुर शिवकी मही ॥१॥

॥ वेसरी छंद ॥

जंबू द्वीप दीप सिरताजा, जोजन लाख कह्या जिनराजा। पहला लवण समुन्दर गाया, दोय लाख जोजन बतलाया ॥२॥
दूजा द्वीप धातकी भाई, जोजन चार लाख ध्वनि गाई। कालोदधि का सुन विस्तारा, जोजन आठ लाख सब सारा ॥३॥
पुष्कर तीजा द्वीप बताया, पोडशलख जोजन मन भाया। ता विचि मानुपोत्तर है भाई, कंचन वरण महा सुखदाई ॥४॥
तीजा समुद्र तना विस्तारा, जोजनलाख बत्तीस अपारा। चौथे दीप तनी सुनि बाता, चौसठ लख जोजन विख्याता ॥ ५ ॥
येक कोडि फिर लाख अठाई, व्यास इतो जानो श्रुत गाई। चौथे समुद्र तना विस्तारा, या विधि जान लेहु बुधि सारा ॥६॥

छप्पनलाख कोडिद्वय जानो, पंचम दीप महा शुभ थानो । पंचकोडि द्वादश लख भाई, पञ्चम समदव्यास अधिकाई ॥७॥
पष्टम द्वीप कोडि दश जानों, ऊपर लख चौबीस वखानो । बीस कोडि अडतालीस लाखा, पष्टम सागर जिन धुनि भाखा ॥८॥
छिनवें लाख कोडि चालीसा, सप्तमद्वीप अधिक मन दीशा । सप्तमसागर कोडि इक्यासी, लाख वानवें ऊपर भासो ॥ ९ ॥
येक सैंकडा त्रेसठि कोडी, चौरासी लख ऊपर जोडी । अष्टमद्वीप तनों विस्तारा, दुगुन दुगुन जानों इम सारा ॥ १० ॥
ताके इक इक दिश में भाई, अंजन गिरि इक इक सुखदाई । सहस चौरासी तुंग बताये, इतने ही चौड़े सब गाये ॥ ११ ॥
तल ऊपर इकसा है व्यासा, ढोलाकार कह्यो मन रासा । श्याम वरण कज्जल सम होई, चवदिश मणिमय वेदी सोई ॥१२॥
इक इक अंजन चव दिश जानो, चार चार वापी जल खानो । लख जोजन वापी विस्तारा, चवकूंटी तल ऊपर धारा ॥१३॥
ऊँडी जोजन इक हजारा, निरमल नीर भरी सुखकारा । नंदा नंदवती द्वय जानो, और सुनो आगे व्याख्यानो ॥१४॥
नन्दोत्तरा सु तीजी होई, चोथी नन्दश्रेणा सुनि सोई । ये तो चार बावडी मानो, पूरव दिश अति सुखकी थानो ॥१५॥
अरजा विरजा गतशोकाजी, वीतशोक चोथी चोखाजी । ये चव वापी दक्षिण कानी, और सुनो होवै भ्रम हानी ॥१६॥
विजया वैजयन्त सुखकारी, जयन्ती अपराजित भारी । ये चव पश्चिमदिश की जानो, अब सुनि और चतुक अधिकानो ॥१७॥
रम्या रमणीया शुभभाजी, यशोभद्र चौथी सुशुभाजी । ये चव उत्तर दिश को होई, ये सब मिलि षोडश विधि सोई ॥१८॥
तिनमें इक इक दधि गिरि जानों, जोजन दश हजार तुंग मानों । श्वेत वरण मणि सो आकारो, दोदो रतिकर वापी लारो॥१९॥
एक सहस तुंग रतिकर सारे, ताये कनक समा रंग धारे । ऐसे रतिकर जान बत्तीसा, षोडशदधि गिरि जान महीसा ॥२०॥
अंजन गिरि चव और मिलावो, सबही बावन पर्वत पावो । ये सब परवत गोल बताये, नीचे ऊपर को समझाये ॥२१॥
जेता व्याम तुङ्ग तेता ही, ढोलाकार सबै वैताही । इन सब पे इक इक जिन गेहा, रतन कनकमय शोभा जेहा ॥ २२ ॥
सब गिरि वापी बनके भाई, चव दिश वेदी हिम सम थाई । जो यहां जिनके गेह बताये, सोतो अघहर तीरथ गाये ॥२३॥
देव जाय पूजे हैं भाई, मनुष नहीं पहुंचे तिस ठांई । वर्ष एक में तीन उछावा, कार्तिक फाल्गुण साढ सुभावा ॥२४॥
तीन काल पूजैं हैं देवा, ता फल पूजा का शिव लेवा । हम भी मन वच काय लगाई, अरघ चढाय अधिक हरषाई ॥२५॥
दोहा—नंदीश्वर चव दिश कहे, बावन जिनके थान । नमों तास लव लाय के, भवभव मंगल जान ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप सम्बंधि चतुर्दिशा पूर्ण जयमाला पूर्णार्घं ॥

नवमद्वीप आदि जिन पूजा लिख्यते ॥

चौपाई—अरु नदी परवत मन लाय, बहु विसतार शुभग थल पाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवम अरुणवर द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

याही अरुण दीप में सही, स्वामी अरुण प्रभू सुर मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवम अरुण द्वीप वासी अरुणप्रभनामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

अरुण समुद्र विषैं सुखकार, जलचर जीव विना मन हार। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणवर नवम समुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

स्वामी अरुण सु सागर मांहि, सिसिगंध सर्व गन्ध सुपांहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणवर समुद्र स्वामी सिसिगंध अरसर्वगन्ध सुरगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ४ ॥

अरुण भास दीप मन लाय, है दशमों सबको सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

अरुणाभास तना मनलाय, स्वामी अरुणभास सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास द्वीप स्वामी अरुणाभास गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

अरुणभास समुन्दर मांहि, जलचर जीव उपजै नांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास समुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

अरुणभास दधि स्वामी होय, स्वामी सुरति सुर जानों सोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास समुद्र स्वामी सुरगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

॥ कुंडल गिरि संबंधी जिन चैत्यालय पूजा लिख्यते ॥

छंद अडिल्ल—कुंडल दीप मझार एक गिरि जानिये, कुंडल की उपमान वलयाकृत मानिये।
ताके चव दिश चव जिनवर के धाम हैं, ते हों यहां ले जजों सुरग शिव काम है ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावत्रावतर सवौषट् आह्वाननं ॥

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई—निरमल उदक महा सुखकार, कनक झारिका में धरि सार । कुंडल गिरि चव दिश जिन गेह, तेहूँ पूजें धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुडलगिरि चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥१॥

चंदन गंध मलयागिर जान, सो घसि नीर थकी हम आन । कुंडल गिर चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक् संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदन ॥२॥

अक्षत उज्ज्वल बीन मंगाय, धोय महा शुध कर हम लाय । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥३॥

सुर तरु के से फूल सु सार, गंध सहित लाये अधिकार । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥४॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, मोदक आदि सु सुभग ले आय । कुंडलगिरि चवदिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बह नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिश सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

दीपक रतन महातम हार, सो ले आयो कर धर सार । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि चतुर्दिश संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥६॥

दशधा धूप बनाकर लाय, खेवन कों आयो उमगाय । कुंडल गिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चवदिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥७॥

श्रीफल लोंग बिदाम अपार, खारक आदि लेय फल सार । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुडलगिरि चतुर्दिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥८॥

जल चंदन अक्षत कुसुमान, चरु वर दीप धूप फल आन । मेल अरघ कर लायो सही, पूजों कुंडल गिरि शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चवदिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

प्रत्येक अर्घ

चौपई—कुंडल गिरि पूरव दिशि जान, है जिन मंदिर तीरथ मान। देव जाय पूजें उस मही, हम इहां जजैं अरघ ले सही ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जेय, हैं जिन भवनपूज्य जग तेय। सुर खग तो पूजें तहां जाय, हम पूजें इह भावन भाय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश जेय, हैं जिन भवन पूज्य जग तेय। पूजें देव पुण्य उपजाय, इहाँ हम अर्घ जजें थुति लाय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

उत्तर दिश कुंडल गिरि जान, ऊपर जिन मंदिर सुख खान। पुण्य विना जावो नहिं बने, तातें यहां ते पूजा ठनें ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि उत्तर दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जान, तापे वज्र कूट पहिचान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा वज्रनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही वज्र कूट पे सही, वज्र नाम सुर निवसे मही। याकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा वज्रनाम कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जेय, वज्र प्रभा तहां कूट गिनेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा वज्रप्रभ नामकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

याही कूट वासिया सार, वज्र प्रभ सुर नाम सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ सजोय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि संबधि पूर्व दिशा वज्रप्रभ कूटवासी वज्रनामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जान, कनक नाम शुभ कूट समान। याकी उतपति छेदक सोय ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा कनकप्रभ नामकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

याही कनक कूट पे सही, कनक देव बसैं है यहीं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा कनक नामा कूटवासी कनकप्रभ देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश सार, कनक प्रभा शुभ कूट सु धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा कनकप्रभ नामाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

याही कूट ऊपरै जेय, कनक प्रभ सुर निवसै तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा कनक प्रभानामाकूट वासी कनक प्रभादेव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जान, सिद्ध कूट जापे जिन थान। तिनमें बिंब विराजे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा सिद्धकूट जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥१३॥

ऐसे कुंडल गिरि के सार, कूट पांच वासी सुरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा संबंधि पञ्चकूट वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१४॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जेय, कूट रजत जानों शुभ तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजत कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१५॥

याही रजत कूट पे सही, नाम रजत सुख से है कही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजत कूट वासी रजत देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१६॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश सार, कूट नाम रजताम सु धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजताम नाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१७॥

या रजताम कूट के मांहि, नाम देव रजताम रहांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजताम देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१८॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश मान, सुप्रभ नामा कूट सुजान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सुप्रभनामा कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१९॥

कूट सु प्रभा या सम जान, देव सु प्रभा रहै हित मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध-पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सुप्रभनामा कूट वासी सुप्रभ नाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥२०॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जान, महा प्रभा इक कूट पिछान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा महाप्रभा कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥२१॥

कूट महा प्रभा के मांहि, देव महाप्रभ एक रहाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुडल गिरि दक्षिण दिशा महाप्रभ कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जेय, सिद्धातन है कूट सु तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डल गिरि सिद्धायतन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जान, देव बसै यो कूट प्रमान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सबंधि सिद्धायतन कूटवासी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश जान, अंक कूट शोभा की खान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डल गिरि पश्चिम दिशा अंककूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

इस ही कूट ऊपरै कही, देव अंक बसै यहाँ सही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिपश्चिमदिश अक कूटस्थित अक नाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

कुंडलगिरि पश्चिम दिश तास, कूट अंकप्रभ नामा जास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा अङ्क प्रभनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

याही कूट अङ्क प्रभ मांहि, देव अङ्कप्रभ नाम कहांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा अक प्रभनामा कूटवासी अंक प्रभदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश जास, है मणिकूट नाम परकास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशामणिकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

याही शुभ मणि कूट सुमांहि, देव रहै मणि नामा ठांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशामणिकूटवासी मणिकूट नामदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

कुंडल गिरि ऊपर सुखकार, मणिप्रभ कूट कह्यौ निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशामणिप्रभकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

कुंडलगिरि पश्चिमदिश जान, मणिप्रभ कूट देव तिथि मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा मणिप्रभकूटवासी मणिप्रभदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश सार, कूट कह्यो सिद्धायतन सार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा सिद्धायतन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

कुंडल गिर पश्चिम की दिशा, ऐसे कूट पंच शुभ लसा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशासम्बन्धि पचकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

कुंडल गिरि उत्तर दिश सार, रुचक कूट नामा सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा रुचकनामा कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

याही रुचक कूट के मांहि, रुचक नाम सुर निवसै ठांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा रुचकनामा कूटवासी रुचकनामादेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३४ ॥

कुंडल गिरि उत्तरदिश सार, है रुचकाम कूट सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशारुचकाम नाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

या रुचकाम कूट की मही, है रुचकाम देव थिति सही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशारुचकाम कूटवासी रुचकाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

कुंडलगिरि उत्तर कूं जेय, है हिमवत शुभ कूट सुलेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा हिमवतकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

याही हिमवन कूट मझार, देव रहैं हिमवत ही सार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा हिमवतकूटवासी हिमवत देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

कुंडल गिरि उत्तर दिश सही, मन्दिर कूट सोलवीं कहो। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा मदिरनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

इसही कूट ऊपरै जान, मंदिर नाम देव हित मान। ताकी उतपति छेदक सोय ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिउत्तरदिशा मदिरनाम कूटस्थित मंदिरनाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

कुंडलगिरि उत्तर दिश जान, सिद्धायतन कूट पहचान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिउत्तरदिशासिद्धायतन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

कुंडल गिरि की उत्तरदिशा, ऐसे पांच कूट सुर वसा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा पञ्चकूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—

कुण्डल गिरि है ग्यारमो, तापे कूट सु वीस। चार है ऊपर जिन भवन, ते वंदों निश दीश ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

कुण्डल द्वीप ग्यारमो जानो, ता मधि परवत इक अधिकानो। तापे कूट वीस है भाई, तिनके नाम सुनों सुखदाई ॥ २ ॥
वज्रकूट वज्राप्रभ कूटा, कनक फेरि कनकाप्रभ छूटा। ये तो चार कूट सुनि भाई, पूरव दिश जानो सुखदाई ॥
रजतकूट कूटारजताभा, सुप्रभ महाप्रभा कर लाभा। ये चव दक्षिण कूटें जानो, अब सुनि पश्चिम कूट सुथानो ॥ ४ ॥
अंक अंकप्रभा मणि कूटा, मणिप्रभा में सब सुख लूटा। ये चव कूट पश्चिम को जोई, उत्तर कथा सुनो जो होई ॥ ५ ॥
रुचक कूट रुचकाम सु जोई, हिमवत मन्दिर कूट जु होई। उत्तर दिशा कूट जो गाये, ये सव चव दिश कूट सु पाये ॥६॥
इन सब कूटन पे सुर वासा, कूटनाम जो सुर का जासा। इन सबके भीतर चवकूटा, तिनपे जिन थल हैं अघ छूटा ॥७॥
ऐसे कुंडलगिरि में भाई, रचना कही महा सुखदाई। कुंडलगिरि का नीचै व्यासा, दस हजार द्वयसै विस भासा ॥८॥
ऊपर व्यास सु चार हजारा, द्वयसै चालिस जोजन धारा। ऊँचा कुंडल गिरि पहचानो, जोजन सहस पचेत्तर मानों ॥६॥
कुंडल गिरि का वर्णन भाई, कनक जिसा सबको सुखदाई। रचना और अनेक वताई, सो श्रुत में जानो अधिकाई ॥१०॥

कुंडल भू मंडल आकारी, कुंडल शोभे अति ही भारी। तापे चव दिश चव जिन गेहा, पूजें तहां देव करि नेहा ॥११॥

दोहा— हम जानें मैं दीन हैं, सुर जैहैं, अन नांहि। तातैं भावन भावके, जजैं अरघ इस ठांहि ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि चवदिश सम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

इति कुण्डल गिरि पूजा ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

दीप शंखवर जानों सही, द्वादशमों अति सुख की मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शखवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

शंखनाम वरदीप सुजान, ताको स्वामी देवप्रभ मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शखवरद्वीप स्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

शंखवर नामा सागर जेय, भोग भूमि सी मही गिनेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शखवरसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

यहां शंखवर स्वामी देव, पूरव पश्चिम धरा सु मेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ शखवर स्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥ इति ॥

तेरहवां द्वीप रुचिकगिरि संवन्धी जिन चैत्यालयस्थ पूजा ॥

दोहा— रुचिकनाम पर्वत सही, द्वीप तेरहवें मांहि। तापे चवदिश जिन भवन, ते पूजों श्रुति लांहि ॥

ॐ ह्रीं रुचकगिरिसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ अत्राऽवतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥
अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ॥

चाल मुनियानन्द— नीर शुभतर मंगा शुभग पातर लयो, भक्ति जुत आप मैं भाव भावत भयो।
रुचिक गिर चवदिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वेचन काय सुख की मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

बावनो गंध जुत अगर तगरैं कही, नीरतें रगड़ कर लाइयो पुनि मही।
रुचिक गिरि चवदिशा थान जिनकेसही, सो जजों मन वचन काय सुखकी मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिसंबंधिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत अति उज्ज्वला खंडविन शुभ करा, धोय शुद्ध नीर ले आपने कर धरा।
रुचिक गिरि चवदिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुखकी मही।
ॐ रुचिकगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल शुभ वरन के गंध नाना कहे, गूंथितिन माल कर आपने कर लये।
रुचिक गिरि चव दिशा थान जिनदेव के, सो जजों मन वचन काय शुभ होयके ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

शुभग नैवेद्य ले मोदका आदिजी, खाजला सेवडी फेनका सादजी।
रुचिक गिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय शुभकी मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

मणिमयी दीपका हार तम के सही, थालभर लाइयो भक्तिधर उर मही।
रुचिकगिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय शुभकी मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप दश गंध मिलि पीसकर लाइयो, खेयहूँ अग्नि मध्य भक्ति उपजाइयो।
रुचिकगिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुखकी मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफला लोंग खारक महा सुखमही, आदि इन और फल ल्याइयो हम सही।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुख की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिक गिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

नीर चंदन अच्चत पुष्प चरु दीपजी, धूप फल अर्घ ले आइयो समीपजी ।
रुचिकगिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुख की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चवदिशासम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

अर्घ शुभ मेलि द्रव्य आठ की जानिये, नीर फल गन्ध आदि शुद्ध ले मानिये ।
रुचिक गिरि पूर्वदिश थान जिनको सही, ते जजों भक्तिकर जान पुनि की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पूर्वदिशासम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

नीर गंध अच्चता पुष्प चरु दीपजी, धूप फल आदि मिलवाय ले सर्वजी ।
रुचिक गिरि दच्चिण दिश थान जिनको सही, ते जजों भक्तिकर जान पुनि की मही ॥
ॐ ह्री रुचिकगिरिदच्चिणदिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ २ ॥

नीर गंध आदि दे द्रव्य वसु आनिये, इन तीन मेल के अर्घ शुभ ठानिये ।
रुचिक पश्चिमदिशा थान जिनके सही, ते जजों भक्तिकर जानि पुनि की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिपश्चिमदिशासम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

आठ ही द्रव्य वस्तु छांटकर लाइयो, अरघ कर भक्ति ते हरष गुण गाइयो ।
रुचिक उत्तरदिशा थान जिनको सही, ते जजों भक्ति कर जानि पुनि की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशाराम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

रुचिक नाम परवत सुखदाई, ताकी चवदिश जिन थल पाई । देव जजों प्रत्यच्च जे थाना, हमको यहां ते अर्घ चढाना ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चवदिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

॥ कूटवासी देव गति छेदक अर्घ ॥

चौपाई—रुचिक नाम परवत है सही, ताकें पूरव दिश शुभ मही। कनक नाम इक कूट सु जोय, या गति छेद जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा संबंधि कनक कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

रुचिक नामा गिरि पूरब सार, कांचन नाम कूट सुखकार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्वदिशा काचन नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

रुचक नाम पूरव सुखकार, पूरव तपन कूट सुखधार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूरव दिशा तपन नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

पूरव रुचिक शीश पहचान, स्वस्तिक नाम कूट मन आन। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा स्वस्तिक नामा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

रुचिक नाम गिरि पूरव जान, कूट सुभद्र नाम तिसमान! ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा सुभद्रनाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

रुचिक नाम गिरि पूरव जान, कूट नाम अंजन शुभ गान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा अंजनककूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

पूरव रुचिक शिखर पे जान, अंजन-मूल कूट शुभ मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा अंजन मूल नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

पूरव रुचिक शिखर पे सार, वज्र नाम इक कूट सु धार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा वज्र नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इन आठन कूटन के मांहि, देवीदिक्कुमारका पांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा कूट निवासिनी दिक्कुमार देवी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥ इति०

॥ दक्षिण दिशा संबंधि कूट गति छेद अर्घ ॥

चौपई—रुचिक नाम गिरि दक्षिण जान, स्फटिक नाम कूट सुख दान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा स्फटिक नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

रुचिक नाम परवत की सार, दक्षिण रजत कूट मनहार । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा रजत कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

रुचिक परवता दक्षिण जेय, कुमुद कूट को नाम गिनेय । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा कुमुद नाम कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १७ ॥

रुचिक नाम गिरि दक्षिण दिशा, नलिन नाम इक कूट सु लसा । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा नलिन नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

दक्षिण रुचिक शिखर की जान, पदम कूट अति सुंदर मान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा पद्म नामा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

दक्षिण रुचिक परवत पे सार, कूट नाम शशि है अविकार । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा शशिनाम कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

रुचिक नाम गिरि दक्षिण धरा, कूट नाम वैश्रवण सुर वरा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा वैश्रवण नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

रुचिक नाम परवत मन लाय, दक्षिण कूट वैडूरज भाय । ताकी उतपति छेदक सोय, पे सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा वैडूर्य नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

इनही आठ कूट मन लाय, ऊपर देवी वास कराय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा आठकूटवासिनी देवी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥ इति०

॥ पश्चिम दिशा संबंधि कूट गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—पश्चिम रुचिक गिरि पे जान, कूट अमोघ नाम पहचान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पश्चिम दिशा संबंधि अमोघ नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ।

रुचिक परवत पश्चिम दिश सार, स्वस्तिक नाम कूट मन धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पश्चिम दिशा संबधि स्वस्तिक नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

याही गिरी पश्चिम दिश जान, मंदिर नामा कूट सुमान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पश्चिम दिशा संबंधि मंदिर नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

रुचिक गिरी पश्चिम दिश सार, कूट नाम है हिमवत धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा हिमवतकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

रुचिक नाम गिरि पश्चिम लाय, राजनाम है कूट सुभाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा राजनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

पश्चिम रुचिक शिखर के जान, राज्योत्तम शुभ कूट बखानि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशाराज्योत्तमनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

रुचिक नाम पश्चिम गिरि धरा, चन्द्रनाम तहां कूट सु वरा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा चन्द्रनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

रुचिकनाम पश्चिमदिश थान, कूट सुदर्शन जान सुजान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा सम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

येही अष्ट कूट मन लाय, तिनपे देवी वास कराय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरिपश्चिमदिशा अष्टकूट निवासिनी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

॥ इति पश्चिमदिशा सम्पूर्ण ॥

उत्तर दिशा सम्बन्धि कूटगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—रुचिक नाम गिरि उत्तर दिशा, विजयकूट को नाम सुलसा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा विजयनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

रुचिकनाम उत्तर गिरि सही, वैजयन्त शुभ कूट सु मही। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरिउत्तरदिशा वैजयन्त कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

उत्तर रुचिक गिरी पहचान, नाम जयन्त कूट सुख मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा जयन्तनामाकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

याही रुचिक गिरि की उत्तरा, अपराजित शुभ कूट जु धरा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अपराजितनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

रुचिक शिखर उत्तर की दिशा, कुण्डल नाम कूट शुभ लसा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा कुडलनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

रुचिक परवत उत्तर सुखदाय, रुचिक नाम तहां कूट बताय। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा रुचिकनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

रुचिक नाम गिरि उत्तर जाय, रतनावत है कूट सुभाय। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशारत्नावतनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

रुचिक नाम गिरि उत्तर दिशा, सर्व रतन इक कूट सु लसा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा सर्वरत्ननाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

येही उत्तर कूट सु आठ, इनपे देवी वसै सु ठाठ। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अष्टकूटवासनीदेवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

रुचिक नाम गिरि पूरव जान, विमल नाम कूट शुभ मान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्री रुचिकगिरि पूरवदिशा अभ्यन्तरवर्तीविमलनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

रुचिक परवत दक्षिण सुखकार, नित्यालोक कूट मन धार । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिदक्षिणदिशा अभ्यन्तरवर्ती नित्यालोकनामकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

रुचिक शिखर पश्चिम जे धरा, कूट स्वयंप्रभ नाम सु खरा । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा अभ्यन्तरवर्ती स्वयप्रभनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

उत्तर रुचिक शिखर के जान, नित्योद्योत कूट मन आन । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अभ्यन्तरवर्ती नित्योद्योतनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

इनही चारों कूटन मांहि, देवी वास करें सुख पांहि । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चतुर्दिशा अभ्यन्तरवर्ती कूटवासिनी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

रुचिकनाम गिरि पूरव सार, कूट कही वैडूर्य उदार । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिनाम पूर्वदिशा अभ्यन्तरवर्ती वैडूर्य कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

रुचिकनाम गिरि दक्षिण दिशा, रुचिकनाम तहां कूट सु लसा । तामें उतपति छेदक सोय ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिदक्षिणदिशा अभ्यन्तरवर्तीरुचिकनामा कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

रुचिक नाम गिरि पश्चिम जान, है मणिनाम कूट सुखखानि । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा अभ्यन्तरवर्ती मणिनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

रुचिकनाम गिरि उत्तर सार, राज्योत्तम है कूट सुधार । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अभ्यन्तरवर्ती राज्योत्तमकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

ये ही चार कूट सुख थान, इनपें देवी वास सु जान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चतुर्दिशा चतुर्कूटवासी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

रुचिक गिरी अभ्यन्तरदशा, कूट जिनेन्द्र नाम तिन लसा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चवदिशा अभ्यन्तरवर्ती जिनेन्द्रनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५२ ॥

गीता छंद— कूट चालिस चार ऊपर रुचिक गिरि पे जानिये, तिन माहि चालिस कूट ऊपर वास देवी मानिये ।
इन कूट वासिनी देवगति हर, चार पे जिन थल सही, ते जजों मन वच काय द्रव ले जान अति पुनिकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सबंधि चतुश्चत्वारिंशतकूटगतिच्छेदक तथा कूटवासिनी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

॥ जयमाल ॥

दोहा— रुचिक नाम गिरि ऊपरैं, चवदिश चव जिन धाम । तहां जाय तो सुर जजें, हम पूजें इम ठाम ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

दीप तेरमा रुचिक बताया, ता मधि रुचिक नाम गिरि थाया । सहस चौरासी तुंग सु जानों, इतनो ही मोटापन मानो ॥२॥
नीचे ऊपर को सम व्यासा, ता मधि ऊपर देवी खासा । इक इक दिश वसु कूट बताये, तिनपे देवी बसै सुभाये ॥ ३ ॥
त्रय त्रय कूट अभ्यन्तर जानो, सब मिलिकूट चवालिस थानो । इन सब कूटन का विस्तारा, तुंग पांचसो जोजन सारा ॥४॥
एते ही चौड़े भू गाये, ऊपर चौडे अर्द्ध बताये । पूरब कनक कूट है भाई, विजया देवि बसै सुखपाई ॥ ५ ॥
कांचन कूट महा सुखदाई, वैजयन्ति देवी थुति गाई । तपन कूट के ऊपर वासो, करैं जयन्ती देवी आसो ॥ ६ ॥
स्वस्तिक कूट ऊपरै भाई, अपराजित सुर की थिति पाई । कूट सुभद्र ऊपरै वासो, नन्दा देवी को है आसो ॥ ७ ॥
अंजन कूट ऊपरैं होई, नंदावती सुरी थिति जोई । अंजन मूल कूट पे जोई, नंदोत्तर देवी शुभ होई ॥ ८ ॥
वज्र कूट ऊपर सुखदाई, देवी नंदषेणा धुनि गाई । ये वसु देवी पूरब वासी, गर्भ समै जिन माता दासी ॥ ९ ॥
झारी भृंगारादिक राखै, हर्ष सहित माकी थुति भाखे । अपनो भव धन मानत देवी, हम जिन मात चरण अब सेवी ॥१०॥
स्फटिक दिशा दक्षिण में गाई, तहाँ इच्छा देवी थिति पाई । रजत कूट पे देवी वासो, सुरी समाहारा सुख रासो ॥११॥
कुमुद कूट पे सुरी रहावे, सुप्रकीर्णा नाम कहावे । नलिन कूट वासी सो होई, यशोधरा देवी है सोई १२॥
पदम कूट की बसने हारी, लक्ष्मी नाम सुरी शुभकारी । भली कूट शशि ऊपर थाना, शेषवती देवी का जाना ॥१३॥

कूट वैश्रवण ऊपरि वासो, देवि चित्रगुप्ता को आमो । कूट नाम वैडूर्य सु थानों, है वसुंधरा देवी मानों ॥१४॥
ये दक्षिण वासी वसु देवी, जिन प्रभु जनम समय अति सेवी । हाथ आरसा अपने राखे, भक्ति सहित मधुरे धन भाखे ॥१५॥
पश्चिम कूट अमोघ बताया, इलासुरी तहां वासा पाया । स्वस्तिक कूट वासिनी देवी, सुरा नाम धारक जिन सेवी ॥१६॥
मंदिर नाम कूट की वासी, देवि नाम पृथ्वी सुख रासी । हिमवत कूट वास तिन कीनों, पद्मावती नाम जिन लीनो ॥१७॥
राजकूट पे जो थिति लावो, एकनाम देवी मन लावो । राज्योत्तम कूट को थानो, नाम नवमिका देवी जानो ॥१८॥
चंद्रकूट पे तिन थिति पाई, सीतानाम सुरी सो गाई । है सुदर्शन कूट सु थानो, भद्रा देवी तहां सुख मानो ॥१९॥
ये वसु देवी पश्चिम वासी, हाथ छत्रत्रय जिनकी दासी । जन्म समै माता पद सेवे, भक्ति सहित सच्चा सुख देवे ॥२०॥
विजय कूट उत्तर थिति लावे, सुरी अलंभूषा गुण गावे । वैजयंत कूटन की वासी, कैसी मिश्र देवि सुख रासी ॥२१॥
नाम जयंत कूट की थानी, देवी पुंडरीकनी जानी । अपराजिता कूट थिति लावे, सो वारुणी सरस्वती भावे ॥२२॥
कुंडल कूट वास तिन कीनों, आशा देवी तिनको दीनों । रुचिक कूट पे वास करावे, सत्या देवी सब मन भावे ॥२३॥
कूट रतनवत वासी होई, ह्री नामा देवी जे जोई । सर्वरत्न है कूट सुथाना, श्री देवी का धाम बताना ॥२४॥
ये वसु देवी उत्तर वासा, जिन गर्भ समें मात की दासा । चामर हाथ भक्ति उर आनें, मात तनी सेवा बहु ठानें ॥२५॥
अब चव कूट अभ्यन्तर गाये, मनुष लोक दिश पूरब पाये । पहले विमल कोटि तिस वासी, कनका देवी है सुख रासी ॥२६॥
नित्यालोक कूट तिस वासी, सतह्रदा देवी सुख राशी । कूट स्वयंप्रभ वास करावे, चित्रा कनक सुरी कहलावे ॥२७॥
नित्योद्योत कूट थिति लावे, सो सौदामिनि सुरी कहावे । ये चव देवी जिन अवतारें, सर्व दिशा को निर्मल धारें ॥२८॥
इनतें और अभ्यन्तर जानो, चार कूट देवन के थानों । कूट नाम वैडूरज मांही, रुचिका नामा सुरी बसाही ॥२९॥
रुचिक कूट वासी जो देवी, रुचिक कीर्ति तिस नाम सु सेवी । है मणि कूट नाम की वासी, रुचिक कान्ता देवी खासी ॥३०॥
राज्योत्तम है कूट अनूपा, तहां थिति रुचिक प्रभा सुरि रूपा । जिन जनमें ये चव सुरि आवे, जाति कर्म ये सकल करावे॥३१॥
इन दोवीसी कूटन मांही, इतनी ही देवी निवसाही । देवी निज निज काज करावे, विनय भक्ति तें पुण्य उपारें ॥ ३२ ॥
इमि सब रुचिक दीपके मांही, रुचिक नाम गिरि अति छवि ठांही । वलयाकार कनक मय सारो, शोभा कहत न लहिये पारो॥३३॥
इनके फेर अभ्यन्तर जानो, कूट चार शुभ तीरथ थानो । तिनके नाम जिनेन्द्र कूटा, परमत सकल पाप मल छूटा ॥ ३४ ॥

तिन कूटन ऊपर जिन गेहा, पूजे देव करे बहु नेहा । हम भी जिन थल मन वच काई, इहां तें पूजत अर्घ चढाई ॥३५॥
करें भक्ति बहु जन जगनाथा, भव भव देहि आप पद साथा । मैं अति दीन सुनें को मेरी, सुनो देव तुम हर भव फेरी ॥३६॥
दोहा—— दीप रुचिक आगे अवर, जिन थल पईये नांहि । दीप तेरमें लों सकल, पूजों जिन गृह ठांहि ॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीप सकल जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घम् ॥

॥ इति रुचिक द्वीप पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ द्वीपादि अर्घ ॥

चौपई--द्वीप असंख्या आगे और, ते सब जघन्य भोग भू ठोर । इनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं असख्यात दीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

असंख्यात सागर तुम मान, द्वीप अन्त में तिनको मान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं असंख्यात समुद्रगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

द्वीप समुद्र असंख्यामांहि, देव रहें रक्षक तिन ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं असख्यातद्वीप समुद्रस्वामी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

॥ अन्तिम षोडश द्वीपसमुद्रगतिच्छेदकअर्घ ॥

चौपई—द्वीप नाम मनशिला बताय, द्वीप अन्तरा षोडश पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तिमषोडशद्वीपान्तर्गत मनशिला द्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

द्वीप नाम हरताल पिछान, यामें भी आरज जिय मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं हरितालवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

द्वीप नाम सुनि आगे और, है सिंदूरवर दीप जु ठोर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सिन्दूरवरदीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो ॥ ६ ॥

द्वीप नाम भाखूं सुखदाय, है वरश्याम मधुर शुभ जाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं श्यामवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

अञ्जन वर है द्वीप महान, उपजत पशू जुगलिया आन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अञ्जनवर द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

हिंगुल वर शुभ द्वीप बताय, मनुपराशि तहां कबहु न जाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं हिंगुलिवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

आगे और धरा मन लाय, द्वीप रूप्यवर सब सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रूप्यवर द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

सुवरण वर है द्वीप महान, मोटी धरा सकल शोभान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वर्णवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११॥

और दीप शुभ तिनके नाम, दीप वज्रवर अति सुख ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वज्रवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

दीप वैडूर्यवर है शुभ धरा, तिनमें उपजत तिर्यञ्च खरा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वैडूर्यवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

दीप नाम अब आगे सुनो, नाम नाग वर शोभे घनो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नागवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

है शुभ दीप भूत वर सार, ताकी उपमा को नहिं पार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भूतवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५ ॥

द्वीप नाम सुन सब मनलाय, द्वीप यक्षवर सब सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

द्वीप देववर सब में सार, ताकी पटतर और न धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं देववरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

है अहीन्द्रवर दीप अनूप, सबहो सागर में जिम भूप । ताकी उतपनि छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अहीन्द्रवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

नाम स्वयंभू रमण सुजान, सब द्वीपन से यह अति मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयभूरमणद्वीप मध्यभागगिरिअर्द्धभोगभूमि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

अर्द्ध स्वयंभू गिरि के पार, द्वीप मांहि भूकर्म सु धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्भूगिरिपारसम्वन्धि कर्मभूमिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ २० ॥

द्वीप तने जे भाखे नाम, तैसे सागर नाम सुठाम । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तिम षोडशद्वीप समुद्रगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

षोडशगिरि दधि दीप मझार, देव रहे स्वामी इन सार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तिमषोडशद्वीप समुद्रस्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

नाम स्वयम्भू रमण सुजान, सागर अन्त विषे पहिचान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्भू रमणसमुद्रगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

याही सागर स्वामी जान, देव कहे नाना सुख खान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्भू रमणस्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

चार ही कोण अन्त लो जान, तिनमें पशू रहे अधिकान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकान्तचतुर्कोणसम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

गीता छंद—सागर सु द्वीप असंख्य जानो, भोग भूमिन में सही । केइ थान तिनमें कर्मभूमी यथा जोग सुख लख मही ॥

तिन तने स्वामी देव संख्या विना रचना सारजी । तिन मांहि उतपति छेद जो सिध ते जजों शिवकारजी ॥

ॐ ह्रीं असंख्यातद्वीपसागर तथा स्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो महार्घम् ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ मध्यलोक के अन्त में ज्योतिर्लोक की असंख्यात जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—
ज्योतिष लोक विमान में असंख्यात जिन धाम । ते पूजों शुभ भाव धरि, थाप इहां शिवकाम ॥

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकारज्योतिषी विमानस्थित असख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिन विंव अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन ॥

अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापन ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ॥

चौपई—असविन निरमल नीर सुजान, सो में धर पातर में आन । ज्योतिष लोक असंख्य जिन गेह, तेहूं पूजों धर वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असंख्यात विमानसम्बन्धि जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

मलय सुगन्ध नीर घसवाय, कनक रकेबी में धरि लाय । ज्योतिष लोक असंख्य जिन गेह, तेहूं पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असख्यात विमान सम्बन्धि जिनेभ्यों चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल गंध अपार, खंड रहित ल्यायो हितधार । ज्योतिष लोक असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

पुष्प सुगध वरन सुखदाय, मानों कल्पद्रुम के लाय । ज्योतिष लोक असंख्य जिन गेह, तेहों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असख्यात जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

खाजा फेनी घेवर सार, इन आदिक वहु ले हितकार । ज्योतिष लोक असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष लोक संबधि असख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

दीपक रतन मई तमहार, सो हूं ल्याया भरि करि थार । ज्योतिष लोक असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष लोक सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

बावन चंदन आदि सुगन्ध, दशधा ले आयो विनफंद । ज्योतिष थान असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष लोक संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम मिलाय, इन आदिक बहु फल शुभ लाय। ज्योतिप थान असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिप लोक सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चंदन अच्छत पुष्प सार, चरु दीपक फल धूप अपार। ज्योतिप थान असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषलोक सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

पंच प्रकार ज्योतिपी देव, तिनके थान बने बिन खेव। तिन सबमें इक इक जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पचप्रकार ज्योतिप देव विमान सबधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम् ॥१०॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—सूर्य विमान विषैं जिन गेह, ते हों जजों ठानि बहु नेह। ता फल मोच्छ स्वर्ग पद पाय, और कहा भाखूँ अधिकाय ॥

ॐ ह्रीं सूर्य विमान सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

चंद्र विमान महा शुभ धरा, तामधि जिनका मंदिर खरा। ते हों पूजों अर्घ चढ़ाय, ता फल स्वर्ग मोच्छ पद पाय ॥

ॐ ह्रीं चद्रविमान सबधि जिन चैत्यालस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

काल विकाल नाम ग्रह जान, सबके आदि कह्यो यह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल विकाल नाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

लोहित नामा ग्रह मन लाय, पुण्यवती पाई परजाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं लोहित नाम ग्रहगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

कनक भला ग्रह ताको नाम, भोगन सुख पाई शुभ ठाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कनकनाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

ग्रहै सुनो नाम संस्थान, कनक स्थान लखो संस्थान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कनकसस्थान नामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

अब सुनि और ग्रह के नाम, अन्तरद है पुण्य सु धाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तरद नाम ग्रह गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

आगे और सुनो मनलाय, कचयव नाम ग्रह सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कचयवनामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

दुंदुभि नाम ग्रह मन लाय, ताकी महिमा कौन कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दुंदुभिनामग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

है ग्रहनाम रतननिभ सही, ज्योतिष पुर में देव सु कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रत्ननिभनाम ग्रहग्रतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१०॥

रूपनिर्भास नाम ग्रह जान, ये ज्योतिष देवनि में भान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रूपनिभासनामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

और सुनो ग्रह नाम प्रवान, नील नाम ग्रह सुखमय जान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नीलनामग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२ ॥

नीलाभास नाम ग्रह जेय, पंच जाति ज्योतिष में तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नीलाभासनामग्रहगच्छिेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३ ॥

और सुनो ज्योतिष सुर भेव, अश्व नाम धारक यह देव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अश्वनामधारक ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१४॥

अश्व स्थान नाम ग्रह पाय, सो ग्रह ज्योतिष नाम कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अश्वस्थान नामग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

पंच ज्योतिषी में ग्रह जान, तिनमें कोश नाम ग्रह मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कोशनाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

कंस वरण या सुर को नाम, सो ग्रह ज्योतिष है शुभ ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कंस वरण नामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

और सुनो ज्योतिष सुर भेव, कंस का ग्रह जानो देव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं कस नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

ज्योतिष देव तनें सव भेव, शंख प्रमाण नामा ग्रह देव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं शख परिमाण नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

शंख वरण ज्योतिष सुर जेय, ते भी इन ग्रह में गिन लेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं शख वरण नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

नाम उदय ज्योतिष सुर मान, सो ग्रह पुण्य थकी उपजान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उदय नाम ग्रह गतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

पच वरण ज्योतिष जो देव, ते ग्रह जिनकी करि है सेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पच वरण नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

और धार ज्योतिष के भेद, है तिल नामाग्रह निरखेद। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं तिल नाम ग्रह गतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

तिलपुछनाम देव सो जान, ज्योतिष देवन में ग्रह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्री तिलपुच्छ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

चाररराशि है ज्योतिष देव, सो यह ग्रह नाम स्वयमेव। ताकी उतपात छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं चाररराशि नाम ग्रह गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

धूम नाम सुर अति सुखकार, ये ग्रह नाम देव पुनि धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध-पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं धूम नाम ग्रह गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

और देव ज्योतिष सुनि वीर, धूमकेतु ग्रह नाम सु धीर। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं धूमनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २७ ॥

ग्रह इक संस्थान मन लाय, ये भी ज्योतिष देव कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं एक संस्थान ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २८ ॥

अच्चनाम ज्योतिष सुर मांहि, सो भी यह ग्रह जान कहांहि । ताकी उतपति छेदक सोय ते, सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अच्च नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

नाम कलेवर है ग्रह सार, ज्योतिष देवन में निरधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कलेवर नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

अब सुनि और ज्योतिषी देव, नाम विकट ग्रह लख स्वयमेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विकट नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

अभिनसिंह है ता को नाम, सो ग्रह सब सुखन को धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अभिन्नसोय नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

आगे और सुनों इक नाम, है ग्रह नाम ग्रंथि सुख धान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ग्रन्थि नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

येक नाम अद्भुत है सही, भान नाम ग्रह सुख की मही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भान नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

धारो नाम एक अनुसार, चतुः पाद है ग्रह सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुः पद नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

विद्युत जिह्व इस ग्रह को नाम, पुण्य वसा पायो यह धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विद्युत जिह्व नाम गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३६ ॥

ज्योतिष देवन में बहु भेव, है नभनाम ग्रह शुभ देव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री नभ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

सदृश नाम ज्योतिषी देव, ये ग्रह सुख भोगत स्वयमेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सदृश नाम ग्रह गति छेदकर्त्तजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

निलय नाम ग्रह जानि सु सार, ज्योतिष देवन में सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निलय नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

नाम काल है ग्रह को सही, अद्भुत रचना ताकी कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्या अर्घम् ॥ ४० ॥

काल केतु ग्रह ज्योतिष देव, भोगत सुख पुन्य ते स्वयमेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल केतु ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

और अनय ग्रह नाम सुधार, ये भी ज्योतिष में सुरसार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अनयग्रह नाम ग्रह गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

ज्योतिष में सिंहायु सुजान, यो ग्रह प्रगट आपनो थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सिंहायु नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो ॥ ४३ ॥

और ग्रह को भाखो नाम, विपुल नाम ग्रह सुख की ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निपुल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४४ ॥

फेर काल है ज्योतिष सार, ये ग्रह पुन्य थकी अवतार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

महाकाल ग्रह ताको नाम, जाको ि ज्यो पुन्य को धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं महा काल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

है ग्रह रूद्रनाम इक सही, ते पाई लच्मी अधिकही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुद्र नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥

महारुद्र ज्योतिष जो देव, सो ग्रह तिष्ठै थान स्वयमेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं महा रुद्र नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

नाम संतान ज्योतिषी सार, ये ग्रह होय पुन्य फल धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सतान नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४९ ॥

और जानि ज्योतिष के भेव, संभव नाम देव ग्रह जेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सभव नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

ज्योतिष देव मांहि बहु भेव, सर्वारथ ग्रह अद्भुत देव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं सर्वार्थी नामा ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

है दिश नाम ज्योतिषी देव, सो ग्रह अपनो शुभ फल लेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दिशा नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

शान्ति नाम है अति द्युति धार, सेवत जिन मंगल शुभकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शान्ति नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

है वस्तूनि नाम जो देव, यो ग्रह ज्योतिष को शुभ टेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वस्तूनि नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

निश्चल नाम देव ज्योतिषी, है ग्रह तातें दुर्मति छकी । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निश्चल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

देव ज्योतिषी में यह पाय, प्रलंभ नाम ग्रह सुख को पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रलभ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

है निरमंत्र ज्योतिषी सुर सार, ये सबही ग्रह के बलधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निर्मंत्र नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

ज्योतिप मान देव जो जान, यो ग्रह औरन में सुखखान । ताकी उतपति छेदक सोय, तै सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं ज्योतिष्मान नाम देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

भासुर नाम ज्योतिपी सार, यह सब ही ग्रह में सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय ते सिध, पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐह्रीं भासुर नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५६ ॥

नाम स्वयंप्रभ देव सयान, ये ग्रह भलो धरे है ज्ञान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं स्वयं प्रभ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

नाम विरज जे देव अमान, या ग्रह ने पायो पुनि थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं विरज नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

है निरदोप ज्योतिप सुर जेय, ये ग्रह अपने शुभ फल लेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।
ॐ ह्रीं निर्दुःख नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६२ ॥

वीतशोक ग्रह महिमाधार, ज्योतिप देवनमें सिरदार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं वीतशोक नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

सीमंकर है ज्योतिप राय, सो ग्रह सब जीवन सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं सीमंकर नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

और सुनो देवन के नाम, क्षेमंकर ग्रह अति सुखधाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं क्षेमंकरनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

अभयंकर सुर सब में सही, उपमा दायक शुभ ग्रह मही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं अभयङ्करनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

विजय नाम ग्रह अति छविकार, ज्योतिप देवन में निरधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं विजयनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

ज्योतिप वैजयंत सुरजान, सबही ग्रह में यह सुखखान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं वैजयन्तनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६८॥

है जयंत नाम ग्रह धार, ज्योतिप देवन में हितकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं जयन्तनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

अपराजित है देव सुजान, ज्योतिप में यह ग्रह सुखमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं अपराजितनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

विमल नाम ग्रह सुखमय जान, पंच जाति ज्योतिप में मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं विमलनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

त्रस्त नाम देव ज्योतिपी, है शुभ ग्रह वाणी जिन असी । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं त्रस्ततानाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

विजयिष्णु ग्रह ताको नाम, ज्योतिप सुर में परगट धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं विजयिष्णुनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

नाम विकस ग्रह ज्योतिप सुरा, अपने शुभ फल बहु लख धरा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं विकसनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

हैकरि काष्ठ देव को नाम, ये ग्रह होय पुन्य को धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं हैकरिकाष्ठनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

और ज्योति सुन ज्योतिप नाम, है इक जटि ग्रह उत्तम ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं एक जटिनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

अग्नि ज्वाल ग्रह अति बलकार, ताकी शिखर और निरधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं अग्निज्वालनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ७७ ॥

है जल केतु देव इक सार, सब ग्रह मांहि जान सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं जलकेतुनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७८ ॥

केतु नाम सुर सुखकर सार, ज्योतिष में यह ग्रह बलधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं केतुनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७९ ॥

क्षीर नाम देव यह सही, ज्योतिष पंच मांही ग्रह कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीरसनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

देव ज्योतिषी पंच प्रकार, तिनमें अघ नामा ग्रह धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अघ नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

श्रवण देव ज्योतिषी कह्यो, सो भी ग्रह अद्भुत बन रह्यो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं श्रवण नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

राहु नाम ग्रह सब ही जान, पावत यह पद शुभ तैं आन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं राहु नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

महा ग्रह ज्योतिषी बखान, पंच जाति में यह ग्रह मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं महाग्रह नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

भाव ग्रह यह देव प्रमान, सब ही ग्रह में यह बलवान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भावग्रह नाम ग्रह गतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

मंगल नाम देव यो जान, सो ग्रह सब ग्रह में सुखदान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मङ्गलनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

नाम शनीचर ग्रह को सही, सो तो जानत है सब मही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शनिश्चरनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

बुद्धनाम ज्योतिष सुरजेय, सब ग्रह मध्य यह गिन लेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं बुधनाम ग्रहगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

शुक्लनाम ग्रह अति बलवान, सो प्रसिद्ध है जगमें आन। ताकी उतपति छेदक सोय, तें सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शुक्लनाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

बृहस्पति नाम देवजो सही, यह ग्रह प्रगट है शुभ मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं बृहस्पति नाम ग्रहच्छेदक रिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

छंद पद्धरि—

यह ग्रह अट्ठासी जोय सार, इनके विमान मणि मई सुधार।
तिनमें मणिमय जिन गेह सोय, मैं पूजों मन वच शुद्ध होय ॥

ॐ ह्रीं अष्टाशीतिः ग्रह विमान सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९१ ॥

॥ अट्ठाईस नक्षत्रसम्बन्धि अर्घ ॥

चौपई—कृतिका नाम ज्योतिषी जान, यह नक्षत्र पंच में मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कृतिकानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

पंच जाति ज्योतिष में सही, नाम रोहिणी उनके मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रोहिणीनाम नक्षत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

है नक्षत्र मृगशीर्षा सार, ज्योतिष में ये भी निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मृगशीर्षानाम नक्षत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

आद्रा नाम ज्योतिषी देव, ये नक्षत्र भी जानो भेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आद्रानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

नाम पुनर्वसु जानो सही, जाति नक्षत्र मांहि इन कही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुनर्वसुनाम नक्षत्र गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पुष्य नक्षत्र सु जानो सार, ज्योतिपदेवन में निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्यनामनक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

असलेखा है ज्योतिप परा, राशि नक्षत्र नाम इन धरा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं आश्लेपानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

जान नक्षत्र मघा परमान, ज्योतिप देवन में यह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मघानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ८ ॥

पूर्वा फाल्गुनी मनलाय, जाति नक्षत्र रहे सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वाफाल्गुनी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

और नक्षत्र जानिये येह, उत्तरा फाल्गुनी गिन लेह। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तराफाल्गुनी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

हस्तनाम नक्षत्र सु सार, ताको जानत जग निरधार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं हस्तनाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

चित्रानाम नक्षत्र सार, ज्योतिप देवन में निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चित्रानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नाम नक्षत्र स्वाति है सही, देवन में ज्योतिप की मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वातिनाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

नाम विशाखा ज्योतिप सार, जाति नक्षत्र मांहि इन धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विशाखानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

अनुराधा है ज्योतिप देव, जान नक्षत्रन में स्वयमेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अनुराधा नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

जेष्ठा नाम नक्षत्र सुजेय, पंच जाति ज्योतिष में तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं जेष्ठा नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

ज्योतिष नाम नक्षत्रन मांहि, मूल नक्षत्र रहै सुख पांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं मूल नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र जु सार, नाना विधि ऋद्धि के धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वाषाढ नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १८ ॥

उत्तराषाढ़ ज्योतिषी सुरा, है नक्षत्र मांही इस धरा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तराषाढ नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

अभिजित नाम नक्षत्र हि जान, याकी बहु ऋद्धी सुख खान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अभिजित नामा नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

श्रवण नाम नक्षत्र जु सार, सो है प्रगट भूमि निरधार। ताको उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं श्रवण नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

नाम धनिष्टा ज्योतिष देव, ये पुनितें सुखिया स्वयमेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धनिष्टा नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

है नक्षत्र शतभिष इकसार, ज्योतिष में जानों निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शतभिषा नाम नक्षत्रगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

पूर्व भाद्रपद ज्योतिष जान, जाति नक्षत्र मांहि यह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व भाद्रपद नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

उत्तर भाद्रपद जानो देव, ज्योतिष मांहि जु नक्षत्र एव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर भाद्रपद नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

नाम रेवती जानो देव, है नक्षत्र ज्योतिप को भेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रेवती नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

अश्विनी नाम नक्षत्र सु जेय, प्रकट पुण्य फल ही भोगेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अश्विनी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

भरणी नाम नक्षत्र जु सही, यो पद भले पुन्य तैं लही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भरणी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

छंद पद्धड़ी—

ये वीसरु आठ नक्षत्र जान, भिन भिन इक के सुविमान मान।
तहं मंदिर श्री जिनराज सोय, ते पूजों मन वच हरप होय ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति नक्षत्र संबंधि विमानस्थित जिन चैत्यालयस्थ सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

चौपाई—तारा विमान असंख्या जोय, तिन मधि इक इक जिन थल सोय। तिनमें प्रतिमा जिन आकार, जिन पद अर्घ जजों थुति धार ॥

ॐ ह्रीं असंख्याततारा ज्योतिपी विमान सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

ज्योतिप तारा देव विमान, जाति असंख्या अद्भुत थान। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिप देव तारा विमान असंख्यात गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

शशि सूरज तारा ग्रह जान, और नक्षत्र पांच मन आन। इनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंच ज्योतिपी देव विमानोत्पत्ति गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो एवं असंख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

जयमाला

दोहा—पंच जाति ज्योतिप सुरा, विना खंख्य इन थान। तिनमें जे जिन गेह हैं, जजों छांडि निज मान ॥ १ ॥

॥ पेसरी छंद ॥

चन्द्र सूर्य ग्रह जानो भाई, नाम नक्षत्र और समझाई। तारा मिले पांच परकारा, ज्योतिप देव इनों में सारा ॥ २ ॥
चन्द्र विमान तनें विस्तारा, योजन वडा कछुक कम सारा। कोश लघू तिनके मन लाओ, अष्टादश शत कछु कम पाओ ॥३॥

सूर्य विमान विषैं लघु होई, षोडश शतक व्यास इम जोई । शुक्र विमान कोश इक जानो, सो ये बड़े कोश परमानों ॥ ४ ॥
विमान बृहस्पति कोश जु हीना, मंगल बुध शनिश्चर तीना । इन विमान का व्यास सु जानों, आध आध ही कोश प्रमानों ॥५॥
तार विमान जघन्य जे होई, पाव कोश व्यास को सोई : उत्कृष्टा जो व्यास प्रमाना, एक कोश का जानो थाना ॥ ६ ॥
और नक्षत्र जानों व्यासा, एक कोश-ये बडे प्रकाशा । सब विमान मोटा इम जानों, अपने व्यास अधिक परमानों ॥ ७ ॥
पृथ्वी तैं ऊंचे परमानों, सात सैंकड़ा निवै मानों । ये तो तारन को परमाना, और सुनों आगे व्याख्याना ॥ ८ ॥
तारन तैं दश योजन भाई, ऊँचा सूर्य विमान बताई । रवि तैं अस्सी योजन जानों, ऊरध चन्द्र विमान बतानों ॥ ९ ॥
चव योजन शशि मैं सुखदाई, है नक्षत्र की जान ऊंचाई । लग नक्षत्र चव योजन जानों, ऊचो बुद्ध विमान प्रमानों ॥१०॥
बुध तैं योजन तीन बताया, शुक्र विमान ऊँचा समझाया । योजन तीन शुक्र तैं भाई, ऊँचा बृहस्पति तीन कहाई ॥११॥
बृहस्पति से त्रय योजन जानों, मंगल ऊँचा है श्रुत ज्ञानों । मंगल से त्रय योजन जोई, ऊंचा जान शनीश्चर सोई ॥१२॥
तिनमैं राहु सु केतुक जाना, योजन एक घाट कछु माना । रवि शशि से ये नीचे जानों, ऐसो गमन होय मन आनो ॥१३॥
राहु चन्द्र की ज्योति अछादे, केतु सूर्यद्रुतिकर है मादै । ताकों लोक ग्रहण कहि भाई, ये ज्योतिष की गमन बताई ॥१४॥
राहु विमानध्वजा दँड सोई, ता ऊपर चतु अंगुल होई । चन्द्र विमान तना परमाना, इतना केतु थकी रवि जाना ॥१५॥
रवि सूरज की किरन प्रमाना, द्वादश सहस भिन्न भिन जाना । शुक्र किरण भापूं मैं सोई, सहस्र अढ़ाई गिनती होई ॥१६॥
सूरज कांति उष्णता मानों, चन्द्रकिरण शीतल मन आनों । शुक्र किरण उज्ज्वल परकाशा, और ज्योतिषो मंदगति भासा॥१७॥
तास साठ इक ईश जु जानों, अन्तर योजन मेरु सुमानों । ज्योतिष पटल गमन करावै, इतने योजन जान न पावै ॥१८॥
जम्बूद्वीप मांहि रवि दोई, चन्द्र दोय मानों सुख होई । लवण समुद्र गिनो शशि चारा, सूरज भी चव जानों प्यारा ॥१९॥
खण्ड धातकी में रविबारा, द्वादश ही शशि जानों प्यारा । कालोदधि सूरज शशि जानो, चाली दो चाली दो मानों ॥२०॥
पुष्कर अर्ध सूर्य शशि होई, सत्तरि दोय भिन्न कर सोई । द्वीप अढाई बारैं जानों, सब हि ज्योतिषी भ्रुवै मानों ॥ २१ ॥
जम्बूद्वीप विषैं ध्रुव तारा, है छत्तीस गिनती का सारा । लवण समुद्र विषै ध्रुव जानों, इक शत व उन्तालिस मानों ॥२२॥
खण्ड धातकी में ध्रुव तारा, एक सहसदश अगले सारा । चाली सहस्र ग्यारहसौ बीसा, कालोदधि ध्रुव तारा दीशा ॥२३॥
त्रेपन सहस रु दोसौ तीसा, पुष्कर अर्ध ध्रुव तारा दीसा । ऐसे द्वीप अढाई मांही, तारा ध्रुव कहे सुख ठांहि ॥ २४ ॥

एक चन्द्रका सुन परवारा, सूरज जान एक तिस लारा। ग्रह अठ्यासी और बताये, जान नक्षत्र अट्ठाइस गाये ॥ २५ ॥
पन्द्रह शशि के मारग गाए, सूरजमग जानों अधिकाये। एक सैंकडा अरु चौरासी, रवि चालै इनमें श्रुत भासी ॥ २६ ॥
जघन्य रात दिनका परमाना, द्वे महूर्त द्वादश ध्वनि गाना। उत्कृष्टा दिन रात सुभाई, अष्टादश मुहूर बतलाई ॥ २७ ॥
शशि की आयु एक पल जानों, लाख वर्ष इक ऊपर मानों। सूरज आयु एक पलि भाई, एक हजार वर्ष अधिकाई ॥ २८ ॥
आयु शुक्र की पल्य प्रमाणों, ऊपर वर्ष एकसो मानो। वृहस्पति आयु एक पल्य होई, आगे और सुनो विधि सोई ॥२९॥
मंगल बुध शनिश्चर आया, आधं आध पलसे समझाया। सब ज्योतिप की काय प्रमानों, धनुप सात की सात सुजानों ॥३०॥
तारा अरु नक्षत्र तिथि जानों, पल्यइक चौथा भाग प्रमानों। उत्कृष्टी जे आयु बताई, जघन्य भाग अष्टम पल्य गाई ॥ ३१ ॥
ज्योतिप देविन की थिति जानों, निज निज पिय ते अर्ध बखानों। शशि की चब पट देवी भाई, तिनके नाम सुनों सुखदाई॥३२॥
चन्द्राभा रु सुसीमा सारा, प्रभाकरा तीसरी धारा। अर्चिमालिनी चौथी सोई, अब रवि देवी सुन जे होई ॥ ३३ ॥
द्युति नामा पट देवी जानों, सूर्य प्रभा नाम पुनि मानो। प्रभंकरार्चिमालिनी सोई, ये चब देवी रवि के होई ॥ ३४ ॥
चब चब सहस्र देव्य सिरदारी, करैं विक्रिया इतनी सारी। रवि शशि पट देवी तन ठानो, चबचब सहस्र विक्रिया आनो॥३५॥
सब से मन्द गमन शशि केरा, शशि से रवि का शीघ्र जु फेरा। रवि से शीघ्रजु ग्रह को चाला, इससे अधिक नक्षत्र न आला॥३६॥
सब ही ज्योतिप से बहु जानों, तारा चलै वेग अति मानों। रवि अरु शशि विमान को भाई, देव जु पैंले चालै ताही ॥३७॥
कहार जाति देव परमाना, पोडश सहस्र लगै ध्वनि गाना। ग्रह विमान के लागें भाई, आठ हजार देवध्वनि गाई ॥ ३८ ॥
लगें नक्षत्र विमान सु देवा, चौ हजार कहार सु भेवा। दो हजार कहार सुर जानों, लगें तारका शिविका मानों ॥ ३९ ॥
इन आदिक ज्योतिप पच भेवा, सबही दास करें जिम सेवा। पुन्यथकी ये पदवी पावै, अशुभ जीव इस मग नहिं आवै ॥४०॥

सोरठा—— ज्योतिप असंख्य विमान, इक इक तहां जिन थान है। ते पूजों सब-आन, मन वच काय लगाय के ॥

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकार ज्योतिपविमान सम्बन्धि असंख्यातजिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ स्वर्गलोकसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजि पूजा ॥

छंद पद्धरि–दिवि कल्पर कल्पातीत जान, जहँ पुण्यवन्त निवसैं महान । तहँ थान नमों जिन राज जेह, ते पूजों मैं वहु ठान नेह ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गलोकसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चाल सुनयानंद–

नीर शुभ्र त्रस विना खीर दधि सम कही, कनक पातर विषै धार लायो सही ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसंवन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

गंधधर चन्दनै मलय घसि लाइयो, आप कर लेय उरमांहि हर्षाइयो ।
स्वर्गवासीन नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

खण्ड विन तंदुला ऊजले सारजी, थाल भर आप कर लेय सुखधारजी ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल गंध सहित शोभ रंग सुखदायजी, गूंथ तिनमाल ले आइयो भायजी ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

लेय रस सार चरु कियो मन हारजी, आइयो आप ढिंग भक्ति वहुधारजी ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीप तमहार बहुभार परकाशजी, थाल भर लाइयो होय जिनदासजी ।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दशगंध को मेल सुखदायजी, खेवने को चलो अति उमगायजी ।
स्वगवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासीदेव विमान सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफला लोंग खारक भला जानिये, आदि फल और इन भक्ति युत आनिये ।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देव विमान सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

नीर गंध तंदुलै शुद्ध चरु लाइयो, दीप अरु धूप फल अर्घ बनवाइयो ।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देव विमान संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

चाल जोगीरासा की–स्वर्ग निवासी देव विमान सु चौरासी लख जानों, सहस सत्याणव ऊपर सेती इतनी संख्या मानों ।
इतने ही इनमें जिन मंदिर विनाकिये शुभकारी, तिन सबको शुभ अर्घ चढाऊं मन वच धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देव विमान संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घ

चाल जोगीरासा की–मेरुचूलिका तें पहलो स्वर्गल अंतरै जानो, है यामें इकतीस पटल शुभ येते इंद्रक मानो ।
प्रथम इंद्र को नाम ऋतु है मेरु जगत वह होई, या गतिछेद भए सुध मूरत ते पूजों मद खोई ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबंधि प्रथम ऋतु इन्द्रक गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

चौपई–प्रथम युगल इंद्रक दूसरो, विमल नाम धारक है खरो । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम युगल संबधि द्वितीय विमल नाम इन्द्रक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

सोधर्म युगल मांहि मन लाय, चंद्र जान इंद्रक सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबंधि तृतीय चन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

प्रथम युगल में वलगू नाम, इन्द्रक देव विमान सु ठाम । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि चतुर्थ वलगू नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

प्रथम युगल में इंद्रक सोय, नाम वीरता जान सु सोय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि पंचम वीर नाम इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पहलो युगल अरुण तिस नाम, इंद्रक षष्टम जान सु ठाम । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि षष्टम अरुण नाम इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो, अर्घम् । ६ ॥

पहले जुगल जु नन्दन नाम, है विमान इन्द्रक शुभ ठाम । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगज सम्बन्धि सप्तम नन्दन नाम इन्द्रदक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

नाम नलिन पहले स्वर्ग मांहि,इंद्रक नाम विमान सुपांहि । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल अष्टम नलिन नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

प्रथम स्वर्ग में इंद्रक सोय, कांचन नाम विमान सुजोय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि नवम् काचन नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

पहले युगल मांहि सुविमान, रोहित इंद्रक नाम प्रधान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि रोहिता नाम इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्गो अर्घम ॥ १० ॥

प्रथम युगल में इंद्रक जान, चंचत नाम ग्यारमो मान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि एकादशम चंचत् नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

प्रथम स्वर्ग में इंद्रक मान, मरुत नाम द्वादशमो जान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि द्वादशम मरुत नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

युगल प्रथम में इंद्रक सोय, है ऋद्धीश नाम शुभ जोय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि त्रयोदशम ऋद्धीश नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

प्रथम युगल मांहि सुविमान, वैडूर्य इंद्रक शुभखान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि चतुर्दशम वैडूर्य नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

प्रथम युगल में जान विमान, रुचक तास को नाम बखान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि पचदशम रुचिक नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

प्रथम युगल में रुचिर विमान, इन्द्रक षोडशमों सुख खान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि षोडशम रुचिर इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

प्रथम स्वर्ग इंद्रक में जान, अंक नाम ताको सुख दान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि सप्तदशम अंक नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

प्रथम युगल में इन्द्रक होय, स्फटिक नाम कह्यो जिन सोय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि अष्ट दशम स्फटिक नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

प्रथम जुगल में इन्द्रक जान, तपनिय शुभ इन्द्रक मन आन । ताकी उत्पति छेदक सार, ते सिध पुजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबधि एकोनविंशतितपनीयनाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

प्रथम युगल में इन्द्रक सोय, मेघ नाम सुखदायक जोय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबंधि विंशतितमो मेघ नाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

प्रथम युगल मैं इन्द्रक सार, अभ्रसु नाम विमान विचार । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सबंधि एकविंशतितमो अभ्रनाम इंद्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

सौधर्म युगल इन्द्रक सोय, नाम हरित शुभ लखिये जोय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सबंधि द्वाविंशतितमो हरित नाम इंद्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ २२ ॥

युगल प्रथम में इन्द्रक भाय, पद्म विमान नाम तिन पाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सवंधि त्रयोविंशतितमो पद्म नाम इंद्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

प्रथम युगल में स्वर्ग विमान, इन्द्रक लोहित सुख को थान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्री सौधर्म युगल संवंधि चतुर्विंशतितमो लोहित नाम इंद्रक विमान गतिच्छेक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

प्रथम युगल में भवन अनूप, वज्र नाम इन्द्रक शुभ रूप । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सवंधि पंचविंशतितमो वज्र नाम इंद्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

पहला युगल मांहि शुभ जान, नंद्यावर्तक इंद्रक मान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबंधि षड्विंशतितमो नद्यावर्तक नाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

प्रथम कलप जुग मांहि विमान, प्रभंकरा है नाम सु जान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्री सौधर्म युगल संबधि सप्तविंशतितमो प्रभकर नाम इंद्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

प्रथम युगल इंद्रक शुभ मई, पृष्टक नाम विमान सु थई । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संवधि अष्टविंशतितमो पृष्टक नाम इद्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

युगल प्रथम में सुभग विमान, है गज नाम सु इंद्रक आन । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संवन्धि नवविंशतितमो गज नाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

प्रथम युगल इंद्रक को सोय, मित्र विमान नाम शुभ होय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वधि त्रिंशततमो मित्र नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

सौधर्म युगल महा सुविमान, अंतक इन्द्रक प्रभ शुभ थान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि एक त्रिंशत तमो प्रभ नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

याही अंत पटल के मांहि, दक्षिण उत्तर हरिपुर मांहि । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि द्वात्रिंशततमो अन्तक पटल सम्बन्धि दक्षिण उत्तर इन्द्रक नगर गतिच्छेदकसिद्धभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

प्रथम युगल श्रेणी बँध सोय, ताके जिते विमान सु होय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि श्रेणीवद्ध विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

प्रथम युगल में सुभग विमान, है परकीरण अपनी ठान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि प्रकीर्ण विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

सौधर्म स्वर्ग मांहि हरि सोय, सौधर्म नाम तास को जोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि सौधर्म इन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

है ईशान मांहि जो नाथ, है ईशान इन्द्र पुनि साथ। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्ग सम्बन्धि ईशान इन्द्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

है सौधर्म इन्द्र के सोय, पद प्रति-इन्द्र धार सुर होय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि प्रतीन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

जो ईशान इंद्र को जान, श्रुति इन्द्र पद धारक मान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं ईशानइन्द्र सम्बन्धि प्रतीन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

सौधर्म अरु ईशान जु जान,इनके सुख सामानिक मान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम युगल सम्बन्धि सामनिक देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

प्रथम युगल में हरिचर देव, त्राय स्त्रिं शत पदधर एव। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान सम्बन्धि त्रायस्त्रिंश देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

प्रथम युगल के स्वामी सोय, तिनके पारीषद सुर सोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम युगल सवधी पारिषद जाति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

सौधर्म ईशान सुजान, इनके आतम रक्षक मान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान सवधि आत्मरक्षक नाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

सौधर्म रुईशान सुदेव, इनके लोक पाल पदभेव । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि लोकपाल जाति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यों अर्घम् ॥ ४३ ॥

प्रथम युगल हरि के चर सुरा, पद आनीक धार बल धरा । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि सप्त जाति अनीक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

सौधर्म रुईशान सुजान, इनके परकीरण सुखमान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि प्रकीर्णक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

प्रथम युगल स्वामी के सुरा, है अभियोग धार पद खरा । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबधि अभियोग्य पदधारक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

प्रथम युगल हरि के चर होय, किलविप पद के धारक होय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान सबधि किल्विपिक पदधार देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

दक्षिण इन्द्र पद देवी जान, नाम तास को सची बखान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रस्य सचीनाम इंद्रानी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

पदमा पट देवी मन लाय, सो भी दक्षिण इन्द्र सु पाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ।

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रस्य पदमा नाम पट्ट इद्राणी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

नाम शिवापट देवी जान, दक्षिण इन्द्रन के पहिचान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रस्य शिवानाम पट्टरानी गतिच्छेदक सिद्धभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

दक्षिण दिशा इन्द्रन के पाय, श्यामा पट देवी मन लाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रसम्बन्धि श्यामानाम पट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

इंद्र सुदक्षिण दिश के जोय, कालंदी तिन देवी सोय । ताकी उंतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इद्र संबंधि कालंदी नाम पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

सुलसा पट देवी को नाम, ताके दक्षिण इन्द्र जु नाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इद्र सवधि सुलसा नाम पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५३ ॥

दक्षिण इंद्र पट ही के जान, अञ्जुका पट देवि को मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इद्र संबधि अञ्जका नामा पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

दक्षिण इंद्रन के सुखदाय, भानु नाम पट देवी पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इंद्र संबधि भानु नामा पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

अडिल्ल छंद—

ये ही आठों नाम धार देवी सही, दक्षिण दिश जे इन्द्र होय तिनकी मही ।
तिनकी उतपति छेद भये भवपारजी, ते सिध पूजों अर्घ बना थुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्र संबधि अष्ट पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

॥ उत्तर इन्द्र संबंधि अष्ट पट्टदेवी गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—उत्तरदिश इन्द्रन के होय, श्रीयमती पट देवी सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्र सबन्धि श्रीमती पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

उत्तर इंद्रन के पटनार, रामा नाम होय मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इंद्र संबंधि रामा नामपट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

नाम सुसीमा देवी सोय, उत्तर इन्द्रन के पट होय । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इद्र संबंधि सुशीमा नामा पट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

इन्दर उत्तर देवी सोय,प्रभावती मुख्य पट होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इंद्र सवधि प्रभावती नामा पट देवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

उत्तर सुरपति जेते होय, जय सेना तहां देवी होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इंद्र संबधि जयसेना नामा देवीगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

नाम सुपेणा देवी सोय, उत्तर इन्द्रन के पट होय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसबन्धि सुपेणानामापट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

वसुमित्रा देवी शुभ जान, उत्तर सुरपति देवी मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्वन्धि वसुमित्रानाम पट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

उत्तर इन्द्रजु देवी होय, मुख्य वसुन्धर देवी जोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्वन्धि वसुन्धरानामापट्ट देवीगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

ऐसे आठ नाम के धार, उत्तर सुरपति देवी धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्वन्धि अष्टपट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

॥ आनीक सप्तदेवगति छेदक अर्घ ॥

इन्द्रन के आनीक सुजान, पहली फोज वृषभ की मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि प्रथमवृषभ आनीक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

और सुनो आनीक सु नाम, दूजी फोज सुघोटक नाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि द्वितीयघोटक नाम आनीकगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

इन्द्रन को आनीक सुजोय, तीजी फोज रथन की होय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि तृतीय रथनामा आनीकगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

हाथी की आनीक सुजेय, चौथी फोज इन्द्र की तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि चतुर्थ गजनामा आनीक गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

इन्द्रद के पंचम वल जोय, तामें सकल पयादे होय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि पञ्चमवलनामा आनीकगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

गंधर्वन आनीक सुभाय, पष्टम फोज इन्द्रकी पाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि पष्टम गंधर्वनाम आनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥७१॥

हरिकी सप्तम फौज सुजान, नृत्यक जात आनीक प्रमान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि सप्तमनृत्यकनाम आनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

चाल जोगीरासा— ये सातों आनीक सुजानो सब इन्द्रन के होई। इक इक आनिक सात जातकी सब मिल गुणचा होई।
ये ही देव पशूवन आवै और पशु नहि मानों। इन गति छेद भये विन मूरत ते पूजों धरि ध्यानो ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि सप्तआनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

॥ आनीक स्वामी देवगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपाई—वृषभ फौज को नायक सोय, नाम इष्ट सुर सो अवलोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वृषभ सेनानायक इष्टदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

घोटक फौजन को सिरमोर, हरिनामा सुर नायक जोर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घोटक आनीक नायक हरिनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

रथ आनीक तनो सिरमोर, मातिल नाम देव सुख ठोर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रथ आनीक नायक मातिल देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

हाथी सेना नायक सोय, ऐरावत नामा सुर जोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं गजआनीकनायक ऐरावतदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

सेन पयादन को अधिपती, वायुनाम सुरनायक सती। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पदाति सेनानायक वायुनामदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७८ ॥

गंधर्व सेना नायक सोय, नाम अरिष्ट जसा सुर होय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं गधर्व सेनानायक अरिष्टनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७९ ॥

सेन नृत्यकी नायक सोय, नील जसा देवांगन सोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नृत्यकसेनानायक नीलनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८० ॥

ये सातों सेनापति सोय, दक्षिण इन्द्रनके अवलोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशासम्बन्धि सप्तआनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

॥ ईशानादि उत्तर इन्द्रके सेनानायक देवगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—महा दामयष्टि मनलाय, वृषभ सेन नायक सुख पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि वृषभसेनानायक महादामयष्टिदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

घोटक फोजपति सुर होय, नाम अमितगति छेदक सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि घोटकसेनानायक अमितगति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

रथ आनीक पति रमाय, नाम तास रथमथन कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्र सम्बन्धि रथसेनानायक रथमथननाम गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

गज सेना नायक जो देव, पुष्पदन्त तसु नाम गिनेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्रसम्बन्धि गजसेनानायक पुष्पदन्तनाम देव गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

फोज पयादन को सिर मोर, सलघुपराक्रम सुर शुभ ठोर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि पदाति सेनानायकसलघुपराक्रमनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

गंध्रव फोजपती सुरराय, नाम गीतरति सब मन भाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्रसम्बन्धि गन्धर्वसेनानायक गीतरतिनामदेव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८७ ॥

नृत्यक सेना के पति जान, देव महा सेना पहचान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धिनृत्यक सेनानायक महासेनानाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८८ ॥

वेसरी छंद—ये सातों आनीक सुजानो, उत्तर इन्दर के मन मानो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्रसम्बन्धि सातसेनानायक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८९ ॥

॥ लोकपाल गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—लोकपाल पहलो हरि तनो, सोमनाम ताको हरि बनो। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसबन्धि प्रथम लोकपाल सोमनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

दूजो लोकपाल सुर होय, है जमनाम तास अवलोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि द्वितीय लोकपाल यमनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

नाम वरुण जानो मन लाय, लोकपाल तीजो सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि तृतीय लोकपाल वरुणनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

नाम कुवेर तास को जान, लोकपाल चौथो सो मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि चतुर्थकुवेरनाम लोकपाल देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६३ ॥

वेसरीछंद—ये चव लोकपाल सुरदेवा, सोम वरुणयस अरुण सुमेवा। लोकपालशुभ और कुबेरा, इनगतिछेद जजों शिव डेरा ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि चत्वार. लोकपाल गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

॥ गणिकानायक गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौहई—गणिकानायक देव मझार, कामा नाम सुरी मन धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि गणिकानायकाकामानाम देवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

नाम कामनी गणिका कही, सुन्दरता में दूजी नहीं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री इन्द्रसम्बन्धि गणिकानायका कामिनीनाम देवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

नास पदमगंधा मन लाय, गणिकनिकी नायका भाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि गणिकानायका पद्मगन्धानामादेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

नाम अलंबुपा सुख ठोर, गणिका नायक सब में मोर। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं इन्द्र सम्बन्धि गणिकानायका अलंबूपा नामदेवी गतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

पद्धरि छंद—यह गणिका नायक चार जान, सब थोक मांहि इनकी सुमान। तिनकी उतपति हर देव सोय ते पूजों मनवचकाय जोय ॥

ॐ ह्री इन्द्रसम्बन्धि गणिका गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९९ ॥

॥ प्रथम युगल सौधर्म–ईशान स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ ॥

चौपई—लाख बतीस विमान सुजान, सौधर्म स्वर्ग मांहि सोमान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म स्वर्गसम्वन्धि द्वात्रिंशत्लक्ष विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

लाख बतीस सौधर्म सुजान, तिनमें इतने ही जिन थान। आवागमन निवारण हार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्मस्वर्गसम्वन्धि द्वात्रिंशत्लक्षविमान जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

स्वर् ईशान विमान प्रमान, लाख अठाइस सुख के मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्गसम्वन्धि अष्टाविंशति लक्षविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

दूजे स्वर्गमांहि जे जान, तिनमें इक इक है जिन थान। लाख अठाइस गिनती जोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्गसम्वन्धि अष्टाविंशति लक्षविमानेषु जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

॥ पद्धरि छन्द ॥

सौधर्म युगल रचना अपार, ता गति हर पूजों हर्षधार। इहां जिन थल साठ जु लाख जोय, ते पूजों मन वच शुद्ध होय ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशानयुगल सम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

॥ द्वितीय युगल सनत्कुमारमाहेन्द्र स्वर्गसंबन्धि अर्घ ॥

चौपई—सनत्कुमार स्वर्गके मांहि, बारहलाख विमान कहाइ। तिन सब में इक इक जिन गेह, ते हूँ जजों ठान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमारसम्बन्धिविमानस्थ द्वादशलक्षजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

सनतकुमार स्वर्ग के ठोर, सनत्कुमार इन्द्र शिर मोर। ताकी उतपति छेदक पाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार स्वर्गनाथ सनत्कुमारनाम इन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

परथम युगल शुभाशुभ ठाम, सनतकुमार स्वर्ग सुख धाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार स्वर्ग गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

सनतकुमार स्वर्ग के मांहि, श्रेणी बद्ध विमान कहाहिं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार स्वर्गसम्बन्धि श्रेणिबद्धविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

सनतकुमार कलप सुखकार, परकीर्णक तहां जान सुधार। तिनकी उतपति छेदक पाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार सम्बन्धि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

स्वर्ग महेन्द्र कहा सुखकार, आठ लाख जानो सुर धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्गसम्बन्धि विमानस्थित अष्टलक्षजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

स्वर्ग महेन्द्र माहिं ये जान, याही नाम धार हरि मान। ताकी उतपति छेदक पाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग नाम माहेन्द्र देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

दूजे युगल मांहि मन लाय, स्वर्ग महेन्द्र कहा अधिकाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

स्वर्ग महेन्द्र महा सुखकार, श्रेणी बद्ध विमान सुधार। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग सम्बन्धि श्रेणी बद्ध विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

स्वर्ग महेन्द्र मांहि मन लाय, कल्प प्रकीर्ण महा सुख दाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग संबधि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

दूजे युगल मांहि मन लाय, अंजन इन्द्रक जान कहाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि अजना नाम प्रथम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इन्द्रक दूजो युगल सुपाय, है वनमाला नाम सुभाय। । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि वनमाल नाम द्वितीय इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नाग नाम इन्द्रक मन लाय, दूजे युगल मांहि सुख पाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि नागनाम तृतीय इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

दूजे युगल विमान अनूप, इन्द्रक नाम गरुड शुभ रूप। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि गरुड नाम चतुर्थ इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

लांगल नाम विमान सु जान, इन्द्रक दूजे युगल बखान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि लांगल नाम पचम विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

है विमान बलभद्र सुजान, दूजे इन्द्रक युगल प्रमान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल बलभद्र नाम षष्ठम विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

दूजे स्वर्ग विमान सु जोय, इन्द्रक नाम चक्र है सोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि चक्रनाम सप्तम विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

दूजे युगल मांहि सुविमान, इन्द्रक सात कहे जिनवान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिवकार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि सप्त इन्द्रक विमानं गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

॥ पद्धडी-छन्द ॥

है युगल दूसरे में विमान, सब बीस लाख गिनती सुथान ॥ तिन मांहि इते जिन गेह सोय, ते पूजों मन वच अरघ जोय ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि विमान स्थित विंशति लक्ष जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

॥ तृतीय युगल ब्रह्मब्रह्मोत्तर स्वर्ग संबंधि अर्घ ॥

चौपई—तीजे युगल मांहि जिनलाय, जान विमान लाख चव भाय। इतने ही जिनमें जिनगेह, ते हूँ पूजों कर बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि विमान स्थित चतुर्लक्ष जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

तीजे युगल मांहि शुभ जोय, श्रेणी बद्ध विमान सु होय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सबंधि श्रेणिबद्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

तीजे युगल तने शुभ ठाम, है प्रकीर्ण जानहु सुखधाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सवधि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

ब्रह्म युगल में ब्रह्म हरि जान, सो सब देवन को पतिमान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि ब्रह्मइन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

तीजे युगल मांहि मन लाय, नाम अरिष्ट सु इंद्र कहाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि अरिष्ट इंद्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

तीजे युगल मांहि सु विमान, सुरस नाम इन्द्रक शुभ ठान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल संबंधि सुरसनाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

ब्रह्म युगल तीजे सुख थान, इन्द्रक ब्रह्म नाम शुभ जान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल संबंधि ब्रह्मइंद्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

ब्रह्मोत्तर इन्द्रक पहचान, तीजे युगल मांहि सुख दान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सवधि ब्रह्मोत्तर इंद्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

ब्रह्म युगल में ये चव जान, इन्द्रक कहे महा सुखदान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगलसम्बन्धि चतुरिन्द्रकविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

चाल सुनयानन्द—

ब्रह्म युगल लोकान्त सुर जानिये, अष्टविध तासमें सारस्वत मानिये ।
सात सौ सात हैं जान तिन के सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अष्टप्रकारलौकान्तिक सारस्वतजातिदेव सप्तोपरि सप्तशतविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

तीसरे युगल आदित्य सुर जोइये, सातसौ सात शुभ जान मन मोहिये ।
आठ विधि जात लोकान्त में है सही, तिन गतिच्छेद पद पूज हों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगल सम्बन्धि आदित्यजाति लोकान्तिक जाति देव गतिछेदक सिद्धेभ्योअर्घम् ॥ १२ ॥

तीसरे युगल लोकान्त वसु जातिया, अरुण तिननाम सुरजाति शुभ यातिया ।
वह्नि सम जान परमान सुखदा सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगलसम्वन्धि वरुणनाम लौकान्तिक जातिदेव सप्तोपरिसप्तसहस्रविमानगतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥१३॥

देव गर्दतोय लौकान्ति पंचम गिनो, नवमधिकनवसहस्र जान शोभै घनों ।
तीसरे युगल सुररीति ये है सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगलसम्बन्धि गर्दतोयजाति पंचमलौकान्तिक देव नवोपरिनव सहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

जान लौकान्ति सुरजाति के तुपित हैं, जान इन नव अधिक नव सहस्र वन रहे ।
तीसरे युगल यह देव षष्टम सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐह्रीं ह्रीं तृतीययुगलसम्बन्धि षष्ठतुषितजाति लौकान्तिकदेवनवाधिकनवसहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

तीसरे युगल लौकान्त सुर जातिया, सुर अव्याबाध सप्तम भले पातिया ।
जान ग्यारह अधिक सहस्र ग्यारह सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगलसम्बन्धि सप्तमअव्यावाधजातिलौकान्तिकदेव एकादशाधिक एकादशसहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

तीसरे युगल में देव ब्रह्मचारिया, जाति लौकान्तिक में अरिष्ट बिन नारिया ।
जान ग्यारह अधिक सहस्र ग्यारह सही, तिन गतिच्छेद पद पूजिहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगलसंबधि अष्टमअरिष्ट जातिलौकान्तिक देव एकादशाधिकएकादशसहस्रविभावगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

छंद अडिल्ल—— तीजे युगल मझार देव सब पाइये, आठ जाति लौकान्त विमान मिलाइये ।
सहस्र पचावन चार शतक अडसठ सही, इन गति छेदक देव जजों शिवदा मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि अष्टजाति लौकान्तिक देव पचपचाशत सहस्र चतुर्शत अष्टषष्टि. विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

चौपई—ब्रह्म युगल लोकान्तिक सार, प्रथम सारस्वत है मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल संबधि सारस्वत जाति लोकान्तिक देवगतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

सारस्वत आदित्य मधि जान, अरु अगनी भव सहित प्रमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सवधि सारस्वत देवानां विमान मध्यवासी अग्नि जाति देव गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

सुर अगन्याभ विमान सुजान, सात हजार सात अधिकान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अगन्याभजाति देव संवधि सप्तोपरिसप्तसहस्र विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

सूर्याभ लोकान्तिक देव, इस ही अंतर में थुति जेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सारस्वत आदित्य संबंधि अतराल वासीसूर्याभ जाति लोकान्तिक देव विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

लौकान्त सूर्याभ विमान, भव सहस्र अधिक कर ठान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सूर्याभजाति लोकान्तिक देवसवंधि नवाधिक नवसहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

आठ जाति लौकान्तिक देव, तिनमें दूजो आदित भेव । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री द्वितीय आदित्य जाति लोकान्तिक देवगतिच्छेक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

आदित्य वह्नि अंतरै मांहि, सूर्याचन्द्र आभ शुभ ठांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आदित्य वह्नि अतर्वासी चन्द्राभ नाम लोकान्तिक देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

शुभ चन्द्राभ नाम सुर जान, ग्यारह सहस्र ग्यारह मन आन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगल सवंधि चंद्राभ नाम देवानां एकादशाधिक एकादश सहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

याही अन्तराल में जान, सुर सत्याभ वसै हित मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सवधी आदित्य वह्नि अन्तर्वासी सत्याभ जाति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

इन सत्याभ देव के जान, तेरह सहस्र तेरह मन आन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सम्बन्धि सत्याभ देवानां त्रयोदश सहस्र विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

आठ भेद लौकान्तिक सार, तिनमें वह्नि जाति सुर धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं युगल सम्बन्धि तृतीय वह्नि जाति लोकान्तिक देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

वह्नि अरुण के अन्तर मांहि, श्रेयस्कर सुर की थिति ठांहिं। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि वह्निअरुण देवना अन्तर्वासी श्रेयस्करजातिदेवगतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

श्रेयस्कर सुर के सुविमान, पन्द्रह सहस्र रु पन्द्रह आन। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि श्रेयस्करजातिदेवानां पचदशाधिक पंचदश सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ३१ ॥

ब्रह्मयुगल इस ही अन्तराल, क्षेमंकर सुर निवसै साल। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि क्षेमंकर जातिदेव वह्नि अरुणदेवाना अन्तरालवासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

क्षेमंकर सुर के सु विमान, सत्रह सहस्र अरु सत्रह थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि क्षेमकरनामदेव सप्तदशाधिक सप्तदशसहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

अरुण जाति लौकान्तिक देव, आठ प्रकार नमें इन भेव। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकार लौकान्तिक देवसम्बन्धि चतुर्थ अरुणनाम लौकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

अरुण गर्द तोय के मांहि, वृषभ देव वसै तिथि पांहिं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि अरुणगर्दतोय लौकान्तिकदेवानां अन्तरालवासी वृषभेष्टजाति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

उन्निस अधिक सहस्र उन्नीस, सुर वृषभेष्टजान जगदीश। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि वृषभेष्टनामदेवनवदशाधिक नवदशसहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम्॥ ३६ ॥

इन ही अंतराल में सही, देवकामधर निवसें मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अरुणगर्दतोय लौकान्तकदेवानां अन्तरालवासीकामधरदेव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

ये हि कामधर देव विमान, इक्किस सहस्ररु इक्किस जान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि कामधर देवानां एक विंशति अधिक एकविंशति सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

गर्दतोय सुर अरि जे भान, पंचम लौकान्तिक सुख चान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि पचमगर्दतोय लौकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

गर्दतोय तुपित मधि जान, सुर निरमाण रजा मन आन। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ सजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि गर्दतोय तुपित लौकान्तिक देवानां अन्तरालवासी निर्माणनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

सुर निर्माण रजा के जान, तेईस हजार तेईस प्रमान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसंबंधिगर्दतोयतुपित लौकान्तिक देवानां अन्तर्वासी निर्माण राजानाम देवानां त्रिविंशति-अधिक-त्रिविंशति सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

ये चव श्रेणीवद्ध विमान, चारों दिश अनुदिश के थान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सवधि गर्दतोयतुपितलौकान्तिकजातिदेवाना अन्तर्वासी दिगंतरक्षक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

सुर दिगंत रक्षित के जान, पचीस हजार रु पच्चिस मान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सवंधि दिगंत रक्षित जाति देवानां पचविंशति अधिक पंचविंशतिसहस्र विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

वसु प्रकार लोकान्तिक सुरा, तिनमें तुपित पष्टमी धरा। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सवधि अष्ट प्रकार लौकान्तिक स्थित तुपितनाम पष्टम लौकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

तुपित अव्यावाध सु विचैं, आतम रक्षक देव जु रचैं। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सवधितुपितअव्यावाध लौकान्तिक देवानां अन्तर्वासी आत्म रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

आतम रक्षित देव विमान, सहस सताइ सत्ताई जान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सम्बन्धि आत्म रक्षित देवाना सप्तविंशति अधिक सप्तविंशति सहस्रविमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

इसही अन्तर माहि विमान, देव सर्वरक्षित मन आन। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सवधि तुपित अव्यावाध लौकान्तिक देवाना अतराल वासा सर्व रक्षत देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

देव सर्व रक्षित सुविमान, उन्तिस सहसोन्तीस प्रमाण। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सवधि सर्व रक्षित नाम देवाना नवविंशति अधिक नवविंशति सहस्रविमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

सप्तम अव्यावाध सुदेव, लोकान्तिक में शुभ इन टेव। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल संवधि अव्यावाध सप्तम लौकान्तिक देव गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

अव्याबाध अरिष्ट सुविचै, मारुत सुर की शुभ थिति जचै। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधि अरिष्ट नाम देवानां अन्तर्वासी मरुननाम देव गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

इनही मरुत सुरनि के जान, इकतिस सहस्र रु इकतिस मान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि मरुतनाम देवानां एकत्रिंशत–अधिक एक त्रिंशत सहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

अन्तराल इन ही के देव, ब्रह्मयुगल में तिष्ठत जेव। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधि अव्याबाध आरिष्ट लोकान्तिकदेवानां अन्तर्वासीवसुनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ५२ ॥

इन वसुदेव विमान प्रमान, तेतिस सहस्र तेतीस बखान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसबन्धि वसुनाम देवाना त्रयत्रिंशतअधिक त्रयत्रिंशतसहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

ब्रह्मयुगल लोकान्तिक देव, अष्टमजाति अरिष्ट सुमेव। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि अष्टम अरिष्टजातिनाम लोकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५४ ॥

मध्य अरिष्ट सारस्वत तने, अश्व नाम सुर की गति बने। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अरिष्ट सारस्वतलौकान्तिक देवाना अन्तर्वासी अश्वनाम देवगति छेदकसिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५५ ॥

अश्वदेव के लखो विमान, पैंतिस सहसरु पैंतिस जान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसबधि अरिष्टसारस्वतलौकान्तिक देवाना अन्तरालवासी अश्वजातदेवाना पचत्रिंशदधिक पचत्रिंशतसहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

इस ही अन्तर में शुभ जान, विश्व नाम सुरके हैं थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि अरिष्टसारस्वत देवानां अन्तर्वासी विश्वनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

इन ही विश्व देवके जान, सैंतीस हजार रु सैंतिस मान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अरिष्टसारस्वतलौकान्तिक देवानां अन्तरालवासी विश्वदेवाना सप्तत्रिंशत अधिक सप्तत्रिंशतसहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

ब्रह्मयुगल में संख्य विमान, जिन धुनि भाषे चव लख जान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि चतुर्लक्षविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

दोहा— ब्रह्म युगल चव लख गिनो, तिनके वासी देव। तिन गतिहर शिव पद लयो, ते पूजों कर सेव ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्वन्धि चतुर्लक्षविमानवासीदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम महार्घम् ॥ ६० ॥

॥ चतुर्थ युगल लांतव–कपिष्ट स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ ॥

लांतव युगल मांहि मन लाय, लांतव नामा स्वर्ग कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं लांतव युगलसम्बन्धि लातवनाम स्वर्गगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

स्वर्गनाम कापिष्ट सुजान, चौथे युगल मांहि मन आन। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि कापिष्टस्वर्गगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

लांतव युगल तने मन लाय, श्रेणीबद्ध विमान सुभाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि श्रेणीवद्ध विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ६३ ॥

लांतव युगल संबंधि जेय, परकीर्णन विमान गिन लेय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं लांतव युगल सम्बन्धि प्रकीर्णकविमानगगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

लांतव युगल विमान सुभाय, इन्द्रक ब्रह्म हृदय मन लाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ युगलसम्बन्धि ब्रह्महृदयनाम इन्द्रकविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

चौथे युगल सु इन्द्रक जान, लांतव ताको नाम वखान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि लातवनाम इन्द्रकविमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

लांतवादि इन्द्र द्वयजान, सामानादि इन्द्र सुर मान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि लांतवइन्द्रसम्बन्धि सामान्यादि देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ६७ ॥

लांतव युगल प्रमाण विमान, सहस्र पचास जान सुख थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि पचाशतसहस्र विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

चौथे युगल विमान बताय, तिनके वासी देव कहाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि पंचाशत सहस्रविमानवासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६६ ॥

छंद अडिल्ल—

लांतव युगल विमान प्रमाण बखानिये, गिनती सहस्र पचास देव पुर मानिये।
तिन मांही जिन मंदिर हैं इक इक सही, ते मैं पूजों मन वच तन पुण्य की मही ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि पचाशत सहस्रविमानसम्बन्धि पंचाशत सहस्र जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

॥ पंचम युगल शुक्र महाशुक्र स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ ॥

पंचम युगल महा सुखदाय, शुक्रनाम सुख खान कहाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगलसम्बन्धि शुक्रनामविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

शुक्र विमाननाथ मन लाय, शुक्र इन्द्र तसु नाम कहाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगलसम्बन्धि शुक्रनाम इन्द्रक गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७२ ॥

महा शुक्र शुभ नाम कहाय, पंचम युगल मांहि सुखपाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगल सम्बन्धि महाशुक्रनाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७३ ॥

शुक्र युगल में एक सुजान, इन्द्र जान शुक्र मन आन। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचम युगलसम्बन्धि शुक्रनाम एक इंद्रकविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७४ ॥

पंचम युगल मांहि जे जान, श्रेणीबद्ध विमान सुमान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचमयुगलसंबधि श्रेणीबद्धविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७५ ॥

पंचम युगल मनोहर सही, परकीरण विमान शुभ मही। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचमयुगलसम्बन्धि प्रकीर्णक विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

पंचम युगल विमान प्रमान, सहस्र चालीस महा शुभ थान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचमयुगलसम्बन्धि चत्वारिंशत सहस्र विमानवासी देव गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

ये चालीस हजार विमान, इनके वासी देव सुजान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगलसम्बन्धि चत्वारिंशत्सहस्र विमानवासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घंम ॥ ७८ ॥

छंद पद्धरि—चालीस सहस्र पंचम वखान, तिन एक एक में जिनद थान । ते रतन मई शोभा अपार, ते पूजों मन वच अर्घ धार ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगल सम्बन्धि चत्वारिंशत्सहस्रविमानवासी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घंम ॥ ७९ ॥

॥ षष्ठम युगल शतार सहस्रार स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ ॥

चौपाई—युगल सतार मांहि मनलाय, इन्द्र सतार सकल सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल संबधि सतारगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

छट्ठे युगल मांहि शुभ थान, स्वर्गसतार स्वर्ग को दान । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल सबंधि सतार गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८१ ॥

छट्ठे युगल संबंधी जेय, सहस्रार स्वर्जानो तेय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठम युगल सम्बंधि सहस्रार स्वर्ग गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घंम् ॥ ८२ ॥

छटे युगल सुजान विमान, श्रेणी बद्ध महा पुनि खान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल संबंधि श्रेणीबद्ध विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घंम ॥ ८३ ॥

युगल सतार तने मन लाय, परकीर्णक सुविमान सुभाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल सबन्धि प्रकीर्णक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घंम् ॥ ८४ ॥

युगल सतार मांहि मन लाय, इन्द्रक नाम सतार सुभाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगलसम्बन्धि सतारनाम इन्द्रकविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घंम ॥ ८५ ॥

छट्ठे युगल तने सुविमान, हैं षट सहस्र महा सुखथान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगलसंबंधि सतारनाम इन्द्रक षट्सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घंम ॥ ८६ ॥

छट्ठे युगल वास तिन तनो, सामान्यादिक सुर सब गिनो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठम युगल सम्बन्धि सामान्यादिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घंम् ॥ ८७ ॥

नव ग्रैवेयक सम्बन्धि अर्घ

चौपई—नव ग्रैवेयक कल्पातीत, तीन तरक ताके शुभ मीत । तिनकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सम्बन्धि गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १०७ ॥

अधोग्रीव में जान प्रमान, एक सैंकड़ा ग्यारह मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आधोग्रैवेयक सम्बन्धि एकादशाधिक एक शत विमान गतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

मध्य ग्रीव में जान विमान, एक सैंकड़ा सात सुजान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मध्य ग्रैवेयक सम्बन्धि सप्ताधिक एकशत विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

ऊपर ग्रीव विषै शुभ जान, नव्वे एक प्रमाण सुजान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उर्ध्वग्रैवेयक सम्बन्धि इक्यानवे विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११० ॥

नव ग्रीवक सम्बन्धि जान, श्रेणी बद्ध विमान सुमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि श्रेणीबद्ध विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

ग्रीवक नव के और विमान, परकीर्णक जानों शुभ थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव ग्रैवेयक सम्बन्धि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

ग्रैवेयक में जान विमान, नाम सुदर्शन इन्द्रक थान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि सुदर्शन नाम इन्द्रक विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

अहमिंदरग्रैवेयक भाय, इंद्रक तहां अमोघ कहाय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि अमोघनाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११४ ॥

ग्रैवेयक के मध्य सुधार, सुप्रबुद्ध इन्द्रक सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि सुप्रबुद्ध नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ११५ ॥

इन्द्रक नाम यशोधर सही, ग्रैवेयक में गिनती कही। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि यशोधर नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

नाम सुभद्र जास को सही, ग्रैवेयक में गिनती कही। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव ग्रैवेयक सवंधि सुभद्र नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११७ ॥

ग्रैवेयक में शुभदाख्यान, सुविशाल इन्द्रक मन आन। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संवधि सुविशाल नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११८ ॥

अहमिंदर ग्रैवेयक भाय, सुमनस इन्द्रक तहँ ठहराय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संवधि सुमनस नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११९ ॥

ग्रैवेयक में इन्द्रक सार, है सौमनस नाम तिस धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सम्वन्धि सौमनसनाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२० ॥

नव ग्रैवेयक इन्द्रक सार, नाम प्रीतिकर शोभा कार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सवधि प्रीतिकर इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ १२१ ॥

ग्रैवेयक में जान प्रमान, तीन सैंकड़ा नव शुभ थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव ग्रैवेयक सम्वन्धि नवाधिक त्रयशत विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२२ ॥

ये ही तीन शतक नव जान, इनमें देव वसैं अधिकान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संवधि नवाधिक त्रयशत विमान वासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२३ ॥

छंद पद्धरि—ग्रैवेयक त्रय सो नव विमान, तिनमें तितने ही जिन सुथान। ताकी उतपति छेदक जु सोय, ते मैं सिध पूजों अर्घ जोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सम्बन्धि नवाधिकत्रयशतविमानस्थ जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२४ ॥

चौपाई—अहमिंदर सब ही मन भाय, देव अनूदिश के जिन राय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव अनुदिश अहमिंद्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२५ ॥

इनही पंच विमानन मांहि, देव बसे अहमिंदर ठांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अनुत्तरवासी अहमिंद्र देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४५ ॥

॥ छन्द-पद्धरि ॥

इन पंच अनुत्तर पंच जान, तहाँ विगर किये जिन पंच थान। जिन रूप समां आकार सोय, ते पूजों मन वच शुद्ध होय ॥

ॐ ह्रीं पंच अनुत्तर संबधि पंच जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४५ ॥

छन्द-हरिगीतिका-सब कल्प कल्पातीत देव विमान की गिनती सही, सब लाख चौरासी सित्याणव सहस तेइस पुनि मही ॥
तिन मांहि इक इक थान जिनके, पाप हर तिनही धरा, ते देव पूजों जाय सनमुख हम जजें इहँ तें खरा ॥

ॐ ह्रीं स्वर्ग लोक सम्बन्धि चतुरशीति लक्ष सप्तनवतिसहस्रत्रयो विंशति श्री जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १४७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा- देव सुरग वासी घने, महा पुण्य के थान। तहँ उपजत जिन धर्म धर, तिन कछु कह्यो बखान ॥ १ ॥

छन्द मुनियानन्द-
स्वर्गवासी सुरा दोय विधि जानिये, कल्पवासी रुकल्पातीत पहचानिये।
स्वर्ग षोडश सुरा नारि धर जोइये, कल्पवसु शीश सुरदेवी बिन होइये ॥ २ ॥
कल्प है नाम सौधर्म ईशानजी, सनतकुमार माहेन्द्र शुभ जानजी।
ब्रह्मब्रह्मोत्तरा जुगल तीजा सही, लांतव कापिष्ट है जुगल सुख की मही ॥ ३ ॥
शुक्र महा शुक्र जुग पंचमों सार जी, जुगल सत्तार सहसार सुखकारजी।
आनता प्राणत सातमा जुग भया, आठमा आरणाच्युत जुगल जिन चया ॥ ४ ॥
नवगिरी अनुदिशा पंच अनुत्तर सही, अब कहों पटल विधि सकल जिन धुनि कही।
जुगल पहले पटल तीस इक जानिये, दूसरे जुगल में सात ही मांनिये ॥ ५ ॥
पटल चव तीसरे जुगल में है सही, दोय है पटल चवथे जुगल की मही।
पांचवां युगल विषैं एक इन्द्रन कहा, षष्ठमें के विषैं एक ही है कहा ॥ ६ ॥

सातमें जुगलत्रय पट् सुखदाय है, तीन ही पटल जुग आठ में पाय है।
नवग्रैवेयके पटल नव सुखकरा, अनुदिशा मांहि इक पटल शोभा धरा ॥ ७ ॥
पंच अनुत्तर विषैं पटल इक जोड़ये, अब सुनो इन्द्र जिन स्वर्ग थल होइये।
जुगल सौधर्म में जुगल हरि है सही, जुगल दूजे विषें इन्द्र जुग सुख मही ॥ ८ ॥
तीसरे जुगल इक इन्द्र सुखदाय है, जुगल चवथा विषें इन्द्र इक पाय है।
पांचमें जुगल हरि एक का राज है, एक ही इन्द्र षष्टम जुगल सांच है ॥ ९ ॥
सातमें जुगल हरि दोय राजे सही, इन्द्र अष्टम जुगल दोय पति की मही।
ऊपरैं सकल सुर इन्द्र पदधार है, हीन औ अधिक नहिं सब अनुसार है ॥ १० ॥
अब सुनो स्वर्ग में भवन जितने सही, साठ लाख प्रथम दुक जान सुखकी मही।
बीसलाख दूसरे जुगल में जानिये, तीसरे जुगल चवलाख शुभ थानिये ॥ ११ ॥
अर्द्ध लच्च जान चवथे जुगल पाइये, सहस्र चालीस पंचम जुगल गाइये।
जुगल षष्टम् विषैं सहस षट् है सही, जीव पुण्यवान उपजें यही सुखमही ॥ १२ ॥
सातमें आठमें जुगल के जोरिये, सातसौ जान होय पुण्य फल कोरिये।
नवग्रैवेयक में तीन सौ नव सही, नव अनुदिश विषें जानि नव पुनि मही ॥ १३ ॥
पंच अनुचर विषें पंच ते जानिये, अब सुनों भूमि तें उर्द्ध परमानिये।
भूमि में उर्द्ध सौधर्म जुग की मही, डेढ राजू गिनो हद तिनकी मही ॥ १४ ॥
प्रथम जुग ऊपरै जुगल दूजो सही, डेढ राजू उपरि शीश ताकी मही।
षट् जुगल ऊपरें क्रम तें जानिये, राजू आध आध सब ऊर्ध्वक्रम मानिये ॥ १५ ॥
सर्वपट् राजु में कल्पसुर पाईये, नवग्रीवादि इक राजु में गाईये।
मध्यराजू विषें अनुदिशा है सही, अनुचरा पंच, राजू तनी अनि मही ॥ १६ ॥
जुगल पहलो लखो जल आधार है, दूसरो जुग कह्यो पवन मझधार है।

जल अरु पवन ये स्कन्ध पुद्गल तने, मान आधार सुर भवन टिक हैं भने ॥ १७ ॥
तीसरो जुगल जल पवन आधार है, जुगलचवथो पवन जल के अधार है।
पंचमें जुगल जल पवन ते थिर रह्यो, जुगल षट्म पवन जलथकी ध्रुव कह्यो ॥ १८ ॥
सातमें जुगल को आदि ऊपर सही, पंच अनुत्तर तनी भौम तहां लों कही।
सकल ही जान नभ तने आधार हैं, अब सुनो देव प्रवीचार विधिसार हैं ॥१९॥
जुगल सौधर्म में मनुप सम रमत हैं, दूसरे जुगल तन फरसि सुख पमत हैं।
रूप लख तृपति सुर तीसरे जुगल है, जुगल चवथे सुरा इन समां संग लहै ॥ २० ॥
पंचमे जुगल सुनि शब्द तिरपत सही, जुगल षट्म सुने शब्द ही धुनि कही।
मन चले तृपत सातमें जुगल के सुरा, आठमें जुगल भी मन चले भन गुरा ॥ २१ ॥
देव अहमिंद्र के काम सेवन नहीं, मन वचन काय से चाह त्रियकी गई।
अब सुनों वरन जे भवन के पाइये, पंचवर्ण जानि पहले जुगल गाइये ॥ २२ ॥
जुगल दूजे वरन चार विन स्याम है, कृष्ण अरु नील विन तीजे जुग धाम हैं।
जुगल चौथे लखो तीन रंग सार है, कृष्ण अरु नील विन शोभा करतार है ॥ २३ ॥
जुगल पंचम विषे दोय रंग जानिये, पीत अरु शुकल बहु शोभ दे मानिये।
जुगल षट्म विषे रंग पंचम सना, अवर सब जानि शुक्ल में ही रंग पना ॥ २४ ॥
अब सुनो अवधि जे देव जेती लखे, पहल नर्क थानलों पहल जुग सुरलखे।
दूसरे नर्कलों अवधिजो जानिये, दूसरे जुगल का देव सो मानिये ॥ २५ ॥
तीसरा जुगल चौथा तने सुर सही, तीसरे नर्क लों अवधि तिनकी कही।
पंचमें जुगल छट्टे तने सुरपती, अवधि तें नर्क चवथा तनी है गती ॥ २६ ॥
सातमें जुगल अष्टम जुगल सुर मही, पंचमें नर्क लों ग्रैवेक सुर लही।
छट्टे नर्क लों ग्रैवेक सुर लखे, देव अहमिन्द्र अनि साज नर्क लों अखे ॥ २७ ॥

अब सुनो देवको मरन को अंतरा, जुगल सौधर्म में सात दिन का खरा।
दूसरे जुगल इक पक्ष अंतर सही, मास इक तीसरे जुगल में जिन सही ॥ २८ ॥
जुगल चौथा विषे मास अंतर गिनो, पंचमें जुगल दो मास अंतर बनो।
जुगल छट्टे विषे मास दोय अंतरा, सातमें आठमें चार का है खरा ॥ २६ ॥
थान अहमिंद्र में अंतरा मास छै, अब सुनो देव की थिति तनी जास है।
जुगल पहला विषे आयु दो सागरा, दूसरे जुगल थिति सात दधि की खरा ॥ ३० ॥
तीसरे जुगल दश उदधि की आय है, जुगल चवथा तनी चतुर्दश भाय है।
पांचमें जुगल थिति उदधि षोडश सही, समद दश आठ थिति जुगल षष्ठम मही ॥ ३१ ॥
सातमें जुगल की बीस दधि आयुजी, आठमें जुगल बावीस दधि भायजी।
ग्रैव में एक इक अधिक दधि आनिये, अंतग्रीव मांहि इकतीस दधि मानिये ॥ ३२ ॥
नव अनुदिश समद तीस दोय आय है, तीस अरु तीन दधि अंतरे पाय है।
आय उत्कृष्ट सागर यह जानिये, अब सुनो काय परमान मन आनिये ॥ ३३ ॥
जुगल पहला विषैं सात कर पाइये, दूसरे जुगल षट् हाथ की काइये।
तीसरे जुगल तन पांच कर है सही, जुगल चवथा विषै पांच कर ही कही ॥ ३४ ॥
पांचमें जुगल तने चार कर सार है, आध त्रय हाथ तन छटे जुग धार है।
सातमें जुगल तन तीन कर का सही, आठ में तीन कर काय सुख की मही ॥ ३५ ॥
कर अढ़ाई सु दोय ड्योढकर जांनिये, ग्रीव की काय सुखदाय इक मानिये।
अनुदिशानुत्तरा काय इक कर सही, अब सुनो अंतरा देव भोजन कही ॥ ३६ ॥
जिते सागरा तनी आयु सुर पाइये, सहस जेते बरष भोजना गाइये।
देव अन्न भोजना नांहि चाहें सही, जिते सागर तनी आयु ताकी कही ॥ ३७ ॥
पक्ष जेते गये श्वांस उश्वास हैं, अब सुनों मुकट के चिह्न सुर भास हैं।

चिह्न हैं कल्पवासीन के ही कहे, कल्पवासीन के उर्ध्व नाहीं गहे ॥ ३८ ॥
सूर अरु हिरण के प्रथम जुगमें सही, दूसरे जुगल के महिस मछला कही ।
काछवा मींडका ब्रह्म जुग जांनिये, चिह्न ये देव के मुकुट विच मानिये ॥ ३९ ॥
चिह्न घोटक गजा जुगल चवथा सही, चिह्न शशि सर्प को जुगल पंचम मही ।
खड्‌ग छेला चिहन जुगल छट्टे कहे, सातमें जुगल वैल चिह्न सुर के बहे ॥ ४० ॥
जुगल अष्टम् विर्षे चिह्न सुरतरु कह्यो, चिह्न अहमिन्द्र को नांहि हम सरदह्यो ।
सुश्रवनो स्वर्ग को जान मोटापनों, तासको धार मन आप संशय हनों ॥ ४१ ॥
जुगल सौधर्म को जांनि मोटा सही, शतक एकादशा अधिक इक इक कही ।
इतने जोजन तहां जान भू दल कहा, अब सुनो दूसरे जुगल में जिम ठहा ॥ ४२ ॥
अधिक ठाईस इक सहस जोजन सही, जानकी भूमि मोटी प्रभु धुनि कही ।
तीसरे जुगल को जान मोटो पनों, अधिक तेईस नव सैंकड़ा दल गिनो ॥ ४३ ॥
जुगल चवथा विर्षे जांनि मोटे सही, अधिक चौईश शत आठ मुनिजन कही ।
पंचमें जुगल के जान मोटे कहे, अधिक पचीस शत सात मणिमय ठहे ॥ ४४ ॥
जुगल छट्टा विर्षे जान दल जांनिये, अधिक छब्बीस शत जोय षट् मांनिये ।
सातमें जुगल में जान मोटी धरा, पांचसौ बीस अंक सात ऊपर परा ॥ ४५ ॥
जुगल अष्टम विर्षे जात दल पाइये, चार शत अधिक ठाईश श्रुत गाइये ।
नवग्रैवेक के जान मोटे सही, अधिक गुणतीस सौ तीन सुखदाम ही ॥ ४६ ॥
नव अनुत्तर विर्षे जान दल गाइये, तीसकर अधिक सत दोय मन लाइये ।
पंच अनुत्तर तनें जान मोटे सही, अधिक इक्कीस शत एक मणिकी मही ॥ ४७ ॥
अब सुनो सुरग सुर लेश्या जो धरे, तासफल भाव समथान में अवतरे ।
जुगल सौधर्म में पीत लेश्या कही, दूसरे जुगल में पीत अरु पदमही ॥ ४८ ॥

काढि ईशान हरि भक्ति तें आय है, चेत्र ऐरावता जिन निमित्त लाय है ॥ ८० ॥
स्वर्ग तीजे विषै मान थंभ मांहिजी, करंड तिन मांहि आभूषण पाहिजी ।
पूर्वसु विदेह में जे जिना अवतरे, स्वर्गपति ल्याय आभरण रीति करें ॥ ८१ ॥
स्वर्ग माहेन्द्र में मानथंभ जो सही, तिन विषें करंड आभूषणा सुखमही ।
अपर विदेह में होय जिनरायजी, लाय माहेन्द्र हरि धरै जिन पायजी ॥ ८२ ॥
मानथंभ लूमते करंड तहां पाय है, योग्य जिनराय शुभ वस्तु तिन मांहि है ।
ता यकी देव हरि सकल करि पूज है, जा सभी विनय तें पाप सब धूज है ॥ ८३ ॥
मानथंभ पास उतपात ग्रह मानिये, आठ जोजन तनों तुङ्ग नभ आनिये ।
वास ही आठ ही जोजना है सही, तासपे मणिमई दोय सज्या कही ॥ ८४ ॥
तिन विषें इन्द्र ही आय उपजै सही, करै बहु पुण्यके पाय है वह मही ।
फेर उतपाद गृह पास ही जानिये, वहु विनय सहित जिन भवन तहां मानिये ॥ ८५ ॥
तुङ्ग बहु शिखर जुत मणिमई है सही, तिन विषें बिंब जिनराज ममधुनि कही ।
पूजि हैं हम सभी द्रव्य ले आव जी, मुख थकी भक्ति कर पुन्य उपजावजी ॥ ८६ ॥
कौन गुनथान धरे कौन स्वर्ग अवतरे, सो कथन अब सुनो सकल संशय हरे ।
देशसंयत जिया असंयत सो जिया, अच्युतलों उपजै धर्मजुत हो दिया ॥ ८७ ॥
द्रव्य तो स्वांग मुनिराज को बनि रह्यो, भाय गुन थान चव पंचमो ही कह्यो ।
तथा गुनथान मिथ्यात ही है सही, तो लहै अंतग्रीवेक की शुभ मही ॥ ८८ ॥
मनुष्य द्रव्य भावकर महाव्रत धारजी, ते लहे मोच्च सर्वार्थ सिद्ध सारजी ।
देव यह एक भव लेय शिवजायजी, नाम तिनके सुनो महासुख दायजी ॥ ८९ ॥
इन्द्र सौधर्म पट देवि ताकी शची, तास ही लोकपाल चार सुर यह जची ।
दच्चिण दिश तने सब इन्द्र जानों सही, देव लौकांत सर्वार्थ सिध सध कही ॥ ९० ॥

तीसरे जुगल में पदम इक जांनिये, पदम ही जुगल चवथा विषें भानिये ।
पंचमें जुगल में पदम शुक्ला कही, जुगल षष्टम विषें पंचमें सम मही ॥ ४९ ॥
शुक्ल लेश्या सकल ऊपरे थान ही, अब सुनों देव की नार थिति मान ही ।
स्वर्ग सौधर्म में देवत्रिय आयुजी, पंच ही पल्य परमाण सुखदायजी ॥ ५० ॥
स्वर्ग ईशान में सात पल्य पाइये, तीसरे स्वर्ग में पल्य नव गाइये ।
पल्य ग्यारह थिति स्वर्ग चौथे सही, पंचमें स्वर्ग दश तीन पल्य बनि रही ॥ ५१ ॥
स्वर्ग छट्ठा विषे पल्य पन्द्रह सही, सातमें स्वर्ग पल्य जान सतरह कही ।
आठमें स्वर्ग उन्नीस पल्य जानिये, रूप अति शुभग देवांगना मानिये ॥ ५२ ॥
स्वर्ग नवमा विषें पल्य इक्कीस है, पल्य तेईश दश में स्वर्गदीश है ।
ग्यारमें स्वर्ग पच्चीस पल्य आयु है, पल्य दोय अधिक बारह सुरा पाय है ॥ ५३ ॥
तेरमें स्वर्ग चौतीस की थिति कही, पल्य चालीस इक स्वर्ग चौधम सही ।
दोय कम आधसौ पल्य देवी तनों, पन्द्रमें स्वर्ग इस रीति शोभा घनों ॥ ५४ ॥
पल्य पचपन तनी आयु मन लाइये, सोलमें स्वर्ग देवीन को पाइये ।
ऊपरैं नांहि देवांगना है सही, अब सुनों इन्द्रके नगन तिस थल ठही ॥ ५५ ॥
जुगल सौधर्म का पटल इकतीसमां, दिशा दच्चिण थकी इन्द्र है अतिरमा ।
श्रेणि बद्ध मांहि अष्टादशम जानजी, ताविषें इन्द्र सौधर्म को थानजी ॥ ५६ ॥
श्रेणि उत्तर विषें जान अष्टादशा, इन्द्रईशान तिस थान में नित बसा ।
सनतकुमार जुगल में अन्तके पटलजी, जान इन्द्र थकी दच्चिण दिश अटलजी ॥ ५७ ॥
सोलहें जान इंद्रक तनों वास है, उत्तरदिश सोलह जान सुखरास है ।
जान माहेन्द्र को वास सुखदाय है, ब्रह्मजुग अन्त के पटल विच पाय है ॥ ५८ ॥
आन दच्चिण दिशा पटल इन्द्रक थकी, चौदवें ब्रह्म का ब्रह्म इन्द्र स्थिति ।

ये सकल भोग सुख चय नर होय जी, ठान तप होय मुनि कर्ममल खोयजी ।
जाय शिव थान ये नेम ध्वनि में कह्यौ, और सुर को नहीं नेम श्रुत वर्णयो ॥ ९१ ॥
देव सज्या विषें ऊपजै जिम सही, सूर्य उदयाचले हृदय हो इम कही ।
काल तुच्छ मांहि तन धार पूरन लहे, गंध शुभ रूप सुर ऊपजे चिर रहे ॥ ९२ ॥
उपज करि सम्पदा देखि सुख पाय है, अवधि ते पूर्व परजाय समथाय है ।
धर्मफल जान जिन जजैं उमगे सही, निर्मला जल सपरि भवन जिन जायही ॥ ९३ ॥
देव समदृष्टि स्वयमेव जिन पूज है, तास फल फिर बहू संपदा पूर है ।
और उपदेश मिथ्यामती जे सुरा, पूजि हैं देव जिन कार्य मुख्य यह करा ॥ ९४ ॥
देव फिर आय जिन पूजि बहु सुख करे, पंच कल्याण जिनराज पूजन धरे ।
सकल मधिल्लोक जिन थान सेवे सही, सर्व परवी विषें पूजि हैं जिनमही ॥ ९५ ॥
मेरुतें पहल स्वर्ग बाल अन्तर कही, नाम इन्द्रक यह प्रथम ऋतु की मही ।
और जे ऊपरें सकल इन्द्रक कहे, असख्य जोजन तने अन्तरै बनि रहे ॥ ९६ ॥
नाम सर्वार्थ सिद्ध अन्त इन्द्रक सही, द्वादश योजना मोक्ष अन्तर कही ।
मध्य में सप्तराजू सुरग थान है, ऊपरें मोक्षयें सिद्ध जिन थान है ॥ ९७ ॥
जीव इन मांहि सब पुण्य ते जाय हैं, वांच्छते सकल सुख आयु लग पाय है ।
आदि और अन्त विस्तार घनी मानिये, देखिये वाणि जिन सकल तहां जानिये ॥ ९८ ॥
स्वर्ग सुख थान महा पुन्य ते पाइये, चाहिये जीव सुख भलो पुण्य लाइये ।
पुन्य ते सकल सुख आय करमें रहें, मानि जिन वानि उर नांहि संशय रहे ॥ ९९ ॥

दोहा— स्वर्गथान में जिन भवन, पूजत सुर है सोय । हम इह भावे भावना, पूजत अरघ संजोय ॥ १०० ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गलोक सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घम् ॥

॥ सिद्ध लोक पूजा ॥

गीरासा—चेतन ज्ञान सरूप सदा सुख नाम लिये अघ जावे, शुद्धस्वभाव मूर्ति विन अञ्जन राग दोष नहिं पावे ।
कर्म कलंक विना आतम इक, लोक शिखर पे राजे, ऐसे सिद्ध अनन्त सिद्ध थल, थापि जजों शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्ध परमेष्ठी अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननं ॥
अत्र तिष्ठ ठः ठ स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

—प्रभो सुख सब होय मोकों, और कहा विनती करों । मैं जजों ते सिध चक्र सब ही, लेय जलभव दुख हरों ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही । तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

शुभलेय निरमल नीर चंदन, बावना गंधित खरा । धरि कनक झारी धार निजकर, पूजहूँ सब शिव धरा ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकत्र विन मूरति सही । तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

विन खंड उज्ज्वल नोक जुत शुभ, भले अक्षत लाइये । धरि भक्ति उर कर लेय अपने, सिद्ध चरन चढाइये ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही । तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुरद्रुम सुभग लेकर, भले भावन आइये । मदहरन मदन मनोज को सब, सिद्ध पूज कराइये ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही । तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखर स्थित अनन्त सिद्धेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य मोदक सेव घेवर, सुभग फेनी रस मई । इन आदि नेवज लेय निजकर, सिद्ध पूजन विधि ठही ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही । तिस थान मोहमलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखरस्थित अनन्त सिद्ध परमेष्ठी सिद्धेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तमहार दीपक धूम विन जो, शोभ रतन समा धरे । यह लेय कर उर भक्ति धरिके, सिद्धपद पूजन करे ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही । तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखर स्थित अनन्त सिद्धेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दशविधि अगर आदिक, गंध मेल सु आइये । फिर भक्ति उर धर सिद्ध पूजन, मन वचन तन आइये ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही । तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखर स्थित अनन्त सिद्धेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

फल लोंग खारक श्रीफला शुभ, और अधिक मंगाइये । धरि शुद्धभाव अनन्द उर कर, सिद्ध पूजन आइये ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही । तिन थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखर स्थित अनन्तसिद्ध परमेष्ठीभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दनाक्षत फूल चरुले, दीप धूप फला भले । कर अरघ सुन्दर आपने कर, सिद्ध पूजन को चले ।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही । तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

सिध लोक में सुख जीव पावें, करम रज तिनके नहीं । तिस ठाम थोरे जीव हैं बहु भीड किंचित् ना कही ।
एक ही अवगाहना में, सिद्धजीव अनन्त हैं । दृग ज्ञान आदिक पंच सुखके, जजों सब शिव सिध मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्तशिव परमेष्ठीभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—ज्ञानावरणी करम जराय, पायो केवल ज्ञान सुभाय । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्मघातक लोक शिखर विराजमान सर्वसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

दर्शनावरणी की क्षय लाय, केवल दरशन ते दरसाय । राजत लोक शिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी घातक लोकशिखरस्थित सर्व सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

कर्म वेदनी नाम निकन्द, बाधा रहित लह्यो आनन्द । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मघातक लोक शिखर स्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

मोह करम के मूल गमाय, सम्यक गुण तिन शुद्ध कराय । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मोहकर्म घातक लोकशिखर स्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

आयु करम क्षय कर भगवान, अवगाहन गुण पायो जान । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आयु कर्मघातक लोक शिखरस्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

नाम करम नास्यो जिनराय, सूक्ष्म गुण परगट करवाय । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नाम कर्मघातक लोक शिखरस्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

गोत्र करम के गोत गमाय, अगुरु लघु गुण को प्रगटाय । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्मनाशक लोक शिखरस्थित सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

अन्तराय के नाशन हार, वीर्य अनन्त लहे शिवधार । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मनाशक लोक शिखरस्थित सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

तीन लोक आकाश मझार, सूक्ष्म बादर जीव अपार । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तीनलोक क्षेत्र सम्बन्धि सूक्ष्मबादर जीव उत्पत्तिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— तीन लोक चूड़ामणी, अष्टकर्म रज नांहि । नमों सोय नमनों मिटे, सिद्ध देव जग मांहि ॥ १ ॥

॥ वेसरी-छन्द ॥

सिद्ध देव शिव नारी भरता, भक्तन कों निज थल सम करता । जिसो संग तैसो फल पावे, दीपक तें दीपक ह्वै जावे ॥२॥

सिद्ध अमूरत चेतन थानो, जाना सकल लिया सुध ज्ञानो । दर्श अनंत वीर्य अतिभाई, सुखी अनंत काल चिर थाई ॥३॥

सूक्ष्म गुण निरबाध कहाई, अगुरुलघू गुणधारक सांई । अव्याबाध व्याध नांहि कोई, और अनंत आदि इन होई ॥४॥

अष्ट करम रजतें सिध दूरा, सिद्ध लोक थल में सब पूरा । इक इक सिध अवगाहन मांही, सिद्ध अनंतानंत सु पांही ॥५॥
तीन काल में जे सिध होई, सिद्ध लखें इक छिन में सोई । इक इक सिध सब सिध में जानों, ऐसे अद्भुत केवल ज्ञानों ॥६॥
सिध सुख सो सुख जगमें नांही, उपमा जाकी कही न जाही । मनुष्य विषै चक्री के माहीं, होय सकल ते सुख अधिकाही ॥७॥
चक्री ते सुख असंख्य बतानों, नागपती देवन के मानों । इनते असंख्य गुनों सुख गाई, कल्पदेव भोगत अधिकाई ॥८॥
इनतें सुख असंख्य गुण जानों, अहमिंदर देवन के मानों । इन सब तें असंख्य सिद्धन के,होय अनंतगुणो सुख तिनके ॥९॥
जग में इंद्री सुख छेयकारी, सिद्ध सुखी अन-इन्द्री भारी । सांचे जाने जग सुख पावे, ते सिध सांचो सब लिखवावे ॥१०॥
जग सुखतें इन्द्रादिक भाई, देखत नाश होय थिति जाई । सुखी सिद्ध त्रय कालिक जानों, भोगें अचल होय नहि हानों ॥११॥
ऐसे सिद्ध सिद्ध-थल मांहीं,तिनपद धोक करों थुति लाहीं । ते सिध करों सिद्ध मो काजो,सब दुख हरो अरज यह राजो ॥१२॥
सिद्ध भक्ति भक्तन सुखदाई, वांछित सिद्ध होत है भाई । इनकी थुति जानों शिव थानों, करो भव्य श्रद्धा जिन मानों ॥१३॥
सिद्ध चक्र सब को सुखदाई, पूजों अर्घ ठांनि थुति लाई । ता फल होय न जग अवतारा, और कहा फल लहिये भारा ॥१४॥

दोहा— ऐसे सिद्धन ठान थुति, अरघ लेय कर सोय । जजों पांय मन वच सही, हर बाधा भवि लोय ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखरस्थित अनत सिद्धेभ्यो जयमाला पूर्ण महार्घम् नि० ॥

॥ समुच्चय जयमाला ॥

दोहा— तीन लोक थल के विषें, जहां तहां जिन गेह । पूजों ते थुति लाय के, और सुनों विधि जेय ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

जान अनन्त लोक आकाशो, तामें तुच्छ कह्यो जग वासो । छींकाकार असंख्य प्रदेशी, पुरपाकार सुन्दविन भेषी ॥ २ ॥
पग छीदे कर कटिलौं होई, ऊभो नर अरु पूरब जोई । तीन सैंकड़ा अरु तेताली, एते राजू नभ जग जाली ॥ ३ ॥
तामें त्रस नाली इक जानों, ऊभी दंडाकार बखानों । राजू इक चौडी समकारो, चौदह राजू तुङ्ग विचारो ॥ ४ ॥
ता महि तीन लोक विधि थाई, अधो मध्य ऊरध सुनि भाई । पवन तीन तें वेढे जानों, ज्यों तन ऊपर चाम बखानों ॥५॥
अधोलोक सत नरक बताये, नाम तिन्होंके आगे गाये । राजू सात अधो आकाशा, तिनमें सात नरक दुख भारा ॥ ६ ॥

ते दुख कापे वरणे जाही, जाने केवल जिन ने पाई। वचन अगोचर दुख थल भाई, पापी जीव लहे दुख जाई ॥ ७ ॥
इकराजू नीचै आकाशा, षट् राजू में नरक सु वासा। तहां गुणचास पटल दुख खाना, तिनमें नरक बिलय अघ थाना ॥८॥
तीन प्रकार बिलय सो होई, इन्द्रक श्रेणीबध अवलोई। परकीरण ये तीन प्रकारा, तिनमें जीव रहे अघकारा ॥ ९ ॥
तहँ ही उष्ट्र मुखी थल जानों, नर्कं जीव उपजन को थानों। अन्तर महूरत में तन धारे, फेर पडे भू अति ही पुकारे ॥१०॥
आय लगे नाना दुख पावे, तिनको नाहीं कोय बचावे। भोगें ते तिनने अघ कीने, पाप प्रकृति तें रस भीनें ॥ ११ ॥
आयु काय घट वध के थाना, अघ माफक थानक उपजाना। ऐसे नरक थान है भाई, अधोलोक में जिन मुनि गाई ॥१२॥
ऊपर भवन पती सुर वासा, वितर और वसैं सुख रासा। इनने भी शुभ ते फल पायो, तब ऐसे सुख थानक आयो ॥ १३ ॥
ऊपर मध्यलोक को थानो, ताको कथन सुनों अवगानो। दीप असंख्या बहु विसतारा, संख्य बिना ही सागर सारा ॥१४॥
तिन मधि दीप अढाई जानों, सो तो है मनुजन को थानों। धरा लाख पैंतालिस भाई, जोजन इतने नर थल पाई ॥१५॥
जंबूद्वीप सबनि मधि होई, जोजन लाख व्यास भू जोई। चौतरफ क्षीरोदधि जानो, दोय लाख जोजन भू थानो ॥१६॥
खंड धातकी पीछे भाई, धरा लाख जोजन चव गाई। कालोदधि तिसके चहु ओरा, आठ लाख जोजन भू ठोरा ॥१७॥
पीछे पुष्कर अर्ध सुदीपा, ता मधि मानुषोत्र गिरि दीपा। ता अध मांहि थार को जानों, आठ लाख भू जोजन मानों ॥१८॥
ऐसे दीप अढाई जानों, पैंतालिस लख जोजन मानो। ता महि जंबूद्वीप सु भाई, एक मेरु गिरि मध्य सुहाई ॥ १९ ॥
चव उपवन तिसके सुखदाई, पांडुक वन पांडुक सिलगाई। ता मधि मेरु चूलका जानों, इह लों मध्यलोक हद आनो ॥ २० ॥
चव गजदन्त मेरु जुत होई, रतन मई प्रतिमा है सोई। द्वयपे नव नव कूट बताये, सात सात गज दंत सु गाये ॥ २१ ॥
तिन कूटन पे सुर का वासा, सुर का नाम कूट सम भासा। नाम कुलाचल षट् विधि भाई, तिनपे कुण्ड कहे सुखदाई ॥ २२ ॥
द्रह में कमल रतन मय जानों, तिनमें देवी वास सुमानों। और कूट तिन गिरिपे गाई, कूटन पे सुर की थिति गाई ॥ २३ ॥
आदि अन्त के गिरि द्वय जानों, ग्यारह ग्यारह कूट समानों। इन अगले दो गिरि पे भाई, आठ आठ नव कूट बताई ॥२४॥
दोय कुलाचल मधि में जानों, नव नव कूट कहे सुर थानो। विजयारध चौंतीस बताये, सब पे ना नव कूट सुनाये ॥ २५ ॥
मेरु शैल षोडश वखारा, तिनपे चव चव कूट सु धारा। कंचन गिरि द्वय सौ बतलाये, एक एक कुंड दश दश गाये ॥ २६ ॥
तिनपे तिनके नाम सुधारी, देव वसैं बहु शुभ फलकारी। दिग्गज नाम आठ गिरि सोही, दिग्गज देव गमें तहँ होई ॥२७॥

मध्य म्लेच्छ खंड में जानों, वृपभाचल गिरि इक इक मानों । गिरि चौंतीस क्षेत्र में जोई, चक्री नाम लिखें जो होई ॥२८॥
चार नाभि गिरि परवत जोई,भोग भूमि भू के मधि होई । जघन्य मध्य आरज जिय भाई,उपजत है इसही थल जाई ॥२९॥
चार यमक गिरि जे बतलाये, सीता सीतोदा तट गाये । तिनपे तिनके नाम सुधारी, देव बसैं नाना सुखकारी ॥३०॥
मेरु एक प्रति चव गजदन्ता, नाम कुलाचल पट गिरि मंता । षोडश गिरि वक्षार सु लावो, विजयारध चौंतीस गिनावो ॥३१॥
रचना और सुनो मन लाई, चार नाभि गिरि जिन ध्वनि गाई । चार यमक जे गिरि बतलाये,सीता सीतोदा तट गाये ॥३२॥
कंचनगिरि द्वयसौ लखिवाये, वृपभाचल चौतीस बताये । इत्यादिक परवत ध्रुव गाये, अब सुनि सरिता जे धुनि गाये ॥३३॥
चौदह तो पट् गिरि की सोई, गंगादिक नन्दी शुभ जोई । अपनी अपनी गति ले चाली, पूरब पशिचम दधि में ढाली ॥३४॥
बारह जानि विदेहा माहीं, नाम विभंगा सरिता ठांहि । और विदेह देश मधि जानों, चौसठ नदी गंगवत मानों ॥३५॥
दक्षिण तट जे सरिता जानो, गंगा सिन्धू नाम बखानो । उत्तर दिश जे सरिता भाई, रक्ता रक्तोदा जु कहाई ॥ ३६ ॥
विजयारध की गुफा मझारी,नन्दी दोय कही अति प्यारी । उनमगना निरमगना नामा,अब सुनि इन परिवार सु ठामा॥३७॥
चौदह में चव सरिता जानों,चौसठि विदेह देश की मानों । इन सबकी परिवार सु सरिता,चौदह चौदह सहस सु भरिता ॥३८॥
बारह जान विभंग परिवारा, सहस अठाई भिन भिन लारा । चौदह में चव सरिता सोई, सम विभंग परिवार जु होई ॥३९॥
चौदह में सरिता परिवारा, सहसरु छप्पन छप्पन धारा । देश विदेह मांहि बढि सरिता, सीता अरु सीतोदा धरिता ॥ ४० ॥
इन परिवार सरित सब जानों,सहस चुरासी भिन भिन मानों । जान छब्बीस द्रह है जल जाना,बीस नदी मधि गिरिपट् थाना॥४१॥
नव्वे कुंड कहे सुखदाई, तिनके थान सुनों सुखदाई । चौसठ देश विदेह मझारा, तिनतें गंगा सिन्धु निकारा ॥ ४२ ॥
बारह कुण्ड और सुनि भाई, तिनतें चली विभंगा आई । ऐसे कुण्ड द्रह गिरि सरिता,मणिमय वेदी सहित जु भरिता ॥४३॥
भोग भूमि पट् या थल मांही, जंबू शालमली तरु थांही । सात क्षेत्र दीरघ तहँ गाये, थान विदेह बतीस बताये ॥ ४४ ॥
तुंग व्यास तिनका परमाना, जिन आगम ते ले सब जाना । एक मेरु यह रचना गाई, इमि सब पांचन की बतलाई ॥४५॥
फिर मनुपोत्तर पर्वत भाई, वलयाकार कनकमय थाई । पुष्कर दीप मध्य में जानों, मनुप गमन आगे नहिं मानों ॥४६॥
फिर है आधा पुष्कर दीपा, जा आगे पहुकर चव दीपा । फेर वारुणी दीप बताया, ये ही नाम समुन्दर गाया ॥ ४७ ॥
दीप क्षीर वर पंचम भाई,क्षीर नाम ढिंग सागर पाई । इस दधि का सुर हरि जल लावे, मेरु थान जिन न्होन करावे ॥४८॥

आगे दीप विरत वर जानों, इसही नाम पास दधि मानों । नाम इक्षुवर सप्तम दीपा, इसका नाम पास दधि टीपा ॥ ४६ ॥
अष्टम दीप' नंदीश्वर गाया, उज्वल तीरथ तहां बताया । चव दिश है बावन जिन गेहा, पूजें सुर करि है बहु सेवा ॥ ५० ॥
फाल्गुन मास आषाढ़ सु काती, तीन समय अष्टाह्निक आती । इन दिन ही सुर सारे आवें, अष्ट दिवस जिन पूज करावें ॥१५॥
आगे नंदीश्वर दधि जानों, दीप अरुणवर फेर बतानों । पास अरुणवर सागर होई, अरुणदीप है दशमा सोई ॥ ५२ ॥
अरुण नाम सागर ढिग पावे, ऐसे आगे दीप सु आवे । इस विधि दीप समुद्र सु जानो, आगें कुंडल दीप सु मानों ॥ ५३ ॥
याकें मध्य भाग में भाई, कुंडल गिरि वलयाकृत पाई । कुंडल सागर याके पासा, दीप शंखवर आगे भासा ॥ ५४ ॥
आगे इसही नाम समंदा, रुचिक दीप तेरम आनंदा । इसही दीप मध्य गिरि जानों, रुचक नाम वलयाकृत मानों ॥ ५५ ॥
नाम रुचिक ही सागर पासा, दीप भुंजग वर आगे वासा । इसही नाम उदधि ढिग होई, द्वीप कुसर वर पंद्रम जोई ॥ ५६ ॥
इसही नाम समुद्र ढिग होई, द्वीप क्रौंच वर सोलम जोई । सागर ढिग इस नामा जानों, आगे असंख्य दीप दधि मानों ॥५७॥
दीप नाम सो ही दधि केरा, आदि दीप षोडस इस घेरा । अंत दीप षोडश के नामा, दीप मनसिला प्रथम धामा ॥ ५८ ॥
है हरताल दीप बड़ थाना, फिर सिंदूर वर तीजा जाना । चौथा दीप स्याम वर होई, अंजन वर थल पंचम जोई ॥ ५६ ॥
हिंगुल वर छट्टम शुभ दीपा, सप्तम दीप रूपवर दीपा । सुवरन वर अष्टम ले भाई, नवमा दीप वज्र वर थाई ॥ ६० ॥
वर वैडूर्य दीप शुभ जानों, दीप नाग वर ग्यारम जानों । दीप भूत वर द्वादस थाना, यक्षवर दीप तेरमा जाना ॥ ६१ ॥
दीप देववर चौदम भाई, वर अहमिन्द्र पंद्रम थल थाई । अंत स्वयंभू रमण बताया, यां मधि गिरि वलयाकृत गाया ।६२।
ऐसे दीप रु सागर जानो, गिनत असंख्य राजु इक थानो । इक इक दीप सु सागर भाई, असंख्य असंख्य जोजन भू गाई ।६३
चार कोण धरती बड जानों, मध्य लोक की यह सब थानों । स्वयंभू रमण दीप दधि भाई, चव कोण क्रम भू बतलाई ।६४॥
मध्य असंख्य दीप दधि मांही, जघन्य भोग भू रीति बताहीं । दीप अढाई मानुष थानों, तिर्यग्लोक और सब जानों ॥ ६५ ॥
अब ऊपर का सुनि विस्तारा, धरती तें जोजन गिरि सारा । निव्वे अधिक सातसै भाई, ज्योतिष पटल मिले धुनि गाई ॥६६॥
ऊपर नवसौ जोजन जानो, तहां लो ज्योतिष पटल बखानो । इकसौ दश जोजन में भाया, ज्योतिष पटल तना दल गाया॥६७।
पंच जाति ज्योतिष सुर जाना, पावे सकल असंख्य सु थाना । ऊपर सुरग वासिया देवा, कल्प रु कल्पातीत सुभेवा ॥ ६८ ॥
तहं लों सुर के देवी पइये, कल्पदेव जहं लों हद गइये । पोडश स्वर्ग ऊपरैं सारे, कलपातीत नारि तैं न्यारे ॥ ६६ ॥

और कथन स्वर थानक केरा,लखो स्वर्ग जयमाल सु हेरा । जे जिय संजम तप बहु लावे, तब वह स्वर्ग थान को पावे ॥७०॥
जे पंचेन्द्रिय के सुख भाई, स्वर्ग थान में ते सब पाई । रतन जडित मन्दिर सुखकारी, मोती माला लूं में सारी ॥ ७१ ॥
घने देव निज शीश नमावे, मुख सेती नाना थुति गावे । करें अप्सरा नृत्य अपारा, मधुर कंठ गावें सुर धारा ॥ ७२ ॥
मनसा भोग रोग नहिं आवे, मन वांछे सो ही सुख पावे । आयु पर्यन्त नहीं दुख कोई, बूढा बाल वृद्ध नहिं होई ॥ ७३ ॥
मन वांछे तिस ही थल जावे, पूजे जिन वा क्रीड करावे । इत्यादिक कल्पन के देवा, भोगे सुख शुभ फल स्वयमेवा ॥ ७४ ॥
अहमिंदर देवन के मांही, अधिक हीन को देखे नाहीं । सब ही इन्द्र आप मन जानें, बिगर बुलाये मिल इक थाने ॥ ७५ ॥
तत्त्व ज्ञान की चर्चा भावे, ऐसे रीति सु आप बतावे । मंद कषायी सोम्य स्वभावा, ऐसे अहमिंदर सुरराया ॥ ७६ ॥
ऊपर मोक्ष शिला है भाई, मनुष्य लोक सम दीरघ पाई । लख पैंताली जोजन होई, श्वेत छत्र सम राजै सोई ॥ ७७ ॥
जैसे उलटा धरा कटोरा, ऐसे मोक्ष शिला का डोरा । मध्य मांहि वसु जोजन मोटी, ओंडी पास अनुक्रम छोटी ॥ ७८ ॥
वातवलयतें वेढी जानो, वातवलय तन में सिध थानो । तिनके कर्म धूर नहिं कोई, आप हि आप निरंजन होई ॥ ७९ ॥
सुख अनंत भोगे सिध सारा, फेर न होय जगत अवतारा । सगरी जगत रीत को जाने, राग दोष उर कभियन आने । ८० ।
ऐसे सिद्ध अनन्ते भाई, तिनपद धोक करों शिरनाई । ते सिध चक्र सहाय हमारो, सब मन वांछित कारज सारो ॥ ८१ ॥
सात कोटि बहतर लख जानो, लोक पताल देव जिन थानों । मध्य लोक में जिनके गेहा, चव शत अधिक अठावन जेहा ।८२।
लख चौरासी ऊपर आनो, सहस सत्याणव तेइस जानो । इतने जिन मंदिर हैं भाई, तिन पद हमने शीश नमाई ॥ ८३ ॥
आठ कोडि छप्पन लख जानों,सहस सत्याणव ऊपर मानों । चवशत इक्यासी जिन गेहा, है त्रैलोक जजों करि नेहा। ।८४॥
ऐसे तीन लोक के थाना, अल्प तोकसा करथा बखाना । बहुत चाह जाको होय भाई, सो जिन धुनिते ले समझाई ॥८५॥
दोहा— तीनलोक थल के विषें, जे जे तीरथ ठाय । जजों अरघ शुभ धुनि करी, जय जय जय मुख गाय ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक मध्यलोक ऊर्ध्वलोक सर्वअष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवतिसहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम श्रीजिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो अर्घं महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥ रचयिता—प्रशस्ति ॥

चौपाई—मिति अषाढ दूसरो जानो, पहल पक्ष की चौथ बखानो । संवत अष्टादश शतजोय, और अठाइस ऊपर होय ॥ १ ॥

इन ही कूटन के शिर जान, देव बसै अति ही सुख मान। यामें उत्पपि छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देशस्थित विजयार्द्धस्थ कूट उत्पत्ति देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४६ ॥

या ही विजयारध के शीश, है जिन थल राजैं जगदीश। या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मंगलावती देशस्थित विजयार्द्धस्य उपरि सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५० ॥

याहि मंगलावती सुदेश, आरज़ खंड क्षेत्र शुभ वेश। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देशस्थित आर्यखंड उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५१ ॥

याही आरज खंड मझार, है उपसागर जल आधार। या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री पूर्व विदेहे मगलावती देशस्थित उपसागर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५२ ॥

मंगलावती देश के माहिं, रत्न संचये चक्री ठाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देशस्थित चक्री संवधि रत्न संचयपुर नगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५३ ॥

मंगलावती देश के मांहि, रक्ता नंदी है शुभ ठाहिं। या में उतपति छेदक सोय, जिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मंगलावती देशस्थित रक्ता नदो गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २५४ ॥

याहि मंगलावती सुदेश, रक्तोदा नंदी शुभ वेश। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मंगलावती देशस्थित रक्तोदानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५५ ॥

याहि मंगलावती सुदेश, जिन मंदिर सोहै शुभ वेश। तिन में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावतीदेश संवधि श्री जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ २५६ ॥

याहि मंगलावती मझार, देव रहै मगधादिक सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहे मगलावती देश सवधि मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५७ ॥

छंद—गीतिका—मेरु पूरब दिशा सरिता, नाम सीता जानिये। ताके जु दोनो तट विषै हैं, क्षेत्र षोडश मानिये ॥

इहां तें सदा शिव थान जानों, यह विदेह सुहावने। इन गतिच्छेदक देव के पद, जजों शिव सुख पावने ॥

ॐ ह्री सुदर्शन मेरु सबधि पूर्वदिशि सीतानद्या उत्तरदक्षिणतटे षोडश देश-गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥२५८॥

॥ जयमाला ॥

॥ छंद वेसरी ॥

कच्छा देश सुकच्छा जानो, महा कच्छा कछकावति मानो। आवर्ता है देश सरूपा, लांगलावर्ता देश अनूपा ॥ १ ॥
देश पुष्कला जानि सुभाई, पुष्कलावती देश सुखदाई। ये देश उत्तर दिशि जानों, पूरव सीतानंदी मानों ॥ २ ॥
वत्सादेश सुवत्सा भाई, महावत्सका है सुखदाई। वत्सकावती देश हितकारी, रम्या देश सुरम्या भारी ॥ ३ ॥
देश रमणिया अद्भुत जानो, मंगलावती देश सुख थानो। ये सीता नंदी तट भाई, दक्षिण उत्तर शोभा पाई ॥ ४ ॥
इन इक इक नगरी में जानों, एक एक चक्री ध्रुव थानो। रचना और भरत ज्यों सारी, ये चौरस भरत धनुकारी ॥ ५ ॥
खेमा खेम पुरी शुभ थानो,जानि अरिष्टा अरिष्ट पुर मानो। खडगा नगर मंजूषा भाई, औषधि पुंडरीक पुर थाई ॥ ६ ॥
जानि सुसीमा कुंडल ग्रामा, अपराजिता प्रभंकर ठामा। अंका अरु पदमावति नगरी, शुभानाग पुर सेवत अगरी ॥ ७ ॥
रतन संचयेपुर सुखदाई, ये षोडश नगरी लख भाई। चक्री इनही में उपजावे, रतन महल तुंग कोट बनावे ॥ ८ ॥
बहु विस्तार घने दरवाजे, तिनको देखत सुरपुर लाजे। तहां तुंग जिन वर के गेहा, तिन पद पूजों मन वच नेहा ॥ ९ ॥
ये षोडश हैं क्षेत्र विदेहा, प्रथम मेरु पूरव दिश जेहा। तहां सदा शिव मारग पइये, तीर्थंकर मुनिवर तहँ लहिये ॥१०॥
तहाँ सदा जिन मुख की वाणी,सुने भव्य पापन की हाणी। और धर्म पाखंड न पइये, एक धर्म शुध नित प्रति लहिये ॥११॥
ऐसो थान पुण्यतें पावे,पुण्य विना खोटे थल थावे। इस रुख आठ वखार सुहाई, जिनपे जिन थल मणिमय जोई ॥१२॥
षोडश गिरि वैताढ अनूपा, तिनपे जिन थल त्रिभुवन भूपा। सुर नर हू पूजे मन लाई, मैं यहां पूजों भावन भाई ॥१३॥
है षट दीरघ नंदी जोई, और बीस नन्दी लघु होई। सीता अरु सीतोदा जानो, इनहीतें खंड भाग सु मानो ॥१४॥
इन आदिक गिर सीता जेई, शुभ थल रूप महा पुनि तेई। तिन गति छेद भये भव पारा, तिनके पद पूजों मद टारा ॥१५॥

दोहा— पूरब थान विदेह में, कहे थान जिन राय । ते सब पूजों अरघतें, मन वच तन करि काय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पूर्वविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ जंबू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल— जंबू द्वीप विषै जु मेरु दक्षिण दिशा, जम्बू नामा वृक्ष तुंग अति शुभ लसा ।
ताकी शाखा ऊपर इक जिन थान है, ते जिनवर यहां थापि जजों श्रुति ठान है ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिण दिशा जंबूवृक्ष संबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्रावतरावतर ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिण दिशा जबूवृक्ष सबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्र तिष्ठ ष्ठि ठः ठ

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिण दिशा जबूवृक्ष संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्र मम सन्निधौ सन्निधि करणम्

चौपई–निरमल नीर क्षीर दधि तनों, कनक झारि का में शुभ ठनो, जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जबूवृक्ष संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

चंदन गंध नीर घसवाय, लाऊं कर धर भक्ति बढाय । जंबू वृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जबूवृक्ष संबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो चंदन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल लेय विशाल, आ पहुँच्यो काटन अघ जाल । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष संबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

पुष्प सुगंध वरण अधिकाय, लायो काम हरन उमगाय । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्री जबूवृक्ष संबधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस चरु सुभग बनाय, कर धरले आऊं चित लाय । जंबू वृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष संबधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक रतन कनक थल जेय, मिथ्या नाश करन को तेय । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगंध बनाय, खेऊं अगनि हरप मनलाय । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जबू वृक्ष सबंधि जिन चैतालय जिनेभ्यो धूप ॥७॥

श्रीफल लोंग बदाम अपार, ले आयो शुभ परिणति धार । जंबू वृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबू वृक्ष सवंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो फल ॥८॥

जल चंदन अक्षत सब लेय, आयो अघमल धोवन जेय । जंबूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन होय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सवधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

अडिल्ल छंद— आठ दरब कर लेय महा हरपाय के, पूजों जिन के पाय अष्ट गुण भाय के ।
जंबूवृक्ष के ऊपर जिन थल जे कहे,तिन पद मन वच तन शुभ पूजत धनि भये ॥

ॐ ह्रीं जबू वृक्ष सवंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घ ॥१०॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपाई–जंबू वृक्ष तुंग भय खाय, जीव इकेन्द्री को खंध थाय । तामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप संबंधि जबू वृक्ष गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥११॥

जंबू वृक्ष ऊपरै देव, तिष्ठत है अति शोभ करेव । इन गति छेद भये भव पार. तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सवधि देव-गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— मेरू थल ईशान दिश, उत्तर कुरु भूजान । तहां वृक्ष जंबू सही, बहु रचना जुत मान ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

उत्तर भोग भूमि के मांही, थांवल एक कनकमय ठांही । जोजन पांच सैंकडा भाई, है विस्तार गोल अधिकाई ॥ २ ॥
वसु जोजन मधि मोटा जानो, और आध जोजन तुंग मानो । ताके ऊपर मध्यसु भाई, एक पीठिका और बताई ॥ ३ ॥

पीठ आठ जोजन तुंग होई, बारह जोजन व्यास सु जोई। ऊपर पीठ व्यास सुनि भाई, जोजन चार तना अधिकाई ॥ ४ ॥
तिस ही थल के ऊपर जानो, बारह वेदी है शुभ थानो। वलयाकार कनकमय होई, रतन जडित सुन्दर सुखहोई ॥ ५ ॥
वेदी सब अध जोजन तुंगा, लागे रतन सुभग नग मूंगा। जोजन षोडश भागे चोडी, शोभै सुरग कोट की जोडी ॥ ६ ॥
पहले एक वेदिका जानो, दूजी ता दोन्यों फिर मानो। ताको घेर तीसरी होई, ऐसे भिन भिन बारह होई ॥ ७ ॥
इक इक वेदी चव दरवाजे, अंतराल एकादश साजे। दो अंतराल विषे सुन्य जानो, तहां नहीं कुछ रचना मानो ॥ ८ ॥
तीजे अन्तराल में भाई, आठ अधिक इक शत तरु थाई। तिनपे यत्तदेव उत्कृष्टा, भोगें पुन्य तना फल मिष्टा ॥ ९ ॥
चौथे हैं अन्तरपुर कानी, जंबू वृत्त चार सुख दानी। तिनपे यत्त,देव को वासो, आगे और सुने धुनि भाषो ॥१०॥
पंचम अंतराल में भाई, वन वापी बहु विधि की पाई। अंतराल छट्टे मधि जानो, सुनी कही रचना नहिं मानो ॥११॥
अंतराल सप्तम में पइये, सोलह सहस्र वृत्त तहां लहिये। तिनपे यत्त देव है भाई, रहै देव अंग रत्तक ठाई ॥१२॥
अष्टम अन्तराल चवकानी, चार हजार वृत्त मखयानी। तिनपे सामानिक सुरवासो, आगे सुनो कथन सुख रासो ॥१३॥
नवमां अन्तराल में जानो, सहस बतीस विरछ लग ठानो। तिनपे पारिषदा सुर थाये, अपने सुकृत से सुख पाये ॥१४॥
दशमां अन्तराल में भाई, चालिस सहस वृत्त सुखदाई। तिनपै रहै पारिषद देवा, चाव घनों उर जिनकी सेवा ॥१५॥
एकादशम अन्तरा माही, अडतालीस सहस तरु ठाही। पारीषद तहं देवा होई, सेवक जिनके सब अघ खोई ॥१६॥
बारम अन्तराल महि जानो, जंबू वृत्त सात सुख दानो। तिनपे बसे महत्तर देवा, तिष्ठै नाना विधि सुख भेवा ॥१७॥
सब मिलि वृत्त एक लख जोई, चालिस सहस एक शत होई। ऊपर बीस सकल मिल जानो, ये परिवार विरछ शुभ मानो ॥१८
जोजन दोय बड़े तुंग दोई, ता ऊपरि चव शाखा जोई। जोजन आधे चौडी शाखा, वसु जोजन लंबी जिन भाषा ॥१९॥
बज्र मई ये शाखा जानो, उप शाखा रतनामय मानो। मूंगा सम रंग फूल अनूपा, फल मृदंग जिसा गुण भूपा ॥२०॥
ये तरु पृथ्वी काय सुजानो, वनसपतीका नाहि बखानो। जंबू वृत्त जिसा आकारा, तातें जंबू नाम उचारा ॥२१॥
जोजन दश ऊंचा है भाई, मधि चौडा षट जोजन थाई। ऊपर चार जोजना चौडा, मुंह तैं कौलों कहि बच थोडा ॥२२॥
मुख जंबू तरु उत्तर शाखा, तापे जिन मंदिर धुनि भाखा। और तीन शाखा पे भाई यत्त देश मंदिर सुखदाई ॥२३॥
आदर देव अनादर नामा, व्यन्तर देव बसै सुख ठामा। मूल विरछ का जो परमाणों, तिनतैं अर्ध परिवार सुजाणौ ॥२४॥

तरु परिवार ऊपरें भाई, सुर परिवार तने सुखदाई। आदिरादि व्यन्तर के सारे, हैं परिवार देव सब प्यारे ॥२५॥
इत्यादिक महिमा तरु केरी, कहतें बुद्धि कहो कहां मेरी। तापे जिनका मंदिर होई, पूजे पाप रहैना कोई ॥२६॥
देव खगा तहां पूजा लावे, पूरव कृत सब पाप नशावे। हम यहां घर में भावन ठानै, तातैं ही अपने अघ भानै ॥२७॥

दोहा— जंबु वृक्ष अति सोहनो, नाना रतन स्वरूप। ता ऊपरि जिन भवन को, जजों होय शिव भूप ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं जंबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो जयमालाघम ॥

॥ पश्चिम विदेह सम्बन्धि जिनालय पूजा ॥

छंद गीतिका—मेरु पश्चिम दिशा जानो, क्षेत्र भले विदेहजी, तिस थान भीतर जिन मुनी नित, कर्म हर शिव लेयजी।
ऐसे महा शुभ क्षेत्र में, जिन थान मुनि का मानिये, ते थापि इह शुभ भावना करि, जजों मन वच आनिये ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहसंबन्धि जिनालस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ।
ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल सुनयानंद— लाय शुभ नीर निरमल घनो सुख करा, कनक झारी विषै मेलि निज कर धरा।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेह जी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

बावनो चंदन घसि नीर ले निरमलो, सुभग वासन ठान मन अति भलो।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों कर नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल भला खंड विन लाइयो, हरष धर मन वचन काय गुण गाइयो।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल शुभ रंग गंध सहित शोभा मई, गूंथ कर माल सू आपने कर लई ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

जात नैवेद्य शुभ रस मई हित करा, कनकथाली विषै ल्याय हूँ दुख हरा ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीप मणि मई तम नाशकर जानिये, थाल भर कनक को भक्ति कर आनिये ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

धूप दश विधि तनी, गंधकर लाइयो, अगनि मधि खेपने चित्त उमगाइयो ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों करि नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिमविदेहसम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बादाम खारक सही, आदि इन को भले और फल ले वही ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों कर नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु दीप ले, धूप फल अर्घ कर पाप वुद्धि लीयले ।
मेरु पश्चिम तनी जानि सु विदेहजी, जिन भवन सकल तहां जजों कर नेहजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद हरिगीतिका—यह मेरु परथम दिशा पश्चिम, सुभग थान विदेह है । तहां थान जिनके महा सुन्दर, बिंब जल सुख लेय है ॥
ते भावना शुभ भाय हम ही, पूजते हैं थान जी । तिस फलें भवके सकल दुख मिटि, होय उर में ज्ञानजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घम् ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद अडिल्ल— सीतोदा नंदी विदेह पश्चिम विषै, ताके दक्षिण भाग देश पदमा अखै ।
भद्रशाल तें लगत जहां यह देश है, या गति छेदक देव जजों शिव भेप है ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम दिशा सीतोदानदी दक्षिणदिशा पद्मावती देश उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो ॥ १ ॥

चौपाई—याही पदमा देश मझार, खंड मलेच्छ पंच मन धार । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमदिशा पश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशस्थित पचम्लेच्छखड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

पदमादेश सम्बंधी सही, वृषभाचल नामा अधिकही । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेह पद्मादेशस्थित वृषभाचल उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही पदमा देश मझार, विजयारध पर्वत इक सार । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमादिशापश्चिमविदेहस्थित विजयार्द्धगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

या ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी खग चल मान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणीगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

या ही खग गिरि के पहिचान, उत्तर श्रेणी उत्तम मान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशविजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणो गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

याही विजयारध शिर जान, कूट मनोहर उत्तम थान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेह सीतोदादक्षिणतटपद्मादेशविजयार्द्धस्य कूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

विजयारध की है जो कूट, देव बसै नाना सुख लूट । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहसीतोदादक्षिणतट पद्मादेशविजयार्द्धकूट देवगतिछेदक जिनेभ्यों अर्घम् ॥ ८ ॥

तापे इक जिनवर का थान, तिन पद पूजों अर्घ सुजान । या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितविजयार्द्धसिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या ही पदमादेश मझार, आरज खंड महा सुखकार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेहपद्मादेशस्थित आर्यखंड उत्पतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

पदमा देश विषै सुखकार, जानो उपसागर जल धार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमदिशा पश्चिमविदेहपद्मादेशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

पद्मादेश विषै लख सार, चक्री नगर अश्वपुर सार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशा पश्चिम विदेहे पद्मा देश स्थित चक्री नगर अश्वपुर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

रक्ता नंदी अति जल धार, देखत उपजै उर तें प्यार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेह पद्मादेशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

रक्तोदा नंदी विसतार, लिख्यो त्रिलोक सार में सार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेह पद्मादेशस्थित रक्तोदानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

या ही पदमा देश मझार, देव रहै मगधादिक सार। या गति छेदक के पद जोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमदिशापश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितमगधादिकदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

छंद अडिल्ल—

याही पद्मा देश सकल हितकार है, नाना रचना जिन मंदिर अति सार है।
तिनमें बिंब जिनेश्वर के हैं सारजी, तिन पद अर्घ जजों मैं सब मद टारजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशा पश्चिम विदेह पद्मा देश स्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

॥ सुपद्मा देश संबंधी गतिच्छेद अर्घ ॥

मेरु थकी पश्चिम दिशि जोय, मेरु सु पदमा उत्तम सोय। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम दिशा पश्चिम विदेहे सीतोदा दक्षिण तटे सुपद्मा देश उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

याहि सुपदमा देश मझार, पंच म्लेच्छ खंड अति सार। या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार।

ॐ ह्रीं सुदर्शमेरु पश्चिम विदेहे सीता दक्षिण तटे सुपद्मा देश स्थित पंच म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १८ ॥

देश सु पदमा जानों सहीं, है वृषभाचल सुखकी मही । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित वृषभाचल उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

जानि सुपदमा देश विशाल, जामें विजयारध गुणमाल । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी गुण की खान । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

याही खग चल की पहिचान, उत्तर श्रेणी उत्तम मान । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

याही विजयारध के जोय, कूट कहे ऊपर शुभ सोय । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

याही विजयारध शिर कूट, तिन पै देव रहैं अघ छूट । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित विजयार्द्ध सवधि देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥

इसही विजयारध पे सही, सिद्ध कूट पे जिन थल कही । यामें बिंब जिनेश्वर सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेह सुपद्मा देश विजयार्द्ध स्थित सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

याहि सुपदमा देश विशाल, जानो आर्य खंड गुण माल । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे सुपद्मा देश स्थित आर्य खड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

देश सु पदमा आरज धरा, तामें उपसागर जल भरा । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेह सुपद्मा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

याहि सुपदमा देश जु मान, सिंह पुरी चक्री उपजान । या गति छेद भये भव पार, तिन पद पूजों सुर शिव कार ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेह सुपदमा देश स्थित चक्री सबंधि सिंहपुरी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

महा पद्मावति देश मझार, विजयारध उत्तर दिश सार । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशाया महापद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

याही विजयारध के शीश, कूट तुंग महा शुभ शीश । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महापद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

याही खग गिरि कूट सुजान, तिनके वासी सुर सुख मान । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित विजयार्द्ध वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

याही विजयारध पे जान, सिद्ध कूट पे जिन थल मान । या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित विजयार्द्धस्य सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

महा पद्मावति देश मझार, आर्य खंड जानों सुख कार । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

या ही महा पद्मावति देश, है उप सागर जल निधि शेष । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशायां महा पद्मा देश स्थित उप सागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

महा पद्मावति है शुभ देश, चक्री पुर महापुरी सुभेष । या की गति छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम दिशाया महा पद्मा देशस्थित चक्री संबंधि महापुरी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

महा पदमावति देश मझार, है रक्तानन्दी जलधार । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे महापद्मा देशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

याही महा पद्मावति देश, रक्तोदा नंदी जल भेष । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे महापद्मादेशस्थित रक्तोदा नदीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

महा पद्मावती थल मांहि, देव बसै मगधादिक ठाहि । या की गति को छेदे सोय, तिनके पद पूजों शिव होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे महापद्मा देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

याही महा पद्मवति माहिं, है जिन थान पुण्य की ठाहिं। तिनको मैं वसु द्रव्य मिलाय, पूजों जय जय अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे महापद्म देशस्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

॥ पद्मकावती देश सम्बन्धि गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई–प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, पद्मकावती देश महान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमदिशायां पश्चिमविदेहे पद्मकावतीदेश उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

या पद्मकावति देश मझार, देश म्लेच्छ पंच अधिकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमदिशायां पश्चिमविदेहे पद्मकावति देशस्थित पंचम्लेच्छखंड उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

या पद्मकावति देश मझार, वृषभाचल पर्वत है सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमदिशाया पश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित वृषभाचलगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

या पद्मकावति देश सुजान, तामें सुरगवासी गिरि मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावतीदेशसम्बन्धि विजयार्द्धगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी शोभावान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

या ही खग चल पर्वत मांहि, उत्तर श्रेणी उत्तम ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे पद्मकावती दे विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

विजयारध इस ही शिर जान, कूट कहे जो उत्तम ठान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

या विजयारध के जो कूट, तिनपे देव बसे दुख छूट। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धसम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

या विजयारध के शिर कूट, तापरि जिन मंदिर अघ छूट। या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित विजयार्द्धे सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

याही पद्मावती सुदेश, तिनके आरज खंड सुवेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित आर्यखड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

या पद्मकावति देश सुमान, है उपसागर जल की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे पद्मकावती देशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

पद्मकावती देश जु मांहि, विजय पुर चक्री की ठांहि । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री प्रथममेरु पश्चिम विदेह पद्मकावती देशस्थित चक्री सबंधि विजयापुरी नाम नगरो गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

पद्मकावति देश के मांहि, रक्ता नंदी जल की ठांहि । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्माकावती देश स्थित रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

याही पद्मकावति देश, रक्तोदा नंदी जल भेप । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्मकावती देश स्थित रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

याही पद्मकावति देश, देव वसै मगधादिक भेप । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्मकावती देशस्थित मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

या पद्मकावती देश मझार, है जेते जिन मन्दिर सार । तिनमें जिनजी के बिंब सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे पद्मकावती देश स्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

॥ शंखा देश गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई—प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, शंखा देश महा सुख मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीता नदी दक्षिण तटे शंखा देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

याही शंखा देश मझार, खंड मलेच्छ पंच अधिकार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीता नदी दक्षिण तटे शंखा देश स्थित पंच म्लेच्छ खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

इसही शंखा देश सु माहि, वृषभाचल गिरि उत्तम ठाहि । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६७ ॥

इसही शंखा देश सुजान, विजयारध गिरि उत्तर मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देशास्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६८ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी को शुभ मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देशास्थित दक्षिण श्रेणी विजयार्द्धस्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६९ ॥

याही शंखा देश मझार, विजयारध उत्तर दिश सार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

याही विजयारध के शीश, कूट महा सुन्दर अति दीश । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देशस्थित विजयार्द्ध कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

याही विजयारध शिरजान, कूट वास करते सुर मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देशस्थित कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

याही विजयारध शिर कूट, तापे जिन मन्दिर अघ छूट । यामें बिंब विराजे सोय, अर्घ थकी पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देशस्थित विजयार्द्ध सबंधि सिद्ध कूट मन्दिरेभ्य अर्घम् । ७३ ॥

याही शंखा देश मझार, आरज खंड जानि सुख कार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित आर्य खण्ड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ।

याही शंखा देश मझार, है उपसागर जल की धार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

याही शंखा देश मझार, अरजा पुर चक्री को सार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देश स्थित चक्री संबधि अरजा देश गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

याही शंखा देश सु माहिं, रक्ता नंदी है शुभ ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देशे रक्ता नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७७ ॥

याही शंखा देश सु मांहि, रक्तोदा नंदी जल ठांहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखा देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ७८॥

इसही शंखा देश सुजान, मगधादिक सुर वसि है मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शखा देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ७६॥

छंद अडिल्ल—

याही शंखा देश सु मांहीं जानिये, जिन मंदिर शुभ खान महा हित दानिये।
तिन पै विंब जिनेश्वर के अघ हार हैं, मैं पूजों मन लाय करो भव पार हैं॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे शंखादेशसंबधि जिनमंदिरेभ्यो अर्घम्॥ ८०॥ इति॥

॥ निलिनी देश संबंधि अघ ॥

चौपई—प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, नलिनी देश महा सुख खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेश उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ८१॥

याही नलिनी देश मझार, खंड मलेच्छ पंच अधिकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलनिदेशस्थित पंचम्लेच्छखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ८२॥

इसही नलिनी देश सु मांहि, वृपभाचल गिरि अति सुख ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे निलिनी देशस्थित वृपभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ८३॥

इसही नलिनी देश मझार, विजयारध जानों गिरिसार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेहे निलनि देशस्थित विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ८४॥

याही विजयारध के सही, दक्षिण श्रेणी उत्तम मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ८५॥

इस ही विजयारध के मांहि, उत्तर श्रेणी अति सुख ठांहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ८६॥

याही विजयारध की सही, कूट कहे अति ऊरध मही । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेशस्थित विजयार्द्धस्य कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

ये ही खग गिरि कूट सु मान, तिनके वासी देव सु भान । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित विजयार्द्धवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

याही खग गिरि के शिर कूट, है जिन मन्दिर अघ से छूट । या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनिदेशविजयार्द्धसिद्ध कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

या ही नलिनी देश मझार, आर्य खंड जानों सुखकार । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पदपूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित आर्यखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

निलिनी देश याहि थल माहिं, है उपसागर जलनिधि ठाहिं । या में उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९१ ॥

या ही निलिनी देश मझार, विरजा पुर चक्री का सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनि देशस्थित चक्री सम्बन्धि विरजापुर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९२ ॥

या ही नलिनी देश मझार, नन्दी रक्ता है सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९३ ॥

या ही नलिनी देश मझार, नन्दी रक्तोदा जलधार । यां में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेशस्थित रक्तोदा नाम नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९४ ॥

या ही नलिनी देश मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनी देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

याही नलिनी देश मझार, है जिन मंदिर अघ को टार । या में बिंब विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे निलिनीदेश सम्बन्धि जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

॥ सप्तम कुमुदा देश सम्बन्धि अर्घ ॥

चोपई—प्रथम देश पश्चिम दिश जान, नाम कुमुद है गुण की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सीतोदादक्षिणतटे कुमुदादेश–उत्पत्तिछेदक–जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९७ ॥

या ही कुमुदा देश जु माहिं, पंच मलेच्छ थान अधिकाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित पंचम्लेच्छ खंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९८ ॥

या ही कुमुदा देश मझार, वृषभाचल गिरि जानों सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित वृषभाचल गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९९ ॥

इस ही कुमुद देशमें सही, विजयारध गिरि उत्तम कही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०० ॥

इस ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी उत्तम मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे कुमुदादेशस्थित विजयार्द्धस्य दक्षिणश्रेणी गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०१ ॥

याही विजयारध की सही, उत्तर श्रेणी उत्तम मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे कुमदा देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०२ ॥

याही विजयारध की जान, कूट कहे शोभा की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०३ ॥

याही विजयारध पे जान, देव कूट वासी जु महान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमदा देश स्थित विजयार्द्ध वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०४ ॥

याही विजयारध के शीश, सिद्ध कूट जिन विसवा वीस । तिनमें विंब जिनेश्वर सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित विजयार्द्धे सिद्ध कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ १०५ ॥

याही कुमुदा देश जु मांहिं, आरज खंड महा सुख ठाहि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमदा देश स्थित आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०६ ॥

याही कुमुदा देश मझार, उपसागर है बहु जल धार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०७ ॥

याही कुमुदा देश मझार, चक्री पुर अशोक है सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित चक्री संबंधि अशोक पुर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

याही देश कुमुद थल माहिं, रक्ता नंदी बहु शुभ पाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित रक्ता नंदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

याही कुमुद देश में जान, रक्तोदा नंदी जल खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११० ॥

याही कुमुदा देश में थाय, देव बड़े मगधादिक पाय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदा देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १११ ॥

याही कुमुदा देश मझार, है जिन थान घने गुन धार । तिनमें बिंब विराजे सोय, तिनको पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे कुमुदादेश स्थित जिनालयेभ्यो अर्घं ॥ ११२ ॥

॥ अष्टम सरिता देश संबंधी अर्घ ॥

प्रथम देश पश्चिम दिश जोय, सीतोदा दक्षिण तट होय । सरिता देश महा सुख खान, या गति छेद जजों अघ हान ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा दक्षिण तटे सरिता देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

याही सरिता देश सु जोय, खंड म्लेच्छ थान है सोय । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित पच म्लेच्छ खड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११४ ॥

इसही सरिता देश सु जान, वृषभाचल पर्वत हित खान । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित वृषभाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११५ ॥

इसही सरिता देश सु जान, विजयारध जानों सुख खान । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

इस ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी सुख की खान । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११७ ॥

याही विजयारध की जेय, उत्तर श्रेणी सुर सम तेय । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११८ ॥

याही खग चल ऊपर सही, कूट कहे अति शोभा मई । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११९ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहै भुगतै सुख मही । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ही प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध कूटवासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२० ॥

या ही विजयारध शिर जान, सिद्ध कूट पै जिन थल मान । या गति छेद भये भव पार, तिनके पांय जजों हित धार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित विजयार्द्ध संबधि कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ १२१ ॥

इस ही सरित देश का सही, आरज खंड महा सुख मही । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२२ ॥

याही सरित देश में सही, है उपसागर जल की मही । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२३ ॥

याही सरित देश में सही, वीतशोक चक्री पुर कही । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित चक्री सवंधी वीत शोकपुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२४ ॥

इसही सरित देश के मांहि, है रक्ता नंदी जल ठाहिं। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित रक्तानदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२५ ॥

याही सरित देश में जान, रक्तोदा नंदी जल मान। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२६ ॥

इस ही सरित देश में सही, देव बसै मगधादिक कही। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२७ ॥

इस ही सरिता देश जु सही, है जिन मंदिर पुण्य सु मही। तिन में बिंब जिनेश्वर सोय, तिन पद पूजों हरषित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सरिता देव स्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १२८ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, सीतोदा दोउ तट पर मान। भूधारण उपवन ही थाय, तिन गति छेदक पूजों पांय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा दक्षिण उभय तटे भूधारण वन गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२९ ॥

॥ सीतोदा उत्तर तट संबंधी देश–रचना गति छेदक अर्घ ॥

चौपई–प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, वप्रादेश महा गुण खान। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सीतोदा उत्तर तटे वप्रादेश उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३० ॥

इस ही वप्रादेश मझार, खंड मलेच्छ धर्म बिनसार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथ मेरु पश्चिमविदेहे सीतोदा उत्तरतटे वप्रादेशस्थित पचम्लेच्छ खड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३१ ॥

याही वप्रा देश सु माहिं, वृषभाचल जानों गिरि ठाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरू पश्चिम विदेहे वप्रा देश स्थित वृषभाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३२ ॥

या ही वप्रा देश मझार, विजयारध गिरि जानों सार। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे वप्रादेश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३३ ॥

इस ही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी सुख की खान। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे वप्रा देश स्थित विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३४ ॥

याही वप्रादेश सुमांहि, विजयारध उत्तर दिश ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३५ ॥

याही खगचल ऊपर सही, कूट कहे ते उत्तम मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३६ ॥

इस ही कूट ऊपरैं सही, देव बसै भुगतैं सुख मही। या में उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३७ ॥

याही विजयारध शिरजान, सिद्धकूट पे जिन थल मान। तहां विंब जिनवर के सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित विजयार्द्धे सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १३८ ॥

या ही वप्रादेश मझार, आरज खंड महागुण धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित आर्यखडगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३९ ॥

याही वप्रादेश सु मांहि, है उपसागर जल की ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४० ॥

याही वप्रादेश मझार, विजयारध चक्री की सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेह वप्रादेशस्थित चक्री सम्बन्धि विजयार्द्धपुरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४१ ॥

या ही वप्रादेश मझार, रक्तानंदी है जल धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४२ ॥

या ही वप्रादेश सुजान, रक्तोदा नंदी जलखान। या में उतपति छेदक सोय, तिन के पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित रक्तोदा नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४३ ॥

वाही वप्रादेश मझार, देव रहै मगधादिक सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित मगधादिकदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४४ ॥

याही वप्रादेश सुजान, है जिन भवन महा सुखदान । तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे वप्रादेशस्थित जिन मन्दिरेभ्यो महार्घम् ॥ १४५ ॥

॥ सुदर्शनमेरु के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर तट सुवप्रादेश सम्बन्धि अर्घ ॥

मेरु पश्चिम नदि उत्तरा, देश सु वप्रा जानों खरा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तरतटे सुवप्रादेश उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४६ ॥

याहि सु वप्रा देश मझार, खंड मलेच्छ धर्म विनसार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित पंचम्लेच्छखड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४७ ॥

याहि सुवप्रा देश सुजान, वृषभाचल गिरि है सुखखान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथस मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४८ ॥

याहि सुवप्रा देश वखान, तामें विजयारध गिरि जान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४९ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी सुभ की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५० ॥

याही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी गुण की खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों पद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थिन उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५१ ॥

याही विजयारध के जान, कूट महा ऊंचे सुख खान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५२ ॥

याही विजयारध शिर कूट, तिन वासी सुर सुख बहु लूट । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित विजयार्द्ध वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५३ ॥

याही विजयारध शिर जेय, सिद्ध कूट पे जिन थल तेय । यामें बिम्ब विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेह सुवप्रादेशस्थित सिद्ध कूट जिन मदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १५४ ॥

याहि सुवप्रादेश बखान, आरज खंड महा सुख दान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित आर्य खड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५५ ॥

याहि सुवप्रादेश मझार, है उपसागर जल बहु धार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रा देशस्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५६ ॥

याहि सुवप्रादेश मझार, वैजयंत चक्री पुर सार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रादेशस्थित चक्री सबधि वैजयंत पुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५७ ॥

याहि सुवप्रादेश बखान, रक्ता नंदी जल निधि जान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदहे सुवप्रादेशस्थित रक्ता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५८ ॥

इसहि सुवप्रादेश मझार, रक्तोदा नंदी अधिकार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सु वप्रा देश स्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५९ ॥

याहि सुवप्रा देश बखान, देव वसैं मगधादिक जान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुवप्रा देश स्थिते मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १६० ॥

याहि सुवप्रा देश मझार, है जिन भवन पुण्य के तार । या में बिंब विराजै सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सुवप्रा देश संस्थिते जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥ १६१ ॥

॥ सुदर्शन मेरु पश्चिम दिशा में पश्चिम विदेह संबंधी महावप्रा देश गति छेदक अर्घ ॥

मेरु पश्चिम सीतोदा जान, ताकी उत्तर दिश को मान । महा सु वप्रा देश सु जोय, या गति छेद जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे महावप्रा देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६२ ॥

याहि महा वप्रा शुभ देश, पंच म्लेच्छ खंड शुभ भेप। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे महावप्रादेश स्थिते पच म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६३ ॥

याहि महा वप्रा जु मझार, वृपभाचल जानों हितकार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते वृपभाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६४ ॥

इस महा वप्रा देश मझार, विजयारध गिरि जानों सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६५ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी महा गुण खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६६ ॥

इस ही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी बहु गुण खान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६७ ॥

या ही विजयारध पे सही, कूट कहे अति सुख की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश स्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८६ ॥

या ही विजयारध पे जान, कूट तने वासी सुर मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महावप्रादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६९ ॥

याही विजयारध पे जान, सिद्ध कूट पे जिन थल मान। या में विंब विराजे सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देशे विजयार्द्ध संस्थिते सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १७० ॥

याही महा सु वप्रा देश, आरज खंड महा शुभ भेप। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते आर्य खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७१ ॥

या महा वप्रा देश मझार, है उपसागर जल की धार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थिते उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७२ ॥

या महा वप्रा देश सु भाय, चक्री पुर जयंता मन लाय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेह महा वप्रा देश स्थित चक्री संबंधि जयत नगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७३ ॥

या महा वप्रा देश बखान, रक्ता नंदी जलनिधि जान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश सस्थित रक्तानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७४ ॥

या महा वप्रा देश विशाल, रक्तोदा नंदी विन ताल । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरू पश्चिम विदेहे महा वप्रा देश संस्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७५ ॥

या महा वप्रा देश सदीव, देव रहै मगधादिक जीव । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपश्चिम विदेहे महा वप्रा देश सस्थिते मगधादिक देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७६ ॥

याहि महा वप्रा शुभ देश, ता में जिन मंदिर शुभ भेष । तिन में विंव विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे महा वप्रा देशसंस्थिते-जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १७७ ॥

॥ सुदर्शन मेरु के पश्चिम में पश्चिम विदेह वप्रकावती देश गति छेदक अर्घ ॥

मेरु पश्चिम नदी उत्तरा, देश वप्रकावती शुभ धरा । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतो उत्तर तटे वप्रकावती देश उतपति गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७८ ॥

याहि वप्रकावती सुदेश, खंड मलेच्छ धर्म विन लेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा तटे वप्रकावती संदेशस्थिते पच म्लेच्छ खंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७९ ॥

याहि वप्रकावती सदेश, ता में वृषभाचल शुभ भेष । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुपश्चिम विदेह वप्रकावती देश संस्थिते वृषभाचल गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८० ॥

देश वप्रकावती सु जोय, तापे विजयारध की जोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश संस्थिते विजयार्द्धगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८१ ॥

याही विजयारध की सोय, दक्षिण श्रेणी बहु शुभ जोय । या ही उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध दक्षिणश्रेणी नगरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८२ ॥

इस ही विजयारध की धार, उत्तर श्रेणी सुर मन धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध उत्तरश्रेणी नगरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८३ ॥

या ही खग चल ऊपर सोय, कूट महा सुंदर अवलोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध पर कूटनिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८४ ॥

इस ही खग चल कूट महान, तिन में देव बसें अधिकान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध कूट देवनिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८५ ॥

इस ही खग चल ऊपर सोय, सिद्ध कूट पे जिन थल जोय । या में जिन बिम्बै सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिमविदेहे वप्रकावती देशस्थित विजयार्द्ध सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८६ ॥

या हि वप्रकावती सु देश, तामें आरज खंड सु वेश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश स्थित आर्यखंड नगरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८७ ॥

या ही वप्र कावती मझार, है उपसागर जल बहु धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश स्थित उपसागर नगरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८८ ॥

इस ही वप्रकावती मझार, अपराजित नगरी पुर सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश स्थित नगरी निवासी अपराजित नगरी नगरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १८९ ॥

देश वप्रकावती सु माहिं, रक्ता नंदी अति जल ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश मध्ये रक्तानदी नगरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १९० ॥

देश वप्रकावती सु जोय, रक्तोदा नंदी तहं सोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश मध्ये रक्तोदा नदी नगरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ १९१ ॥

याहि वप्रकावती सु देश, देव नसै मगधादिक वेश, या मे उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश सबंधि मगधादिक गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९२ ॥

याहि वप्र कावती सु देश, तहं जिन मंदिर सुन्दर वेश । या में विंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु पश्चिम विदेहे वप्रकावती देश स्थित जिन मदिरेभ्यो अर्घम् ॥ १९३ ॥

॥ सुदर्शन मेरु के पश्चिम में पश्चिम विदेह के गधा देश संबंधी अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, सीतोदा नंदी तट मान । गंधा देश सुरग सम जोय, या गति छेदक जजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तरतटे गधादेश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९४ ॥

याही गंधा देश मझार, खंड मलेच्छ धर्म जहं टार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सीतोदाउत्तरतटे गंधादेशस्थित पच म्लेच्छ गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १९५ ॥

या ही गंधा देश सुजान, वृपभाचल जानों सुख खान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतादा उत्तर तटे गधादेश स्थित वृपभाचल गति छेदक जिनेभ्योऽर्घं ॥ १९६ ॥

इसही गंधा देश मझार, विजयारध जानों सुख कार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १९७ ॥

या ही विजयारध की जोय, दक्षिण श्रेणी उत्तम सोय, या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९८ ॥

इस ही खगचल की मन लाय, उत्तर श्रेणी अति सुखदाय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधा देशस्थित विजयार्द्ध स्य उत्तर श्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९९ ॥

इस ही विजयारध शिर जान, कूट कहे अति ऊंचे मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देशस्थित विजयार्द्ध कूट गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २०० ॥

या ही विजयारध के शीश, कूट कहे अति सुंदर दीश । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गधा देश स्थित विजयार्द्ध कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०१ ॥

या विजयारध ऊपर सही, देव जिनेश्वर थानक मही । या में बिंब विराजे सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधा देश स्थित जिन मदिरेभ्यो अर्घं ॥ २०२ ॥

या ही गंधा देश सुजान, तामें आरज खंड सु मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देश स्थित आर्य खड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०३ ॥

या ही गंधा देश मझार, है उपसागर बहु जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देश स्थित उपसागर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २०४ ॥

याही गंधा देश मझार, चक्री पुर चक्री को सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधा देश स्थित चक्री सम्बन्धि चक्री पुर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०५ ॥

इस ही गंधा देश मझार, रक्ता नंदी बहु जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित रक्ता नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०६ ॥

या ही गंधा देश मझार, रक्तोदा नंदी जल धार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित रक्तोदा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०७ ॥

याही गंधा देश महान, है जिन भवन पाप क्षय थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधा देश स्थित जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ २०८ ॥

याही गंधा देश सु जोय, देव रहै मगधादिक सोय, या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधा देश स्थित मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २०९

॥ पश्चिम विदेह संबंधी सुगंधा देश गति छेदक अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश जान, सीतोदा उतर तट मान । देश सुगंधा उत्तम मही, या गति छेदक पूजों सही ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे सुगंधा देश उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१० ॥

याहि सुगंधा देश महान, खंड मलेच्छ धर्म विन थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुगधा देश स्थित पंच म्लेच्छ खड उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २११ ॥

याहि सुगंधा देश मझार, वृषभाचल जानों गिरि सार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ही प्रथममेरु पश्चिम विदे० सुगधा देश स्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१२ ॥

याहि सुगंधा देश सुजान, विजयारध गिरि उत्तम ठान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुगधा देशसस्थिते विजयार्द्ध गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१३ ॥

याही विजयारध की सार, दक्षिण श्रेणी शुभ करतार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे सुगधादेश संस्थित विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१४ ॥

या ही विजयारध की जेय, उत्तर श्रेणी बहु सुख मेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुगधा देश स्थित विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी गति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१५ ॥

याही विजयारध शिर सार, कूट कहे ऊंचे सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सुगधादेश संस्थित विजयार्द्धस्य कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१६ ॥

इस ही कूट ऊपरै सही, देव बसै अति सुख की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगन्धादेशसस्थित विजयार्द्धस्य देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१७ ॥

याहि सुगन्धा देश महान, विजयारध सिध कूट बखान । या में विंब विराजे सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगंधादेशसंस्थितविजयार्द्धस्य सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम ॥ २१८ ॥

याहि सुगंधा देश मझार, आर्य खंड जानों हितकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थित आर्यखडगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१९ ॥

याहि सुगंधा देश सु सार, तामें उपसागर जलधार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुगन्धादेशस्थित उपसागरउत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२० ॥

याहि सुगंधा देश स्वरूप, खडग पुरी चक्री थल रूप । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे सुगन्धादेशस्थित चक्रीमन्वन्ति खडगपुर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२१ ॥

याहि सुगंधादेश विशाल, रक्ता नंदी जल की धार । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२२ ॥

याहि सुगन्धा देश विशाल, रक्तोदा नन्दी जल ताल । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२३ ॥

याहि सुगंधा देश मझार, देव रहैं मगधादिक सार । यामें उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सुगन्धादेशस्थितमगधादिक देव गति छेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २२४ ॥

याहि सुगंधा देश महान, हैं जिन थानक पुण्य सुदान । या में थिर विराजे मोय, तिन पद अर्च जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सुगन्धादेशमध्यस्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ २२५ ॥

॥ प्रथममेरु पश्चिमविदेह में सीतोदा नदी के उत्तरतट में स्थित गंधिला देशसंबन्धि अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम दिश सार, देश गंधिला जग मनहार । या मे उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे गंधिलादेश उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२६ ॥

देश गंधिला इस ही माहिं, खंड मलेच्छ धर्मबिन ठाहिं । या में उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे गंधिला देश स्थित म्लेच्छखण्ड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२७ ॥

याहि गंधिला देश मझार, वृषभाचल जानों हितकार । यामें उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे सीतोदाउत्तरतटे गंधिलादेशस्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२८ ॥

देश गंधिला इस ही ठोर, विजयारध गिरि सब शिर मोर । यामें उतपति छेदक मोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे सीतोदा उत्तर तटे गंधिलादेशस्थित विजयार्द्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२९ ॥

याही विजयारध की सही, दच्छिण श्रेणी उत्तम मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधिलादेशस्थित विजयार्द्धस्य दच्छिणश्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३० ॥

या ही विजयारध की मान, उत्तर श्रेणी सुर सम जान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गंधिला देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३१ ॥

इस ही विजयारध पर जेय, कूट कहे उत्तम थल तेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गधिलादेशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३२ ॥

याही विजयारध शिर जान, देव बसै कूटन के थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गंधिलादेशस्थित कूटवासी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३३ ॥

याही विजयारध पे सहीं, सिद्ध कूट पे जिन थल मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधिला देशस्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ २३४ ॥

याहि गंधिला देश मझार, आरज खंड महा सुखकार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित आर्यखंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३५ ॥

याहि गंधिला देश सु जोय, है उपसागर जलनिधि तोय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधिलादेश स्थित उपसागर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३६ ॥

इस ही देश गंधिला ठाहिं, चक्री नगर अयोध्या थाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गधिलादेशे चक्रीसम्बन्धि अयोध्यापुरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३७ ॥

देश गंधिला इस ही माहिं, रक्तानंदी है जल ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित रक्तानदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३८ ॥

याहि गंधिला देश मझार, रक्तोदा नंदी जलधार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुपश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित रक्तोदानदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३९ ॥

इस हि गंधिला देश सुथान, देव रहें मगधादिक जान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधिला देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४० ॥

देश गंधिला या में सही, हैं जिन भवन पुण्य की मही। या में बिंब विराजै सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गंधिला देशस्थित मगधादिक जिन मन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ २४१ ॥

॥ प्रथममेरु पश्चिमविदेह में गंधमालिनी देश सम्बन्धि गतिछेदक अर्घ ॥

प्रथम मेरु पश्चिम है सोय, सीतोदा उत्तर तट होय। गंधमालनी देश महान, या गति छेद जजों शिव थान ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे सीतोदा उत्तरतटे गंधमालिनी देशउत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४२ ॥

इस ही गंध मालिनी देश, खंड मलेच्छ धर्म नहिं लेश। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिम विदेहे गंधामलिनि देशस्थित पंचम्लेच्छखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४३ ॥

देश जु गंध मालिनी जान, है वृषभाचल तिस पर भान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिम विदेहे गंध मालिनी देशस्थित वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४४ ॥

इसही गंध मालिनी देश, विजयारध जानों शुभ भेष। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंध मालिनी देशस्थित विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४५ ॥

गंध मालिनी देश सु माहिं, विजयारध दक्षिण दिश ठाहिं। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धदक्षिणश्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४६ ॥

इस ही विजयारध की सार, उत्तर श्रेणी है सुखकार। यामें उतपतिछेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य उत्तरश्रेणि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४७ ॥

याही विजयारध पे सही, कूट कहे ऊंचे सुख मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुपश्चिमविदेहेगधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धस्य कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २४८ ॥

इस ही विजयारध शिर जेय, कूट निवासी है सुर तेय। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित विजयार्द्धवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४९ ॥

या ही विजयारध के शीश, सिद्धकूट पे जिन थल दीश। या में बिंब विराजे सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गधमालिनी देशस्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५० ॥

याही गंध मालिनी देश, आरजखंड कह्यो शुभ भेष। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधमालिनी देशस्थित आर्यखंडगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५१ ॥

गंध मालिनी शुभ थल माहिं, है उपसागर जलनिधि ठाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गंधमालिनी देशस्थित उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५२ ॥

या ही गंध मालिनी देश, चक्री नगर अवध्या तेस। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित अवध्यानगरो गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५३ ॥

या ही गंध मालिनी धरा, रक्ता नंदी है जल भरा। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित रक्तानदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५४ ॥

गंध मालिनी देश महान, रक्तोदानंदी शुभ मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित रक्तोदा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५५ ॥

याही गंध मालिनी देश, देव रहै मगधादिक भेष। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५६ ॥

गंध मालिनी देश मझार, है जिन भवन पुण्य मय सार। या में बिंब जिनेश्वर तने, मन वच पूजों अर्घ सुठने ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु पश्चिमविदेहे गन्धमालिनी देशस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ २५७ ॥

छंद गीतिका—इस मेरु पश्चिम दिशा शिवदा कहे षोडश थान ये। इन क्षेत्र बीस विचित्र रचना और भवन प्रमानिये ॥
इन भवन बीच सु बिंब मणिमय, शोभ को मुखतें कहै। तिन पांय अर्घ चढाय भविजन, कष्ट बिन सुर शिव लहै ॥

ॐ ह्रीं गन्धमालिनी देश सम्बन्धि श्री जिन चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घम् ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— प्रथम मेरु पश्चिम दिशा, सीतोदा के तीर। जुग तट पे षोडश सुभग, थान विदेह सु वीर ॥

छंद बेसरी—पद्मा देश सुपद्मा जानो, देश महा पद्मा फिर मानो। देश पद्मकावती सु भाई, शंखा देश पंचमा थाई ॥२॥
नलिनी देश देश शिर मोरा, कुमदा देश सातमी ठोरा। सरित देश है अष्टम वीरा, प्रथम मेरुको पश्चिम तीरा ॥३॥
सीतोदा नन्दी की जानो, दक्षिण तट शुभ देश बखानो। अब वाही सरिता के थाये, उत्तर तट वसु देश बताये ॥४॥
तिनके नाम जोर के कहिये, वप्रादेश प्रथम ही लहिये। देश सुवप्रा दूजा भाई, देश महावप्रा सुखदाई ॥५॥
देश वप्रकावती स्वरूपा, गंधा देश देशमें भूपा। देश सुगंधा षष्टम जानो, गंधलादेश सातमा मानो ॥६॥
गंधमालिनी अष्टम देशा, सब मिलि अष्टम देश सुभेषा। षोडश देश कहे हितकारी, तहँते लहै भव्य शिवनारी ॥७॥
इनमें इक इक पुर सुखदाई, इन बिन दूसर उपजे नाहीं। अश्वपुरी पहली सुख ठाहीं, इनके भेद सुनो हितदाही ॥८॥
दूजी सिंह पुरी सब जानों, महापुरी तीजी मन आनो। विजय पुरी चौथी शुभ गाई, अरजा पंचम नगर सुभाई ॥९॥
विरजा षष्टम नगरी गाई, नाम अशोक सप्तमी भाई। पुरी वीतशोका मन ल्यावो, नवमी विजयापुरी सु गावो ॥१०॥
वैजयन्त नगरी शुभ जानो, नगरी फेर जयन्ती आनो। नगरी अपरा जिता सुहाई, चक्रीपुरी सकल मन भाई ॥११॥
खडग पुरी सब को सुख रूपा, नाम अजोध्या पुर सब भूपा। अन्त अवध्या पुर मन भावो, शोभा अधिक सहित समझावो १२
ये षोडश चक्री पुर गाये, कनक रतन जुत मन्दिर भाये। मुनि भोजन तहँ नित कर जावे, विहरत जिन भी उस थल जावे १३
इत्यादिक ये देश अनूपा, प्रथम मेरु पश्चिम दिश भूपा। थान विदेह जु शुभ थल गाये, पुण्यवान जीवन ने पाये ॥२४॥
जिन मुख की वाणी तहां हो है, सुनि भवि अपने अघ मल धो है। देवागम तहँ होय सदीवा, सेवै जिन उत्सवमें जीवा ॥१५॥
कनक कोट चक्री पुर थायो, तुंग घने अति सुन्दर गायो। बड़े द्वार ताके इक सहसा, छोटे द्वार अधिक गिन जैसा ॥१६॥
तिनके मणिमय जान कपाटा, तिन देखत सुर का मद फाटा। ता पुर में चौपथ मग जानो, तिन को एक सहस परमानो ॥१७॥
द्वादस सहस गली तहं गाई, इत्यादिक रचना बहु पाई। पुर के बाह्य बाग शुभ गाये, तीन सैंकड़ा साठ गिनाये ॥१८॥
पुरजन राज भवन सब जानो, रतन मई सब ही सुख थानो। इन आदिक रचना हितकारी, पश्चिम क्षेत्र विदेह अपारी ॥१९॥

जीव तहां पुण्य पाप उपावै, अपने भाव जसी गति जावै। या गति छेद वरी शिव नारी, तिन पद अर्घ जजों सुख कारी ॥२०॥

दोहा— प्रथम मेरु पश्चिम दिशा, षोडश थान विदेह। तिन गति हर शिव को गये, सो पूजों करि नेह।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु पश्चिम विदेह सबधि जयमाला पूर्णार्घं ॥ इति ॥

॥ विदेह सम्बन्धि वक्षार गिरि स्थित चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीतिका—वक्षार जंबू तने षोडश, मेरु दो तरफा परे। हैं वरन सबके हेम से, निज शोभ से सुर मन हरे।
गिरि कौन दक्षिण और उत्तर से सभी नदियां घिरी। तिन कूट पर हैं भवन जिनके, पूजते जिन को हरी ॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार गिरि सबंधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार गिरि संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार गिरि संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—प्रथम मेरु प्रथम वक्षार, चित्र कूट तसु नाम विचार। ता ऊपर जिन भवन उजास, मैं पूजों शिव पुर प्रकाश।

ॐ ह्रीं जबू द्वीपे विदेहक्षेत्र चित्र कूट वक्षार सबंधि सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

दूजो पद्म कूट वक्षार, तिनपे जिनको मंदिर सार। विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो विदेह क्षेत्र पद्मकूट नाम वक्षार संबधि सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

तीजो नलिन नाम वक्षार, तापर जिन मन्दिर अधिकार। विंब तहां जिन के अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेह क्षेत्रे नलिन नाम वक्षार स्थित सिद्ध कूट जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

चौथो एक शैल वक्षार, तापर जिन मन्दिर हितकार। विंब तहां जिन के अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेह क्षेत्रे एक शैल वक्षार स्थित सिद्ध कूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

नाम त्रिकूट पंचमों शैल, तापे जिन मन्दिर विन मैल। विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो विदेह क्षेत्रे त्रिकूट नाम वक्षार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पष्ठम वैश्रवण वखार, ताके ऊपर जिन गृह सार । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेहक्षेत्रे वैश्रवण नाम वखार स्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

अंजनात्म सप्तम वखार, जिनके भवन तास पे सार । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे अजनात्म वखार स्थित जिन मंदिरेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

अंजन अष्टम शुभ वखार, जिन मन्दिर तापे अघ टार । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्री प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे अजन नाम वखार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

श्रद्धावान जान वखार, ता ऊपर जिन भवन सु सार । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेह क्षेत्रे श्रद्धावान वखार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

विजटावान वखार सुजान, ऊपर ताके जिन थल मान । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ सँजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेहक्षेत्रे विजटावान वखार स्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

आशीविष वखार सुजान, ऊपर ताके जिन थल मान । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहेक्षेत्रे अशीविष वखारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

नाम सुखावह शुभ वखार, ता ऊपर जिन मन्दिर सार । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथमेमरोः विदेहेक्षेत्रे सुखावह नाम वखारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

चन्द्रमाल परवत वखार, ऊपर जिन मन्दिर सुखकार । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो. विदेहेक्षेत्रे चन्द्रमालवखार स्थित जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

सूर्यमाल वखार सुजोय, ता ऊपर जिन थानक होय । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो विदेहक्षेत्रे सूर्यमाल वखारस्थित जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

नागमाल वखार अनूप, ऊपर जिन थल सुन्दर रूप । विंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहक्षेत्रे नागमाल वखारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

देवमाल पर्वत वक्षार, ता ऊपर जिन मन्दिर सार। बिंब तहां जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे देवमालवक्षारस्थित जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

अडिल्ल—

षोडश हैं वक्षार मेरु परथम तने, तिन ऊपर जिन थान पुण्य थानक बने।
बिंब तहां मणि मई अकृत्रिम हैं सही, तिनके पद में पूजों चाहन शिव मही ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे चित्रकूट नाम वक्षार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

सोरठा—

प्रथम जान वक्षार, चित्रकूट तिस नाम है। या गति छेदक सार, तिन पद पूजों हर्ष कर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहे क्षेत्रे चित्रकूट नाम वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

दूजो जो वक्षार, पद्मकूट तसु नाम है। या गति छेदक सार, तिन पद पूजों हर्षकर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे पद्मकूटवक्षार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

तीजो पर्वत सोय, नलिन कूट तसु नाम है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्षकर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे नलिननाम वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

चौथा पर्वत सोय, एकशैल तिस नाम है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे एकशैलवक्षार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

नाम त्रिकूट सुजोय, पंचम गिर वक्षारहै। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु-विदेहक्षेत्रे चित्रकूटनाम वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

कूट वैसरवण सोय, अष्टम है वक्षार गिर। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु-विदेहक्षेत्रे वैश्रवणनामवक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

अंजनात्मा सु होय, है वक्षार शुभा मही। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु विदेहक्षेत्रे अंजनात्मवक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं २४ ॥

अंजन अष्टम सोय, है वक्षार सुहावना। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्षधर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहे क्षेत्रे अजननाम वक्षार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

श्रद्धावान जु सोय, गिरि वक्षार विदेह में। या गति छेदक सोय; तिन पद पूजों हर्षधरः ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहक्षेत्रे श्रद्धावान वक्षार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

विजटावान जु होय, दशमा गिरि वक्षार है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्षधर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो विदेहक्षेत्रे विजटावान वक्षारगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

आशीविष है सोय, एकादश वक्षार ही। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेहक्षेत्रे आशीविष वक्षार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नाम सुखावह होय, द्वादशमा वक्षार का। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो. विदेहक्षेत्रे सुखावह वक्षार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

चद्रमाल है सोय, तेरहमा वक्षार ही। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घधर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो. विदेहक्षेत्रे चंद्रमाल नाम वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

सूर्य माल है सोय, चौदहमां वक्षार जी। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः विदेह क्षेत्रे सूर्यमाल वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

नागमाल है सोय, पन्द्रहमा वक्षार का। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे नागपाल वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

देव माल जु सोय, षोडशमा वक्षार है। या गति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्ष धर।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्रे देवमाल वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

दोहा— षोडश गिरि वक्षार हैं, प्रथम मेरु के जान। तिन गति छेदक देव के, पांय जजों हित मान।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः विदेहक्षेत्र संबंधि वक्षार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३४ ॥

॥ द्वादश विभंगा नदी गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—गाधवती सरिता मन लाय, जानि विभंगा अति जल ठाय। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हरषित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबधि गाधवती विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

जानि विभंगा नदी सु सार, है द्रहवती नाम सुखकार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि द्रहवती विभगा नदी गति-छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

पंकवती सरिता जल धार, दूजी नदी विभंगा सार। या गति छेदक देव जु होय। तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सम्बन्धि पकवतो विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

तप्त जला नंदी को नाम, वेग घने दीरघ जल ठाम। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबंधि तप्तजला विभगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥

मत्तजला सरिता जल खान, शोभै तट दोनों अधिकान। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबंधि मत्तजला विभगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

उनमतजला नदी है सार, उज्वल वरणी तट पे धार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि उनमत्तजला विभगा-नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

क्षारोदा नंदी को नाम, दोऊ तट शोभा वन धाम। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि क्षारोदा विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४१ ॥

सीतोदा नंदी है जेय, ताके जल अति निर्मल तेय। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबधि सीतोदा विभगा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

श्रोतवाहिनी सरिता जान, क्षेत्र विदेह मांहि यह मान। या गति छेदक जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सबधि श्रोत वाहिनी विभगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥

गंभीर मालिनी सरिता सार, क्षेत्र विदेह विषै जल धार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु संबधि गंभीर मालिनी विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

फेन मालिनी नंदी सार, वहती क्षेत्र विदेह मझार। या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु संबधि फेन मालिनी विभगा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

उर्मिमालिनी सरिता सार, चेत्र विदेह विषैं निरधार । या गति छेदक देव जु होय, तिन पद पूजों हर्षित होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुसंबंधि उर्मिमालिनी विभंगा नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

छंद—अडिल्ल—

एती द्वादश नदी विभंगा जानिये, चेत्र विदेह विषै अति जल की खानिये ।
मान पोत्र द्रहतै चलि सरिता है मिली, तिन गति हर शिव लई जजों हो बुध भली ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः षोडश वक्षार सवंधि द्वादश विभंगा नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

प्रथम मेरु के षोडश लख वक्षारजी, द्वादश और विभंगा सरिता सारजी ।
तिन की उतपति छेद सिद्ध पद पाइयो, तिन पद हम यह मन वच अर्घ चढाइयो ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरो. षोडश वक्षार सबधि द्वादश नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

॥ प्रत्येक बक्षार संबंधी चार चार कूट गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई—चित्र कूट परथम वक्षार, तापे चित्र कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः चित्र कूट वक्षार संवंधि चित्रकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

चित्र कूट ऊपर ही सही, सिद्ध कूट है सुख की मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरो चित्र कूट बक्षार संबंधि सिद्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

चित्र कूट परथम वक्षार, तापे कच्छा कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः चित्र कूट बक्षार संवधि कच्छा कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३ ॥

इसही चित्र कूट वक्षार, ऊपर कूट सु कच्छा सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरोः चित्र कूट बक्षार संवधि सु कच्छा कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

दूजो पद्म नाम वक्षार, तापे नलिन कूट है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो' पद्मनाम वक्षार संबधि नलिननाम कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पद्म द्वितिय वक्षार उचार, तापे सिद्ध कूट मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो' पद्म वक्षार सवंधि सिद्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

याही पद्मकूट बखार, महाकच्छ तहँ कूट सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खयो ॥

ॐ ह्रीं प्रमथमेरो' पद्म कूट बखार सबंधि महाकच्छ कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

पद्म कूट पर्वत पर जान, कच्छकावती कूट बखान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो पद्म कूट बखार संबधि कच्छकावती कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

तीजो नलिन नाम बखार, तापे नलिन कूट निरधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरो' नलिन बखार संबधि नलिन कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

तीजो नलिन नाम बखार, तापे सिद्ध कूट मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके:पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरोः नलिन बखार संबधि सिद्धकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

याही नलिन कूट बखार, आवर्ता तसु कूट सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरुनलिनबखारसंबधि आवर्ता कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

याही नलिन ऊपरै सही, लांगलवर्त कूट शुभ मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नलिन बखार सबंधि लांगलावर्त कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

एक शैल बखार सु जान, तापे शैल कूट भी मान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बखार सबधि शैल कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

शैलवान बखार सु जान, तापे सिद्ध कूट सुख खान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बखार संबंधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

शैल नाम इस ही बखार, उपरि पुष्कला कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बखार संबंधि पुष्कला कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

शैलवान बखार अनूप, पुष्कलवती कूट शुभ रूप । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु एक शैल बखार संबधि पुष्कलावती कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

पंचम गिरि वक्षार त्रिकूट, तापे नाम त्रिकूट सु कूट । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट वक्षार संबंधि त्रिकूट नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ २७ ॥

जानो शैल त्रिकूट सु भाय, तापे सिद्ध कूट मन लाय । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट वक्षार संबंधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ २८ ॥

याही गिरि वक्षार त्रिकूट, तापे वत्सा कूट अनूप । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट संबंधि वत्सा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

इस वक्षार त्रिकूट मझार, उपरि सुवत्सा कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु त्रिकूट वक्षार संबंधि सुवत्सा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

वैश्रवण षष्ठम वक्षार, वैसरवण है कूट सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वक्षार संबंधि वैश्रवण कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

वैश्रवण वक्षारे सही, सिद्धकूट है अद्भुत मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वक्षार संबंधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ ३२ ॥

वैसरवण नामा वक्षार, है महावत्सा कूट सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वक्षार संबंधि महावत्साकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

वैश्रवण नामा वक्षार, वत्सकावती कूट शुभ कार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु वैश्रवण वक्षार संबंधि वत्सकावती कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३४ ॥

अंजनात्म वक्षारे सही, सिद्ध कूट है उत्तम मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु अंजनात्म वक्षार संबंधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ ३५ ॥

अंजनात्म वक्षारे सही, कूट महावत्सा जो कही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु अंजनात्म वक्षार संबंधि महावत्सा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ ३६ ॥

अञ्जनात्म सप्तम वक्षार, कूट अञ्जनातम है सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अंजनात्मवक्षारसंबंधि अंजनात्मकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

है अंजनात्म भलो विस्तार, कूट सुरम्या ऊपर सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अजनात्मवक्षारसम्बन्धि सुरम्याकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

अष्टम अंजन जो वक्षार, तापे अंजन कूट जु सार । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अजनवक्षारसवन्धि अजनकूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

अंजन अष्टम तर्वत जेय, तापे सिद्ध कूट गिन लेय । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री प्रथममेरु अजनवक्षार सम्वन्धिसिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

अष्टम अंजन शुभ वक्षार, तापे रमणिया कूट सुधार । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अंजनवक्षार सम्वन्धि रमणिया कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

अंजन गिरि वक्षार सुसार, कूट मंगलावति निरधार । याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अजनावक्षार सम्वन्धि मगलावती कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३२ ॥

दोपा— पूर्व दिशा वक्षार वसु, तिनके कूट महान । तिन गति छेदक देवके, जजों द्रव्य वसु आन ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु अष्टवक्षार सम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

चौपई—श्रद्धावान नवम वक्षार, श्रद्धावान कूट तहँ सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु श्रद्धावान वक्षार सम्बन्धि श्रद्धावान कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

श्रद्धावान् पर्वत पे सही, सिद्धकूट है उत्तम मही । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु श्रद्धावानवक्षार सम्बन्धि सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

श्रद्धावान भलो वक्षार, तापे पदमा कूट जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री प्रथममेरु श्रद्धावान वक्षार सम्बन्धि पद्माकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

श्रद्धावान भलो वखार, कूट सुपद्मा ऊपर सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु श्रद्धावानवखार सम्बन्धि सुपद्माकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

विजटावान दशम वखार, तापे विजटा कूट जु धार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखार सम्बन्धि विजटाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

विजटावान वखार सुजान, तापे सिद्ध कूट शुभ मान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखारस्थित सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

विजटावान वखार सु तेय, महा पद्म तहँ कूट गिनेय । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखार सम्बन्धि महापद्मकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

विजटावान भलो विस्तार, कूट पद्मकावती जु सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं प्रथममेरु विजटावान वखारसम्बन्धि पद्मकावती कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

आसी विष वखार जु सार, कूट तहां आशीविष मान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविष वखार सम्बन्धि आशीविष कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

आशीविष नामा वखार, तापे सिद्ध कूट मन हार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविष वखार संबंधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

है वखार आशीविष जेय, तापे शंखा कूट गिनेय । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविष वखार सम्बन्धि शंखा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

या पर्वत आशीविष मांहि, ऊपर नलिन सु कूट बताहि । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु आशीविष वखार संबंधि नलिन कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ।

नाम सुखावह है वखार, तापे कूट सुखावह सार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वखार संबंधि सुखावह कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४६ ॥

नाम सुखावह शुभ वक्षार, ऊपर सिद्ध कूट मन धार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वक्षार सवधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम्। ४७ ॥

गिरि वक्षार सुखावह सार, तापे कुमदा कूट सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वक्षार सम्बन्धि कुमदा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

जान सुखावह जो वक्षार, तापर सरित कूट है सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सुखावह वक्षार सम्बन्धि सरित कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

चन्द्रमाल गिरि लख वक्षार, चन्द्रमाल कूट तसु सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्र माल वक्षार सबंधि चन्द्र माल कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

चन्द्रमाल जानो वक्षार, तापे सिद्ध कूट है मार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्रमाल वक्षार सम्बन्धि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

चन्द्र माल नामा वक्षार, वप्रा कूट तहां है सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्रमाल वक्षार सम्बन्धि वप्रा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

याही चन्द्र माल गिरि जान, ऊपर कूट सुवप्रा मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु चन्द्रमाल वक्षार सबधि सुवप्राकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

सूर्यमाल चौदम वक्षार, सूर्य माल तहं कूट जु सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्यमाल वक्षार सबधि सूर्यमाल कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५४ ॥

सूर्यमाल पर्वत वक्षार, तापे सिद्ध कूट है सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्यमाल वक्षार सबधि सिद्धकूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५५ ॥

सूर्यमाल जो है वक्षार, कूट तहां महा वप्रा सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्य माल वक्षार सबधि महावप्रा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५६ ॥

सूर्यमाल शुभ ह बक्षार, कूट वप्रकाव ी सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु सूर्य माल बक्षार सम्बन्धि वप्रकावतो कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

नागमाल पंद्रम बक्षार, नागमाल तहं कूट जु सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नागमाल बक्षार सम्बन्धि नाग माल कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

नाग माल पर्वत बक्षार, तापे सिद्ध कूट है सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नाग माल बक्षार सम्बन्धि सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

नाग माल गिरि पे शुभ सही, गंध नाम है कूट जु मही। या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नागमाल बक्षारसम्बन्धि गन्ध नाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

नाग माल पर्वत पे जोय, कूट सुगंधा जानो सोय। ता की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नागमाल बक्षारसम्बन्धि सुगन्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

देवमाल बक्षार सु जान, देव माल तहँ कूट जु मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु देवमाल बक्षार सम्बन्धि देवकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

देवमाल परवत पे सही, सिद्धकूट है उत्तम मही। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूज ों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु देवमाल बक्षार सबधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६३ ॥

देव माल जानो बक्षार, गँधला कूट तहां पे सार। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु देव माल बक्षार सबधि गधला कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६४ ॥

देव माल गिरि ऊपर सही, गंधमालिनी कूट जु मही। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु देव माल बक्षार संबंधि गधमालिनी कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६५ ॥

छंद अडिल्ल—

प्रथम मेरु बक्षार दोऊ दिशि जानिये। तिन ऊपर चव कूट, महा सुख थानिये।
तिन की उतपति छेद, गये शिव थान जी। तिन पद पूजों अर्घ भले कर आन जी।

ॐ ह्रीं प्रथममेरु षोडश बक्षार संबधि चैत्यालय कूट वा गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६६ ॥

॥ उत्तर कुरु भोग भूमि गतिच्छेदक अर्घ ॥

दोहा— उत्तर कुरु की भूमि में, उपजत जिय बहु आय । सो उतपति छेदकनिको, पूजों हर्ष बढाय ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि गति छेदक अत्रावतरावतर संवौषट् (आह्वाननम्) ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि गति छेदक अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ. स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि गति छेदक अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

चौपई—ये उत्कृष्ट सु आरज थान, उपजै इहां नर शुभ फलवान । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ।

ॐ ह्रीं उत्तर कुरु भोग भूमि सवधि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

उत्तर भोग भूमि में सार, पशू होय पुण्य के धार । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्पित होय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि तिर्यञ्च गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

उत्तर भोग भूमि के माहि, नभचर जीव होय अधिकाहि । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हर्पित होय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सवन्धि नभचर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

उत्तर भोग भूमि की ठोर, थल चर जीव बसें बहु जोर । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि थलचरजीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

उत्तर कुरु भू माहि सुजान, उपजै सुर द्रुम दश विधि मान । इनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों हरपित होय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि दशप्रकार कल्पवृक्ष गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

हरिगीतिका—यह जाति उत्तर भोग भू की धरा उत्कृष्टी कही । तहँ आयु पल्य सु तीन नर पशु, तीन कोस जु तन सही ॥
दिन तीन अन्तर खाय भोजन, वृक्ष दशधा कल्प हैं । इन गतिच्छेदक देवके पद, जजों पापनि अल्प हैं ॥

ॐ ह्रीं उत्तरकुरु भोगभूमि सम्बन्धि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ इति ॥

॥ शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि चैत्यालय पूजा ॥

द हरिगीतिका—वर-मेरु की उत्तर दिशा में, वृक्ष शालमली कह्यो । जहँ रतनमय है सकल रचना, तासु पे जिन थल ठयो ॥

तहँ बिंब सब ही रतन मणिमय, सकल को सुखदायजी। फिर जाय सुरखग वहां पूजें, हम जजैं मन भायजी ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु उत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं प्रथममेरुउत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं प्रथममेरुउत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तरदिशा शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिन

छंद अडिल्ल—

गंगा निरमल नीर लाय शुभ भावजी, कनकपात्र में घाल हिये कर चावजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों थुति ठान जरामृत दाहिये ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि श्रीजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन घसि शुभ नीर सुगन्ध अपारजी, कनकपात्र ले धार भक्तिजुत सारजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों थुति ठान जनम दाह ढाहिये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल गंध खंड विन जोयके, ले अपने कर निरमल नीर सुधोय के।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, तिन पद अक्षत पूजि अखै पद पाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल गंध बहु भांति वरन सुखदायजी, ले अपने करमाल भक्ति बहुलायजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों थुति लाय काम अति दाहिये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

षटरस जुत नैवेद्य तुरत कर लाइयो, सुभग पात्र धरि श्री जिनके गुण गाइयो।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइयो, ते पूजों मन लाय भूख क्षय जाइयो ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय तमहर ज्योति प्रकाशता, कनक थाल में लाय मुखै थुति भाषता।

शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, ते पूजों मन लाय मिथ्या तम जाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शालमली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

दशधा धूप मिलाय गंध आछी करी, अगनि विषै हरपाय सकल ही ले धरी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइयो, धूप लाय ते जजों कर्म क्षय पाइयो ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शालमली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी लाइये, इन आदिक बहु फल सुभग गुण गाइये।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, पूजेतें शुभ भाव मोक्ष फल पाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शालमली वृक्षसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दनाक्षत पुष्प फेर चरु लायके, दीप धूप फल अर्घ लेय गुणगाय के।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये, पूजे ते शुभ भाव सिद्ध पद पाइये ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शालमलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—

ये शालमली तरु पे सुजान, जिन थानक मणिमय विद्यमान।
तिनके पद पूजों भक्ति लाय, ता फलतें शिव सुर थान पाय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु शालमली वृक्ष सम्बन्धि श्रीजिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—शालमली तरु पृथ्वीकाय, हरित काय मनमें नहिं लाय। या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं शालमली वृक्ष गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

याही शालमली तरु माहिं, देव रहै नाना सुख पाहिं। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्षसम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— शालमली तरु ऊपरै, जिन थानक शुभ जान । जजैं देव भव सफल करि, मैं पूजों धनि मान ॥

छंद वेसरी—भोग भूमि नामा थल माहीं, जंबू वृत्त महा सुख ठाही । दश जोजन तो तुंग बतायो, मधि तें दश जोजन को गायो ॥२॥
ऊपर जोजन चव का व्यासा, शोभा अधिक सुरत में भाषा । चव शाखा ताके लखि भाई, वज्रमई सुन्दर बतलाई ॥३॥
दक्षिण शाखा पे जिन गेहा, तहं पूजे सुर नर कर नेहा । शाखा और तिनों पे भाई, देव रहै शोभा अधिकाई ॥४॥
व्यंतर देव तनों यहां वासो, पूजों जिन करि करि सुख आशो । या भी विरछ तनों व्याख्यानो, जंबू वृत्त तनों सब जानों ॥५॥
पहला कोट वेदिका सारी, तरु परिवार गिणत सम धारी । तिन पे भी सुन हरि का वासा, पूजों जिन सुख करि अघ नाशा ॥६॥
या तरु रचना कबलों कहिये, बुध थोडी शोभा बहु लहिये । शाखा लघु रतना मय जानो, मूंगा सम तहां फूल बखानो ॥७॥
ताके फल दीरघ अति काये, मृदंग से जिनवाणी थाये । रचना देखि देव मन मोहै, जिन पूजें अदभुत फल हो है ॥८॥
तहां सदा जिन पूजन भाई, देव खगां ही पहुँचे जाई । और जीव का मोसर नाहीं, धन्य तिन्हें जो पूजै यहां ही ॥९॥
जिन पद पूजैं अघ चय जावै, जीव भक्ति तें बहु सुख पावै । तें धनि जे ऐसे जिन पूजैं, तिनके पूरब अघ सब धूजै ॥१०॥
हम तो यहां तें मन वच काई, पूज रचें भव धन गिन भाई । इत्यादिक इस तरु की बातें, देखे सुने पाप सब जाते ॥११॥
या का सब व्याख्यान अनूपा, जंबू तरु का सकल सरूपा । ताको फल आगे कर आये, तैसा ही यह जानो भाये ॥१२॥

दोहा— शालमली शोभा सहित, वृत्त कह्यो सुख दाय । जजों ताम पे जिन भवन, ता फल बहु सुख पाय ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं शालमली वृत्त संबंधि जिन चैत्यालय जयमालार्घम् ॥ इति ॥

॥ अथ नील कुलाचल पूजा प्रारभ्यते ॥

छंद अडिल्ल— प्रथम मेरु की उत्तर दिशि को जानिये, नील कुलाचल महा सुभग थल मानिये ।
ता ऊपर जिन थान बिंब हैं सुख मई, सो मैं पूजों थापि यहां मन वच सई ॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् । आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद गीतिका—नीर निरमल क्षीर दधि को, महा सुख दायक सही। मैं लेय झारी कनक माहीं, आपने कर की मही।
जिन थान परवत नील ऊपरि, तास पद पूजा करों। तिस फलै जामन मरण के दुख, नाश हों सहजै करो॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम्॥ १॥

घसि नीर गंध सु धार चन्दन, सकल को सुखदाय ही। धरि कनक पातर भक्ति उर धरि, तास पद पूजों सही॥
जिन थान पर्वत नील ऊपर, तास पद पूजों सही। ता फलै भव आताप नाशै, वाणि जिन ऐसे कही॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम्॥ २॥

सुभग उज्वल खंड विन ही, अक्षत निरमल लाइयो। ले आपने कर हरष धरिके, देव जिन गुण गाइयो॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही। ता फलै थानक अखय पावै, भव भ्रमण परिणति रही॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम्॥ ३॥

फूल सुर द्रुम तने सुन्दर, गन्ध की उपमा घनी। ले आप कर अति भक्ति उरधर, पाप की परिणति हनी॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही। ता फलै दुखदा मदन नाशै, पाय है सुख की मही॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम्॥ ४॥

नैवेद्य षटरस सहित सुखदा, तुरत को कीनों लियो। धरि सुभग पातर आप करले, भक्ति जुत शुभचित कियो॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही। ता फलै जठरानल विनाशै, और फल कीं को कही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम्॥ ५॥

रतन दीपक ज्योति करता, तम हरा सुन्दर गिनो। धरि कनक पातर आरती कर, हरष बहु हिरदै ठनो॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही। ता फलै मिथ्या रोग नाशै, सुरत में ऐसे कही॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम्॥ ६॥

धूप दश विध गंधदायक, घ्राणको सुखदायजी। लें हरष जुत तें आपने कर, धरों वह्नि मांहिजी॥

नील कुलाचल कमल मझार, देवी कीर्ति रही सुखकार । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि कमलवासिनी कीर्ति देवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

कीरति देवी के परिवार, देव रहैं कमल में सार । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नील कुलाचल सम्बन्धि कीर्तिदेवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

केशरि कुंड नील गिरि शीश, तहँ तें सीता नदी चलीस । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि सीता नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

केशरि नाम कुंड तें चली, नरकान्ता सरिता दधि मिली । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि नरकान्ता नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

नंदी परवत कुंड सुजान, कमल आदि देवी सुरमान । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरु नीलकुलाचल सम्बन्धि ह्रदनदी कमलदेवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— नील कुलाचल ऊपरैं, है जिन थान सयान । देव खगा पूजै तहां, हम पूजैं इह ठान ॥ १ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

जंबी द्वीप गिरि उत्तर धारा, मेरु कुलाचल सब गिरि लारा । दंडाकार भूमि में थाया, पूरब पश्चिम नौक बताया ॥ २ ॥
चौपड पासावत आकारा, ऊपर हेट व्यास सम धारा । ऊंचा जोजन चव शत भाई, व्यास निषध परवत सम थाई ॥३॥
मोरकंठसा वरण बताया, तथा सञ्ज पन्ना मय गाया । इसपे नव शुभ कूट बताये, देवतने तिसपे थल गाये ॥ ४ ॥
कूट तुंग ऐसे मन लावो, निज गिरि तें आधे समझावो । सकल गिरी रतनों के कूटा, दोनों वन वेदी दुख छूटा ॥ ५ ॥
या गिरि ऊपर द्रह शुभ जानो, केशरि ताको नाम बखानो । लंबा कुंड तना विसतारा, च्यार सहस जोजन मन धारा ॥६॥
जोजन सहस दोय का व्यासा, ऊंचा जोजन चालिस भाषा । फिर इन दधि मधि कमल सुहाये, देवीदेव बसै तहां ठाये ॥७॥
फिर तिन में तें नन्दी आई, पूरब अपर चाल दधि याही । इन आदिक बहुत विसतारा, जान लेय जिन धुनि तें सारा ॥८॥

ऐसो नील कुलाचल भाई, उपमा ताकी वरणी न जाई। तापै देव जिनन्द सु थानो, सो मैं पूजों हो अघ हानो ॥९॥
या परवत की रचना सारी, भुगतै भटकै जीव संसारी। या की उतपति हर शिव जावै, ता पद पूजन सुर खग आवै ॥१०॥

सोरठा— नील कुलाचल होय, सब जीवन सुखदाय है। या गति छेदक सोय, अर्घ जजों पद तासु के ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल सम्बन्धि जयमाला पूर्णार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥ रम्यकक्षेत्र सम्बन्धि गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—रम्यक नाम क्षेत्र शुभ लसा, मेरु सुदर्शन उत्तर दिशा। भोग भूमि मध्य की जान, या गति छेद जजों थुति ठान ॥

ॐ ह्रीं प्रथममेरुउत्तरदिशा रम्यक् क्षेत्रगतिच्छेदक जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं प्रथममेरु उत्तरदिशा रम्यक् क्षेत्रगतिच्छेदक जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं प्रथममेरु उत्तरदिशा रम्यक् क्षेत्रगतिच्छेदक जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

मेरु तनी दिश उत्तर जान, रम्यक क्षेत्र रहै सुख खान। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि रम्यक क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

याही रम्यक थल मे सार, होय मनुष्य पुण्य अवतार। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र सम्बन्धि मनुष्यगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

रम्यक क्षेतर मांही सही, जलचर पशू होय इस मही। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र सम्बन्धि जलचर जीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

रम्यक भोग भूमि विच जेय, नभचर जीव ऊपजै तेय। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्रसम्बन्धि नभचरजीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याही रम्यक थल मधि जान, परवत भलो नाभि गिरि मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यकक्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

रम्यक क्षेत्र भली भू माहिं, कल्प वृक्ष जाति दश ठाहिं। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र संबंधि दश प्रकार कल्प वृक्ष गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

छंद अडिल्ल—

रम्यक खेतर माहिं आयु पलि दोय है, दोय कोस तन मंद कषाई होय है।
दो दिन अंतर आय बुद्धि बल सुन्दरा, इन गति छेदक देव जजों सुर शिव करा ॥

ॐ ह्रीं रम्यक क्षेत्र संबधि उत्पति छेदक जिनेभ्यो महार्घम् ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ रुक्मि पर्वत संबंधि अकृत्रिम चैत्यालय पूजा ॥

चौपई—रुक्मी नाम कुलाचल सोय, मेरु तनी उत्तर दिश जोय। तापे है जिन थल जिन बिंब, ताहि जजों मन वच इक थम्ब ॥

ॐ ह्रींप्रथम मेरु रुक्मिनाम पर्वत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु रुक्मिनाम पर्वत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ स्थापनम्।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु रुक्मिनाम पर्वत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद जोगीरासा—नीर महा निरमल सुखकारी, क्षीरोदधि सम भाई। झारीकनक तनी भर करले, भक्ति धार अधिकाई ॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी, बिंबन को पूजों शुभ भावन, जामन मरण निवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन पावन जलतें, खूब घिसऊं भाई। कनक पियाले धार लेयकर, हरष घनों उपजाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनिको पूजों शुभ भावन, जामन मरण निवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम ॥ २ ॥

तन्दुल उज्वल खंड विना ले, सब ही नोक धराये। सुभग रकेबी थाल लेयकर, मनमें बहु उमगाये।
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, थान अखै फलधारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल कलप द्रुम के हितकारी, गंध धरा शुभकारी। वर्ण मनोज्ञ अनेक जातिके, ले अपने कर धारी ॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मंदिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, कामवंश सब जारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

तुरत करत नैवेद्य महा शुभ, षटरस पूरित भाई। सुभग थाल भर लेकर अपने, हरषधार अधिकाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मंदिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, रोग क्षुधा निरवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई तमहारी, ज्योति प्रकाशक भाई। कनकथाल भर लेय आरती, जिन पूजन मन लाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनिको पूजों शुभ भावन, मिथ्या तम क्षयकारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप भली दश गंध तनी शुभ, मेलि इकट्ठी लायो। खेवन को मनसा वच काया, जिन चरणा उमगायो ॥
रुक्मीनाम कुलालाच ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, कर्मनाश को धारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्म कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी, खारक पिसता भाई। इन आदिक फल लाय मनोहर, नैनन को सुखदाई ॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मंदिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, मोक्ष फला करतारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल लाये। इनको अरघ बनाय सुभग चित, अंग अंग हुलसाये ॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी। बिंबनि को पूजों शुभ भावन, अद्भुत फल करवारी ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

द्धरि—जिन पूजातैं जगपूज्य होय, फिर स्वर्गमोक्ष ह्वै कर्म खोय। इमि जानि पूजिये देव पांय, तातैं भव वांछित सुख सु थाय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—रुक्मी नाम कुलाचल जान, सिद्धकूट उत्तम थल मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

रुक्मी भलो कुलाचल सार, तापे रुक्मी कूट जु धार । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि रुक्मिनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याही रुक्मी परवत शीश, रयम्क नाम कूट सुदीश । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि रम्यकनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही रुक्मी परवत सही, नारी नाम कूट की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि नारीनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

रुक्मीनाम कुलाचल सही, तामें बुद्ध कूट की मही । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि बुद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

ये ही कुलाचल रुक्मी जान, रूप कुला तहँ कूट वखान । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि रूपकुला कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

नाम कुलाचल रुक्मीजान, हिरण्यनाम की कूट वखान । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों, चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचलसम्बन्धि हिरण्यनामकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

रुक्मी नाम कुलाचल सार, मणि कंचन तहँ कूट सुधार । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल सम्बन्धि मणिकाचन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

ये ही रुक्मी के वसुकूट, देव रहें सुख से अघ छूट । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल सम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

रुक्मी नाम कुलाचल जान, पुंडरीक महाद्रह मान । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल सम्बन्धि महापुण्डरीक ह्रदगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

महा पुंडरीक द्रह माहि, कमल कह्यो मणिमय हित ठाहि । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल होय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल महापुडरीक ह्रदसंबन्धि कमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

पुंडरीक ह्रद कमल जु तेय, तापर कमल महा अति जेय । ता में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मीनाम कुलाचल पुंडरीकह्रदकमलमवधि बुद्धिदेवो गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

महा पुंडरीक कमलद्रह सार, तापे बुधि देवी थुति धार । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल पुडरीकह्रद कमल सम्बन्धि बुद्धिदेवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३ ॥

बुध देवी परिवार सु देव, बसै और कमलन में जेव । ता की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल महापुडरीकह्रदकमलवासो बुद्धिदेवी परिवारदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

महा पुंडरीक द्रह सही, नारी सरिता उतपति भई । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल महा पुडरोकह्रद सम्बन्धि नारो नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

महा पुंडरीक द्रह जान, नदी रूप्य कूला निकसान । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों चित मल खोय ॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाथ कुलाचल महापुडरोक ह्रद सम्बन्धि रूप्यकूलानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छंद अडिल्ल—

नंदी द्रह गिरि फूल और सुर जो सही, इन आदिक जो रचना सब ही सुखमयी ।
रुक्मी नाम कुलाचल जो विधि जानिये, ता गति छेदक सोय जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि कुलाचल संबधि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

॥ जयमाला ॥

चौपई—रुक्मी नाम कुलाचल सोय, ताकी रचना गापै जोय । सुनत कथन हित उपजै सही, होय पाप क्षय शुभ फल मही ॥१॥

छन्द बेसरी

रुक्मी नाम कुलाचल जानो, जंबू द्वीप विषै शुभ थानो । दंडाकार तुंग अधिकाई, पूरब पश्चिम नोक बताई ॥ २ ॥
श्वेत वरण रूपा सम होई, ताकी महिमा लखै न कोई । जोजन द्वय शत ऊंचा जानो, चौडाई आगम तें मानो ॥ ३ ॥
महा पुंडरीक पे कुंडा, जोजन दश द्रह जानों ऊंडा । दोय सहस जोजन लंबाई, व्यास जोजना सहस बताई ॥ ४ ॥
तामें कमल रतन मय मानो, तहं पे बुध देवी को थानो, जोजन दोय कमल का वासा, ऊंचा जल सम कछु अधिकासा ॥५॥
ता द्रह में दो सरिता आई, नारी रूप्य कुला लख भाई । सो चलि बहु नंदी-जुत होई, मिली समद लवणोदधि सोई ॥६॥
और कमल लघु द्रह में भाई, घने कहे परिवार बताई । तिन पे बुधि देवी परिवारा, देव रहै नाना सुख धारा ॥ ७ ॥
इत्यादिक रुक्मी गिरि मांही, रचना घनी वाणि जिन गाही । और ऊपरै कूट बताये, तिन पे देव बसे धुनि गाये ॥ ८ ॥
तिन पे एक कूट सिध जानो, तापे जिन को थान बखानो । बिंब महा सुन्दर जिन जैसा, सो मैं पूजों सिध फल ऐसा ॥९॥
देव खगां नित पूजा ठाने, अपने तन को सफल कराने । हम तो मन वच काय लगाई, यहां ही भावन भावै भाई ॥ १० ॥

दोहा—

रुक्मी परवत ऊपरैं, देव जिनेश्वर थान । देव खगां उस थल जजें, हम यहां भावन जान ॥

ॐ ह्रीं रुक्मि नाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालय पूजा महार्घं ॥ ११ ॥ इति० ॥

॥ हैरण्यवत क्षेत्र संबंधी उत्पति छेदक अर्घ ॥

चौपई—क्षेत्र विदेह हिरण्यवत सोय, तहं पे आयु एक पलि होय । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं हैं शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र संबधि मनुष्य गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

जय जय भोग भूमि मन लाय, होय पशू पंचेन्द्री आय । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं हैं शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्य वत क्षेत्र संबधि भोग भूमि पंचेन्द्रिय पशु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥३ ॥

जघन्य भोग भूमि के मांहिं, थलचर जीव होय तिस ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं हैं शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र संबधि जघन्य भोग भूमि थलचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ ४ ॥

जघन्य भोग भूमि के मांहि, दशधा कल्प वृक्ष तिस ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं ह्वैं शिव मही ॥

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र संबधि जघन्य भोग भूमि दश प्रकार कल्पवृक्ष गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याहि जघन्य भोग भू मांहि, थावर होय विकलत्रय नाहि । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं ह्वैं शिव मही ।

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र सबधि जघन्य भोग भूमि स्थावर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

है हैरण्य क्षेत्र बिच सार, नाभि नाम गिरि है सुख कार । तिनकी उतपति छेदक सही, तिन पद पूजैं ह्वैं शिव मही ॥

ॐ ह्रीं हैरण्यवत क्षेत्र सबधि नाभि गिरि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

छंद हरिगीतिका—इस भोग भूमि जघन मांही, आयु इक पलि की सही । तन एक कोस जु तुंग जानो, बुद्धि बल सम रूप ही ।
इक रोज अंतर खाय भोजन, आंवले सम जानिये । या गति छेदक देव पूजे, स्वर्ग शिव सुख मानिये ॥

ॐ ह्रीं हैरण्यवर्त क्षेत्र जघन्य भोग भूमि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥ इति० ॥

॥ शिखरी पर्वत पूजा ॥

छंद अडिल्ल—
शिखरी नाम कुलाचल ऊपर जानिये, सिद्ध कूट शिर जिनको थान बखानिये ।
देव खगां तहां जाय पूज्य जिमि सुख लहै, हम इहां भावन थापि पूजि के अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ, सन्निधिकरणम् ।

छंद गीतिका—लाय निरमल नीर सुखदा, क्षीर दधि सम जानिये । कनक झारी हरप जुत ह्वैं, आपने कर आनिये ।
शिखरी कुलाचल शीश जिनके, थान जो सुखदाय है । मै जजौं धारा देय जल की, जरा जनम नशाइये ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

घसि नीर निरमल मांहि चंदन, घ्राण को सुख दाय जी । फिर कनक थाली आप कर ले, भक्ति बहु उर लायजी ।

शिखरी कुलाचल शीश जिन को, थान जो सुख दाय है। मैं जजों चंदन पाय जिनके, फलै भव तप जाय है ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

शुभ लेय अक्षत जान मुक्ता, फल समा उज्वल सही। बिन खंड नख शिख शुद्ध जानो, गंध जुत तंदुल कही।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी। ता फलै होई अखंड सुख फल फेर दुख नहीं पायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुर द्रुम गंध दायक वरण नाना जानिये। तिस गंध बसि हो भ्रमर आवैं, पहुप ऐसे आनिये ॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी। ता फलै नाशै मदन को मद, सहज ही दुख जायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नैवेद्य पट रस पूर वांछित, जीभ को सुखदा सही। ले तुरत कीनों आप कर ले, महा उज्वल शुभ मही।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी। ता फलै भूख विनाश पावै, दोष सब ही जाय जी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो ॥ नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीप तमहर रतन कारी, घटपटा परकाशियो। धर थाल कंचन आप करले; भक्ति बहु सुख भापियो।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी। ता फलै मिथ्या रोग नाशै, ज्ञान प्रकटै आय जी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

अगर आदि मिलाय दश विधि, धूप मन मानी धरों। बिन धूम अगनी माहि धर करि, भाव निरमल निज करों।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी। ता फलै नाशै कर्म सब ही, सिद्ध को पद पायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

लाय श्रीफल लोंग पिस्ता, सुभग पुंगी फल सही। खारक बिदाम सु आदि दे के, फल लिये बहु सुख मही।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी। ता फलै उपजे मोक्ष के फल, और क्या अधिकाय जी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

नीर चंदन सुभग अच्चत, फूल चरु दीपक सही । वर धूप दशधा फल मनोहर, मेलि के वसु अर्घ ही ।
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी । ता फलै अदभुत होय महिमा, सिद्ध को पद पाय जी ।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

जल आदि द्रव्य मिलाय आगे, अरघ सुखदा लायजी । ले आपने कर आरती शुभ, जिन तने गुण गायजी ॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, जजों जिन मन लाय जी । ता फलै उपजे देव खग नर, फेर शिव थलपायजी ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घ

छंद चौपई–शिखरी नाम कुलाचल जान, तापे सिद्ध कूट मन आन । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सबंधि सिद्ध कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

याहि कुलाचल शिखरी जान, तापे शिखरी कूट बखान । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सबन्धि शिखरी कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

शिखरी पर्वत ऊपर जान, हिरण्य कूट है बहु सुख खान । याकी उत्पति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि हिरण्य कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

नाम कुलाचल शिखरी जोय, रस देवी तहँ कूट जु सोय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि रस देवी कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याहि कुलाचल शिखरी जान, तापे रक्ता कूट बखान । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि रक्ता कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

शिखरी भला कुलाचल सोय, लक्ष्मी कूट महा सुख होय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि लक्ष्मी कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

जान कुलाचल शिखरी जेय, तापै सुवरन कूट गिनेय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि सुवर्ण कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

शिखरी नाम कुलाचल मही, रक्त वरण तहँ कूट जु मही । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल संबधी रक्तवती कूट गतिच्छेदक जिनेभ्य अर्घम् ॥ ८ ॥

नाम महा गिरि शिखरी जान, गंधवती तहाँ कूट बखान । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि गधवती कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

शिखरी पर्वत ऊपर सही, कूटैरावत की शुभ मही । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि ऐरावत कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

शिखरी नाम कुलाचल जोय, कूट तहाँ मणि कांचन सोय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखर नाम कुलाचल सम्बन्धि मणि कांचन कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

कूट कुलाचल शिखरी शीश, तिन पे देव बसै अवनीश । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

शिखरी नाम कुलाचल जान, तापै पुंडरीक द्रह खान । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि पुंडरीक ह्रद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

पुंडरीक द्रह में अवलोय, मूल कमल मणि मय इक जोय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि ह्रद कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

शिखरी गिरि के द्रह में जोय, कमल वासिनी देवी सोय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि ह्रद वासिनी लक्ष्मी देवी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

पुंडरीक द्रह कमल जु सोय, ता परिवार कमल अरु होय । याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कमल परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १६ ॥

इन परिवार कमल सुर जोय, लक्ष्मी देवी परिकर होय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि लक्ष्मी देवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

पुंडरीक द्रह शिखरी शीश, रक्ता नदी थान ये दीश। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि रक्तानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

पुंडरीक द्रह में ते चली, रक्तोदा नंदी मन रली। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि रक्तोदा नदा गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ १९ ॥

कनक कुला नंदी मन लाय, पुंडरीक द्रह तें उपजाय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल संबधी स्वर्ण वूलानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

गिरि द्रह कूट कमल सुर जोय, इत्यादिक रचना सब सोय। याकी उतपति छेदन हार, ताके पद पूजों सुखकार ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल संबधि कमल वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— शिखरी गिरि ऊपर सही, है जिनवर को धाम। सो मैं यहां भावन भजों, देव जजों तिस ठाम ॥ १ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

जंबू द्वीप विषै गिरि जानो, शिखरी ताको नाम बखानो। चौपड पासे के आकारा, हेठ व्यास जे तो शिर धारा ॥ २ ॥
पूरब पश्चिम नोक बताई, शत जोजन ऊंचो है भाई। कनक जिसो रंग ताको जानो, तापै पुंडरीक द्रह मानो ॥ ३ ॥
सो यह द्रह जोजन शत पांचा, व्याम कह्यो जिन ध्वनि में सांचा। लंबा सहस जोजना भाई, दश जोजन ऊंचा सुख दाई। ४ ॥
ता द्रह मांहिं कमल सुखकारी, रतन मई जोजन विसतारी। तापे देवी लक्ष्मी वासो, नंदी तीन चली इस मा सो ॥ ५ ॥
और घने द्रह में सुनि भाई, कमल घने लघु अति सुखदाई। तिन पे देव रहैं हितकारी, लक्ष्मी देवी के परिवारी ॥ ६ ॥
फिर शिखरी परवत पे भाई, कूट कहे एकादश ठाई। तिन पे देव रहै सुखकारी, सिद्ध कूट पेजिन थल भारी ॥ ७ ॥
ताको देव नमें थुति लाई, नभचर में बहुते गुणगाई। ताके फल बहु पुण्य उपावै, अनुक्रम तें जिनको पद पावै ॥ ८ ॥

तातें मैं भी मन वच काई, अष्ट द्रव्य शुध लेकर भाई। भावन ये पूजें जिन देवा, भो भो मिलैं फेर तुम सेवा ॥ ९ ॥

दोहा— ऐसे शिखरी गिरि परै, सिद्ध कूट पे जान। थान भले जिन देव को, ताहि जजों हित आन ॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल संबंधि सिद्ध कूट चैत्यालय जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ १० ॥ इति० ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

जंबू दीप तनों ऐरावत जानिये, क्षेतर महा मनोज्ञ मोक्षदा मानिये।
तहँ थानक जिन देव तने शोभैं सही, सो मैं जजों सुभाय भावना जुत ठही ॥

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप संबधि ऐरावत क्षेत्रस्थ जिन चैत्यालय जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप संबधि ऐरावत क्षेत्रस्थ जिन चैत्यालय जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप संबधि ऐरावत क्षेत्रस्थ जिन चैत्यालय जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निकरणम्।

छंद—जोगीरासा—गंगा सरिता को शुभ पानी, कनक कलश भरि लाऊं। ले अपने कर बहु हरषे चित, पूजन को उमगाऊं ॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों जल सेती, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन पावन चित कर, गंध धार सुखकारी। निरमल जल घसि के शुध कीनो, रतन पियाले धारी ॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों चंदन से, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल खंड बिना शुभ, मुक्ताफल से जानो। कनक रकेबी धार मनोहर पुन्य थकी मन मानो ॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जो जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों अक्षय सों, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ भले गंध धारी, नाना बरण सु भाई। इत्यादिक बहुते गुण धारक, घ्राण नयन सुखदाई ॥
ऐरावत क्षेतर थल माहीं, जो जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों फूलन सों, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

पटरस पूर मिलाय मनोहर, महती किरिया धारी। वांछित खाजा फीणी मोदक, ले आया सुखकारी ॥
ऐरावत चेतर के माहीं, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों शुभ चरु से, जय जय जय जिन राये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई तम हारी, ज्योति पुंज अधिकाई। कनक थाल भर लेकर अपने, करों आरती भाई ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों दीपक से, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

अगर कपूर मिलाय और सब, दशधा धूप मिलाऊं। अपने करतें अगनि माहिं सब खेऊं अति सुख पाऊं ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं जे जिन थान बताये। ते मैं पूजों शुद्ध धूपतें, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानों। इनको आदि भले फल लेके हिय में हर्ष समानो ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं, जेजिन थान बताये। ते सब पूजों शुभ फल लेके, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल लाई। इन आदिक शुभ द्रव्य लेयकर, अर्घकरों हितदाई ॥
ऐरावत चेतर थल माहीं, जे जिन थान बताये। ते सब मैं पूजों सु अर्घ ले, जय जय जय जिनराये ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद गीतिका—कर लेय वसु द्रव अरघ सुन्दर आरती सुखदायजी। फिर गाइये गुण जगत गुरुके, वचन मन लव लायजी ॥
शुभ क्षेत्र ऐरावत तने जिन, थानको मन लाव रे। मैं जजों अर्घ चढाय जय जय शब्द तें सुख पाव रे ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालस्थं जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—ऐरावत क्षेतरके माहिं, प्रथमकाल जो रचन थाहि। ता में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र प्रथमकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

ऐरावत में दूजो काल, होय पशु नर आदि विशाल। ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र द्वितीयकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

ऐरावत क्षेतर में जान, होय पशु नर उतपति मान। ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र तृतीयकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

ऐरावत क्षेतर में सही, कुलकर होवे शुभ की मही। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अत कुलकर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

ऐरावत क्षेतर के माहीं, चोथे काल पशु नर पाहिं।। या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों निरमल होय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र चतुर्थकाल सम्बन्धि नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र संबंधि वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा ॥

छंद—अडिल्ल—

प्रथम मेरु ऐरावत खेतर जानिये, वर्तमान चौवीस भये जिन मानिये।
बाल चन्द जिन आदि अन्त वीरसेनजी चौवीसों जिन थापि जजों सुख लेनजी ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद-गीतिका—नीर निरमल गंध जुत शुभ, हरष मन कर के सही। शुभ पद्म द्रह को लाय, ऐसो कनक झारी में सही ॥
पूज्य जिन चौवीस ऐरावत विषै जो हो रहे। ते हरो मेरे पाप मल सब आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन घसों शुभ बावनो मैं, नीर गंध मिलाय जी। भरि रतन झारी आप करले, हरष बहु विधि पायजी ॥
पूज्य जिन चौवीस ऐरावत विषै जो हो रहे। ते हरो मेरे पाप मल सब आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत अखंड सुगंध उज्वल, महा सुखदा जानिये । ले कनक थाल भराय सुन्दर, आप भव दधि भानिये ॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल नाना वरण धारक गंध जुत सब पाट हैं । ले माल जाकी महा सुन्दर, काम मद की दाट है ॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नैवेद्य पट रस पूर वांछित, तुरत कर में लाय जी । धर थाल सुन्दर आप कर ले, देव जिन गुण गायजी ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

ले रतन दीपक ध्वांत नाशक, ज्योति बहु परकाशिया । भर थाल कंचन आप करले, देव जिन गुण गाइया ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विधि गंध की कर, पीस के शुभ लाइयो । धरि अगनि भीतर आप कर तें, भक्ति जुत गुण गाइयो ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

लौंग पिस्ता और श्रीफल, खारका सुख दाय है । शुभ जान पुंगी फल बिदाम सु, और फल बहु लाय है ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

उदक चंदन पुष्प अक्षत, दीप धूप फला सही । करि अर्घ सुख दा आरती ले, दान उर की शुभ मही ।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत, विषै जो हो रहे । ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशित जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

तीन
लोक

छंद पद्धरि—क्षेतर ऐरावत माहि सोय, चौबीस जिनंद जो होय जोय। ता समै देव खग पूजि लाय, मैं अर्घ जजों इह भाव भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बंधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्ये अर्घ ॥

चौपई—बाल चन्द्र पहले जिन सोय, होय रहे ऐरावत जोय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि बालचन्द्र नामा प्रथम वर्तमान जिनाय अर्घं ॥ १ ॥

सुव्रत जिन ऐरावत मांय, होय रहे सब को सुख दाय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि सुव्रत नाम वर्तमान जिनाय अर्घं ॥ २ ॥

अगनिसेन जिन जी हो रहे, ऐरावत क्षेतर में भये। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि वर्तमान अगनि सेन जिनाय अर्घम् ॥ ३ ॥

ऐरावत क्षेतर में जोय, नंद सेन जिन हो रहे सोय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि वर्तमान नंदसेन जिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

श्रीदत नाम जिनेश्वर कहे, सो भी ऐरावत में थये। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि वर्तमान श्री दत्त जिनाय अर्घम् ॥ ५ ॥

ऐरावत खेतर में सार, जिन व्रत धर हो रहे सुधार। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि वर्तमान जिनव्रत जिनाय अर्घम् ॥ ॥ ६ ॥

सोमचन्द्र जिन जो हो रहे, ऐरावत क्षेतर में थहे। सुरखग पूजें थे तब आय, मैं अब जजों सु भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान सोमचन्द्र नाम जिनाय अर्घम् ॥ ७ ॥

धृत धीरज जिनवर ये भये, ऐरावत में कर्मन जये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि धृति धैर्य वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ ८ ॥

शतायुप जिनजी हो रहे, ऐरावत क्षेतर में रहे। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शतायुप वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ ९ ॥

शिवशतायु नाम भगवान, ऐरावत ह्वै रहे सुजान। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शिवशतायु वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ १० ॥

जिनवर श्रेयांश होय रहे, सो भी ऐरावत में भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि श्रेयांस जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ॥ ११ ॥

होय रहे अतिजल जिन जोय, ऐरावत क्षेतर में होय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्री ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान अतिजल जिनाय अर्घम् ॥ १२ ॥

सिंहसेन जिनवरजी होय, ते भी ऐरावत में सोय। सुर खग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान सिंहसेन जिनाय अर्घम् ॥ १३ ॥

जिन उपशान्त वरत है जान, ऐरावत खेतर के मान। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान उपशान्त जिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

गुप्तासन जिन भी हो रहे, क्षेत्र भले ऐरावत भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान गुप्तासन जिनाय अर्घम् ॥ १५ ॥

अन्त वीर्य जिन भी हो रहे, सो ऐरावत क्षेतर थहे। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान अन्तवीर्य जिनाय अर्घम् ॥ १६ ॥

स्वामी पार्श्व होय जिन रहे, ऐरावत क्षेतर में भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि पार्श्वजिनाय अर्घम् ॥ १७ ॥

जिन अतिध्यान होय सो रहे, सोभी ऐरावत में भये। सुरखग पूजे थे तब आय, मैं अब जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत सम्बन्धि अतिध्यान वर्तमान जिनाय अर्घम् ॥ १८ ॥

होय रहे मरुदेव जिनन्द, ऐरावत खेतर सुखकन्द। सुरखग पूजे थे तव आय, मैं अव जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्वन्धि वर्तमान मरुदेव जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १६ ॥

श्रीधर जिन हो रहे सुजान, ऐरावत खेतर में मान। सुरखग पूजे थे तव आय, मैं अव जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्वन्धि वर्तमान श्रीधर जिनाय अर्घम् ॥ २० ॥

श्याम कंठ नामा जिन सोय, होय रहे ऐरावत जोय। सुरखग पूजे थे तव आय, मैं अव जजों सुभावत भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्वन्धि वर्तमान श्यामकंठ जिनाय अर्घम् ॥ २१ ॥

अग्नि प्रभ जिनजी ह्वै रहे, ऐरावत क्षेतर में भये। सुरखग पूजेथे तव आय, मैं अव जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्वन्धि वर्तमान अग्निप्रभ जिनाय अर्घम् ॥ २२ ॥

अग्निदत्त जिन होके रहे, ऐरावत खेतर में रहे। सुरखग पूजे थे तव आय, मैं अव जजों सुभावन भाय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्वन्धि वर्तमान अग्निदत्त जिनाय अर्घम् ॥ २३ ॥

वीर सेन जिन जग पति नीत, सो भी कर्म अरी को जीत। सुर खग पूजे थे तव आय, मैं अव जजों सु भावन भाय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्वधि वर्तमान वीर सेन जिनाय अर्घम् ॥ २५ ॥

छंद अडिल्ल—

वाल चन्द्र जिन आदि भये वृष ईशजी, वीर सेन परयंत हुए चौवीस जी।
इनके पूजों पाय सु अरघ चढाय के, ता फल शिव सुर होय पाप क्षय लाय के ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्वधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घम् ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—

ऐरावत क्षेतर विषै, वर्तमान चौवीस। वाल चन्द्र आदिक प्रभू, पूजों विसवा वीस ॥ १ ॥

॥ छद वेसरी ॥

वाल चन्द्र जिन ने शिव पाई, ता दिन सुर गन वृष्टि कराई। सुव्रत देव सिद्ध पद पायो, जव हरि निज मुख जय जय गायो ॥२॥

अगनि सेन जिन जहं विचराई, तब बहु जीवन ने शिव पाई। नंद सेन जिन जहं वच लागे, तब ही पाप चौर तहं भागे ॥३॥
श्री दत देव वरी शिव नारी, तब परजा हरषी सब सारी। जिन व्रत धरि तब केवल पायो, तब हरि निज मुख जैजै गायो ॥४॥
सोमचन्द्र जिन तब विचराये, ता प्रसाद भवि पुण्य कमाये। धृति धीरज जिनको तिन सेयो, तानै आप पार गुण वेयो ॥ ५ ॥
शत आयुप जिन सेव कराई, ता जीवन ने शिव लव लाई। शिव शतायु जिन गुण तिन गायो, सो जिय निज भव सफल करायो ॥६॥
श्री श्रेयांस शिव वर ने पाये, तब बहु मुनि संग जाती लाये। तब श्रुत जल जिन मुनि पद पायो, तबही पंचाश्चर्य करायो ॥७॥
सिहसेन जिन तप तब जान्यो, सकल करम तब निज क्षय मान्यो। जिन उपशान्त स्वामि चित कीनो, छांडि जगत मग शिवरस भीनो ।८।
गुप्तासन जब केवल पायो, तब ही लोकालोक लखायो। अनंतवीर्य अपने घर ओरे, तब जग जीव शरन बहु दौरे ॥९॥
पार्श्व स्वामि जिन जन हित दाई, विन कारण बंधू लख भाई। जिन अति ध्यान शुक्ल असि लीनी, कर्म काठ दहिकर रज कीनी १०
जिन मरु देव मरण भय छारयो, क्रोध मान छल को मद डारयो। श्री धर निज अटूट धन पायो, हरि सुर खग लखि शीश नवायो
श्याम कंठ जिन शरणै आयो, सो जिव शिव के देव कहायो। अगनि प्रभ जिन के गुण गासी, अब भी सो जिय वांछित पासी १२
अग्नि दत्त जिन कर्म खिपायो, घने जीव शिव राह लगायो। वीर सेन जिन अघ अरि जीते, तब ही कर्म तने रस वीते ॥१३॥
ऐसे जिन चौबीस व्यतीता, ऐरावत खेतर अघ जीता। अब यहां जो भवि तिन गुण गावै, सो भी जिन सो ही फल पावै ॥१४॥
दोहा— वर्ते जिन चौबीस ते, ऐरावत थल माहिं। जजों अरघ जयमाल भनि, मन वच टेक लगाहिं ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ इति०॥

॥ ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति पूजा ॥

छंद गीतिका—तहं देव खग नित पूज ठानै, दरव वसु कर लायजी। कर द्रव्य सब विधि जजै भाव सु, जिन तने गुण गायजी।
जिन क्षेत्र ऐरावत सु माहीं, वीस चौ बीते सही। ते जजों मन वच काय शुभतें, थापि के इसही मही ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि अतीत चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

॥ चाल जोगीरासा ॥

निरमल पानी शुभ कर आनी, उज्वल गंध सुभावो। कनक झारिका थाल मनोहर, पूजन को कर चावो ॥
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चौवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

चंदन बावन पावन कारी, निरमल नीर घसाई। धार कनक प्याले शुभ चित कह, अपने कर ले भाई।
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चौवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र संबधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल मुक्ता फल सम, खंड विना ले आयो। थाल मनोहर भर के शुभ चित, अपने कर में लायो।
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चौवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुगंध मनोज्ञ बनाके, नाना विधि के जानो। माल तिन्हों की लेकर अपने, कंचन थान सु आनो।
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चोवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हूँ, तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पम ॥ ४ ॥

पट रस पूर बनाय तुरत ही, खाजे फेनी भाई। मोदक आदि मनोज्ञ लेयकर, कनक पात्र सुखदाई ॥
जम्बू दीप तने ऐरावत, जिन चोवीस व्यतीते। ते हू मन वच काय जजत हैं, तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय तमहर सुन्दर, ज्योति करा हितदाई। कनक थाल भरि लेय आरती, अपने कर उमगाई ॥
जंबूदीप तने ऐरावत जिन चौवीस व्यतीते। तेहू मन वच काय जजत हैं तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

चंदन अगर कपूर आदिदे, दशधा गंध मिलाई। तिनकी सुखदा धूप बनाऊं, खेऊं चित हरषाई ॥

जंबूद्वीप तने ऐरावत जिन चौबीस व्यतीते । तेहू मन वच काय जजत हैं तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग विदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानो । इन आदिक बहुलेय मनोहर, फल अति ही सुखदानो ॥
जंबू द्वीप तने ऐरावत जिन चौबीस व्यतीते । तेहू मन वच जजत काय हैं तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पहूप ले, चरु दीपक तम हारा । धूप फला वसु लाय सभी को अर्घ करों सुखकारा ॥
जंबू द्वीप तने ऐरावत जिन चौबीस व्यतीते । तेहू मन वच जजत काय हैं तिनके अघ अरि जीते ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

छंद पद्धरि—वसु द्रव्यसु अर्घ बनाय सोय, अपने करले महा हर्ष जोय ॥ ऐरावत जिन चौबीस सार, होगयें जजों ते हर्षकार ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धिअतीत जिन चौबीस जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

चौपई—पंचरूप जिनवर भगवान, मानै सुरगण तिनकी आन । होयगये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि पचरूप नाम अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

जिनधर नामा जिनवर सोय, जजैं भव्य तिनके अघ खोय । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि जिनधरनामा अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

संप्रतीक नामा जिन सोय, सुरनर हू पूजैं मद खोय । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि सम्प्रतीकनामा अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

उर्जयन्त जिनवर भगवान, लोकालोक वस्तु के जान । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि उर्जयन्त नामा अतीत जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

अधिनायक जिनजीको नाम, जजे होय मंगल शुभ काम । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अधिनायकनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

अभिनन्दन जिन जग आधार, मोको करो भवोदधि पार । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अभिनंदननाम अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

तोन
ोक

जिन रतनेश दया मो लेहु, भवसागरतैं पार करेहु। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि रतनेश नामा अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

रामेश्वर जिन शिव भरतार, भव्यन को मंगल के धार। होय गये ऐरावत थान, जिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि रामेश्वर नामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

अंगोछत जिन जग आधार, मोकों करो भवोदधि पार। होय गये ऐरावत थान, जिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अंगोछत नामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

नाम विनाश कह्यो जिन तनों, सो प्रभु मेरे सब अघ हनों। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि विनाशक नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

नाम अरोष कहे भगवान, देह सदा थल शिव सुरथान। होय गये ऐरावत थान, तिद पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अरोषकनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

नाम सुबुद्धि कहे जिनराय। भो भो भक्तन को सुखदाय। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि सुबुद्धिनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नाम प्रदत्त कहे जिन सोय। भो भो मांहि शरण मो होय। होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि प्रदत्तनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

नाम कुमार देव जिन सोय, ज्ञानानन्द के दाता होय। होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि कुमारनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

सर्व शैलवर जिनवर सोय, मंगल करता 'सबके होय। होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि सर्वशैल नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

परभंजन जिन सब सुखदाय, अघ हर भव्यन को हित लाय। होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि प्रभजननामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

है सौभाग देव जिनराय, नाशें कर्म आठ सुख पाय । होय गये ऐरावत थान तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि सौभाग्यनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

दिनकर देव जिनेश्वर सही, तार तार जिन भव वन मही । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रसम्बन्धि दिनकर नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

व्रतविंद् नामदेव जिन सोय, बहुते अधम तने अघ खोय । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि व्रतविंदनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

नामदेव सिद्धकर सार, कीने दीन घने भवपार । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजौं थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धकर अतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

ज्ञान शरीर देव भगवान, ज्ञानदेह पूजै भविवान । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि ज्ञान शरीर नामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

कलपद्रुम जिन बांछित दाय, सेवत ही सब पाप नशाय । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि कल्पद्रुम नामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

तीर्थ फलेश देव जिन सोय, देवै हैं सब अघ मल खोय । होय गये ऐरावत थान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि तीर्थफलेशनामातीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

चरम प्रभ जिन सब सुखकार, तारन दुख शरीरते पार । होय गये ऐरावत थान, तिनपद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि चरमप्रभनामाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

सोरठा— येही जिन चौबीस, ऐरावत थल होगये । ते पूजों जग ईश, जय जय जिन मंगल करन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि पचरूपादि चरम प्रभजिनपर्यन्त चौबीस जिनाऽतीत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— ऐरावत चेतर विषैं, होय गये जिन सोय । कहूँ माल तिन गुनन की, ते मो उरमें होय ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

पंच रूप जिन सब सुखदाई, पंचमगति भक्तन थकसाई । जिनधर देव धर्म आकारो, औरन कूं दे धर्म सुमारो ॥ २ ॥
संप्रतीक तीजे जिन जानो, भये प्रतीत देव शिवथानो । उरजयन्त सब उरकी जानों, कहो कहां मेरे अघ हानो ॥ ३ ॥
अधि ज्ञायक जिन सब विध जानो,अधिक संपदा श्रुति ते मानो । अभिनन्दन जिनको अति सेवै,सो जिय सदा कालसुख लेवै॥४॥
रत्नसेन जिन सप्तम देवा, गुन रतनन के दायक मेवा । अष्टम रामेश्वर जिन जानों, रमत सकल वस्तुनमें मानों ॥५॥
देव अंगोछत नव-ये होई, तिनमें अपनी अघरज खोई । देव विनाशक नामा भाई, तिन श्रुति आठों कर्म नशाई ॥ ६ ॥
देव अरोपक ग्यारम होई, करे कर्म चय क्रोध न कोई । नाम सुबुद्धि भली बुध देवे, ताके नसे पाप जिन सेवै ॥ ७ ॥
देव प्रदत्त पार भव ठानै, सेवक को नाना सुख आनै । है कुमार जिन कारज कारी, तिनने रिपुहर कुमति निवारी ॥ ८ ॥
सर्व शैल जिन अति बलधारी, कर्म शैल को वज्र संवारी । परभंजन जिन सब हित जानो, पर जीवन के पाप सुभानो ॥ ९ ॥
जिन सौभाग्य भागते पावे, भाग्य उदैते शरणै आवै । दिनकर जिन मिथ्यातमहारी, सूरज सम महिमा तिन धारी ॥ १० ॥
देवव्रत विद सब सुख वेवा, वेग वेग दे अपनी सेवा । जिन सिधकर सिध थान सिधाये, दे शिव ताको शरणै आये ॥ ११ ॥
ज्ञान शरीर देव भगवन्ता, ज्ञान देहि मोको भव हन्ता । कल्पद्रुम जिन वांछित दाई, सुरतरुसी तिन रीति धराई ॥ १२ ॥
जिन तीरथ फलेश सुख खानी, पूजैं फल तीरथ सो दानी । चरमप्रभ जिन सब अघ हारी, चरम सदैव संपदा धारी ॥ १३ ॥
ये जिन बीस चार भव हंता, ऐरावत खेतर में संता । होय गये भविकर भव पारा, ते मोकों भी होय सहारा ॥ १४ ॥

सोरठा— ये चौबीस जिनेश, माल कही तिन गुनन की । सो हि धर्म के भेप, शरण होय मोहि सर्वदा ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिन जयमाल पूर्णार्घं ॥ १५ ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत पूजा ॥

छन्द अडिल्ल— ऐरावत खेतर में जिन अब होय जी, बीस च्यार भगवान कर्म मल खोय जी ।
सिद्धारथ जिन आदि अगनिदतलों सही, जजों भक्ति धर थापि यहां की शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि अनागत चतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि अनागत चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि अनागतं चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट सन्निधिकरण।

॥ छंद पद्धरि ॥

ले निरमल नीर उदार होय, धरि कनक पात्र निजपाप धोय। ऐरावत क्षेतर मांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

घसि बावन चन्दन नीर लाय, धरि कनक भारिका हरष भाय। ऐरावत क्षेतर मांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय।
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अक्षत शुभ मुक्ताफल सुजेम। उज्ज्वल अखंड ले धार येम। ऐरावत खेतर माँहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

ले फूल मनोहर गंध धार, बहु वरन और आकार सार। ऐरावत क्षेतर-मांहि सोय। जिन जजों अनागत पाप खोय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

पट् रस नैवेद मिलाय ठान, खाजा फेनी मोदक जुआन। ऐरावत क्षेतर मांहि सोय, जिन जजौं अनागत पाप खोय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक तमहर मणिमय समान, धरिं हेमपात्र में भक्ति आन। ऐरावत क्षेतर माहिं सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

करि अगर आदि दश धूप गंध, जारों अगनी भवहरन फंद। ऐरावत क्षेतरमांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसबधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल बिदाम आदिक अपार, बहुजात तने फल लेय सार। ऐरावत क्षेतरमांहि सोय, जिन जजों अनागत पाप खोय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत फूल लाय, चरु दीप धूप फल अरघ भाय। ऐरावत क्षेतर माहिं सोय, जिन जजौं अनागत पाप खोय ॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६ ॥

गीताछंद—दीप जम्बू उतर दिशि में क्षेत्र ऐरावत कह्यो। तहां के अनागत जानि जिनवर, बीस चव तिन अघ दह्यो।
तिनके सुचरणा अरघ ठानों, पाप नाशन कारनै। ते होउ मोहि सहाय जिनवर कर्ममलकूं टारनै॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसंबधि अनागत चतुर्विंशति जिन चरणाग्रे महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—जल चंदन सब अरघ मिलाय, पूजन आयो हरष उपाय। ऐरावत क्षेतरमें सोय, सिद्धारथ जिन पूजों सोय॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागतसिद्धारथनामा जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

विमलनाथ जिनवर है सोय, आगामी होंगे अघ खोय। ऐरावत क्षेतर के थान, ते मैं पूजौं अर्घ जु आन॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अनागत विमलनाथ नामा जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

जिन जय घोष सोष अघढाला, तुम दरशन शुति तें अघ टाला। आगामी अबहोंगे सही, तिन पद जजों होय शिवमही॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि अनागत जयघोष नाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

नंदसेन जिन सब जगईश, आगामी होंगे जगदीश। ऐरावत क्षेतर के मांहि, ते मैं पूजौं अर्घ चढाहि॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बंधि अनागत नन्दसेन नाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

स्वर्गमंगल श्री जिनराय, अब होंगे ऐरावत ठाहिं। तिनपद वसु द्रव अर्घ संजोय, पूजा करैं हरष चित होय॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत स्वर्गमंगलनाम जिनेभ्यो अर्घ ॥ ५ ॥

विद्याधर जिम जग आधार, अब होंगे ऐरावत सार। तिनपद वसु द्रव्य अर्घ मिलाय, पूजा करों हरष मन लाय॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत विद्याधरनाम वर्तमान जिनाय अर्घ ॥ ६ ॥

जिन निर्वाण देव है सोय, जानि अनागत तीरथ होय। ऐरावत क्षेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बधि अनागत निर्वाणनाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

धर्मध्वज नामा जिन देव, आगमकाल होहिंगे देव। ऐरावत खेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि अनागत धर्मध्वजनाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

सिद्धसेन जिनवर को नाम, होय अनागत समय सु धाम। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि अनागत सिद्धसेननाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

महासेन जिनजी मन लाय, होय अनागत तीरथ भाय। ऐरावत चेतर के माहि, मैं पूजों वसु अर्घ सु लाहि ॥

ॐ ह्री ऐरावत क्षेत्र सबधि अनागत महासेन जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ॥ १० ॥

रवि शशि नामदेव जिन सोय, ये भी जान अनागत होय। ऐरावत चेतर में जान, मैं पूजों अर्घ सु आन ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत रविशशि नाम जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

सत्यसेन नामा भगवान, होय अनागत अति सुखमान। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि अनागत सत्यसेन नामा जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

जिन श्री जानि चंद्र जगतात, होय अनागत सब सुखदात। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि श्री चंद्र नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घ ॥ १३ ॥

मही चंद्र देवीपति देव, आगामी होंगे सुर सेव। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबन्धि महीचद्र नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घ ॥ १४ ॥

श्रुतांजन जिन जग आधार, होय अनागत जगपति सार। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि श्रुताजन नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घ ॥ १५ ॥

देव सेन नामा प्रभु सोय, आगामी जु काल में होय। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि देवसेन नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

सुव्रत देव देव पद आय, सो भी होय अनागत आय। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि सुव्रत नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घ ॥ १७ ॥

देव सुपार्श्व जगत हितकार, अगले काल होय शिवसार। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि सुपार्श्व नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

है जिनेन्द्र जिनवर को नाम, होय अनागत काल सुठान। ऐरावत चेतर में जानि, मैं पूजों वसु अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिनेन्द्र नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घम् । १६ ॥

देव सु कौशल करुणा निधि, अगले काल होय शिव सिधी। ऐरावत चेतर में जानि, जो मैं पूजों अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि सुकौशल नाम अनागत जिनेभ्यो अर्घम् । २० ॥

देव अनंत नंत सुख दाय, अगले काल होहिगे आय। ऐरावत चेतर में जानि, जो मैं पूजों अर्घ सु आन।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि अनत नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

देव विमल मल कर्म जु खोय, ते भी आवत समये होय। एेरावत चेतर में जानि, जो मैं पूजों अर्घ सु आन।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि विमल नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

अमृत सेन देव जिन सही, होय काल अगले सुख मही। एेरावत चेतर में जान, जो मैं पूजों अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबंधि अमृत सेन नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

देव अगनिदत जिन शिव नाथ, आगम काल होय शिव साथ। ऐरावत चेतर मैं जान, जो मैं पूजों अर्घ सु आनि।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबधि अगनिदत्त नामा अनागत जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

छंद अडिल्ल—

सिद्धारथ जिन आदि अगनि दत्त लों सही। वीस चार जिन देव जगत तीरथ मही।
ऐरावत चेतर में अव जिन होय हैं, तिनके पद मैं अर्घ जजों मल खोय है ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सबधि अनागत काल सिद्धार्थ आदि अगनि दत्त पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—

ऐरावत चेतर विषै, आगम काल सु आय। उपजेंगे जिन वीस चव, धर्म जिहाज स्वभाव।

॥ छन्द पद्धरि ॥

पहले सिद्धारथ होय आप, ते जजों सिद्ध हो शुद्ध थाय। जिन विमल नाम दूजे सु जान, जे करों विमल सब कर्म हान ॥२॥
जय घोप नाम जिन देव सोय, जय करें भक्त के पाप धोय। जिन नंद सेन चौथे बखान, जग जिय आनंद दे सकल जान ॥३॥

मंगल स्वर्ग पंचमहि जोय, सेवक के नित प्रति कुशल होय। पष्ठम विद्याधर जगत तार, ते देव आपको रूप सार ॥ ४ ॥
निर्वाण देव निर्वाण होय, जो जजै तासु निर्वाण होय। जिन धर्म ध्वज वृषकेतु जान, सेवै धर्म ध्वज होय आन ॥ ५ ॥

। छंद बेसरी ॥

सिद्ध सेन सिद्धी कर काजा, जाय होंहिगे त्रिभुवन राजा। महासेन जिन अति बल धारी, महा सैन्य कर्मन की जारी ॥ ६ ॥
रवि शशि देव तने परकाशा, होवेगा मिथ्यातम नाशा। सत्यसेन द्वादशमें जानों, तिनके उदै असत को हानो ॥ ७ ॥
जिन श्री चंद्र चंद सम मानो, भव्य उदधि को चन्द्र समानो। महीचंद्र चौधम जिन देवा, तिनकी रवि शशि करि है सेवा ॥८॥
श्रुतांजन पंद्रम जिन होई, श्रुत अंजन के दाता सोई। देव सेन पोडश में देवा, जीती कर्म सैन्य स्वयमेवा ॥ ९ ॥
देव सुव्रत सतरहमें जानों, देय वरत करि है अघ हानो। देव जिनेन्द्र नाम भगवाना, पूजेंगे हरि तजि तजि माना ॥ १० ॥
देव सुपार्श्व पास जो आवे, लोहे से पारस बन जावे। देव सुकौशल बीसम होई, थिति सब कर्मन की सब खोई ॥ ११ ॥
देव अनंत नंत सुख धारी, भक्तन को सच्चे गुण कारी। विमल देव है बीसम जानों, विमल करै सेवक को मानों ॥ १२ ॥
अमृत सेन देव जिन राजा, कर्म दाह कों अमृत साजा। अंतिम अगनि दत्त जिनराई, कर्म दहन को अगनि कहाई ॥ १३ ॥
जो ये जिन चौबीस सु गाये, आगम काल होंयगे आये। ऐरावत छेतर में भाई, तिन पद हमने अर्घ चढाई ॥ १४ ॥

दोहा— आगामी जिन होहिंगे, ऐरावत थल सोय। तिनपद पूजों "टेक" सजि। भव भव शरनों होय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घं ॥ १५ ॥ इति० ॥

॥ ऐरावत क्षेत्र संबंधि गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—ऐरावत आरज खण्ड मांहि, नगर अयोध्या है सुभ ठाहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि अयोध्या नगर उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

ऐरावत के आरज थान, है उपसागर जल की खान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि उपसमुद्र गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

ऐरावत छेतर के माहिं, देव रहै मगधादिक ठांहि। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र संबंधि मगधादिक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

ऐरावत चेतर में जान, खंड मलेछ धर्म विन मान। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं एरावत चेत्र संबधि म्लेछखंड गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

ऐरावत चेतर जो सही, वृषभाचल गिर तहं शुभ मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्र सम्बन्धि वृषभाचल गिर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५ ॥

ऐरावत इस चेत्र सु सार, विजयारध गिर भू में सार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्र सम्बन्धि विजयारध पर्वत गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

याही विजयारध की सही, जानों दक्षिण दिश की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्रस्य विजयार्द्धस्य दक्षिण श्रेणी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

याही खग गिर दक्षिण सारा, नगर कहै उत्तम सुखकारा। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध दक्षिणश्रेणीनगरी उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८ ॥

ऐरावत में खगगिर मान, उत्तरश्रेणी उत्तम जान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धस्य उत्तर श्रेणी उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो ॥ ९ ॥

खग गिरि विजयारध की सही, उत्तरदिश नगरी शुभ मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पदपूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध उत्तरश्रेणी नगरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

विजयारध ऐराव तशीश, सिद्धकूट पे जिन थल दीश। या में बिंब विराजै सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्र विजयार्द्धसंबंधि सिद्धकूट जिन चैत्यालस्य जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

ऐरावत विजयारध मांहि, सिद्धकूट शुभ कूट कहांहि। या में बिंब विराजे सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत चेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धस्य सिद्धकूट गतिच्छेदक जिने... अर्घम् ॥ १२ ॥

ऐरावत खग गिरपै कूट, उत्तरार्द्ध ऐरावत कूट। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतचेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध उत्तरार्द्धस्य ऐरावतनामाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १३ ॥

ऐरावत विजयारध जानि, तामिश्र गुह तहां वखान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध उपरितामिश्रकूटगतिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

ऐरावत विजयारध मांहि, कूटमणिभद्रा तहँ मांहि । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धउपरि मणिभद्रकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

ऐरावत के खग चलसार, कूट तहां विजयार्द्ध कुमार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धउपरि विजयार्द्ध कुमार नामाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

विजयारध ऐरावत जान. पूरणभद्र कूट तहँ मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध सम्बन्धि पूर्णभद्रकूट गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

ऐरावत खग को गिर जेय, खण्ड प्रपात कूट तहां हेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध सम्बन्धि खंडप्रपातकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

ऐरावत विजयारध जानि, दक्षिण ऐरावत शुभ मानि । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्धसम्बन्धि दक्षिण ऐरावतकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

ऐरावत विजयारध जेय, तहां वैश्रवण कूट गिणेय । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्ध सम्बन्धि वैश्रवणकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

ऐरावत विजयारध कूट, तिनपै देव बसै दुखछूट । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

छंद अडिल्ल— ऐरावत विजयारध सिद्ध सु थान है । गये कर्म हरि मोक्ष तहां ते ठान है ॥
तिन थानक की रज मो मस्तक लाय हों । अर्घ लेय सो जजों सिद्धथल भाय हों ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

चौपाई—जम्बूदीप तनौं परकार, गोलाकार तुंग विसतार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप कोट सम्बन्धि उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

जम्बूद्वीप कोटका जान, विजयारध पूरव दिशमान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप विजयनामा पूर्वद्वार सम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

सो यह विजयनाम सुद्वार, ताके रक्षक देव सुसार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप विजयद्वार रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

कोट द्वीप जंबू को सार, ताकौ वैजयन्त शुभ द्वार । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप संबधि कोट वैजयतनामा दक्षिण द्वार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

वैजयंत दक्षिण को द्वार, ताके रक्षक देव जु धार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप संबधि वैजयंत द्वार वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

जंबूद्वीप कोटका सही, नाम जयंत द्वार शुभ मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं जबू द्वीप संबधि जयंत नाम पश्चिम द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नाम जयंत नाम रखपाल, देव रहै नाना गुण माल । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप संबंधि जयंत द्वार रक्षपाल देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

जंबू दीप कोट का कह्या, द्वार नाम अपराजित रह्या । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं जबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित नाम उत्तर कोट द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

अपराजित द्वार के सही, रक्षक देव जान गुण मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ही जबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित द्वार रक्षक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

लवणोदधि जल पूर भराय, नाना जीव जंतु तहं पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं लवणोदधि संबंधि जीव जंतु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

लवणोदधि में जलचर जीव, मच्छादिक बहु जान सदीव । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं लवणोदधि संबंधि जलचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा। ते जजों जल तें भाव शुध हो, नाश जनम जरा करा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

घसि अगर चंदन नीर शुभतें, गंध दायक शुभ मई। धरि कनक प्याले आरती ले, अरघ देकर थुति चई।
जे धातकी खण्ड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा। ते जजों चंदन आपने कर नाश भव तप की करा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

अक्षत अखंडित महा उज्वल, गंधजुत मुक्ता समा, ले आपने कर धालि भाजन, भक्ति जुत शोभापमा।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघहरा, ते जजों मन वच काय अक्षत, होय अक्षत पद खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

शुचि फूल सुन्दरकल्पद्रुमके, गंध जुत शोभा मई, तिन वरण नानाभांति ऐसे, लेय अपने कर सई।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा। ते जजों मन वच काय फूलन, काम मद तिन क्षय करा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य खाजा सुभग मोदक, और फीणी जानिये, इन आदि पट रस पूर व्यंजन, आप करले आनिये।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय चरुले, भूख नाशन को खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रतन दीपक हार तम को, सूर सम परकाशिया, भरि कनक थाली आप करले, सकल अघ जर नाशिया।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिन के अघ हरा। ते जजों मन वच काय दीपक, मोह तम जारन खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विधि मेल गंध सु, अगर आदिक सारजी, ते दहों अगनी माहिं करतें, हरष बहु मन धारजी।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय धूप सु, अष्ट अरि जारन खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंडसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

जम्बूद्वीप कोटका जान, विजयारध पूरव दिशमान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप विजयनामा पूर्वद्वार सम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

सो यह विजयनाम सुद्वार, ताके रक्षक देव सुसार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप विजयद्वार रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

कोट द्वीप जंबू को सार, ताकौ वैजयन्त शुभ द्वार। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप मवधि कोट वैजयंतनामा दक्षिण द्वार गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

वैजयंत दक्षिण को द्वार, ताके रक्षक देव जु धार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप सबंधि वैजयंत द्वार वासो देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

जंबूद्वीप कोटका सही, नाम जयंत द्वार शुभ मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जबू द्वीप संबंधि जयंत नाम पश्चिम द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नाम जयंत नाम रखपाल, देव रहै नाना गुण माल। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप संबधि जयंत द्वार रक्षपाल देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

जंबू दीप कोट का कहा, द्वार नाम अपराजित रहा। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित नाम उत्तर कोट द्वार गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

अपराजित द्वार के सही, रक्षक देव जान गुण मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्री जबू द्वीप सम्बन्धि अपराजित द्वार रक्षक देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

लवणोदधि जल पूर भराय, नाना जीव जंतु तहं पाय। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं लवणोदधि संयंधि जीव जतु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

लवणोदधि में जलचर जीव, मच्छादिक बहु जान सदीव। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं लवणोदधि संबंधि जलचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

लवणोदधि मधि जल के सार, पाताला उत्कृष्टे धार । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं लवणोदधि सवधि उत्कृष्ट पाताल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

खारोदधि पहले दधि माहिं, मध्यम वडवानल के ठाहिं । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्री लवणोदधि सवधि मध्यम पाताल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

जंबूद्वीप सु गिरि दधि जान, ता में जघन पताला जान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं लवणोदधि जघन्य पाताला गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

चाल जोगीरासा—मेरु कुलाचल क्षेतर नंदी, कुंड कूट गिरि जानो । विजयारध वृषभाचल नगरी, अरु वक्षार प्रमानो ।
वन सुर सागर जंबू द्वीप में रचना है इत्यादि । इन में उतपति छेद भये शिव, जय जय जय जिन आदि ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप लवणोदधि रचना सम्बन्धि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— जंबु द्वीप जिन गेह जे, जजों अष्ट विधि सोय । कहों माल दधि द्वीप की, रचना जैसी होय ॥ १ ॥

चौपई—जंबू द्वीप विपै गिरि जान, तीन सैंकडा ग्यारह मान । तितने ही तिन दोल्यों सही, वेदी मणि मय है शुभ मही ॥ २ ॥
कुंड विपै वेदी जुत सोय, यह छब्बीस कहे सब जोय । तितनी मणि शुभ वेदी फिरी, इन द्रह में नंदी अनुसरी ॥ ३ ॥
इन नंदी के दो तट जान, वेदी मणि मय शोभित खान । अब इनको सुण भिन भिन भेद, समझे मिटै भरम को खेद ।४।
जान कुलाचल पट इक मेर, जिमक नाम गिरि चार सु हेर । कंचन गिरि द्वय सौ मन लाय, दिग्गज नामक आठ बताय ।५।
पोडश जानो गिरि वक्षार, चव गज दंता सब मन हार । गिरि वैताड तीस चव जान, वृषभाचल चवतीस सु आन ॥ ६ ॥
पर्वत च्यार नाभि गिरि सार, सब गिरि मिल त्रय शत अर ग्यार । अब सुनि कुंडनि की शुभ कथा, समझे ज्ञान वान जिन यथा
सीता आदि नदी तहां पडै, चौदह कुंड तिसी थल अडै । इन में गिरि गिरि पै सुर थान, सुर थल पै जिन बिंब बखान ॥८॥
ते सुर खग करि पूजत सही, मैं इहाँ पूजों भावन मही । बारह कुंड विभंगा तने, जान विदेह क्षेत्र में बने ॥ ९ ॥
और विदेह क्षेत्र में जोय, गंगा सम नंदी है सोय । चौसठ कुंड कहे ते सार, तहं तें नंदी निकसै भार ॥ १० ॥

ये सब कुंड कहे मिलवाय, गिनती निव्वे जानो भाय । अब सुनि द्रह छत्तीस सो सही, जान कुलाचल पे पट कही ॥ ११ ॥
सीता नंदी में दश जोय, दश सीतोदा मांहि सु होय । ये सब द्रह छत्तीस लखि सार, अब सुनि नदी नवे परिवार ॥ १२ ॥
गंगा सिंधु सु रक्ता जान, रक्तोदा मिल वच मन आन । छप्पन सहस नदी जल मई, है परिवार इन्हीं का सई ॥ १३ ॥
रोहित रोहितास मन लाय, सुवरन रूप्यकुला हित दाय । बारह सहस लाख इक जोय, सरिता यह परिवार सु होय ॥ १४ ॥
हरि हरकान्ता नारी सोय, नरकान्ता दिक वच मन होय । इन मिच नंदी को परिवार, दोय लाख चौबीस हजार ॥ १५ ॥
सीता औ सीतोदा जान, इमि परिवार नदी सुन कान । एक लाख अड़तीस हजार, और सुनो आगे विसतार ॥ १६ ॥
चेत्र विदेह विभंगा सार, बारह नदी बहुत जल धार । तिन परिवार सुनो दे कान, सहस बतीस लाख त्रय मान ॥ १७ ॥
चेत्र विदेह नदी मन लाय, चौसठ गंगा सम अधिकाय । तिन परिवार सुनों मन धार, आठ लाख छिनवै हज्जार ॥ १८ ॥
सब जोड़े परिहार सु होय, निव्वे मूल नदी सब कोय । सतरह लख बाणव हज्जार, ऊपर नव्वे अधिके सार ॥ १९ ॥
जंबू द्वीप विषै सब जोय, नंदी द्रह गिरि आदिक सोय । रचना और घनी है सही, तिन गति छेद जजों सुख मही ॥ २० ॥
जंबू द्वीप कोट तुंग जानि, जोजन आठ कह्या जिन बानि । चौथे बारह जोजन हेठ, ऊपर जोजन एक समेट ॥ २१ ॥
धरती माहिं नीव दो कोश, सो तो वज्र मई सब ठोस । और कोट सब बहु मणि मई, चव दरवाजे शोभा सई ॥ २२ ॥
पदम वेदिका गढ पे जान, कनक मई शोभा सुख दान । दोय कोश ऊंची मन लाय, धनुष पांचसैं चौंडी थाय ॥ २३ ॥
जान कंगुरे पंकति इसी, मानो ज्योतिष माला तिसी । वैडूरज मणि के सब कूट, वेदी पार्श्व दोऊ वन जूट ॥ २४ ॥
दोय कोश ऊंचे मन लाय, चौंडे धनुष पांच सै भाय । ऐसे जान कंगुरे सार, वन की रचना अति सुखकार ॥ २५ ॥
ता वन कनक शिला शुभ थापि, मन्दिर तुंग रतन मय थापि । तिन मन्दिर में व्यंतर देव, रहे महा पुन्य फल लेव ॥ २६ ॥
दरवाजन के हैं चव नाम, विजय वैजयंत जयंत सु ठाम । अपराजित चौथो मन लाय, इन में सुर के महल बताय ॥ २७ ॥
तिन द्वारन पे है शुभ मही, देवन की शुभ नगरी कही । बारह हजार जोजन विस्तार, चौंडी अर्द्ध जान हितकार ॥ २८ ॥
चव ही द्वारन पे पुर जान, रतन मई रचना अधिकान । तिनपे विजय विजयंत जयंत, अपराजित ये देव बसंत ॥ २९ ॥
इन आदिक रचना बहु जान, इन गति छेद जजों शिव दान । अब सुन लवणोदधि की कथा, जिन आगम में कहि है यथा ॥
लवणोदधि को वलय सु व्यास, दोय लाख जोजन जिन भास । मध्य विषै ऊंडो मन लाय, जोजन सोलह सहस बताय ।३१

दोऊ तट अनुक्रम घट वाय, तीर विषै तुच्छ जल पाय । सागर मधि दिश विदिशा जान, पाताले जानो जल खान ॥ ३२ ॥
चव दिश चव पाताले जोय, सो तो लख लख जोजन होय । चवदिशा को जानो सही, ते दश जोजन सहस जु कही ।३४।
इनके अन्तर आठ हजार, सहस और पाताले सार । ये सव एक सहस जोजना, ऊंचे जान महा शुभ मना ॥ ३४ ॥
ये सव हैं मिरदंगाकार, इन मे तीन भाग हैं सार । भाग नीचले पवन सु जोय, ऊपर भाग कह्यो जल सोय ॥ ३५ ॥
मध्य भाग में जुग ही जान, जल अरु पवन मिश्रिता मान । जल जब वधै पवन तब घटै, पवन वधै तब ही जल घटै ॥३६॥
इन करि जल घटि वढि है सोय, शुक्ल कृष्ण पख में अवलोय । ग्यारह सहस जघन जल जान, उत्कृष्ट सोलह सहस बखान ॥
मध्य भाग जल ऊंडो सोय, जे तो या विधि भाख्यो जोय । जोजन पांच कृष्ण पख घटै, सुकल पक्ष इतनो वधि मिटै ।३८॥
पातालन दो ओर सुजान, परवत हैं सब के मन आन । ते गिरि जल में ऊंचे सही, तिन पे देव रहैं शुभ मही ॥ ३९ ॥
वधि जल तें मधि में नभ मांहि, जोजन सात सैकडा ठाहि । ऊपर दोय कोश सुर ग्राम, नाग कुमार वसै तिस ठाम ॥ ४० ॥
ते पुर लंबे चौड़े जान, बारह सहस जोजना आन । और इसी सागर के माहिं, जान कुभोग भूमि की ठाहिं ॥ ४१ ॥
तिनके मुख सब पशु समान, और शरीर मनुष सम जान । इत्यादिक या दधि में सार, जानों रचना बहु परकार ॥ ४२ ॥
याही दधि जिव त्रस स्थावरा, और घनी रचना कूं धरा । या मे उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥४३॥

दोहा— जंबू द्वीप जिन चैत्य जे, जजों भक्ति मन लाय । दीप उदधि गति छेद जो, मोकूं करो सहाय ॥ ४४ ॥

ॐ ह्रीं जंबू द्वीप सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ इति० ॥

॥ धातकी खंड पूजा ॥

छंद अडिल्ल— खंड धात के माहिं भवन जिन हैं सही, पूजें तिस ढिग जीव तथा सुर खग कही ।
तहं जावन की शक्ति नहीं मुझ पाइये, तातें मन वच थापि जजों यहां भाइये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं धातकी खड सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धातकी खड सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

छंद हरिगीतिका—जल लेय प्राशुक महा निर्मल सुधा सम उत्तम सही, धरि कनक झारी रतन जड़ित सु, आपने कर की मही ।

जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा। ते जजों जल तें भाव शुध हो, नाश जनम जरा करा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

घसि अगर चंदन नीर शुभतें, गंध दायक शुभ मई। धरि कनक प्याले आरती ले, अरघ देकर थुति चई।
जे धातकी खण्ड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा। ते जजों चंदन आपने कर नाश भव तप की करा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

अक्षत अखंडित महा उज्वल, गंधजुत मुक्ता समा, ले आपने कर थालि भाजन, भक्ति जुत शोभापमा।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघहरा, ते जजों मन वच काय अक्षत, होय अक्षत पद खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

शुचि फूल सुन्दरकल्पद्रुमके, गंध जुत शोभा मई, तिन वरण नानाभांति ऐसे, लेय अपने कर सई।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा। ते जजों मन वच काय फूलन, काम मद तिन क्षय करा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य खाजा सुभग मोदक, और फीणी जानिये, इन आदि षट रस पूर व्यंजन, आप करले आनिये।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय चरुले, भूख नाशन को खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रतन दीपक हार तम को, दूर सम परकाशिया, भरि कनक थाली आप करले, सकल अघ जर नाशिया।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिन के अघ हरा। ते जजों मन वच काय दीपक, मोह तम जारन खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विधि मेल गंध सु, अगर आदिक सारजी, ते दहों अगनी माहिं करतें, हरष बहु मन धारजी।
जे धातकी खंड होय जिन थल, विंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय धूप सु, अष्ट अरि जारन खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंडसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल विदाम सु लौंग खारक, सुभग पुंगी फल सही, इन आदि बहुफल जाति सुन्दर,लाइयो अति सुख मही ॥
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा । ते जजों मन वच काय फल ले, मोक्षफल उपजे खरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल भलो चंदन लेय अक्षत, फूल चरु दीपक सही, फल आदि द्रव्य मिलाय आठों, भरे पातर मधि लही ।
जे धातकी खंड होय जिन थल, बिंब जिनके अघ हरा, ते जजों मन वच काय अर्घ सु, सकल वांछित सुखकरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

चौपई–खंड धातकी दूजो जान. ता थानक जिन मन्दिर मान । तिन पद अर्घ जजों मन लाय, ता फल होय सकल सुख दाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खंड धातकी के विषै, हैं जिन मन्दिर सोय । तिनको मन वच काय तें, जजों महासुध होय ॥ १ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

खंड धातकी दूजो जानो, चार लाख जोजन पर मानो । वलय व्यास एता मन लावो, मेरु दोय ताके मधि पावो ॥ २ ॥
एक मेरु पूरब दिश मानो, विजय नाम भव्य हित जानो । इनपे हैं जे जिन वर गेहा, तिनको नमों ठान बहु नेहा ॥ ३ ॥
मेरु दूसरा पश्चिम कानी, अचल नाम ताको सुख दानी । या पे है जिनवर के थाना, तिनकों नमों ठानि उर माना ॥४॥
गोलाकार क्षेत्र है भाई, लवणोदधि के पार जु थाई । या में रचना और घनेरी, मेटो देव तास की फेरी ॥ ५ ॥
पाप उदय या खेतर पायो, तामें जीव पशू सब थायो । ताके दुख की को मुख गावे, सेव देव जिनकी से जावे ॥ ६ ॥
फेर मनुप हो बहु दुख लीनो, भोगन की वांछा अति भीनो । ताके कष्ट कहो को गावे, सेव देव जिनकी से जावे ॥ ७ ॥
फिर या खेतर में विधि योगा, लहै पुण्य तें नाना भोगा । सो भी छांडि और गति पाई,थिर नहिं थिर इक जिन श्रुति भाई ॥८॥
याही क्षेत्र धातकी माहीं, नर पशु होय सकल विचराई । ताके दुख की को मुख गावे, सेव देव जिन की से जावे ॥ ९ ॥
इस उत्तर जिनवर के गेहा, तहां भव्य पूजों करि सेवा । विजयारध या खंड जिन थाना, सुर खग इहां पूजें तजि माना ॥१०॥

मेरु आदि इस खंड जिन गेहा, तहां सुर जाय जजें कर नेहा। नाना विधि की भक्ति उपाव, जय जय जय जिन मुखतें गावे ॥११॥
भक्ति प्रभाव दाव शुभ पायो, जिनगुण गावन को उमगायो। जो जिय प्रभु तुम शरणै आयो, तानें निज भव सफल करायो ॥१२॥
हें जिन या भव संकट माहीं, तुम विन कोऊ शरणों नाहीं। जो जिय प्रभु तुम शरणै आयो, तानें निज भव सफल करायो ॥१३॥
ऐसे बहु विधि भक्ति उपावै, ता फल सुर शिव मारग जावे। तुम प्रभु दीन—तार सुनि आयो, सुमरत ही सब पाप पलायो ॥१४॥
मेरी भी यह विनती स्वामी, वह दिन वेग करो जग नामी। मैं भी खंड धातकी माहीं, तुम प्रभाव तें जनमों नाहीं ॥ १५ ॥
देव जिनेश्वर पद श्रुति मेरी, भव भव मे श्रुति पावों तेरी। खंड धातकी थल में देवा, उतपति हरो करों तुम सेवा ॥ १६ ॥

दोहा— खंड धातकी के विषै, उतपति छेदो देव। और सकल भ्रम मेटि के, देहु तिहारी सेव ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ इति ॥

॥ धातकी खंड की पूर्व में स्थित मेरु आदि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल— खंड धात की मांहि मेरु पूरब सही, खेतर सात कुलाचल पट अति सुख मही।
विजयारध इन आदि थान जिन थल जजों, तहं पूजत सुर खगां थापि मैं यहां जजों ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा सबन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा सबन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंद गीतिका—नीर निरमल चीर दधि को, जीव भ्रम तामें नहीं। धरि कनकझारी आपने कर, हरष जुत होके सही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जो जिन थान हैं। ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशासम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

बावनो चंदन सुघसि के, भक्तियुत आन्यो सही। ता माहिं और सुगन्ध मेली, घालि शुभ पातर मही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरब, आदि जो जिन थान हैं। ते जजों मन वच काय शुभ तें, होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

अक्षत अखंडित नीन नख शिख, धवल अति सुखदाय है । सुन्दर सुगन्ध स्वरूप मुक्ता, फल जिसे ले आय है ।
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जो जिन थान है, ते जजों मन वच काय शुभ तें, होय उर शुभ ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुन्दर वरन नाना, गंध जुत शोभा मई । कल्पद्रुमके जान भविजन, लायके पूजा ठई ।
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जोजिन थान है । ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुभ ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य खाजा और फीणी, घेवरा मोदक मई, इन आदि महती लेय चरु, जिन देवकी पूजा ठई ।
शुभ घातकी खंड मेरु पूरव, आदि जो जिन थान है । ते जजों मन वच काय शुभ तें, होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्री धातकी खड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम ॥ ५ ॥

दीप रतन स्वरूप जसे तम तने घातक सही । भरि थाल अपने हाथ में ले, आरती शुभ की मही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जोजिन थान है । ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुभ ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्य. दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दशधा अगर चंदन, और लाय कपूरजी । इन आदि गंध मिलाय सब ही, अगनि माहीं चूरजी ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जो जिन थान है । ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल सुपारी लोंग खारक, और जान विदामजी । इन आदि बहु विधि लाय शुभ फल आपने हित कामजी ।
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जो जिन थान है । ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदनाक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप भला सही । ये आनि आठों द्रव्य सुखदा, अर्घ ले निज कर मही ॥
शुभ धातकी खंड मेरु पूरव, आदि जोजिन थान है । ते जजों मन वच काय शुभ तें होय उर शुध ज्ञान है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि–लख खंड धातकी पूर्व मेर, तिन आदि और शुभ क्षेत्र हेर। तहां थान जिनेश्वर जान सोय, ते जजों भक्ति धर अरघ जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—खंड धातकी पूर्व दिश, मेरु आदि जिन थान। ते मैं भक्ति उपाय के, जजों सकल तजि मान ॥

॥ छद वेसरी ॥

पूरब मेरु धातकी खंडा, तहां हैं जिन मन्दिर अघ छंडा। धन्य तिन्हें पूजें उस ठाहीं, हम में जाने का बल नाहीं ॥ १ ॥
तातें इस ही थल में जानो, हाथ जोड़ करि हैं थुति मानो। इम थल तें यह अरजी स्वामी, भव भव शरण देहु मो नामी ॥२॥
और चाह मेरे कछु नाहीं, तुम गुण गान चाह उर माहीं। तुम थुति ही सुर शिव सुख देवे, तुम महिमा तें दुख नहिं वेवे ॥३॥
तुम प्रभु दीन–तार सुनि आयो, मैं अति दीन शरण तुम जायो। पतित उधारन विरद तिहारो, हूँ अति पतित जिनद मो तारो ॥४॥
तुम प्रभु अशरण शरण बताये, बहुते अशरण पार लगाये। इम सुनि जिन तुम शरणै आयो, मैं अशरण जिन तुम पद पायो ॥
नाथ नाहि ताके भव माहीं, तुम अनाथ के नाथ कहाहीं। जय जय जय करुणानिधि देवा, बहुत कठिन पाई तुम सेवा ॥६॥
जय जय भव सागर को नावा, जय जय भव वन साथ कहावा। जय जय शिव दायक जग पीवा, जय जय सुर हरि नाथ सदीवा ॥
जय जय धर्मी धर्मा सागर, गुण अनंत रत्नों के आकर। जय जय शिव दायक जग पीवा, जय जय तुम थुति हरष सदीवा ॥८॥
इत्यादिक थुति कर खग देवा, पुण्य उपाय जाय थल लेवा। कै जिन खेतर के नर सोई, पूजें तिन्हें धन्य फल होई ॥९॥
मैं तो शक्ति हीन हूँ स्वामी, किस विधि जाऊं अन्तर यामी। तातें इस ही थल तें देवा, मन वच काय करों तुम सेवा ॥१०॥
दोहा–दीप धातुकी जिन भवन, सो मैं जजों सु भाय। जजों और भव भाव धरि, जो कछु है सुख चाव ॥१२॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अघेम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खड में पूर्व दिशा स्थित विजय मेरु संबंधी भरत क्षेत्र पूजा ॥

छंद-गीतिका–खंड धातकि पूर्व मेरु सु, भरत खेतर ता तनो। तहाँ विजय पूरब थान जिनके, किये विन के ये गिनो ॥
तिस थान जानो कोय विधि ना, भापि हों मन वचन ही। तातें सु द्रव्य मिलाय आठों, थापि जजि हों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु सवधि भरत चेत्र जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौपट्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु सम्बन्धि भरत चेत्र जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः स्थापन।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु सम्बन्धि भरत चेत्र जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरण।

छंद-जोगीरासा—निरमल पानी मैं कर आनी, गंगा जल सो भाई। कनक झारिका में करि के शुभ, अपने चित हरपाई ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत चेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहाँ भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु भरत चेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन शुभ जल ते घसिके भवि, और कपूर मिलाई। गंध भली अलि को मन मोहन, रतन झारि भरि भाई ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत चेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहाँ भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

मुक्ताफल से खंड विना शुध, अक्षत लेकर भाई। पूजन को अपने कर लेकर, मन वच तन हरपाई ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में भरत चेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु भरतसबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ भले अधिकारी, नाना भांति सु प्यारे। जैसी शोभा कल्प पुष्प की, तैसी ही यह धारे ॥
खंड धात की पूरब दिशि में, भरत चेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्ध कर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु भरतचेत्रसंबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

पट रस पूर मनोज्ञ तुरत कर, शुभ नैवेद्य बनायो। खाजा फेनी मोदक आदिक, सो अपने कर लायो ॥
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत चेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु भरतचेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक तमके हारी सुखदा, रतन थाल भरलायो। तिन प्रकाशतें घटपट दीखै, शुभचित अति हरपायो।
खंड धातकी पूरब दिशि में, भरत चेत्र जिन राजे। ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

तीन लोक

धूप सुगंध मिलाय सु दशधा, और कपूर सु भाई । जाके खेवत धूम शिखा नभ, फल रहा महकाई ।
खण्ड धातकी पूरव दिशि में, भरत क्षेत्र जिन राजे । ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व मेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी, पिस्तादिक शुभ भाई । इन आदिक बहुते फल लेके, पूजन को मन लाई ॥
खंड धातकी पूरव दिशिमें, भरत क्षेत्र जिन राजे । ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत प्रसून ले, चरु दीपक सुखदाई । धूप फलादि मिलाय दरव वसु, अर्घ बना हर्षाई ॥
खंड धातकी पूरव दिशि में, भरत क्षेत्र जिन राजे । ते सब मैं यहां भाव शुद्धकर, पूजों सुर शिवकाजे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंडपूर्वमेरु भरत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—जल चंदन आदिक अर्घ लाय, भरत धातकी खंड थाय । जिन मन्दिर में जिन बिंब सोय, मैं जजों अरघ तिन भक्ति जोय ।

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु भरत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—खंड धातकी पूरव मेर, भरत मांहिं उपसागर हेर । ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु भरतसम्बन्धि उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

पूरव मेरु धातकी खंड, भारतवासी देव प्रचंड । या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खण्ड धातकी पूरव भर्त, विजयारध खग गिरि सुख कर्त । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही विजयारध की जान, दक्षिण श्रेणी उत्तम ठान । याकी उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मरु संबंधि विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अघम ॥ ४ ॥

याही विजयारध की जान, उत्तर श्रेणी उत्तम मान । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बंधि विजयार्द्ध उत्तर श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही विजयारध पे सही, कूट कहे ते उत्तम मही । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि विजयार्द्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इन ही कूटन पे शुभ भाय, देव रहै नाना सुख पाय । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि विजयार्द्धस्थित देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

याही विजयारध सिध कूट, तापे जिन थल अघ तहँ छूट । तामें विंब देव जिन सोय, तिन पद अर्घ जजों मद-खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि विजयार्द्धस्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

खण्ड धातकी पूरव जान, खण्ड मलेच्छ भरत के मान । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्डपूर्व मेरु सम्बन्धि म्लेच्छ खण्डगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

इस ही भारत म्लेच्छ सुजान, जिनमें वृषभाचल गिरि मान । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि म्लेच्छ खण्डस्थित वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

खण्ड धातकी पूरब जान, ताको भरत क्षेत्र उनमान । यामें उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु सम्बन्धि भरत क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—खण्ड धातकी पूर्व दिश, भरत क्षेत्र मनलाय । तहँ जिनथल वंदूं सकल, आठों दर्व मिलाय ॥

सोरठा—दूजे द्वीप मझार, पूरब दिश को भरत जे । क्षेत्र भलो सुभकार, जीव तहां ते शुभ लहैं ॥ १ ॥

याहू के षट खण्ड, तिनमें इक आरज सही । पंच मलेच्छ जु खंड, विजयारध ता मध्य है ॥ २ ॥

जुग श्रेणी तिस माहिं, तहां रहै खग बल धरा । कूट तास के ठाहिं, देव बसै जिन सेवका ॥ ३ ॥

शिव सु कूट इक जोय, तापे जिन मन्दिर सही । सुर खग पूजैं सोय, सफल आपको भव करै ॥ ४

एक अयोध्या सोय, आरज खण्ड विषै सही । उपसागर तहँ जोय, दोय म्लेच्छ आरज विषै ॥ ५ ॥
तीन मलेच्छ सुजान, खग गिरि की उत्तर दिशा । तहँ वृषभाचल मान, चक्री निज नाम हि लिखै ॥ ६ ॥
ऐसे या थल माहिं, षट खंड हि मन लाइये । क्षेत्र भरत के माहिं, जिन थल अघहारी सही ॥ ७ ॥
तिन जिन थल के माहिं, आय भविक पूजा करै । नाना पुण्य उपाय, पाप हरै पूरव किये ॥ ८ ॥
मो जावन की थीर, शक्ति नहीं तिस थान में । तातैं इस थल थीर, पूजों भावन अर्घ तें ॥ ९ ॥

दोहा—जंबू भरत के सम कथन, जान लेहु बुधिवान । पूजों या गति छेद को, जय जय जय भगवान ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व मेरु भरत क्षेत्र संबंधि जयमालार्घं ॥ इति०

हेमवत क्षेत्र संबंधी गति छेदक अर्घ

छंद—अडिल्ल—

खण्ड धातकी पूरब हिमवत क्षेत्र ही, भोग भूमि है जघन मानुषी शुभ मही ।
एक कोश तन आयु एक पलि जानिये, या गति छेदक देव जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र संबंधि मनुष्य गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

खण्ड धातुकी पूरब हिमवत है सही, भोग भूमि यह जघन सुखन की मही ।
होय पशु यहां नभचर शुभके भावजी, या गति छेदक देव जजों कर चावजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र संबंधि नभचर जीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि भोग भू माहि जीव थलचर सही, एक कोश तन सुन्दर-अति सुखकी मही ।
होय पशू यहां थल चर शुभके भावजी, तिन गति छेदक देव जजों कर चावजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र संबंधि थल चर पशु गति छेदक जिनेभ्य अर्घम् ॥ ३ ॥

याही खण्ड धात की पूरब दिश सही, हिमवत खेतर बीच नाभि गिरि की मही ।
ढोलाकार उतुंग गोल शुभ जानिये, या-गति छेदक-देव जजों थुति ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशि हिमवत क्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

चौपई–खंड धातकी पूरब जान, हिमवत क्षेत्र सु आरज थान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र सबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५ ॥

॥ हरि क्षेत्र सम्बन्धि गतिछेदक अर्घ ॥

चौपई—पूरब खंड धातकी माहिं, हरि क्षेत्र आरज नर पाहिं । इनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र मवधि मनुष्य गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ६ ॥

या ही हरि खेतर में सही, होय पशू नभचर इस मही । इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा हरिक्षेत्र मध्यभोगभूमि सम्बन्धि नभचर जीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७ ॥

इस ही क्षेत्र हरी मनलाय, थलचर जीव ऊपजै आय । इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा हरिक्षेत्र मध्यमभोग भूमि सम्बन्धि थलचर जीवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इस ही हरी क्षेत्र में जान, नाभी पर्वत है हित दान । इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा हरिक्षेत्र मध्यम भोगभूमि सम्बन्धि नाभिगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—हरि पूर्व धातकी खंड खेत, नर पशु सुर रहते सुख समेत । तन दोय कोश पलि दोय आय, न गतिछेदक के जजों पाय॥

ॐ ह्री धातकी खण्ड पूर्वहरिक्षेत्र सम्बन्धि मध्यमभोगभूमि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १० ॥

चौपई–खंड धातकी पूरब जान, भोग भूमि उत्कृष्ट प्रमान । होय मनुष्य आर्य अवलोय, तिन गति छेद जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्डपूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमि मनुष्यगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इस ही भोग भूमि में जान, होय पशु नभचारी मान । इनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री धातकीखण्ड पूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमिसम्बन्धि नभचरजीव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

इसही भोग भूमि थल माहिं, थलचर जीय होय मन लाहि । इनकी उतपति छेदक सोय तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्री धातकीखण्ड पूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमिसम्बन्धि थलचरजीव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इसही भोग भूमि थलमाहिं, मानुष पशु उपजै तहँ आहि । इनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा उत्कृष्ट भोगभूमि सम्बन्धि मनुष्यगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

॥ जम्बू वृक्ष सम्बन्धि पूजा ॥

छंद अडिल्ल—

खंड धातकी पूरब मेरु सु जानिये, ताके जंबू वृक्ष रतनमय मानिये ।
ता ऊपर जिन थान बिंब जिनके सही, जान शक्ति मो नाहिं जजों इस ही मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरुसम्बन्धि जम्बूवृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि जम्बूवृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु सम्बन्धि जम्बूवृक्षस्थित जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

खंद लक्ष्मीवती—

नीर ले शुभग निरमल सु आभा मई, कनकझारी भरी आप कर ले ठई ।
धातकी खंड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनो जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु जम्बूवृक्ष सम्वन्धि जिन चैत्यालस्य जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

सुगन्ध चन्दन घसों नीर निर्मल भलो, लेय शुभ पात्र में पूजने को चलो ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनों जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु जबू वृक्षसबधि जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

लेय अक्षत विना खंड उज्वल सही, लेय मुक्ता फला आश शुभ की मही ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनो जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु जंबूवृक्षसम्वन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल सुर द्रुम तने वरन नाना सही, लेय कर माल उर भक्ति जुत ह्वै रही ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनो, जिन भवन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरुजवूवृक्ष सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

छः रसों युक्त नैवेद्य मन लायजी, धार शुभ पात्र में आप कर भायजी ।
धातकी खण्ड पूरव दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जम्बू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीप मणि ज्योति सामान तम के हरा, थाल भरि आप कर लेय आयो खरा ।
धातकी खण्ड पूरव दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दश विध भली कूट कर लाइयो, खेय वही विषै हर्ष बहु पाइयो ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु जंबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

सुभग नारेल अरु लोंग बादामजी, आदि इन और फल लेय शिवकाम जी ।
धातकी खण्ड पूरब दिशा जानिये, वृक्ष जम्बू तनों जिन भवन ठानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जंबूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम ॥ ८ ॥

नीर गंध तंदुला फूल चरु दीपजी, धूप फल मेलकर अर्घ शिव दीयजी ।
धातकी खण्ड पूर्वदिशा जानिये, वृक्ष जंबू तनों जिन भवन ठानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु जबू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद गीतिका–धातकी खण्ड पूर्व दिशि में, वृक्ष जंबू जानिये । तिस ऊपरै जिन थान मणिमय, बिंब तिसमें मानिये ॥
तहँ देव खग तो जाय पूजैं, शक्ति हम में है नहीं । तातें जु इस थल थाप पूजें, अर्घ धरि निज कर महीं ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु जंबू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा– दीप धातकी खण्ड में, पूरब दिशि को जान । जंबू तरु पे जिन भवन, जजों भक्ति उर आन ॥ १ ॥

चौपई—खण्ड धातकी पूरव मेर, ताकी दक्षिण दिश को हेर । थंभ एक सुभग मन हार, तापे कटनी तीन सुधार ॥ २ ॥
चौ दिशि कोट तनी विधि सही, वापी वन तें सोभैं मही । इत्यादिक रचना बहु मान, आगेजंबू दीप सो जान ॥ ३ ॥
ता ऊपर जंबू तरु जोय, शाखा चार कही शुभ सोय । शाखा तीन ऊपरैं सही, है जिन भवन पुण्य की मही ॥ ४ ॥
शाखा एक ऊपरैं सही, है जिन भवन पुण्य की मही । बिंब तहां मणिमय मन लाय, पूजैं देव खगां नहँ जाय ॥ ५ ॥
अपने भव को उज्वल करैं, नाना विधि की श्रुति उचरैं । अपनो आज सफल भव भयो, दर्श तिहारो मनमें लयो ॥६॥
आज पाप सब गये पलाय, आज पुण्य पायो अधिकाय । देखत देव सेव को चहैं, मो जिय शिव मारग को लहैं ॥७॥
जय जय जय जिन नायक देव, सेवक को निज मम कर लेव । मैं या भव में भ्रम्यो अपार, ताको नाहीं वारापार ॥८॥
जो पुण्ययोग आप पद लये, सो निज भव दुख को जल दये। इत्यादिक सुर खग दुति थान, लेय पुण्य अघ कर निज हान ।९।
ऐसे जंबू तरु जिन थान, रतन मई शुभ ठान सुजान । फूल पान फल कर रमणीक, ऐसो वृक्ष जंबू है ठीक ॥ १० ॥

दोहा— ऐसे जंबू तरु विषैं, थान जिनेश्वर सोय । जजों महा सुख कारणैं, और न वांछा कोय ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घंम् ॥

॥ शालमली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद अडिल्ल— खण्ड धातकी पूरव मेरु सुजानिये, शालमली तरु हेठ जिनालय मानिये ।
ता ऊपर जिन बिंब देव मन मोय है, जजों थापि इम थान पाप दुख खोय है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा मेरुसम्बन्धि शालमली वृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा मेरु सम्बन्धि शालमली वृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा मेरु सम्बन्धि शालमली वृक्षस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निहितो सन्निधिकरणम् ।

छंद अडिल्ल— निरमल नीर सुलाय कनक झारी भरों, लेव आय कर माहिं हरष हिरदै धरों ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु शालमलीवृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन नीर थकी घसि लाइयो, सुभग पात्र में घाल, देव गुण गाइयो ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत जान अखण्डित मुक्ता फल समा, गंध धार अति उज्वल लेकर अति रमा ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्व मेरु शालमलीवृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

नाना वरण सुगंध फूल सुखदाय है, सो मैं लायो देव यजन कों भाय ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरुल्मलो वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नाना रसमय पूर तुरत कर लाइयो, खाजा फीणी मोदक आदि सुभाइयो है ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतन समान हरै तमभार को, थार मांहि ले आयो अति उजियार को ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

दशधा गंध मिलाय अगर आदिक सही, खेऊं वह्नि मझार चाव मो मन मही ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु शाल्मलि वृक्ष सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुखारक जोइये, ते अपने कर लाय सुफल शिव होइये ।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु सही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु शाल्मली वृक्ष सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु दीप ही, धूपफला वसु द्रव्य मेलि लायो यहीं।
पूर्व धातकी खण्ड शालमलि तरु मही, तहँ जिनवर के थान जजों शुभदा मही ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वमेरु शाल्मली वृक्ष सवधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

चौपई—खंड धातकी पूरव जान, शालमली पे जिन थल मान। बिंब तहां शुचि जिनवर रूप, तिन पद जजों मिटै अघ धूप ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु शालमली वृक्ष सवधि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खण्ड धातकी पूर्व दिश, शालमली तरु जान। तापे जिन थल पूजिये, मन वच तन पहिचान ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

ये ही शालमली तरु जानो, रतनमई शोभा अधिकानो। रचना सकल तास समजोई, तिनकी रचना अदभुत होई ॥ २ ॥
शाखा तीन ऊपरैं भाई, देव रहें तिनपे सुखदाई। इक शाखा ऊपर जिन गेहा, सुर खग ही पूजें कर नेहा ॥ ३ ॥
मोमें शक्ति जान की नाहीं, पूजन की वांछा अधिकाहीं। तातें मन वच काय लगाई, पूजों इस ही थल में भाई ॥ ४ ॥
धन्य तिन्हें जो परतछ जावें, भाग्य हीन मोसर नहिं पावें। मेरी शक्ति समा मैं कीनी, पूजा भक्ति भावना भीनी ॥ ५ ॥
जैसा फल प्रत्यक्ष सु होई, तैसो भाव जजै ले कोई। ऐसी जान पूज्य मैं ठानी, मो अघदेव करो सब हानी ॥ ६ ॥
दोहा—भाग्य भले मोसर मिल्यो, जिन पूजन को आय। ता फल भव भव जिय सुखी, होय सदा अघ जाय ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खण्ड की पूर्व मेरु सम्बन्धी गज दन्त पूजा ॥

छंद अडिल्ल— मेरु धातकी खंड दिशा पूरव कही, तहां चार गज दन्तन की उत्तम मही।
तिन चारन पे भवन चार जिन देवके, ते यहां थापिर जजों काय मन वच थके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरुसम्बन्धि चतुर्गजदन्तस्थित चैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्रावतर २।
ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु सवधि चतुर्गजदन्तस्थित जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु सवधि चतुर्गजदन्तस्थित जिन बिंब अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल जोगीरासा—निरमल पानी त्रस विन कहिये कनक भारि में लायो, अपने करमें ले हरपे चित, सुफल सुमन ललचायो ।
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दंतन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु गजदन्त संबंधि चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन पावनकारो, भावन भावत लायो, निरमल नीर थकी घसिके धर, कनक पियाले मायो ।
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरुगजदन्त सम्बन्धि चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अच्छत उज्जल मुक्ताफल से, खण्ड बिना ले भाई । धोय किये शुचि ले अपने कर, भक्ति सहित उमगाई ॥
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु गजदन्तसम्बधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल कलप तरु से ले आयो, वर्ण गंध बहुधारी । माल बनाय सुभाव हरप धरि, जग करि कामनि वारी ॥
खण्ड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु गजदन्त सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

खाजा फीणी मोदक घेवर, इन आदिक चरु भाई । पट रस पूरित ले अपने कर, भूख जु नाश कराई ।
खंड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु गजदन्तसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई से तमहर, ज्योति प्रकाशक जानो । धार कनक पातर में करले, तीरथ को उमगानो ॥
खंड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पै जोवै । है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु गजदन्त सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

दशधा गंध सुधार अगरसी, नन्दन केलि मिलाई । खेवन को अपने करमें ले, कर्म दहन करवाई ॥
खंड धातकी मेरु सु पूरब, गज दन्तन पे जोवै । है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु गजदन्तसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी, खारक अति सुखकारी। इन आदिक सु भले फल लायो, भक्ति हिये बहुधारी।
खण्ड धातकी मेरु सु पूरव, गज दन्तन पे जोवै। है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ, पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु गजदन्त सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत पहूपचरु, दीप धूप फल जानो। मेलि सकल करि अरघ मनोहर, ले आयो हित दानो ॥
खंड धातकी मेरु सु पूरव, गज दन्तन पै जोवै। है जिन मन्दिर तहां बिंब शुभ पूजे से मद खोवै ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्व मेरु गजदन्त सर्वावि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल— खंड धातकी पूरव मेरु सु जानिये, ताके गज दन्तनपे जिन थल मानिये।
तहँ जिनवर के बिंब महा सुखदाय है, ते में अरघ चढाय जजों हित लाय है ॥

ॐ ह्रौं धातकीखड पूर्वमेरुगजदन्त सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपाई—पूर्व धातकी खंड सुमेर, ताके गज दन्तन पर हेर। कूट कहे जो उत्तम खान, या गति छेद जजों भगवान ॥

ॐ ह्रौं धातकी खण्ड पूर्व मेरु गजदन्त सम्बन्धि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

इनही गजदन्तन पे सही, कूट कहे शोभा की मही। तिनपे देव व्यन्तरा रहै, या गति छेद जजों अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरुगजदन्त सम्बन्धि कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

याही मेरु प्रथम गजदन्त, ता ऊपर जिन थान सुसन्त। तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातको खड पूर्वमेरु प्रथमगजदन्त माल्यवान सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसी मेरु दूजो गजदन्त, ता ऊपरि जिन थान सुसन्त। तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु द्वितीय महा सौमनस गजदन्तसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इसी मेरु तीजो गजदन्त, ता ऊपर जिन मंदिर सन्त। बिंब महा जिनवर के सोय, तिनके पद पूजों मदखोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वमेरुतृतीय विद्युत प्रभ गजदन्तसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इसी मेरु चौथो गज दन्त, तापे जिन थल शोभावंत। विंब तहां जिनवर के सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु चतुर्थगन्धमादन गजदन्तसम्बन्धि जिनालयेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

दोहा— इन चारों गजदन्त पे, है जिन गेह अनूप। ते पूजों वसु द्रव्य तें, काटन संकट धूप ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु चतुर्गजदन्त सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥ ७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खंड धात पूरव दिशा, मेरु तने गजदन्त। तिनपे जिनके थान हैं, ते पूजों अघ हन्त ॥

चाल मुनियानंद— जान गजदन्त ये चार या मेरु के, कूट इन ऊपरे हैं घने घेरके।
(छंद लक्ष्मीवती) नाम परमाण सिध कूट आदिक सही, और तिन शीश सुर भवन शोभामई ॥ २ ॥
रंग आकार आदिक सबै सुख करा, मेरु सुम्मेरसम जान वरणन खरा ॥
कूट सिद्ध ऊपरै देव तिन थान है, ते जजों भाव धर देहि शिवदान है ॥ ३ ॥

सरठा— नमैं देव खग आय, उस ही थानक जायके। हम यहां भावन भाय, अर्घ जजों जिन पायजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खंड के पूर्व मेरु के पूर्व विदेहसम्बन्धि जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीतिका—मेरु धातकि खंड पूरव थान सकल विदेहजी। तिस मांहि मंदिर देव जिनके, कहे बहु गुण गेहजी ॥
वहां बिंब है जिन देवजी के, देव जिन से जानिये। ते जजों मन वच काय सेती, अर्घ तें मन आनिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरुविदेहक्षेत्र संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

चाल जोगीरासा—नभसो निरमल नीर विना त्रस, क्षीरोदधि सो जानो। कनक पियालो धर कर आन्यो, हरष सहित अधिकानो ॥
खंड धातकी पूरब से सब, थान विदेह बताये। तहँ जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र संबन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन निर्मलधारी,नीर सुगंध घसाई । कनक पियाले धाल भगति जुत, अपने कर ले भाई ॥
खंड धातकी पूरब से सब, थान विदेह बताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरुविदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल खंड विना शुभ, बीन बीन कर लाये । शुभ पातर में धाल लेय कर, हरप हरप उमगाये ॥
खंड धातकी पूरब से सब, थान विदेह बताये । तह जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम ॥ ३ ॥

फूल सुगंध सुवरण मनोहर, नाना रंग के भाई । काम नाशनी होय शक्तिफल, यों कर ले उमगाई ॥
खंड धातकी पूरब से सब, थान विदेह बताये । तहँ जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरुविदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

पटरस पूरित तुरत बनाये, खाजा फीणी लायो । मोदक आदिक जे चरु निज कर, पूजन को उमगायो ॥
खंड धातकी पूरब से सब, थान विदेह बताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम ॥ ५ ॥

दीपक तमहर रतन मई सो, महा ज्योति परकाशी । कंचन पातर धाल घनेसे, करले बहु थुति भाषी ॥
खंड धातकी पूरब से सब थान विदेह बताये । तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिनपद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सबंधिजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप अगर आदिक दश गन्धी, एक जगह करदीनी । खेवन को अघ जारन कारन, अपने कर में लीनी ॥
खंड धातकी पूरब से सब थान विदेह बताये । तहँ जिन मंदिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक सुभग मिलाई । इन आदिक फल लेय मनोहर, हरपधार अधिकाई ॥

खंड धातकी पूरब से सब थान विदेह बताये। तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह संबधि जिनालयस्थजिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल भाई। मेलि सबों का अरघ बनाऊं, लेकर अति सुखदाई ॥
खंड धातकी पूरब से सब थान विदेह बताये। तहँ जिन मन्दिर में जिन प्रतिमा, तिन पद पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह क्षेत्र संवधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—कर अर्घ आप कर लेय आय, वरदीप धात पूरब बताय। जिन गेह विदेहन क्षेत्रमांहि, मैं पूजों थुतिकर अर्घ लाहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—खंड धातकी पूरब येह, त्रस थावर युत क्षेत्र विदेह। इनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरुविदेहक्षेत्र संबंधि त्रसस्थावर गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

छंद अडिल्ल—

खंड धातकी पूरब मेरु विदेहजी, तहाँ खगा चल सबै रूप मय जेहजी।
तामें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेह क्षेत्र सम्बन्धि वैताढगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याही गिरि वैताढ दक्षिण दिश जानिये, जीव घने त्रस थावर, उपजत मानिये।
तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी। तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु संवंधि दक्षिण वैताढ गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही विजयारध की उत्तर श्रेणि जी, थावर त्रस जिय होय दुःख सुख लेणि जी।
तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि वैताढउत्तर श्रेणि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

इस ही विजयारध के ऊपर जानिये, कूट महा शुभ थान दुःख की हानिये।

तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी । तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेह क्षेत्रसम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इस ही खग गिरि ऊपर कूट बताइये, तिनके ऊपर देव रहैं धुनि गाइये ।
तिनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खडपूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्धकूटवासीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही विजयारध ऊपर सिध कूट है, तिसपे जिनके थान पाप सब छूट है ।
बिंब तहां जिनवर के सुभग विराजिये, तिन पद अर्घ चढाय जजों हित साजिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

खंड धातकी पूरब दिशि को जानिये, सरिता नाम विभंगा जल की खानिये ।
इनकी उतपति छेद भये भवपारजी, तिन पद अर्घ जजों मनवचतन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातक खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि विभंगानदी गतिच्छेजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

पूर्व धातकी खंड विषै शुभ जानिये, गिरि वक्षार सुनाम तुंग अधिकानिये ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी । तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ।

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि वक्षारगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

इसही गिरि वक्षार उपरै है सही, कूट महा शुभ थान तरसथावर मही ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि वक्षारकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

इसही गिरि वक्षार ऊपरै है सही, सिद्धकूट जिनथान पुण्यकी शुभ मही ।
बिंब तहां जिनदेव जिसे सुखकारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र सबधि सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इसही गिरि वक्षारकूटपे जानिये, देव रहैं सुखमान भले गुण खानिये ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्र वक्षारसम्बंधि कूटवासी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

खंड धातकी पूरब दिश सु विदेह है, तिस थानक में सरिता रक्ता जेह है ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि रक्तानदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

पूर्व धातकी खंड विदेह सुसार है, रक्तोदानंदी तहँ बहु जल धार है।।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि रक्तोदानदी गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

खंड धातकी पूरब दिशा विदेहजी,तिनमें उपदधि सागर जहां जलगेहजी ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि उपदधिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

मेरू पूर्व विदेह धातकी सार है, देश विदेह विषै वृषभाचल धार है ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्व मेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धिवृषभाचलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

खंड धातकी पूरब मेरु सुजानिये, देश विदेह सु नगर अयोध्या मानिये ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धिअयोध्यानगरी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

खंड धातकी पूरब मेरु विदेह में, देव रहै मगधादिक अपने गेह में ।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्व विदेहक्षेत्र सम्बन्धि मगधादिक देव गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

खंड धातकी पूरव मेरु सुजानिये,तहां मलेच्छ सुखंड धर्म नहिं मानिये।
इनकी उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसम्बन्धि म्लेच्छ खड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

खंड धातकी पूरव सार विदेहजी, आरजखंड तहँ सार धर्मजुत जेहजी।
इनमें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद अर्घ जजों मन वच तन सारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वमेरु विदेहक्षेत्रसंबधि आर्यखंड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

छंद गीतिका—खंड धात सु मेरु पूरव, भले क्षेत्र विदेह में, तहां देव जिनके गेह सुन्दर, जजों श्रुति कर नेह में।
तिस क्षेत्र मांही जनम मृत्यु छेद जे शिव थल लहा, तिन पांय को मैं जजों मन वच, काय कर सुख हो महा ॥

ॐ ह्रींधातकी खड विजयमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खंड धातकी पूर्वदिशि, विजय मेरु शुभ ठाम। तिनके क्षेत्र विदेह में, जजों सु जिनवर धाम ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

खंड धातकी पूरव मेरा, तहां विदेह क्षेत्र बहु घेरा। गिरि वखार तहां हितकारी, तहँ जिन मन्दिर हैं अघहारी ॥ २ ॥
षोडश तो वखार सु जानो, अरु बत्तीस खगाचल मानो। तिनमें जिन मन्दिर सुखकारी, ते हां जजों पाय मनहारी ॥ ३ ॥
और घने खेतर जुत गेहा, तिनको जजों ठान बहु नेहा। इत्यादिक तहँ ते जिन धामा, ते सब पूजों मन वच कामा ॥४॥
कंचन गेह बिंब मणिमय हैं, कृत्रिम अकृत्रिम समये हैं। देव खगां नरते पुण्यवाना, पूजे मन वच तन धरि काना ॥ ५ ॥
ताके फल शिव सुख उपजावै, जग भरमण में फेर न आवै। उनको तन पायो हितकारी, सेवै चरण भक्ति उरधारी ॥ ६ ॥
मुखते भक्ति करे हो दीना, जय जय जिन करुणा रस भीना। सेव तिहारी तें दुखजावै, पाप फंद में कबहु न आवै ॥ ७ ॥
हो अनाथ के नाथ दयाला, करुणा सागर गुण की माला। दीन दयाल दया हम कीजे, भव भव शरणो तुम पद दीजे ॥८॥
अहो देव तुम श्रुति बिन देवा, करी बहुत या जग की सेवा। अब कोउ सुकृत तुम ढिंग आयो, परसत ही भव सफल करायो

इत्यादिक भज विनती ठानै, लगे पाप सब अपने भानै। अब भी यहां जो भावन भासी, सो अब 'टेक' छोड शिवजासी ॥१०॥

दोहा—खंड धातकी पूर्व दिश, देव थान जो होय। तिनको अर्घ जजों सही, मन वच तन मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबधि पूजा जयमालार्घं (इति०)

॥ धातकी खंडविजयमेरु संबंधी विदेहक्षेत्र के वर्तमान चार जिनालय पूजा ॥

दोहा—खंड धातकी पूर्व के, थान विदेह सु जान। तहँ वर्ते हैं जिन चतुक, ते पूजों इस थान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड विजयमेरु विदेहक्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्जिन अत्रावतरावतर सवौषट्

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ' ठ

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्

छंद गीतिका—नीर निरमल गंग सरिता धार को लायो सही। भरि कनक झारी आप करले, उर विषै हुलसत मही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शास्वत वरतते जिन, जजो सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो जलं।

रगड़ बावन सुभग चन्दन, सलिल संग मिलाय जी। उर भक्ति जुत धर सुभग पातर, लेय अपने कर मही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शास्वत वरतते जिन, जजो सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो चंदन।

अक्षत अखंडित महा उज्वल, नोक जुत अति सोहने। धरि सुभग पातर आप करले, लगे पाप जु धोवने ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शास्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो अक्षत।

कल्प तरु से फूल सुन्दर गंध जुत मन मोहने। तिन दाम कर ले आप कर में, चल्यो काम विगोवने ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी। तहँ चार शास्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो पुष्पं।

नैवेद्य षट रस पूर वांछित, भूख वेदन के हरा । सुभग थाल मिलाय करले, यजन को मनवच करा ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो नैवेद्य ।

दीप मणि मय नाश तम के ज्योति से परकाशिया । धरि कनक थाली लेय कर में पाप सब के टालिया ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो दीप ।

धूप दस विधि गंध जुत ले, वस्तु मेल बनावही । फिर अगनि खेवन पूजने को, काय मन वच लावही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो धूप ।

श्रीफल विदाम सु लौंग खारक, आदि शुभ फल लाइये । तिन तें जजों जिन देव के पद, मोक्ष फल मन भाइये ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदह क्षेत्र संबंधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो फल ॥८॥

जल चंदनाक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप फला सही । ले आठ ही शुध द्रव्य सुन्दर, अरघ कर निज कर ठही ॥
खंड धात सु विजय मेरू, क्षेत्र सुभग विदेह जी । तहँ चार शाश्वत वरतते जिन, जजों सुभ धर नेह जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

छंद–अडिल्ल—

खंड धातकी पूरब मेरु सु जानिये, क्षेत्र विदेह विषै चव जिनवर मानिये ।
तिनके पद हों जजों द्रव्य वसु लायके, मन वच काया तीन लाय थुति गायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि वर्तमान चतुर्जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

छंद–अडिल्ल—

संजयंत जिन खंड धातकी में सही, रहे शाश्वते नाम भविक तारक मही ।

ते हों पूजों मन वच द्रव्य चढाय के, करो मोहि शिव देव दीन सम भाय के ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि शाश्वत सजयत जिनाय अर्घम् ॥१॥

खंड धातकी पूरव मेरु तहां सही, क्षेत्र विदेह स्वयंप्रभ जिन की है मही ।
ते हों पूजों मन वच काय लगाय के, करो मोहि शिव देव, दीन सम भायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि शाश्वत स्वयप्रभ जिनाय अर्घम् ॥२॥

पूर्व धातकी खंड तहां जिन जानिये, ऋषभानन शुभ नाम शाश्वता मानिये ।
ते हों पूजों मन वच काय लगाय के, करो मोहि शिव देव, दीन सम भायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबंधि शाश्वत ऋषभानन जिनाय अर्घम् ॥३॥

पूर्व धातकी मेरु तहां जिन अवतरा, अनंत वीर्य तिन नाम शाश्वते हैं खरा ।
ते हों पूजों मन वच काय लगाय के, करो मोहि शिव देव, दीन सम भायके ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबंधि शाश्वत अनंतवीर्य जिनाय अर्घं ॥४॥

खंड धातकी पूरव दिशा बखानिये, ताको वर्णन भिन्न भिन्न ही मानिये ।
तिन पद सुर हरि पूज पुण्य बहुतो लहैं, मैं भी तिन पद जजों फलै सब अघ दहै ।

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व विजय मेरु विदेह क्षेत्र संबधि शाश्वत जिनेभ्यो महार्घं ॥५॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—खंड धातकी में शाश्वते, तिष्ठै चव जिन सोय । नाम माल तिन की जपे, मिटे पाप सुख होय ॥१॥

छन्द–वेसरी

जिन संजातक देव बनावा, तिन पद जजे मिटे भव दावा । तातैं मैं पूजों चित लाई, भव भव मोकों भक्ति सदाई ॥२॥
देव स्वयं प्रभ सब हितकारी, मेट हमारी अघ–बुधि सारी । तुम शरणै आये सुख होई, भव की बाधा रहै न कोई ॥३॥
ऋषभानन जिनको ऋषि ध्यावै, ता फल अपने कर्म नशावै । ते जिन मोको होय सहाई, मो मन में अब ऐसी आई ॥४॥

अनंत वीर्य जिन अनंत सुज्ञानी, किये कर्म सब अपने हानी। औरन को शिव दे अघ तोरै, ते जिन करुणा कर मो ओरै ॥५॥
ये ही चारों जिन अघ हारी, छेदो मो फेरो संसारी। भो जिन! और न वांच्छा कोई, भव भव शरण तिहारी होई ॥६॥
तुम शरणैं विन जग भरमायो, अब शुभ पुण्य उदय मो आयो। तार देव जिन विनती मेरी, मैं अब शरण देव जिन केरी ।७।
ऐसे मैं अति मन वच काई, पूजों पल पल शीश नमाई। तिन पद सुर खग पूज करावै, जय जय जय जिन धुनि मुख गावै ।८।
इत्यादिक शोभा किम कहिये, बुध थोरी गुण पार न पइये। देव विरद तारक है तेरो, मेट मेट जिन मो भव फेरो ॥९॥

दोहा—चार शाश्वते जिन सदा, खंड धातकी मांय। पूरब दिश में मैं जजों, आठों द्रव्य चढाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड विजय मेरु विदेह क्षेत्र सबधि शाश्वत चतुर्जिनेभ्यो अर्घं

धातकीखंड पूर्व दिशा में स्थित नील पर्वत संबंधी जिन पूजा

दोहा—खंड धातकी नील गिरि, पूरब दिशा अनूप। ता में जिन मन्दिर अचल, जजे मिटै भव धूप ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ. ठ.।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ, सन्निधिकरणम्।

छंद—अडिल्ल

निरमल जल शुभ कनक भारिका में भरो, भक्ति भाव करि शुद्ध तीन जोगन करों।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥१॥

चंदन सुभग मिलाय नीर तें घसि लियो, कनक पियाले लाय अती हरषो हियो।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदन ॥२॥

अक्षत उज्वल धोय शुद्ध करवाय के, खंड विवर्जित कनक थाल भरवाय के।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥३॥

नाना वरण सु फूल सुगंध मिलाय के, लायो उर विधि सार मदन भय खायके।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥४॥

खाजा फीणी घेवर नाना रस मई, इन आदिक नैवेद्य लेय आयो सही।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नीलगिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

दीपक तम के नाश करन हारे सही, रतन मई ले हाथ हरप आयो सही।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥६॥

दश विधि धूप मिलाय गंधकारी सही, अगनि मांहि धर खेऊं फल सब अघ दही।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥७॥

फल ले लौंग बिदाम सुपारी श्री फला, इन आदिक शुभ और अनेक जु निरमला।
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥८॥

जल चंदन अच्छत पुष्प चरू लाइये, दीप धूप फल मेलि अर्घ उपजाइये ॥
खंड धातकी पूरब दिश को जानिये, नील गिरी जिन थान जजों अघ हानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

॥-प्रत्येक अर्घं ॥

सोरठा—नील कुलाचल कूठ, तिनमें उतपति जे हरै। होय सिद्ध अघ छूट, तिन पद पूजों अर्घ सों ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबधि सिद्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घंम् ॥१॥

नीलाचल पे देख, कूटन के वासीन को । तिन गति हर स्वयमेव, मोक्ष भये जिन पद नमों ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नील कुलाचल संबंधि सिद्ध कूट वासी देव गतिछेदक अर्घम् ॥२॥

छंद—अडिल्ल—

नीलाचल की दक्षिण दिश को जानिये, भोग भूमि उत्कृष्ट सुखों की खानिये ।
ताकी उतपति छेद सिद्ध पद को गये, तिन पद अर्घ चढाय सबै ही अघ दहे ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा उत्कृष्ट भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥३॥

खंड धातकी मेरु पूर्व दिश को सही, तहां समंधी वृक्ष दोय मणि मय कही ।
जंबू शाल मली शुभ तिन के नाम हैं, तिन पे जिन के थान जजों सुख धाम है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा जबू शाल्मली वृक्ष संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥४॥

इनही वृक्षन पे सुर तिष्ठत है सही, नाना विधि सुख लहै महा पुण्य की मही ।
तिन की गति को छेद भये जिनरायजी, अर्घ जजों तिन ही के पद थुति लायजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा जंबू शाल्मली वृक्ष सबधि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥५॥

खंड धातकी पूरब दिश को है सही, रम्यक नामा क्षेत्र अधिक शोभा मही ।
तहां भोग भू जान यहां सुख कारनी, इन गति छेद जजों थुति है अघ हारनी ॥

ॐ ह्री धातकी खड पूर्व दिशा रम्यक क्षेत्र सबधि मध्यम भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६॥

इस ही धरा मध्य नाभी गिरि है सही, तुंग ढोल आकार गोल ताकी मही ।
या में उतपति छेद भये शिव रायजी, तिनके पद ले अर्घ जजों मन लायजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा नाभि गिर गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥७॥

॥ रुक्मि कुलाचल स्थित जिन चैत्यालय पूजा ॥

छंद गीतिका—खंड धात सु पूर्वदिश में, रुक्मिनाम कुलाचला । तिस ऊपरै जिन थान सुंदर, देखि सुर खग मन चला ।
ते बिंब पूजें भक्ति सेती, भावना हम यहां करें । करि थापना आह्वान जुत ही, पूज अपने दुख हरैं ॥

ॐ ह्री धातकी खड पूर्वदिशा रुक्मिनाम कुलाचलस्थित जिन चैत्यालयस्थजिन अत्रावतर २ आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा रुक्मिनाम कुलाचलस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा रुक्मिनाम कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ अत्र मम सन्निधौ भव भव, सन्निधिकरणम् ।

छंद अडिल्ल—

निरमल नीर सु लाय शुद्ध भावन सही, कनकझारिका धार भक्ति उरमें लही ।
खंड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन सुभग सुगंध नीर घसि लाइके, नाना विधि थुति कंठ कीन चित लायके ।
खंड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशरुक्मिकुलाचलस्थित जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत कुन्द समान अखंडित आन है, लायो नख शिख शुद्ध अखय पद मान है ।
खंड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौ मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम ॥ ३ ॥

नाना वरण सुगंध फूल शोभा मई, लायो पूजन काज हरप उरमें सही ।
खण्ड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिन पे जो जिन थान जजौ मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा रुक्मिकुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

षटरस जुत नैवेद्य तुरत कर लाइयो, खाजा फीणी और अधिक करवाइयो ।
खण्ड धातकी पूरव दिश रुक्मिगिरा, तिनपे जो जिन थान जजो मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय तमहारक ले आइयो, चाहत ज्ञान उद्योत देव गुण गाइयो ।
खण्ड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जोजिन थान जजौ मो अघहरा ॥

ॐ ह्री धातकीखंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप सुगंध कपूर आदि मिलवायके, खेवन आयो जिन पद आगे भायके ।
खण्ड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी सुखमई, इन आदिक फल लेय चरन आयो सही ।
खण्ड धातकी पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिनपे जो जिन थान जजो मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अच्छत पुष्प चरु दीप ही, धूप फला इन आदि अरघ ठानी मही ।
खण्ड धात की पूरब दिश रुक्मी गिरा, तिंनपे जो जिन थान जजौं मो अघहरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मि कुलाचलस्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद पद्धरि—दिश खण्ड धातकी पूर्वजोय, तहां रुक्मी परवत शीश होय । जिन मंदिरमें जिन बिंब जान, हमपूजें तिनको अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा रुक्मिपर्वत संबन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

पूरब दिश धातकि खंड थान, रुक्मी गिरि पै शुभ कूट जान । तिस थानक उतपति छेद सोय, ते पूजों मन वच काय जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी कुलाचल सबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥२॥

दिश पूर्व धातकी खंड जान, तहँ पर्वत रुक्मी नाम मान । तिन कूटन वासी देव सोय, तिस गति छेदक पूजों सु जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी कुलाचल सबंधि कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥३॥

दिश पूर्व धातकी खंड जान, रुक्मी गिरि को शुभ कुन्ड मान । ता के मधि उतपति छेद सोय, तिनके पद पूजों भक्त होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी कुलाचल संबधि महा पुडरीक ह्रद उतपति छेदक अर्घम् ॥४॥

पूरब दिश धातकि मेरु जोय, तहाँ रुक्मी गिरि को कमल सोय । ताकी गति उतपति छेद सोय, तिनके पद पूजों अर्घ जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा रुक्मो कुलाचल सबधि महा पुन्डरीक ह्रद स्थित कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥५॥

पूरब सु धातकी खंड जोय, रुक्मी गिरि उतपति सरित सोय । इन में उतपति हर देव जान, तिनके पद पूजों अर्घ आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मी गिरि संबंधि नदी उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६॥

इसही रुक्मी गिरि कुंड सोय, तहँ कमल निवासी देव होय। याकी उतपति के छेद जोय, तिनके पद पूजें हर्ष होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा रुक्मी गिरि सवधि कमल वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥७॥

रुक्मी गिरि धातकि खंड सार, पूरव दिश हृद ताको सुधार। तहँ रहैं देवि परिवार देव, तिन गति हरि पूजों धार सेव ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा रुक्मी गिरि सवधि कमल निवासी देवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥८॥

चौपाई–खंड धातकी पूरव दिशा, क्षेत्र हिरण्य रहै शुभ लसा। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा सवधि हैरण्यवत क्षेत्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥९॥

इसही क्षेत्र मध्य के मांहि, नाभी गिरि शुभ पर्वत ठाहिं। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूव दिशा हिरण्यवत क्षेत्र सवधि नाभिगिरि छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१०॥

इसही क्षेत्र हिरण्य जु मांहि, कल्प वृक्ष दश विधि के ठाहिं। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातको खड पूर्व दिशा हिरण्यवत क्षेत्र भोगभूमि सवंधि दश प्रकार कल्प वृक्ष गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥११॥

क्षेत्र हिरण्य आर्य शुभ सार, तिनमें मनुष पशू बहुधार। याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा हिरण्यवत क्षेत्र सवधि मनुष्य पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१२॥

छंद–अडिल्ल—

खंड धातकी पूरव दिश रुक्मी गिरा, क्षेत्र हिरण्य सु सार और शोभा धरा।
इनमें उतपति देव नरा तिरयग सही, तिन पद छेदक देव जजों पुण्य की मही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा रुक्मीगिरि तथा हिरण्यवत क्षेत्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१३॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–खंड धातकी पूर्व दिश, रुक्मी गिरि शुभ थान। तिनपे जिन मन्दिर सुभग, मैं पूजों धरि ध्यान ॥१॥

छंद–वेसरी

इसही गिरि पूजन सुर आवै, नाना खग बहु भक्ति उपावै। मधुरी ध्वनि गावैं स्वर लाई, नृत्य करैं बहु युक्ति उपाई ॥२॥

तार तार मुख तें इम भाखै, आप दीनता उर में राखै। इस विधि करि खग तो निज जाई, अपने करे सफल भव भाई ॥३॥

हम जाने की शक्ती नाहीं, भक्ति भाव पूजन को चाही । तातें यह विनती है मेरी, काटो देव जगत की फेरी ॥४॥
मैं अति दीन दीनपति देवा, भव भव मो को हो प्रभु सेवा । और न वांच्छा मेरे स्वामी, तार मोहि अब अन्तरयामी ॥५॥
तुम बिन और देव सब रागी, तातें मैं तुम पूजन लागी । तुमको पूज भये पशु देवा, मैं इम जान करों तुम सेवा ॥६॥

दोहा—
शक्ति हीन जाणों नहीं, भक्ति प्रेरणा पाय । यातें इसही थान ते, जजों महा थुति लाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा रुक्मी नाम कुलाचल सबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् (इति)

॥ धातकी खंड की पूर्व दिशा में शिखरी पर्वत संबंधि पूजा ॥

दोहा—
खंड धातकी पूर्व दिश, शिखरी पर्वत जान । ताके ऊपर जिन भवन, थापि जजों इह थान ॥

ॐ ह्रीं धातको खंड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत सबंधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत सबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत संबधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

छंद—अडिल्ल—
निरमल नीर सु लाय सुभग पातर सही, भक्ति भाव करि पूजन की शुभ विधि ठही ॥
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥१॥

चंदन घसि शुभ नीर भाव शुचि लाइये, कनक झारिका धार घने गुण गाइये ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा शिखरी पर्वत स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदन ॥२।

अक्षत लाय अखंड अखै पद कारणै, भावन भावन सार, कुमति के कारने ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥

नाना वरण सुगन्ध फूल सुर वृक्षके, कामनाशके काज लाय शुभ धरम के ।

खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥

घनरस जुत नैवेद्य तुरत करवायके, पातर धर उर भक्ति भाव चित लायके ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥

दीपक मणिमय सार हार तमके सही, कनकथाल में लाय भक्ति मुखतें रही ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥

दशधा गंध मिलाय धूप करके भली, ले आयो शुभ भाय वास चहुँदिश चली ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी जानिये, इन आदिक फल और घने ले आनिये ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन थान, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु दीप हो, धूप फला इन आदि अर्घ आगे ठही ।
खंड धातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिस पर सो जिन चन्द्र, जजों सब अघ हरा ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरी कुलाचलसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥

।

हरा ॥

:थ जिनेभ्यो महार्घम् ॥

छंद अडिल्ल—

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

पूर्व धातकी खण्ड नाम शिखरी सई, सुन्दर वरण सुथान महा शोभा मई।
इनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मद टार है॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा शिखरी पर्वसम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम्॥ १॥

इस ही गिरि की कूट तुंग शुभ जानियें, सुखदायक है नयनन को यह थानिये।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसबधि सिद्धकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ २॥

खण्डधातकी पूरब दिश शिखरी गिरा, तिनमें जो शुभ कुंड नीरसे है भरा।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसम्बन्धि ह्रद उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ३॥

पूरब दिश, शिखरी गिर धातकि, खण्ड में, ह्रदमांही जो कमल नीर परखण्ड में।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसम्बन्धि ह्रदकमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम॥ ४॥

खण्ड धातकी पूरवदिश को जानिये, शिखरी गिरि तें उतपति सरिता मानिये।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा शिखरी गिरिसम्बन्धि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ५॥

इस ही शिखरी गिरि कै कमल निवासिनी, देवी औ परिवार दुःख की नाशिनी।
तिनमें उतपति छेद सोय सुखकार है, तिनके पद मैं जजों सकल मदटार है॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा शिखरीगिरिसम्बन्धि देवी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्॥ ६॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—

खण्ड धातकी पूर्वदिश, शिखरी गिरि सुखदाय। तापे जिनथल को जजों, मन वच काय लगाय॥

॥ छद वेसरी ॥

इस गिरि धाम कह्यो जिन केरो, तुंग घनो अरु है बहु फेरो । सुर खगही तहँ वंदन जावे, नाना थुति कर अर्घ चढावे ॥ २ ॥
करौं गान मधुरी ध्वनि सोई, नटै नाट उर भक्ति सँजोई । अपने जनम सफल करवावै, जय जय जय जय घोष करावे ॥ ३ ॥
करै वीनती सुर खग आई, तार तार मोको जिनराई । या भव गहन वनी के माँही, तुम बिन कोई शरणो नाहीं ॥ ४ ॥
तुम शरणै आवे जो जीवा, सो जिय पावे सुसुख सदीवा । भो जिन तुम देवन के देवा, हरो पाप बकसो निज सेवा ॥ ५ ॥
सफल जीव ने जो तन पायो, श्रीजिनको नित अंग गमायो । ऐसे भक्तिधार सुर जावे, ताफल बहु विधि पुण्य उपावे ॥ ६ ॥

सोरठा— भक्तिवान तहँ जाय, मैं तो सब विधि दीन हूँ । तातैं इस ही ठाय, पूजन भावन सों करों ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा शिखरीपर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालयजिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खण्डके पूर्वदिशा में स्थित ऐरावतक्षेत्र पूजा ॥

छंद अडिल्ल— ऐरावत शुभ क्षेत्र धातकी खण्ड है, शोहै जिनवर थान पुण्य परचण्ड है ।
जाने की नहि शक्ति भाव पूजन भयो, तातैं इसही जगह थापि पूजन ठयो ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ट तिष्ठ । ठ ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

चौपई—निरमल नीर भाव शुभ लाय, कनकपात्र में ले शुध भाय । खण्ड धात पूरव दिश सोय, पूजौं जिन थल मन वच होय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन बावन घसि कर होय, पावन नीर मिलाया सोय । खण्ड धात पूरव दिश सोय, पूजौं जिन थल मन वच होय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल खण्ड न कोय, लायो कर शुध हर्षित होय । खण्डधात पूरव दिश सोय, पूजौं जिन थल मन वच होय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

सुरतरु जैसे फूल सुलाय, गंध रंग तिनमें अधिकाय । खण्ड धात पूरव दिश सोय, पूजौं जिन थल मन वच होय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नानारस नैवेद्य बनाय, सुभगपात्र में धर उमगाय । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिनथल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिश ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई बनवाय, कनकथाल में सो धरवाय । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिश ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप अगर की दश विधि कही, सो में लायो हुलसत मही । खण्ड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्व दिशा ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम सुजान, इन आदिक शुभ फल ले आन । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत अरु फूल, दीप धूप फल चरु अनुकूल । खंड धात पूरब दिश सोय, पूजों जिन थल मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

खंड धातकी पूरब दिशा, ऐरावत खेतर शुभ लसा । सिद्ध क्षेत्र तहँके सब जोय, तिनके अर्घ जजों सुख होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिश ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ ॥ १ ॥

इसही ऐरावत थल माहिं, विजयारध परवत शुभ ठाहिं । ताके ऊपर श्रीजिन गेह, सो मैं पूजों कर बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध स्थित चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खण्ड धात पूरब दिशि जान, ऐरावत खेतर शुभ मान । है उपसागर तामें मही, ता गति छेद नमों इस ठहीं ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही ऐरावत दधि माहिं, देव रहैं मगधादिक ठाहिं । तिन गति छेद भये शिव राय, तिन पद पूजों अर्घ मिलाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि मगधादिक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इस ही ऐरावत के माहिं, नगर अयोध्या दिक बहु ठाहि । तिन गति छेद भये शिवराय, तिन पद पूजों अर्घ मिलाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अयोध्यानगरी,गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही ऐरावत का सही, विजयारध गिरि उत्तम मही । इसमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजो मद खोय ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इस ही ऐरावत के माहिं, विजयारध के कूट बताहिं । इसमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

खड धातकी पूरब दिशा, ऐरावत विजयारध लसा । ताके कूट निवासी देव, ता गति छेद जजों करि सेव ॥

ॐ ह्रीं धातकीखडपूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि विजयार्द्ध स्थित देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

धात खण्ड ऐरावत माहिं, पूरब दिश तहँ नन्दी पाहिं । तिन गति छेद भये भवपार, तिनको जजों अर्घ शिरधार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि नदी गतिच्छेनक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

इस ही ऐरावत थल माहिं, पंचमलेच्छ खण्ड समझाहिं । तिनमें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि पंचम्लेच्छ खड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

खण्ड धात ऐरावत जान, पूरब दिश वृषभाचल मान । ता में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।'

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि वृषभाचलगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इस ही ऐरावत की सही, आरजखण्ड महा शुभ मही । तामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्रसम्बन्धि आर्यखडगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

इस ही आरज खण्ड सु माहिं, जिन चौवीस हुए सुख पाहिं । तिनके पद में अरघ चढाय, पूजत हौं मन वच तन काय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इस ऐराबत खेतर माहिं, होनहार चौबीसी पाहिं । तिन जिन बीस चार अवलोय, पूजों मन वच अरघ सजोय ।

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धिअनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

ऐरावत इसही थल मांहि, वर्तमान जिनके सुखदाहि । तिनके पद वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ उतारों भक्ति बढाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

इस ऐरावत खेतर माहिं, तीनों चौबीसी सुख दाहि। तिनके पद शुभ अर्घ चढाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधि भूत भविष्यत वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छंद अडिल्ल— खण्ड धातकी पूरब दिशको जानिये, ऐरावत शुभ क्षेत्र तहां सुख थानिये।
तामें उतपति छेद भये भव पारजी, तिन पद पूजों अर्घ धार कर थारजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पूर्वदिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— खण्ड धातकी पूर्वदिश, ऐरावत शुभ थान। धाम तहां जिन देवके, जजों अर्घ ले आन ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

तिनके पूजे शिवसुख होई, अधिक और महिमा कहा जोई। पूजै सुर नर खग सुख काजे, देख विभूति देव सब लाजे ॥ १ ॥
तुङ्ग घने शुभ है आकारो, जिनको लखे मिटै अघ भारो। पुण्य विना उस थल किम जइये, तातें यहां ही भावन भइये ॥ ३ ॥
अष्टद्रव्य ले पूजा कीनी, भक्ति विषै निज परिणति दीनी। अरघ उतारों अघ क्षय काजे, ता फल पूरब कृत अघ भाजे ॥४॥
करों वीनती भो जिन देवा, आय लई तुम पद की सेवा। तुम शरणै विन काल गमायो, सो सब विरथ गयो अघ पायो ॥५॥
अब काउ पुण्य योग तें देवा, आय लई तुम पद की सेवा। मो को तार वैन इम गाये, इत्यादिक करि पुण्य उपाये ॥६॥

सोरठ— पूजे जिनके पाय, अष्ट द्रव्य मिलवाय के। जय जय जय जिनराय, नमों चरन शिव कारणै ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि जयमालाऽर्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खंड पश्चिमदिशा अचल मेरु सम्बन्धी पूजा ॥

चौपई—खण्ड धातकी पश्चिम मेरु क्षेत्र कुलाचल आदिक हेर। जहां तहां जिन थानक होय, ते हौं जजों शुद्ध मन होय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा सबंधि मेर्वादिचैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिमदिशासबंधि मेर्वादि चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिमदिशासंबंधि मेर्वादि चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छंद अडिल्ल—

निरमल नीर सु भाय लाय सुख कारजी, कनक पात्र धरि भक्ति भाव बहु धारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल॥ १॥

चंदन घसिहों निर्मल नीर मिलाय के, कनक पात्र ले धार भाय मन लाय के।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चदन॥ २॥

अक्षत उज्वल खंड विना शुभ लाइयो, कनक थाल में धाल घने गुण गाइयो।
खंड धात की पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत०॥ ३॥

फूल सुगंध मनोज्ञ वरन नाना सही, सो ले अपने हाथ यजन मन सो ठही।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशाया मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प०॥ ४॥

नाना रस नैवेद्य बनाये सुख करा, खाजा फीणी आदि लाय हों सुख करा।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशायां मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य०॥ ५॥

दीपक रतन मई शुभ तम के हारजी, कनक थाल भरि आने कर थुति सारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशाया मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीप०॥ ६॥

दशधा धूप मिलाय गंध बहुकारजी, खेऊं अगनि मझार पाप क्षय कारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषैं, है जिन थान सु जजों तास फल अघ नशै॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा संबंधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूप०॥ ७॥

श्रीफल लौंग विदाम सुपारी खारका, इन आदिक फल सारमुक्ति कर तारका।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, हैं जिन थान सु जजौं तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा संबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलं० ॥ ८ ॥

जल चंदन अच्छत पुष्पं चरु दीप ही, धूप फलादिक ठान अरघ करमें ठही।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजौं तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा संबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ९ ॥

अष्ट द्रव्य करि अर्घ बनाया सारजी, पूजन को उमगाय बना मन हारजी।
खंड धातकी पश्चिम मेरादिक विषै, है जिन थान सु जजौं तास फल अघ नशै ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा संबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यों महार्घं ॥ १० ॥

जयमाला

दोहा— खंड धात पश्चिम दिशा, मेरादिक जिन थान। ते हौं पूजों भाव धरि, जानत केवलज्ञान ॥ १ ॥

छंद—वेसरी

पश्चिम दिश के धातकि माही, जिन थानक जिस तिस थल माहीं। ते हौं पूजों मन वच काई, ताके पूज बने शिव पाई ॥ २ ॥
शक्ति वहां जाने की नाहीं, प्रेरी भक्ति हिये उमगाही। ता वसि इस ही थल तें भाई, यजन आठ विधि अर्घ चढाई ॥ ३ ॥
ताकूं पूजन सुर सब आवै, खग पूजे बहु पुण्य उपावै। दीन होय मुखतें थुति बोले, लगे आपने अघ सब धोले ॥ ४ ॥
करै नृत्य मधुरी धुनि गावै, नाना विधि संगीत बजावै। अपनो जनम सफल ता मानै, ज्यों ज्यों जिनकी भक्ति आनै ॥ ५ ॥
कह मुखसे श्री जिनवर देवा, भव भव माहिं देह तो सेवा। तेरी सेवा है सुख दानी, यह कहते हैं मुनिवर ज्ञानी ॥ ६ ॥

दोहा— इत्यादिक सुर खग नरा, थुति कर पूज सिधाय। हमहू इस थानक थकी, पूज भावना भाय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिमदिशा संबधि मेर्वादि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं ॥ इति० ॥

॥ धातकी खंड के पश्चिम में स्थित भरत क्षेत्र पूजा ॥

दोहा— खंड धात पश्चिम दिशा, भरत क्षेत्र शुभ थान। तहां गेह जिन देव के, जजौं थाप इस थान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् । आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ, तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ संन्निधिकरणम् ।

छंद अडिल्ल—

क्षीरोदधि को निरमल नीर सु लाइयो, नाना विधि जिन देव तने गुण गाइयो ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं० ॥ १ ॥

चंदन गंध अपार सु घस करि लाइयो, नाना विधि जिन देव तने गुण गाइयो ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं० ॥ २ ॥

खंड विवर्जित अक्षत उज्वल जानिये, शुद्ध नीर से धोय आप कर आनिये ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

फूल सुगंध अपार वरन नाना मई, मानो सुर तरु तने अधिक शोभा लई ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्रसंबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं० ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बने सुख दायजी, सो मैं कनक तने पातर धर लायजी ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुन्य बहु पावना ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं० ॥ ५ ॥

दीपक तम हर लाय भक्ति मन में धरी, लेय आरती आप वचन मन तन करी ।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुन्य बहु पावना ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपं० ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगंध अगर आदिक करी, वह्नी शुभ पर जाल लेय तामें धरी।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशासम्बन्धि भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग बिदाम मिलाइयो, इन आदिक फल और लेय उमगाइयो।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशासम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु दीप ही, धूप फलादिक ठान अरघ करमें ठही।
खंड धातकी पश्चिम भरत सुहावना, पूजत श्री जिनदेव पुण्य बहु पावना ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—पश्चिम धात खण्ड के माहिं, भरत विषै जिन थानक पाहिं। तिनको अष्ट दरब मिलवाय, पूजत हो नाना गुण पाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

खंड धातकी पश्चिम जान, है वैताढ खगा चल मान। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि वैताढ गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खंड धातकी पश्चिम दिशा, भरत अयोध्या नगरी लसा। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि अयोध्यानगरी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

खंड धातकी पश्चिम सार, सागर रक्षक सुर वल धार। या की उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि सागर रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इस ही गिरि वैताढ मझार, कूट कहे सुन्दर आकार। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि वैताढ कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इसही खग गिरि कूटन शीश, देव बसे हैं, विसवा बीस । तिनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्ध कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही विजयारध पे जान, सिद्धकूट पे जिन थल मान । तिनमें बिंब विराजै सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि विजयार्द्धस्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

खंड धात पश्चिमदिशि माहिं, म्लेच्छ भरत के पंच बताहिं । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिम दिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धि पंच म्लेच्छ खंड उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

खंड धात पश्चिम दिशि जान, तामें वृषभाचल गिरि मान । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि वृषभाचलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

इसही भरतक्षेत्र के माहिं, सिद्ध क्षेत्र पुण्य की ठाहिं । तिनमें मन वच काय लगाय, अर्घ चढाऊं भक्ति उपाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि सिद्ध क्षेत्रभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

पश्चिमधात भरत के माहिं, गति हर सिद्ध भये दुख नाहिं । और सिद्ध क्षेत्र जिन थान, इन पद अर्घ जजों धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनेभ्यो महार्घम् ॥ ११ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— पश्चिम धात सु खंड में भरत थान जिन धाम । तिनमें पूजों अर्घ धरि, चहत मोक्ष का ठाम ॥ १ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

खंड दूसरा जानो भाई, पश्चिम दिश में भरत उपाही । तामें जिनके धाम अनूपा, जजों मिटै सब अघ की धूपा ॥ २ ॥
जाने की मो शक्ति नाहीं, इस ही थल में भावन भाई । करों पूज मेरे शुभ काजे, आठ दरब श्री जिनराजे ॥ ३ ॥
करों भक्ति जो जिनवर देवा, भव भव मोहि देव निज सेवा । भक्ति किये तेरी शिव जावे, भजे देव जिन सुर उपजावे ॥४॥
या भव गहन वनी के माहीं, क्रोधादिक जिय क्रूर रहाहीं । व्यसन सात भीलन की बस्ती, तिन आगे सब का बल नस्ती ॥५॥
ऐसी अटवी में हम आये, भो जिन बहुविधि संकट पाये । सो दुख तुम विन कौन निवारे, मै अनाथ हूँ शरण तिहारे ॥६॥

दोहा— ऐसी विनती करत ही, उपजत पुण्य सु आय । नमों चरण को शीश मैं, जय जय जय जिनराय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र सम्बन्धि जिनालयस्थ जयमालाऽर्घम् ॥ इति ॥

॥ हिमवान पर्वत सम्बन्धी जिनालय पूजा ॥

दोहा—खंड धात पश्चिम दिशा, गिरि हिमवन शुभ जान । तिस शिर जिन मन्दिर सही, जजों थापि थुति आन ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवन कुलाचलसंबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर ।

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवन कुलाचलसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ ।

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवन कुलाचल संबधि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

चौपई—नीर मनोहर झारी धरों, ले अपने कर थुति अनुसरों । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥१॥

चंदन भलो गंध जुत सार, कनक तने पातर में धार । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवतपर्वत सम्बन्धि जिनालयस्थजिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल स्वच्छ अपार, मुक्ताफल से श्वेत सुधार । धात सु पश्चिम हिमवन सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

नाना वरण फूल शुभ सार, ले आये अति ही सुखकार । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवतपर्वत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नूतन रसमयकर नैवेद, लायो कर उरको निरखेद । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वतसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई सुखदाय, लायो तम नाशन हित भाय । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्री धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम ॥ ६ ॥

धूप सुगंध लाय दशजात, अगनि विषै डारों उमगात । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपार, इन आदिक बहु फल करधार । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत चरु लेय, फूल दीप फल धूप मिलेय । धात सु पश्चिम हिमवत सोय, ताके जिन वन्दूं मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—याहि हिमाचल ऊपर सही, कूट कहे अति शोभा मई । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १ ॥

इनही कूटन पे सुर रहैं, अपनी शुभ परिणति फल लहैं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत कुलाचलसम्बन्धि कूट निवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि हिमाचल पे इकजान, कुंड पदम नामा सुख खान । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा हिमवतपर्वत सम्बन्धि पद्महृद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इस ही पदम कुंड के माहिं, है शुभ कमल शोभ अधिकाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वत पद्महृदसम्बन्धि कमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

या ही हिमवत कुंड जु माहि, कमल वासिनी देवी ठाहिं । ता गति छेद भये सिध सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वत पद्महृद सम्बन्धि कमलनिवासी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही हिमवन गिरितें सार, नन्दी निकली जल की धार । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवत पर्वत सम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६ ॥

खंड धात पश्चिम दिश जान, हिमवत क्षेत्र सुशोभा थान । याकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवतक्षेत्र सम्बन्धि उत्पत्तिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

छंद अडिल्ल—
खंड धातकी पश्चिम दिशि हिमवन सही, तामें बहु विधि रचना अति ही बन रही ।
तिनमें उतपति छेद सिद्ध पद पाय है, तिन पद अर्घ चढाये उर मद जाय है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा हिमवन पर्वत उत्पत्तिछेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

ीन

ोक

॥ जयमाला ॥

दोहा— परिचम गिरि हिमवन शिखर, खंड धातकी मांहिं । तहां गेह जिन देवके, जजों भक्ति मन लाय ॥ १ ॥

छंद पद्धरि—मैं शक्ति हीन बहु देव नाथ, वहां जाना नहिं मेरे जु हाथ। धनि जीवन को तहँ पूज जाय, मैं इसही थलतें भक्तिभाय॥२॥

भो देवां पति जिन देव नाथ, मैं अरज करूं हूँ जोरि हाथ। अति दीन मोहि जानों सुदेव, मैं जाचों भव भव आप सेव।३।

तुम सेवा करें मुनिन्द आय, जिन सेवा पातक दूर जाय। हरि सुर पूजें बहु भक्ति जोय, मैं हूँ पूजों इक चित्त होय ॥४॥

मैं किये पाप बहुते सुजान, ताको फल दुखदा अब पिछान। तातें भो जिनवर अरज येह, दुख नाहिं मोहि हो करो जेह ।५।

तुम विना और नहिं दीन पाल, मैं दीन घनों बुध को जु बाल। तुम करुणासागर भो जिनेश, मेरो अति ही प्रभु दीन भेष ६

इम जान तार देवाधि देव, मैं आठ दरव ले करो सेव। तुम नाम धार ते सुगति होय, तो भक्ति मोहि दे नमों तोय ॥

दोहा— ऐसे थुति कर भाव जुत, खंड धात की थान। पश्चिम दिश जिन देव थल, जजों 'टेक' उर आन ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा हिमवान पर्वत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जयमालार्घम् ॥

॥ धातकी खंडके पश्चिमदिशा में स्थित महा हिमवान गिरि पूजा ॥

चौपई—खंड धातकी पश्चिम दिशा, महा हिमवान कुलाचल लसा। ता पर हैं जिनवर के थान, तेहू जजों थापि इस थान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

छंदपुअडिल्ल— निरमल जल शुभ गंगादिक को लाइयो, कनकझारिका माहिं धार गुण गाइयो।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

चंदन महा सुगंध नीर घसि लाइयो, ताकी गंध लुभाय भ्रमर भरमाइयो।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥

ॐ ह्री धातकी खड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षत उत्तम खंड-विना उज्वल सही, मुक्ताफल से शोभमान अखियन मही ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

सुर द्रुम से वर कुसुम लाय करपें लिया, नाना वरण अपार गंध जुत शोभया ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

षटरस पूरित तुरत ठान के चरु किया, कनकथाल में लेय हृदय हर्षित भया ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक मणि आकार महातम के हरा, लेय आरती आयो सुर शिव की धरा ।
पश्चिम धातकि खड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि जिनलायस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप सुगंध मिलाय महा सुखदायजी, लायो अग्निमझार खेवने भायजी ।
पश्चिमधातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग विदाम सुजानिये, इन आदिक फलसार भाव धरि मानिये ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्डपश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत फूल चरु दीप ही, धूप फला वसु द्रव्य अर्घ तिनकी मही ।
पश्चिम धातकि खंड महा हिमवान है, ताके जिन थल जजों पुण्य के थान है ॥
ॐ ह्री धातकीखड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचलसबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—याहि महा हिमवन गिरि शीश, कूट कहे सुन्दर जगदीश । तामें उतपति हर शिव होय, तिनपद अर्घ जजों मद्खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचचल सम्बन्धि कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

इस ही कूटन के थल माहिं, देव रहै निज पुण्य वसाहिं । तिन गति छेद भये भव पार, ताके पद पूजों थुति धार ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि महा हिमवन गिरि माहिं,कुंड वन्यो तहँ वहु जल पाहिं । ताकी उतपति हर शिव होय,तिन पद अर्घ जजों मद खोय ।

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा महा हिमवान गिरि सवधि महापद्महृदगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही गिर हृद माहि सुजान, पुण्य कमल को सुन्दर पान । ताकी उत्पति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखड पश्चिमदिशा महाहिमवान सम्बन्धि कमलगतिछेदक जिनेभ्या अर्घम् ॥ ४ ॥

याही कमल किरणका मांहि, देवी रहै महा सुख पाहिं । याकी उतपति हरि शिव होय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचलसम्बन्धि कमलवासिनी देवीगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही देवी के परिवार, देवी देव वसै अतिसार । तिन गति छेद भए भवपार, तिन पद अर्घ जजो थुति धार ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल कमलनिवासिनी देवी परिवार देवी देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

इस ही हृदतै जल की रासि, नदी दोय चली जिन भासि । तिनकी उतपति छेदक सोय,सो सिधपूजौं मनमद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महाहिमवान कुलाचल सम्बन्धि नदीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

छन्द अडिल्ल—

जघन भागभू महा हिमवन भरतसी । एक पल्य तिथि एक कोश तन सुख लसी ॥
ऐसे नर पशु होय कालका सरल है । तिन गतिछेदक देव पूजतें अघ दहै ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान दक्षिण दिशा जघन्य भोग भूमि नर पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

इसही जघन भोग भूमिही जानिये । परवत ढोलाकार नाभि गिर मानिये ॥
याकी गति हरि देव भए सिध सोय है । तिनके पद मैं जजों हरण मन होय है ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिमदिशा महाहिमवान पर्वत दक्षिश दिशा जघन्य भोग भूमि नाभि गिर नाम पर्वत उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

आयु दाय पाल-काय ...

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम महाहिमवान उत्तर दिशा मध्यभोग भूमिगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

इसही के मधि आर्य क्षेत्र में जानिये । नाभि नाम गिर सोय ढोल सो मानिए ॥
याकी उतपति छेदक सो पूजों सही । आठ दरब से अरघ ठानि पूजों यहीं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा महा हिमवान उत्तर दिशि मध्य भोग भूमि वृषभाचल पर्वत उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

ऐसे मह हिमवान संबंधी उतपति । भोग भूमि दोय जघन मध्य वरतें जिती ॥
इनमें उतपति छेद भए भव पार जी । तिनके पद में जजों महा सुखकार जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा महा हिमवान कुलाचल संबंधि जघन्य भोग भूमि, मध्य भोगभूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–पश्चिम दिशा जु धातकी, महा हिमवन गिर सोय । ता पर जिन मंदिर सही, ते पूजों मद खोय ॥ १ ॥

छन्द वेसरी

खंड धातकी पश्चिम भाई, महाहिमवान कुलाचल थाई । लंबो तो क्षेतर सम जानो, ऊंचो चौडो अति सम मानों ॥ २
तामें कुण्ड कमल मधि जानो, देवी धाम फूल में मानों । और कमल बहु हैं तिम माहीं, तहँ देवी परिवार रहाहीं ॥ ३
नदी चलैं नीर विकराला, बडी धार अरु वेग कराला । ऊपर शिखर तने हैं कूटा, तिनमें देव रहें अघ छूटा ॥ ४ ॥
और कूट इकपे जिनगेहा, तहँ सुर खग पूजैं कर नेहा । करैं भक्ति नाना गुण गावें, अपने आनम सुफल करावें ॥ ५
दोऊ पारस गिर के माई, जघन्य मध्य आरज थल थाई । तिन दोऊ क्षेतर के माहीं, दोय नाभि गिर हैं सुख ठाहीं ॥ ६
इत्यादिक रचना बहु होई, जाने जिनको विरला कोई । गिरपै जो जिन भवन बताये, ताकों हमने शीश नवाये ॥ ७

दोहा–ऐसे जिन पूजकनिको, मन वच भावन भाय । "टेक" सांच जीवन जिको, जिनवर को गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा महा हिमवान कुलाचल संबंधि जिनपूजा जयमाला पूर्णार्घं (३

तीन लोक

॥ धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधी पूजा ॥

चौपई—खण्ड धातकी पश्चिम दिशा, नाम निषध पर्वत शुभ लसा। तापे जिनके मंदिर सार, सो इहां थापि जजों सुख धार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिनालयस्थ जिन अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चौपई—जल निर्मल गंगादिक लाय, तिन ढिंग लावत पाप पलाय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

चन्दन निरमल जल घसि लाय, मन वच तन करि भक्ति उपाय। खड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल शुद्ध अपार, मुक्ताफल से धर कर सार। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगंध वरन अधिकाय, तिनकी माल ठानिले आय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, खाजा केनी आदिक लाय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तमहार, भरकर थाल लाय हितकार। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगंध मिलाय, अगनि विषै खेऊं मन लाय। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध कुलाचल जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बादाम सुपार, इन आदिक बहु फल ले सार। खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

तीन लोक

जल चंदन अक्षत पुष्प सार, नैवेद दीप धूप फल धार । खंड धातकी पश्चिम माहिं, निषध जिनालय जजों सुमाहि ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

सोरठा—इसही गिरतैं सोय, नदी निकसती जल भरी । ता गति छेदक होय, तिन पद पूजों अर्घ सों ॥
ॐ धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥
इसहि कुलाचल शीश, कुन्ड बन्यो जल राशि को । इन गति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ सों ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥
इनही द्रह विच सोय, कमल रतन मय सार है । तिन गति छेदक सोय, तिनके पद पूजों सही ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥
इसही कमलनि माहिं, देव निवासी सुख करै । तिन गति हरि शिव ठाहिं, ते मैं पूजों अर्घ सों ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि कमल वासिनी देवी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥
इसही निषध सुशीश, कूट कहे ऊरध घने । तिन गतिछेदक ईश, तिन पद अर्घ जजों सदा ॥
ॐ ह्रीं धातको खण्ड पश्चिम दिशा कुलाचल सम्बन्धि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥
इन कूटन के माहिं, देव रहै सुख से सदा । तिन गति छेदक माहिं, सो मैं पूजों अर्घ से ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

छंद—अडिल्ल —

पर्वत कुन्ड कमल सरिता श्री आदि जो, तिन गति छेदक देव जजों अघवाद जो ।
इस गिर के शिर देव जिनेश्वरथान जी, ताको अर्घ जजों मन वच तन आन जी ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

चौपई—इसही निषध कुलाचल जान, भोग भूमि उत्कृष्ट हि मान । ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधि उत्कृष्ट भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—परिश्चम दिश धातकि धरा, निषध कुलाचल जान। तिसपै जे जिननाथ हैं, जजों तास थुति ठान ॥ १ ॥

वेसरी छन्द

इस थल जिन पूजन सुर आवैं, केई खगपति भी वहां जावें। भूमि गोचरी को गम नाहीं, सुरखग पूजैं हित उपजाहीं ॥२॥
जावत ही सब जय जय गावै, बार बार जिन शीश नवावें। कहैं तार भुवितैं जिनराई, तुम थुति भले पुण्यतें पाई ॥३॥
अब सो करो भ्रमण जग छूटै, उर अज्ञान भाव सब टूटै। तुमविन और अज्ञानी देवा, तुम सर्वज्ञ जानि पद सेवा ॥४॥
तुम सो ज्ञान करो सुखकारी, तुम सब जीवन करुणा धारी। मो प्रति अति की दया उपावो, कहो कहा मैं कर्म खिपावों ॥
ऐसे विनती खग सुर ध्याने, धन्य २ अपनो भव मानें। हमतो शक्ति हीन हैं देवा, इस थल तें करि हों तुम सेवा ॥६॥

दोहा—जाने से सुकृत बने, सो अब औसर नाहिं। धर्म चाहि कारन भविक, भाव यहाँ ही माहि ॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घम्। इति

॥ चार गजदंतों के शिखर संबंधी पूजा ॥

चौपई—खंड धातकी परिनम दिशा, चव गजदंत मेरु तें लसा। तिनपै जिन मंदिर सुखदाय, ते सब थापि जजों लवलाया ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतर २ संवौषट्, आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छंद—अडिल्ल—

जे जल निरमल गंध मई सुख दायजी, कनक झारिका मेलि भाव थुति भायजी।
खंड धातकी परिचम दिशि को जानिये, गजदंते जिनथान जजों मद भानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चव गजदंत संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन गंध अपार हेरकर लाइयो, निर्मल जलतें घिस्यो हरप बहु पाइयो।
खड धातकी पश्चिम दिश को जानिये, गजदन्तें जिनथान जजों मद भानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु चवगजदंत संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन । २ ॥

अक्षत उज्ज्वल अखंड सुगन्ध मनोहरा, मुक्ताफल से सुभग हिये विच सुखकरा ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदन्तें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चवगजदंत संबधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगंध अपार वरन नाना सही, कल्प वृक्ष से जान सु निज के कर लही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु चतुर्गजदत सबधि जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद तुरत कर लाइयो, खाजां फेनी मोदक और मिलाइयो ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं खड पश्चिम मेरु गजदत सबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

रतन दीप तम धातक शोभा दाय है, धूम विना परकाश जास ले आय है ।
खड धातकी पश्चिम दिशि को जानियो, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा चतुर्गजदंत संबधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप मिलाय अगर आदिक सही, अगनि खेवने में उमगायो अधि कही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा चतुर्गजदंत संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्री फल लोंग बिदाम सुपारी सुखमई, और अनेक भले शुभ फल मैं ले सही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु चतुर्गजदत सबधि जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु सुखकरा, दीप धूप फल लेय अरघ शुभ अघ हरा ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत सबंधि जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दरव आठ ले उज्ज्वल सुखकारी सही, अरघ बनाये सार महाहित की मही ।
खंड धातकी पश्चिम दिशि को जानिये, गजदंतें जिनथान जजों मद भानिये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घम् ॥

चौपई—इनही गजदंतनपे सोय, कूट कहे सुख दायक सोय । इनमें उतपति छेदक जान, अर्घ जजों ताके पद आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत संबधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

ये ही कूट महा शुभ थान, तिनपै देव बसै जुत ज्ञान । जगति छेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु चतुर्गजदंत संबंधि कूट वासी देव गतिछेद जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याहि मेरु के चव दिशि सही, भद्र शाल वन उत्तम मही । यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम मेरु संबंधि भद्रशालवन उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही मेरु सम्बन्धी सोय, उत्कृष्टी आरज भू जोय । यामें उतपति हरि शिव गये, तिन पद अर्घ जजों शिर नये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु संबधि उत्कृष्ट भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इनही भोग भूमि थल माहिं, जंबू शाल मली वृक्ष ठाहिं । तिनमें देव जिनेश्वर थान, ते हो जजों अर्घ जुत ज्ञान ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम मेरु जम्बुशालमली वृक्ष सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

येही जम्बुशाल्मली सोय, इनपे देव बसै सुख सोय । तिनकी उतपति छेदक जान, तिन पद अर्घ जजों थुति आन ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु जम्बुशाल्मली वृक्ष सम्बन्धि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

पूरब पश्चिम मेरु सुदिशा, जानि विदेह थान शुभ लसा । तिनमें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम पूरब पश्चिम विदेह सम्बन्धि उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

इनही क्षेत्र विदेह मझार, नदी कही महाजल धार । तिनकी उतपति छेदक सोय, अर्घ जजों तिनके पद जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिमदिशा विदेह क्षेत्र सम्बन्धि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इसही क्षेत्र विदेह मझार, और विभंगा नंदी सार। तिनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सम्बन्धि विभगा नदा गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

क्षेत्र विदेह इसी थल माहिं, षोडश गिरि वक्षार सुठाहिं। तिनपै देव जिनेश्वर थान, अर्घ मिलाय जजों जिन स्वामि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह क्षेत्र षोडश वक्षार सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

इनही गिरि वक्षार सु सही, कूट कहे सोहे शुभ मही। जा थल उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम विदेह वक्षार गिरि संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इनही कूटन के सिरदेव, वास करे नाना सुख सेव। तिन गति हर सो शिवपुर गये, तिन पद अर्घ जजों शिर नये ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम विदेह वक्षार गिरि सबधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

इसही क्षेत्र विदेह मझार, है उपसागर बहु जल धार। तिनमैं उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातक खण्ड पश्चिम विदेह सबंधि उपसमुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इनही क्षेत्र विदेह मझार, वृषभाचल पर्वत हितकार। तिनकी उतपति छेदक सोय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय ॥

ॐ धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सबधि वृषभाचल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

धात खण्ड पश्चिम दिशि मांहि, क्षेत्र विदेह खगा चल ठांहि। या की उतपति छेदक सोय तिनपद अर्घ जजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सबधि विजयार्द्ध पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

इनही विजयारध के शीश, है जिनथान जगतपति ईश। तिनमैं बिंब जिनेश्वर सोय, तिनपद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम विदेह सम्बन्धि विजयार्द्ध स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

इसही थांन विदेह मझार, देव रहै नाना थल सार। तिनकी उतपति छेदक होय, तिनकेपद पूजौं मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड मेरु विदेह सम्बन्धि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

ये ही थान विदेह मझार, वरतै सदा देव चवसार। तिनपद अर्घ जजौं मन लाय, ता फल मोक्ष महा फल पाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

छन्द–अडिल्ल— ऐसे थान विषैं वहु जिनके थान हैं, नंदीपुर गिर दीप अरणि अनजान हैं ।
इनमें उतपति छेद गये शिव थान हीं, तिनके पद जुग अर्घ जजौं सुख मान ही ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु विदेह संबंधि सर्व थान उतपति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

जयमाला

दोहा–पश्चिम दिशि धातकि विषै, थल विदेह जिनराज । ते मैं पूजौं भाव सों, अर्घ लेय हित काज ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

खण्ड धातकी पश्चिम दिशा, चार लाख भूवास विशेषा । वलयाकार गोल है भाई इक्षाकार गोल इस थांई ॥ २ ॥
दक्षिण उत्तर यह गिर जानौ, इनतैं क्षेत्र विभाग बखानौं । इनपै दोय जिनेश्वर धाम, ते हीं जजौं सुरग शिव कामा ॥३॥
तहाँ पश्चिम दिशि मैं सुख करि, क्षेत्र एक मधि मेरु सुसारे । तास विदेह क्षेत्र में भाई, रचनावनी कही जिनराई ॥४॥
नदी तालाव बावडी शिखरा, दीप उदधि नगरी सुख आगरा । तिनमें सदा देव जिनराजै, ते मैं नमों सुसुए शिव काजै ॥
तिनथल और जिनेश्वर थान, जजौं देव खग नर पुन्य वान । हम जाने की शक्ति नाहीं, जजौं इहां तैं हम हित लाहिं ॥
दोहा–ऐसे पश्चिम धातकी, श्री जिन क्षेत्र विदेह । सो हम भावन भासके, जजौं ठान वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा विदेह सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम् ॥ इति सम्पूर्ण ॥

॥ पश्चिमदिशा नीलाचल संबंधी पूजा ॥

दोहा–धात खण्ड पश्चिम दिशा, नील कुलाचल सोय । तापें जिनथानक निको, जजौं थाहि सुध होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल जिन चैत्यालय अत्रावतरवतर संवौषट् आह्वानन ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधि करणं ।

चौपई–निर्मल नीर महा सुख दाय, कनक झारिका में धरिलाय । पश्चिम धातकि नील, सुखरा तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिनेभे जल ॥ १ ॥

चन्दन सुभग गन्द अधिकाय, सो मैं नीरथकी घसिलाय । पश्चिम धातकी नील सुधरा, तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल धोय अपार, ले आयो नाना श्रुति धार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

नाना वरण सुगन्ध अपार, फूल माल लायो हित धार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, ता पें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

खाजा फेणी मोदक आदि, क्षुधारोग करने कूं वादि। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपक तमके नाशक सही, कनक थाल भर लायो मही। पश्चिम धातकि नील सुखरा, तापें जिन पूजों मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दश विधि धूप गंध जुतसार, लेआयो उर हरष अपार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन मैं पूजौं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग विदाम अपार, और सुभग फल लायो सार। पश्चिम धातकि नील सु खरा, तापें जिन पूजौं मैं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत शुभ सार, इन आदिक वसु द्रव्य अपार। पश्चिम धातकि नील सुखरा, तापें जिन मैं पूजौं वरा ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—इसही नील कुलाचल तने, कूट महा अति सुन्दर बने। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजौं वसु मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबधि कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

इनही कूटन पे सुर रहै, नाना भोग आपलों लहै। तिन गति छेद भए सिध होय, ते मैं पूजौं अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संवधि कूट वासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

इसही नील कुलाचल तनो, कुन्ड मनोज्ञराशि जल वनो। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल सवधि कुंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

इनही कुंड विषै मणि मई, कमल कूल इक शोभा लही । ता गति छेद भए भवपार, ते सिध पूजों अर्घ सुधार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

इसही कमल तने परिवार, और कमल जानों बहु सार । तिन गतिछेद गये शिव सोय, ते जिन पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं धातको खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि कुण्ड-कमल-परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इनही कमलनमे सुर सोय, वास करै देवी कुल जोय । या गतिछेद भये भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं धानकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि कमल वासिनो देवी परिवार गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही नील कुलाचल थकी, नदी दोय चलै जल पकी । या की उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों उर मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

इसही गिरकी उत्तर दिशा, रम्यक क्षेतर आरज लसा । ताकी उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों उर मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातको खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधि रम्यक क्षेत्र जघन्य भोग भूमि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

याही रम्यक क्षेतर माहिं, नाभिनाम एक पर्वत थाहिं । यामें उतपति हर शिव गये, तिन पद हम पूजों शिर नये ॥

ॐ ह्रीं धतकी खण्ड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संवधि रम्यक क्षेत्र नाभिगिर पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छन्द—अडिल्ल—

ऐसे पश्चिम धातकि नील कुलाचला, नंदो कूट सु कुण्ड फूल आदिक भला ।
इनमें उतपति छेद भये भव पार जी, तिनके थापन अर्घ जजों मद टार जी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संवधि गतिछेदक जिन चैत्यालय जिनेभ्या अर्घम ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—पचिश्म धातकि नीलगिर, तामें जिन को थान । तेमें पूजों भाव धरि, मन वच काया जान ॥ १ ॥

बेसरी—छन्द

पश्चिम धातकि खण्ड सुमाहीं, नील कुलाचल शुभ गिरि ठाहीं । तामें कनक रतन जडवायो, नाना और शोभ जुत गायो ॥
तामें जिनको थान अनूपा, देव खगा पूजें श्रुति रूपा । हमतो शक्ति रहित है भाई, उसथल जान शक्ति नहिं पाई ॥ २ ॥

तातें इह ही भावन भावें, पूजन कर बहु पुण्य उपावें । भाग धन्य हम जानो भाई, जिन पूजन की परिणति आई ॥ ४ ॥

करों वीनती भो जिन देवा, तार तार करिहूँ तुम सेवा । तुमही देव भवोदधितारी, तो मेरी उर करुणा धारी ॥ ५ ॥

तुमविन और न कोय सहाई, तुम विन कारण बंधु कहाई । मैं या भव में अति दुख पायो, भव भरमन तें तुम पद आयो ॥

दोहा—अब जो हम करने जसी, होय सु कीजे देव । 'टेक' हिये ऐसी बनी, तजूं न तुम पद सेव ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल संबधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो पूर्णार्घं ॥

॥ रुक्मी नाम कुलाचल पूजा ॥

दोहा—धातकि पचिश्चम खंड में, रुक्मी पर्वत सोय । तापें जिन मन्दिर सही, जजों थाप इत जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥

अत्र तिष्ठ तिष्ठ. ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

चौपई—निर्मल नीर गंध सो लाय, धरिके कनक थाल में भाय । पश्चिम दिशा धातकी माहिं, रुक्मी गिर पूजों जिन ठाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

बावन चंदन सी कसबोय, लायो घसि जल निर्मल धोय । पश्चिम दिशा धातकी माहिं, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठाहिं ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं ॥ २ ॥

मुक्ताफल से अक्षतसार, खंड रहित उज्ज्वल अधिकार । पश्चिम दिशा धातकी 'मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगन्ध कलपतरु जिसे, ले आयो नाना रंग तिसे । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मिानम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यों पुष्पं ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद बनाय, ले आयो उर भक्ति बढ़ाय । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिमी दिशा रुक्मिनाम कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तम हरा, कनक थाल ले तामें भरा । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप सुगन्ध भेल दश भेद, ले आयो खेवन निरखेद । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग विदाम सुन्याय, इन आदिक फल और सुभाय । पश्चिम दिशा धातकी माहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥८॥

जल चन्दन अक्षत चरुसार, पुष्प दीप फल धूप सुधार । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिर पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

अर्घ बनाय महा सुखकार, ले आयो नाना सुखधार । पश्चिम दिशा धातकी मांहि, रुक्मी गिरि पूजों जिन ठांहि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—याही रुक्मी गिरि के शीस, कूट कहे शोभामय दीस । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल सबधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

इन ही कूटन के मधि जानि, देव रहे नाना सुख मान । तिन गतिछेद भए भवपार, ते सब सिद्ध नमूं सुखकार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याही रुक्मी गिर के शीस, जिन चैत्यालय अति सुखदीस । तिन में बिम्ब विराजै सोय, ते मैं पूजों मन सुध होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाभ कुलाचल जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

याही रुक्मी गिर के माहिं, कुंड कह्यो बहु जल की ठाहिं । ता गतिछेद भए जिनराय, ते जिन जजों अर्घ सुभ लाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल सबधि ह्रदगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याही कुंड थकी दो जान, सरिता निकसी जल की खान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अरघ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल सबंधि द्रह—गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

इस ही रुक्मी गिर ह्रद माहिं, कमल कहे बहु मन वच ठाहिं । ता में उतपति छेतक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबधि ह्रद—कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इन ही कमलन के मधि सही, देवी देव वसें सुख महीं। सो गतिछेदक भए भव पार, सिद्ध नमों ते मंगल कार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि कुलाचल सम्बन्धि कमल वासिनी देवी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

या रुक्मी गिरि उत्तरदिशा, हिरण्यवत क्षेतर शुभ लसा। यामें छेदक उतपति सोय, ते सिध पूजों मनवच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचलत' उत्तर दिशा हिरण्यवत क्षेत्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

या हिरण्यवत खेतर माहिं, उपजै मनुष्य पशू शुभ ठाहिं। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों हर्षित होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि गिरि उत्तर दिशा हिरण्यवत क्षेत्र मम्बन्धि मनुष्य पशु युगलगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या हिरण्यवत की भूजानि, पर्वत नाभि कहे हित खानि। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मनवच होय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम रुक्मि गिरत. उत्तर दिशाया हिरण्यवत क्षेत्र नाभि गिर नामा पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

ऐसे पश्चिम धातकि माहिं, हिरण्य क्षेत्र रुक्मि गिरि ठाहि। इनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि गिर हिरण्यवत क्षेत्र सवधि उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ११ ॥

॥ जयमाला ॥

दोह–पश्चिम धातकी खण्ड में, रुक्मि गिरि पैं जोय। मन्दिर जिन को सो कह्यो, ते पूजों मद खोय ॥ १ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

इस थल जिन पूजन सुर आवै, किन्नर औ विद्याधर आवै। भूमि गोचरी का गम नाहीं, तातैं पूजत हौं इस ठाहीं ॥ २ ॥
द्रव्य आठ का अरघ बनाऊं, भक्तिधार जिनके गुण गाऊं। करूं वीनती भो जिन देवा, भो भो देहि तुम्हारी सेवा ॥ ३ ॥
भक्ति रावरी तें सुर होई, नीच ऊंच दीखै नहिं कोई। शरण तिहारो पशुहुन लीन्हो, तिनको दुख हर कारज कीन्हो ॥४॥
मिनख होय जो तुम गुन गावै, तो वह जीव सहज शिव पावै। तातैं मो सुनि अधमउधारा, तुम बिन और न लागै प्यारा ॥
तातैं जिन अब कीजे सोई, ता विधि मोकों सुख जै होई। तुम तो सब विधि जानत देवा, कहैं कहा बहु दे तुम सेवा ॥६॥

दोहा–ऐसे जिन पूजों यहां, भावन भाय सदीव। ता फल से सुख ऊपजै, औ शुधता ले जीव ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकीखण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—खंड धात पश्चिम दिशा, शिखरी पर्वत जान। ता ऊपर जिन गेह हैं, ते पूजों थुति ठानि ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौषट आह्वाननं ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई—निरमल नीर क्षीर दधि समा, कनक पात्र में धर अतिरमा। धात खंड पश्चिम दिश सोय, शिखरी गिर पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी गिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन सुभग अनूपम लाय, घसि करि उत्तम जल मिलवाय। धात खंड पश्चिम दिश जोय, शिखरी गिर पूजों जिन सोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी गिरि सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत मुक्ताफल से लाय, उज्ज्वल कंद कली सम थाय। धात खंड पश्चिम दिश जोय, शिखरी गिर पूजों जिन सोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

नाना वर्ण फूल शुभ लाय, गंध घनी सुरतरुसी भाय। धात खंड पश्चिम दिश सोय, शिखरी गिर पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातको खड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा फीणी मोदक सार, घेवर आदि लेय सुखकार। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय तम क्षयकार, लेय आरती आयो सार। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि वन्दों जिन जोय।

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरीनाम कुलाचल संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप गंधजुत सही, लेकर खेवन आयो सही। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग बदाम, इनको आदि लेय फल काम। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा शिखरो नाम कुलाचल सवधि चैत्यालयस्थ जिन जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत चरु दीप, पुष्प धूप फल लेय महीप। धात खण्ड पश्चिम दिशि सोय, शिखरी गिरि पूजों जिन जोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घम् ॥

चौपाई—या शिखरी गिर पे जिन गेह, तें हूं पूजौं मन कर नेह। ता फल मोक्ष सुरा खग थाय, ध्यावत हैं इन्द्रादिक आय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

इन ही कूटन पैं सुर रहे, नानाविधि सुकृत फल लहै। या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी कुलाचल कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

याही शिखरी गिर पें जान, कूट कहे शोभा अधिकानप। तां में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

इसही शिखरी गिर पे सही, कुंड बन्यो बहु जल की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि कुंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

याही कुंड विषै शुभ कही, नदी दोय नीर की मही। या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही कुण्ड विषै मनलाय, कमल कह्या मणिमय सुखदाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इस ही कमल विषै जो रहै, देवी नाना सुख कों लहै। तिन गति छेद भए भवपार, ते सब सिद्ध जजों थुतिधार ॥
ॐ ह्रीं धातको खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि कमल वासिनी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

या ही शिखरी पर्वत माहिं, नाना विधि के थानक पाहिं। तिन में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा—शिखरी गिर पै सुर खगा, पूजत हैं जिन जाय। हम पें शक्ति न जान की, यो पूजों इस ठाय ॥ १ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

या गिरि जो है जिनका गेहा, जजैं भक्ति करि सुर खग नेहा। हम भी इहां तें भावन भाई, पूज रचैं जैं ज जिनराई ॥२॥
करें भक्त मुख गान अपारा, देव जजैं जिन राज सु प्यारा। करें अरज सुनि हो जगनाथा, काढि भवोदधितैं गहि हाथा ॥
तुम आलंबन तें भव सिधा, अल्प तोय जिम होय सुबंधा। तुम गुण गाय चोर से जीवा, सुर उपजे यह नाम सदीवा ॥
मैं तो नाथ शरण अब आयो, मन वचकाय सकल लगवायो। तातैं करुणा धारो मेरी, मेटो नाथ दीन की फेरी ॥५॥
तुम ही जगत देव जगनाथा, तुम ही भवसागर की पाथा। तुम ही मात तात सुखदाई तातैं तारो हो जिनराई ॥ ६ ॥
दोहा–और घनी कहनी कहा, जानत हो जिनराय। तातैं तुम यह वीनती, सबधो कर्म नशाय ॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालय पूजा जयमाला पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा–खण्ड धात पश्चिम दिशा, ऐरावत शुभ धाम। तहां थान जिन देव के, ते पूजों इस ठाम ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिन अत्रावतर संवौषट् आह्वानन ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई–नीर निर्मलो गंग समान, सुभग पात्र में धरके आन। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन बावन पावन कार, लायो घसि जल गंध अपार। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ २ ॥

अक्षत मुक्ता फल सम जान, उज्ज्वल श्वेत बुंद से आन। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चदन ॥ ३ ॥

फूल सुगन्ध वरन अधिकाय, ले आयो उर भक्ति बढ़ाय। ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, ले आयो हरषे चित भाय । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीप रतन के सुभग बनाय, तमहारी दुतिकारी लाय । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप अनूप बनाय, खेवन आयो सेव उपाय । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु ऐरावत क्षेत्र सबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम अपार, और अनेक लेय फल सार । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु ऐरावत क्षेत्र सबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत चरु धूप, पुष्प दीप फल लेय अनूप । ऐरावत पश्चिम धातकी, तहां जिन गेह जजों मन थकी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम मेरु ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—धात खण्ड ऐरावत माहिं, तिष्ठत तिहां जिन मन्दिर ठांहि । ते हों पूजों मन वचकाय, अष्ट द्रव्य करि अर्घ बनाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

खंड धात ऐरावत माहिं, सिद्ध क्षेत्र ते सब सिध ठांहि । ते हों पूजों मन वच काय, अर्घ ठानि बहु भक्ति भराय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

खण्ड धातकी पश्चिम दिशा, आरज भूमि तहां शुभ लसा । या गति छेद भए भव पार, तिन पद अर्घ जजों मद टार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि आर्य क्षेत्रगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

या ही आर्य खंड के माहिं, उपसागर बहु जल की ठाहिं । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि उपसमुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

या ही खण्ड सु आरज ठौर, नगर अयोध्या सब शिर मोर । या में उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि अयोध्या नगर उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

या ह्री ऐरावत थल माहिं, आरज खंड देश सो पाहिं। तिन गति छेद भए भव पार, ते सिध पूजों मन वच सार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि आर्य खड देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

या ह्री ऐरावत भूमाहिं, विजयारध खग गिरि शुभ ठाहिं। ताकी उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्द्ध गिरि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

या ह्री विजयारध के शीश, कूट कहे शुभ गिर के ईश। तिन गति छेद भए भव पार, ते मैं जजों अरघ ते सार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्द्ध कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इसही विजयारध के कूट, देव वसै सब अघ तहँ टूट। इन गति छेद भए भवपार, तिन पद अर्घ जजों नयसार ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयारध कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या ह्री विजयारध के माहिं, कूट कहे सिद्धारथ ठाहिं। ताके ऊपर है जिन गेह, सो हौं जजों ठानि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र-विजयार्द्ध कूट संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

या ह्री ऐरावत के माहिं, वृषभाचल पर्वत शुभ ठाहिं। यामें उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि वृषभाचल पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इस ऐरावत क्षेत्र जु माहिं, खण्ड मलेछ पंच मन लाहिं। इनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि पच म्लेच्छे गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

ऐसे ऐरावत की धरा, यामें बहु विधि थानक भरा। ता में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

या ह्री ऐरावत में जानि, होय गई चोइसी मानि। तिनके पद शुभ अर्घ बनाय, पूजों भक्ति लाय गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं धातको खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि अतीत चतुर्विशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ १४ ॥

ऐरावत की याही धरा, वर्तमान जिन चौबीस खरा। तिनके पद में अरघ बनाय, पूजा करों घने गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्विशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

या ह्री ऐरावत में सोय, होंगे जिन चौबीस सुजोय। तिनके चरणों मन वचकाय, अर्घ चढाऊं अति हरषाय ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

छद–अडिल्ल— ऐरावत इस मांहि जानि जिन थल घने, और अतीत अनागत वरते जिन भने।
इन आदिक सिध चेतर तीरथ धामजी, तिनको मन वचकाय नमो हित कामजी ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधी जिन सिद्ध क्षेत्र तीर्थेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

चौपई–दधि दूजा कालो दधि जान, आठ लाख जोजन परमान। तामें उतपति छेदक सोय, सो सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं कालोदधि समुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

याही कालोदधि के माहि, देव रहै परवत की ठाहिं। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं कालोदधि निवासी देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–पश्चिम धातकि खण्ड में, ऐरावत थल मानि। तहाँ देव जिन थल नमों, अर्घ लेय श्रुति आनि ॥ १ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

खण्ड धातकी दूजा भाई, ताके पश्चिम दिश अधिकाई। ऐरावत क्षेत्र सुखकारा, तामें षट खण्ड शोभ अपारा ॥ २ ॥
पंच मलेछ खण्ड है नीका, आरज खण्ड एक सुख टीका। खण्ड मलेछ थकी शिवनाहीं, मोक्ष होत है आरज माहीं ॥ ३ ॥
ऐसे ऐरावत थलमाहीं, खण्ड कहे षट् संशय नाहीं। ता विचि एक खगाचल जानों, श्रेणी द्वय शिरकूट बखानों ॥ ४ ॥
इन कूटन पै देव रहावै, एक कूट पै जिन थल पावै। विजयारध उत्तर को जानो, खण्ड मलेच्छ तीन श्रुति गानो ॥ ५ ॥
तिन विचले खंड में सुन भाई, वृषभाचल पर्वत सुखदाई। चक्री लिखे तहाँ निज नामा, खग गिरि दक्षिण आरज ठामा ॥ ६ ॥
ता आरज में उपदधि जानो, नगर अजोध्यादिक सब मानो। और घने बहु तीरथ थाना, सिद्ध क्षेत्र आदि अघ दाना ॥ ७ ॥
तिनको मैं वंदों हर्षाई, हाथ जोडकर शीश नमाई। ऐसे ऐरावत की रचना, जान हरष कर पुण्य सु सिचना ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जयमाला पूर्णार्घम् ॥

॥ इति धातकी खड पूजन समाप्त ॥

॥ पुष्कराद्ध द्वीप मंदिर मेरु संबंधि पूजा ॥

दोहा–शोभा सारी सुखमई, पुष्कराद्ध की जान। तिस खेतर जिन गेह सो, जजों थापि इम थान ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई—निर्मल नीर क्षीरदधि समा, शुभ पात्र में ले अतिरमा । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों श्रुति लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन शुभ जल तें घसि वाय, कनक पियालै धर मन लाय । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल खण्ड न कोय, आछे शुभ जल तें फिर धोय । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ रंग अधिकाय, गंध घनी जुत ते सब लाय । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा घेवर मोदक सार, इन आदिक चरु ले अधिकार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तम हार, ले आयो कर पात्रै धार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप करी दशधा शुभ कार, खेवन आयो बहु विधि धार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम अपार, इन आदिक फल ले सुख कार । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल ले शुभ सरु । पुष्कर अर्द्ध द्वीप के माहिं, जिन थल जे पूजों मन लाहि ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

जल भल आदि द्रव्य वसु लाय, अर्घ करूं सुखदायक भाय । पुष्कर अर्ध द्वीप के माहिं, जिन थल पूजों जे मन लाहिं ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीपसंबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा–पुष्कर आधे दीप में, जे जिन मंदिर होय । ते सब मन वचकायतैं, जजों अर्घ ले जोय ॥ १ ॥

॥ चेसरी छन्द ॥

अर्ध पुष्कर जो द्वीप अनूपा, सुन्दर अधिक सकल में भूपा । तहां गेह जिनके सुखदाई, पूजैं देव खगासुर आई ॥ २ ॥
अपना जन्म सफल कर आवैं, देव जिनेश तनी थुति गावैं । करैं नृत्य सुर खग नर भारी, हरैं पाप पुण्य ले अधिकारी ॥ ३ ॥
हम में शक्ति ज्ञान की नाहीं, तातैं इह थानक थुति गाहीं । अष्ट द्रव्य सुन्दर ले आए, इहा तें जिन पद अर्घ चढाए ॥
फिर विनती हम इस विधि ठानैं, पुनि पुनि भक्ति करैं सुख गावैं । अहो देव देवापति देवा, भव भव देय आपनी सेवा ॥ ५ ॥
बिन तुम सेव देव जिन राई, मैं चव गति नाच्यो अधिकाई । तिन दुख की मुख तैं क्या कहिए, तुम सर्वज्ञ सकल लख लहिए ॥
भो जिन अब तो शरण तिहारो, तुम मेटो भव वन संसारो । तुम बिन और शरण नहि कोई, करो योग्य सो तुम अब होई ॥
दोहा–ऐसे विनती ठानि कैं, पूजा करिय जिनेश । ताको फल यह ऊपजै, मिटै चार गति भेश ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घम ॥ इति ॥

॥ पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व दिशा संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा–पुष्करार्द्ध द्वीप की, पूरब दिशि को जोय । जिन मन्दिर राजैं सुभग, जजों थाप इहां सोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

चौपई–निर्मल नीर चीर दधि समा, ले आयो कर पातर रमा । पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मन्दिर तें जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन घसि जल सुभग मिलाय, गंध घनी सो हम ले आय । पुष्कर अर्ध पूर्व दिशि माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत मुक्ता फल सम जोय, उज्ज्वल खण्ड बिना ले सोय । पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल सुगंध बना रंग सोय, मानो कमल बेलि के होय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, ले आयो बहु भक्ति चढ़ाय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तम हार, ले अपने कर हर्ष सुधार। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

दशधा धूप गंध जुत सार, खेवन आयो हर्ष अपार। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

योग्य बदाम सुपारी लोंग, ले आयो तुम पूजन योग। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प लाय, इन आदिक वसु द्रव्य सुभाय। पुष्कर अर्ध पूर्व दिश माहिं, जिन मंदिर जे जजों सुभाहिं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई–पुष्कर अर्ध द्वीप के माहि, पूरब भरत क्षेत्र के माहिं, तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशायां भरतक्षेत्र संबधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १ ॥

भरत पूर्व पुष्कर में जहां, देव रहे सुखवासी तहां। या में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा या भरत क्षेत्र सम्बन्धि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

इसही भरत क्षेत्र सुभ ठाम, उपजत मनुप पशू गुण धाम। या में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र संबधि मनुष्य पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

पुष्कर अर्ध भरत भू ओर, विजयारध खगगिरि शुभ ठोर। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशायां भरत क्षेत्र संबधि विजयार्द्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

इसही विजयारध के कूट, तुंग घने देखत दुख छूट। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र संबंधि विजयार्द्ध कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

इनही कूटन के शिर जान, देव रहे नाना सुख खान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र विजयार्द्ध कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

इसही विजयारध पै सही, कूट शीश जिन मंदिर कही। तहां विम्ब जिनके आकार, ते हों जजों सकल मद टार ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशायां विजयार्द्ध कूट संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

पुष्कर पूर्व भरत के मांहि, सिद्ध क्षेत्र सुर शिव सुखदांहि। ते हों मन वच हर्ष बढाय, पूजों आठों अंग नमाय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र सबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

याही भरत क्षेत्र के मांहि, खंड म्लेच्छ पंच शुभ ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुकप्रार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र सबधि पचम्लेच्छ खड गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

भरत अर्ध पुष्कर की ठोर, वृषभाचल पर्वतगिरि और। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशाया भरत क्षेत्र सबधी वृषभाचल पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

ऐसे भरत सु पुष्कर मांहि, पूरब दिश जिन थल सो पांहि। तिन में बिंब जिनेश्वर तने, जिन पद पूजि सकल अघ हनें ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशायां भरत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

पुष्कर अर्ध पूर्व हिमवान्, ताके ऊपर जिनको थान। तामें बिंब देव जिन राज, सो मैं पूजो सुरशिव काज ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशायां हिमवान कुलाचल शीश जिन चत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२ ॥

इसही हिमवन पै सही, कूट कहे तिनके शुभ मही। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशाया हिमवान् कुलाचल सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इनही कूटन उपरि सही, देव रहे नाना सुख मही। या की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वाप पूर्व दिशाया हिमवान कुलाचल कूटवासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

इनही कूटन ऊपरि जेय, कुंड पदम नामा जलगेय। ता में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशायां हिमवान सबधि पद्म ह्रद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

इनहीं कुण्ड विषै सुखकार, कमल घने आगम अनुसार । तामैं उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशाया हिमवान संबंधि पद्म ह्रद कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥
इनही कमल वास करतार, देवी देव रहे अधिकार । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशाया हिमवान पर्वत सबंधि कमल निवासी देवी, देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥
इस ही पदम कुंड तें सही, सरिता तीन चली जल मही । या में उतपति छेदक सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशि पद्म कुंड सम्बन्धी नदी गतिच्छेदक जिनभ्यो अर्घं ॥ १८ ॥
पुष्कराद्धं पूरब दिश मांहि, हिमवन क्षेत्र बहुत सुख पाहि । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशाया हिमवन क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥
इस ही हिमवत आरज ठांन, मनुप पशु गति छेदक जान । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र सम्बन्धी नर पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥
इस ही हिमवत क्षेतर मांहि, नाभि नाम पर्वत सुख ठाहिं । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा हिमवत क्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥
अर्ध पूर्व पुष्कर की धरा, महा हिमवत पर्वत तिहि खरा । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा महा हिमवन पर्वत सम्बन्धि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥
याहि महा हिमवन गिरि शीश, कूट कहे सुन्दर शुभ ईश । तिन की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा महा हिमवन पर्वत सम्बन्धि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥
इस ही हिमवन कूट सुजान, जिन मन्दिर है पुण्य सुखान । तिन में बिम्ब जिनेश्वर सोय, ते मैं पूजों मन वच होय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा महा हिमवान पर्वत शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥
इस हि महा हिमवन के कूट, तिन में देव बसैं अघ छूट । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा महाहिमवान कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥
इस ही महा हिमवन गिरि ठोर, ऊपर महा पदम कुंड और । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं द्वीप पूर्व दिशा महा हिमवान पर्वत सम्बन्धि महा पद्म ह्रद गति च्छेदक जिनभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

याहि महा पद्म कुंड माहिं, कमल कहे सुन्दर शुभ ठांहि। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा महाहिमवन गिरि महा पद्म ह्रद सम्बन्धि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

इस ही कमलनि में सुख खांनि, देवी देव रहै अधिकानि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा महाहिमवान महा पद्म कुंड सम्बन्धि कमल देवी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २८ ॥

इस ही महा पदम द्रह तनी, सरिता दोय चली जलघनी। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं अर्ध पुष्कर पूर्व दिशा महा पद्म कुंड सम्बन्धि सरिता गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

अर्द्ध पूर्व पुष्कर खंड सही, तांको हरि क्षेत्र शुभ मही। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हरिनामा क्षेत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

याही हरि क्षेत्र के मांहि, नर तिर्यंच जुगल उपजांहि। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हरि क्षेत्र सम्बन्धि मनुष्य पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

इस ही हरि क्षेत्र के मांहि, पर्वत नाभि कह्यो सुख ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा हरि क्षेत्र सम्बन्धि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

अडिल्ल छन्द—पुष्करार्ध शुभ द्वीप पूर्व दिश जानिये, निषध नाम तहां पर्वत एक बखानिये।
ऊपर ताके जिन मंदिर शुभसार हैं, ते ही पूजों भाव सहित सुखकार हैं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप पूर्व दिशा निषध नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

चौपाई—या ही निषध शिखर पे जान, कूट कहे बहु सुख की खान। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध द्वीप पूर्व दिशा निषध कुलाचल सम्बन्धि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहै नाना शुभ मही। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा निषध कुलाचलसंबंधि कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

याहि निषध कुलाचल ठौर, ऊपर कुंड तहां जल जोर। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा निषध कुलाचल सबंधि तिगंछ नामा कुंडगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

याहि कुंडतिगंछ सु मांहि, कमल बने मणिमय शुभ ठांहि। तिनमें उतपति छेदक सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध दिशा पूर्व निषध पर्वत कुंड संबंधि कमलगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

इनही कमल वास करतार, देवी देव बसे बहुसार । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा तिगच्छ कुंड संबंधि कमल वासी देवी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥

याहि कुंड तिगंछ सुमांहि, नदी दोय चलैं जल ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा तिगछ कुंड संबंधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

छन्द पद्धरि-वर पुष्कर पूरव दीप सोय, तहां क्षेत्र विदेहसु थान जोय । तिस थांन देव जिनराज गेह, ते पूजों मनवच अर्घ लेय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध द्वीप पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधि जिनचैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

चौपाई-पुष्करार्ध पूरव दिश मांहि, मेरु विदेह क्षेत्र के ठांहि । ताके भद्रशाल वन धाम, है जिन गेह जजों शिवकाम ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा सुदर्शन मेरौ भद्रशाल वन संबंधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४१ ॥

याहि मेरु सोमनस वन सही, है जिन मंदिर चव वन मही । तिनमें बिंब कहे जिन राज, ते ही जजों सुरग शिवकाज ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा सुदर्शन मेरौ सोमनस वन संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

पुष्करार्ध पूरव दिश सोय, मेरु तहां नंदन वन जोय । तामें जिन मंदिर अघहरा, ते ही जजों अर्घ ले खरा ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशायां सुदर्शन मेरौ नंदन वन संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥

इसही मेरू ऊपर सार, पांडुक नामा सुभ वन धार । तहां चार जिन मंदिर मही, तेहूँ जजों लेन शिव मही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशायां सुदर्शन मेरौ पांडुक नामा वन संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

इस ही मेरु कहे सब थान, देव रहै नाना सुख मान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपस्य पूर्व दिशायां सुदर्शन मेरु संबंधि देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४५ ॥

इस ही पांडुक वन में सोय, पांडुक नाम शिला अवलोय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशाया मेरौ पाण्डुक वन संबंधि पांडुक शिला उत्पत्ति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

इस ही मेरु संबंधी जोय, चव गजदंत ऊपरै सोय । है जिन मंदिर चव अघहरा, ते सब जजों सुरगशिव करा ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा चतुर्गजदंतसंबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥

इन ही चव गजदंत के मांहि, देव रहै कूटन के ठांहि । तिनकी उतपति हरि शिव गये, जिन सिध पायन को हम नये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा मेरु चतुर्गजदंतसंबंधी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

इनही चनगजदंतन मांहि, जीव ऊपजे केइक मांहि । तिन गति छेद भये भवपार, सो जिन जजों सकल मदटार ॥

ॐ ह्री पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु चतुर्गजदंत संबधि जीवउत्पत्ति छेदक जिनभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

इस ही मेरु संबंधी दोय, जंबूशालमली तरु सोय । तिनके थान जिनेश्वर जांनि, पूजा करों हरप शुभ ठांनि ॥

ॐ ह्री पुष्कराद्ध पूर्व दिशा जंबूशालमली वृक्ष संबधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

इस ही जंबूशालमलि मांहि, देव रहैं तरु ऊपर ठांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा जबूशालमली वृक्ष निवासी देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

याहि मेरु दक्षिण दिश सोय, भोग भूमि उत्कृष्टी जोय । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु दक्षिण दिशा उत्कृष्ट भोग भूमि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

इसही मेरु की उत्तर दिशा, भोग भूमि उत्कृष्टी लसा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व मेरू उत्तर दिशा उत्कृष्ट भोग भूमि संबंधी उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५३ ॥

इसही मेरु संबंधी जान, गिरिवक्षार शिखर शुभ मान । तिनपे जिन मंदिर जे होय, ते सब पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा मेरु संबधि षोडश वक्षार उपरि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

याहि मेरु बिदेह सुमांहि, जे सब गिरि वक्षार सुजान । तिन में देव बसैं सुखकार, तिन गति छेद जजों श्रुतिधार ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह संबधी षोडश वक्षार वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५५ ॥

इसही क्षेत्र विदेह सुमांहि, नंदी सकल महाजल ठांहि । तिन गति छेद भये सिध सोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र संबधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

याहि क्षेत्र विदेह मझार, विजयारध पर्वत सो सार । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ सजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र संबधि द्वात्रिंशत् बिजयार्ध पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

इनही बिजयारधं के शीश, कूट कहे अति सुन्दर दीश । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा बिदेह क्षेत्र संबन्धि विजयार्ध कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५८ ॥

इनही कूटन के शिर जोय, देव रहै अति सुखिया होय । तिनकी उतपति हर शिव गये, ते सिध हमने सब पूजिये ॥

ॐ ह्री पुष्कराद्ध पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र विजयार्ध कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५९ ॥

इनही विजयारध के शीश, कूट कहैं सिद्धारथ दीश। तिनमें ही जिन मंदिर सोय, ते मैं पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा विदेह विजयार्ध सवन्धि सिद्धार्थ कूट स्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घ ॥ ६० ॥

इस ही क्षेत्र विदेह सुमांहि, वृषभाचल पर्वत शुभ ठांहि। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र सबंधि वृषभाचल पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, है उप सागर बहु जल धार, तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र संबंधि उपसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

इन ही क्षेत्र विदेह मझार, भूतार्णवदेवार्णवसार। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा विदेह क्षेत्र भूतार्णव देवार्णव वन सबंधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

पूरब पुष्करार्द्ध शुभ मेर, तहँ वन भद्रशाल औ हेर। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा मेरु सबंधि भद्रशालादिवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

अडिल्ल छन्द—पुष्करार्द्ध पूरब दिश मैं शुभ जानिए, पर्वत नील सुनाम कुलाचल मानिये।
ताकी उतपति छेद भये भवपार जी, ते सिध पूजों मन वचकाय सुधार जी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा मेरु संबंधि नील कुलचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६५ ॥

चौपई—इस ही नील कुलाचल शीश, कूट कहे अति शोभा दीश। तिन गति छेद भए भवपार, ते सिध पूजों मनवच सार ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा मेरु संबधि नील नामा कुलाचल कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

इस ही कूटन पे शुभधाम, देव रहैं जिनको सुख थाम। इनकी गति हरि ते शिव गये, तिनपद हम मनवच क्रम नये ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा मेरु नील कुलाचल सबंधि कूट वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

याहि नील कुलाचल मांहि, कूट शीश जिन मन्दिर ठांहि। तेही मन वच काय बनाय, पूजों भली भक्ति मन लाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

इस ही नील कुलाचल सार, ऊपर कुण्ड कह्यो निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि केसरी नामा ह्रद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

याही कुण्ड विषें शुभकार, कमल कहे सुख के करतार। तिनकी गति को हरि शिव होय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा नील कुलाचल सम्बन्धि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७० ॥

इन ही कमलन मांहि सुजान, देवी देव रहै अधिकान । तिन की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पर्व दिशा नील कुलाचल द्रह सवधि कमलवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

याही नीलाचल द्रह थकी, नदी दोय चली जल थकी । तिन की उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सबमद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशानील कुलाचल सवंधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७२ ॥

छंद अडिल्ल— पुष्कराद्ध सुदीप पूर्व दिश जानिये, रम्यक नामा क्षेत्र सु आरज मानिये ।
ताकी उतपति छेद भये भवपारजी, ते सिध पूजों सार सकल मदटारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध द्वीप पूर्व दिशाया रम्यक नाम देश गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

चौपाई—याही रम्यक थल के मांहि, है गिरि नाभि महा सुख ठांहि । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशाया रम्यक क्षेत्र सवधि नाभि नाम पर्वत गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७४ ॥

याही रम्यक क्षेतर मांहि, मनुप पशु उपजै तिस ठांहि । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशाया रम्यक क्षेत्र सवधि मनुष्य पशु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७५ ॥

पुष्कराद्ध पूरब दिश मांहि, रुकमी नाम कुलाचल पांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि नाम कुलाचल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७६ ॥

याही रुकमी गिरि पे सही, कूट कहे अति शोभा मही । तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूव दिशाया रुक्मि नाम कुलाचल संवधि कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७७ ॥

इनही कूटन के शिर जान, देव रहे नाना सुख मान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मी नाम कुलाचल कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७८ ॥

याही रुकमी गिरि पे कूट, तिन ऊपर जिन थल अघ छूट । बिंब तहां जिनवर के सही. ते हों पूजों पुण्य सु मही ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि गिरि संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७९ ॥

याही रुकमी गिरि पे सही, कुंड एक जल धारा कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा रुक्मि कुलाचल सवधि द्रह गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

याही गिरी कुंड के मांहि, कमल कहे मणिमय अधिकांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा रुक्मि नाम कुलाचल कुंड कमल गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८१ ॥

इनही कमलन ऊपर सहीं, देवी देव रहे सुख मही । तिनकी उतपति छेदक मोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा रुक्मि कुलाचल सबंधि कमलवासी देवी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८२ ॥

याही रुकमी गिरि पे सही, नंदी दोय चले जल मही । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा रुक्मि कुलाचल संबंधि नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८३ ॥

पूरव पुष्करार्ध मंझार, हैरण्य क्षेत्र बसै शुभकार । तामें उतपति छेदक मोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा हैरण्यवत क्षेत्र सबंधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८४ ॥

या हैरण्य क्षेत्र के माहिं, पर्वत नाम नाभि गिरि पांहि । तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा हैरण्य क्षेत्र संबधि नाभि नाम गिरि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

इस ही हैरण्य क्षेत्र भू ठोर, मनुष्य पशू उपजत है जोर । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा हैरण्य क्षेत्र सबंधि मनुष्य पशु गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८६ ॥

पुष्कराद्धे पूर्व दिश माहिं, शिखरी नाम कुलाचल पाहि । ताके ऊपर है जिन गेह, तिनको पूजों करि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८७ ॥

याहीं शिखरी गिरि पे सही, कूट कहे नाना सुख मही । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८८ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहे सब सुख की मही । इनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल कूट वासी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

याही शिखरी गिरि ये सार, कुंड कह्यो बहु जल की धार । ताकी उतपति छेदक मोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे द्वीप पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल द्रह गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

याही शिखरी के द्रह माहिं, कमल कहे मणिमय शुभ ठांहि । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल द्रह कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९१ ॥

इनही कमलन के मधि रहे, देवी देव महा सुख लहैं। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोग ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल ह्रद कमल वासी देवी देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९२ ॥

याही शिखरी गिरि तें जान, नदी तीन चली जल खान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधि नदी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९३ ॥

छंद—अडिल्ल—

पूरव पुष्कर द्वीप माहिं शुभकार हैं, शिखरी नाम कुलाचल सुख आगार है।
तामें उतपति छेद भये भवपारजी, ते सिध पूजों मन वच काया सारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा शिखरी कुलाचल संबधि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९४ ॥

पूरव पुष्कर द्वीप माहिं को जानिये, ऐरावत है क्षेत्र महा सुख खानिये।
तामें जे जिन गेह महा तीरथ मही, ते हों मन वच काय जजों शिवदा सही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

चौपाई—याही ऐरावत थल मांहि, आरज खँड महा सुख ठांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि आर्य खड गतिदछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ९६ ॥

याही आरज क्षेतर मांहि, है जिन मन्दिर पुण्य सु ठांहि। बिंब तहां जिनके आकार, ते हों जजों अरघ धरिसार ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र आर्य खड सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ ॥ ९७ ॥

इसही खँड आरज की ठोर, है सिध क्षेतर तीरथ जोर। तिनको मन वच काय लगाय, पूजों अर्घ लेय थुति गाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशाया ऐरावत क्षेत्र आर्यखड सबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम ॥ ९८ ॥

या आरज क्षेतर में जान, होय गये चौबीस सो मान। ते जिन वसु विधि अर्घ चढ़ाय, पूजों मन वच तन थुतिलाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९९ ॥

याही ऐरावत जिन देव, वर्तमान अब हैं स्वयमेव। तिनको मनवचकाय लगाय, अर्घ थकी पूजों थुति लाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशाया ऐरावत क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०० ॥

याहि ऐरावत थल माँहि, आगामी जिन हो हैं ठांहि। ते चौवीसों ही भगवान, पूजों अर्घ आनि धर ध्यान ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबंधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०१ ॥

या ऐरावत आरज मान, देव वसे नाना सुख ठांन। तिन ऊपर जिन मन्दिर सोय, ते हों पूजों मन वच होय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि आर्य क्षेत्र स्थित देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०२ ॥

याही ऐरावत में सही, होय तीन चौवीसी कही। तिन जिनवर के दो पद जान, अर्घ चढाऊँ सुध तन आन ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि भूत भविष्यत वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०३ ॥

याही ऐरावत थल मांहि, विजयारध पर्वत खग ठांहि। तिन गति छेद भये भरपार, ते सिध पूजों मनवच सार ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्ध गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०४ ॥

याही ऐरावत वैताढ, तापे कूट कहे सुख वाढ। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध संबधि कूट गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०५ ॥

इनही कूटन ऊपर सही, देव रहे शोभा मन मही। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र विजयार्द्ध कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०६ ॥

याही विजयारध के शीश, जिन मन्दिर अति शोभा दीश। तिनमें विंब विराजे सोय, अर्घ जजों शुभ मन वच होय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि विजयार्द्ध शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०७ ॥

याही ऐरावत की जान, विजयारध जुग श्रेणी मान। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र विजयार्ध युगल श्रेणी गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

या ऐरावत आरज माहिं, उपसागर बहु जल तहां पाहिं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत आरज क्षेत्र सबंधि उप समुद्र गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

इसही ऐरावत की ठोर, पंचम्लेच्छ धर्म विन और। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि पचम्लेच्छ खंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११० ॥

या ऐरावत क्षेतर माहिं, वृषभाचल पर्वत मन लाहि। यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधि वृषभाचल पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

या आरज ऐरावत मान, देव वसे मगधादिक ठांन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि मगधादिक देव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

या ऐरावत क्षेतर माहि, नाभी गिरि पर्वत शुभ ठांहि । यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र संबधि नाभि गिरि गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

याही ऐरावत थल माहिं, जिन मन्दिर शोभा अधिकांहि । तिनमें विंव जिनेश्वर सोय, अर्घ वनाय जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११४ ॥

छंद–अडिल्ल—

पुष्कराद्धं वर द्वीव सु ऐरावत सही, नाना विधि रचना जुत ताकी शुभ मही ।
ताकी उतपति छेद भये भव पारजी, ते सिध पूजों मन वच काया सारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा ऐरावत क्षेत्र सबधि चक्रीपुर आदि नाना रचना उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११५ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— पूरव पुष्कराद्धं में, मेरु आदि जिनगेह । ते सव पूजों भक्ति धर, धार हिये वहु नेह ॥ १ ॥

छद वेसरी–पुष्कराद्धं पूरव दिश भाई, मेरु एक के वन सुखदाई । चव गजदंत विरछ जुग जान, जंबू शालमली मन आन ॥ २ ॥
याही मेरु उत्तर दखिणाउ, पर्वत पट अति जान सिखाऊ । सात क्षेत्र सुन इनके नामा, पहला भरत महा सुख ठामा ॥ ३ ॥
यामें विजयारध गिरि भाई, दूजो क्षेत्र हैमवत पाई । यामें भोगभूमि सो जानो, तामें जवन्य रीति सब मानों ॥ ४ ॥
क्षेतर तीजो हरि सुखकारी, चतुर्थ क्षेत्र विदेह सु धारी । या विदेह में और सु ठामा, क्षेत्र वतीस जान शुभ धामा ॥ ५ ॥
षोडश यामें गिरि वखारा, नाम विभंगा द्वादश धारा । गिरि वैताढ वत्तीस अनूपा, इन आदिक वहु और स्वरूपा ॥ ६ ॥
रम्यक क्षेत्र और शुभ जानो, हैरण्यवत क्षेतर शुभ मानो । सप्तम ऐरावत है भाई, विजयारथ है याकी ठांई ॥ ७ ॥
फेर कहूँ षट गिरि के नामा, हिमवन फिर महाहिम वन ठांमा । तृतीय निषध कुलाचल होई, चतुर्थ नील महा शुभ जोई ॥८॥
रुक्मी पर्वत है अधिकारा, पष्टम शिखरी पर्वत सारा । इन सब पे इक इक हद जानो, इह मधि कमल सुरन को थानो ॥ ६ ॥
सव ही गिरि मेरादिक भाई, तिन पर जिनवर के थल पाई । तिनको सुर खग पूजे सारे, भवित करें तातें अ न न्यारे ॥ १० ॥
सप्त क्षेत्र में तीस सुधामा, कर्म भूमि अरु आरज ठामा । अन आरज में धर्म जु नाहीं, कर्म भूमि में सिध थल पाई ॥ ११ ॥

तिनमें क्षेत्र विदेह सु थानो, तहां सदा है शिवपुर जानो। सदा काल चौथा ही होई, काल फिरन यहां होय न कोई ॥ १२ ॥
भरत ऐरावत क्षेतर मांही, काल फिरन पट विधि तिन ठांहि। चौथे काल तहां शिव होई, और काल वृष श्रावक जोई ॥ १३ ॥
ऐसे इस क्षेतर ते जानो, काल फिरन की रीति पिछानो। ते सिध लोक शिखर पे होई, भक्ति धार मैं पूजों सोई ॥ १४ ॥

दोहा— ऐसे क्षेतर अर्द्ध में, पूरव दिश को जान। सिध थानक जिन गेह सब, जजों सु मन वच ठांनि।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पूर्व दिशा सवधिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घम् ॥ इत ॥

॥ पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा— दीप सु पुष्कर अर्द्ध की, पश्चिम दिशा जु जान। जिन मंदिर सब अघ हरा, जजों थाप थुति आन ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर सवौपट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन।
ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिमदिशा सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

चौपई—नीर निरमलो प्राशुक हिमा, ले आयो कर पातर रमा। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सवधि जिन चैत्याजयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चंदन बावन गंध अपार, ले आयो जल ते घसि सार। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्वल नखसिखसार, धोय किये उर को सुखकार। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल मनोज्ञ रंग अधिकाय, सो मैं ले आयो शुभ भाय। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, ले आयो उर हरप बढाय। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक रतनमई करवाय, शुभग पात्र में धरि हम लाय। पुष्कराद्धं पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मन्दिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप करी दशधा गंध लेय, अग्नि माहिं खेवक उमगेय । पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मन्दिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बिदाम अपार, पूंगीफल इम आदिक सार । पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल गंधाक्षत पुष्प मिलाय, चरु दीपक फल धूप सुलाय । पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश सोय, पूजों जिन मंदिर जे होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

प्रत्येक अर्घ

चौपई—पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश जान, तामें भरत क्षेत्र शुभ खान । तिस थानक जिन मन्दिर सोय, ते हों पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सबधि जिन चैत्यलायस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥

याही भरत क्षेत्र के माहिं, सिद्ध क्षेत्र शुभ तीरथ ठांहि । कर्म काट तहां ते शिव गये, तिन सिध पाय अरघ धर नये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम ॥ २ ॥

भरत क्षेत्र इसही दिश ओर, जिन चौबीस देव शिरमोर । काल अतीत विषे हैं गये, तिन पद अर्घ लाय हम नये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सबधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३ ॥

याही भरत भूमि के माहि, वर्तमान जिनवर सो पांहि । वर्तमान वरते अघहरा, ते चौबीस जजों शुभ धरा ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सबधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

पुष्करार्द्ध पश्चिम की धरा, जिन चौबीस भरत के खरा । आगम काल हो यंगे सही, ते प्रभु पूजों शिव की मही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र सबधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही भरत धरा में जान, विजयारध पे जिन थल मान । तिनको मन वच काय सुधरा, अर्घ जजों बहु विनय उच्चरा ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र विजयार्ध सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

इसही भरत क्षेत्र को सही, आरज खंड भलो शुभ मही । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन शुध होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र संबंधि आर्य खंड गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७ ॥

याही आरज खेतर ठार, उप सागर अति जल को धारै । याकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥

याही भरत माहिं सुखकार, देख रहे आरज खल सार । तिन गति छेद कों जिन सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥

याही भरत क्षेत्र में मही, विजयारध गिरि नग की सही । याकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों मन वच होय ।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥

याही विजयारध के शीश, कूट कहे सुन्दर शुभ दीस । उनकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥

उनही कूटन पे सुर रहे, ते नाना शोभा सुख लहे । उनकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥

याही भरत क्षेत्र मे मही, पंच अनारज खेतर सही । उनकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥

इनही क्षेत्र अनारज ठोर, मध्य भाग वृषभाचल जोर । यामें उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] ॥

याही भरत क्षेत्र की मही, नाना विधि की रचना कही । तिनमें उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा भरत क्षेत्र [illegible] नाना विधि रचना [illegible] ॥

छंद–अडिल्ल— पुष्करार्द्ध शुभद्वीपतनों पश्चिम दिशा, हिमवन नाम कुलाचल परम सुहावना ।

ता ऊपर जिनधाम अकृत्रिम मणिमई, ते हों पूजों अर्घ ल्याय मन वच सही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवन कुलाचल [illegible] ॥

चौपई–याही हिमवन गिरि पे जान, कूट कहे ग्यारह सुखदान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवन कुलाचल [illegible] ॥

इनही कूटन ऊपर सार, देव रहे नाना सुखकार । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते जिन पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा हिमवन कुलाचल [illegible] ॥

याही हिमवन पर्वत ठोर, कुंड कह्यो तामें जल नोर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल सम्बन्धि ह्रदगति छेदक जिनेभ्यो अर्घंम ॥ १६ ॥

याही कुंड विषै अति जान, कमल कह्यो मणिमय सो मान। याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल सवधि ह्रद कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २० ॥

याही कमल मांहि शुभ थान, देवी देव रहैं तहां जान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा हिमवन ह्रदकमलवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २१ ॥

याही हिमवन पर्वत थकी, नदी तीन तहां में थकी। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा हिमवन कुलाचल सवधि नदी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २२ ॥

याही हिमवन पर्वत मांहि, वहु विधि रचना कहिये ताहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल सवधि अनेक रचना गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

आगे हिमवत खेतर मांहि, मनुष्य पशु आरज सव पांहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशा हिमवत क्षेत्र सवधि मनुष्य पशु गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २४ ॥

याही हिमवत खेतर मांहि, नाभि नाम गिरि पर्वत पांहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया हिमवन क्षेत्र संवधि नाभि गिरि नामा पर्वत गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

याही हिमवत क्षेत्र सु जान, आर्य जीव वहुत विधिमान। तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया हिमवन क्षेत्र सवधि गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २६ ॥

छंद अडिल्ल—

पुष्कराद्धं शुभ द्वीप सु पश्चिम जानिये, महा हिमवान कुलाचल तहां इक मानिये।
ता ऊपर जिन धाम जजों सो सुखमई, अरघ लेय कर मांहि भक्ति धर उर सही ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया महा हिमवान कुलाचल ऊपरि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

चौपई—याहि महाहिमवन गिरि जान, कुट मनोज्ञ कहे हितदान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया महा हिमवान कुलाचल सवधि कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २८ ॥

इन ही कूट ऊपरैं जान, देव वसै अति ही सुखमान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सव मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पश्चिम दिशाया महा हिमवान क्षेत्र सवधि कूटवासी देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २६ ॥

याहि महाहिमवन गिरि जोय, कुण्ड महा जलथानक सोय। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां हिमवान कुलाचल संबधि ह्रदगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

याही कुण्ड महा जल मांहि, कमल कहे मणिमय सो ठांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां महाहिमवन कुलाचल सबंधि कमलगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३१ ॥

इनही कमलनि के मध सार, देवी देव रहें अधिकार। तिन की उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया महाहिमवान सबंधि ह्रद कमल वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

याहि महा हिमवन तैं जान, नदी दोय चली जल खान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया महा हिमवान सबंधि नदीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

याहि महा हिमवन गिरि मान, नाना रूप स्थान अधिकान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां महा हिमवान गिरि संबंधि नाना रूप स्थान गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं । ३४ ॥

पुष्कराद्ध पश्चिम दिशि जान, हरि खेतर ताके अधिमान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया हरि क्षेत्र सबंधि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

याही हरि क्षेत्र में सही, मनुष्य पशु उपजें इस मही। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां हरि क्षेत्र सबंधि मनुष्य पशुगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

इस ही हरि क्षेत्र में जान, नाभिमान पर्वत मन आन। तिन की उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां हरि क्षेत्र सबंधि नाभि गिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ।

पश्चिम पुष्कराद्ध भू मांहि, निषध नाम पर्वत सो पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया हरिक्षेत्रस्य निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥

याही निषध कुलाचल मान, कूट मनोज्ञ तास पै जान। तिन में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया हरि क्षेत्रस्य निषध कुलाचल सबंधि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

इन ही कूटन ऊपर सार, देव रहे वहु लब्धि के धार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया निषध कुलाचल सबंधि कूटवासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

याही निपध कुलाचल शीश, कुण्ड एक जल ही जल दीश। ता में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां निपध कुलाचल सवधि ह्रदगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

याही कुण्ड विषै मन लाय, कमल कहे मणिमय सब भाय। तिनकी उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया निषध कुलाचलस्य ह्रद सबधि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

इन ही कमल किरण के माहिं, देवी देव वसै अधिकांहि। ता में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया निपध कुलाचलस्य ह्रद सबधि कमल वासी देवी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४३ ॥

इन ही निपध कुण्ड तै मान, नदी दोय चली जल खान। तिन में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया निपध कुलाचल सवधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

याही निपध कुलाचल मांहि. भूमि अनेक सुभग शुभ ठांहि। तामें उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया निपध कुलाचल सवधि सर्व रचनागतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४५ ॥

छंद अडिल्ल—

पश्चिम पुष्कर अर्ध माहि को जानिये, क्षेत्र विदेह सुथान महा सुख मानिये।
तामें जिनके थान तीर्थ सब अघ हरा, तेहूं पूजों अर्घलेय मन वच धरा ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

चौपई—याही विदेह क्षेत्र के माहिं, सिद्ध क्षेत्र तीरथ शुभ ठांहि। तिन की उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

याही क्षेत्र विदेह मझार, पोडश गिरि वक्षार सुसार। ऊपरि तितने ही जिनगेह, ते सब जजों मान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबधि पोडश वक्षार गिरि ऊपरि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४८ ॥

याही क्षेत्र विदेह सुसार, है वक्षार गिरि पोडश धार। तिन में उत्पति छेदक सोय, सिद्ध नमों सब ही मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबधि पोडश वक्षार गिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

पश्चिम अर्ध पुष्कर के मांहि, क्षेत्र विदेह खगाचल माहिं। तिन सब पै जिन मंदिर थान, तेहों जजों अर्घ कर आन ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबधि द्वात्रिंशत विजयार्ध स्थित द्वात्रिंशत-जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५० ॥

इन ही विजयारध के मांहि, हो मनुष्य तिर्यंच सुठांहि। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि विजयार्द्धस्य मनुष्य पशु गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५१ ॥

इनही क्षेत्र विदेह मझार, नंदी नाम विभंगा सार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि विभगा नदीगतच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

इन ही क्षेत्र विदेह मझार, वृषभाचल बत्तीस सु धार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि द्वात्रिंशत् वृषभाचल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५३ ॥

इन ही विदेह सुभग मझार, उप सागर बहु जल की धार। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि उपसागर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, जम्बूशाल्मली तरु सार। तिन ऊपरि जिनवर के थान, ते हों जजों अर्घ शुभ आन ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र सबंधि जम्बूशाल्मली वृक्षयो. जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

इन ही जम्बूशाल्मली मांहि, देव वसै शाखा के ठांहि। तिन की उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया विदेह क्षेत्र संबंधि जम्बूशाल्मली स्थित देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

इन ही क्षेत्र विदेह मझार, भोग भूमि उत्कृष्टी सार। तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां उत्कृष्ट भोग भूमिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, मेरु नाम गिरि मधि थल सार। ता ऊपरि जिनवरथल सोय, ते सिध जजों हर्ष युत होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

इस ही मेरु सुवन मन लाय, भद्रशाल तिस नाम कहाय। ता में जिन मंदिर चव सोय, ते हूं जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया भद्रशाल वन सबंधि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५९ ॥

नन्दनवन इस मेरु मझार, ता मधि चार सुभग थल सार। जिन मंदिर शोभे अवहरा, ते हों जजो अर्घ तै खरा ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबंधी नन्दनवन चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६० ॥

याही मेरु सोमवन माहिं, चारों दिशा सुभग मन लाहि। चव जिन मंदिर तीरथ सोय, ते हों जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबंधि सौमनस वन सबंधि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६१ ॥

पांडुक वन इस मेरु मझार, ताकी चव दिशा में सार । चार जिन मंदिर तीरथ सोय, ते हों जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया मेरु पाडुक वन सबधि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

याही मेरु चार वन सार, तामें नाना भेद अपार । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते हों जजों अर्घ जुत होय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया मेरु सबधि चतुर्वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

याही मेरु वनों के मांहि, देव रहें नाना सुख पांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, तेहूं जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया मेरु निवासी दे गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

याही मेरु चवदिश चव वना, पांडुक नाम सकल दुख हना । तहँ चव शिला जिनवर नहवाय, ता में गति हर जजों सुभाय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया मेरु सबधि जिनेन्द्रस्य चतुर्हं वन पाडुकशिलागतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

याही पुष्कर अर्ध मझार, पश्चिम मेरु सकल सुख सार । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया मेरु सबधि उत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६६ ॥

छंद—अडिल्ल—

पश्चिम दिश की अर्ध द्वीप पुष्कर मही, नील कुलाचल नाम तास ऊपरि सही ।
है जिनवर को गेह अकिरतम सारजी, ते हों पूजों अर्घ थकी थुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां मेरु सबंधि नील कुलाचले जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

चौपई—याही मेरु कुलाचल मांहि, ऊपरि कूट कहे हित दाहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां नील कुलाचल सबधि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ६८ ॥

इन ही कूटन पै शुभ मान, देव रहे नाना सुख खान । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां नील कुलाचल संबधि कूटवासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्या अर्घं ॥ ६९ ॥

याही नील कुलाचल शीश, कुण्ड कह्यो बहु जल को ईश । ता में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया नील कुलाचल सबधि ह्रद गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ७० ॥

याही कुण्ड विषै पहिचान, कमल कहे नाना मणि खान । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया नील कुलाचल सबधि ह्रद कमल गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

इन ही कमलन के अधि सोय, देवी देव रहे सुख होय । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया नील कुलाचल सबधि ह्रद-कमलवासी देवी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७२ ॥

याही नील कुलाचल मांहि, नंदी दोय चली अधिकांहि । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां नील कुलाचल संबंधि नंदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

इसही नील कुलाचल माहिं, नाना रचना जुत भू पाहि । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया नील कुलाचल संबंधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

पश्चिम पुष्करार्द्ध दिशसार, रम्यक नाम क्षेत्र शुभ सार । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रम्यक नाम क्षेत्र गतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७५ ॥

याही रम्यक क्षेत्र सु मांहि, नाभि नाम गिरि अति शोभांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रम्यक क्षेत्र मध्ये नाभिनामा पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

याही रम्यक क्षेत्र सु मांहि, मनुष्य पशु उपजैं अधिकांहि । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया रम्यक क्षेत्र सबंधि भोगभूमिस्थित मनुष्यपशुगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७७ ॥

छन्द अडिल्ल— पुष्कर पश्चिम अर्ध भाग में जानिये, रुक्मी नाम कुलाचल सुखदा मानिये ।
ता ऊपर जिन गेह अकृत्रिम मणि मई, सो हम पूजैं सुखदायक पुनि की सही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७८ ॥

चौपई—याही रुक्मी गिरि पै जान, कूट कहे अति ऊंचे मान । तिन में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पचिश्म दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७९ ॥

या रुकमी गिरि कूटन मांहि, देव बसै नाना गुण पांहि । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल सबंधि कूटवासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८० ॥

याही रुक्मी पर्वत शीश, कुण्ड कह्यो बहु जल तहँ दीश । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि ह्रद गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

याही कुण्ड विषै शुभ जान, कमल कहे मणिमय शुभ खान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया रुक्मिनाम कुलाचल संबंधि कुण्ड स्थित कमल उत्पत्ति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८२ ॥

इन ही कमल ऊपरैं सही, देवी देव बसैं अधिकही । तिन की उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजो अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया रुक्मि नाम कुलाचल सबंधि ह्रद कमल वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८३ ॥

याही रुक्मी गिरि सो जान, नंदी शिखा चली जल खान। याकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां रुक्मिनाम कुलाचल सबधि नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८४ ॥

दोहा—पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा रुक्मी पर्वत सोय। तिन गति हरि शिव को गये, ते सिध पूजों मद खोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया रुक्मि नाम कुलाचल संबधि उत्पतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८५ ॥

चौपई—पुष्कराद्ध पश्चिम दिश मांहि, हैरणवत खेतर शुभ पांहि। तामें उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां हैरण्यवत क्षेत्र सबधि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८६ ॥

यां हिरण्यवत खेतर मान, मनुष्य पशू उपजै अधिकान। तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां हैरण्यवत क्षेत्र सबधि मनुष्य पशुगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

याही हिरण्यवत खेतर मांहि, नाभि नाम पर्वत तहां पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां हैरण्यवत क्षेत्र संबधि, नाभि गिरिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८८ ॥

पश्चिम पुष्कराद्ध के मांहि, शिखरीनाम कुलाचल पाहि। ता ऊपर जिनवर के धाम, सो मैं जजों स्वर्ग शिव काम ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां शिखरी नाम कुलाचल संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ८९ ॥

वेसरी छन्द—

याही शिखरी गिरि पै जानो, कूट वडो सुन्दर सब थ नो। तिन में उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया शिखरी कुलाचल सबधि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

इन ही कूटन ऊपरि जानों, देव रहे धर हर्ष अमानों। तिन की उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये।
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां शिखरी कुलाचल सबधि कूटवासी देवगतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९१ ॥

याही शिखरी पर्वत जोवे, ऊपरि कुण्ड कह्यो दुख खोवे। याकी उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया शिखरी कुलाचल सबधि द्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९२ ॥

याही कुण्ड माहि मनलाया कमल, कहे शोभा अधिकाया। ताकी उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशाया शिखरी कुलाचल कुण्ड सबधि कमल गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९३ ॥

इन ही कमलन पे मन लाये, देवी देव वसै सुखदाये। तिनकी उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥
ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशायां शिखरी कुलाचल सबधि कमल वासी देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९४ ॥

याही शिखरी गिरि पै जाने, नदी तीन चली जल खाने । तिनकी उत्पति छेदक सोवे, ते सिध पूजों अर्घ संजोवे ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां शिखरी नाम कुलाचल सबंधि त्रय नदी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

पश्चिम पुष्कर अर्ध सु मांही, शिखरी नाम कुलाचल पांही । तामें उत्पति छेदक सोये, ते सिध पूजों अर्घ संजोये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा शिखरी नाम कुलाचल सबंधि उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

छंद अडिल्ल—

पश्चिम पुष्करार्धं द्वीप के जानिये, ऐरावत शुभ क्षेत्र महा सुखदानिये ।
तामें जिन के थान तीर्थ उज्ज्वल सही, ते सब अर्घ बनाय जजों पुरकी मही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९७ ॥

चौपई—याही ऐरावत थल मांहि, सिद्ध क्षेत्र सुर कर थुति लांहि । तिन शुभ ठाम सु अर्घ चढाय, पूजों मन वच काय लगाय ।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ ९८ ॥

याही ऐरावत के मांहि, जिन चौवीस अतीत कहांहि । होवे इस ही थल में देव, तिन पद अर्घ जजों करि सेव ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र संबंधि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९९ ॥

इस ही ऐरावत की ठौर, वर्तमान जिनवर सिर मोर । बीस चार तीरथ जग नाथ, तिन पद अर्घ जजों कर चाव ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०० ॥

ऐरावत इस ही में जान, जिन चौवीस होयंगे मान । आगम काल विषैं सो देव, तिन पद अर्घ जजों करि सेव ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥ १०१ ॥

इस ही ऐरावत की धरा, तीन काल वरती जिनवरा । सत्तर दोय होय भगवान, तिन पद अर्घ जजों शुभ जान ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र त्रिकाल सबंधि भूत भविष्यत वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०२ ॥

याही ऐरावत के मांहि, विजयारध पै जिन थल पांहि । तिनमें बिंब जिनेश अकार, ते हौं जजों अर्घ धरि सार ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि विजयार्द्धस्य जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०३ ॥

याही खगगिरि ऊपरि जान, कूट कहै दीरघ शुभ खान । ताकी उत्पति हर शिव गये, ते हौं जजों अर्घ कर लये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबंधि विजयार्द्ध कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०४ ॥

इन ही कूटन ऊपर सार, देव बसै सुन्दर आकार । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र सबंधि विजयार्द्ध कटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०५ ॥

याही ऐरावन की ठोर, मनुष्य पशू उपजें तन जोर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्रस्य वैताढ सवधि मनुष्य पशुगति उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०६ ॥

याही ऐरावत भू जान, ता में उपसागर जल थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र उपसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०७ ॥

याही ऐरावत भू जेय, देव रहे मगधादिक तेय। याकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सवधि मगधादिक गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

इस ऐरावत खेतर मांहि, पंच म्लेच्छ खण्ड वृष नांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्र सबाध पंचम्लेच्छ खण्डगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

इस ही म्लेच्छ खण्ड भू मांहि, तिन में वृषभाचल गिरि पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशायां ऐरावत क्षेत्रस्य म्लेच्छ खण्ड संबंधि वृषभाचलगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ११० ॥

छंद–अडिल्ल— पश्चिम दिश आधे पुष्कर की जानिये, ऐरावत शुभ क्षेत्र महा सुख खानिये।
तामें उत्पति छेद भए भव पारजी, ते सिध पूजों मन वच काय लगारजी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया ऐरावत क्षेत्र सवधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

चौपई–इस ही थल दक्षिण उत्तरा, ईक्ष्वाकार दोय गिरवरा। तिनमें रतन मई जिन गेह, ते हों नमों ठान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं सवधि द्वय इक्ष्वाकार सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

छंद–अडिल्ल— पुष्करार्ध मझार दिशा पश्चिम सही, है जिन गेह सुथान तीर्थ शुभ की मही।
ते सब सुर खग जजैं हम बल हीन हैं, तातैं इस ही थान जजों हो दीन हैं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महा अर्घम ॥ ११३ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— पश्चिम पुष्कर अर्ध में, जहाँ जहाँ जिन गेह। सो सब अर्घ बनाय शुभ, जजो सहित बहु नेह ॥ १ ॥

छंद बेसरी–प्रथम मेरु पे षोडष गेहा, तेहों जजों ठान बहु नेहा। और कुलाचल पैं जिनथाना, ते भी नमों छांड़ि सब माना ॥२॥
विजयारध चौबीस बताये तिन पे भिन भिन जिन थल गाये। ते भी अर्घ बनाय सु भाई, पूजों मन वच तन सुध काई ॥३॥

है वच्चार षोडश सुखदाई, तिन पै षोडश जिन गृह पाई। ते भी अर्घ बनाय सरूपा, पूजों धार भक्ति शिव भूपा ॥४॥
ईच्वाकार दोय गिरि नीका, तिन पै भी जिन मन्दिर टीका। तहँ जाने की शक्ती नाहीं, जजैं यहां ही तें थुति लांहि ॥५॥
नंदी गिरिवर के जे कुण्डा, तिन टापुनि पैं बहु गिरि तुण्डा। तिन पै देवन के गृह होई, तहां इक कमल रतन मय जोई ॥६॥
तिस ही कमल ऊपरैं जानों, सिंहासन सुन्दर शुभ मानों। ताके ऊपर हैं जिन बिंबा, ते हों जजों छांडि के कुण्डा ॥७॥
और सकल स्थानक के मांही, सिद्ध क्षेत्र जे तीरथ ठांहि। ते हूँ मन वच अर्घ सु आनों, पूजन करि हों जै जै ठानों ॥८॥
इत्यादिक जे मंगल दाई, ते हूँ जजों भक्ति मन लाई। देव खगा तो उस थल जावे, हम भी इस थल भावन भावैं ॥९॥
पुण्य प्रेरणा परिणति आई, तब ही यह उपजै वर भाई। और भी जे भव २ सुख चाहे, तो जिनवरजी के गुण गावे ॥१०॥
तिन गुण गावे सब सुख होवे, सकल पाप मल अगले धोवे। तातैं सकल छांडि परमादा, सेवा जिन कहनी क्या ज्यादा ॥११॥
दोहा—ऐसे पुष्कर अर्ध के, पश्चिम जे जिन गेह। पूजों भवि जिन भाव सों, ते अघ शिर जल देह ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पश्चिम दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ पूजा जयमाला पूर्णार्घम्। इति ॥

॥ मानुषोत्तर पर्वत संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोह—मानुपोत्र पर्वत विषै, चव दिश चव जिन धाम। ते हों जजों सुथापि इहां, भक्ति धार शिव काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं।

चौपई—निर्मल नीर क्षीर दधि समा, शुभग पात्र ल्यायो चित रमा। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबंधि चतुर्दिश चतुजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन गंध अपार, जल तें घसि ल्यायो कर सार। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि चतुर्दिश चतुजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल अखंड सुगन्ध, धोय लायो सुगन्ध करि खंड। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबंधि चतुर्दिश चतुजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

कल्प वृक्ष से फूल सुभाय, गंध भली नाना रंगलाय। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सबंधि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा फीणी घेवर ल्याय, मोदक आदि सुभग चरु भाय। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो निवैद्य ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तमहार, कनक थाल लायो भर सार। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पर्वत सबंधि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप० ॥ ६ ॥

धूप सुगन्ध मेल दश मही, लायो जिन पद खेवन मही। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सबंधि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप० ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम अपार, पूंगीफल आदिक फल सार। मानुपोत्र चवदिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर सबन्धि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल० ॥ ८ ॥

जल चन्दन अच्चत पुष्प सोय, इन आदिक वसु द्रव्य संजोय। मानुपोत्र चव दिश जिन धाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि चतुर्दिश चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

छंद—अडिल्ल—

मानुपोत्तर चवदिश जिन वर के धामजी, सुर खगही तहँ जाय नहीं अन कामजी।
शक्ति हीन हम तनी जान शक्ति नहीं, तातैं इहां ही भावन करि के पूजों सही ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत चतुर्दिशा सम्बन्धि चतुर्जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपाई—मानुपोत्र पर्वत पै जान, पूरब दिश जिन मंदिर आन। तहां बिम्ब जिनवर के सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पूर्व दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

दक्षिण दिश इस गिरि के जेय, जिन मंदिर शोभे अति तेय। बिम्ब तहां जिन के आकार, तेहों जजों अर्घ कर धार ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत दक्षिण दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

मानुपोत्र पर्वत इस ठौर, हैं जिन भवन सुतीरथ जोर। पश्चिम दिश सुर खग पुजवाय, सो मैं पूजों अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत उत्तर दिशाया जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

मानुपोत्र की उत्तर दिशा, है जिन मंदिर शोभै लसा। पूजैं देव भक्ति मन लाय, सो मैं पूजों अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत उत्तरदिशायां जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

मनुपोत्र पर्वत चव कूट, तिन पै है चव जिन गृह छूट । तिन को अर्घ यहां ही लाय, पूजों भक्ति भाव अधिकाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपत्तर पर्वतस्य चतुर्दिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

मानुपोत्र पर्वत पै जान, हैं पट् कूट सुरन के थान । तिनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबधि पट्कूटानां देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

इनही पट् कूटन पै सही, गरुड कुमार देव तैं रही । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि कूटवासो गरुड कुमार जाति देव गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

मानुषोत्तर पर्वत के शीश द्वादश, कूट और तहां दीश । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत संबधि द्वादश कूट सुवर्णकुमार देवगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

इनही द्वादश कूट मझार, हेम कुमार सुदिशा कुमार । ये देवी अरु देव रहाय, इनकी गति हर सिद्ध कहाय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि द्वादशकूट वासो देवी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

या ही मानुपोत्तर गिरि मांहि, चौदह द्वार नदी के पांहि । तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वतस्य चतुर्दशनदो नाम चतुर्दशद्वार सम्बन्धि उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

मानुपोत्तर पर्वत पै सही, वीस दोय शुभ कूट सु मही । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मानुपोत्तर पर्वत सम्बन्धि द्वाविंशति कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

याही मानुपोत्र गिरि मांहि, उतपति जीव घने ही पांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पर्वत सम्बन्धि उत्पति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— मानुपोत्र पर्वत विषै, कहे जिनेश्वर थान । तिनको अर्घ जजों सही, मन वच तन सुध आन ॥ १ ॥

॥ वेसरा छन्द ॥

पुष्करार्द्ध द्वीप के मांहि, वलयाकार गिरी तिस ठांहि । ऊंचो सतरे सै इक ईशा, योजन इतने दीरघ दीशा ॥ २ ॥

भू में व्यास तना परमाना, एक सहस्र बाईश सुजाना । यह तो योजन नीचे चौरा, ऊपरि व्यास सतक चव ओरा ॥३॥

फिर चौवीस अधिक मिलवाओ, इतना ऊपर चौड़ा पाओ । तिन पै एक वेदिका, जानों, चार हजार धनुष्प तुंग मानों ॥४॥

धनुप सवासौं चौडी होई, वलयाकार गिरी सम जोई। तिनके ऊपर कोटि बाईसा, चव ऊपर तैं जिनगृह दीसा ॥ ५ ॥
वाकी अष्टादश जे कूट, तिन पै देव रहैं अघ छूट। पट कूटन पै देवी वासा, ऐसे जिनवाणी में भासा ॥ ६ ॥
सवा तीस योजन सुनि भाई, चार सैंकड़ा और बताई। इतना मानुपोत्तर भू मांही, नेम जेम जानो मन ठांही ॥ ७ ॥
चव दिश त्रय त्रय कूट बताये, दो दो विदिशा में त्रय गाये। एक एक भीतर चवकानी, एक एक जिन गृह तहं जानी ॥८॥
तिनकों सुरखग पूजें जाई, अर्घ करै वसु द्रव्य मिलाई। हम तो जान शक्ति नहि पाई, तातैं इहां तैं अर्घ चढ़ाई ॥ ६ ॥

दोहा—— मनुपोत्तर चवदिश विपैं, हैं जिनके चव धाम। तिन थल पूजैं थल लहैं, टेक मुक्ति फल मान ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घम् ॥ इति० ॥

॥ अढाई द्वीप समुच्चय जयमाला ॥

दोहा—— द्वीप अढाइ के विपै, जे जे जिनके थान। ते सव अर्घ बनाय के, जजैं सु मन वच काय ॥ १ ॥
द्वीप अढ़ाई में जिती, रचना वनी अनादि। ते थोडी भापी सही, समझैं सशय बादि ॥ २ ॥

॥ छंद वेसरी ॥

प्रथमं द्वीप जम्बू के मांही, पर्वत त्रय सत ग्यारह पाहीं। इतनी ही वेदी गिरिलारै, रतन मई शोभा तिन सारै ॥ ३ ॥
नव्वे कुण्ड वन्दूं भू माही, तितनी वेदी इनके ठांही। इह छव्वीस वेदी जुत होई, वेदी मणि मय शोभे सोई ॥ ४ ॥
अब इनके सुन भिन भिन रूपा, नंदी का परमाण अनूपा। जंबू द्वीप विपैं इक मेरा, पट गिरि नाम कुलाचल हेरा ॥५॥
चार यमक गिरि सरिता तीरे, कंचन गिरि दो सौ शुभ नीरै। बड़ी नदी के तट यह पइये, दिग्गज नाम आठ तहां लइये ॥६॥
पोडश गिरि वक्षार सुहाई, क्षेत्र विदेह विपैं यह पाई। चव गज दंतापर्वत होहै, तीस चार विजयार्ध शोहै ॥ ७ ॥
वृपभाचल चौतीस उतंगा, नाभि नाम गिरि चार सुचंगा। ये सब पर्वत लेय मिलाई, तीस सैंकड़ा ग्यारह भाई ॥ ८ ॥
कुण्ड निव्वे का सुनो सरूपा, नंदी आवत गिरि तैं भूपा। चौदह कुण्ड महा सुखकारी, तिनमें इक इक टापू धारी ॥६॥
टापुन पै इक इक गिरि जानों, तिन पै देवन के हैं थानो। देवि महल पै कमल बताये, कमल माहि सिंहासन गाये ॥१०॥
सिंह पीठ पै जिन आकारा, विम्ब ऊपरैं सरिता धारा। करै सदा जल न्होन सुभाई, चौदह तो ऐसे कुण्ड थांही ॥११॥
तिन तैं सरित विभंगा आवै, वारह कुण्ड विदेह सु पावै। चौसठ कुण्ड विदेह में जानो, तिनमें नंदी गंग समानो ॥१२॥

ऐसे नव्वे कुण्ड बताये, अब छत्तीस द्रहैं सुन वाये। षट द्रह कुलाचलों के शीशा, बहु जल रासि कहैं जगदीशा ॥१३॥
सीता नदी पै दश जानो, दश सीतोदा मांहि वखानो। यह छब्वीस द्रहैं जल रासा, और सुनो जु कुण्ड धुनि भासा ॥१४॥
विजयारध की गुफा सु मांही, दो दो कुण्ड कहे जल थांही। तिन तैं सरिता निकसत भाई, उन्मगना निर मगन कहाई।१५।
इक इक विजयारध की लारै, चव चव कुण्ड कहे विस्तारै। सब खग गिरि चौंतीस सुजानो, सब कुण्डन जोड़े परमानो।१६।
अधिक छत्तीस एक सौ होई, अब सुन सरिता की विधि सोई। गंगा सिधु रक्ता रक्तोदा, चार नदी यह जलकी सोधा।१७।
छप्पन सहस्र कहा परिवारा, नदी और जानो पथ धारा। रोहित रोहितास्य द्वय भेवा, सुवर्ण रूप के कुल दो एवा ॥१८॥
इन चव सरिता का परिवारा, एक लाख द्वादश हज्जारा। हरि हरि कान्ता नामा सोई, नर कांता चारों मिल होई ॥१९॥
इन चारों का सुनि परिवारा, और दोय लख का विस्तारा। और दोय सरिता की बातें, भाषों जिन कीनी विख्यातें ॥२२॥
सीता सीतोदा द्वय जानो, तिन रिवा(नदी सुनि कानो। एक लाख अड़सठ सुहजारा, और विदेह विभंग विचारा ॥२१॥
तिन नदीन का सुन परिवारा, तीन लाख छत्तीस हजारा। और विदेह नदी गंगासी, चौंसठ सरिता दीरघ वासी ॥२२॥
तिन चौंसठ का सुनि परिवारा, आठ लाख छिनवे सु हजारा। सर्व नदी मिलवाओ वीरा, मूल और परिवार सुधीरा ॥२३॥
सत्तरह लाख बानवे हजारा, नव्वे मूल ऊपरै धारा। फिर उपसागर हैं चौंतीसा, इन आदिक जिन कुण्ड सु दीसा ॥२४॥
ये तो एक मेरु संग जानो, ऐसे ही पंचनमग मानो। हीन अधिकता जो परमाना, यथा योग्य जानो तुम स्याना ॥२५॥
लख योजन के मेरु सुदीपा, द्वय लख योजन उदधि सुदीपा। खण्ड धातकी चौ लख व्यासा, कालोदधि वसु लख कोव्यासा।२६।
पुष्कर षोडश लाख बताया, मानुषोत्तर अर्ध सुधाया। ऐसे योजन लख पैंताली, मनुष्य लोक जानो शिव पाली ॥ २७ ॥
मानुषोत्तर वलयाकारा, कनक मई पर्वत शुभ धारा। योजन सतरह सौ इक्कीसा, ऊंचा गिरि भाण्या जगदीशा ॥ २८ ॥
ता भू व्यास तना विस्तारा, एक हजार योजन मन धारा। ऊपर तेइस और मिलाओ, इतना मोटा तो भू पाओ ॥ २९ ॥
ऊपर चौड़ाई परमानो, योजन चव शत चौविस मानों। ता ऊपर इक वेदी भाई, चार हजार धनुष तुंगगाई ॥ ३० ॥
सवा कोश मोटी मन आनो, वलयाकृत ऊपर सो मानों। ताके ऊपर चव जिन गेहा, सो सुरखग पुजों करि नेहा ॥३१॥
गज दंतन पै बीस बताये, तीस कुलाचल के मन भाए। जंम्बू शालमली दश जानो, ये जिन गेह जजों शिव थानो ॥३२॥
गिरि वखार असी जिन गेहा, पूजें मिटै पाप तै नेहा। विजयारध सत्तर सौ जानों, ते जिन गेह जजों अब हानों ॥ ३३॥

ये सब मनुष्य लोक के मांही, दो कम चौसठ जिन थल पांही । सुर खग तो प्रत्यक्ष जा पूजैं, हम इह थापि जजैं अघ धूजैं ।३४।

दोहा— द्वीप अढ़ाई के विषैं, कहे थान जिन राज । बिना किये सुध मणिमई, ते पूजों शिव काज ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं अढ़ाई द्वीप सम्बन्धि पूजा जयमाला पूर्णार्घं ॥ इति० ॥

॥ द्वीपसमुद्रों के देवगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई–पुष्करार्द्ध पशु लोक मझार, दक्षिण चक्षुमान सुरसार । याकी गति हर ते शिव होय, जे सिध जजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं तिर्यक लोक पुष्करार्द्ध संबंधि दक्षिण दिशाया स्वामी चक्षुमान देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १ ॥

या ही पुष्कर अर्ध सुजान, उत्तर चक्षुमान सुरमान । या की गति हर ते शिव होय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तिर्यकलोकस्य पुष्करार्द्ध द्वीप सबंधि उत्तरदिशाया स्वामी चक्षुमान देवगति च्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २ ॥

पुष्कर सागर दक्षिण जान, श्री प्रभनाम देव सुख दान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध समुद्रस्य दक्षिण दिशाय स्वामी श्रीप्रभ देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३ ॥

या ही पुष्कर दधि में सार, उत्तर श्रीधर देव सुधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध समुद्र सबंधि उत्तर दिशाया स्वामी श्रीधर देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

वारुणि द्वीप दक्षिण दिश जेय, वरुण देव स्वामी गिन लेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं वारुणी द्वीप सबंधि दक्षिण दिशाया स्वामी वरुण देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

या ही वारुणि द्वीप मझार, वरुण प्रभसुर उत्तर सार । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वारुणी द्वीप सबंधि उत्तर दिशाया स्वामी वरुणप्रभदेव गतिछेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

दक्षिण वारुण सागर मांहि, मध्य नाम सुर हैं तिस ठांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण दिश वारुणी द्वीप सबंधि उत्तरदिशा मध्य देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७ ॥

समुद्र वारुणी उत्तर सार, मध्य नाम देव हितकार । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वारुणी समुद्र उत्तर दिशा सबंधि मध्यनामा देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

क्षीर द्वीप दक्षिण दिशि जान, पांडु नाम सुर अधिपति मान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीर द्वीप सबंधि दक्षिण दिशायाः स्वामी पाडुक नाम देवगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ९ ॥

क्षीर द्वीप की उत्तर दिशा, पुष्पदंत सुर अधिपति लसा। या गति छेद भए भवपार, ते सिध जजों अरघ करि सार ॥

ॐ ह्रीं क्षीर द्वीप सबधि उत्तर दिशाया' स्वामी पुष्पदत नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

क्षीर उदधि की दक्षिण दिशा, विमल नाम सुर स्वामी लसा। याकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीरो दधि सबधि दक्षिण दिशाया. स्वामी विमल नाम देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

क्षीर समुद्र उत्तर दिश सार, विमल प्रभ सुर है निरधार। ताकी में उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीर समुद्र सबधि उत्तर दिशाया: स्वामी विमल प्रभ नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

घृत सु दीप की दक्षिण दिशा, सुप्रभ सुर स्वामी तहँ लसा। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृत दीप सबधि दक्षिण दिशाया: स्वामी सुप्रभ नामा देवगतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

उत्तर दिशि घृत द्वीप मझार, महा प्रभ सुर ईसर सार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृ दीप सबंधि उत्तर दिशाया. स्वामी महा प्रभ नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

घृत समुद्र सु दक्षिण सार, स्वामी कनक नाम सुर धार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृत समुद्र संबंधि दक्षिण दिशाया' स्वामी कनक नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

घृत सागर के उत्तर जान, कनक प्रभ सुर स्वामी मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घृत सागर संबधि उत्तर दिशाया' स्वामी कनक प्रभा नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

क्षुद्र द्वीप के दक्षिण सार, पुन्य नाम सुर स्वामी धार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र द्वीप संबधि दक्षिण दिशाया स्वामी पुन्य नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

क्षुद्र द्वीप उत्तर दिशि जान, पुन्य प्रभ सुर स्वामी मान। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र द्वीप सबंधि उत्तर दिशाया. स्वामी पुन्य प्रभ नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

क्षुद्र समुद्र दक्षिण दिशि सार, स्वामी देव गन्ध सुर सार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र समुद्र संबधि दक्षिण दिशाया स्वामी देव गन्ध नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १९ ॥

क्षुद्र समुद्र उत्तर दिशि सार, महा गन्ध सुर स्वामी धार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्र समुद्र सबधि उत्तर दिशाया. स्वामी महा गन्ध नामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

द्वीप नंदीश्वर दक्षिण सार, नंद नाम सुर अधिपति सार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप संबधि दक्षिण दिशाया स्वामी नंद नामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

द्वीप नंदीश्वर उत्तर जेय, नंद प्रभ सुर स्वामी तेय। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप संबधि उत्तर दिशाया स्वामी नंदप्रभनामा देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

॥ नंदीश्वर द्वीप संबंधि जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—नंदीश्वर चव दिश सही, बावन जिनके धाम। जहां जान शक्ती नहीं, जजों थापि इस ठाम ॥

ॐ ह्रीं अष्टम नंदीश्वर द्वीपे चतुर्दिक् द्विपंचाशज्जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

चौपई—निर्मल जल शुभकारी लेय, मनवचतन बहु हर्ष धरेय। नंदीश्वर चव दिश जिन धाम, पूजों द्रव्य थकी शिव काम ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन घसि शुभ सार, निर्मल भाव सहित कर धार। नंदीश्वर चव दिश जिन धाम, पूजों द्रव्य थकी शिव काम ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल धोय अपार, ले आयो अपने कर धार। नंदीश्वर चव दिश जिन धाम, पूजों द्रव्य थकी शिव काम ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

सुर तरु के से फूल सुगन्ध, नाना वरण काम के फन्द। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, मोदक आदि अनेक सुभाय। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक रतन समान विहार, ले आयो शुभ पातर धार। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥

दशधा धूप सुगन्धित सोय, ले आयो खेवन मन होय। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बदाम अनूप, पूगी फल ले आदिक तूप। पूजों नंदीश्वर जिन गेह, बावन तीरथ अघ हर जेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

छंद—अडिल्ल— जल चंदन अच्छत पुष्प चरु लाइये, दीप धूप फल मेल अर्घ करवाइये ॥
नंदीश्वर चव दिशा गेह भगवान के, ते सब इहां तैं पूजों कर सुर गान के ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर चतुर्दिक् संबंधि द्विपचाशत् जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

जयमाला

दोहा— नदीसुर शुभ द्वीप में, जिन चैत्यालय सोय, बावन चव–दिश के सही, ते पूजों मद खोय ॥ १ ॥

मनुयानन्द की चाल—द्वीप नंदीश्वरा अष्टमा जानिये, तीर्थ जिन भवन महा पापहर मानिये।
मनुष्य का गमन नहिं तास थल मानिये, देव हरि लेय के शब्द सुख आनिये ॥ २ ॥
शची जुत आय हरि भक्ति जिन की करैं, पाप कर्म जारि शिव थान मनसा धरैं।
स्वर्ग सोलहतने हरी सबैं आयजी, ज्योतिपा व्यंतरा असुर यश गायजी ॥ ३ ॥
इंद्र सौधर्म ईशान द्वय जानिये, और असुरादि के इंद्र द्वय मानिये।
च्यारि दिशि चार हरि पूज जिनकी करें, पहर दो दो तनी भक्ति करि अघ हरैं ॥ ४ ॥
फिर वह इंद्र और दिशा को जाय है, या तरह दीप प्रक्रम्य निति दाय है।
आपना आपना लेय परवारजी, फिरै पूजते सभी देव हरपायजी ॥ ५ ॥
सभी निज मुख थकी शब्द जय जय करैं, गान नृत्य भक्ति कर आपने अघ हरै।
आठ दिन रैन दिन पुन्य उपजाय हैं, आपनो सुर तनों सफल पद लाय हैं ॥ ६ ॥
वरप इक मांहि वेर तीन सुर आय हैं, द्वीप नंदीश्वरै पूजि जिन लाय हैं।
मास फाल्गुन सु आपाढ़ कार्तिकविपै, ठानि शुभ जात ये भक्ति मुखतैं अखै ॥ ७ ॥
चार अंजन गिरी द्वीप में है सही, दधि गिरी वापि में पोडशा सुखमही।
तीस दो रतिकरा सर्व बावन कहे, शीश सब के भवन जिन तने हैं रहे ॥ ८ ॥

किये बिना सकल विधि काल चिर की सही, मांण मई बिम्ब जिनराज सुकृत मही।
धन्य जो जीव यह थान पूजा करै, तास फल फिर नहीं जनम मरणा करै ॥ ९ ॥
दोहा—शक्ति नही हम जान की, भक्ती प्रेरे आय। तातैं मनवच "टेक" शुभ, पूजत मनवचकाय ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीप सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घं ॥ इति ॥

॥ नंदीश्वर द्वीप के पूर्व दिशा संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा—पूरब दिशि जिन के भवन, तेरह जिन आवास। ते पूजों इहां थापि के, करण सकल अघ नाश ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापन।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चौपई—निर्मल उदधि चीर जललाय, कनक पात्र में धार सुभाय। नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा संबधि एक अञ्जन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्ट रतिकर गिरि स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥
चंदन बावन जल वसिवाय, कनक पात्र में धार शुभाय। नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अजन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्ट रतिकर गिरि त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दन ॥ २ ॥
अक्षत शाल खंड को नांहि, नख शिख शुद्ध बीनकर लांहि। नंदीश्वर पूर्व दिश जोय, तेरह पूजों जिन थल सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अजन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्ट रतिकर गिरि त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥
नाना वरण गंध सुखदाय, ऐसे सुफूल लेय हम आय। नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अजन गिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्ट रतिकरगिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥
खाजा फीणी मोदक सार, इत्यादिक चरु लेय अपार। नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिनथल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अञ्जन गिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दीपक रतन मई तमहरा, ले आयो शुभ पात्रहि भरा। नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिनथल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अञ्जन गिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप ॥ ६ ॥
दश विध गंधलाय के सही, धूप करी लाया पुनि मही। नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा सबधि एक अञ्जनगिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लोंग बदाम, पूगी फल आदिक ले धाम। नंदीश्वर पूरब दिश जोय, तेरह जिन थल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा संबंधि एक अंजन गिरि चतुर्दधि मुख गिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प भाय, चरु वर दीप धूप फल लाय। ले नंदीश्वर पूरब जोय, तेरह जिनथल पूजों सोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा संबंधि एक अंजनगिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥ ९ ॥

छंद अडिल्ल—

अंजन गिरि इक दधि गिरि चार बखानिये, रतिकर आठ सु पूरब दिशको मानिये।
इनपै इक इक गेह देव जिन के सही पूजें सुर तो जाय, जजैं हम इस मही ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशा संबंधि एकअंजनगिरि चतुर्दधि मुखगिरि अष्टरतिकर गिरिस्थित त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं० ॥१०॥इति

॥ नंदीश्वर द्वीप के दक्षिण दिशा की पूजा ॥

दोहा—नंदीश्वर दक्षिण दिशा, तेरह जिन के धाम। जजैं देव तहां जाय कें, हम पूजैं इस ठाम ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन। अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

॥ छंद वेसरी ॥

पदम कुण्ड का निर्मलनीरा, पात्र धार हर लायो पीरा। नंदीश्वर दक्षिण जिनगेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल० ॥ १ ॥

चन्दन गंध अगर सम होई, जल से घसि लायो शुभ जोई। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल शुद्ध बताये, धोय शुद्ध जल तैं कर लाये। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत० ॥ ३ ॥

नाना वरण फूल सुखदाई, गंध सहित लेकर श्रुति गाई। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहों जजों ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश, जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

खाजा फीणी घेवर सारा, मोदक आदिक ले चरु प्यारा। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहौं जजौं ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन मईमन लाया, तमहर ज्ञान करा सुखदाया। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहौं जजौं ठान बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीप० ॥ ६ ॥

धूप सुगंध लेय दशभाई, लायो अधिक ठान अधिकाई। नंदीश्वर दक्षिण जिनगेहा, तेहौं जजौं ठान बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं० ॥ ७ ॥

श्रीफल खारक लौंग बदामा, इन आदिक शुभ फल ले नामा। नंदीश्वर दक्षिण जिन गेहा, तेहौं जजौं ठान बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल० ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत चरु लाये, पुष्प सु दीप धूप फल भाये। नंदीश्वर दक्षिण जिनगेहा, तेहौं जजौं ठानि बहु नेहा ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥९॥

छंद अडिल्ल—

नंदीश्वर की दक्षिणदिश को जानिये, अंजनगिरि इक चव दधिमुख गिरि मानिये।
रति गिर आठ सदीव सकल दशत्रयगिरा, इनपे इक इक थान जिनेश जजौं खरा ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं० ॥ १० ॥ इति

॥ नंदीश्वर द्वीप के पश्चिम दिशा संबंधि पूजा ॥

छद अडिल्ल—

नंदीश्वर की पश्चिम दिश को जानिये, तेरह पर्वत मणिमय सुखदा मानिये।
तिन में इक इक गेह देव जिन के सही, पूजैं सुर तहां जाय जजैं हम इस मही ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ: स्थापनं। अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

॥ मुनियानन्द की चाल ॥

लेयजल सुभग पातर विषैं सारजी, भक्ति मन वच तनी काय कर धार जी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजौं जिन पाय, धनि जन्म निज मानजी ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल० ॥ १ ॥

बावना चन्दना रंग घसि जल करी, धार शुभ पात्र में बीनती उच्चरी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं० ॥ २ ॥

लेय विन खंड के अच्छता शुभ मई, ऊजले जोर सब श्वेत तिन शुभ मई।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिनपाय धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥ ३ ॥

फूल गंध सहित ले भक्ति कर भायजी, रंग नानामई, रक्त पीताय जी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिनपाय धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं० ॥ ४ ॥

सुभग नैवेद्यरस सहित सुन्दर सही, और ले मोदका भक्ति धर उर सही।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं० ॥ ५ ॥

तमहरा मणि जिसे दीप का लाइये, थाल धरि हाथ में भक्ति मुख गाइये।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिनपाय धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप दशविधकरी गंध सुखदायजी, खेवने आय कर भक्ति वर भायजी।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप० ॥ ७ ॥

लेय खारक तथा लोंग श्रीफल सही, आदि इन और फल आन पुनि की मही।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धामजी, जजों जिन पाय धनि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

नीर चन्दना अछत फूल चरु सुखकरा, दीप फल धूप फिर मेल अर्घे करा।
द्वीप नंदीश्वरा पश्चिमा धाम जी, जजों जिन पाय धरि जन्म निज मानजी ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ६ ॥ इति

॥ उत्तर दिशा संवंधि पूजा ॥

दोहा—नंदीश्वर उत्तर दिशा, तेरह जिन वर धाम। सुर पूजैं तहां जायकैं, हम पूजैं इस ठाम ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौपट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वपट् सन्निधिकरण।

सोरठा—निर्मल नीर सुलाय, कनक पात्र धरि सुख मही। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

चन्दन बावन पाय, गंध सहित बहु लाइये। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं० ॥ २ ॥

अत्तत अति सुखदाय, उज्वल खण्ड विना लिये। उत्तर दिश जिनराय नदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अत्तत० ॥ ३ ॥

सुर तरु पुष्प सु भाय, नाना रँग युत लाइयो। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प० ॥ ४ ॥

शुभ नैवेद्य बनाय, नानारस युत लाइयो। उत्तर दिश जिन राय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंद श्वर उत्तर दिशाया त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्य ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय लाय, तमहर घट परकाशते। उत्तर दिश जिन धाम, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं० ॥ ६ ॥

धूप सुगंध मिलाय, दशविध की ले आइये। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥

ॐ ह्रीं नद श्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्री फल लोंग बदाम, पिस्ता आदिक फल सही। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं० ॥ ८ ॥

जल चदन सु मिलाय, मेल द्रव्य वसु आनिये। उत्तर दिश जिनराय, नंदीश्वर थल के जजों ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ छंद पद्धडी ॥

नंदीश्वर उत्तर दिश पिछान, तहँ तेरह जिन थल सुभग मान। ते पूजों द्रव्य मिलाय आठ, ताफल सब जल दे कर्म आठ ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशायां त्रयोदश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं ॥ १० ॥ इति

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—नंदीश्वर पूरब दिश जान, अंजन एक महा गिरि मान। ता ऊपर इक जिन के गेह, सो हूं जजों ठान बहु नेह ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां अंजन गिरि सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ १ ॥

याही अंजन गिरि सम सोय, नील वर्ण अति सुन्दर होय। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशाया अजनगिरि सबंधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ २ ॥

या अंजन गिरि पूरब दिशा, नंदा नाम बावडी लसा। या में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीप पूर्व दिशायां नदानाम वापिका गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ३ ॥

या नंदा वापी के मांहि, दधि गिरिनामा पर्वत पांहि। ताको उतपति को हर देव, तिन के पद पूजों करि सेव ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशाया अजन गिरि सबंधि पूर्व नदानामा वापी दधि गिरिनामा पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ४ ॥

या ही दधि गिरि ऊपर जान, श्री जिन मंदिर मणि मय खान। ते हों मन वचकाय लगाय, पूजों जय जय शब्द कराय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां दधि गिरि सबधि शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ५ ॥

नंदोत्तर इस वापी तीर, पर्वत रतिकर दो शुभ वीर। तिन की उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां अंजन गिरित' पूर्व दिशायां नदोत्तरावापी सबंधि द्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ६ ॥

इन ही रति कर युगगिरि शीश, है जिन मंदिर युग दो ईश। तिन के पाय नमों मद खोय, ता फल शिव थानक सुर होय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अजन गिरि पूर्व दिशाया नंदानामा वापितः पूर्व दिशाया द्वयरतिकरनाम पर्वत सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ ७ ॥

नंदा नाम थावड़ी सार, ताके पूरब दिश वन धार। ताकी उत्पात छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशाया नदावापी पूर्व दिशायां वन सबंधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

नंदानाम थावड़ो जोय, ताके दक्षिण वन है सोय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पूर्व दिशायां नंदा वाप्यः दक्षिण दिशाया वन सबधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ।

नंदीश्वर नंदा वावड़ी, ताकी पश्चिम दिश वन झडी। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ सजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीपे पूर्व दिशायां नदा वाप्यः पश्चिम दिशायां वन सवधि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् । १० ॥

नंदीश्वर नंदा वावड़ी, ताकी उत्तर दिश वन झड़ी। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीपे नंदा वाप्यः उत्तर दिशायां वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

नंदीश्वर पूरब दिश जान, नदवती वापी शुभ खान। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदवती वापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नंदवती इस वापी मांहि, है पर्वत मधि दधि गिरि ठांहि। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशाया नदवतीवापीमध्ये दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

याही नंदवती मांही, दधि गिरि पै जिन मंदिर पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदवती वापी मध्ये दधि गिरि सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

नंदवती वापी इस तीर, रतिकर पर्वत नामा तीर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदवती वापी संबधि रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

इन ही रतिकर पर्वत ठौर, ऊपर जिन मंदिर अघ तोर। तिन में विम्ब विराजै सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदवतीवापीस्थ रतिकर सवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

नंदवती इस वापी तीर, पूरब दिश को वैन गंभीर। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदवती वापी पूर्व वन गतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

वापी नंद वती तिस पास, दक्षिण दिश वन सुख की रास । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नंदवती वापी दक्षिण वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

वापी नंदवती ढिग जान, पश्चिम दिश वन सघन पिछान । ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नंदवती वापी पश्चिम वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

नंदवती इस वापी ठौर, उत्तर दिश वन सघन जु ठौर । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नन्दवती वापी उत्तर दिशिविन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

नंदीश्वर पूरब दिश जान, नंदोत्तरा वावड़ी मान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां अंजन गिरि संबंधि नंदोत्तरा वापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

नंदोत्तर वापी इस मांहि, दधिगिरि नामा पर्वत पांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अजन गिरितः दक्षिण नदोत्तरा वापी संबधि दधि गिरि पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २२ ॥

नंदीश्वर पूरब दिश जान, नंदोत्तर वापीका मान । मध्य विषैं गिरि दधि पै सोय, जिन मंदिर पूजों मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां अजन गिरितः दक्षिणदिशायां नदोत्तरावापीसबंधि दधिगिरिपर्वतस्थित जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥२३॥

नंदोत्तर इस वापी तीर, पर्वत रतिकर दो शुभ वीर । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरा वापी संबधि द्वय रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

नंदोत्तरा वावडी तीर, रतिकर दोय तुंग धरि धीर । तिन पै चैत्यालय द्वय जान, तिनपद जजों मोक्ष फल दान ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नंदोत्तरा वापी संबधि द्वयरतिकरपर्वतस्थित जिन्न भवन जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

नंदोत्तरा वावडी पास, पूरब दिशा वनी जिन भास । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरा वापी पूर्व वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

नंदोत्तरा वावड़ी तीर, ताकी दक्षिण दिश वन वीर । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्व दिशायां नदोत्तरावापी दक्षिणदिशवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ २७ ॥

याही नंदोत्तर वापी पास, पश्चिम दिश वन शोभारास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदोत्तरा वापी पश्चिम दिशवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

नंदोत्तरा इस वापी तनो, उत्तर वन अति सुन्दर गिनो । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदोत्तरावापी उत्तर दिशिवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

नंदीश्वर पूरव दिश जान, वापी है नंदपेणा मान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्वे दिशायां अञ्जनगिरि उत्तर दिशि नंदपेणावापी सबधि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

या नंदपेणा वापी मांहि, है दधिगिरि पर्वत सुख दांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां अजन गिरित. पश्चिम नदपेणावापी मध्ये दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

या नंदपेणा के शुभठान, है दधिमुख नामा गिरि जान । तापै जिनवर के शुभथान, तेहों जजों जोर युग पान ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदपेणावापी सबधि गिरि शीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

नंदपेणा इस वापी तीर, रतिकर दोय कहे दृढ धीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशाया नदपेणावापीतीर द्वयरतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

या नंदपेणा में रतिकरा, तिन पैं जिन मंदिर अघ हरा । तिन कों मनवचकाय लगाय, अर्घ चढाऊं अति हर्षाय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पूर्वे दिशायां नदपेणा वापीतीर द्वय रतिकर पर्वत जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

याही नन्दपेणा बावडी, ताकी पूरवदिश वन झडी । ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पूर्वदिशायां नन्दपेणावापी पूर्ववनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

नन्दपेणा इस वापी मझार, दक्षिण दिशको है वनसार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशाया नन्दपेणावापीदक्षिणदिशिवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

नन्दीश्वर पूरव नन्दपेण, वापी पश्चिमवन सुख देण । ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशाया नन्दपेणावापीदक्षिणदिशि वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

नन्दीश्वर पूरब नन्दपेण, वापी पश्चिम वन सुख देण । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पूर्वदिशाया नन्दपेणावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

या नन्दषेणा वापी सोय, ताकी उत्तरदिश वन जोय। ताकी उतपतिछेदक सोय, ते सिध पूजों मद मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशायां नन्दषेणावापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर पूरवदिश अंजनगिरि सही, चव वापी चवदधि गिरि रतिकर वसु कही।
षोडशवन गिरिवापी गतिहर सिध जजों, तेरह जिनके धाम भक्ति उरमें भजों ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पूर्वदिशाया एक अंजनगिरि चतुर्वापीसम्बन्धि चतुर्दधिगिरिअष्टरतिकरपर्वतषोडशवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

॥ दक्षिण दिशा सम्बन्धी पूजा ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर की दक्षिणदिशको जानिये, अंजनगिरि पर्वत है सुखदा मानिये।
ताकी उतपति छेद भये भव पारजी, ते सिध मन वच काय जजों श्रुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपूर्वदिशायां अंजनगिरिसम्बन्धि उत्पतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

नन्दीश्वर दक्षिणदिश भाय, अञ्जनगिरिपै जिन थल पाय। ताकी भक्तिभावतें सही, पूजा करें अर्घ कर लही ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अंजनगिरिसम्बन्धिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

या ही अञ्जनगिरितें सही, अरजा वापी पूरव कही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशायां अंजनगिरितः पूर्वदिशायां अरजानामवापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

या अरजावापी मधिजान, दधिगिरि नामा पर्वत मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मद मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशायां अंजनगिरित. पूर्वदिशायां अरजानामावापी दधिगिरिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

याही दधिगिरि ऊपरि जेय, हैं, जिनमन्दिर परथम तेय। देव तहां पूजों मन लाय, मैंभी पूजों अर्घ बनाय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरदक्षिण दिशायां अरजावापी मध्ये दधिगिरिशीश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

याही अरजा वापी तीर, रतिकर दोय कहे गिरिशीर। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिण दिशाया अरजावापीतीरे द्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

नन्दीश्वरदक्षिणदिशि सार, अरजा वापी के तट धार। रतिकर पै दो जिनके गेह, तेहीं जजों ठान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशायां अरजानामावापीतीरे द्वयरतिकर पर्वतशीर्ष जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

अरजा वापीके सुखकार, पूरवदिशा महावन सार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशायां अरजावापी पूर्वदिशिवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

याही अरजा वापी तीर, दक्षिणदिश वन गहन गंभीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अरजावापी दक्षिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

याही अरजा वापी पास, पश्चिमवन, इक द्रुगकी रास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अरजावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

अरजा वापीके सुखदाय, उत्तरदिश वन जघर पाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया अरजावापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर दक्षिणदिश अञ्जनगिरि सही, ताकी दक्षिण विरजा वापी जल मही।
ताकी उतपति छेद भए भव पारजी, ते सिध पूजों अर्घ थकी थुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर दक्षिणदिशा अजनगिरित. दक्षिणदिशविरजानामवापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

चोपई—विरजा इसही वापी मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत मांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों अरघ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर दक्षिणदिशायां विरजावापी दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

याही दधि गिरि ऊपर सार, जिनवरजी के मंदिर धार। देव तहां पूजे मन लाय, हम इस थल तें भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशाया विरजावापी दधिगिरिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

याही विरजा वापी तीर, रतिकर दोय महागिरि धीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशायां विरजावापी तीरद्वय रतिकरपर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

इनही रतिकर परवत शीश, है जिन मन्दिर शोभा दीश। देव इन्द्र पूजे इन मांहि, हम इस थानक भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशा विरजावापी रतिकर पर्वतशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

इसही विरजावापी तीर, पूरवदिशवन झम्मा धीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर दक्षिणदिशाविरजावापी पूर्ववनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

याही विरजावापी पास, दच्छिण दिशा महावन रास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर दच्छिणदिशा विरजावापी दच्छिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

ताकी पश्चिमवन गिन लेय, वापी विरजा गुण मय तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर दच्छिणदिशाविरजावापी पश्चिमवन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

वापी विरजा इसही पास, उत्तर दिशा महावन रासि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदच्छिणदिशा विरजावापी उत्तरदिशावनगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

नन्दीश्वर दच्छिण दिश जान, अंजन गिरि ते पश्चिम मान । वापी गतशोका जल खानि, या गति छेद जजों अघहानि ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदच्छिणदिशा अंजनगिरि पश्चिमदिशा गतशोकानाम वापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

योगत शोका वापी मांहि, है परवत दधि गिरि सुख ठांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदच्छिणदिशा अजनगिरि पश्चिमदिशागतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

याही दधि गिरि ऊपरि सही, है जिन मन्दिर तीरथ मही । पूजै देव महा शुभ लाय, हम इहं पूजैं अर्घ चढाय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदच्छिणदिशा गतशोकावापी मध्य दधिगिरिशीशजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

या गत शोका वापी तीर, रतिकर दोय बडे गिरि धीर । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर दच्छिणदिशागतशोकावापीतीर द्वयरतिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

इनही रतिकर पर्वत शीश, है जिन मंदिर जगपति ईश । देव जजैं इस थल तो जाय, हम इहां भावन अर्घ चढाय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदच्छिणदिशा गतशोका वापी तीर द्वयरतिपर्वतशीश जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

यागत शोका वापी तनो, पूरब दिश वन शोभा वनो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदच्छिणदिशागतशोकावापी पूर्वदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

या गतशोका वापी सार, ताकी दच्छिण दिश वन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदच्छिणदिशा गतशोकावापी दच्छिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

वापी गत शोका इस ठाम, पश्चिमदिश वन सुन्दर धाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशागतशोकावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६८॥

या गतशोका वापी जेय, ताके उत्तर दिश वन तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशागतशोकावापीतीर उत्तरदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

नन्दीश्वर दक्षिण दिश जान, वीत शोक वापी गत मान। याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा अंजनगिरि उत्तरदिशावीतशोकानामवापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

वीत शोक वापी की ठोर, दधि गिरि पर्वत जल मधि जोर। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा अजनगिरि उत्तरदिशावीतशोकावापी मध्यगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥७१॥

याही दधि गिरि ऊपर सही, तीरथ भलो पाप हर मही। सुन्दर जिनको धाम निवास, मैं पूजों पूरो मन आस।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशवीतशोकावापी दधिगिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

वीत शोक वापी के तीर, रतिकर दोय तुङ्ग बहु धीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकानाम वापी तीरद्वयरतिकरपर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥७३॥

इनही रतिकर के सिर जेय, विगर किये सुन्दर जिन गेह। देव जजैं प्रत्यक्षहि जाहिं, हम निज शक्ति जजैं इस ठाहिं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकावापी तीरद्वयरतिकरशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

वीत शोक वापी इस पास, पूरव दिश वन द्रुम की रास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकावापी पूर्ववन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

याही वीतशोका बावडी, याके दक्षिण दिश वन झडी। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर दक्षिण दिशावीतशोकावापी दक्षिणवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

वीत शोकवापी या सार, ताके पश्चिम दिश वन धार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकवापीपश्चिमववनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

वापी वीत शोक सु जान, ताके उत्तर दिश वन मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजो अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशावीतशोकावापी उत्तरदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७८ ॥

गीता छन्द— दीप नन्दीसुर सुदक्षिण एक अंजन गिरि सही, चार वापी मांहि दधिगिरि चार तेभी शुभ मही।
आठ रतिकर सकल त्रयदश, गिरि यहां जिन धाम है। ते जजौं षोडश वना आदिक छेदने गति ठाम है ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदक्षिणदिशा एकअंजनगिरिचतुर्दधिगिरि अष्टरतिकर पर्वतगतिच्छेदकसिद्धेभ्योः त्रयोदशजिनचैत्यालयस्थगिरिचतुर्वापिका-षोडशवन त्रयोदशगिरिगतिच्छेदकजिन पूजा महार्घम् ॥ इति ॥

॥ पश्चिमदिशा सम्बन्धि जिन पूजा अर्घ ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर पश्चिमदिशि अंजन गिरि सही, तुम मनोहर धाम शोभते अति मही।
याकी गति हर भये सिद्ध अघ हारिया, ते सिध पूजों अर्घ थकी थुति धारिया ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशि अंजनगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

चौपई—याही अञ्जनगिरि पे जान, पापहारि जिन थान सु मान। देव धन्य जे तहँ पर जाय, पूजैं हम इह भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा एक अंजनगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

याही अंजन गिरि ते जान, विजयावापी पूरव मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ नन्दीश्वर पश्चिमदिशा अंजनगिरि पूर्वदिशा-विजयनामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

याही विजया वापी मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत पांहि। तापें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अंजनगिरि पूर्वदिशा विजयनामावापीसम्बन्धि दधिगिरि गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

विजया वापी दधि गिरि शीश, जिन मन्दिर हर जगके ईश। देवनि करि जहँ पूजा होय, हम इहां पूजें सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अजनगिरिपूर्वदिशाविजयवापी मध्यदधिगिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

याही विजया वापी तीर, रतिकर द्वय पर्वत अति धीर। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाअजनगिरिपूर्वविजयावापी तीरेद्वय रतिकरपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

इसही रतिकर पर्वत सही, है जिन मंदिर पुनि की मही, पूजें देव तहां शुभ लाय, हम यहां पूजें अर्घ बनाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयावापी तटद्वय रतिशीशजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

याही विजया वापी तीर, पूरववन अति गहन गंभीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयावापीतटपूर्ववनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

विजयानाम बावडी येह, ताकी दक्षिण दिश वन जेह । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयानामवापीदक्षिणदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

विजया वापी पश्चिम सार, महा गहनवन शोभा धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयानामबावडो पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९१ ॥

उत्तरदिश वन गुण की राश, याही विजया वापी पास । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाविजयावापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९२ ॥

नन्दीश्वर पश्चिम दिश जान, वापी वैजयन्त इक मान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशवैजयन्तीनामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९३ ॥

याही वैजयन्त के मांहि, दधि गिरिनाम महागिरि ठांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं॰ नन्दीश्वर पश्चिमदिशावैजयन्तीवापिकामध्यदधिगिरिपर्वतगिरिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९४ ॥

वैजयन्त वापी की ठौर, दधि गिरि ऊपर जिन थल जोर । तहां देव ही पूजा करें, हम इहँ भावन भाय अघ हरैं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशावैजयन्ती वापिकादधिगिरिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

याही वापी के मुख सार, रतिकर दोय महा सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा वैजयन्तवापीमध्यरतिकरपर्वतगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

इनही रतिकर ऊपर सही, जिन को मंदिर तीरथ मही । तिनको देव जजैं थुति लाय, मैं भी पूजों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी रतिकरपर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९७ ॥

वैजयन्त इस वापी तीर, पूरब दिश वन शोभा वीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अरघ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशावैजयन्तीवापी पूर्वदिश वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९८ ॥

वैजयन्त इस वापी पास, दक्षिणवन अति शोभा राश। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी दक्षिणदिशवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९९ ॥

वैजयन्त इस वापी ढिगै, पश्चिम दिश वन शोभा लगै। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी पश्चिमवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०० ॥

वापी वैजयन्ती जान, उत्तरदिश वन द्रुम की खान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा वैजयन्ती वापी उत्तरदिशवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०१ ॥

नन्दीश्वर पश्चिमदिश जान, वैजयन्ति वापी जल खान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा अजनगिरि पश्चिमदिशा वैजयन्तीनामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०२ ॥

विजयन्त वापी के मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत पांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाजयन्ती नामावापी मध्यदधिगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०३ ॥

वापि जयन्ती के मधि ठोर, दधि गिरि पे जिन मंदिर जोर। तहां जाय सुर पूजा करें, पूरब बांधे अघ को हरें ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाजयन्तीवापीदधिगिरिशीशजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०४ ॥

जयन्ती इस वापी तीर, रतिकर द्वय पर्वत अति धीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशाजयन्ती वापी तटद्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०५ ॥

इनही रतिकर पर्वत सही, है जिन मंदिर पुण्य सु मही। धन्य देव हर पूजैं तहां, भावन हम पूजैं इस ठहां ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशाजयन्ती वापी तटरतिकर पर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०६ ॥

जयन्ती इस वापी तने, पूरबवन अति सुन्दर बने। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाजयन्ती वापी सम्बन्धि पूर्व वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १०७ ॥

या जयन्ति वापी के तीर, दक्षिण दिस वन शोभा धीर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशा जयन्ती दक्षिणवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

याही जयन्ती है वावडी, ताकी पश्चिम दिशवन झडी। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा जयन्तीनामावापी पश्चिमवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १०९ ॥

वापी नाम जयन्ती पास, उत्तरदिशा महावन तास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा जयन्तीवापी उत्तरवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११० ॥

नन्दीश्वर पश्चिम दिश जान, है अपराजित वापी मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिमदिशा अजनगिरि उत्तरदिशा अपराजितानामवापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

या अपराजित वापी मांहि, दधिगिरि नामा परवत पांहि। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिमदिशाअपराजितानामवापीदधिगिरिपर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

या अपराजित वापी मांहि, दधि गिरि पे जिन थान वतांहिं। पुण्य विना तहां जान न होय, यों हम इहां जजें सुध होय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वरपश्चिमदिशाअपराजितानामवापीमध्यदधिगिरिसम्बन्धिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

अपराजिता वापिका पास, रतिकर नाम महागिरि भास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वरपश्चिमदिशा अपराजितानामवापीतटद्वयरतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११४ ॥

इनही रतिकर पर्वत शीश, है जिन मंदिर विशवा बीस। पूजे देव सेव बहु लाय, ते थल में भी जजों सुभाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अपराजितानाम वापीतट रतिकर पर्वत शीशजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११५ ॥

वाही अपराजित के पासि, पूरवदिश वन द्रुम की रासि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिमदिशा अपराजितवापी पूर्व दिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

याही अपराजित वावडी, ताकी दक्षिणदिशि वन झड़ी। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर पश्चिम दिशा अपराजितवापीदक्षिणदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११७ ॥

वापी अपराजिता सु मान, ताकी पश्चिमदिश वन जान । ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर पश्चिमदिशा अपराजितावापी पश्चिमवनगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११८ ॥

वापी इस अपराजित मांहिं, उत्तर दिश वन शोभा ठाहिं । ताकी उत्पत छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पश्चिमदिशा अपराजितानामवापी उत्तरवनगतिच्छेदक जनेभ्यो अर्घम् ॥ ११९ ॥

छन्द गीता—द्वीप नंदी सुर सुपश्चिम येक अंजन गिरि सही, चव वापिका में चार दधि गिरि आठ फिर रतिकर मही ।
सब तीन अरु दश मेल ऊपर देव जिनके थानजी, ते जजौं षोडश वनादिक गती हर सिध जानजी ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशा अपराजितवापीसम्बन्धि एक अजनगिरिचतु दधिगिरिअष्टरतिकरचववापीषोडशवनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम्॥१२०॥

॥ उत्तर दिशा पूजा लिख्यते ॥

छंद वेसरी—नन्दीश्वर उत्तरदिश भई, अंजन गिरि इक परवत थाही । तामें उतपति छेदक देव, तिन पद जजों धार उर सेव ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा अजनगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२१ ॥

चौपई—याही अंजन गिरि पे जान, है जिनमंदिर तीरथ मान । पूजैं देव सकल भव हरें, हम यहां जजें अर्घ अघ हरें ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा अजनगिरिशीशजिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२२ ॥

नन्दीश्वर उत्तर दिश मान, रम्यानाम बावडी मान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा अजनगिरि पूर्वदिशारम्यानामावापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२३ ॥

याही रम्यावापी मांही, दधि गिरि नामा पर्वत पांही । ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यानामा वापी मध्य दधिगिरि पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ १२४ ॥

याही दधि गिरि ऊपर जेय, रतन मई जिनवर के गेह । पूजैं धनपति तो वहाँ जाय, हम भावन यहाँ अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यानाम वापी दधिगिरि सवधि जिन चैत्यालस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ १२५ ॥

याही रम्यावापी तीर, रतिकर दोय तुंग अति धीर । तिन गतिछेद भये सिद्ध होय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी मध्य द्वय रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२६ ॥

इनही रतिकर गिरि पे जान, श्री जिन राजभवन सुख खान। देव सवैं पूजे तहां जाय, हम इस थल ते भावन भाय ॥

ॐ ह्री नंदीश्वरउत्तर दिशा रम्यावापी तीर द्वय रतिकर गिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्० ॥ १२७ ॥

याही रम्यावापी पास, पूरव दिश वन शोभा रास। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजौं अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी पूर्व दिशा वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२८ ॥

याही रम्या वापी ढिंगें, दक्षिण दिशवन सुन्दर जगें। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी दक्षिण वन गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२९ ॥

रम्या इस वापी के पास, पश्चिम दिशवन द्रुम की रास। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी पश्चिम वनगच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३० ॥

रम्या वापी इसके धरा, उत्तर दिश वन शोभे खरा। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तर दिशा रम्यावापी उत्तर वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३१ ॥

नंदीश्वर उत्तर दिश धरा, नाम रमणिया वापी खरा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर अजनगिरि दक्षिण दिशा रमणीयानाम वापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३२ ॥

या रमणीया वापी मांहि, दधि गिरि नामा पर्वत पांहि। ताकी उत्पतिच्छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तार दिशा रमणीया वापी दधिगिरिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३३ ॥

याही दधि गिरि ऊपर जेय, जिन मंदिर के सुन्दर गेह। ताकूं पूजै सुर हरि आय, हम यहां पूजत भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापी मध्य दधिगिरि संबन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३४ ।

या रमणीया वापी कने, रतिकर द्वय पर्वत दुख हने। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर उत्तार दिशा रमणीया वापी तीरद्वय रतिकर पर्वतगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३५ ॥

इनही रतिकर ऊपर सार, है जिन मंदिर अघ के हार। तिन पद जजें पाप क्षय होय, तातें हम पूजें मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तार दिशा रमणीया वापी तीरद्वय रतिकर पर्वत ऊपरि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३६ ॥

तीन लोक

नाम रमणिया वापी जेय, ताके पूरव दिश वन तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापीपूर्व वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३७ ॥

वापी नाम रमणिया भली, ताकी दक्षिण दिश वन रली । ताकी उत्पति छेदक सोय,ते सिध पूजों सब मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तर दिशा रमणीया वापीं दक्षिण दिशि वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१३८॥

वापी भली रमणीया येह, ताकी पश्चिम दिश वन तेह । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नदीश्वर दिशा रमणिया वापी पश्चिम वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३९ ॥

याहि रमणिया वापी पास, ताकी उत्तर वन द्रुम रास, ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा रमणीया वापी उत्तर वनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४० ॥

नंदीश्वर की उत्तर दिशा, सुप्रभनाम बावडी लसा । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशायां अंजनगिरि पश्चिमदिशा सुप्रभनामवापीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४१ ॥

याही सुप्रभ वापी मांहि, दधि गिरि नामा परवत पांहि । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभावापी मध्यदधिगिरिपर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४२ ॥

याही सु दधि गिरि ता ऊपरे, है जिन भवन भवि के अघ हरे । पूजैं पुण्य धार पुनि लेय, हम इहां जजैं भाव करि तेय॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभानामवापी दधिगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४३ ॥

याही सु प्रभा वापी जान, ताकी तीर सु रतिकर मान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदिशा सुप्रभावापी तीरद्वय रतिकर पर्वत गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४४ ॥

इनही रतिकर के सिर सार, हैं जिन भवन पाप क्षय कार । पूजैं भव्य पुण्य उपजाय, हम यहां जजैं सकल मद ढाय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभानामवापी तटद्वय रतिकर गिरिशीश जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४५ ॥

नाम सुप्रभा वापी येह, ताकी पूरव दिश वन तेह । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभावापीपूर्वदिशावनगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४६ ॥

नाम सुप्रभा वापी येह, ताकी दक्षिण दिशवन तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशासुप्रभानामवापी दक्षिणवनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४७ ॥

याहि सुप्रभा वापी तीर, पश्चिम दिश वन गहन गंभीर । ताकी उत्पत्ति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा सुप्रभावापी पश्चिमदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १४८ ॥

याहि सुप्रभा वापी लार, उत्तर दिश वन शोभे सार । तिनकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशासुप्रभावापी उत्तरदिशावनगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४९ ॥

नन्दीश्वर उत्तर दिश माहिं, यशोभद्र वापी तहँ पाहिं । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरउत्तरदिशाया यशोभद्रवापी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५० ॥

यशोभद्र वापी के विषै, दधि मुख नामा पर्वत लसै । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी मध्य दधिमुखगिरि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५१ ॥

याही दधि गिरि परवत माहिं, श्रीजिन मंदिर अति सुख दाहिं । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां दधिगिरि मध्य जिन मन्दिरेभ्यो अर्घम् ॥ १५२ ॥

याही वापी के मधि जान, रतिकर दोय महा सुख दान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशाया यशोभद्रवापी मध्य द्वै रतिकर गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५३ ॥

इन रतिकर के ऊपर जान, जिन मंदिर दो सुख की खान । तामें श्रीजिन प्रतिमा सोय, ते मैं जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशाय यश भद्रवापी मध्य द्वै रतिकर सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५४ ॥

यशोभद्र वापी के तीर, रव दिशवन गहर गँभीर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते मैं जजों सकल मद खोय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी पूर्ववनउत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५५ ॥

यशोभद्र वापी जल भरी, ताकी दक्षिण दिश वन खरी । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी दक्षिणवन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ १५६ ॥

यशोभद्र वापी है वडी, ताकी पश्चिम दिश वन झडी । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां यशोभद्रवापी पश्चिमदिशावन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५७ ॥

यशोभद्र वापी सुखकार, ताकी उत्तर दिश वन सार । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध जजों सकल मद खोय ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशायां यशोभद्रवापिका उत्तरवन उत्पत्तिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५८ ॥

अडिल्ल छन्द— नन्दीश्वर उत्तर इक अंजन गिरी सही, चवदिश वापी चार मध्य दधि गिरि मही ।
रतिकर अष्ट सु पोडश वन भी जानिये, तेरह जिनके गेह पूज अघ हानिये ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर उत्तरदिशा एक अंजनगिरि चतु दधिगिरिअष्टरतिकर पर्वत तथा चतुर्वापी सम्बन्धि पोडशवनगतिच्छेदक त्रयोदशजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १५९ ॥

छंद गीतिका—वर दीप नन्दीश्वर सु चव दिश, चार अंजन गिरि सही । तहँ चतुर्दिश वापी सुपोडश, तिन विषे दधि गिरि मही ॥
सव जान तीस रु दोय रतिकर, सकल बावन थान हैं । तिन ऊपरै जिन गेह बावन, ते जजों शुभ जान हैं ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप चतुर्दिशचतुरअञ्जनगिरि पोडशदधिगिरिद्वात्रिंशत्रतिकरपर्वत द्विपचाशज्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६० ॥

॥ जयमाला ॥

छंद गीतिका—अव आरती सुनि दीप नंदीश्वर तनी सुख कारनी । तिन मांहि दीप सुमुद्रका विस्तार शुभ हित कारनी ॥
फिर द्वीप अष्टम मांहि जिन थल, तासकी महिमा सही । जो धरे अपने उर विषैं भवि, लहै सुर शिवकी मही ॥१॥

॥ वेसरी छंद ॥

जंबू द्वीप दीप सिरताजा, जोजन लाख कह्या जिनराजा । पहला लवण समुन्दर गाया, दोय लाख जोजन बतलाया ॥२॥
दूजा द्वीप धातकी भाई, जोजन चार लाख ध्वनि गाई । कालोदधि का सुन विस्तारा, जोजन आठ लाख सव सारा ॥३॥
पुष्कर तीजा द्वीप बताया, पोडशलख जोजन मन भाया । ता विचि मानुषोत्तर है भाई, कंचन वरण महा सुखदाई ॥४॥
तीजा समुद्र तना विस्तारा, जोजनलाख बत्तीस अपारा । चौथे दीप तनी सुनि वाता, चौसठ लख जोजन विख्याता ॥ ५ ॥
येक कोडि फिर लाख अठाई, व्यास इतो जानो श्रुत गाई । चौथे समुद्र तना विस्तारा, या विधि जान लेहु बुधि सारा ॥६॥

छप्पनलाख कोडिद्वय जानो, पंचम दीप महा शुभ थानो । पंचकोडि द्वादश लख भाई, पञ्चम समदव्यास अधिकाई ॥७॥
षष्टम द्वीप कोडि दश जानों, ऊपर लख चौबीस वखानो । बीस कोडि अडतालीस लाखा, षष्टम सागर जिन धुनि भाखा ॥८॥
छिनवें लाख कोडि चालीसा, सप्तमद्वीप अधिक मन दीशा । सप्तमसागर कोडि इक्यासी, लाख बानवें ऊपर भासो ॥ ९ ॥
येक सैंकडा त्रेसठि कोडी, चौरासी लख ऊपर जोडी । अष्टमद्वीप तनों विस्तारा, दुगुन दुगुन जानों इम सारा ॥ १० ॥
ताके इक इक दिश में भाई, अंजन गिरि इक इक सुखदाई । सहस चौरासी तुंग बताये, इतने ही चौड़े सब गाये ॥ ११ ॥
तल ऊपर इकसा है व्यासा, ढोलाकार कह्यो मन रासा । श्याम वरण कज्जल सम होई, चवदिश मणिमय वेदी सोई ॥१२॥
इक इक अंजन चव दिश जानो, चार चार वापी जल खानो । लख जोजन वापी विस्तारा, चवकूंटी तल ऊपर धारा ॥१३॥
ऊँडी जोजन इक हजारा, निरमल नीर भरी सुखकारा । नंदा नंदवती द्वय जानो, और सुनो आगे व्याख्यानो ॥१४॥
नन्दोत्तरा सु तीजी होई, चोथी नन्दश्रेणा सुनि सोई । ये तो चार बावडी मानो, पूरव दिश अति सुखकी थानो ॥१५॥
अरजा विरजा गतशोकाजी, वीतशोक चोथी चोखाजी । ये चव वापी दक्षिण कानी, और सुनो होवै भ्रम हानी ॥१६॥
विजया वैजयन्त सुखकारी, जयन्ती अपराजित भारी । ये चव पश्चिमदिश की जानो, अब सुनि और चतुक अधिकानो ॥१७॥
रम्या रमणीया शुभभाजी, यशोभद्र चौथी सुशुभाजी । ये चव उत्तर दिश को होई, ये सब मिलि षोडश विधि सोई ॥१८॥
तिनमैं इक इक दधि गिरि जानों, जोजन दश हजार तुंग मानों । श्वेत वरण मणि सो आकारो, दोदो रतिकर वापी लारो॥१९॥
एक सहस तुंग रतिकर सारे, ताये कनक समा रंग धारे । ऐसे रतिकर जान बत्तीसा, षोडशदधि गिरि जान महीसा ॥२०॥
अंजन गिरि चव और मिलावो, सबही बावन पर्वत पावो । ये सब परवत गोल बताये, नीचे ऊपर को समझाये ॥२१॥
जेता व्याम तुङ्ग तेता ही, ढोलाकार सवै वैताही । इन सब पे इक इक जिन गेहा, रतन कनकमय शोभा जेहा ॥ २२ ॥
सब गिरि वापी बनके भाई, चव दिश वेदी हिम सम थाई । जो यहां जिनके गेह बताये, सोतो अघहर तीरथ गाये ॥२३॥
देव जाय पूजे हैं भाई, मनुष नहीं पहुंचे तिस ठांई । वर्ष एक में तीन उछावा, कार्तिक फाल्गुण साढ सुभावा ॥२४॥
तीन काल पूजैं हैं देवा, ता फल पूजा का शिव लेवा । हम भी मन वच काय लगाई, अरघ चढाय अधिक हरषाई ॥२५॥
दोहा—नंदीश्वर चव दिश कहे, बावन जिनके थान । नमों तास लव लाय के, भवभव मंगल जान ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं नदीश्वर द्वीप सबंधि चतुर्दिशा पूर्ण जयमाला पूर्णार्घं ॥

नवमद्वीप आदि जिन पूजा लिख्यते ॥

चौपाई—अरु नदी परवत मन लाय, बहु विसतार शुभग थल पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवम अरुणवर द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

याही अरुण दीप में सही, स्वामी अरुण प्रभू सुर मही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवम अरुण द्वीप वासी अरुणप्रभनामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

अरुण समुद्र विषैं सुखकार, जलचर जीव विना मन हार । यामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणवर नवम समुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

स्वामी अरुण सु सागर मांहि, सिसिगंध सर्व गन्ध सुपांहि । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणवर समुद्र स्वामी सिसिगंध अरसर्वगन्ध सुरगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ० ॥ ४ ॥

अरुण भास दीप मन लाय, है दशमों सबको सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

अरुणाभास तना मनलाय, स्वामी अरुणभास सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास द्वीप स्वामी अरुणाभास गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

अरुणभास समुन्दर मांहि, जलचर जीव उपजै नांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास समुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

अरुणभास दधि स्वामी होय, स्वामी सुरति सुर जानों सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अरुणाभास समुद्र स्वामी सुरगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

॥ कुंडल गिरि संबंधी जिन चैत्यालय पूजा लिख्यते ॥

छंद अडिल्ल—कुंडल दीप मझार एक गिरि जानिये, कुंडल की उपमान वलयाकृत मानिये ।
ताके चव दिश चव जिनवर के धाम हैं, ते हों यहां ले जजों सुरग शिव काम है ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावत्रावतर सवौषट् आह्वाननं ॥

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

चौपई—निरमल उदक महा सुखकार, कनक झारिका में धरि सार । कुंडल गिरि चव दिश जिन गेह, तेहूँ पूजें धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुडलगिरि चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥१॥

चंदन गंध मलयागिर जान, सो घसि नीर थकी हम आन । कुंडल गिर चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक् संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदन ॥२॥

अच्छत उज्ज्वल बीन मंगाय, धोय महा शुध कर हम लाय । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक् संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥३॥

सुर तरु के से फूल सु सार, गंध सहित लाये अधिकार । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिशा सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥४॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, मोदक आदि सु सुभग ले आय । कुंडलगिरि चवदिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बह नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिश सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

दीपक रतन महातम हार, सो ले आयो कर धर सार । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि चतुर्दिश संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥६॥

दशधा धूप बनाकर लाय, खेवन कों आयो उमगाय । कुंडल गिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चवदिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥७॥

श्रीफल लोंग विदाम अपार, खारक आदि लेय फल सार । कुंडलगिरि चव दिश जिन गेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥८॥

जल चंदन अच्छत कुसुमान, चरु वर दीप धूप फल आन । मेल अरघ कर लायो सही, पूजों कुंडल गिरि शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चवदिशा संबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

प्रत्येक अर्घ

चौपई—कुंडल गिरि पूरव दिशि जान, है जिन मंदिर तीरथ मान। देव जाय पूजें उस मही, हम इहां जजैं अरघ ले सही ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जेय, हैं जिन भवनपूज्य जग तेय। सुर खग तो पूजें तहां जाय, हम पूजें इह भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश जेय, हैं जिन भवन पूज्य जग तेय। पूजें देव पुण्य उपजाय, इहाँ हम अर्घ जजें थुति लाय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पश्चिम दिशा सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

उत्तर दिश कुंडल गिरि जान, ऊपर जिन मंदिर सुख खान। पुण्य विना जावो नहिं बने, तातें यहां ते पूजा ठनें ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि उत्तर दिशा संबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जान, तापे वज्र कूट पहिचान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुडल गिरि पूर्व दिशा वज्रनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

याही वज्र कूट पे सही, वज्र नाम सुर निवसे मही। याकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुडल गिरि पूर्व दिशा वज्रनाम कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जेय, वज्र प्रभा तहां कूट गिनेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा वज्रप्रभ नामकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

याही कूट वासिया सार, वज्र प्रभ सुर नाम सुधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि संबधि पूर्व दिशा वज्रप्रभ कूटवासी वज्रनामा देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जान, कनक नाम शुभ कूट समान। याकी उतपति छेदक सोय ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा कनकप्रभ नामकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

याही कनक कूट पे सही, कनक देव बसैं है यहीं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा कनक नामा कूटवासी कनकप्रभ देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

कुंडल गिरि पूरव दिश सार, कनक प्रभा शुभ कूट सु धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री कुडल गिरि पूर्व दिशा कनकप्रभ नामाकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

याही कूट ऊपरै जेय, कनक प्रभ सुर निवसै तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा कनक प्रभानामाकूट वासी कनक प्रभादेव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

कुंडल गिरि पूरव दिश जान, सिद्ध कूट जापे जिन थान । तिनमें विंव विराजे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा सिद्धकूट जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥१३॥

ऐसे कुंडल गिरि के सार, कूट पांच वासी सुरधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि पूर्व दिशा संबंधि पञ्चकूट वासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१४॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जेय, कूट रजत जानों शुभ तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजत कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१५॥

याही रजत कूट पे सही, नाम रजत सुख से है कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजत कूट वासी रजत देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१६॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश सार, कूट नाम रजताम सु धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजताम नाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१७॥

या रजताम कूट के मांहि, नाम देव रजताम रहांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा रजताम देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१८॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश मान, सुप्रभ नामा कूट सुजान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सुप्रभनामा कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥१९॥

कूट सु प्रभा या सम जान, देव सु प्रभा रहै हित मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सुप्रभनामा कूट वासी सुप्रभ नाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥२०॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जान, महा प्रभा इक कूट पिछान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा महाप्रभा कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥२१॥

कूट महा प्रभा के मांहि, देव महाप्रभ एक रहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा महाप्रभ कूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जेय, सिद्धातन है कूट सु तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डल गिरि सिद्धायतन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

कुंडल गिरि दक्षिण दिश जान, देव बसै यो कूट प्रमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुंडल गिरि दक्षिण दिशा सबंधि सिद्धायतन कूटवासी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश जान, अंक कूट शोभा की खान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डल गिरि पश्चिम दिशा अंककूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

इस ही कूट ऊपरै कही, देव अंक बसै यहाँ सही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिपश्चिमदिश अक कूटस्थित अक नाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

कुंडलगिरि पश्चिम दिश तास, कूट अंकप्रभ नामा जास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा अङ्क प्रभनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

याही कूट अङ्क प्रभ मांहि, देव अङ्कप्रभ नाम कहांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा अक प्रभनामा कूटवासी अंक प्रभदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश जास, है मणिकूट नाम परकास । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशामणिकूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

याही शुभ मणि कूट सुमांहि, देव रहै मणि नामा ठांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशामणिकूटवासी मणिकूट नामदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

कुंडल गिरि ऊपर सुखकार, मणिप्रभ कूट कह्यो निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशामणिप्रभकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

कुंडलगिरि पश्चिमदिश जान, मणिप्रभ कूट देव तिथि मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा मणिप्रभकूटवासी मणिप्रभदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

कुंडल गिरि पश्चिम दिश सार, कूट कह्यो सिद्धातन सार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशा सिद्धायतन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

कुंडल गिर पश्चिम की दिशा, ऐसे कूट पंच शुभ लसा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि पश्चिमदिशासम्बन्धि पचकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

कुंडल गिरि उत्तर दिश सार, रुचक कूट नामा सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा रुचकनामा कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

याही रुचक कूट के मांहि, रुचक नाम सुर निवसै ठांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा रुचकनामा कूटवासी रुचकनामादेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३४ ॥

कुंडल गिरि उत्तरदिश सार, है रुचकाम कूट सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशारुचकाम नाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

या रुचकाम कूट की मही, है रुचकाम देव थिति सही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशारुचकाम कूटवासी रुचकाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

कुंडलगिरि उत्तर कूं जेय, है हिमवत शुभ कूट सुलेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा हिमवतकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

याही हिमवन कूट मझार, देव रहैं हिमवत ही सार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा हिमवतकूटवासी हिमवत देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

कुंडल गिरि उत्तर दिश सही, मन्दिर कूट सोलवीं कहो। तामैं उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा मदिरनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

इसही कूट ऊपरै जान, मंदिर नाम देव हित मान। ताकी उतपति छेदक सोय ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिउत्तरदिशा मदिरनाम कूटस्थित मंदिरनाम देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

कुंडलगिरि उत्तर दिश जान, सिद्धायतन कूट पहचान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिउत्तरदिशासिद्धायतन कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

कुंडल गिरि की उत्तरदिशा, ऐसे पांच कूट सुर वसा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि उत्तरदिशा पञ्चकूटवासी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— कुण्डल गिरि है ग्यारमो, तापे कूट सु वीस। चार है ऊपर जिन भवन, ते वंदों निश दीश ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

कुण्डल द्वीप ग्यारमो जानो, ता मधि परवत इक अधिकानो। तापे कूट वीस है भाई, तिनके नाम सुनों सुखदाई ॥ २ ॥
वज्रकूट वज्राप्रभ कूटा, कनक फेरि कनकाप्रभ छूटा। ये तो चार कूट सुनि भाई, पूरव दिश जानो सुखदाई ॥
रजतकूट कूटारजताभा, सुप्रभ महाप्रभा कर लाभा। ये चव दक्षिण कूटें जानो, अब सुनि पश्चिम कूट सुथानो ॥ ४ ॥
अंक अंकप्रभा मणि कूटा, मणिप्रभा में सब सुख लूटा। ये चव कूट पश्चिम को जोई, उत्तर कथा सुनो जो होई ॥ ५ ॥
रुचक कूट रुचकाम सु जोई, हिमवत मन्दिर कूट जु होई। उत्तर दिशा कूट जो गाये, ये सव चव दिश कूट सु पाये ॥६॥
इन सब कूटन पे सुर वासा, कूटनाम जो सुर का जासा। इन सबके भीतर चवकूटा, तिनपे जिन थल हैं अघ छूटा ॥७॥
ऐसे कुंडलगिरि में भाई, रचना कही महा सुखदाई। कुंडलगिरि का नीचै व्यासा, दस हजार द्वयसै विस भासा ॥८॥
ऊपर व्यास सु चार हजारा, द्वयसै चालिस जोजन धारा। ऊँचा कुंडल गिरि पहचानो, जोजन सहस पचेत्तर मानों ॥९॥
कुंडल गिरि का वर्णन भाई, कनक जिसा सबको सुखदाई। रचना और अनेक बताई, सो श्रुत में जानो अधिकाई ॥१०॥

कुंडल भू मंडल आकारी, कुंडल शोभे अति ही भारी। तापे चव दिश चव जिन गेहा, पूजें तहां देव करि नेहा ॥११॥

दोहा— हम जानें मैं दीन हैं, सुर जैहैं, अन नांहि। तातें भावन भावके, जजें अरघ इस ठांहि ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि चवदिश सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

इति कुण्डल गिरि पूजा ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

दीप शंखवर जानों सही, द्वादशमों अति सुख की मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शखवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

शंखनाम वरदीप सुजान, ताको स्वामी देवप्रभ मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शखवरद्वीप स्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

शंखवर नामा सागर जेय, भोग भूमि सी मही गिनेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शखवरसमुद्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

यहां शंखवर स्वामी देव, पूरव पश्चिम धरा सु मेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ शखवर स्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥ इति ॥

तेरहवां द्वीप रुचिकगिरि संबन्धी जिन चैत्यालयस्थ पूजा ॥

दोहा— रुचिकनाम पर्वत सही, द्वीप तेरहवें मांहि। तापे चवदिश जिन भवन, ते पूजों थुति लांहि ॥

ॐ ह्रीं रुचकगिरिसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ अत्राऽवतरावतरसंवौषट् आह्वाननं ॥

अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ॥

चाल मुनियानन्द— नीर शुभतर मंगा शुभग पातर लयो, भक्ति जुत आप मैं भाव भावत भयो।
रुचिक गिर चवदिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वेचन काय सुख की मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

बावनो गंध जुत अगर तगरँ कही, नीरतें रगड़ कर लाइयो पुनि मही।
रुचिक गिरि चवदिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुखकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरिसंबंधिजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं ॥ २ ॥

अक्षत अति उज्ज्वला खंडविन शुभ करा, धोय शुद्ध नीर ले आपने कर धरा।
रुचिक गिरि चवदिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुखकी मही।

ॐ रुचिकगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

फूल शुभ वरन के गंध नाना कहे, गूंथितिन माल कर आपने कर लये।
रुचिक गिरि चव दिशा थान जिनदेव के, सो जजों मन वचन काय शुभ होयके ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरिसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्प ॥ ४ ॥

शुभग नैवेद्य ले मोदका आदिजी, खाजला सेवडी फेनका सादजी।
रुचिक गिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय शुभकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

मणिमयी दीपका हार तम के सही, थालभर लाइयो भक्तिधर उर मही।
रुचिकगिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय शुभकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

धूप दश गंध मिलि पीसकर लाइयो, खेयहूँ अग्नि मध्य भक्ति उपजाइयो।
रुचिकगिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुखकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफला लोंग खारक महा सुखमही, आदि इन और फल ल्याइयो हम सही।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुख की मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

नीर चंदन अच्छत पुष्प चरु दीपजी, धूप फल अर्घ ले आइयो समीपजी ।
रुचिकगिरि चव दिशा थान जिनके सही, सो जजों मन वचन काय सुख की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चवदिशासम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

अर्घ शुभ मेलि द्रव्य आठ की जानिये, नीर फल गन्ध आदि शुद्ध ले मानिये ।
रुचिक गिरि पूर्वदिश थान जिनको सही, ते जजों भक्तिकर जान पुनि की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पूर्वदिशासम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

नीर गंध अच्छता पुष्प चरु दीपजी, धूप फल आदि मिलवाय ले सर्वजी ।
रुचिक गिरि दच्छिण दिश थान जिनको सही, ते जजों भक्तिकर जान पुनि की मही ॥
ॐ ह्री रुचिकगिरिदच्छिणदिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ २ ॥

नीर गंध आदि दे द्रव्य वसु आनिये, इन तीन मेल के अर्घ शुभ ठानिये ।
रुचिक पश्चिमदिशा थान जिनके सही, ते जजों भक्तिकर जानि पुनि की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिपश्चिमदिशासम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

आठ ही द्रव्य वस्तु छांटकर लाइयो, अरघ कर भक्ति ते हरप गुण गाइयो ।
रुचिक उत्तरदिशा थान जिनको सही, ते जजों भक्ति कर जानि पुनि की मही ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशाराम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

॥ वेसरी छन्द ॥

रुचिक नाम परवत सुखदाई, ताकी चवदिश जिन थल पाई । देव जजों प्रत्यच्छ जे थाना, हमको यहां ते अर्घ चढाना ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चवदिशा सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

॥ कूटवासी देव गति छेदक अर्घ ॥

चौपाई—रुचिक नाम परवत है सही, ताके पूरव दिश शुभ मही। कनक नाम इक कूट सु जोय, या गति छेद जजों मद खोय।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा संबंधि कनक कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

रुचिक नामा गिरि पूरव सार, कांचन नाम कूट सुखकार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्वदिशा काचन नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

रुचक नाम पूरव सुखकार, पूरव तपन कूट सुखधार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूरव दिशा तपन नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

पूरव रुचिक शीश पहचान, स्वस्तिक नाम कूट मन आन। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा स्वस्तिक नामा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

रुचिक नाम गिरि पूरव जान, कूट सुभद्र नाम तिसमान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा सुभद्रनाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १० ॥

रुचिक नाम गिरि पूरव जान, कूट नाम अंजन शुभ गान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा अंजनककूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

पूरव रुचिक शिखर पे जान, अंजन-मूल कूट शुभ मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा अंजन मूल नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

पूरव रुचिक शिखर पे सार, वज्र नाम इक कूट सु धार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा वज्र नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

इन आठन कूटन के मांहि, देवीदिक्कुमारका पांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पूर्व दिशा कूट निवासिनी दिक्कुमार देवी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥ इति०

॥ दक्षिण दिशा संबंधि कूट गति छेद अर्घ ॥

चौपई—रुचिक नाम गिरि दक्षिण जान, स्फटिक नाम कूट सुख दान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा स्फटिक नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

रुचिक नाम परवत की सार, दक्षिण रजत कूट मनहार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा रजत कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

रुचिक परवता दक्षिण जेय, कुमुद कूट को नाम गिनेय। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा कुमुद नाम कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १७ ॥

रुचिक नाम गिरि दक्षिण दिशा, नलिन नाम इक कूट सु लसा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा नलिन नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

दक्षिण रुचिक शिखर की जान, पदम कूट अति सुंदर मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा पद्म नामा कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

दक्षिण रुचिक परवत पे सार, कूट नाम शशि है अविकार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा शशिनाम कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

रुचिक नाम गिरि दक्षिण धरा, कूट नाम वैश्रवण सुर वरा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा वैश्रवण नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

रुचिक नाम परवत मन लाय, दक्षिण कूट वैडूरज भाय। ताकी उतपति छेदक सोय, पे सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा वैडूर्य नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

इनही आठ कूट मन लाय, ऊपर देवी वास कराय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि दक्षिण दिशा आठकूटवासिनी देवी गति छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥ इति०

॥ पश्चिम दिशा संबंधि कूट गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—पश्चिम रुचिक गिरि पे जान, कूट अमोघ नाम पहचान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पश्चिम दिशा संबंधि अमोघ नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ।

रुचिक परवत पश्चिम दिश सार, स्वस्तिक नाम कूट मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पश्चिम दिशा संबधि स्वस्तिक नाम कूट गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

याही गिरी पश्चिम दिश जान, मंदिर नामा कूट सुमान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिक गिरि पश्चिम दिशा संबंधि मंदिर नामा कूटगति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

रुचिक गिरी पश्चिम दिश सार, कूट नाम है हिमवत धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा हिमवतकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

रुचिक नाम गिरि पश्चिम लाय, राजनाम है कूट सुभाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा राजनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

पश्चिम रुचिक शिखर के जान, राज्योत्तम शुभ कूट वखानि । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशाराज्योत्तमनाम कूट गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

रुचिक नाम पश्चिम गिरि धरा, चन्द्रनाम तहां कूट सु वरा । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा चन्द्रनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

रुचिकनाम पश्चिमदिश थान, कूट सुदर्शन जान सुजान । तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा सम्बन्धि कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

येही अष्ट कूट मन लाय, तिनपे देवी वास कराय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरिपश्चिमदिशा अष्टकूट निवासिनी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

॥ इति पश्चिमदिशा सपूर्ण ॥

उत्तर दिशा सम्बन्धि कूटगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—रुचिक नाम गिरि उत्तर दिशा, विजयकूट को नाम सुलसा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा विजयनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

रुचिकनाम उत्तर गिरि सही, वैजयन्त शुभ कूट सु मही। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरिउत्तारदिशा वैजयन्त कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

उत्तर रुचिक गिरी पहचान, नाम जयन्त कूट सुख मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा जयन्तनामाकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

याही रुचिक गिरि की उत्तरा, अपराजित शुभ कूट जु धरा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अपराजितनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

रुचिक शिखर उत्तर की दिशा,कुण्डल नाम कूट शुभ लसा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा कुडलनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

रुचिक परवत उत्तर सुखदाय, रुचिक नाम तहां कूट बताय। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा रुचिकनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

रुचिक नाम गिरि उत्तर जाय, रतनावत है कूट सुभाय। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशारत्नावतनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

रुचिक नाम गिरि उत्तर दिशा, सर्व रतन इक कूट सु लसा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा सर्वरत्ननाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

येही उत्तर कूट सु आठ, इनपे देवी वसै सु ठाठ। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अष्टकूटवासनीदेवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

रुचिक नाम गिरि पूरव जान, विमल नाम कूट शुभ मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पूरवदिशा अभ्यन्तरवर्तीविमलनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

रुचिक परवत दक्षिण सुखकार, नित्यालोक कूट मन धार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिदक्षिणदिशा अभ्यन्तरवर्ती नित्यालोकनामकूटगतिछेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

रुचिक शिखर पश्चिम जे धरा, कूट स्वयंप्रभ नाम सु खरा। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा अभ्यन्तरवर्ती स्वयप्रभनाम कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

उत्तर रुचिक शिखर के जान, नित्योद्योत कूट मन आन। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अभ्यन्तरवर्ती नित्योद्योतनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

इनही चारों कूटन मांहि, देवी वास करें सुख पांहि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चतुर्दिश अभ्यन्तरवर्ती कूटवासिनी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४६ ॥

रुचिकनाम गिरि पूरव सार, कूट कही वैडूर्य उदार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिनाम पूर्वदिशा अभ्यन्तरवर्ती वैडूर्य कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

रुचिकनाम गिरि दक्षिण दिशा, रुचिकनाम तहां कूट सु लसा। तामें उतपति छेदक सोय ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरिदक्षिणदिशा अभ्यन्तरवर्तीरुचिकनामा कूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४८ ॥

रुचिक नाम गिरि पश्चिम जान, है मणिनाम कूट सुखखानि। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा अभ्यन्तरवर्ती मणिनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

रुचिकनाम गिरि उत्तर सार, राज्योत्तम है कूट सुधार। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा अभ्यन्तरवर्ती राज्योत्तमकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

ये ही चार कूट सुख थान, इनपें देवी वास सु जान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चतुर्दिशा चतुर्कूटवासी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

रुचिक गिरी अभ्यन्तरदशा, कूट जिनेन्द्र नाम तिन लसा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चवदिशा अभ्यन्तरवर्ती जिनेन्द्रनामकूटगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ५२ ॥

गीता छंद— कूट चालिस चार ऊपर रुचिक गिरि पे जानिये, तिन माहि चालिस कूट ऊपर वास देवी मानिये।
इन कूट वासिनी देवगति हर, चार पे जिन थल सही, ते जजों मन वच काय द्रव ले जान अति पुनिकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि सवधि चतुश्चत्वारिंशतकूटगतिच्छेदक तथा कूटवासिनी देवीगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

॥ जयमाल ॥

दोहा— रुचिक नाम गिरि ऊपरैं, चवदिश चव जिन धाम। तहां जाय तो सुर जजें, हम पूजें इम ठाम ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

दीप तेरमा रुचिक बताया, ता मधि रुचिक नाम गिरि थाया। सहस चौरासी तुंग सु जानों, इतनो ही मोटापन मानो ॥२॥
नीचे ऊपर को सम व्यासा, ता मधि ऊपर देवी खासा। इक इक दिश वसु कूट बताये, तिनपे देवी बसै सुभाये ॥ ३ ॥
त्रय त्रय कूट अभ्यन्तर जानो, सब मिलिकूट चवालिस थानो। इन सब कूटन का विस्तारा, तुंग पांचसो जोजन सारा ॥४॥
एते ही चौड़े भू गाये, ऊपर चौडे अर्द्ध बताये। पूरब कनक कूट है भाई, विजया देवि बसै सुखपाई ॥ ५ ॥
कांचन कूट महा सुखदाई, वैजयन्ति देवी थुति गाई। तपन कूट के ऊपर वासो, करैं जयन्ती देवी आसो ॥ ६ ॥
स्वस्तिक कूट ऊपरै भाई, अपराजित सुर की थिति पाई। कूट सुभद्र ऊपरै वासो, नन्दा देवी को है आसो ॥ ७ ॥
अंजन कूट ऊपरैं होई, नंदावती सुरी थिति जोई। अंजन मूल कूट पे जोई, नंदोत्तर देवी शुभ होई ॥ ८ ॥
वज्र कूट ऊपर सुखदाई, देवी नंदषेणा धुनि गाई। ये वसु देवी पूरब वासी, गर्भ समै जिन माता दासी ॥ ९ ॥
झारी भृंगारादिक राखै, हर्ष सहित माकी थुति भाखे। अपनो भव धन मानत देवी, हम जिन मात चरण अब सेवी ॥१०॥
स्फटिक दिशा दच्छिण में गाई, तहाँ इच्छा देवी थिति पाई। रजत कूट पे देवी वासो, सुरी समाहारा सुख रासो ॥११॥
कुमुद कूट पे सुरी रहावे, सुप्रकीर्णा नाम कहावे। नलिन कूट वासी सो होई, यशोधरा देवी है सोई १२॥
पदम कूट की बसने हारी, लक्ष्मी नाम सुरी शुभकारी। भली कूट शशि ऊपर थाना, शेषवती देवी का जाना ॥१३॥

कूट वैश्रवण ऊपरि वासो, देवि चित्रगुप्ता को आमो । कूट नाम वैडूर्य सु थानों, है वसुंधरा देवी मानों ॥१४॥
ये दक्षिण वासी वसु देवी, जिन प्रभु जनम समय अति सेवी । हाथ आरसा अपने राखें, भक्ति सहित मधुरे धुन भाखें ॥१५॥
पश्चिम कूट अमोघ बताया, इलासुरी तहां वासा पाया । स्वस्तिक कूट वासिनी देवी, सुरा नाम धारक जिन सेवी ॥१६॥
मंदिर नाम कूट की वासी, देवि नाम पृथ्वी सुख रासी । हिमवत कूट वास तिन कीनों, पद्मावती नाम जिन लीनो ॥१७॥
राजकूट पे जो थिति लावो, एकनाम देवी मन लावो । राज्योत्तम कूट को थानो, नाम नवमिका देवी जानो ॥१८॥
चंद्रकूट पे तिन थिति पाई, सीतानाम सुरी सो गाई । है सुदर्शन कूट सु थानो, भद्रा देवी तहां सुख मानो ॥१९॥
ये वसु देवी पश्चिम वासी, हाथ छत्रत्रय जिनकी दासी । जन्म समै माता पद सेवे, भक्ति सहित सच्चा सुख देवे ॥२०॥
विजय कूट उत्तर थिति लावे, सुरी अलंभूषा गुण गावे । वैजयंत कूटन की वासी, कैसी मिश्र देवि सुख रासी ॥२१॥
नाम जयंत कूट की थानी, देवी पुंडरीकनी जानी । अपराजिता कूट थिति लावे, सो वारुणी सरस्वती भावे ॥२२॥
कुंडल कूट वास तिन कीनों, आशा देवी तिनको दीनों । रुचिक कूट पे वास करावे, सत्या देवी सब मन भावे ॥२३॥
कूट रतनवत वासी होई, ह्री नामा देवी जे जोई । सर्वरत्न है कूट सुथाना, श्री देवी का धाम बताना ॥२४॥
ये वसु देवी उत्तर वासा, जिन गर्भ समें मात की दासा । चामर हाथ भक्ति उर आनें, मात तनी सेवा बहु ठानें ॥२५॥
अब चव कूट अभ्यन्तर गाये, मनुष लोक दिश पूरव पाये । पहले विमल कोटि तिस वासी, कनका देवी है सुख रासी ॥२६॥
नित्यालोक कूट तिस वासी, सतहृदा देवी सुख राशी । कूट स्वयंप्रभ वास करावे, चित्रा कनक सुरी कहलावे ॥२७॥
नित्योद्योत कूट थिति लावे, सो सौदामिनि सुरी कहावे । ये चव देवी जिन अवतारे, सर्व दिशा को निर्मल धारें ॥२८॥
इनतें और अभ्यन्तर जानो, चार कूट देवन के थानों । कूट नाम वैडूरज मांही, रुचिका नामा सुरी वसाही ॥२९॥
रुचिक कूट वासी जो देवी, रुचिक कीर्ति तिस नाम सु सेवी । है मणि कूट नाम की वासी, रुचिक कान्ता देवी रासी ॥३०॥
राज्योत्तम है कूट अनूपा, तहां थिति रुचिक प्रभा सुरि रूपा । जिन जनमें ये चार सुरि आवे, जाति कर्म ये सकल करावे॥३१॥
इन दोबीसी कूटन मांही, इतनी ही देवी निवसाही । देवी निज निज काज करावे, विनय भक्ति तें पुण्य उपारें ॥ ३२ ॥
इमि सब रुचिक दीपके मांही, रुचिक नाम गिरि अति छवि ठांही । वलयाकार कनक मय सारो,शोभा कहत न लहिये पारो॥३३॥
इनके फेर अभ्यन्तर जानो, कूट चार शुभ तीरथ थानो । तिनके नाम जिनेन्द्र कूटा, परमत सकल पाप मल छूटा ॥ ३४ ॥

तिन कूटन ऊपर जिन गेहा, पूजे देव करे बहु नेहा। हम भी जिन थल मन वच काई, इहां तें पूजत अर्घ चढाई ॥३५॥
करें भक्ति बहु जन जगनाथा, भव भव देहि आप पद साथा। मैं अति दीन सुनें को मेरी, सुनो देव तुम हर भव फेरी ॥३६॥

दोहा—— दीप रुचिक आगे अवर, जिन थल पईये नांहि। दीप तेरमें लों सकल, पूजों जिन गृह ठांहि ॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीप सकल जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घम् ॥

॥ इति रुचिक द्वीप पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ द्वीपादि अर्घ ॥

चौपई--द्वीप असंख्या आगे और, ते सब जघन्य भोग भू ठोर। इनमें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं असख्यात दीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

असंख्यात सागर तुम मान, द्वीप अन्त में तिनको मान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं असंख्यात समुद्रगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

द्वीप समुद्र असंख्यामांहि, देव रहें रक्षक तिन ठांहि। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं असख्यातद्वीप समुद्रस्वामी गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

॥ अन्तिम षोडश द्वीपसमुद्रगतिच्छेदकअर्घ ॥

चौपई—द्वीप नाम मनशिला बताय, द्वीप अन्तरा पोडश पाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तिमपोडशद्वीपान्तर्गत मनशिला द्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४ ॥

द्वीप नाम हरताल पिछान, यामें भी आरज जिय मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं हरितालवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

द्वीप नाम सुनि आगे और, है सिंदूरवर दीप जु ठोर। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सिन्दूरवरदीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो ॥ ६ ॥

द्वीप नाम भाखूं सुखदाय, है वरश्याम मधुर शुभ जाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं श्यामवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

अञ्जन वर है द्वीप महान, उपजत पशू जुगलिया आन। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अञ्जनवर द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

हिंगुल वर शुभ द्वीप बताय, मनुपराशि तहां कबहु न जाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं हिंगुलिवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

आगे और धरा मन लाय, द्वीप रूप्यवर सब सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रूप्यवर द्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

सुवरण वर है द्वीप महान, मोटी धरा सकल शोभान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वर्णवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

और दीप शुभ तिनके नाम, दीप वज्रवर अति सुख ठाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वज्रवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

दीप वैडूर्यवर है शुभ धरा, तिनमें उपजत तिर्यञ्च खरा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वैडूर्यवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

दीप नाम अब आगे सुनो, नाम नाग वर शोभे घनो। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नागवरद्वीप गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

है शुभ दीप भूत वर सार, ताकी उपमा को नहिं पार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भूतवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १५ ॥

द्वीप नाम सुन सब मनलाय, द्वीप यक्षवर सब सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं यक्षवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

द्वीप देववर सब में सार, ताकी पटतर और न धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं देववरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

है अहीन्द्रवर दीप अनूप, सबहो सागर में जिम भूप । ताकी उतपनि छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अहीन्द्रवरद्वीपगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

नाम स्वयंभू रमण सुजान, सब द्वीपन से यह अति मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयभूरमणद्वीप मध्यभागगिरिअर्द्धभोगभूमि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

अर्द्ध स्वयंभू गिरि के पार, द्वीप मांहि भूकर्म सु धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्भूगिरिपारसम्बन्धि कर्मभूमिगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

द्वीप तने जे भाखे नाम, तैसे सागर नाम सुठाम । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तिम पोडशद्वीप समुद्रगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

पोडशगिरि दधि दीप मझार, देव रहे स्वामी इन सार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तिमषोडशद्वीप समुद्रस्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

नाम स्वयम्भू रमण सुजान, सागर अन्त विषे पहिचान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्भू रमणसमुद्रगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

याही सागर स्वामी जान, देव कहे नाना सुख खान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्भू रमणस्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

चार ही कोण अन्त लो जान, तिनमें पशू रहे अधिकान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकान्तचतुर्कोणसम्बन्धि गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

गीता छंद—सागर सु द्वीप असंख्य जानो, भोग भूमिन में सही । केइ थान तिनमें कर्मभूमी यथा जोग सुख लख मही ॥

तिन तने स्वामी देव संख्या विना रचना सारजी । तिन मांहि उतपति छेद जो सिध ते जजों शिवकारजी ॥

ॐ ह्रीं असंख्यातद्वीपसागर तथा स्वामी देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो महार्घम् ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ मध्यलोक के अन्त में ज्योतिर्लोक की असंख्यात जिन चैत्यालय पूजा ॥

दोहा— ज्योतिप लोक विमान में असंख्यात जिन धाम । ते पूजों शुभ भाव धरि, थाप इहां शिवकाम ॥

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकारज्योतिषी विमानस्थित असख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिन विंव अत्रावतरावतर संवौपट् आह्वानन ॥

अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापन ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ॥

चौपई—असविन निरमल नीर सुजान, सो में धर पातर में आन । ज्योतिप लोक असंख्य जिन गेह, तेहूं पूजों धर वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असंख्यात विमानसम्वन्धि जिनेभ्यो जल ॥ १ ॥

मलय सुगन्ध नीर घसवाय, कनक रकेवी में धरि लाय । ज्योतिप लोक असंख्य जिन गेह, तेहूं पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असख्यात विमान सम्वन्धि जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

अच्छत उज्ज्वल गंध अपार, खंड रहित ल्यायो हितधार । ज्योतिप लोक असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

पुष्प सुगध वरन सुखदाय, मानों कल्पद्रुम के लाय । ज्योतिप लोक असंख्य जिन गेह, तेहों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोके असख्यात जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

खाजा फेनी घेवर सार, इन आदिक वहु ले हितकार । ज्योतिप लोक असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिप लोक संवधि असख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

दीपक रतन मई तमहार, सो हूं ल्याया भरि करि थार । ज्योतिप लोक असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिप लोक सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

वावन चंदन आदि सुगन्ध, दशधा ले आयो विनफंद । ज्योतिप थान असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि वहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिप लोक संवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूप ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम मिलाय, इन आदिक बहु फल शुभ लाय । ज्योतिप थान असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिप लोक सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फल ॥ ८ ॥

जल चंदन अत्तत पुष्प सार, चरु दीपक फल धूप अपार । ज्योतिप थान असंख्य जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं ज्यातिपलोक सबंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

पंच प्रकार ज्योतिपी देव, तिनके थान बने बिन खेव । तिन सबमें इक इक जिन गेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पचप्रकार ज्योतिप देव विमान सबधि जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घम् ॥१०॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—सूर्य विमान विपें जिन गेह, ते हों जजों ठानि बहु नेह । ता फल मोक्ष स्वर्ग पद पाय, और कहा भाखूँ अधिकाय ॥

ॐ ह्रीं सूर्य विमान सबधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

चंद्र विमान महा शुभ धरा, तामधि जिनका मंदिर खरा । ते हों पूजों अर्घ चढ़ाय, ता फल स्वर्ग मोक्ष पद पाय ॥

ॐ ह्रीं चद्रविमान सबधि जिन चैत्यालस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

काल विकाल नाम ग्रह जान, सबके आदि कह्यो यह मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल विकाल नाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

लोहित नामा ग्रह मन लाय, पुण्यवती पाई परजाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं लोहित नाम ग्रहगतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

कनक भला ग्रह ताको नाम, भोगन सुख पाई शुभ ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कनकनाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

ग्रहै सुनो नाम संस्थान, कनक स्थान लखो संस्थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कनकसस्थान नामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

अब सुनि और ग्रह के नाम, अन्तरद है पुण्य सु धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तरद नाम ग्रह गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

आगे और सुनो मनलाय, कचयव नाम ग्रह सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कचयवनामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

दुंदुभि नाम ग्रह मन लाय, ताकी महिमा कौन कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दुंदुभिनामग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

है ग्रहनाम रतननिभ सही, ज्योतिष पुर में देव सु कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रत्ननिभनाम ग्रहग्रतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥१०॥

रूपनिर्भास नाम ग्रह जान, ये ज्योतिष देवनि में भान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रूपनिभोसनामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

और सुनो ग्रह नाम प्रधान, नील नाम ग्रह सुखमय जान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नीलनामग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १२ ॥

नीलाभास नाम ग्रह जेय, पंच जाति ज्योतिष में तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नीलाभासनामग्रहगच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १३ ॥

और सुनो ज्योतिष सुर भेव, अश्व नाम धारक यह देव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अश्वनामधारक ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥१४॥

अश्व स्थान नाम ग्रह पाय, सो ग्रह ज्योतिष नाम कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अश्वस्थान नामग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

पंच ज्योतिषी में ग्रह जान, तिनमें कोश नाम ग्रह मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कोशनाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

कंस वरण या सुर को नाम, सो ग्रह ज्योतिष है शुभ ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कस वरण नामग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

और सुनो ज्योतिप सुर भेव, कंस का ग्रह जानो देव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कस नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

ज्योतिप देव तनें सब भेव, शंख प्रमाण नामा ग्रह देव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शख परिमाण नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

शंख वरण ज्योतिप सुर जेय, ते भी इन ग्रह में गिन लेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शख वरण नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

नाम उदय ज्योतिप सुर मान, सो ग्रह पुण्य थकी उपजान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उदय नाम ग्रह गतिच्छेक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

पच वरण ज्योतिष जो देव, ते ग्रह जिनकी करि है सेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पच वरण नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

और धार ज्योतिप के भेद, है तिल नामाग्रह निरखेद। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तिल नाम ग्रह गतिच्छेक। जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

तिलपुछनाम देव सो जान, ज्योतिप देवन में ग्रह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री तिलपुच्छ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

क्षारराशि है ज्योतिप देव, सो यह ग्रह नाम स्वयमेव। ताकी उतपात छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षारराशि नाम ग्रह गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

धूम नाम सुर अति सुखकार, ये ग्रह नाम देव पुनि धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध-पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धूम नाम ग्रह गति छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

और देव ज्योतिप सुनि वीर, धूमकेतु ग्रह नाम सु धीर। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धूमनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २७ ॥

ग्रह इक संस्थान मन लाय, ये भी ज्योतिष देव कहाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं एक संस्थान ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २८ ॥

अक्षनाम ज्योतिष सुर मांहि, सो भी यह ग्रह जान कहांहि। ताकी उतपति छेदक सोय ते, सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अक्ष नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

नाम कलेवर है ग्रह सार, ज्योतिष देवन में निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कलेवर नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

अब सुनि और ज्योतिषी देव, नाम विकट ग्रह लख स्वयमेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विकट नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

अभिनसिंह है ता को नाम, सो ग्रह सब सुखन को धाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अभिन्नसोय नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

आगे और सुनों इक नाम, है ग्रह नाम ग्रंथि सुख धान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ग्रन्थि नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

येक नाम अद्भुत है सही, भान नाम ग्रह सुख की मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भान नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

धारो नाम एक अनुसार, चतुः पाद है ग्रह सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुः पद नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

विद्युत जिह्व इस ग्रह को नाम, पुण्य वसा पायो यह धाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विद्युत जिह्व नाम गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ३६ ॥

ज्योतिष देवन में बहु भेव, है नभनाम ग्रह शुभ देव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री नभ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

सदृश नाम ज्योतिषी देव, ये ग्रह सुख भोगत स्वयमेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सदृश नाम ग्रह गति छेदकर्त्तजिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

निलय नाम ग्रह जानि सु सार, ज्योतिष देवन में सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निलय नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३६ ॥

नाम काल है ग्रह को सही, अद्भुत रचना ताकी कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्या अर्घम् ॥ ४० ॥

काल केतु ग्रह ज्योतिष देव, भोगत सुख पुन्य ते स्वयमेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल केतु ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

और अनय ग्रह नाम सुधार, ये भी ज्योतिष में सुरसार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अनयग्रह नाम ग्रह गतिच्छेदकजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

ज्योतिष में सिंहायु सुजान, यो ग्रह प्रगट आपनो थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सिंहायु नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो ॥ ४३ ॥

और ग्रह को भाखो नाम, विपुल नाम ग्रह सुख की ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निपुल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ ४४ ॥

फेर काल है ज्योतिष सार, ये ग्रह पुन्य थकी अवतार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं काल ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

महाकाल ग्रह ताको नाम, जाको ि ज्यो पुन्य को धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं महा काल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥

है ग्रह रूद्रनाम इक सही, ते पाई लक्ष्मी अधिकही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रुद्र नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥

महारुद्र ज्योतिष जो देव, सो ग्रह तिष्ठै थान स्वयमेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं महा रुद्र नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

नाम संतान ज्योतिषी सार, ये ग्रह होय पुन्य फल धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सतान नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ४९ ॥

और जानि ज्योतिष के भेव, संभव नाम देव ग्रह जेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सभव नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

ज्योतिष देव मांहि बहु भेव, सर्वारथ ग्रह अद्भुत देव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ।

ॐ ह्रीं सर्वार्थी नामा ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

है दिश नाम ज्योतिषी देव, सो ग्रह अपनो शुभ फल लेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दिशा नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५२ ॥

शान्ति नाम है अति द्युति धार, सेवत जिन मंगल शुभकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शान्ति नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

है वस्तूनि नाम जो देव, यो ग्रह ज्योतिष को शुभ टेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वस्तूनि नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

निश्चल नाम देव ज्योतिषी, है ग्रह तातैं दुर्मति छकी । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निश्चल नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

देव ज्योतिषी में यह पाय, प्रलंभ नाम ग्रह सुख को पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रलभ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

है निरमंत्र ज्योतिषी सुर सार, ये सबही ग्रह के बलधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं निर्मंत्र नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

ज्योतिष मान देव जो जान, यो ग्रह औरन में सुखखान। ताकी उतपति छेदक सोय, तै सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष्मान नाम देव गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

भासुर नाम ज्योतिषी सार, यह सब ही ग्रह में सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय ते सिध, पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भासुर नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५९ ॥

नाम स्वयंप्रभ देव सयान, ये ग्रह भलो धरे है ज्ञान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वयं प्रभ नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

नाम विरज जे देव अमान, या ग्रह ने पायो पुनि थान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विरज नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

है निरदोष ज्योतिष सुर जेय, ये ग्रह अपने शुभ फल लेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं निर्दुःख नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६२ ॥

वीतशोक ग्रह महिमाधार, ज्योतिष देवनमें सिरदार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वीतशोक नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

सीमंकर है ज्योतिष राय, सो ग्रह सब जीवन सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सीमंकर नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

और सुनो देवन के नाम, क्षेमंकर ग्रह अति सुखधाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षेमंकरनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

अभयंकर सुर सब में सही, उपमा दायक शुभ ग्रह मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अभयङ्करनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

विजय नाम ग्रह अति छविकार, ज्योतिष देवन में निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विजयनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

ज्योतिप वैजयंत सुरजान, सबही ग्रह में यह सुखखान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वैजयन्तनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥६८॥

है जयंत नाम ग्रह धार, ज्योतिप देवन में हितकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं जयन्तनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

अपराजित है देव सुजान, ज्योतिप में यह ग्रह सुखमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अपराजितनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

विमल नाम ग्रह सुखमय जान, पंच जाति ज्योतिप में मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विमलनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

त्रस्त नाम देव ज्योतिपी, है शुभ ग्रह वाणी जिन असी । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं त्रस्ततानाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

विजयिष्णु ग्रह ताको नाम, ज्योतिप सुर में परगट धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विजयिष्णुनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

नाम विकस ग्रह ज्योतिप सुरा, अपने शुभ फल बहु लख धरा । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं विकसनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

हैकारि काष्ठ देव को नाम, ये ग्रह होय पुन्य को धाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं हैकरिकाष्ठनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

और ज्योति सुन ज्योतिप नाम, है इक जटि ग्रह उत्तम ठाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं एक जटिनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

अग्नि ज्वाल ग्रह अति बलकार, ताकी शिखर और निरधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अग्निज्वालनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ७७ ॥

है जल केतु देव इक सार, सब ग्रह मांहि जान सुखकार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं जलकेतुनाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७८ ॥

केतु नाम सुर सुखकर सार, ज्योतिप में यह ग्रह बलधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं केतुनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

क्षीर नाम देव यह सही, ज्योतिप पंच मांही ग्रह कही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं क्षीरसनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

देव ज्योतिषी पंच प्रकार, तिनमें अघ नामा ग्रह धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अघ नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

श्रवण देव ज्योतिपी कह्यो, सो भी ग्रह अद्भुत बन रह्यो। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं श्रवण नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

राहु नाम ग्रह सब ही जान, पावत यह पद शुभ तैं आन। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं राहु नाम ग्रह गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

महा ग्रह ज्योतिपी बखान, पंच जाति में यह ग्रह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं महाग्रह नाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

भाव ग्रह यह देव प्रमान, सब ही ग्रह में यह बलवान। तामें उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भावग्रह नाम ग्रह गतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

मंगल नाम देव यो जान, सो ग्रह सब ग्रह में सुखदान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मङ्गलनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

नाम शनीचर ग्रह को सही, सो तो जानत है सब मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शनिश्चरनाम ग्रह गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

बुद्धनाम ज्योतिष सुरजेय, सब ग्रह मध्य यह गिन लेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं बुधनाम ग्रहगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८८ ॥

शुक्लनाम ग्रह अति बलवान, सो प्रसिद्ध है जगमें आन । ताकी उतपति छेदक सोय, तैं सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शुक्लनाम ग्रहगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८९ ॥

बृहस्पति नाम देवजो सही, यह ग्रह प्रगट है शुभ मही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं बृहस्पति नाम ग्रहच्छेदक रिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९० ॥

छंद पद्धरि—

यह ग्रह अट्ठासी जोय सार, इनके विमान मणि मई सुधार ।
तिनमें मणिमय जिन गेह सोय, मैं पूजों मन वच शुद्ध होय ॥

ॐ ह्रीं अष्टाशीतिः ग्रह विमान सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९१ ॥

॥ अट्ठाईस नक्षत्रसम्बन्धि अर्घ ॥

चौपई—कृतिका नाम ज्योतिषी जान, यह नक्षत्र पंच में मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं कृतिकानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

पंच जाति ज्योतिष में सही, नाम रोहिणी उनके मही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रोहिणीनाम नक्षत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

है नक्षत्र मृगशीर्षा सार, ज्योतिष में ये भी निरधार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मृगशीर्षानाम नक्षत्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

आद्रा नाम ज्योतिषी देव, ये नक्षत्र भी जानो भेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आद्रानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

नाम पुनर्वसु जानो सही, जाति नक्षत्र मांहि इन कही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुनर्वसुनाम नक्षत्र गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पुष्य नक्षत्र सु जानो सार, ज्योतिषदेवन में निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पुष्यनामनक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

असलेखा है ज्योतिष परा, राशि नक्षत्र नाम इन धरा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों सब मद खोय ॥

ॐ ह्रीं आश्लेषानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

जान नक्षत्र मघा परमान, ज्योतिष देवन में यह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मघानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

पूर्वा फाल्गुनी मनलाय, जाति नक्षत्र रहे सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वाफाल्गुनी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

और नक्षत्र जानिये येह, उत्तरा फाल्गुनी गिन लेह। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तराफाल्गुनी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

हस्तनाम नक्षत्र सु सार, ताको जानत जग निरधार। ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं हस्तनाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

चित्रानाम नक्षत्र सार, ज्योतिष देवन में निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चित्रानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नाम नक्षत्र स्वाति है सही, देवन में ज्योतिष की मही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं स्वातिनाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

नाम विशाखा ज्योतिष सार, जाति नक्षत्र मांहि इन धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं विशाखानाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

अनुराधा है ज्योतिष देव, जान नक्षत्रन में स्वयमेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अनुराधा नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

जेष्ठा नाम नक्षत्र सुजेय, पंच जाति ज्योतिष में तेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं जेष्ठा नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

ज्योतिष नाम नक्षत्रन मांहि, मूल नक्षत्र रहै सुख पांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं मूल नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र जु सार, नाना विधि ऋद्धि के धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वाषाढ नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १८ ॥

उत्तराषाढ़ ज्योतिषी सुरा, है नक्षत्र मांही इस धरा। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तराषाढ नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

अभिजित नाम नक्षत्र हि जान, याकी बहु ऋद्धी सुख खान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अभिजित नामा नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

श्रवण नाम नक्षत्र जु सार, सो है प्रगट भूमि निरधार। ताको उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं श्रवण नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

नाम धनिष्टा ज्योतिष देव, ये पुनितें सुखिया स्वयमेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं धनिष्टा नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

है नक्षत्र शतभिष इकसार, ज्योतिष में जानों निरधार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं शतभिषा नाम नक्षत्रगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

पूर्व भाद्रपद ज्योतिष जान, जाति नक्षत्र मांहि यह मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पूर्व भाद्रपद नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

उत्तर भाद्रपद जानो देव, ज्योतिष मांहि जु नक्षत्र एव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर भाद्रपद नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

नाम रेवती जानो देव, है नक्षत्र ज्योतिष को भेव। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रेवती नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

अश्विनी नाम नक्षत्र सु जेय, प्रकट पुण्य फल ही भोगेय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अश्विनी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

भरणी नाम नक्षत्र जु सही, यो पद भले पुन्य तैं लही। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं भरणी नाम नक्षत्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

छंद पद्धडी—

ये वीसरु आठ नक्षत्र जान, भिन भिन इक के सुविमान मान।
तहं मंदिर श्री जिनराज सोय, ते पूजों मन वच हरष होय ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति नक्षत्र संबंधि विमानस्थित जिन चैत्यालयस्थ सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

चौपाई—तारा विमान असंख्या जोय, तिन मधि इक इक जिन थल सोय। तिनमें प्रतिमा जिन आकार, जिन पद अर्घ जजों थुति धार ॥

ॐ ह्रीं असंख्याततारा ज्योतिषी विमान सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

ज्योतिष तारा देव विमान, जाति असंख्या अद्भुत थान। तिन में उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष देव तारा विमान असंख्यात गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३१ ॥

शशि सूरज तारा ग्रह जान, और नक्षत्र पांच मन आन। इनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंच ज्योतिषी देव विमानोत्पत्ति गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो एव असंख्यात जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अर्घम् ॥ ३२ ॥

जयमाला

दोहा—पंच जाति ज्योतिष सुरा, विना संख्य इन थान। तिनमें जे जिन गेह हैं, जजों छांडि निज मान ॥ १ ॥

॥ पेसरी छंद ॥

चन्द्र सूर्य ग्रह जानो भाई, नाम नक्षत्र और समझाई। तारा मिले पांच परकारा, ज्योतिष देव इनों में सारा ॥ २ ॥
चन्द्र विमान तनें विस्तारा, योजन बडा कछुक कम सारा। कोश लघू तिनके मन लाओ, अष्टादश शत कछु कम पाओ ॥३॥

सूर्य विमान विषैं लघु होई, पोडश शतक व्यास इम जोई । शुक्र विमान कोश इक जानो, सो ये बड़े कोश परमानों ॥ ४ ॥
विमान वृहस्पति कोश जु हीना, मंगल बुध शनिश्चर तीना । इन विमान का व्यास सु जानों, आध आध ही कोश प्रमानों ॥५॥
तार विमान जघन्य जे होई, पाव कोश व्यास को सोई ; उत्कृष्टा जो व्यास प्रमाना, एक कोश का जानो थाना ॥ ६ ॥
और नक्षत्र जानों व्यासा, एक कोश-ये बडे प्रकाशा । सब विमान मोटा इम जानों, अपने व्यास अधिक परमानों ॥७ ॥
पृथ्वी तैं ऊंचे परमानों, सात सैंकड़ा निवै मानों । ये तो तारन को परामना, और सुनों आगे व्याख्याना ॥ ८ ॥
तारन तैं दश योजन भाई, ऊँचा सूर्य विमान बताई । रवि तैं अस्सी योजन जानों, ऊरध चन्द्र विमान बतानों ॥ ९ ॥
चव योजन शशि में सुखदाई, है नक्षत्र की जान ऊंचाई । लग नक्षत्र चव योजन जानों, ऊचो बुद्ध विमान प्रमानों ॥१०॥
बुध तैं योजन तीन बताया, शुक्र विमान ऊँचा समझाया । योजन तीन शुक्र तैं भाई, ऊँचा वृहस्पति तीन कहाई ॥११॥
वृहस्पति से त्रय योजन जानों, मंगल ऊँचा है श्रुत ज्ञानों । मंगल से त्रय योजन जोई, ऊंचा जान शनीश्चर सोई ॥१२॥
तिनमैं राहु सु केतुक जाना, योजन एक घाट कछु माना । रवि शशि से ये नीचे जानों, ऐसो गमन होय मन आनो ॥१३॥
राहु चन्द्र की ज्योति अछादे, केतु सूर्यद्रुतिकर है मादै । ताकों लोक ग्रहण कहि भाई, ये ज्योतिष की गमन बताई ॥१४॥
राहु विमानध्वजा दँड सोई, ता ऊपर चतु अंगुल होई । चन्द्र विमान तना परमाना, इतना केतु थकी रवि जाना ॥१५॥
रवि सूरज की किरन प्रमाना, द्वादश सहस भिन्न भिन जाना । शुक्र किरण भापूं में सोई, सहस्र अढ़ाई गिनती होई ॥१६॥
सूरज कांति उष्णता मानों, चन्द्रकिरण शीतल मन आनों । शुक्र किरण उज्ज्वल परकाशा, और ज्योतिषो मंदगति भासा॥१७॥
तास साठ इक ईश जु जानों, अन्तर योजन मेरु सुमानों । ज्योतिष पटल गमन करावै, इतने योजन जान न पावै ॥१८॥
जम्बूद्वीप मांहि रवि दोई, चन्द्र दोय मानों सुख होई । लवण समुद्र गिनो शशि वारा, सूरज भी चव जानों प्यारा ॥१९॥
खण्ड धातकी में रविवारा, द्वादश ही शशि जानों प्यारा । कालोदधि सूरज शशि जानो, चाली दो चाली दो मानों ॥२०॥
पुष्कर अर्ध सूर्य शशि होई, सत्तरि दोय भिन्न कर सोई । द्वीप अढाई बारै जानों, सब हि ज्योतिषी ध्रुवै मानों ॥ २१ ॥
जम्बूद्वीप विषैं ध्रुव तारा, है छत्तीस गिनती का सारा । लवण समुद्र विषै ध्रुव जानों, इक शत व उन्तालिस मानों ॥२२॥
खण्ड धातकी में ध्रुव तारा, एक सहसदश अगले सारा । चाली सहस्र ग्यारहसौ बीसा, कालोदधि ध्रुव तारा दीशा ॥२३॥
त्रेपन सहस रु दोसौ तीसा, पुष्कर अर्ध ध्रुव तारा दीसा । ऐसे द्वीप अढाई मांही, तारा ध्रुव कहे सुख ठांहि ॥ २४ ॥

एक चन्द्रका सुन परवारा, सूरज जान एक तिस लारा। ग्रह अठ्यासी और बताये, जान नक्षत्र अट्ठाइस गाये ॥ २५ ॥
पन्द्रह शशि के मारग गाए, सूरजमग जानों अधिकाये। एक सैंकडा अरु चौरासी, रवि चालै इनमें श्रुत भासी ॥ २६ ॥
जघन्य रात दिनका परमाना, द्वे महूर्त द्वादश ध्वनि गाना। उत्कृष्टा दिन रात सुभाई, अष्टादश मुहूर बतलाई ॥ २७ ॥
शशि की आयु एक पल जानों, लाख वर्ष इक ऊपर मानों। सूरज आयु एक पलि भाई, एक हजार वर्ष अधिकाई ॥ २८ ॥
आयु शुक्र की पल्य प्रमाणों, ऊपर वर्ष एकसो मानो। वृहस्पति आयु एक पल्य होई, आगे और सुनो विधि सोई ॥२९॥
मंगल बुध शनिश्चर आया, आधं आध पलसे समझाया। सब ज्योतिष की काय प्रमानों, धनुष सात की सात सुजानों ॥३०॥
तारा अरु नक्षत्र तिथि जानों, पल्यइक चौथा भाग प्रमानों। उत्कृष्टी जे आयु बताई, जघन्य भाग अष्टम पल्य गाई ॥ ३१ ॥
ज्योतिष देविन की थिति जानों, निज निज पिय ते अर्ध बखानों। शशि की चव पट देवी भाई, तिनके नाम सुनों सुखदाई॥३२॥
चन्द्राभा रु सुसीमा सारा, प्रभाकरा तीसरी धारा। अर्चिमालिनी चौथी सोई, अब रवि देवी सुन जे होई ॥ ३३ ॥
द्यु ति नामा पट देवी जानों, सूर्य प्रभा नाम पुनि मानो। प्रभंकरार्चिमालिनी सोई, ये चव देवी रवि के होई ॥ ३४ ॥
चव चव सहस्र देव्य सिरदारी, करैं विक्रिया इतनी सारी। रवि शशि पट देवी तन ठानो, चवचव सहस्र विक्रिया आनो॥३५॥
सब से मन्द गमन शशि केरा, शशि से रवि का शीघ्र जु फेरा। रवि से शीघ्रजु ग्रह को चाला, इससे अधिक नक्षत्र न आला॥३६॥
सब ही ज्योतिष से बहु जानों, तारा चलै वेग अति मानों। रवि अरु शशि विमान को भाई, देव जु पैले चालै ताही ॥३७॥
कहार जाति देव परमाना, षोडश सहस्र लगै ध्वनि गाना। ग्रह विमान के लागें भाई, आठ हजार देवध्वनि गाई ॥ ३८ ॥
लगें नक्षत्र विमान सु देवा, चौ हजार कहार सु भेवा। दो हजार कहार सुर जानों, लगें तारका शिविका मानों ॥ ३९ ॥
इन आदिक ज्योतिष पच भेवा, सबही दास करें जिम सेवा। पुन्यथकी ये पदवी पावै, अशुभ जीव इस मग नहिं आवै ॥४०॥

सोरठा— ज्योतिष असंख्य विमान, इक इक तहां जिन थान है। ते पूजों सब-आन, मन वच काय लगाय के ॥

ॐ ह्रीं पञ्चप्रकार ज्योतिषविमान सम्बन्धि असंख्यातजिन चैत्यालयस्थ जिन पूजा जयमाला पूर्णार्घम् ॥ इति ॥

॥ स्वर्गलोकसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थजि पूजा ॥

छंद पद्धरि–दिवि कल्पउ कल्पातीत जान, जहँ पुण्यवन्त निवसैं महान । तहँ थान नमों जिन राज जेह, ते पूजों मैं वहु ठान नेह ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गलोकसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चाल सुनयानंद–

नीर शुभ्र त्रस विना खीर दधि सम कही, कनक पातर विषै धार लायो सही ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥
ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसंवन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं ॥ १ ॥

गंधधर चन्दनै मलय घसि लाइयो, आप कर लेय उरमांहि हर्पाइयो ।
स्वर्गवासीन नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥
ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

खण्ड विन तंदुला ऊजले सारजी, थाल भर आप कर लेय सुखधारजी ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥
ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षत ॥ ३ ॥

फूल गंध सहित शोभ रंग सुखदायजी, गूंथ तिनमाल ले आइयो भायजी ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥
ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

लेय रस सार चरु कियो मन हारजी, आइयो आप ढिंग भक्ति वहुधारजी ।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥
ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीप तमहार बहुभार परकाशजी, थाल भर लाइयो होय जिनदासजी ।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमानसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दशगंध को मेल सुखदायजी, खेवने को चलो अति उमगायजी ।
स्वगवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासीदेव विमान सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

श्रीफला लौंग खारक भला जानिये, आदि फल और इन भक्ति युत आनिये ।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देव विमान सवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं ॥ ८ ॥

नीर गंध तंदुलै शुद्ध चरु लाइयो, दीप अरु धूप फल अर्घ बनवाइयो ।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो, जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देव विमान संवंधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

चाल जोगीरासा की—स्वर्ग निवासी देव विमान सु चौरासी लख जानों, सहस सत्याणव ऊपर सेती इतनी संख्या मानों ।
इतने ही इनमें जिन मंदिर विनाकिये शुभकारी, तिन सबको शुभ अर्घ चढाऊं मन वच धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देव विमान संवधि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

प्रत्येक अर्घ

चाल जोगीरासा की—मेरुचूलिका तें पहलो स्वर्गल अंतरै जानो, है यामें इकतीस पटल शुभ येते इंद्रक मानो ।
प्रथम इंद्र को नाम ऋतु है मेरु जगत वह होई, या गतिछेद भए सुध मूरत ते पूजों मद खोई ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संवंधि प्रथम ऋतु इन्द्रक गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

चौपई—प्रथम युगल इंद्रक दूसरो, विमल नाम धारक है खरो । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम युगल संवधि द्वितीय विमल नाम इन्द्रक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

सोधर्म युगल मांहि मन लाय, चंद्र जान इंद्रक सुखदाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबंधि तृतीय चन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

प्रथम युगल में वलगू नाम, इन्द्रक देव विमान सु ठाम। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि चतुर्थ वलगू नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

प्रथम युगल में इंद्रक सोय, नाम वीरता जान सु सोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि पंचम वीर नाम इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

पहलो युगल अरुण तिस नाम, इंद्रक षष्टम जान सु ठाम। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि षष्टम अरुण नाम इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् । ६ ॥

पहले जुगल जु नन्दन नाम, है विमान इन्द्रक शुभ ठाम। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि सप्तम नन्दन नाम इन्द्रदक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

नाम नलिन पहले स्वर्ग मांहि, इंद्रक नाम विमान सुपांहि। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल अष्टम नलिन नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

प्रथम स्वर्ग में इंद्रक सोय, कांचन नाम विमान सुजोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि नवम् काचन नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

पहले युगल मांहि सुविमान, रोहित इंद्रक नाम प्रधान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि रोहिता नाम इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ १० ॥

प्रथम युगल में इंद्रक जान, चंचत नाम ग्यारमो मान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि एकादशम चंचत् नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

प्रथम स्वर्ग में इंद्रक मान, मरुत नाम द्वादशमो जान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्वन्धि द्वादशम मरुत नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

युगल प्रथम में इंद्रक सोय, है ऋद्धीश नाम शुभ जोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि त्रयोदशम ऋद्धीश नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

प्रथम युगल मांहि सुविमान, वैडूर्य इंद्रक शुभखान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि चतुर्दशम वैडूर्य नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

प्रथम युगल में जान विमान, रुचक तास को नाम बखान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि पचदशम रुचिक नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

प्रथम युगल में रुचिर विमान, इन्द्रक षोडशमों सुख खान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि षोडशम रुचिर इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

प्रथम स्वर्ग इंद्रक में जान, अंक नाम ताको सुख दान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि सप्तदशम अंक नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

प्रथम युगल में इन्द्रक होय, स्फटिक नाम कह्यो जिन सोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि अष्ट दशम स्फटिक नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

प्रथम जुगल में इन्द्रक जान, तपनिय शुभ इन्द्रक मन आन। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पुजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबधि एकोनविंशतितपनीयनाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

प्रथम युगल में इन्द्रक सोय, मेघ नाम सुखदायक जोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबंधि विंशतितमो मेघ नाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

प्रथम युगल मैं इन्द्रक सार, अभ्रसु नाम विमान विचार। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सवंधि एकविंशतितमो अभ्रनाम इंद्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

सौधर्म युगल इन्द्रक सोय, नाम हरित शुभ लखिये जोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सवंधि द्वाविंशतितमो हरित नाम इंद्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ २२ ॥

युगल प्रथम में इन्द्रक भाय, पद्म विमान नाम तिन पाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सवंधि त्रयोविंशतितमो पद्म नाम इंद्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

प्रथम युगल में स्वर्ग विमान, इन्द्रक लोहित सुख को थान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्री सौधर्म युगल संवंधि चतुर्विंशतितमो लोहित नाम इंद्रक विमान गतिच्छेक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

प्रथम युगल में भवन अनूप, वज्र नाम इन्द्रक शुभ रूप । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सवंधि पंचविंशतितमो वज्र नाम इंद्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

पहला युगल मांहि शुभ जान, नंद्यावर्तक इंद्रक मान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संबंधि षड्विंशतितमो नद्यावर्तक नाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

प्रथम कलप जुग मांहि विमान, प्रभंकरा है नाम सु जान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्री सौधर्म युगल संबधि सप्तविंशतितमो प्रभकर नाम इंद्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

प्रथम युगल इंद्रक शुभ मई, पृष्टक नाम विमान सु थई । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संवधि अष्टविंशतितमो पृष्टक नाम इद्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

युगल प्रथम में सुभग विमान, है गज नाम सु इंद्रक आन । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल संवन्धि नवविंशतितमो गज नाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

प्रथम युगल इंद्रक को सोय, मित्र विमान नाम शुभ होय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बधि त्रिंशततमो मित्र नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

सौधर्म युगल महा सुविमान, अंतक इन्द्रक प्रभ शुभ थान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि एक त्रिंशत तमो प्रभ नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

याही अंत पटल के मांहि, दक्षिण उत्तर हरिपुर मांहि । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि द्वात्रिंशततमो अन्तक पटल सम्बन्धि दक्षिण उत्तर इन्द्रक नगर गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

प्रथम युगल श्रेणी बँध सोय, ताके जिते विमान सु होय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि श्रेणीवद्ध विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

प्रथम युगल में सुभग विमान, है परकीरण अपनी ठान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि प्रकीर्ण विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

सौधर्म स्वर्ग मांहि हरि सोय, सौधर्म नाम तास को जोय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि सौधर्म इन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

है ईशान मांहि जो नाथ, है ईशान इन्द्र पुनि साथ । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्ग सम्बन्धि ईशान इन्द्र गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३६ ॥

है सौधर्म इन्द्र के सोय, पद प्रति-इन्द्र धार सुर होय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म युगल सम्बन्धि प्रतीन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

जो ईशान इंद्र को जान, श्रुति इन्द्र पद धारक मान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं ईशानइन्द्र सम्बन्धि प्रतीन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

सौधर्म अरु ईशान जु जान,इनके सुख सामानिक मान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं प्रथम युगल सम्बन्धि सामनिक देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

प्रथम युगल में हरिचर देव, त्राय स्त्रिं शत पदधर एव । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान सम्बन्धि त्रायस्त्रिंश देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

प्रथम युगल के स्वामी सोय, तिनके पारीपद सुर सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं प्रथम युगल सवधी पारिपद जाति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

सौधर्म ईशान सुजान, इनके आतम रक्षक मान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान सवधि आत्मरक्षक नाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ।

सौधर्म रुईशान सुदेव, इनके लोक पाल पदभेव । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि लोकपाल जाति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

प्रथम युगल हरि के चर सुरा, पद आनीक धार वल धरा । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि सप्त जाति अनीक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

सौधर्म रुईशान सुजान, इनके परकीरण सुखमान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि प्रकीर्णक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

प्रथम युगल स्वामी के सुरा, है अभियोग धार पद खरा । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि अभियोग्य पदधारक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घ ॥ ५६ ॥

प्रथम युगल हरि के चर होय, किलविष पद के धारक होय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशान संबंधि किल्विषिक पदधार देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

दक्षिण इन्द्र पद देवी जान, नाम तास को सची बखान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रस्य सचीनाम इंद्रानी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

पदमा पट देवी मन लाय, सो भी दक्षिण इन्द्र सु पाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ।

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रस्य पदमा नाम पट्ट इद्राणी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

नाम शिवापट देवी जान, दक्षिण इन्द्रन के पहिचान । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रस्य शिवानाम पट्टरानी गतिच्छेदक सिद्धभ्यो अर्घम् ॥ ६० ॥

दक्षिण दिशा इन्द्रन के पाय, श्यामा पट देवी मन लाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्रसम्बन्धि श्यामानाम पट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६१ ॥

इंद्र सुदक्षिण दिश के जोय, कालंदी तिन देवी सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इद्र संबंधि कालंदी नाम पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

सुलसा पट देवी को नाम, ताके दक्षिण इन्द्र जु नाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्र सवधि सुलसा नाम पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५३ ॥

दक्षिण इंद्र पट ही के जान, अञ्जुका पट देवि को मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्र संबधि अञ्जका नामा पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५४ ॥

दक्षिण इंद्रन के सुखदाय, भानु नाम पट देवी पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इंद्र संबधि भानु नामा पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५५ ॥

अडिल्ल छंद—

ये ही आठों नाम धार देवी सही, दक्षिण दिश जे इन्द्र होय तिनकी मही ।
तिनकी उतपति छेद भये भवपारजी, ते सिध पूजों अर्घ बना थुति धारजी ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण इन्द्र संबधि अष्ट पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

॥ उत्तर इन्द्र संबंधि अष्ट पट्टदेवी गति छेदक अर्घ ॥

चौपई—उत्तरदिश इन्द्रन के होय, श्रीयमती पट देवी सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्र सवन्धि श्रीमती पट्ट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

उत्तर इंद्रन के पटनार, रामा नाम होय मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इंद्र संबंधि रामा नामपट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

नाम सुसीमा देवी सोय, उत्तर इन्द्रन के पट होय । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इंद्र संबंधि सुशीमा नामा पट देवी गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

इन्दर उत्तर देवी सोय, प्रभावती मुख्य पट होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इंद्र सवधि प्रभावती नामा पट देवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

उत्तर सुरपति जेते होय, जय सेना तहां देवी होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तर इंद्र संबधि जयसेना नामा देवीगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

नाम सुपेणा देवी सोय, उत्तर इन्द्रन के पट होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसबन्धि सुपेणानामापट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६२ ॥

वसुमित्रा देवी शुभ जान, उत्तर सुरपति देवी मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि वसुमित्रानाम पट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६३ ॥

उत्तर इन्द्रजु देवी होय, मुख्य वसुन्धर देवी जोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि वसुन्धरानामापट्ट देवीगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६४ ॥

ऐसे आठ नाम के धार, उत्तर सुरपति देवी धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि अष्टपट्टदेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६५ ॥

॥ आनीक सप्तदेवगति छेदक अर्घ ॥

इन्द्रन के आनीक सुजान, पहली फोज वृपभ की मान । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि प्रथमवृपभ आनीक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

और सुनो आनीक सु नाम, दूजी फोज सुघोटक नाम । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि द्वितीयघोटक नाम आनीकगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६७ ॥

इन्द्रन को आनीक सुजोय, तीजी फोज रथन की होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि तृतीय रथनामा आनीकगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६८ ॥

हाथी की आनीक सुजेय, चौथी फोज इन्द्र की तेय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि चतुर्थ गजनामा आनीक गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६९ ॥

इन्द्रद के पंचम वल जोय, तामें सकल पयादे होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि पञ्चमवलनामा आनीकगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

गंधर्वन आनीक सुभाय, पष्टम फोज इन्द्रकी पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि पष्टम गंधर्वनाम आनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥७१॥

हरिकी सप्तम फोज सुजान, नृत्यक जात आनीक प्रमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि सप्तमनृत्यकनाम आनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७२ ॥

चाल जोगीरासा— ये सातों आनीक सुजानो सब इन्द्रन के होई । इक इक आनिक सात जातकी सब मिल गुणचा होई ।
ये ही देव पशूवन आवै और पशु नहि मानों । इन गति छेद भये विन मूरत ते पूजों धरि ध्यानो ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्बन्धि सप्तआनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७३ ॥

॥ आनीक स्वामी देवगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपाई—वृषभ फोज को नायक सोय, नाम इष्ट सुर सो अवलोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वृषभ सेनानायक इष्टदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७४ ॥

घोटक फोजन को सिरमोर, हरिनामः सुर नायक जोर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं घोटक आनीक नायक हरिनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७५ ॥

रथ आनीक तनो सिरमोर, मातिल नाम देव सुख ठोर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं रथ आनीक नायक मातिल देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

हाथी सेना नायक सोय, ऐरावत नामा सुर जोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं गजआनीकनायक ऐरावतदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

सेन पयादन को अधिपती, वायुनाम सुरनायक सती । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पदाति सेनानायक वायुनामदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७८ ॥

गंधर्व सेना नायक सोय, नाम अरिष्ट जसा सुर होय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं गधर्व सेनानायक अरिष्टनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७९ ॥

सेन नृत्यकी नायक सोय, नील जसा देवांगन सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नृत्यकसेनानायक नीलनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८० ॥

ये सातों सेनापति सोय, दक्षिण इन्द्रनके अवलोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं दक्षिणदिशासम्बन्धि सप्तआनीक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८१ ॥

॥ ईशानादि उत्तर इन्द्रके सेनानायक देवगतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—महा दामयष्टि मनलाय, वृषभ सेन नायक सुख पाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि वृषभसेनानायक महादामयष्टिदेवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

घोटक फोजपति सुर होय, नाम अमितगति छेदक सोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि घोटकसेनानायक अमितगति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८३ ॥

रथ आनीक पति रमाय, नाम तास रथमथन कहाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्र सम्बन्धि रथसेनानायक रथमथननाम गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८४ ॥

गज सेना नायक जो देव, पुष्पदन्त तसु नाम गिनेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्रसम्बन्धि गजसेनानायक पुष्पदन्तनाम देव गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८५ ॥

फोज पयादन को सिर मोर, सलघुपराक्रम सुर शुभ ठोर । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धि पदाति सेनानायकसलघुपराक्रमनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८६ ॥

गंध्रव फोजपती सुरराय, नाम गीतरति सब मन भाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्रसम्बन्धि गन्धर्वसेनानायक गीतरतिनामदेव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८७ ॥

नृत्यक सेना के पति जान, देव महा सेना पहचान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तरइन्द्रसम्बन्धिनृत्यक सेनानायक महासेनानाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८८ ॥

वेसरी छंद—ये सातों आनीक सुजानो, उत्तर इन्दर के मन मानो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥
ॐ ह्रीं उत्तर इन्द्रसम्बन्धि सातसेनानायक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८९ ॥

॥ लोकपाल गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौपई—लोकपाल पहलो हरि तनो, सोमनाम ताको हरि वनो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसवन्धि प्रथम लोकपाल सोमनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ९० ॥

दूजो लोकपाल सुर होय, है जमनाम तास अवलोय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि द्वितीय लोकपाल यमनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९१ ॥

नाम वरुण जानो मन लाय, लोकपाल तीजो सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि तृतीय लोकपाल वरुणनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९२ ॥

नाम कुवेर तास को जान, लोकपाल चौथो सो मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि चतुर्थकुवेरनाम लोकपाल देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ९३ ॥

वेसरीछंद—ये चव लोकपाल सुरदेवा, सोम वरुणयम अरुण सुमेवा । लोकपालशुभ और कुबेरा, इनगतिछेद जजों शिव डेरा ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि चत्वार. लोकपाल गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९४ ॥

॥ गणिकानायक गतिच्छेदक अर्घ ॥

चौहई—गणिकानायक देव मझार, कामा नाम सुरी मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि गणिकानायकाकामानाम देवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९५ ॥

नाम कामनी गणिका कही, सुन्दरता में दूजी नहीं । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री इन्द्रसम्वन्धि गणिकानायका कामिनीनाम देवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९६ ॥

नास पदमगंधा मन लाय, गणिकनिकी नायका भाय । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रसम्वन्धि गणिकानायका पद्मगन्धानामादेवी गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९७ ॥

नाम अलंवुपा सुख ठोर, गणिका नायक सव में मोर । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं इन्द्र सम्वन्धि गणिकानायका अलंवूपा नामदेवी गतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९८ ॥

पद्धरि छंद—यह गणिका नायक चार जान, सब थोक मांहि इनकी सुमान। तिनकी उतपति हर देव सोय ते पूजों मनवचकाय जोय ॥

ॐ ह्री इन्द्रसम्बन्धि गणिका गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६६ ॥

॥ प्रथम युगल सौधर्म–ईशान स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ ॥

चौपई—लाख बतीस विमान सुजान, सौधर्म स्वर्ग मांहि सोमान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म स्वर्गसम्बन्धि द्वात्रिंशत्लक्ष विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥ १ ॥

लाख बतीस सौधर्म सुजान, तिनमें इतने ही जिन थान। आवागमन निवारण हार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं सौधर्मस्वर्गसम्बन्धि द्वात्रिंशत्लक्षविमान जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

स्वर् ईशान विमान प्रमान, लाख अठाइस सुख के मान। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्गसम्बन्धि अष्टाविंशति लक्षविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

दूजे स्वर्गमांहि जे जान, तिनमें इक इक है जिन थान। लाख अठाइस गिनती जोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्गसम्बन्धि अष्टाविंशति लक्षविमानेषु जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

॥ पद्धरि छन्द ॥

सौधर्म युगल रचना अपार, ता गति हर पूजों हर्षधार। इहां जिन थल साठ जु लाख जोय, ते पूजों मन वच शुद्ध होय ॥

ॐ ह्रीं सौधर्म ईशानयुगल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

॥ द्वितीय युगल सनत्कुमारमाहेन्द्र स्वर्गसंबन्धि अर्घ ॥

चौपई—सनत्कुमार स्वर्गके मांहि, बारहलाख विमान कहाइ। तिन सब में इक इक जिन गेह, ते हूँ जजों ठान बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमारसम्बन्धिविमानस्थ द्वादशलक्षजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

सनतकुमार स्वर्ग के ठोर, सनत्कुमार इन्द्र शिर मोर। ताकी उतपति छेदक पाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार स्वर्गनाथ सनत्कुमारनाम इन्द्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

परथम युगल शुभाशुभ ठाम, सनतकुमार स्वर्ग सुख धाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार स्वर्ग गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

सनतकुमार स्वर्ग के मांहि, श्रेणी बद्ध विमान कहाहिं। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार स्वर्गसम्बन्धि श्रेणिबद्धविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

सनतकुमार कलप सुखकार, परकीर्णक तहां जान सुधार। तिनकी उतपति छेदक पाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार सम्बन्धि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

स्वर्ग महेन्द्र कहा सुखकार, आठ लाख जानो सुर धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्गसम्बन्धि विमानस्थित अष्टलक्षजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

स्वर्ग महेन्द्र माहिं ये जान, याही नाम धार हरि मान। ताकी उतपति छेदक पाय, पूजों मन वच काय लगाय ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग नाम माहेन्द्र देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

दूजे युगल मांहि मन लाय, स्वर्ग महेन्द्र कहा अधिकाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

स्वर्ग महेन्द्र महा सुखकार, श्रेणी बद्ध विमान सुधार। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग सम्बन्धि श्रेणी बद्ध विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

स्वर्ग महेन्द्र मांहि मन लाय, कल्प प्रकीर्ण महा सुख दाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र स्वर्ग संबधि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

दूजे युगल मांहि मन लाय, अंजन इन्द्रक जान कहाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि अजना नाम प्रथम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ११ ॥

इन्द्रक दूजो युगल सुपाय, है वनमाला नाम सुभाय। । ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि वनमाल नाम द्वितीय इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२ ॥

नाग नाम इन्द्रक मन लाय, दूजे युगल मांहि सुख पाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि नागनाम तृतीय इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १३ ॥

दूजे युगल विमान अनूप, इन्द्रक नाम गरुड शुभ रूप। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि गरुड नाम चतुर्थ इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

लांगल नाम विमान सु जान, इन्द्रक दूजे युगल बखान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि लांगल नाम पचम विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

है विमान बलभद्र सुजान, दूजे इन्द्रक युगल प्रमान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल बलभद्र नाम षष्ठम विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

दूजे स्वर्ग विमान सु जोय, इन्द्रक नाम चक्र है सोय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि चक्रनाम सप्तम विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

दूजे युगल मांहि सुविमान, इन्द्रक सात कहे जिनवान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिवकार ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि सप्त इन्द्रक विमानं गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

॥ पद्धडी-छन्द ॥

है युगल दूसरे में विमान, सब बीस लाख गिनती सुथान ॥ तिन मांहि इते जिन गेह सोय, ते पूजों मन वच अरघ जोय ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय युगल सम्बन्धि विमान स्थित विंशति लक्ष जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

॥ तृतीय युगल ब्रह्मब्रह्मोत्तर स्वर्ग संबंधि अर्घ ॥

चौपई—तीजे युगल मांहि जिनलाय, जान विमान लाख चव भाय। इतने ही जिनमें जिनगेह, ते हूँ पूजों कर बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि विमान स्थित चतुर्लक्ष जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

तीजे युगल मांहि शुभ जोय, श्रेणी बद्ध विमान सु होय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सबंधि श्रेणिबद्ध गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

तीजे युगल तने शुभ ठाम, है प्रकीर्ण जानहु सुखधाम। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सवधि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

ब्रह्म युगल में ब्रह्म हरि जान, सो सब देवन को पतिमान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि ब्रह्मइन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

तीजे युगल मांहि मन लाय, नाम अरिष्ट सु इंद्र कहाय। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि अरिष्ट इंद्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

तीजे युगल मांहि सु विमान, सुरस नाम इन्द्रक शुभ ठान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल संबंधि सुरसनाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

ब्रह्म युगल तीजे सुख थान, इन्द्रक ब्रह्म नाम शुभ जान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सबंधि ब्रह्मइंद्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

ब्रह्मोत्तर इन्द्रक पहचान, तीजे युगल मांहि सुख दान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सबधि ब्रह्मोत्तर इंद्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

ब्रह्म युगल में ये चव जान, इन्द्रक कहे महा सुखदान। ताकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगलसम्बन्धि चतुरिन्द्रकविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

चाल मुनयानन्द—

ब्रह्म युगल लोकान्त सुर जानिये, अष्टविध तासमें सारस्वत मानिये।
सात सौ सात हैं जान तिन के सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अष्टप्रकारलौकान्तिक सारस्वतजातिदेव सप्तोपरि सप्तशतविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १० ॥

तीसरे युगल आदित्य सुर जोइये, सातसौ सात शुभ जान मन मोहिये।
आठ विधि जात लोकान्त में है सही, तिन गतिच्छेद पद पूज हों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगल सम्बन्धि आदित्यजाति लोकान्तिक जाति देव गतिछेदक सिद्धेभ्योअर्घम् ॥ १२ ॥

तीसरे युगल लोकान्त वसु जातिया, अरुण तिननाम सुरजाति शुभ यातिया ।
वह्नि सम जान परमान सुखदा सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगलसम्बन्धि वरुणनाम लौकान्तिक जातिदेव सप्तोपरिसप्तसहस्रविमानगतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥१३॥

देव गर्दतोय लौकान्ति पंचम गिनो, नवमधिकनवसहस्र जान शोभै घनों ।
तीसरे युगल सुररीति ये है सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगलसम्बन्धि गर्दतोयजाति पंचमलौकान्तिक देव नवोपरिनव सहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४ ॥

जान लौकान्ति सुरजाति के तुपित हैं, जान इन नव अधिक नव सहस्र वन रहे ।
तीसरे युगल यह देव षष्टम सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगलसम्बन्धि षष्ठतुषितजाति लौकान्तिकदेवनवाधिकनवसहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १५ ॥

तीसरे युगल लौकान्त सुर जातिया, सुर अव्याबाध सप्तम भले पातिया ।
जान ग्यारह अधिक सहस्र ग्यारह सही, तिन गतिच्छेद पद पूजहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगलसम्बन्धि सप्तमअव्यावाधजातिलौकान्तिकदेव एकादशाधिक एकादशसहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १६ ॥

तीसरे युगल में देव ब्रह्मचारिया, जाति लौकान्तिक में अरिष्ट विन नारिया ।
जान ग्यारह अधिक सहस्र ग्यारह सही, तिन गतिच्छेद पद पूजिहों शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगलसंबधि अष्टमअरिष्ट जातिलौकान्तिक देव एकादशाधिकएकादशसहस्रविभावगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

छंद अडिल्ल—

तीजे युगल मझार देव सब पाइये, आठ जाति लौकान्त विमान मिलाइये ।
सहस्र पचावन चार शतक अडसठ सही, इन गति छेदक देव जजों शिवदा मही ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सम्बन्धि अष्टजाति लौकान्तिक देव पचपचाशत सहस्र चतुर्शत अष्टषष्टि. विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

चौपई—ब्रह्म युगल लोकान्तिक सार, प्रथम सारस्वत है मन धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल संबधि सारस्वत जाति लोकान्तिक देवगतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १९ ॥

सारस्वत आदित्य मधि जान, अरु अगनी भव सहित प्रमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सवधि सारस्वत देवानां विमान मध्यवासी अग्नि जाति देव गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २० ॥

सुर अगन्याभ विमान सुजान, सात हजार सात अधिकान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अगन्याभजाति देव संवधि सप्तोपरिसप्तसहस्र विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २१ ॥

सूर्याभ लोकान्तिक देव, इस ही अंतर में थुति जेव । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सारस्वत आदित्य संबंधि अतराल वासीसूर्याभ जाति लोकान्तिक देव विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २२ ॥

लौकान्त सूर्याभ विमान, भव सहस्र अधिक कर ठान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं सूर्याभजाति लोकान्तिक देवसवंधि नवाधिक नवसहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २३ ॥

आठ जाति लौकान्तिक देव, तिनमें दूजो आदित भेव । ताकी उत्पति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्री द्वितीय आदित्य जाति लोकान्तिक देवगतिच्छेक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २४ ॥

आदित्य वह्नि अंतरै मांहि, सूर्याचन्द्र आभ शुभ ठांहि । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आदित्य वह्नि अतर्वासी चन्द्राभ नाम लोकान्तिक देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २५ ॥

शुभ चन्द्राभ नाम सुर जान, ग्यारह सहस्र ग्यारह मन आन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तृतीययुगल सवंधि चंद्राभ नाम देवानां एकादशाधिक एकादश सहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २६ ॥

याही अन्तराल में जान, सुर सत्याभ वसै हित मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तृतीय युगल सवधी आदित्य वह्नि अन्तर्वासी सत्याभ जाति देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २७ ॥

इन सत्याभ देव के जान, तेरह सहस्र तेरह मन आन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

-ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सम्बन्धि सत्याभ देवानां त्रयोदश सहस्र विमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ २८ ॥

आठ भेद लौकान्तिक सार, तिनमें वह्नि जाति सुर धार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं युगल सम्बन्धि तृतीय वह्नि जाति लोकान्तिक देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ २९ ॥

वह्नि अरुण के अन्तर मांहि, श्रेयस्कर सुर की थिति ठांहिं । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि वह्निअरुण देवना अन्तर्वासी श्रेयस्करजातिदेवगतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३० ॥

श्रेयस्कर सुर के सुविमान, पन्द्रह सहस्र रु पन्द्रह आन । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि श्रेयस्करजातिदेवानां पचदशाधिक पंचदश सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ३१ ॥

ब्रह्मयुगल इस ही अन्तराल, क्षेमंकर सुर निवसै साल । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि क्षेमंकर जातिदेव वह्नि अरुणदेवाना अन्तरालवासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

क्षेमंकर सुर के सु विमान, सत्रह सहस्र अरु सत्रह थान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि क्षेमकरनामदेव सप्तदशाधिक सप्तदशसहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३३ ॥

अरुण जाति लौकान्तिक देव, आठ प्रकार नमें इन भेव । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकार लौकान्तिक देवसम्बन्धि चतुर्थ अरुणनाम लौकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३४ ॥

अरुण गर्द तोय के मांहि, वृषभ देव वसै तिथि पांहिं । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्ज संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि अरुणगर्दतोय लौकान्तिकदेवानां अन्तरालवासी वृषभेष्टजाति देवगतिच्छेनक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३५ ॥

उन्निस अधिक सहस्र उन्नीस, सुर वृषभेष्टजान जगदीश । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ सजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि वृषभेष्टनामदेवनवदशाधिक नवदशसहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम्॥ ३६ ॥

इन ही अंतराल में सही, देवकामधर निवसें मही । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अरुणगर्दतोय लौकान्तकदेवानां अन्तरालवासीकामधरदेव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३७ ॥

ये हि कामधर देव विमान, इक्किस सहस्ररु इक्किस जान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि कामधर देवानां एक विंशति अधिक एकविंशति सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३८ ॥

गर्दतोय सुर अरि जै भान, पंचम लौकान्तिक सुख चान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि पचमगर्दतोय लौकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३९ ॥

गर्दतोय तुपित मधि जान, सुर निरमाण रजा मन आन । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ सजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि गर्दतोय तुपित लौकान्तिक देवानां अन्तरालवासी निर्माणनाम देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४० ॥

सुर निर्माण रजा के जान, तेईस हजार तेईस प्रमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसंबधिगर्दतोयतुपित लौकान्तिक देवानां अन्तर्वासी निर्माण राजानाम देवानां त्रिविंशति-अधिक-त्रिविंशति सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४१ ॥

ये चव श्रेणीवद्ध विमान, चारों दिश अनुदिश के थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सबधि गर्दतोयतुपितलौकान्तिकजातिदेवाना अन्तर्वासी दिगंतरक्षक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४२ ॥

सुर दिगंत रक्षित के जान, पचीस हजार रु पच्चिस मान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबंधि दिगंत रक्षित जाति देवानां पचविंशति अधिक पंचविंशतिसहस्र विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४३ ॥

वसु प्रकार लोकान्तिक सुरा, तिनमें तुपित पष्टमी धरा । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधि अष्ट प्रकार लौकान्तिक स्थित तुपितनाम पष्टम लौकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४४ ॥

तुपित अव्याबाध सु विचैं, आतम रक्षक देव जु रचैं । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधितुषितअव्याबाध लौकान्तिक देवानां अन्तर्वासी आत्म रक्षक देवगतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ४५ ॥

आतम रक्षित देव विमान, सहस सताइ सत्ताई जान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सम्बन्धि आत्म रक्षित देवाना सप्तविंशति अधिक सप्तविंशति सहस्रविमान गतिच्छेदक जिनेभ्यो अर्घ ॥ ४६ ॥

इसही अन्तर माहि विमान, देव सर्वरक्षित मन आन । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधि तुपित अव्याबाध लौकान्तिक देवाना अतराल वासी सर्व रक्षत देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४७ ॥

देव सर्व रक्षित सुविमान, उन्तिस सहसोन्तीस प्रमाण । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधि सर्व रक्षित नाम देवाना नवविंशति अधिक नवविंशति सहस्रविमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥

सप्तम अव्याबाध सुदेव, लोकान्तिक में शुभ इन टेव । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल संबधि अव्याबाध सप्तम लौकान्तिक देव गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४९ ॥

अव्याबाध अरिष्ट सुविचै, मारुत सुर की शुभ थिति जचै । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधि अरिष्ट नाम देवानां अन्तर्वासी मरुननाम देव गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५० ॥

इनही मरुत सुरनि के जान, इकतिस सहस्र रु इकतिस मान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि मरुतनाम देवानां एकत्रिंशत–अधिक एक त्रिंशत सहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५१ ॥

अन्तराल इन ही के देव, ब्रह्मयुगल में तिष्ठत जेव । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगल सबधि अव्याबाध आरष्ट लोकान्तिकदेवानां अन्तर्वासीवसुनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ५२ ॥

इन वसुदेव विमान प्रमान, तेतिस सहस्र तेतीस बखान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसबन्धि वसुनाम देवाना त्रयत्रिंशतअधिक त्रयत्रिंशतसहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५३ ॥

ब्रह्मयुगल लोकान्तिक देव, अष्टमजाति अरिष्ट सुमेव । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि अष्टम अरिष्टजातिनाम लोकान्तिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५४ ॥

मध्य अरिष्ट सारस्वत तने, अश्व नाम सुर की गति बने । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अरिष्ट सारस्वतलौकान्तिक देवाना अन्तर्वासी अश्वनाम देवगति छेदकसिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ५५ ॥

अश्वदेव के लखो विमान, पैंतिस सहसरु पैंतिस जान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसबधि अरिष्टसारस्वतलौकान्तिक देवाना अन्तरालवासी अश्वजातदेवाना पचत्रिंशदधिक पचत्रिंशतसहस्रविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५६ ॥

इस ही अन्तर में शुभ जान, विश्व नाम सुरके हैं थान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगलसम्बन्धि अरिष्टसारस्वत देवानां अन्तर्वासी विश्वनाम देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५७ ॥

इन ही विश्व देवके जान, सैंतीस हजार रु सैंतिस मान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि अरिष्टसारस्वतलौकान्तिक देवानां अन्तरालवासी विश्वदेवाना सप्तत्रिंशत अधिक सप्तत्रिंशतसहस्र विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५८ ॥

ब्रह्मयुगल में संख्य विमान, जिन धुनि भाषे चव लख जान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों मन वच होय ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि चतुर्लक्षविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५९ ॥

दोहा— ब्रह्म युगल चव लख गिनो, तिनके वासी देव। तिन गतिहर शिव पद लयो, ते पूजों कर सेव॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयुगल सम्बन्धि चतुर्लक्षविमानवासीदेवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम महार्घम्॥ ६०॥

॥ चतुर्थ युगल लांतव–कपिष्ट स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ॥

लांतव युगल मांहि मन लाय, लांतव नामा स्वर्ग कहाय। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं लातव युगलसम्बन्धि लातवनाम स्वर्गगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं॥ ६१॥

स्वर्गनाम कापिष्ट सुजान, चौथे युगल मांहि मन आन। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि कापिष्टस्वर्गगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम्॥ ६२॥

लांतव युगल तने मन लाय, श्रेणीबद्ध विमान सुभाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि श्रेणीबद्ध विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम॥ ६३॥

लांतव युगल संबंधि जेय, परकीर्णन विमान गिन लेय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं लांतव युगल सम्बन्धि प्रकीर्णकविमानगगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम्॥ ६४॥

लांतव युगल विमान सुभाय, इन्द्रक ब्रह्म हृदय मन लाय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ युगलसम्बन्धि ब्रह्महृदयनाम इन्द्रकविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम्॥ ६५॥

चौथे युगल सु इन्द्रक जान, लांतव ताको नाम बखान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि लातवनाम इन्द्रकविमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम्॥ ६६॥

लांतवादि इन्द्र द्वयजान, सामानादि इन्द्र सुर मान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि लांतवइन्द्रसम्बन्धि सामान्यादि देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम॥ ६७॥

लांतव युगल प्रमाण विमान, सहस्र पचास जान सुख थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्बन्धि पचाशतसहस्र विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम्॥ ६८॥

चौथे युगल विमान बताय, तिनके वासी देव कहाय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्वन्धि पंचाशत सहस्रविमानवासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ६९ ॥

छंद अडिल्ल—

लांतव युगल विमान प्रमाण बखानिये, गिनती सहस्र पचास देव पुर मानिये ।
तिन मांही जिन मंदिर हैं इक इक सही, ते मैं पूजों मन वच तन पुण्य की मही ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थयुगलसम्वन्धि पचाशत सहस्रविमानसम्वन्धि पंचाशत सहस्र जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ ७० ॥

॥ पंचम युगल शुक्र महाशुक्र स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ ॥

पंचम युगल महा सुखदाय, शुक्रनाम सुख खान कहाय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगलसम्बन्धि शुक्रनामविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७१ ॥

शुक्र विमाननाथ मन लाय, शुक्र इन्द्र तसु नाम कहाय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगलसम्बन्धि शुक्रनाम इन्द्रक गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७२ ॥

महा शुक्र शुभ नाम कहाय, पंचम युगल मांहि सुखपाय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगल सम्बन्धि महाशुक्रनाम इन्द्रक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७३ ॥

शुक्र युगल में एक सुजान, इन्द्र जान शुक्र मन आन । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचम युगलसम्बन्धि शुक्रनाम एक इंद्रकविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७४ ॥

पंचम युगल मांहि जे जान, श्रेणीबद्ध विमान सुमान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचमयुगलसंबधि श्रेणीबद्धविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७५ ॥

पंचम युगल मनोहर सही, परकीरण विमान शुभ मही । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचमयुगलसम्बन्धि प्रकीर्णक विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७६ ॥

पंचम युगल विमान प्रमान, सहस्र चालीस महा शुभ थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पंचमयुगलसम्बन्धि चत्वारिंशत सहस्र विमानवासी देव गतिच्छेदकसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७७ ॥

ये चालीस हजार विमान, इनके वासी देव सुजान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगलसम्बन्धि चत्वारिंशत्सहस्र विमानवासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ७८ ॥

छंद पद्धरि–चालीस सहस्र पंचम बखान, तिन एक एक में जिनद थान । ते रतन मई शोभा अपार, ते पूजों मन वच अर्घ धार ॥

ॐ ह्रीं पचमयुगल सम्बन्धि चत्वारिंशत्सहस्रविमानवासी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम ॥ ७९ ॥

॥ षष्ठम युगल शतार सहस्रार स्वर्ग सम्बन्धि अर्घ ॥

चौपई–युगल सतार मांहि मनलाय, इन्द्र सतार सकल सुखदाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल संबधि सतारगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

छट्ठे युगल मांहि शुभ थान, स्वर्गसतार स्वर्ग को दान । याकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल सबंधि सतार गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ८१ ॥

छट्ठे युगल संबंधी जेय, सहस्रार स्वर्जानो तेय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठम युगल सम्बंधि सहस्रार स्वर्ग गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८२ ॥

छटे युगल सुजान विमान, श्रेणी बद्ध महा पुनि खान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल संबधि श्रेणीबद्ध विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ८३ ॥

युगल सतार तने मन लाय, परकीर्णक सुविमान सुभाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगल सबन्धि प्रकीर्णक विमान गति छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ८४ ॥

युगल सतार मांहि मन लाय; इन्द्रक नाम सतार सुभाय । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगलसम्बन्धि सतारनाम इन्द्रकविमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ८५ ॥

छट्ठे युगल तने सुविमान, हैं षट सहस्र महा सुखथान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठमयुगलसंबधि सतारनाम इन्द्रक षट्सहस्रविमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ८६ ॥

छट्ठे युगल वास तिन तनो, सामान्यादिक सुर सब गिनो । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं षष्ठम युगल सम्बन्धि सामान्यादिक देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८७ ॥

नव ग्रैवेयक सम्बन्धि अर्घ

चौपई—नव ग्रैवेयक कल्पातीत, तीन तरक ताके शुभ मीत ।-तिनकी उतपति छेदक सार, ते सिध पूजों शिव करतार ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सम्बन्धि गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १०७ ॥

अधोग्रीव में जान प्रमान, एक सैंकड़ा ग्यारह मान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आधोग्रैवेयक सम्बन्धि एकादशाधिक एक शत विमान गतिछेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १०८ ॥

मध्य ग्रीव में जान विमान, एक सैंकड़ा सात सुजान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मध्य ग्रैवेयक सम्बन्धि सप्ताधिक एकशत विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १०६ ॥

ऊपर ग्रीव विषै शुभ जान, नव्वे एक प्रमाण सुजान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं उर्ध्वग्रैवेयक सम्बन्धि इक्यानवे विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११० ॥

नव ग्रीवक सम्बन्धि जान, श्रेणी बद्ध विमान सुमान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि श्रेणीबद्ध विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १११ ॥

ग्रीवक नव के और विमान, परकीर्णक जानों शुभ थान । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव गैवेयक सम्बन्धि प्रकीर्णक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११२ ॥

ग्रैवेयक में जान विमान, नाम सुदर्शन इन्द्रक थान । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि सुदर्शन नाम इन्द्रक विमानगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११३ ॥

अहमिंदरग्रैवेयक भाय, इंद्रक तहां अमोघ कहाय । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सबधि अमोघनाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११४ ॥

ग्रैवेयक के मध्य सुधार, सुप्रबुद्ध इन्द्रक सुखकार । ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संबधि सुप्रबुद्ध नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ ११५ ॥

इन्द्रक नाम यशोधर सही, ग्रैवेयक में गिनती कही। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संवधि यशोधर नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११६ ॥

नाम सुभद्र जास को सही, ग्रैवेयक में गिनती कही। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव ग्रैवेयक सवंधि सुभद्र नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११७ ॥

ग्रैवेयक में शुभदाख्यान, सुविशाल इन्द्रक मन आन। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संवधि सुविशाल नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११८ ॥

अहमिंदर ग्रैवेयक भाय, सुमनस इन्द्रक तहँ ठहराय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संवधि सुमनस नाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ११९ ॥

ग्रैवेयक में इन्द्रक सार, है सौमनस नाम तिस धार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सम्वन्धि सौमनसनाम इन्द्रक विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२० ॥

नव ग्रैवेयक इन्द्रक सार, नाम प्रीतिकर शोभा कार। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सवधि प्रीतिकर इन्द्रक गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम ॥ १२१ ॥

ग्रैवेयक में जान प्रमान, तीन सैंकड़ा नव शुभ थान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव ग्रैवेयक सम्वन्धि नवाधिक त्रयशत विमान गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२२ ॥

ये ही तीन शतक नव जान, इनमें देव वसैं अधिकान। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक संवधि नवाधिक त्रयशत विमान वासी देवगतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२३ ॥

छंद पद्धरि—ग्रैवेयक त्रय सो नव विमान, तिनमें तितने ही जिन सुथान। ताकी उतपति छेदक जु सोय, ते मैं सिध पूजों अर्घ जोय ॥

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयक सम्वन्धि नवाधिकत्रयशतविमानस्थ जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १२४ ॥

चौपाई—अहमिंदर सब ही मन भाय, देव अनूदिश के जिन राय। तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नव अनुदिश अहमिंद्र गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १२५ ॥

इनही पंच विमानन मांहि, देव वसे अहमिंदर ठांहि। ताकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अनुत्तरवासी अहमिंद्र देव गतिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १४५ ॥

॥ छन्द–पद्धरि ॥

इन पंच अनुत्तर पंच जान, तहाॅ विगर किये जिन पंच थान। जिन रूप समां आकार सोय, ते पूजों मन वच शुद्ध होय ॥

ॐ ह्रीं पंच अनुत्तर संबधि पंच जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् ॥ १४५ ॥

छन्द–हरिगीतिका–सब कल्प कल्पातीत देव विमान की गिनती सही, सब लाख चौरासी सिंत्याणव सहस तेइस पुनि मही ॥
तिन मांहि इक इक थान जिनके, पाप हर तिनही धरा, ते देव पूजों जाय सनमुख हम जजें इहँ तें खरा ॥

ॐ ह्री स्वर्ग लोक सम्बन्धि चतुरशीति लक्ष सप्तनवतिसहस्रत्रयो विंशति श्री जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम् ॥ १४७ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा– देव सुरग वासी घने, महा पुण्य के थान। तहँ उपजत जिन धर्म धर, तिन कछु कह्यो वखान ॥ १ ॥

छन्द मुनियानन्द–
स्वर्गवासी सुरा दोय विधि जानिये, कल्पवासी रुकल्पातीत पहचानिये।
स्वर्ग षोडश सुरा नारि धर जोइये, कल्पवसु शीश सुरदेवी विन होइये ॥ २ ॥
कल्प है नाम सौधर्म ईशानजी, सनतकुमार माहेन्द्र शुभ जानजी।
ब्रह्मब्रह्मोत्तरा जुगल तीजा सही, लांतव कापिष्ट है जुगल सुख की मही ॥ ३ ॥
शुक्र महा शुक्र जुग पंचमों सार जी, जुगल सत्तार सहसार सुखकारजी।
आनता प्राणत सातमा जुग भया, आठमा आरणाच्युत जुगल जिन चया ॥ ४ ॥
नवगिरी अनुदिशा पंच अनुत्तर सही, अब कहों पटल विधि सकल जिन धुनि कही।
जुगल पहले पटल तीस इक जानिये, दूसरे जुगल में सात ही मांनिये ॥ ५ ॥
पटल चव तीसरे जुगल में है सही, दोय है पटल चवथे जुगल की मही।
पांचवां युगल विषैं एक इन्द्रन कहा, षष्ठमें के विषैं एक ही है कहा ॥ ६ ॥

सातमें जुगलत्रय पट् सुखदाय है, तीन ही पटल जुग आठ में पाय है।
नवग्रैवेयके पटल नव सुखकरा, अनुदिशा मांहि इक पटल शोभा धरा ॥ ७ ॥
पंच अनुत्तर विषैं पटल इक जोड़ये, अब सुनो इन्द्र जिन स्वर्ग थल होइये।
जुगल सौधर्म में जुगल हरि है सही, जुगल दूजे विषें इन्द्र जुग सुख मही ॥ ८ ॥
तीसरे जुगल इक इन्द्र सुखदाय है, जुगल चवथा विषें इन्द्र इक पाय है।
पांचमें जुगल हरि एक का राज है, एक ही इन्द्र षष्टम जुगल सांच है ॥ ९ ॥
सातमें जुगल हरि दोय राजे सही, इन्द्र अष्टम जुगल दोय पति की मही।
ऊपरैं सकल सुर इन्द्र पदधार है, हीन औ अधिक नहिं सब अनुसार है ॥ १० ॥
अब सुनो स्वर्ग में भवन जितने सही, साठ लाख प्रथम दुक जान सुखकी मही।
चीसलाख दूसरे जुगल में जानिये, तीसरे जुगल चवलाख शुभ थानिये ॥ ११ ॥
अर्द्ध लक्ष जान चवथे जुगल पाइये, सहस्र चालीस पंचम जुगल गाइये।
जुगल षष्टम् विषैं सहस पट् है सही, जीव पुण्यवान उपजें यही सुखमही ॥ १२ ॥
सातमें आठमें जुगल के जोरिये, सातसौ जान होय पुण्य फल कोरिये।
नवग्रैवेयक में तीन सौ नव सही, नव अनुदिश विषें जानि नव पुनि मही ॥ १३ ॥
पंच अनुचर विषें पंच ते जानिये, अब सुनों भूमि तें उर्द्ध परमानिये।
भूमि में उर्द्ध सौधर्म जुग की मही, डेढ राजू गिनो हद तिनकी मही ॥ १४ ॥
प्रथम जुग ऊपरै जुगल दूजो सही, डेढ राजू उपरि शीश ताकी मही।
पट् जुगल ऊपरें क्रम तें जानिये, राजू आध आध सब ऊर्ध्वक्रम मानिये ॥ १५ ॥
सर्वपट् राजु में कल्पसुर पाईये, नवग्रीवादि इक राजु में गाईये।
मध्यराजू विषें अनुदिशा है सही, अनुचरा पंच, राजू तनी अनि मही ॥ १६ ॥
जुगल पहलो लखो जल आधार है, दूसरो जुग कह्यो पवन मझधार है।

जल अरु पवन ये स्कन्ध पुद्गल तने, मान आधार सुर भवन टिक हैं भने ॥ १७ ॥
तीसरो जुगल जल पवन आधार है, जुगलचवथो पवन जल के अधार है।
पंचमें जुगल जल पवन ते थिर रह्यो, जुगल पष्टम पवन जलथकी ध्रुव कह्यो ॥ १८ ॥
सातमें जुगल को आदि ऊपर सही, पंच अनुत्तर तनी भौम तहां लों कही।
सकल ही जान नभ तने आधार हैं, अब सुनो देव प्रवीचार विधिसार हैं ॥१९॥
जुगल सौधर्म में मनुप सम रमत हैं, दूसरे जुगल तन फरसि सुख पमत हैं।
रूप लख तृपति सुर तीसरे जुगल है, जुगल चवथे सुरा इन समां संग लहै ॥ २० ॥
पंचमे जुगल सुनि शब्द तिरपत सही, जुगल पष्टम सुने शब्द ही धुनि कही।
मन चले तृपत सातमें जुगल के सुरा, आठमें जुगल भी मन चले भन गुरा ॥ २१ ॥
देव अहमिंद्र के काम सेवन नहीं, मन वचन काय से चाह त्रियकी गई।
अब सुनों वरन जे भवन के पाइये, पंचवर्ण जानि पहले जुगल गाइये ॥ २२ ॥
जुगल दूजे वरन चार विन स्याम है, कृष्ण अरु नील विन तीजे जुग धाम हैं।
जुगल चौथे लखो तीन रंग सार है, कृष्ण अरु नील विन शोभा करतार है ॥ २३ ॥
जुगल पंचम विपे दोय रंग जानिये, पीत अरु शुकल बहु शोभ दे मानिये।
जुगल पष्टम विपे रंग पंचम सना, अवर सब जानि शुक्ल में ही रंग पना ॥ २४ ॥
अब सुनो अवधि जे देव जेती लखे, पहल नर्क थानलों पहल जुग सुरलखे।
दूसरे नर्कलों अवधिजो जानिये, दूसरे जुगल का देव सो मानिये ॥ २५ ॥
तीसरा जुगल चौथा तने सुर सही, तीसरे नर्क लों अवधि तिनकी कही।
पंचमें जुगल छट्टे तने सुरपती, अवधि तें नर्क चवथा तनी है गती ॥ २६ ॥
सातमें जुगल अष्टम जुगल सुर मही, पंचमें नर्क लों ग्रैवेक सुर लही।
छट्टे नर्क लों ग्रैवेक सुर लखे, देव अहमिन्द्र अनि साज नर्क लों अखे ॥ २७ ॥

अब सुनो देवको मरन को अंतरा, जुगल सौधर्म में सात दिन का खरा ।
दूसरे जुगल इक पक्ष अंतर सही, मास इक तीसरे जुगल में जिन सही ॥ २८ ॥
जुगल चौथा विषे मास अंतर गिनो, पंचमें जुगल दो मास अंतर बनो ।
जुगल छट्टे विषे मास दोय अंतरा, सातमें आठमें चार का है खरा ॥ २९ ॥
थान अहमिंद्र में अंतरा मास छै, अब सुनो देव की थिति तनी जास है ।
जुगल पहला विषे आयु दो सागरा, दूसरे जुगल थिति सात दधि की खरा ॥ ३० ॥
तीसरे जुगल दश उदधि की आय है, जुगल चवथा तनी चतुर्दश भाय है ।
पांचमें जुगल थिति उदधि षोडश सही, समद दश आठ थिति जुगल षष्ठम मही ॥ ३१ ॥
सातमें जुगल की बीस दधि आयुजी, आठमें जुगल बावीस दधि भायजी ।
ग्रैव में एक इक अधिक दधि आनिये, अंतग्रीव मांहि इकतीस दधि मानिये ॥ ३२ ॥
नव अनुदिश समद तीस दोय आय है, तीस अरु तीन दधि अंतरे पाय है ।
आय उत्कृष्ट सागर यह जानिये, अब सुनो काय परमान मन आनिये ॥ ३३ ॥
जुगल पहला विषै सात कर पाइये, दूसरे जुगल षट् हाथ की काइये ।
तीसरे जुगल तन पांच कर है सही, जुगल चवथा विषै पांच कर ही कही ॥ ३४ ॥
पांचमें जुगल तने चार कर सार है, आध त्रय हाथ तन छटे जुग धार है ।
सातमें जुगल तन तीन कर का सही, आठ में तीन कर काय सुख की मही ॥ ३५ ॥
कर अढ़ाई सु दोय ड्योढकर जांनिये, ग्रीव की काय सुखदाय इक मानिये ।
अनुदिशानुत्तरा काय इक कर सही, अब सुनो अंतरा देव भोजन कही ॥ ३६ ॥
जिते सागरा तनी आयु सुर पाइये, सहस जेते बरष भोजना गाइये ।
देव अन्न भोजना नांहि चाहें सही, जिते सागर तनी आयु ताकी कही ॥ ३७ ॥
पक्ष जेते गये श्वांस उश्वास हैं, अब सुनों मुकट के चिह्न सुर भास हैं ।

तीन

लोक

चिह्न हैं कल्पवासीन के ही कहे, कल्पवासीन के उर्ध्व नाहीं गहे ॥ ३८ ॥
सूर अरु हिरण के प्रथम जुगमें सही, दूसरे जुगल के महिस मछला कही।
काछवा मींडका ब्रह्म जुग जांनिये, चिह्न ये देव के मुकुट विच मानिये ॥ ३९ ॥
चिह्न घोटक गजा जुगल चवथा सही, चिह्न शशि सर्प को जुगल पंचम मही।
खड्ग छेला चिहन जुगल छट्टे कहे, सातमें जुगल वैल चिह्न सुर के बहे ॥ ४० ॥
जुगल अष्टम् विषें चिह्न सुरतरु कह्यो, चिह्न अहमिन्द्र को नांहि हम सरदह्यो।
सुअवनो स्वर्ग को जान मोटापनों, तासको धार मन आप संशय हनों ॥ ४१ ॥
जुगल सौधर्म को जांनि मोटा सही, शतक एकादशा अधिक इक इक कही।
इतने जोजन तहां जान भू दल कहा, अब सुनो दूसरे जुगल में जिम ठहा ॥ ४२ ॥
अधिक ठाईस इक सहस जोजन सही, जानकी भूमि मोटी प्रभु धुनि कही।
तीसरे जुगल को जान मोटो पनों, अधिक तेईस नव सैंकड़ा दल गिनो ॥ ४३ ॥
जुगल चवथा विषें जांनि मोटे सही, अधिक चौईश शत आठ मुनिजन कही।
पंचमें जुगल के जान मोटे कहे, अधिक पचीस शत सात मणिमय ठहे ॥ ४४ ॥
जुगल छट्टा विषें जान दल जांनिये, अधिक छव्वीस शत जोय षट् मांनिये।
सातमें जुगल में जान मोटी धरा, पांचसौ बीस अंक सात ऊपर परा ॥ ४५ ॥
जुगल अष्टम विषें जात दल पाइये, चार शत अधिक ठाईश श्रुत गाइये।
नवग्रैवेक के जान मोटे सही, अधिक गुणतीस सौ तीन सुखदाम ही ॥ ४६ ॥
नव अनुत्तर विषें जान दल गाइये, तीसकर अधिक सत दोय मन लाइये।
पंच अनुत्तर तनें जान मोटे सही, अधिक इक्कीस शत एक मणिकी मही ॥ ४७ ॥
अब सुनो सुरग सुर लेश्या जो धरे, तासफल भाव समथान में अवतरे।
जुगल सौधर्म में पीत लेश्या कही, दूसरे जुगल में पीत अरु पद्मही ॥ ४८ ॥

काढि ईशान हरि भक्ति तें आय है, क्षेत्र ऐरावता जिन निमित्त लाय है ॥ ८० ॥
स्वर्ग तीजे विषै मान थंभ मांहिजी, करंड तिन मांहि आभूषण पाहिंजी ।
पूर्वसु विदेह में जे जिना अवतरे, स्वर्गपति ल्याय आभरण रीति करें ॥ ८१ ॥
स्वर्ग माहेन्द्र में मानथंभ जो सही, तिन विषें करंड आभूषणा सुखमही ।
अपर विदेह में होय जिनरायजी, लाय माहेन्द्र हरि धरै जिन पायजी ॥ ८२ ॥
मानथंभ लूमते करंड तहां पाय है, योग्य जिनराय शुभ वस्तु तिन मांहि है ।
ता थकी देव हरि सकल करि पूज है, जा सभी विनय तें पाप सब धूज है ॥ ८३ ॥
मानथंभ पास उतपात ग्रह मानिये, आठ जोजन तनों तुङ्ग नभ आनिये ।
वास ही आठ ही जोजना है सही, तासपे मणिमई दोय सज्या कही ॥ ८४ ॥
तिन विषें इन्द्र ही आय उपजै सही, करै बहु पुण्यके पाय है वह मही ।
फेर उतपाद गृह पास ही जानिये, बहु विनय सहित जिन भवन तहां मांनिये ॥ ८५ ॥
तुङ्ग बहु शिखर जुत मणिमई है सही, तिन विषें बिंब जिनराज ममधुनि कही ।
पूजि हैं हम सभी द्रव्य ले आव जी, मुख थकी भक्ति कर पुन्य उपजावजी ॥ ८६ ॥
कौन गुनथान धरे कौन स्वर्ग अवतरे, सो कथन अब सुनो सकल संशय हरे ।
देशसंयत जिया असंयत सो जिया, अच्युतलों उपजै धर्मजुत हो दिया ॥ ८७ ॥
द्रव्य तो स्वांग मुनिराज को बनि रह्यो, भाव गुन थान चव पंचमो ही कह्यो ।
तथा गुनथान मिथ्यात ही है सही, तो लहै अंतग्रीवेक की शुभ मही ॥ ८८ ॥
मनुष्य द्रव्य भावकर महाव्रत धारजी, ते लहे मोक्ष सर्वार्थ सिद्ध सारजी ।
देव यह एक भव लेय शिवजायजी, नाम तिनके सुनो महासुख दायजी ॥ ८९ ॥
इन्द्र सौधर्म पट देवि ताकी शची, तास ही लोकपाल चार सुर यह जची ।
दक्षिण दिश तने सब इन्द्र जानों सही, देव लौकांत सर्वार्थ सिध सध कही ॥ ९० ॥

तीसरे जुगल में पदम इक जांनिये, पदम ही जुगल चवथा विषें भानिये।
पंचमें जुगल में पदम शुक्ला कही, जुगल षष्टम विषें पंचमें सम मही ॥ ४९ ॥
शुक्ल लेश्या सकल ऊपरे थान ही, अब सुनों देव की नार थिति मान ही।
स्वर्ग सौधर्म में देवत्रिय आयुजी, पंच ही पल्य परमाण सुखदायजी ॥ ५० ॥
स्वर्ग ईशान में सात पल्य पाइये, तीसरे स्वर्ग में पल्य नव गाइये।
पल्य ग्यारह थिति स्वर्ग चौथे सही, पंचमें स्वर्ग दश तीन पल्य बनि रही ॥ ५१ ॥
स्वर्ग छट्ठा विषे पल्य पन्द्रह सही, सातमें स्वर्ग पल्य जान सतरह कही।
आठमें स्वर्ग उन्नीस पल्य जानिये, रूप अति शुभग देवांगना मानिये ॥ ५२ ॥
स्वर्ग नवमा विषें पल्य इक्कीस है, पल्य तेईश दश में स्वर्गदीश है।
ग्यारमें स्वर्ग पच्चीस पल्य आयु है, पल्य दोय अधिक बारह सुरा पाय है ॥ ५३ ॥
तेरमें स्वर्ग चौतीस की थिति कही, पल्य चालीस इक स्वर्ग चौधम सही।
दोय कम आधसौ पल्य देवी तनों, पन्द्रमें स्वर्ग इस रीति शोभा घनों ॥ ५४ ॥
पल्य पचपन तनी आयु मन लाइये, सोलमें स्वर्ग देवीन को पाइये।
ऊपरैं नांहि देवांगना है सही, अब सुनों इन्द्रके नगन तिस थल ठही ॥ ५५ ॥
जुगल सौधर्म का पटल इकतीसमां, दिशा दक्षिण थकी इन्द्र है अतिरमा।
श्रेणि बद्ध मांहि अष्टादशम जानजी, ताविषें इन्द्र सौधर्म को थानजी ॥ ५६ ॥
श्रेणि उत्तर विषें जान अष्टादशा, इन्द्रईशान तिस थान में नित बसा।
सनतकुमार जुगल में अन्तके पटलजी, जान इन्द्र थकी दक्षिण दिशा अटलजी ॥ ५७ ॥
सोलहें जान इंद्रक तनों वास है, उत्तरदिश सोलह जान सुखरास है।
जान माहेन्द्र को वास सुखदाय है, ब्रह्मजुग अन्त के पटल विच पाय है ॥ ५८ ॥
आन दक्षिण दिशा पटल इन्द्रक थकी, चौदवें ब्रह्म का ब्रह्म इन्द्र स्थिति।

ये सकल भोग सुख चय नर होय जी, ठान तप होय मुनि कर्ममल खोयजी ।
जाय शिव थान ये नेम ध्वनि में कह्यौ, और सुर को नहीं नेम श्रुत वर्णयो ॥ ९१ ॥
देव सज्या विषें ऊपजै जिम सही, सूर्य उदयाचले हृदय हो इम कही ।
काल तुच्छ मांहि तन धार पूरन लहे, गंध शुभ रूप सुर ऊपजे निर रहे ॥ ९२ ॥
उपज करि सम्पदा देखि सुख पाय है, अवधि ते पूर्व परजाय समथाय है ।
धर्मफल जान जिन जजौं उमगे सही, निर्मला जल सपरि भवन जिन जायही ॥ ९३ ॥
देव समदृष्टि स्वयमेव जिन पूज है, तास फल फिर बहू संपदा पूर है ।
और उपदेश मिथ्यामती जे सुरा, पूजि हैं देव जिन कार्य मुख्य यह करा ॥ ९४ ॥
देव फिर आय जिन पूजि बहु सुख करे, पंच कल्याण जिनराज पूजन धरे ।
सकल मधिलोक जिन थान सेवे सही, सर्व परवी विषें पूजि हैं जिनमही ॥ ९५ ॥
मेरुतें पहल स्वर्ग वाल अन्तर कही, नाम इन्द्रक यह प्रथम ऋतु की मही ।
और जे ऊपरें सकल इन्द्रक कहे, असख्य जोजन तने अन्तरै बनि रहे ॥ ९६ ॥
नाम सर्वार्थ सिद्ध अन्त इन्द्रक सही, द्वादश योजना मोक्ष अन्तर कही ।
मध्य में सप्तराजू सुरग थान है, ऊपरें मोक्षयें सिद्ध जिन थान है ॥ ९७ ॥
जीव इन मांहि सब पुण्य ते जाय हैं, वांच्छते सकल सुख आयु लग पाय है ।
आदि और अन्त विस्तार घनी मानिये, देखिये वाणि जिन सकल तहां जानिये ॥ ९८ ॥
स्वर्ग सुख थान महा पुन्य ते पाइये, चाहिये जीव सुख भलो पुण्य लाइये ।
पुन्य ते सकल सुख आय करमें रहें, मानि जिन वानि उर नांहि संशय रहे ॥ ९९ ॥

दोहा— स्वर्गथान में जिन भवन, पूजत सुर है सोय । हम इह भावे भावना, पूजत अरघ संजोय ॥ १०० ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गलोक सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घम् ॥

॥ सिद्ध लोक पूजा ॥

ीरासा—चेतन ज्ञान सरूप सदा सुख नाम लिये अघ जावे, शुद्धस्वभाव मूर्ति विन अञ्जन राग दोष नहिं पावे।
कर्म कलंक विना आतम इक, लोक शिखर पे राजे, ऐसे सिद्ध अनन्त सिद्ध थल, थापि जजों शिव काजे ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्ध परमेष्ठी अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननं ॥
अत्र तिष्ठ ठः ठ स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

—प्रभो सुख सब होय मोकों, और कहा विनती करों। मैं जजों ते सिध चक्र सब ही, लेय जलभव दुख हरों।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही। तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो जलम् ॥ १ ॥

शुभलेय निरमल नीर चंदन, बावना गंधित खरा। धरि कनक झारी धार निजकर, पूजहूँ सब शिव धरा।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही। तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो चन्दनम् ॥ २ ॥

विन खंड उज्ज्वल नोक जुत शुभ, भले अक्षत लाइये। धरि भक्ति उर कर लेय अपने, सिद्ध चरन चढाइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही। तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो अक्षतम् ॥ ३ ॥

फूल सुरद्रुम सुभग लेकर, भले भावन आइये। मदहरन मदन मनोज को सब, सिद्ध पूज कराइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही। तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखर स्थित अनन्त सिद्धेभ्यो पुष्पम् ॥ ४ ॥

नैवेद्य मोदक सेव घेवर, सुभग फेनी रस मई। इन आदि नेवज लेय निजकर, सिद्ध पूजन विधि ठही।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही। तिस थान मोहमलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखरस्थित अनन्त सिद्ध परमेष्ठी सिद्धेभ्यो नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तमहार दीपक धूम विन जो, शोभ रतन समा धरे। यह लेय कर उर भक्ति धरिके, सिद्धपद पूजन करे।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही। तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखर स्थित अनन्त सिद्धेभ्यो दीपम् ॥ ६ ॥

धूप दशविधि अगर आदिक, गंध मेल सु आइये। फिर भक्ति उर धर सिद्ध पूजन, मन वचन तन आइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही। तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखर स्थिन अनन्त सिद्धेभ्यो धूपम् ॥ ७ ॥

फल लोंग खारक श्रीफला शुभ, और अधिक मंगाइये। धरि शुद्धभाव अनन्द उर कर, सिद्ध पूजन आइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही। तिन थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखर स्थित अनन्तसिद्ध परमेष्ठीभ्यो फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्दनाक्षत फूल चरुले, दीप धूप फला भले। कर अरघ सुन्दर आपने कर, सिद्ध पूजन को चले।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरति सही। तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

सिध लोक में सुख जीव पावें, करम रज तिनके नहीं। तिस ठाम थोरे जीव हैं बहु भीड किंचित् ना कही।
एक ही अवगाहना में, सिद्धजीव अनन्त हैं। दृग ज्ञान आदिक पंच सुखके, जजों सब शिव सिध मही ॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्तशिव परमेष्ठीभ्यो महार्घम् ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

चौपई—ज्ञानावरणी करम जराय, पायो केवल ज्ञान सुभाय। राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्मघातक लोक शिखर विराजमान सर्वसिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ १ ॥

दर्शनावरणी की क्षय लाय, केवल दरशन ते दरसाय। राजत लोक शिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी घातक लोकशिखरस्थित सर्व सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घम् ॥ २ ॥

कर्म वेदनी नाम निकन्द, बाधा रहित लह्यो आनन्द । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मघातक लोक शिखर स्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ३ ॥

मोह करम के मूल गमाय, सम्यक गुण तिन शुद्ध कराय । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं मोहकर्म घातक लोकशिखर स्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ४ ॥

आयु करम क्षय कर भगवान, अवगाहन गुण पायो जान । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं आयु कर्मघातक लोक शिखरस्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

नाम करम नास्यो जिनराय, सूक्षम गुण परगट करवाय । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं नाम कर्मघातक लोक शिखरस्थित सर्व सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ६ ॥

गोत्र करम के गोत गमाय, अगुरु लघु गुण को प्रगटाय । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्मनाशक लोक शिखरस्थित सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ७ ॥

अन्तराय के नाशन हार, वीर्य अनन्त लहे शिवधार । राजत लोक शिखर पे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मनाशक लोक शिखरस्थित सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ८ ॥

तीन लोक आकाश मझार, सूक्षम वादर जीव अपार । तिनकी उतपति छेदक सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं तीनलोक क्षेत्र सम्बन्धि सूक्ष्मवादर जीव उत्पत्तिच्छेदक सिद्धेभ्यो अर्घम् ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

दोहा— तीन लोक चूड़ामणी, अष्टकर्म रज नांहि । नमों सोय नमनों मिटे, सिद्ध देव जग मांहि ॥ १ ॥

॥ वेसरी-छन्द ॥

सिद्ध देव शिव नारी भरता, भक्तन कों निज थल सम करता । जिसो संग तैसो फल पावे, दीपक तें दीपक ह्वै जावे ॥२॥

सिद्ध अमूरत चेतन थानो, जाना सकल लिया सुध ज्ञानो । दर्श अनंत वीर्य अतिभाई, सुखी अनंत काल चिर थाई ॥३॥

सूक्षम गुण निरबाध कहाई, अगुरुलघू गुणधारक सांई । अव्याबाध व्याध नांहि कोई, और अनंत आदि इन होई ॥४॥

अष्ट करम रजतें सिध दूरा, सिद्ध लोक थल में सब पूरा । इक इक सिध अवगाहन मांही, सिद्ध अनंतानंत सु पांही ॥५॥
तीन काल में जे सिध होई, सिद्ध लखें इक छिन में सोई । इक इक सिध सब सिध में जानों, ऐसे अद्भुत केवल ज्ञानों ॥६॥
सिध सुख सो सुख जगमें नांही, उपमा जाकी कही न जाही । मनुष्य विषै चक्री के माहीं, होय सकल ते सुख अधिकाही ॥७॥
चक्री ते सुख असंख्य बतानों, नागपती देवन के मानों । इनते असंख्य गुनों सुख गाई, कल्पदेव भोगत अधिकाई ॥८॥
इनतें सुख असंख्य गुण जानों, अहमिंदर देवन के मानों । इन सब तें असंख्य सिद्धन के,होय अनंतगुणो सुख तिनके ॥९॥
जग में इंद्री सुख चयकारी, सिद्ध सुखी अन-इन्द्री भारी । सांचे जाने जग सुख पावे, ते सिध सांचो सब लिखवावे ॥१०॥
जग सुखतें इन्द्रादिक भाई, देखत नाश होय थिति जाई । सुखी सिद्ध त्रय कालिक जानों, भोगें अचल होय नहि हानों ॥११॥
ऐसे सिद्ध सिद्ध-थल मांहीं,तिनपद धोक करों थुति लाहीं । ते सिध करों सिद्ध मो काजो,सब दुख हरो अरज यह राजो ॥१२॥
सिद्ध भक्ति भक्तन सुखदाई, वांछित सिद्ध होत है भाई । इनकी थुति जानों शिव थानों, करो भव्य श्रद्धा जिन मानों ॥१३॥
सिद्ध चक्र सब को सुखदाई, पूजों अर्घ ठांनि थुति लाई । ता फल होय न जग अवतारा, और कहा फल लहिये भारा ॥१४॥

दोहा— ऐसे सिद्धन ठान थुति, अरघ लेय कर सोय । जजों पांय मन वच सही, हर बाधा भवि लोय ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं लोक शिखरस्थित अनत सिद्धेभ्यो जयमाला पूर्णं महार्घम् नि० ॥

॥ समुच्चय जयमाला ॥

दोहा— तीन लोक थल के विषैं, जहां तहां जिन गेह । पूजों ते थुति लाय के, और सुनों विधि जेय ॥ १ ॥

॥ छन्द वेसरी ॥

जान अनन्त लोक आकाशो, तामें तुच्छ कह्यो जग वासो । छींकाकार असंख्य प्रदेशी, पुरपाकार सुन्दविन भेपी ॥ २ ॥
पग छीदे कर कटिलौं होई, ऊभो नर अरु पूरब जोई । तीन सैंकड़ा अरु तेताली, एते राजू नभ जग जाली ॥ ३ ॥
तामें त्रस नाली इक जानों, ऊभी दंडाकार बखानों । राजू इक चौडी समकारो, चौदह राजू तुङ्ग विचारो ॥ ४ ॥
ता महि तीन लोक विधि थाई, अधो मध्य ऊरध सुनि भाई । पवन तीन तें वेढे जानों, ज्यों तन ऊपर चाम बखानों ॥५॥
अधोलोक सत नरक बताये, नाम तिन्हींके आगे गाये । राजू सात अधो आकारा, तिनमें सात नरक दुख भारा ॥ ६ ॥

ते दुख कापे वरणे जाही, जाने केवल जिन ने पाई। वचन अगोचर दुख थल भाई, पापी जीव लहे दुख जाई ॥ ७ ॥
इकराजू नीचै आकाशा, पट् राजू में नरक सु वासा। तहां गुणचास पटल दुख खाना, तिनमें नरक बिलय अघ थाना ॥८॥
तीन प्रकार बिलय सो होई, इन्द्रक श्रेणीबध अवलोई। परकीरण ये तीन प्रकारा, तिनमें जीव रहे अघकारा ॥ ९ ॥
तहँ ही उष्ट्र मुखी थल जानों, नर्क जीव उपजन को थानों। अन्तर महूरत में तन धारे, फेर पडे भू अति ही पुकारे ॥१०॥
आय लगे नाना दुख पावे, तिनको नाहीं कोय बचावे। भोगें ते तिनने अघ कीने, पाप प्रकृति तें रस भीनें ॥ ११ ॥
आयु काय घट वध के थाना, अघ माफक थानक उपजाना। ऐसे नरक थान है भाई, अधोलोक में जिन श्रुति गाई ॥१२॥
ऊपर भवन पती सुर वासा, बितर और बसैं सुख रासा। इनने भी शुभ ते फल पायो, तब ऐसे सुख थानक आयो ॥ १३ ॥
ऊपर मध्यलोक को थानो, ताको कथन सुनों अबगानो। दीप असंख्या बहु बिसतारा, संख्य बिना ही सागर सारा ॥१४॥
तिन मधि दीप अढाई जानों, सो तो है मनुजन को थानों। धरा लाख पैंतालिस भाई, जोजन इतने नर थल पाई ॥१५॥
जंबूद्वीप सबनि मधि होई, जोजन लाख व्यास भू जोई। चौतरफ क्षीरोदधि जानो, दोय लाख जोजन भू थानो ॥१६॥
खंड धातकी पीछे भाई, धरा लाख जोजन चव गाई। कालोदधि तिसके चहु ओरा, आठ लाख जोजन भू ठोरा ॥१७॥
पीछे पुष्कर अर्ध सुदीपा, ता मधि मानुषोत्र गिरि दीपा। ता अध मांहि वार को जानों, आठ लाख भू जोजन मानों ॥१८॥
ऐसे दीप अढाई जानों, पैंतालिस लख जोजन मानो। ता महि जंबूद्वीप सु भाई, एक मेरु गिरि मध्य सुहाई ॥ १९ ॥
चव उपवन तिसके सुखदाई, पांडुक वन पांडुक सिलगाई। ता मधि मेरु चूलका जानों, इह लों मध्यलोक हद आनो ॥ २० ॥
चव गजदन्त मेरु जुत होई, रतन मई प्रतिमा है सोई। द्वयपे नव नव कूट बताये, सात सात गज दंत सु गाये ॥ २१ ॥
तिन कूटन पे सुर का वासा, सुर का नाम कूट सम भासा। नाम कुलाचल षट् विधि भाई, तिनपे कुण्ड कहे सुखदाई ॥ २२ ॥
द्रह में कमल रतन मय जानों, तिनमें देवी वास सुमानों। और कूट तिन गिरिपे गाई, कूटन पे सुर की थिति गाई ॥ २३ ॥
आदि अन्त के गिरि द्वय जानों, ग्यारह ग्यारह कूट समानों। इन अगले दो गिरि पे भाई, आठ आठ सब कूट बताई ॥२४॥
दोय कुलाचल मधि में जानों, नव नव कूट कहे सुर थानो। विजयारध चौतीस बताये, सब पे ना नव कूट सुनाये ॥ २५ ॥
मेरु शैल षोडश वखारा, तिनपे चव चव कूट सु धारा। कंचन गिरि द्वय सौ बतलाये, एक एक कूट दश दश गाये ॥ २६ ॥
तिनपे तिनके नाम सुधारी, देव बसैं बहु शुभ फलकारी। दिग्गज नाम आठ गिरि सोही, दिग्गज देव बसें तहँ होई ॥२७॥

मध्य म्लेच्छ खंड में जानों, वृपभाचल गिरि इक इक मानों । गिरि चौतीस क्षेत्र में जोई, चक्री नाम लिखें जो होई ॥२८॥
चार नाभि गिरि परवत जोई,भोग भूमि भू के मधि होई । जघन्य मध्य आरज जिय भाई,उपजत है इसही थल जाई ॥२९॥
चार यमक गिरि जे बतलाये, सीता सीतोदा तट गाये । तिनपे तिनके नाम सुधारी, देव वसै नाना सुखकारी ॥३०॥
मेरु एक प्रति चव गजदन्ता, नाम कुलाचल पट गिरि मंता । पोडश गिरि वक्षार सु लावो, विजयारध चौतीस गिनावो ॥३१॥
रचना और सुनो मन लाई, चार नाभि गिरि जिन ध्वनि गाई । चार यमक जे गिरि बतलाये,सीता सीतोदा तट गाये ॥३२॥
कंचनगिरि द्वयसौ लखिवाये, वृपभाचल चोतीस बताये । इत्यादिक परवत ध्रुव गाये, अब सुनि सरिता जे धुनि गाये ॥३३॥
चौदह तो पट् गिरि की सोई, गंगादिक नन्दी शुभ जोई । अपनी अपनी गति ले चाली, पूरब पशिचम दधि में ढाली ॥३४॥
बारह जानि विदेहा माहीं, नाम विभंगा सरिता ठांहि । और विदेह देश मधि जानों, चौसठ नदी गंगवत मानों ॥३५॥
दक्षिण तट जे सरिता जानो, गंगा सिन्धू नाम बखानो । उत्तर दिश जे सरिता भाई, रक्ता रक्तोदा जु कहाई ॥ ३६ ॥
विजयारध की गुफा मझारी,नन्दी दोय कही अति प्यारी । उनमगना निरमगना नामा,अब सुनि इन परिवार सु ठामा॥३७॥
चौदह में चव सरिता जानों,चौसठि विदेह देश की मानों । इन सबकी परिवार सु सरिता,चौदह चौदह सहस सु भरिता ॥३८॥
बारह जान विभग परिवारा, सहस अठाई भिन भिन लारा । चौदह में चव सरिता सोई, सम विभंग परिवार जु होई ॥३९॥
चौदह में सरिता परिवारा, सहसरु छप्पन छप्पन धारा । देश विदेह मांहि बढि सरिता, सीता अरु सीतोदा धरिता ॥ ४० ॥
इन परिवार सरित सब जानों,सहस चुरासी भिन भिन मानों । जान छब्बीस द्रहै जल जाना,बीस नदी मधि गिरिपट् थाना॥४१॥
नव्वे कुंड कहे सुखदाई, तिनके थान सुनों सुखदाई । चौसठ देश विदेह मझारा, तिनतें गंगा सिन्धु निकारा ॥ ४२ ॥
बारह कुण्ड और सुनि भाई, तिनतें चली विभंगा आई । ऐसे कुण्ड द्रह गिरि सरिता,मणिमय वेदी सहित जु भरिता ॥४३॥
भोग भूमि पट् या थल मांही, जंबू शालमली तरु थांही । सात क्षेत्र दीरघ तहँ गाये, थान विदेह बतीस बताये ॥ ४४ ॥
तुंग व्यास तिनका परमाना, जिन आगम ते ले सब जाना । एक मेरु यह रचना गाई, इमि सब पांचन की बतलाई ॥४५॥
फिर मनुपोत्तर पर्वत भाई, वलयाकार कनकमय थाई । पुष्कर दीप मध्य में जानों, मनुप गमन आगे नहिं मानों ॥४६॥
फिर है आधा पुष्कर दीपा, जा आगे पहुकर चव दीपा । फेर वारुणी दीप बताया, ये ही नाम समुन्दर गाया ॥ ४७ ॥
दीप क्षीर वर पंचम भाई,क्षीर नाम ढिंग सागर पाई । इस दधि का सुर हरि जल लावे, मेरु थान जिन न्होन करावे ॥४८॥

आगे दीप विरत वर जानों, इसही नाम पास दधि मानों । नाम इक्षुवर सप्तम दीपा, इसका नाम पास दधि टीपा ॥ ४६ ॥
अष्टम दीप नंदीश्वर गाया, उज्वल तीरथ तहां बताया । चव दिश है बावन जिन गेहा, पूजें सुर करि है बहु सेवा ॥ ५० ॥
फाल्गुन मास आपाढ़ सु काती, तीन समय अष्टाह्निक आती । इन दिन ही सुर सारे आवें, अष्ट दिवस जिन पूज करावें ॥ ५१ ॥
आगे नंदीश्वर दधि जानों, दीप अरुणवर फेर बतानों । पास अरुणवर सागर होई, अरुणदीप है दशमा सोई ॥ ५२ ॥
अरुण नाम सागर ढिग पावे, ऐसे आगे दीप सु आवे । इस विधि दीप समुद्र सु जानो, आगें कुंडल दीप सु मानों ॥ ५३ ॥
याके मध्य भाग में भाई, कुंडल गिरि वलयाकृत पाई । कुंडल सागर याके पासा, दीप शंखवर आगे भासा ॥ ५४ ॥
आगे इसही नाम समंदा, रुचिक दीप तेरम आनंदा । इसही दीप मध्य गिरि जानों, रुचक नाम वलयाकृत मानों ॥ ५५ ॥
नाम रुचिक ही सागर पासा, दीप भुंजग वर आगे वासा । इसही नाम उदधि ढिग होई, द्वीप कुसर वर पंद्रम जोई ॥ ५६ ॥
इसही नाम समुद्र ढिग होई, द्वीप क्रौंच वर सोलम जोई । सागर ढिग इस नामा जानों, आगे असंख्य दीप दधि मानों ॥ ५७ ॥
दीप नाम सो ही दधि केरा, आदि दीप षोडस इस घेरा । अंत दीप षोडश के नामा, दीप मनसिला प्रथम धामा ॥ ५८ ॥
है हरताल दीप बड़ थाना, फिर सिंदूर वर तीजा जाना । चौथा दीप स्याम वर होई, अंजन वर थल पंचम जोई ॥ ५६ ॥
हिंगुल वर छट्टम शुभ दीपा, सप्तम दीप रूपवर दीपा । सुवरन वर अष्टम ले भाई, नवमा दीप वज्र वर थाई ॥ ६० ॥
वर वैडूर्य दीप शुभ जानों, दीप नाग वर ग्यारम जानों । दीप भूत वर द्वादस थाना, यक्षवर दीप तेरमा जाना ॥ ६१ ॥
दीप देववर चौदम भाई, वर अहमिन्द्र पंद्रम थल थाई । अंत स्वयंभू रमण बताया, यां मधि गिरि वलयाकृत गाया ।६२।
ऐसे दीप रु सागर जानो, गिनत असंख्य राजु इक थानो । इक इक दीप सु सागर भाई, असंख्य असंख्य जोजन भू गाई ।६३
चार कोण धरती बड जानों, मध्य लोक की यह सब थानों । स्वयंभू रमण दीप दधि भाई, चव कोण क्रम भू बतलाई ।६४॥
मध्य असंख्य दीप दधि मांही, जघन्य भोग भू रीति बताहीं । दीप अढाई मानुष थानों, तिर्यग्लोक और सब जानों ॥ ६५ ॥
अब ऊपर का सुनि विस्तारा, धरती तें जोजन गिरि सारा । निव्वे अधिक सातसै भाई, ज्योतिष पटल मिले धुनि गाई ॥६६॥
ऊपर नवसौ जोजन जानो, तहां लो ज्योतिष पटल बखानो । इकसौ दश जोजन में भाया, ज्योतिष पटल तना दल गाया॥६७।
पंच जाति ज्योतिष सुर जाना, पावे सकल असंख्य सु थाना । ऊपर सुरग वासिया देवा, कल्प रु कल्पातीत सुभेवा ॥ ६८ ॥
तहं लों सुर के देवी पइये, कल्पदेव जहं लों हद गइये । षोडश स्वर्ग ऊपरैं सारे, कलपातीत नारि तैं न्यारे ॥ ६६ ॥

और कथन स्वर थानक केरा, लखो स्वर्ग जयमाल सु हेरा। जे जिय संजम तप बहु लावे, तब वह स्वर्ग थान को पावे ॥७०॥
जे पंचेन्द्रिय के सुख भाई, स्वर्ग थान में ते सब पाई। रतन जडित मन्दिर सुखकारी, मोती माला लूं में सारी ॥ ७१ ॥
घने देव निज शीश नमावे, मुख सेती नाना थुति गावे। करें अप्सरा नृत्य अपारा, मधुर कंठ गावें सुर धारा ॥ ७२ ॥
मनसा भोग रोग नहिं आवे, मन वांछे सो ही सुख पावे। आयु पर्यन्त नहीं दुख कोई, बूढा बाल वृद्ध नहिं होई ॥ ७३ ॥
मन वांछे तिस ही थल जावे, पूजे जिन वा क्रीड करावे। इत्यादिक कल्पन के देवा, भोगे सुख शुभ फल स्वयमेवा ॥ ७४ ॥
अहमिंदर देवन के मांही, अधिक हीन को देखे नाहीं। सब ही इन्द्र आप मन जानें, बिगर बुलाये मिल इक थाने ॥ ७५ ॥
तत्त्व ज्ञान की चर्चा भावे, ऐसे रीति सु आप बतावे। मंद कषायी सोम्य स्वभावा, ऐसे अहमिंदर सुररावा ॥ ७६ ॥
ऊपर मोक्ष शिला है भाई, मनुष्य लोक सम दीरघ पाई। लख पैंताली जोजन होई, श्वेत छत्र सम राजै सोई ॥ ७७ ॥
जैसे उलटा धरा कटोरा, ऐसे मोक्ष शिला का डोरा। मध्य मांहि वसु जोजन मोटी, ओंडी पास अनुक्रम छोटी ॥ ७८ ॥
वातवलयतें वेढी जानो, वातवलय तन में सिध थानो। तिनके कर्म धूर नहिं कोई, आप हि आप निरंजन होई ॥ ७९ ॥
सुख अनंत भोगे सिध सारा, फेर न होय जगत अवतारा। सगरी जगत रीत को जाने, राग दोष उर कभियन आने। ८०।
ऐसे सिद्ध अनन्ते भाई, तिनपद धोक करों शिरनाई। ते सिध चक्र सहाय हमारो, सब मन वांछित कारज सारो ॥ ८१ ॥
सात कोटि बहतर लख जानो, लोक पताल देव जिन थानों। मध्य लोक में जिनके गेहा, चव शत अधिक अठावन जेहा।८२।
लख चौरासी ऊपर आनो, सहस सत्याणव तेइस जानो। इतने जिन मंदिर हैं भाई, तिन पद हमने शीश नमाई ॥ ८३ ॥
आठ कोडि छप्पन लख जानों, सहस सत्याणव ऊपर मानों। चवशत इक्यासी जिन गेहा, है त्रैलोक जजों करि नेहा। ।८४॥
ऐसे तीन लोक के थाना, अल्प तोकसा करया बखाना। बहुत चाह जाको होय भाई, सो जिन धुनिते ले समझाई ॥८५॥
दोहा— तीनलोक थल के विषें, जे जे तीरथ ठाय। जजों अरघ शुभ धुनि करी, जय जय जय मुख गाय ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं अधोलोक मध्यलोक ऊर्ध्वलोक सर्वअष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवतिसहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम श्रीजिन चैत्यालयस्थजिनेभ्यो अर्घं महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥ रचयिता—प्रशस्ति ॥

चौपाई—मिति अषाढ दूसरो जानो, पहल पक्ष की चौथ बखानो। संवत अष्टादश शतजोय, और अठाइस ऊपर होय ॥ १ ॥

ता दिन पाठ समापत कियो, अपनो नरभव को फल लियो । निर्भय भया बढा चित चाव, विषम पंथ अब सुगम कराव ॥२॥
ज्यों पंगू गिरि चढि सुख होय, रंक खुशी तब कर-रिधि होय । ज्यों हम पूजा पूरन होय, हरष धरयो मन मांहि बहोय ॥३॥
अन्ध बटेर बखाने जोय, त्यों हम पूजा पूरन होय । मैं बुधहीन छन्द नहिं ज्ञान, अच्छर मात्र अल्प संजान ॥ ४ ॥
पूछे कोइ कवीश्वर नाम, ठाम ग्राम अरु देश सुधाम । तो लख देश ढुंढार सुवीर, ग्राम सवांई जयपुर धीर ॥ ५ ॥
दीपचन्द तहँ जिनवर दास, तासुत रामकृष्ण सुखरास । कर्म जोग जयपुर तज आय, देश मिवाडे पहुँचे जाय ॥ ६ ॥
तहां मायपुर नगर सु जानि, राज उमेदसिंह को मांनि । ताने अरि जय निज कर किये, घर खुस्याल मंत्री तिन लिये ॥ ७ ॥
तिन सहाय कूं पाय सुजान, रामहरी तिष्ठै तिसथान । तिन सुत टेकचन्द मन लाय, पाय काज तिनको बहुभाय ॥ ८ ॥
पुन्य जोग जिन धर्म सुहाय, चले तहां ते मालव आय । तहां ग्राम भड़लापुर सही, शीतल उपजे तीरथ मही ॥ ९ ॥
तहां थोक जैनिन को जोर, जिन पूजा उच्छव तिस ठोर । तीन लोक जिन पूजा सोय, देख्यो पाठ अशुद्ध सु जोय ॥१० ॥
तिनमें रागी जीवन तनी, पूजा देखी हमने घनी । तब हम पाठ अशुद्ध सुजान, मनमें मतो करयो इम मान ॥ ११ ॥
पाठ संस्कृत में विपरीत, जिन भाषित देखी नहिं रीत । राग दोष मद मोहित जीव, सुनकर सब विपरीत गहीव ॥ १२ ॥
तब हम जानि तुच्छ बुधि जीव, एकसरे पावै न सदीव । तातें तुच्छ बुद्धिनके काज, भाषा पाठ भलो सुख साज ॥१३॥
ऐसे सुनि सब के मन आय, भाषा पाठ कियो सुखदाय । जाकी अल्प बुद्धि भी होय, बांचे करे विधान सुजोय ॥१४॥
याके बांचे ज्ञान बढाय, चर्चा तीन लोक की पाय । छन्द ज्ञान उपजे उर सही, लहै पुण्य फिर शुभ की मही ॥ १५ ॥
ऐसी जान भव्य जो होय, बांचो सीखो अर्थ सुजोय । पूजो जिन मन वच तन काय, जै जै मुख भाखो श्रुति लाय ॥१६॥

❀ इति तीनलोक पूजा समाप्त ❀

॥ संशोधक के दो शब्द ॥

हस्त लिखित दो चार पुस्तकों,का भी मिलना कठिन जहां। फिर सबके हाथों में आना, हो सकता है सुलभ कहां ॥१॥
प्रतियां भी जो हस्त लिखित थीं, छन्दो भंगों वाली थीं। पढने में भी अति दुरूह, अरु त्रुटियों से नहिं खाली थीं ॥२॥
कठिनाई यह जान बहुतसे, भाई मांगें करते थे। किन्तु समस्या सुलझाने की, एक न हॉमी भरते थे ॥३॥
भँवरलाल भौंसा (बडजात्या) के यह बात समझ आई। साथ गुलाबचन्द को लेकर, शुद्ध एक लिपि कर पाई ॥४॥
कर मिलान बहुतसी प्रतियां, तन मन का संदेह गया। छपवाकर प्रस्तुत कीना है, तीन लोक मंडल सु नया ॥५॥
किन्तु बहुत सम्भव है त्रुटियां, इसमें भी हों शेष कहीं। सुधी समझ कर सूचित करदें, रहे न आगे लेश कहीं ॥६॥

❀ इति श्री तीनलोक पूजन विधान समाप्त ❀

